पवित्र

क़ुरआन

अनुवाद और व्याख्या मौलाना अज़ीज़ुल हक़्क़ उमरी

प्राक्कथन

लेख – आदर्णीय शेख साहिल बिन अब्दुल अज़ीज बिन मुहम्मद आले शैख,
इस्लामी कर्म, वक़्फ तथा दावत व इरशाद मंत्री,
एंव प्रधान निरीक्षक शाह फह्द कुरआन प्रकाशन साहित्य, मदीना मुनव्वरह।

अनुवाद: सारी प्रशंसायें अल्लाह के लिये हैं जो सारे संसारों का पालनहार है। जिस का लूलशीअपनी किताब में कथन है:

''तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से प्रकाश तथा खुली किताब आ गई है।''

और रहमत तथा सलाम हों उस नबी पर जो सब नबियों में श्रेष्ठ और उत्तम है। अर्थात हमारे नबी आदर्णीय मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर । जिन का कथन है: **''तुम में सब से अच्छा वह व्यक्ति है जो कुरआन सीखता और सिखाता है।''**

अल्लाह की प्रशंसा और रहमत तथा सलाम के पश्चात्:

हरमैन शरीफैन सेवक: शाह अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अज़ीज़ आल सऊद (अल्लाह उन की रक्षा करे) का आदेश है कि अल्लाह की पुस्तक (कुरआन मजीद) के प्रचार, प्रसार तथा विश्व के मुसलमानों के बीच उस के वितरण तथा विभिन्न भाषाओं में उस के अनुवद एंव व्याख्या की व्यवस्था की जाये।

हरमैन शरीफैन सेवक की आज्ञापालन करते हुये इस्लामी कर्म एंव वक़्फ तथा प्रचार प्रसार मंत्रालय विश्व की सभी महत्वपूर्ण भाषाओं में कुरआन के अर्थो के अनुवाद और व्याख्या करने का प्रयत्न कर रहा है। इन्हीं भाषाओं में हिन्दी भाषा भी है। ताकि हिन्दी भाषक कुरआन के भावार्थ को सरलता से समझ सकें। ताकि रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के कथन: ''मेरी बात लोगों तक पहुँचाओ, चाहे वह एक ही आयत क्यों न हो।'' के आदेश की पूर्ति हो सके।

इसलिये हमें इस बात से अपार हर्ष हो रहा है कि हम ''शाह फह्द कुरआन प्रकाशक साहित्य, मदीना मुनव्वरा'' की ओर से पूरे कुरआन के अर्थो का हिन्दी भाषा में अनुवाद तथा उस की संक्षेप व्याख्या प्रस्तुत कर रहे हैं।

यह अनुवाद और व्याख्या डॉक्टर प्रो. मुहम्मद ज़ियाउर्रहमान आज़मी के संरक्षण में, मौलाना अज़ीज़ुल हक़्क़ उमरी ने तैयार किया है। और कुरआन प्रकाशन साहित्य की ओर से इस का संशोधन डॉक्टर सईद अहमद हयात मुशर्रफी ने किया है।

हम अल्लाह की प्रशंसा करते हैं कि उस ने हमें यह कार्य करने का साहस दिया। और हम आशा करते हैं कि यह कार्य मात्र अल्लाह की प्रसन्नता के लिये होगा। और लोग इस से लाभांतित होंगे।

हम मानते है कि कुरआन के अर्थों का कितनी ही गंभीरता से अनुवाद किया जाये पर वह उस के महान् अर्थो को वर्णित नहीं कर सकता। क्योंकि कुरआन अपनी वर्ण शैली में भी

चमत्कार है। अत: अनुवाद के द्वारा जो अर्थ दिखाई देता है वह उस का भावार्थ होता है जो अनुवादक ने कुरआन से समझा है। जिस में हर प्रकार की त्रुटि संभव है। इसलिये प्रत्येक पाठक से अनुरोध है कि इस में वह जो भी त्रुटि पाये उस से ''शाह फहद कुरआन प्रकाशन साहित्य'' को अवगत कराये ताकि आगामी प्रकाशन में उस का सुधार कर लिया जाये।

अल्लाह ही हम सब का सहायक तथा मार्गदर्शक है।

अनुक्रमणिका

सूरह फ़ातिहा – १

सूरह फ़ातिहा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ७ आयतें है।

- यह सूरह आरंभिक युग में मक्का में उतरी, जो कुरआन की भूमिका के समान है। इसी कारण इस का नाम ''सूरह फ़ातिहा'' अर्थात ''आरंभिक सूरह'' है। इस का चमत्कार यह है कि इस की सात आयतों में पूरे कुरआन का सारांश रख दिया गया है। और इस में कुरआन के मौलिक संदेश: तौहीद, परलोक तथा रिसालत के विषय को संक्षेप में समो दिया गया है। इस में अल्लाह की दया, उस के पालक तथा पूज्य होने के गुणों को वर्णित किया गया है।
- इस सूरह के अर्थों पर विचार करने से बहुत से तथ्य उजागर हो जाते है। और ऐसा प्रतीत होता है कि सागर को गागर में बंद कर दिया गया है।
- इस सूरह में अल्लाह के गुण–गान तथा उस से प्रार्थना करने की क्षिक्षा दी गई है कि अल्लाह की सराहना और प्रशंसा किन शब्दों से की जाये। इसी प्रकार इस में बंदों को न केवल वंदना की शिक्षा दी गई है बल्कि उन्हें जीवन यापन के गुण भी बताये गये है।
- अल्लाह ने इस से पहले बहुत से समुदायों को सुपथ दिखाया किन्तु उन्हों ने कुपथ को अपना लिया, और इस में उसी कुपथ के अंधेरे से निकलने की दुआ है। बंदा अल्लाह से मार्ग–दर्शन के लिये दुआ करता है तो अल्लाह उस के आगे पूरा कुरआन रख देता है कि यह सीधी राह है जिसे तू खोज रहा है। अब मेरा नाम लेकर इस राह पर चल पड़।

*****

१. अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।
२. सब प्रशंसाये अल्लाह[१] के लिये है, जो सारे संसारों का पालनहार[२] है।
३. जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान्[३] है।
४. जो प्रतिकार[४] (बदले) के दिन का मालिक है।
५. (हे अल्लाह!) हम केवल तुझी को पूजते हैं, और केवल तुझी से सहायता[५] माँगते है।
६. हमें सुपथ (सीधा मार्ग) दिखा।
७. उन का मार्ग जिन पर तू ने पुरस्कार किया।[६] उन का नहीं जिन पर तेरा प्रकोप[७] हुआ, और न ही उन का जो कुपथ (गुमराह) हो गये।

---

[१] ''अल्लाह'' का अर्थ: ''हक़ीक़ी पूज्य'' है। जो विश्व के रचयिता विधाता के लिये विशेष है।

[२] ''पालनहार होने'' का अर्थ यह है कि जिस ने इस विश्व की रचना कर के उस के प्रतिपालन की ऐसी विचित्र व्यवस्था की है कि सभी को अपनी आवश्यकता तथा स्थिति के अनुसार सब कुछ मिल रहा है। और विश्व का यह पूरा कार्य, सूर्य, वायु, जल, धरती सब जीवन की रक्षा एवं जीवन की प्रत्येक योग्यता की रखवाली में लगे हुऐ हैं, इस से सत्य पूज्य का परिचय और ज्ञान होता है।

[३] अर्थात वह विश्व की व्यवस्था एवं रक्षा अपनी अपार दया से कर रहा है, अत: प्रशंसा और पूजा के योग्य भी मात्र वही है।

[४] प्रतिकार (बदले) के दिन से अभिप्राय प्रलय का दिन है। आयत का भावार्थ यह है कि सत्य धर्म प्रतिकार के नियम पर आधारित है। अर्थात जो जैसा करेगा वैसा भरेगा।। जैसे कोई जौ बोकर गेहूँ की, तथा आग में कूद कर शीतल होने की आशा नहीं कर सकता, ऐसे ही भले, बुरे कर्मो का भी अपना स्वाभाविक गुण और प्रभाव होता है। फिर संसार में भी कुकर्मो का दुष्परिणाम कभी कभी देखा जाता है। परन्तु यह भी देखा जाता है कि दुराचारी, और अत्यचारी सुखी जीवन निर्वाह कर लेता है, और उसकी पकड़ इस संसार में नही होती, इस लिये न्याय के लिये एक दिन अवश्य होना चाहिये। और उसी का नाम ''क़्यामत'' (प्रलय का दिन) है।

''प्रतिकार के दिन का मालिक'' होने का अर्थ यह है कि संसार में उस ने इन्सानों को भी अधिकार और राज्य दिये है। परन्तु प्रलय के दिन सब अधिकार उसी का रहेगा। और वही न्याय पूर्वक सब को उन के कर्मो का प्रतिफल देगा।

[५] इन आयतों में प्रार्थना के रूप में मात्र अल्लाह ही की पूजा और उसी को सहायतार्थ गुहारने की शिक्षा दी गई है। इस्लाम की परिभाषा में इसी का नाम ''तौहीद'' (एकेश्वरवाद) है। जो सत्य धर्म का आधार है। और अल्लाह के सिवा या उस के साथ किसी अन्य देवी देवता आदि को पुकारना, उस की पूजा करना, किसी प्रत्यक्ष साधन के बिना किसी को सहायता के लिये गुहारना, क्षचवम अथवा किसी व्यक्ति और वस्तु में अल्लाह का कोई विशेष गुण मानना आदि एकेश्वरवाद (तौहीद) के विरुद्ध है जो अक्षम्य पाप है। जिस के साथ कोई पुण्य का कार्य मान्य नहीं।

[६] इस आयत में सुपथ (सीधी राह) का चिन्ह यह बनाया गया है कि यह उन की राह है जिन पर अल्लाह का पुरस्कार हुआ। उन की नहीं जो प्रकोपित हुये, और न उन की जो सत्य मार्ग से बहक गये।

[७] ''प्रकोपित'' से अभिप्राय वह हैं जो सत्य धर्म की जानते हुये, मात्र अभिमान अथवा अपने पूर्वजों की परम्परागत प्रथा के मोह में अथवा अपनी बड़ाई के जाने के भय से नहीं मानते।

सूरह फ़तिहा का महत्व :

इस सूरह के अर्थो पर विचार किया जाये तो इस में और कुरआन के शेष भागों में संक्षेप तथा विस्तार जैसा संबंध है। अर्थात कुरआन की सभी सूरतों में कुरआन के जो लक्ष्य विस्तार के साथ बताये गये हैं सूरह फ़ातिहा में उन्हीं को संक्षिप्त रूप में बताया गया है। यदि कोई मात्र इसी सूरह के अर्थों को समझ ले तो भी वह सत्य धर्म तथा अल्लाह की इबादत (पूजा) के मूल लक्ष्यों को जान सकता है। और यही पूरे कुरआन के विवरण का निचोड़ है।

सत्य धर्म का निचोड:

यदि सत्य धर्म पर विचार किया जाये तो उस में इन चार बातों का पाया जाना आवश्यक है:

१ – अल्लाह के विशेष गुणों की शुद्ध कल्पना।

२ – प्रतिफल के नियम का विश्वास। अर्थात जिस प्रकार संसार की प्रत्येक वस्तु का एक स्वभाविक प्रभाव होता है इसी प्रकार कर्मो के भी प्रभाव और प्रतिफल होते है। अर्थात् सुकर्म का शुभ, और कुकर्म का अशुभ फल।

३ – मरने के पश्चात् आखिरत में जीवन का विश्वास। कि मनुष्य का जीवन इसी संसार में समाप्त नहीं हो जाता, बल्कि इस के पश्चात् भी एक जीवन है।

४ – कर्मों के प्रतिकार (बदले) का विश्वास।

सूरह फ़ातिहा की शिक्षा :

सूरह फ़ातिहा एक प्रार्थना है। यदि किसी के दिल तथा मुख से रात दिन यही दुआ निकलती हो तो ऐसी दशा में उस के विचार तथा अक़ीदे (आस्था) की क्या स्थिति हो सकती है! वह अल्लाह की सराहना करता है, परन्तु उस की नहीं जो वर्णों, जातियों तथा धार्मिक दलों का पूज्य है। बल्कि उस की जो सम्पूर्ण विश्व का पालनहार है। इस लिये वह पूरी मानव जाति का समान रूप से प्रतिपालक तथा सब के लिये दयालु है।

''कुपथ'' (गुमराह) से अभिप्रेत वह हैं जो सत्य धर्म के होते हुऐ उस से दूर हो गये और देवी देवताओं आदि में अल्लाह के विशेष गुण मान कर उन को रोग निवारण, दु:ख दूर करने और सुख संतान देने के लिये गुहारने लगे।

फिर उस के गुणों में से दया और न्याय के गुणों ही को याद करता है, मानो अल्लाह उस के लिये सर्वथा दया और न्याय है फिर वह उसके सामने अपना सिर झुका देता है और अपने भक्त होने का इक़रार करता है। वह कहता है: (हे अल्लाह!) हमारी विवशता और आवश्यकता में सहायता का सहारा है। वह अपनी पूजा तथा प्रार्थना दोनों को एक के साथ जोड़ देता है। और इस प्रकार सभी संसारिक शक्तियों और मानवी आदेशों से निश्चिन्त हो जाता है। अब किसी के द्वार पर उस का सिर नहीं झुक सकता। अब वह सब से निर्भय है। किसी के आगे अपनी विनय का हाथ नहीं फैला सकता। फिर वह अल्लाह से सीधी राह पर चलने की प्रार्थना करता है। इसी प्रकार वह वंचना और गुमराही से शरण (बचाव) की माँग करता है। मानव की विश्व व्यापी बुराई से, वर्ग तथा देश और धार्मिक दलों के भेद भाव से ताकि विभेद का कोई धब्बा भी उसके दिल में न रह। यही वह इन्सान है जिस के नि र्माण के लिये कुरआन आया है।[1]

इस सूरह की प्रधानता:

इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से वर्णित है कि जिब्रील फ़रिशता (अलॅहिस्सलाम) नबी सल्ललाहु अलैहि व सल्लम के पास थे कि आकाश से एक कड़ी आवाज़ सुनाई दी । जिब्रील ने सिर ऊपर उठाया, और कहा: यह आकाश का द्वार आज ही खोला गया है। आज से पहले यह कभी नहीं खुला। फिर उस से एक फ़रिशता उतरा। और कहा कि यह फ़रिशता धरती पर पहली बार उतरा है। फिर उस फ़रिशते ने सलाम किया, और कहा: आप दो ''ज्योती'' से प्रसन्न हो जाईये, जो आप से पहले किसी नबी को नहीं दी गईं: ''फ़ातिहातुल किताब'' (अर्थात: सूरह फ़ातिहा), और सूरह ''बक़र:'' की अन्तिम आयतें। आप इन दोनों का कोई भी शब्द पढ़ेंगे तो उस में जो भी है वह आप को प्रदान किया जायेगा।[2] और सहीह हदीस में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: ''अल्हम्दु लिल्हाहि रब्बिल आलमीन'', ''सब्अ मसानी'' (अर्थात सूरह फ़ातिहा), और महान कुरआन है। जो विशेष रूप से मुझे प्रदान की गई है।[3] इसी कारण हदीस में आया है कि जो सूरह फ़ातिहा न पढ़े उस की नमाज़ नहीं होती।[4]

---

[1] देखिये: ''उम्मुल किताब'' – मौलाना अबुल कलाम आज़ाद

[2] सहीह मुस्लिम, ८०६

[3] सहीह बुख़ारी, ४४७४

[4] बुख़ारी – ७५६, मुस्लिम – ३९४

सूरह बक़रह – २

सूरह बक़रह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में २८६ आयतें है।

- यह सूरह कुर्आन की सब से बड़ी सूरह है। इस के एक स्थान पर ''बक़रह'' (अर्थात्ःगाय) की चर्चा आई है जिस के कारण इसे यह नाम दिया गया है ।
- इस की आयत १ से २१ तक में इस पुस्तक का परिचय देते हुये यह बताया गया है कि किस प्रकार के लोग इस मार्गदर्शन को स्वीकार करेंगे, और किस प्रकार के लोग इसे स्वीकार नहीं करेंगे ।
- आयत २२ से २९ तक के सर्व साधारण लोगों को अपने पालनहार की आज्ञा का पालन करने के निर्देश दिये गये हैं । और जो इस से विमुख हों उन के दुराचारी जीवन और उस के दुष्परिणाम को, और जो स्वीकार कर लें उन के सदाचारी जीवन और शुभपरिणम को, और जो स्वीकार कर लें उन के सदाचारी जीवन और शुभपरिणाम को बताया गया है ।
- आयात ३० से ३९ तक के अन्दर प्रथम मनुष्य आदम (अलैहिस्सलाम) की उत्पत्ति, और शैतान के विरोध की चर्चा करते हुये यह बताया गया है कि मनुष्य की रचना कैसे हुई, उसे क्यों पैदा किया गया, और उस की सफलता की राह क्या है?
- आयत ४० से १२३ तक, बनी इस्राईल को सम्बोधित किया गया है कि यह अन्तिम पुस्तक और अन्तिम नबी वही है जिन की भविष्यवाणी और उन पर ईमान लाने का वचन तुम से तुम्हारी पुस्तक तौरात में लिया गया है। इस लिये उन पर ईमान लाओ। और इस आधार पर उन का विरोध न करो कि वह तुम्हारे वंश से नहीं है। वह अरबों में पैदा हुये हैं, इसी के साथ उन के दुराचारों और अपराधों का वर्णन भी किया गया है।
- आयत १२४ से १६७ तक आदरणीय इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के काबा का निर्माण करने तथा उन के धर्म को बताया गया है जो बनी इस्राईल तथा बनी इस्माईल (अरबों) दोनों ही के परम पिता थे कि वह यहूदी, ईसाई या किसी अन्य

धर्म के अनुयायी नहीं थे। उन का धर्म यही इस्लाम था। उन्हों ने ही काबा बनाने के समय मक्का में एक नबी भेजने की प्रार्थना की थी जिसे अल्लाह ने पूरी किया। और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को धर्म पुस्तक क़ुर्आन के साथ भेजा।

- आयत १६८ और २४२ तक बहुत से धार्मिक, सामाजिक तथा परिवारिक विधान और नियम बताये गये हैं जो इस्लामी जीवन से संबंधित हैं। कुछ मूल आस्थावों का भी वर्णन किया गया है जिन के कारण मनुष्य मार्गदर्शन पर स्थित रह सकता है।
- आयत २४३ से २८३ तक के अन्दर मार्गदर्शन केन्द्र काबा को मुश्रिकों के नियंत्रण से मुक्त कराने के लिये जिहाद की प्रेरणा दी गई है, तथा ब्याज को अवैध घोषित कर के आपस के व्यवहार को उचित रखने के निर्देश दिये गये हैं।
- आयत २८४ से २८६ तक अन्तिम आयतों में उन लोगों के ईमान लाने की चर्चा की गई है जो किसी भेद–भाव के बिना अल्लाह के रसूलों पर ईमान लाये। इस लिय अल्लाह ने उन पर सीधी राह खोल दी। और उन्हों ने ऐसी दुआयें कीं जो उन के ईमान को उजागर करती हैं ।
- हदीस में है कि जिस घर में सूरह बकरः पढ़ी जाये उस से शैतान भाग जाता है (सहीद मुस्लिम – ७८०)

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है ।

१. अलिफ, लाम, मीम ।

२. यह पुस्तक है, जिस में कोई संशय (संदेह) नहीं, उन को सीधी डगर दिखाने के लिये है, जो (अल्लाह से) डरते हैं ।

३. जो गैब (परोक्ष)[1] पर ईमान (विश्वास) रखते हैं, तथा नमाज की स्थापना करते हैं, और जो कुछ हम ने उन्हें दिया है, उस में से दान करते हैं।

४. तथा जो आप (नबी) पर उतारी गई (पुस्तक–कुर्आन) तथा आप से पूर्व उतारी गई (पुस्तकों[2] पर ईमान रखते हैं । तथा अखिरत (परलोक)[3] पर भी विश्वास रखते हैं।)

५. वही अपने पालनहार की बताई सीधी डगर पर हैं, तथा वही सफल होंगे ।

६. वास्तव[4] में जो काफिर (विश्वासहीन) हो गये (हे नबी!) उन्हें आप सावधान करें या न करें, वह ईमान नहीं लायेंगे ।

७. अल्लाह ने उन के दिलों तथा कानों पर मुहर लगा दी है । उनकी आंखों पर परदे पड़े हैं तथा उन्हीं के लिये घोर यातना है ।

८. और[5] कुछ लोग कहते हैं कि हम अल्लाह तथा अखिरत (परलोक) पर ईमान ले आये। जब कि वह ईमान नहीं रखते ।

९. वह अल्लाह को तथा जो ईमान लाये, उन्हें धोखा देते हैं । जब कि वह स्वयं अपने आप को धोखा देते हैं, परन्तु वह इसे समझते नहीं ।

१०. उन के दिलों में रोग (दुविधा) है, जिसे अल्लाह ने और अधिक कर दिया। और उन के लिये झूठ बोलने के कारण दुखदायी यातना है ।

---

[1] इस्लाम की परिषाषा में, अल्लाह, उस के फरिश्तों, उस की पुस्तकों, उस के रसूलों तथा अन्तदिवस (प्रलय) और अच्छे बुरे भाग्य पर ईमान (विश्वास) को (ईमान बिल गैब) कहा गया है. (इब्ने कसीर)

[2] अर्थात तौरात, इंजील तथा अन्य आकाशीय पुस्तकों पर।

[3] अखिरत पर ईमान का अर्थ हैः प्रलय तथा उस के पश्चात् फिर जीवित किये जाने तथा कर्मो के हिसाब एवं स्वर्ग तथा नरक पर विश्वास करना।

[4] इस से अभिप्राय वह लोग हैं, जो सत्य को जानते हुए उसे अभिमान के कारण नकार देते हैं।

[5] प्रथम आयतों में अल्लाह ने ईमान वालों की स्थिति की चर्चा करने के पश्चात् दो आयतों में काफिरों की दशा का वर्णन किया है. और अब उन मुनाफिकों (दुविधावादियों) की दशा बता रहा है जो मुख से तो ईमान की बात कहते हैं लेकिन दिल से अविश्वास रखते हैं.

११. और जब उन से कहा जाता है कि धरती में उपद्रव न करो, तो कहते हैं कि हम तो केवल सुधार करने वाले हैं ।
१२. सावधान! वही लोग उपद्रवी हैं, परन्तु उन्हें इस का बोध नहीं ।
१३. और[1] जब उन से कहा जाता है कि जैसे और लोग ईमान लाये तुम भी ईमान लाओ, तो कहते हैं कि क्या मूर्खों के समान हम भी विश्वास कर लें ? सावधान ! वही मूर्ख हैं, परन्तु वह जानते नहीं ।
१४. तथा जब वह ईमान वालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाये, और जब अकेले में अपने शैतानों (प्रमुखों) के साथ होते हैं तो कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं। हम तो मात्र परिहास कर रहे हैं ।
१५. अल्लाह उन से परिहास कर रहा है । तथा उन्हें उन के कुकर्मो में बहकने का अव्सर दे रहा है ।
१६. यह वे लोग हैं जिन्होंने सीधी डगर (सुपथ) के बदले गुमराही (कुपथ) खरीद ली । परन्तु उन के व्यापार में लाभ नहीं हुआ । और न उन्हों ने सीधी डगर पाई ।
१७. उन[2] की दशा उन के जैसी है, जिन्हों ने अग्नि सुलगाई, और जब उन के आस–पास उजाला हो गया, तो अल्लाह ने उन का उजाला छीन लिया, तथा उन्हें ऐसे अंधेरों में छोड़ दिया जिन में उन्हें कुछ दिखाई नहीं देता ।
१८. वह गूंगे, बहरे अंधे हैं । अतः अब वह लौटने वाले नहीं ।
१९. अथवा[3] (उन की दशा) आकाश की वर्षा के समान है, जिस में अंधेरे और कड़क तथा विद्युत हो, वह कड़क के कारण मृत्यु के भय से अपने कानों में उंगलियाँ डाल लेते हैं । और अल्लाह, काफिरों को अपने नियंत्रण में लिये हुये हैं ।
२०. विद्युत उन की आँखों को उचक लेने के समीप हो जाती है, जब उन के लिये चमकती है तो उस के उजाले में चलने लगते हैं, और जब अंधेरा हो जाता है तो खड़े हो जाते हैं । और यदि अल्लाह चाहे तो उन के कानों को बहरा, और उन की आँखों को अंधा कर दे । निश्चय अल्लाह जो चाहे कर सकता है ।

---

[1] यह दशा उन मुनिाफिको की है जो अपने स्वार्थ के लिये मुसलमान हो गये, परन्तु दिल से इन्कार करते रहे.

[2] यह दशा उन की है जो संदेह तथा दुविधा में पड़े रह गये. कुछ सत्य को उन्होंने स्वीकार भी किया. फिर भी अविश्वास के अंधेरों ही में रह गये.

[3] यह दूसरी उपमा भी दूसरे प्रकार के मुनाफिकों की दशा की है.

२१. हे लोगों केवल अपने उस पालनहार की इबादत (वंदना) करो, जिस ने तुम्हें तथा तुम से पहले वाले लोगों को पैदा किया, इसी में तुम्हारा बचाव[१] है ।

२२. जिस ने धरती को तुम्हारे लिये बिछौना तथा गगन को छत बनाया। और आकाश से जल बरसाया, फिर उस से तुम्हारे लिये प्रत्यैक प्रकार के खाद्य पदार्थ उपजाये, अतः जानते हुये[२] भी उस के साक्षी न बनाओ ।

२३. और यदि तुम्हें उस में कुछ संदेह हो जो (अथवा कुर्आन) हम ने अपने भक्त पर उतारा है, तो उस के समान कोई सूरह ले आओ? और अपने समर्थकों को भी, जो अल्लाह के सिवा हों, बुला लो, यदि तुम सच्चे[३] हो ।

२४. और यदि यह न कर सको, तथा कर भी नहीं सकोगे, तो उस अग्नि (नरक) से बचो, जिस का ईधन मानव तथा पत्थर होंगे ।

२५. हे नबी ! उन लोगों को शुभ सूचना दो. जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये कि उन कि लिये ऐसे स्वर्ग हैं, जिन में नहरे बह रही होंगी । जब उन का कोई भी फल उन्हें दिया जायेगा तो कहेंगे । यह तो वही है जो इस से पहले हमें दिया गया । और उन्हें समरूप फल दिये जायेंगे। तथा उन के लिये उन में निर्मल पत्नियाँ होंगी. और वह उन में सदावासी होंगे ।

२६. अल्लाह,[४] मच्छर अथवा उस से तुच्छ चीज से उपमा देने से नहीं लज्जाता । जो ईमान लाये वह जानते हैं कि यह उन के पालनहार की ओर से उचित है। और जो काफिर (विश्वासहीन) हो गये वह कहते है कि अल्लाह ने इस से उपमा दे कर क्या निश्चय किया है? अल्लाह इस से बहुतों को गुमराह (कुपथ) करता है, और बहुतो को मार्गदर्शन देता है । तथा जो अवैज्ञाकारी है, उन्ही को कुपथ करता है ।

---

[१] अर्थात संसार में कुकर्मो तथा परलोक की यातना से

[२] अर्थात जब यह जानते हो कि तुम्हारा उत्पत्तिकार तथा पालनहार अल्लाह के सिवा कोई नहीं, तो वंदना भी उसी एक की करो, जो उत्पत्तिकर तथा पूरे विश्व का व्यवस्थापक है.

[३] आयत का भावार्थ यह है कि नबी के सत्य होने का प्रमाण आप पर उतारा गया कुर्आन है. यह उन की अपनी बनाई बात नहीं है. कुर्आन ने ऐसी चुनौती अन्य आयतों में भी दी है. (देखियेः सूरह कसस, आयतः ४९, इस्रा, आयतः ८८, हूद आयतः१३, और यूनुस, आयतः३८)

[४] जब अल्लाह ने मुनाफिकों की दो उपमा दी, तो उन्होंने कहा कि अल्लाह ऐसी तुच्छ उपमा कैसे दे सकता है? इसी पर यह आयत उतरी। (देखियेः तफसीर इब्ने कसीर)

२७. जो अल्लाह से पक्का वचन करने के बाद उसे भंग कर देते हैं, तथा जिसे अल्लाह ने जोड़ने का आदेश दिया, उसे तोड़ते हैं, और धरती में उपद्रव करते हैं, यही लोग क्षति में पड़ेंगे ।

२८. तुम अल्लाह का इन्कार कैसे करते हो ? जब कि पहले तुम निर्जीव थे, फिर उस ने तुम को जीवन दिया, फिर तुम को मौत देगा, फिर तुम्हें (परलोक में) जीवन प्रदान करेगा, फिर तुम उसी की और लौटाये जाओगे ?

२९. वही है, जिस ने धरती में जो भी है, सब को तुम्हारे लिये उत्पन्न किया । फिर आकाश की ओर आकृष्ट हुआ, तो बराबर सात आकाश बना दिये और वह प्रत्येक चीज का जानकार है ।

३०. और (हे नबी ! याद करो) जब आपके पालनहार ने फरिश्तों से कहा कि मैं धरती में एक खलीफा[१] बनाने जा रहा हूं। वह बोले । क्या तू उस में उसे बनायेगा जो उस में उपद्रव करेगा, तथा रक्त बहायेगा ? जब कि हम तेरी प्रशंसा के साथ तेरे गुण और पवित्रता का गान करते हैं? (अल्लाह) ने कहाः जो मैं जानता हूँ, वह तुम नहीं जानते।

३१. और उस ने आदम[२] को सभी नाम सिखा दिये, फिर उन को फरिश्तों के समक्ष प्रस्तुत किया, और कहाः मुझे इन के नाम बताओ, यदि तुम सच्चे हो?

३२. सब ने कहाः तू पवित्र है । हम तो उतना ही जानते हैं, जितना तू ने हमें सिखाता है । वास्तव में तू अति ज्ञानी तत्वज्ञ[३] है ।

३३. (अल्लाह ने) कहाः हे आदम ! इन्हें इन के नाम बताओ । और आदम ने जब उन के नाम बता दिये तो (अल्लाह ने) कहाः क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि मैं आकाशों तथा धरती की क्षिप्त बातों को जानता हूं, तथा तुम जो बोलते और मन में रखते हो, सब जानता हूँ?

३४. और जब हम ने फरिश्तों से कहाः आदम को सजदा करो तो इब्लीस के सिवा सब ने सजदा किया, उस ने इन्कार तथा अभिमान किया, और काफिरों में से हो गया ।

---

[१] खलीफा का अर्थ हैः स्थानपन्न, अर्थात ऐसा जीव जिसका वंश हो और एक दूसरे का स्थान ग्रहण करे। (इब्ने कसीर)

[२] आदम प्रथम मनु का नाम।

[३] तत्वज्ञः अर्थात जो भेद तथा रहस्य को जानता हो।

३५. और हम ने कहाः हे आदम ! तुम और तुम्हारी पत्नी स्वर्ग में रहो, तथा इस में से जिस स्थान से चाहो मनमानी खाओ, और इस वृक्ष के समीप न जाना, अन्यथा अत्याचारियों में से हो जाओगे ।

३६. तो शैतान ने दोनों को उस से भटका दिया, और जिस (सुख) में थे उस से उन को निकाल दिया, और हम ने कहाः तुम सब उस से उतरो, तुम एक दूसरे के शत्रु हो, और तुम्हारे लिये धरती में रहना, तथा एक निश्चित अवधि[१] तक उपभोग्य है ।

३७. फिर आदम ने अपने पालनहार से कुछ शब्द सीखे, तो उस ने उसे क्षमा कर दिया, वह बड़ा क्षमी दयावान्[२] है।

३८. हम ने कहाः इस से सब उतरो, फिर यदि तुम्हारे पास मेरा मार्गदर्शन आये तो जो मेरे मार्गदर्शन का अनुसरण करेंगे, उन के लिये कोई डर नहीं होगा, और न वह उदासीन होंगे।

३९. तथा जो अस्वीकार करेंगे, और हमारी आयतों को मिथ्या कहेंगे तो वही नारकी हैं, और वही उस में सदावासी होंगे।

४०. हे बनी इसराईल![३] मेरे उस पुरस्कार को याद करो, जो मैं ने तुम पर किया, तथा मुझ से किया गया वचन पूरा करो, मैं तुम को अपना दिया वचन पूरा करूँगा, तथा मुझी से डरो[४] ।

४१. तथा उस (कुर्आन) पर ईमान लाओ जो मैं ने उतारा है, वह उस का प्रमाणकारी है, जो तुम्हारे पास[५] है, और तुम सब से पहले इस के निवर्ती न बन जाओ, तथा मेरी आयतों को तनिक मूल्य पर न बेचो, और केवल मुझी से डरो ।

---

[१] अर्थात अपनी निश्चित आयु तक सांसरिक जीवन के संसाधन से लाभान्तित होना है।

[२] आयत का भावार्थ यह है किः आदम ने कुछ शब्द सीखे और उन के द्वारा क्षमा याचना की, तो अल्लाह ने उसे क्षमा कर दिया। आदम के उन शब्दों की व्याख्या भाष्यकारों ने इन शब्दों से की हैः ''आदम तथा हव्वा दोनों ने कहाः हे हमारे पालनहार! हम ने अपने प्राणों पर अत्याचार कर लिया, और यदि तू ने हमें क्षमा, और हम पर दया नहीं की तो हम क्षतिग्रस्तों में हो जायेंगे''। (सूरह आराफ आयत २३)

[३] इसराईल आदरणीय इबराहीम अलैहिमस्सलाम के पौत्र याकूब अलैहिस्सलाम की उपाधि है। इस लिये उन की सन्तान को बनी इसराईल कहा गया है। यहां उन्हें यह प्रेरणा दी जा रही है किः कुर्आन तथा अन्तिम नबी को मान लें जिस का वचन उन की पुस्तक ''तौरात'' में लिया गया है। यहां यह ज्ञातव्य है किः इब्राहीम अलैहिमस्सलाम के दो पुत्र इस्हाक तथा इस्माईल है। इस्हाक की सन्तान से बहुत से नबी आये, परन्तु इस्माईल अलैहिस्सलाम के गोत्र से केवल अन्तिम नबी मुहम्मद सल्लाहु अलैहि व सल्लम आये।

[४] अर्थात वचन भंग करने से।

[५] अर्थात धर्मपुस्तक तौरात।

४२. तथा सत्य को असत्य में न मिलावो, और न सत्य को जानते हुये छुपाओ।[1]
४३. तथा नमाज की स्थापना करो, और जकात दो तथा झुकने वालों के साथ झुको (रूकू करो)।
४४. क्या तुम, लोगो को सदाचार का आदेश देते हों, और अपने आप को भूल जाते हो, जब किः तुम पुस्तक (तौरात) का अध्ययन करते हो, क्या तुम समझ नहीं रखते?[2]
४५. तथा धैर्य और नमाज का सहारा लो, निश्चय नमाज भारी है, परन्तु विनीतों पर (भारी नहीं।[3]
४६. जो समझते है किः उन्हें अपने पालनहार से मिलना है, और उन्हें फिर उसी की ओर (अपने कर्मो का फल भोगने के लिये) जाना है ।
४७. हे बनी इस्राईल! मेरे उस पुरस्कार को याद करो, जो मै ने तुम पर किया, और यह किः तुम्हें संसार वासियों पर प्रधानता दी थी ।
४८. तथा उस दिन से डरो, जिस दिन कोई किसी के कुछ काम नहीं आयेगा, और न उस की कोई अनुशंसा (सिफारिश) मानी जायेगी, और न उस से कोई अर्थदण्ड लिया जायेगा, और न उन्हें कोई सहायता मिल सकेगी ।
४९. तथा (वह समय याद करो) जब हमने तुम्हें फिरऔनियों[4] से मुक्ति दिलाई । वह तुम्हें कड़ी यातना दे रहे थे, वह तुम्हारे पुत्रों को वध रहे थे तथा तुम्हारी नारियों को जीवित रहने देते थे, इस में तुम्हारे पालनहार की ओर से कड़ी परीक्षा थी ।
५०. तथा (याद करो) जब हम ने तुम्हारे लिये सागर को फाड़ दिया, फिर तुम्हें बचा लिया, और तुम्हारे देखते देखते फिर तुम्हें बचा लिया, और तुम्होर देखते देखते फिरऔनियों को डुबो दिया.

---

[1] अर्थातः अन्तिम नबी के गुणों को, जो तुम्हारी पुस्तकों में वर्णित किये गये हैं।

[2] नबी सल्लाल्लाहु अलैकिक व सल्लम की एक हदीस (कथन) में इस का दुष्परिणाम यह बताया गया है किः प्रलय के दिन एक व्यक्ति को लाया जायेगा, और नरक में फेंक दिया जायेगा। उस की अंतड़ियां निकल जायेंगी, और वह उन को लेकर नरक में ऐसे फिरेगा जैसे गधा चक्की के साथ फिरता है। तो नारकी उस के पास जायेंगे तथा कहेंगे किः तुम पर यह क्या आपदा आ पड़ी है? तुम पर यह क्या आपदा आ पड़ी है? तुम तो हमें सदाचार का आदेश देते, तथा दुराचार से रोकते थे। वह कहेगा कि मैं तुम्हें सदाचार का आदेश देते, तथा दुराचार से रोकते थे। वह कहेगा कि मैं तुम्हें सदाचार का आदेश देता था, परन्तु स्वयं नहीं करता था। तथा दुराचार से रोकता था और स्वयं नहीं रूकता था। (सहीह बुखारी, हदीस नं.:३२६७)

[3] भावार्थ यह है कि धैर्य तथा नमाज से अल्लाह की आज्ञा के अनुपालन तथा सदाचार की भावना उत्पन्न होती है।

[4] फिरऔन मिस्र के शासकों की उपाधि होती थी।

५१. तथा (याद करो) जब हम न मूसा को (तौरात प्रदान करने के लिये) चालीस रात्री का वचन दिया, फिर उन के पीछे तुम ने बछड़े को (पूज्य) बना लिया, और तुम अत्याचारी थे ।

५२. फिर हम ने इस के पश्चात् तुम्हें क्षमा कर दिया, ताकि तुम कृतज्ञ बनो ।

५३. तथा (याद करो) जब हम ने मूसा को पुस्तक (तौरात) तथा फुर्कान[१] प्रदान किया. ताकि तुम सीधी डगर पा सको ।

५४. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति से कहाः तुम ने बछड़े को पूज्य बना कर अपने ऊपर अत्याचार किया है, अतः तुम अपने उत्पत्तिकार के आगे क्षमा याचना करो, वह यह कि आपस में एक दूसरे[२] को वध करो, इसी में तुम्हारे उत्पत्तिकार के समीप तुम्हारी भलाई है, फिर उस ने तुम्हारी तौबा स्वीकार कर ली, वास्तव में वह बड़ा क्षमाशील, दयावान् है ।

५५. तथा (याद करो) जब तुम न मूसा से कहाः हम तुम्हारा विश्वास नहीं करेंगे, जब तक हम अल्लाह को आँखों से देख नहीं लेंगे, फिर तुम्हारे देखते देखते तुम्हें कड़क ने धर लिया (जिस से सब निर्जीव होकर गिर गये)।

५६. फिर (निर्जीव होने के पश्चात) हम ने तुम्हें जीवित कर दिया, ताकि तुम हमारा उपकार मानो ।

५७. और हम ने तुम पर बादलों की छाँव[३] की, तथा तुम पर ''मन्न''[४] और ''सलवा'' उतारा, तो उन स्वच्छ चीजों में से जो हम ने तुम को प्रदान की है खाओं । और उन्हों ने हम पर अत्याचार नहीं किया, परन्तु वह स्वंय अपने ऊपर ही अत्याचार कर रहे थे ।

५८. और (याद करो) जब हम ने कहा कि इस बस्ती[५] में प्रवेश करो, फिर उस में से चाहो मनमानी खाओ । और उस के द्वार में सज्दा करते (सिर झुकाये) हुये प्रवेश

---

[१] फुर्कान का अर्थः विवेककारी है, अर्थात जिस के द्वारा सत्योसत्य में अन्तर और विवेक किया जाये।

[२] अर्थात जिस ने बछड़े की पूजा की है, उसे, जो निर्दोष हो वह हत करे। यही दोषी के लिये क्षमा है।(इब्ने कसीर)

[३] अधिकांश भाष्यकारों ने इसे ''तीह'' के क्षेत्र से संबंधित माना है । (देखियेः तफ्सीरे कुर्तुबी)

[४] भाष्यकारों ने लिखा है किः ''मन्न'' एक प्रकार का अति मीठा स्वादिष्ट गोंद था, जो ओस के समान रात्री के समय आकाश से गिरता था। तथा ''सलवा'' एक प्रकार के पक्षी थे जो शाम के समय सेना के सामने हजारों की संखया में एकत्रित हो जाते, जिन्हें बनी इस्राईल पकड़ कर खाते थे।

[५] साधारण भाष्यकारों ने इस बस्ती को ''बैतुल मुकद्दस'' माना है।

करो, और क्षमा–क्षमा कहते जाओ, हम तुम्हारे पापों को क्षमा कर देंगे, तथा सुकर्मियों को अधिक प्रदान करेंगे ।

५९. फिर इन अत्याचारियों ने जो बात उन से कही गई थी, उसे दूसरी बात से बदल दिया। तो हम ने इन अत्याचारियों पर आकाश से उन की अवैज्ञा के कारण प्रकोप उतार दिया ।

६०. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति के लिये जल की प्रार्थना की तो हम ने कहाः अपनी लाठी को पत्थर पर मारो । तो उस से बाहर[१] सोते फूट पड़े । और प्रत्येक परिवार ने अपने पीने के स्थान को पहचान लिया । अल्लाह का दिया खाओ और पीओ, और धरती में उपद्रव करते न फिरो ।

६१. तथा (याद करो) जब तुम ने कहाः हे मूसा । हम एक प्रकार का खाना सहन नहीं करेंगे, तुम अपने पालनहार से प्रार्थना करो कि हमारे लिये धरती की उपज, साग, ककड़ी, लहसुन, प्याज, दाल आदि निकाले, (मूसा ने) कहाः क्या तुम उत्तम के बदले तुच्छ माँगते हो ? तो किसी नगर में उतर पड़ो, जो तुम ने माँगा है वहाँ वह मिलेगा । और उन पर अपमान तथा दरिद्रता थोप दी गई, और वह अल्लाह के प्रकोप के साथ फिरे । यह इस लिये कि वह अल्लाह की आयतों के साथ कुफ्र कर रहे थे, और नबियों की अकारण हत्या कर रहे थे, यह इस लिये कि उन्हों ने अवैज्ञा की, तथा (धर्म की) सीमा का उल्लंघन किया.

६२. वस्तुतः जो ईमान लाये, तथा जो यहूदी हुये, और नसारा (ईसाई) तथा साबी, जो भी अल्लाह तथा अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान लायेगा, और सत्कर्म करेगा, उन का प्रतिफल उन के पालनहार के पास है । और उन्हें कोई डर नहीं होगा, और न ही वे उदासीन होंगे।[२]

[१] ईस्राईली वंश के बारह कबीले थे । अल्लाह ने प्रत्येक कबीले के लिये अलग–अलग सोते निकाल दिये ताकि उन के बीच पानी के लिये झगड़ा न हो। (देखियेः तफसीरे कुर्तुबी)

[२] इस आयत में यहूदियों के इस भ्रम का खण्डन किया गया है कि मुक्ति केवल उन्ही के गिरोह के लिये है। आयत का भावार्थ यह है कि इन सभी धर्मों के अनुयायी अपने समय में सत्य आस्था तथा सत्कर्म के कारण मुक्ति के योग्य थे परन्तु अब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन के पश्चात आप पर ईमान लाना तथा आप की शिक्षाओं को मानना मुक्ति के लिये अनिवार्य है।

६३. और (याद करो) जब हम ने तूर (पर्वत) को तुम्हारे ऊपर करके तुमसे वचन लिया, कि जो हम ने तुम को दिया है, उसे दृढ़ता से पकड़ लो, और उस में (जो आदेश–निर्देश हैं) उन्हें याद रखो, ताकि तुम (यातना से) बच सको ।

६४. फिर उस के बाद तुम मुकर गये, तो यदि तुम पर अल्लाह की अनुग्रह और दया न होती, तो तुम क्षतिग्रस्तों में हो जाते ।

६५. और तुम उन्हें जानते ही हो जिन्होंने शनिवार को बारे में (धर्म की) सीमा का उल्लंघन किया, तो हम ने कहा कि तुम तिरिस्कृत बंदर[१] हो जाओ ।

६६. फिर हम ने उसे, उस समय के तथा बाद के लोगों के लिये चेतावनी, और (अल्लाह से) डरने वालों के लिये शिक्षा बना दिया ।

६७. तथा (याद करो) मूसा ने अपनी जाति से कहाः अल्लाह तुम्हें एक गाय वध करने का आदेश देता है । उन्हों ने कहाः क्या तुम हम से उपहास कर रहे हो? (मूसा ने) कहाः मैं अल्लाह की शरण माँगता हूँ कि मूर्खों में हो जाऊँ।

६८. वह बोले कि अपने पालनहार से हमारे लिये निवेदन करो कि हमें बता दे कि वह गाय कैसी हो ? (मूसा ने) कहाः वह (अर्थातः अल्लाह) कहता है कि वह न बूढ़ी हो, और न बछिया हो, इस के बीच आयु की हो । अतः जो आदेश तुम्हें दिया जा रहा है उसे पूरा करो ।

६९. वह बोले कि अपने पालनहार से हमारे लिये निवेदन करो कि हमें उस का रंग बता दे। (मूसा ने) कहाः वह कहता है कि पीले गहरे रंग की गाय हो। जो देखने वालों को प्रसन्न कर दे ।

७०. वह बोले कि अपने पालनहार से हमारे लिये निवेदन करो कि हमें बताये कि वह किस प्रकार की हो ? वास्तव में हम गाय के बारे में दुविधा में पड़ गये हैं । और यदि अल्लाह ने चाहा तो हम (उस गाय का) पता लगा लेंगे ।

७१. मूसा बोले : वह कहता है कि वह ऐसी गाय हो जो सेवा कार्य न करती हो, ने खेत (भूमि) जोतती हो, और न खेत सींचती हो, वह स्वस्थ हो, और उस में कोई धब्बा न हो । वह बोलेः अब तुम ने उचित बात बताई है। फिर उन्होंने उसे वध कर दिया । जब कि वह समीप थे कि इस काम को न करें।

---

[१] यहूदियों के लिये यह नियम है कि वे शनिवार का आदर करें। और इस दिन कोई सांसारिक कार्य न करें, तथा उपासना करें। परन्तु उन्हों ने इस का उल्लंघन किया और उन पर यह प्रकोप आया।

७२. और (याद करो) जब तुम ने एक व्यक्ति की हत्या कर दी, तथा एक दूसरे पर (दोष) थोपने लगे, और अल्लाह को उसे व्यक्त करना था जिसे तुम छुपा रहे थे।

७३. अतः हम ने कहा कि उस (निहत व्यक्ति के शव) को उस (गाय) के किसी भाग से मारो[1], इसी प्रकार अल्लाह मुर्दो को जीवित करेगा। और वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है, ताकि तुम समझो ।

७४. फिर यह (निशानियाँ देखने) के बाद तुम्हारे दिल पत्थरों के समान या उन से भी अधिक कठोर हो गये। क्योंकि पत्थरों में कुछ ऐसे होते हैं, जिन से नहरें फूट पड़ती हैं। और कुछ फट जाते हैं और उन से पानी निकल आता है। और कुछ अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं। और अल्लाह तुम्हारे कर्तूतों से निश्चेत नहीं है।

७५. क्या तुम आशा रखते हो कि (यहूदी) तुम्हारी बात मान लेंगे, जब कि उन में एक गिरोह ऐसा था जो अल्लाह की वाणी (तौरात) को सुनता था, और समझ जाने के बाद जान बूझ कर उस में परिवर्तन कर देता था ?

७६. तथा जब वह ईमान वालों से मिलते हैं, तो कहते हैं कि हम भी ईमान[2] लाये, और जब एकान्त में आपस में एक दूसरे से मिलते हैं, तो कहते हैं कि तुम उन्हें वह बातें क्यों बताते हो जो अल्लाह ने तुम पर खोली[3] हैं ? इस लिये कि प्रलय के दिन तुम्हारे पालनहार के पास इसे तुम्हारे विरूद्ध प्रमाण बनायें, क्या तुम समझते नहीं हो ?

७७. क्या वह नहीं जानते कि वह जो कुछ छुपाते तथा व्यक्त करते हैं, उस सब को अल्लाह जानता है ?

७८. तथा उन में कुछ अनपढ़ है, वह पुस्तक (तौरात) का ज्ञान नहीं रखते, परन्तु निराधार कामनायें करते, तथा केवल अनुमान लगाते हैं।

---

[1] भाष्यकारों ने लिखा है कि इस प्रकार निहत व्यक्ति जीवित हो गया। और उस ने अपने हत्यारे को बताया, ओर फिर मर गया। इस हत्या के कारण ही बनी इस्राईल को गाय की बलि देने का आदेश दिया गया था। अगर वह चाहते तो किसी भी गाय की बलि दे देते, परन्तु उन्हों ने टाल मटोल से काम लिया, इस लिये अल्लाह ने उस गाय के विषय में कठोर आदेश दिया।

[2] अर्थात मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलेहि व सल्लम पर।

[3] अर्थात अन्तिम नबी के विषय में तौरात में बताई है।

७९. तो विनाश है उन के लिये जो अपने हाथों से पुस्तक लिखते हैं, फिर कहते हैं कि यह अल्लाह की ओर से है, ताकि उस के द्वारा तनिक मूल्य खरीदें । तो विनाश है उन के अपने हाथों के लेख के कारण । और विनाश है उन की कमाई के कारण ।

८०. तथा उन्हों ने कहा कि हमें नरक की अग्नि गिनती के कुछ दिनों के सिवा स्पर्श नहीं करेगी । (हे नबी!) उन से कहो कि क्या तुम ने अल्लाह से कोई वचन ले लिया है, कि अल्लाह अपना वचन भंग नहीं करेगा ? बल्कि तुम अल्लाह के बारे में ऐसी बातें करते हो, जिन का तुम्हें ज्ञान नहीं ।

८१. क्यों[1] नहीं, जो भी बुराई कमायेगा, तथा उस का पाप उसे घेर लेगा, तो वही नारकीय है। और वही उस में सदावासी होंगे ।

८२. तथा जो ईमान लायें और सत्कर्म करें, वही स्वर्गीय हैं। और वह उस में सदावासी होंगे।

८३. और (याद करो) जब हम ने बनी इस्राईल के दृढ़ वचन लिया कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत (वंदना) नहीं करोगे, तथा माता–पिता के साथ उपकार करोगे, और समीपवर्ती संबंधियों, अनाथों, दीन–दुखियों के साथ, और लोगों से भली बात बोलोगे, तथा नमाज की स्थापना करोगे, और जकात दोगे, फिर तुम में से थोड़े के सिवा सब ने मुँह फेर लिया, और तुम (अभी भी) मुँह फेरे हुए हो ।

८४. तथा (याद करो) जब हमने तुम से दृढ़ वचन लिया कि आपस में रक्तपात नहीं करोगे, और न अपनों को अपने घरों से निकालोगे । फिर तुम ने स्वीकार किया, और तुम उस के साक्षी हो ।

८५. फिर[2] तुम वही हो, जो अपनों की हत्या कर रहे हो, तथा अपनों में से एक गिरोह को उन के घरों से निकाल रहे हो, और पाप तथा अत्याचार के साथ उन के विरुद्ध सहायता करते हो, और यदि वे बंदी होकर तुम्हारे पास आयें तो उन का अर्थदण्ड चुकाते हो, जब कि उन को निकालना ही तुम पर हराम (अवैध) था, तो क्या तुम

---

[1] यहां यहूदियों के दावे को खण्डन तथा नरक और स्वर्ग में प्रवेश के नियम का वर्णन है।

[2] मदीने में यहूदियों के तीन कबीलों में बनी कैनुकाअ और बनी नजीर मदीने के अरब कबीले खजूरज के सहयोगी थे। और बनी कुरैजा औस कबीले के सहयोगी थे। जब इन दोनों कबीलों में युद्ध होता तो यहूदी कबीले अपने पक्ष के साथ दूसरे पक्ष के साथी यहूदी की हत्या करते। और उसे बे घर कर देते थे। और युद्ध विराम के बाद पराजित पक्ष के बंदी यहूदी का अर्थदण्ड दे कर यह कहते हुये मुक्त करा देते कि हमारी पुस्तक तौरात का यही आदेश है। इसी का वर्णन अल्लाह ने इस आयत में किया है। (तफसीर इब्ने कसीर)

पुस्तक के कुछ भाग पर ईमान रखते हो, और कुछ का इन्कार करते हो? फिर तुम में से जो ऐसा करते हों, तो उन का दण्ड क्या है? इस के सिवा कि सांसरिक जीवन में अपमान तथा प्रलय के दिन अति कड़ी यातना की ओर फेरे जायें, और अल्लाह तुम्हारे कर्तूतों से निश्चेत नहीं है।

८६. उन्हों ने ही आखिरत (परलोक) के बदले संसारिक जीवन खरीद लिया, अतः उन से यातना मंद नहीं की जायेगी, और न उन की सहायता की जायेगी।

८७. तथा हम ने मूसा को पुस्तक (तौरात) प्रदान की, और उस के पश्चात् निरन्तर रसूल भेजे, और हमने मर्यम के पुत्र ईसा को खुली निशानियाँ दीं, और रूहुल कुदुस[१] द्वारा उसे समर्थन दिया, तो क्या जब भी कोई रसूल तुम्हारी अपनी मनमानी के विरूद्ध कोई बात तुम्हारे पास लेकर आया तो तुम अकड गये, अत: कुछ नबियों को झुठला दिया, और कुछ की हत्या करने लगे?

८८. तथा उन्हों ने कहा कि हमारे दिल तो बंद[२] हैं। बल्कि उन के कुफ़्र (इन्कार) के कारण अल्लाह ने उन्हें धिक्कार दिया है । इसी लिये उन में से बहुत थोडे ही ईमान लाते हैं।

८९. और जब उन के पास अल्लाह की ओर से एक पुस्तक (कुरआन) आ गई, जो उन के साथ की पुस्तक का प्रमाणकारी है, जब कि: इस से पूर्व वह स्वयं काफिरों पर विजय की प्रार्थना कर रहे थे, तो जब उन के पास वह चीज आ गई जिसे वह पहचान भी गये, फिर भी उस का इन्कार कर[३] दिया, तो काफिरों पर आल्लाह की धिक्कार है।

९०. अल्लाह की उतारी हुई (पुस्तक)[४] का इन्कार कर के बुरे बदले पर इन्हों ने अपने प्राणों को बेच दिया, इस द्वेष के कारण कि अल्लाह ने अपना प्रदान (प्रकाशना) अपने

---

[१] रूहुल कुदुस से अभिप्रेत: फरिश्ता जिब्रील अलैहिस्सलाम है।

[२] अर्थात: नबी की बातों का हमारे दिलों पर कोई प्रभाव नहीं पड सकता।

[३] आयत का भावार्थ यह है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस पुस्तक (कुर्आन) के साथ आने से पहले वह काफिरों से युद्ध करते थे, तो उन पर विजय की प्रार्थना करते और बडी व्याकुलता के साथ आप के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे। जिस की भविष्यवाणी उन के नबियों ने की थी, और प्रार्थनायें किया करते थे कि आप शीघ्र आयें, ताकि काफिरों का प्रभुत्व समाप्त हो, और हमारे उत्थान के युग का शुभारंभ हो। परन्तु, जब आप आ गये तो उन्होंने आप के नबी होने का इन्कार कर दिया, क्यों कि अपा बनी इस्राईल में नहीं पैदा हुये, जो यहूदियों का गोत्र है। फिर भी आप इब्राहीम अलैहिस्सलाम ही के पुत्र इस्माईल अलैहिस्सलाम के वंश से है, जैसे बनी इस्राईल उन के पुत्र इस्राईल की संतान है।

[४] अर्थात् कुर्आन।

जिस भक्त[1] पर चाहा उतार दिया। अत: वह प्रकोप पर प्रकोप के अधिकारी बन गये, और ऐसे काफिरों के लिये अपमानकारी यातना है।

९१. और जब उन से कहा जाता है कि अल्लाह ने जो उतारा[2] है, उस पर ईमान लाओ तो कहते हैं: हम तो उसी पर ईमान रखते हैं जो हम पर उतरा है, और इस के सिवा जो कुछ है उस का इन्कार करते हैं। जब कि वह सत्य है । और उस का प्रमाणकारी है जो उन के पास है। कहो कि फिर इस से पूर्व अल्लाह के नबियों की हत्या क्यों करते थे, यदि तुम ईमान वाले थे तो?

९२. तथा मूसा तुम्हारे पास खुली निशानियाँ ले कर आये। फिर तुम ने अत्याचार करते हुए बछडे को पूज्य बना लिया।

९३. फिर उस दृढ़ वचन को याद करो, जो हम ने तुम्हारे ऊपर तूर (पर्वत) उठा कर लिया कि हम ने तुम को जो कुछ दिया है, उसे दृढ़ता से थाम[3] लो, तथा ध्यान से सुनो। तो तुम ने कहा कि हम ने सुन लिया और अवज्ञा की। और उन के दिलों में उन के अविश्वास के कारण बछडा[4] बस गया। (हे नबी!) उन से कह दो कि यदि तुम ईमान रखते हो तो तुम्हारा ईमान तुम्हें कितनी बुरी बातों का आदेश दे रहा है।

९४. तथा उन से कहो कि यदि अल्लाह के हाँ अखिरत (परलोक) का घर[5] केवल तुम्हारे ही लिये है, दूसरों के सिवा, तो मृत्यु की कामना करो[6], यदि तुम सत्यवादी हो।

९५. तथा वह अपने कुकर्मों के कारण कदापि इस की कामना नहीं करेंगे। और अल्लाह अत्याचारियों को भली–भाँति जानता है।

९६. और तुम उन को अवश्य सब लोगों तथा मिश्रणवादियों से भी अधिक जीवन का लोभी पाओगे । इन में से प्रत्येक व्यक्ति हज़ार वर्ष आयु दिये जाने की कामना करता है, जब कि आयु दिया जाना उन्हें यातना से नहीं बचा सकेगा। और अल्लाह उन के कर्मों को देख रहा है।

---

[1] भक्त अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम को नबी बना दिया।

[2] अर्थात् कुर्आन पर।

[3] थामने का अर्थ उस के आदेशों का पालन करना है।

[4] अर्थात् वह बछडे के प्रेम में मुग्ध हो गये ।

[5] अर्थात् स्वर्ग।

[6] मृत्यु की कामना करो, ताकि शीघ्र स्वर्ग में पहुँच जाओ ।

९७. (हे नबी!)[1] कह दो कि जो व्यक्ति जिब्रील का शत्रु है (तो रहे)। उस ने तो अल्लाह की अनुमति से इस संदेश (क़ुर्आन) को आप के दिल पर उतारा है, जो इस से पूर्व की सभी पुस्तकों का प्रमाणकारी तथा ईमान वालों के लिये मार्गदर्शन एवं (सफलता) का शुभ समाचार है।

९८. जो अल्लाह तथा उस के फरिश्तों और उस के रसूलों और जिब्रील तथा मीकाईल का शत्रु हो, तो अल्लाह काफिरों का शत्रु है।[2]

९९. और (हे नबी!) हम ने आप पर खुली आयतें उतारी है, और इस का इनकार केवल वही लोग[3] करेंगे जो कुकर्मी है।

१००.क्या ऐसा नहीं हुआ है कि जब कभी उन्हों ने कोई वचन दिया तो उन के एक गिरोह ने उसे भंग कर दिया? बल्कि इन में बहुतेरे ऐसे हैं जो ईमान नहीं रखते!

१०१.तथा जब उन के पास अल्लाह की ओर से एक रसूल उस पुस्तक का समर्थन करते हुये जो उन के पास है, आ गया[4] तो उन के एक समुदाय ने जिन को पुस्तक दी गई गई अल्लाह की पुस्तक को ऐसे पीछे डाल दिया जैसे वह कुछ जानते ही न हों।

१०२.तथा सुलैमान के राज्य में शैतान जो मिथ्या बातें बना रहे थे उस का अनुसरण करने लगे। जब कि सुलैमान ने कभी कुफ्र (जादू) नहीं किया, परन्तु कुफ्र तो शैतानों ने किया, जो लोगों को जादू सिखा रहे थे, तथा उन बातों को (अनुसरण करने लगे) जो बाबिल (नगर) के दो फरिश्तों हारूत और मारूत पर उतारी गई, और वह दोनों किसी को (जादू) नहीं सिखाते जब तक यह न कह देते कि: हम केवल एक परीक्षा हैं, अतः तू कुफ्र में न पड़। फिर भी वह उन दोनों से वह चीज सीखते जिस के द्वारा वह पति और पत्नी के बीच जुदाई डाल दें। और अल्लाह की अनुमति बिना इस के द्वारा किसी को कोई हानि नहीं पहुंचा सकते थे, परन्तु फिर भी ऐसी बातें सीखते थे

[1] यहूदी, केवल रसूलल्लाह सल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के अनुयायियों ही को बुरा नहीं कहते थे, वह अल्लाह के फरिश्ते जिबरील को भी गालियां देते थे कि वह दया का नहीं, प्रकोप का फरिश्ता है। और कहते थे कि हमारा मित्र मिकाईल है।

[2] आयत का भावार्थ यह है कि जिस ने अल्लाह के किसी रसूल चाहे वह फरिश्ता हो या इनसान से बैर रखा तो वह सभी रसूलों का शत्रु तथा कुकर्मी है। (इब्ने कसीर)

[3]. इब्ने अब्बास रजियल्लाह अन्हुमा कहते है कि यहूदियों के विद्धान इब्ने सूरिया ने कहाः हे मुहम्मद। (सल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप हमारे पास कोई ऐसी चीज नहीं लाये जिसे हम पहचानते हों। और न आप पर कोई खुली आयत उतारी गई कि हम आप का अनुसरण करें। इस पर यह आयत उतरी। (इब्ने जरीर)

[4] अर्थात मुहम्मद सल्लाहु अलैहि व सल्लम क़ुर्आन के साथ आ गये।

जो उन के लिये हानिकारक हों, और लाभकारी न हों। और वह भली भाँति जानते थे कि जो इस का खरीदार बना परलोक में उस का कोई भाग नहीं, तथा कितना बुरा उपभोग्य है जिस के बदले वह अपने प्राणों का सौदा कर रहे है[1], यदि वह जानते होते।

१०३.और यदि वह ईमान लाते, और अल्लाह से डरते, तो अल्लाह के पास इस का जो प्रतिकार (बदला) मिलता, वह उन के लिये उत्तम होता, यदि वह जानते होते।

१०४.हे ईमान वालो! तुम ''राइना''[2] न कहो, ''उन्जुरना'' कहो, और ध्यान से बात सुनो, तथा काफिरों के लिये दुखदायी यातना है।

१०५.अहले किताब में से जो काफिर हो गये, तथा जो मिश्रणवादी हो गये. यह नहीं चाहते कि तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम पर कोई भलाई उतारी जाये, और अल्लाह जिस पर चाहे अपनी विशेष दया करता है, और अल्लाह बड़ा दानशील है।

१०६.हम अपनी कोई आयत निरस्त कर देते अथवा भुला देते हैं तो उस से उत्तम अथवा उस के समान लाते हैं। क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह जो चाहे[3] कर सकता है?

१०७.क्या तुम यह नहीं जानते किः अकाशों तथा धरती का राज्य अल्लाह ही के लिये हैं, और उस के सिवा तुम्हारा कोई रक्षक और सहायक नहीं है?

१०८.क्या तुम चाहते हो कि अपने रसूल से उसी प्रकार प्रश्न करो, जैसे मूसा से प्रश्न किये जाते रहे? और जो व्यक्ति ईमान की नीति को कुफ्र से बदल लेगा तो वह सीधी डगर से विचलित हो गया.

१०९.अहले किताब में से बहुत से चाहते हैं कि तुम्हारे ईमान लाने के पश्चात अपने द्वेष के कारण तुम्हें कुफ्र की ओर फेक दें। जब कि सत्य उन के लिये उजागर हो गया, फिर

---

[1] इस आयत का दूसरा अर्थ यह भी किया गया है कि सुलैमान ने कुफ्र नहीं किया, परन्तु शैतानों ने कुफ्र किया, वह मानव को जादू सिखाते थे। और न दो फरिश्तों पर जादू उतारा गया, उन शैतानों या मानव में से हारूत तथा मारूत जादू सिखाते थे। (तफसीरे कुर्तुबी)। जिस ने प्रथम अनुवाद किया है उस का यह विचार है कि मानव के रूप में दो फरिश्तों को उन की परीक्षा के लिये भेजा गया था। सुलैमान अलैहिस्सलाम एक नबी और राजा हुये है। आप दावूद अलैहिस्सलाम के पुत्र थे।

[2] इब्ने अब्बास रजियाल्लाह अन्हुमा कहते है कि रसूलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम की सभा में यहूदी भी आ जाते थे। और मुसलमानों को आप से कोई बात समझनी होती तो ''राइना'' कहते। अर्थातः हम पर ध्यान दीजिये, या हमारी बात सुनिये। इबरानी भाषा में इस लिये मुसलमानों को आदेश दिया गया किः इस के स्थान पर तुम ''उन्जुरना'' कहा करो। अर्थात हमारी ओर देखिये। (तफसीरे कुर्तबी)

[3] इस आयत में यहूदियों के तौरात के आदेशों के निरस्त किये जाने तथा ईसा अलैहिस्सलाम और मुहम्मद सल्लालाहु अलैहि व सल्लम की नुबूव्वत के इन्कार का खण्डन किया गया है।

भी तुम क्षमा से काम लो और जाने दो। यहाँ तक कि अल्लाह अपना निर्णय कर दे। निश्चय अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

११०.तथा तुम नमाज की स्थापना करो, और जकात दो। और जो भी भलाई अपने लिये किये रहोगे, उसे अल्लाह के यहाँ पाओगे। तुम जो कुछ कर रहे हो अल्लाह उसे देख रहा है।

१११.तथा उन्हों ने कहा कि कोई स्वर्ग में कदापि नहीं जायेगा, जब तक यहूदी अथवा नसारा[१] (ईसाई) न हो। यह उन की कामनायें हैं। उन से कहो कि यदि तुम सत्यवादी हो तो कोई प्रमाण प्रस्तुत करो।

११२.क्यों नहीं?[२] जो भी स्वयं को अल्लाह की आज्ञा का पालन के समर्पित कर देगा, तथा सदाचारी होगा तो उस के पालनहार के पास उस का प्रतिफल है। और उन पर कोई भय नहीं होगा, और न वह उदासीन होंगे।

११३.तथा यहूदियों ने कहा कि ईसाईयों के पास कुछ नहीं। और ईसाईयों ने कहा कि यहूदियों के पास कुछ नहीं है। जब कि वह धर्म पुस्तक[३] पढते हैं। इसी जैसी बात उन्हों ने भी कही, जिन के पास धर्मपुस्तक का कोई ज्ञान[४] नहीं, यह जिस विषय में विभेद कर रहे हैं। उस का निर्णय अल्लाह प्रलय के दिन उन के बीच कर देगा।

११४.और उस से बडा अत्याचारी कौन होगा, जो अल्लाह की मस्जिदी मे उस के नाम का वर्णय करने से रोके। और उन्हें उजाडने का प्रयत्न करो[५], उन्हीं के लिये योग्य है कि उस में डरते हुये प्रवेश करें, उन्हीं के लिये संसार में अपमान है, और उन्ही के लिये आखिरत (परलोक) में घोर यातना है।

११५.तथा पूर्व और पश्चिम अल्लाह ही के हैं, तुम जिधर भी मुख करो[६] उधर ही अल्लाह का सुख है। और आल्लाह विशाल अति ज्ञानी है।

---

[१] अर्थात यहूदियों ने कहा कि केवल यहूदी जायेंगे, और ईसाईयों ने कहा कि केवल ईसाई जायेंगे।

[२] स्वर्ग में प्रवेश का साधारण नियम अर्थात मुक्ति एकेश्वरवाद तथा सदाचार पर आधारित है, किसी जाति अथवा गिरोह पर नहीं।

[३] अर्थात तौरात तथा इंजील जिस में सब नबियों पर ईमान लाने का आदेश दिया गया है।

[४] धर्म पुस्तक के अज्ञान अरब थे। जो यह कहते थे कि: (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास कुछ नहीं है।

[५] जैसे मक्का वासियों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के साथियों को सन् ६ हिजरी में काबा में आने से रोक दिया। या ईसाईयों ने बैतुल मुकद्दस् को ढाने में बुख्त नस्सर (राजा) की सहायता की।

[६] अर्थात अल्लाह के आदेशानुसार जिधर भी रूख करोगे तुम्हें अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त होगी।

११६.तथा उन्हों ने कहा[1] की अल्लाह ने कोई संतान बना ली। वह इस से पवित्र है। आकाशों तथा धरती में जो भी है, वह उसी का है, और सब उसी के आज्ञाकारी हैं।

११७.वह आकाशों तथा धरती का अविष्कारक है। जब वह किसी बात का निर्णय कर लेता है तो उसके लिये बस यह आदेश देता है कि ''हो जा'' और वह हो जाती है।

११८.तथा उन्होंने कहा जो ज्ञान[2] नहीं रखते कि अल्लाह हम से बात क्यों नहीं करता. या हमारे पास कोई आयत क्यों नहीं आती। इसी प्रकार की बात इनसे पहले के लोगों ने कही थी। इन के दिल एक समान हो गये। हम ने उन के लिये निशानियाँ उजागर कर दी हैं जो विश्वास रखते हैं।

११९.(हे नबी!) हम ने आप को सत्य के साथ शुभ सूचना देने तथा सावधान[3] करने वाला बना कर भेजा है। और आप से नारकियों के विषय में प्रश्न नहीं किया जायेगा।

१२०.हे नबी! आप से यहूदी तथा ईसाई सहमत (प्रसन्न) नहीं होंगे, जब तक आप उन की रीति पर न चलें। कह दो कि सीधी डगर वही है जो अल्लाह ने बताई है। और यदि आप ने उन की आकांक्षाओं का अनुसरण किया, इस के पश्चात् कि आप के पास ज्ञान आ गया, जो अल्लाह (की पकड) से आप का कोई रक्षक और सहायक नहीं होगा।

१२१.और हम ने जिन को पुस्तक प्रदान की है, और उसे वैसे पढ़ते हैं, जैसे पढ़ना चाहिये, वही उस पर ईमान रखते हैं। और जो उसे नकारते हैं वही क्षतिग्रस्तों में से हैं।

१२२.हे बनी इस्राईल! मेरे उस पुरस्कार को याद करो जो तुम पर किया। और यह कि तुम्हें (अपने युग के) संसार–वासियों पर प्रधानता दी थी।

१२३.तथा उस दिन से डरो जब कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति के कुछ काम नहीं आयेगा, और न उस से कोई अर्थदण्ड स्वीकार किया जायेगा, और न उसे कोई अनुशंसा (सिफारिश) लाभ पहुँचायेगी, और न उन की कोई सहायता की जायेगी।

---

[1] अर्थात यहूद और नसारा तथा मिश्रणवादियों ने।

[2] अर्थात अरब के मिश्रणवादियों ने।

[3] अर्थात सत्य ज्ञान के अनुपालन पर स्वर्ग की शुभ सूचना देने, तथा इन्कार पर नरक से सावधान करने के लिये। इस के पश्चात् भी कोई न माने तो आप उस के उत्तरदायी नहीं है।

१२४.और (याद करो) जब इब्राहीम की उस के पालनहार ने कुछ बातों से परीक्षा ली। और वह उस में पूरा उतरा. तो उस ने कहा कि मैं तुम्हें सब इन्सानों का इमाम (धर्मगुरू) बनाने वाला हूँ। (इब्राहीम ने) कहा: तथा मेरी सन्तान से भी। (अल्लाह ने कहा:) मेरा वचन उन के लिये नहीं जो अत्याचारी हैं।

१२५.और (याद करो) जब हम ने इस घर (अर्थात: काबा) को लोगों के लिये बार बार आने का केन्द्र तथा शान्ति स्थल निर्धारित कर दिया। तथा यह आदेश दे दिया कि ''मकामे इब्राहीम'' को नमाज का स्थान[१] बना लो। तथा इब्राहीम और इस्माईल को आदेश दिया कि मेरे घर को तवाफ (परिक्रमा) तथा एतिकाफ[२] करने वालों, और सज्दा तथा रूकू करने वालों के लिये पवित्र रखो।

१२६.और (याद करो) जब इब्राहीम ने अपने पालनहार से प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! इस छेत्र को शान्ति का नगर बना दे। तथा इस के वासियों को जो उन में से अल्लाह और अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान रखे, विभिन्न प्रकार की उपज (फलों) से आजीविका प्रदान कर। (अल्लाह ने) कहा: तथा जो काफिर हैं उन्हें भी मैं थोड़ा लाभ दूँगा, फिर उसे नरग की यातना की ओर बाध्य कर दूँगा। और वह बहुत बुरा स्थान है।

१२७.और (याद करो) जब इब्राहीम और ईस्माईल इस घर की नींव ऊँची कर रहे थे। तथा प्रार्थना कर रहे थे: हे हमारे पालनहार! हम से यह सेवा स्वीकार कर ले। तू ही सब कुछ सुनता और जानता है।

१२८.हे हमारे पालनहार! हम दोनों को अपना आज्ञाकारी बना। तथा हमारी संतान से एक ऐसा समुदाय बना दे जो तेरा आज्ञाकारी हो। और हमें हमारे (हज्ज) की विधियाँ बता दे। तथा हमें क्षमा कर। वास्तव में तू अतिक्षमी दयावान् है।

१२९.हे हमारे पालनहार! उन के बीच इन्ही में से एक रसूल भेज, जो उन्हें (कुर्आन) तथा हिक्मत (सुन्नत) की शिक्षा दे। और उन्हें शुद्ध तथा प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ[३] है।

---

[१] ''मकामे इब्राहीम'' से तात्पर्य वह पत्थर है जिस पर खडे हो कर उन्हों ने कावा का निर्माण किया। जिस पर उन के पदचिन्ह आज भी सुरक्षित है। तथा तवाफ के पश्चात् वहाँ दो रकअत नमाज पढनी सुन्नत है।

[२] ''एतिकाफ'' का अर्थ किसी मस्जिद में एकांत में हो कर अल्लाह की इबादत करना है।

[३] यह इब्राहीम तथा इस्माईल अलैहिमस्सलाम की प्रार्थना का अंत है। एक रसूल से अभिप्रेतः मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम है। क्योंकि इसमाईल अलैहिस्सलाम की संतान में आप के सिवा कोई दूसरा रसूल नहीं हुआ। हदीस में है कि आप सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः मैं अपने पिता इब्राहीम की प्रार्थना, ईसा की शुभ सूचना , तथा अपनी माता का

१३०.तथा कौन होगा, जो इबराहीम के धर्म से विमुख हो जाये परन्तु वही जो स्वयं को मूर्ख बना ले? जब कि हम ने उसे संसार में चुन[1] लिया, तथा अखिरत (परलोक) में उस की गणना सदाचारियों में होगी।

१३१.तथा (याद करो) जब उस के पालनहार ने उस से कहाः मेरा आज्ञकारी हो जा। तो उस ने तुरन्त कहाः मैं विश्व के पालनहार का आज्ञाकारी हो गया।

१३२.तथा इबराहीम ने अपने पुत्रों को तथा याकूब ने इसी बात पर बल दिया किः मेरे पुत्रो! अल्लाह ने तुम्हारे लिये यह धर्म (इस्लाम) निर्वाचित कर दिया है। अतः मरते समय तक तुम इसी पर स्थिर रहना।

१३३.क्या तुम याकूब के मरने के समय उपस्थित थे, जब याकूब ने अपने पुत्रों से कहाः मेरी मृत्यु के पश्चात् तुम किस की इबादत (वंदना) करोगे? उन्हों ने कहाः हम तेरे तथा तेरे पिता इब्राहीम और इस्माईल तथा इसहाक के एक पूज्य की इबादत (वंदना) करेंगे, और उसी के आज्ञाकारी रहेंगे।

१३४.यह एक समुदाय था जो जा चुका। उन्हों ने जो कर्म किये वे उन के लिये है। तथा जो तुम ने किये वह तुम्हारे लिये। और उन के किये का प्रश्न तुम से नहीं किया जायेगा।

१३५.और वह कहते हैं कि यहूदी हो जाओ अथवा ईसाई हो जाओ, तुम्हें मार्गदर्शन मिल जायेगा। आप कह देंः नहीं। हम तो एकेश्वरवादी इब्राहीम के धर्म पर हैं, और वह मिश्रणवादियों में से नहीं था।

१३६.(हे मुसलमानो!) तुम सब कहो कि हम अल्लाह पर ईमान लाये, तथा उस पर जो (कुर्आन) हमारी ओर उतारा गया। और उस पर जो इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक, याकूब, तथा उन की संतान की ओर उतारा गया। और जो मुसा तथा ईसा को दिया गया, तथा जो दूसरे नबियों को उन के पालनहार की ओर से दिया गया। हम इन में से किसी के बीच अन्तर नहीं करते, और हम उसी के आज्ञाकारी हैं।

स्वप्न हूँ. आप की माता आमिना ने गर्भ अवस्था में एक स्वप्न देखा कि मुझ से एक प्रकाश निकला, जिस से शाम (देश) के भवन प्रकाशमान हो गये। (देखियेः हाकिम २६००)। इस को उन्हों ने सहीह कहा है। और इमाम जह्बी ने इस की पुष्टि की है।

[1] अर्थात मार्गदर्शन देने तथा नबी बनाने के लिये निर्वाचित कर लिया।

१३७.तो यदि वह तुम्हारे ही समान ईमान ले आयें, तो वह मार्गदर्शन पा लेंगे। और यदि विमुख हों तो वह विरोध में लीन हैं। उन के विरूद्ध तुम्हारे लिये अल्लाह बस है। और वह सब सुनने वाला और जानने वाला है।

१३८.तुम सब अल्लाह के रंग[१] (स्वाभाविक धर्म) को ग्रहण कर लो। और अल्लाह के रंग से अच्छा किस का रंग होगा? हम तो उसी की इबादत (वंदना) करते हैं।

१३९.(हे नबी!) कह दो किः क्या तुम हम से अल्लाह के (एकत्व) होने के विषय में झगड़ते हो? जब कि वही हमारा तथा तुम्हारा पालनहार है।[२] फिर हमारे लिये हमारा कर्म है, और तुम्हारे लिये तुम्हारा कर्म है। और हम तो बस उसी की इबादत (वंदना) करने वाले है।

१४०. हे अहले किताब! क्या तुम कहते हो कि इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक, याकूब तथा उन की संतान यहूदी या ईसाई थी? उन से कह दो कि तुम अधिक जानते हो अथवा अल्लाह? और उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा। जिस के पास अल्लाह का साक्ष्य हो. और उसे छुपा दे? और अल्लाह तुम्हारे कर्तूतों से अचेत तो नहीं है[३]।

१४१.यह एक समुदाय था, जो जा चुका। उन के लिये उन का कर्म है, तथा तुम्हारे लिये तुम्हारा कर्म है। तुम से उन के कर्मो के बारे में प्रश्न नहीं किया जायेगा[४]।

१४२.शीघ्र ही मूर्ख लोग कहेंगे कि उन को जिस किबले[५] पर वह थे, उस से किस बात ने फेर दिया? (हे नबी!) उन्हे बता दो कि पूर्व और पश्चिम सब अल्लाह के हैं। वह जिसे चाहे सीधी राह पर लगा देता है।

१४३.और इसी प्रकार हम ने तुम्हें मध्यवर्ती उम्मत (समुदाय) बना दिया, ताकि तुम सब पर साक्षी[६] बनो रसुल तुम पर साक्षी हों, और हम ने वह किबला जिस पर तुम थे,

---

[१] इस में ईसाई धर्म की (बैटिज्म) की परम्परा का खण्डन है। ईसाईयों ने पीले रंग का जल बना रखा था। और जब कोई ईसाई होता या उन के यहां कोई शिशु एकेश्वरवाद पर आधारित स्वभाविक धर्म इस्लाम है।(तफसीरे कुर्तुबी)

[२] अर्थात फिर वंदनीय भी केवल वही है।

[३] इस में यहूदियों तथा ईसाईयों के इस दावे का खण्डन किया गया है कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम आदि नबी यहूदी अथवा ईसाई थे।

[४] अर्थात तुम्हारे पूर्वजों के सदाचारों से तुम्हें कोई लाभ नहीं होगा, और न उन के पापों के विषय में तुम से प्रश्न किया जायेगा, अतः अपने कर्मों पर ध्यान दो।

[५] नमाज में मुख करने की दिशा।

[६] साक्षी होने का अर्थ जैसा कि हदीस में आया है यह है कि प्रलय के दिन नूह अलैहिस्सलाम को बुलाया जायेगा और उन से प्रश्न किया जायेगा कि क्या तुम ने अपनी जाति को संदेश पहुंचाया? वह कहेंगेः हाँ। फिर उन की जाति से प्रश्न किया

इसी लिये बनाया था ताकि यह बात खोल दें कि कौन (अपने धर्म से) फिर जाता है। और यह बात बड़ी भारी थी, परन्तु उन के लिये नहीं जिन्हें अल्लाह ऐसा नहीं कि तुम्हारे ईमान (अर्थात) बैतुलमक्दिस की दिशा में नमाज पढ़ने) को व्यर्थ कर दे,[१] वास्तव में अल्लाह लोगों के लिये अत्यन्त करूणामय तथा दयावान् है।

१४४.(हे नबी!) हम आप के मुख को बार बार आकाश की ओर फिरते देख रहे हैं। तो हम अवश्य आप को उस किबले (काबा) की ओर फेर देंगे जिस से आप प्रसन्न हो जायें। तो (अब) अपना मुख मस्जिदे हराम की ओर फेर लो[२], तथा (हे मुसलमानो।) तुम भी जहाँ रहो उसी की ओर मुख किया करो। और निश्चय अहले किताब जानते हैं कि यह उन के पालनहार की ओर से सत्य है,[३] और अल्लाह उन के कर्मों से असूचित नहीं है।

१४५.और यदि आप अहले किताब के पास प्रत्येक प्रकार की निशानी ला दें तब भी वह आप के किबले का अनुसरण नहीं करेंगे । और न आप उन के किबले का अनुसरण करेंगे, और न उन में से कोई दूसरे के किबले का अनुसरण करेगा । और यदि ज्ञान आने के पश्चात आप ने उन की अकांक्षाओं का अनुसरण किया तो आप अत्याचारियों में से हो जायेंगे।

१४६.और जिन्हें हम ने पुस्तक दी है वह आप को ऐसे ही[४] पहचानते हैं जैसे अपने पुत्रों को पहचानते हैं। और उन का एक समुदाय जानते हुये भी सत्य को छुपा रहा है।

१४७.सत्य वही है जो आप के पालनहार की ओर से उतारा गया। अत: आप कदापि सन्देह करने वालों में न हों।

जायेगा, तो वह कहेंगे कि हमारे पास सावधान करने के लिये कोई नहीं आया। तो अल्लाह तआला नूह अलैहिस्सलाम से कहेगा कि तुम्हारा साक्षी कौन है? वह कहेंगेः मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम और उन की उम्मत। फिर आप की उम्मत साक्ष्य देगी कि नूह ने अल्लाह का संदेश पहुंचाया है। और आप सल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम पर अर्थात मुसलमानों पर साक्षी होंगे। (सहीह बुखारी, ४४८६)

[१] अर्थात उस का फल प्रदान करेगा।

[२] नबी सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का से मदीना प्रस्थान करने के पश्चात, बैतुलमक्दिस की ओर मुख कर के नमाज पढ़ते रहे। फिर आप को काबा की और मुख कर के नमाज पढ़ने का आदेश दिया गया।

[३] क्योंकि अंतिम नबी के गुणों में उन की पुस्तकों में बताया गया है कि वह किब्ला बदल देंगे।

[४] आप के उन गुणों के कारण जो उन की पुस्तकों में अंतिम नबी के विषय वर्णित किये गये है।

१४८.प्रत्येक के लिये एक दिशा है, जिस की ओर वह मुख कर रहा है। अत: तुम भलाईयों में अग्रसर बनो । तुम जहाँ भी रहोगे अल्लाह तुम सभी को (प्रलय के दिन) ले आयेगा। निश्चय अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

१४९.और आप जहाँ भी निकलें अपना मुख मस्जिदे हराम की ओर फेरें। नि:सन्देह यह आप के पालनहार की ओर से सत्य (आदेश) है, और अल्लाह तुम्हारे कर्मो से असूचित नहीं है।

१५०.और आप जहाँ से भी निकलें, अपना मुख मस्जिदे हराम की ओर फेरें, और (हे मुसलमानो!) तुम जहाँ भी रहो अपने मुखों को उसी की ओर फेरो, ताकि उन को तुम्हारे विरूद्ध किसी विवाद का अव्सर न मिले। मगर उन लोगों के अतिरिक्त जो अत्याचार करें। अत: उन से न डरो। मुझी से डरो। और ताकि मैं तुम पर अपना पुरस्कार (धर्मविधान) पूरा कर दूँ। और ताकि तुम सीधी डगर पा जाओ।

१५१.जिस प्रकार हम ने तुम्हारे लिये तुम्हीं में से एक रसूल भेजा जो तुम्हें हमारी आयतें सुनाता तथा तुम को शुद्ध आज्ञाकारी बनाता है, और तुम्हें पुस्तक (कुरआन) तथा हिक्मत (सुन्नत) सिखाता है, तथा तुम्हें वह बातें सिखाता है जो तुम नहीं जानते थे।

१५२. अत: मुझे याद करो,[१] मैं तुम्हें याद करूँगा[२] और मेरे आभारी रहो। और मेरे कृतघ्न न बनो।

१५३.हे ईमान वालो! धैर्य तथा नमाज का सहारा लो, निश्चय अल्लाह धैर्यवानों के साथ है।

१५४.तथा जो अल्लाह की राह में मारे जायें उन्हें मुर्दा न कहो, बल्कि वह जीवित है, परन्तु तुम (उन के जीवन की दशा) नहीं समझते।

१५५.तथा हम अवश्य कुछ भय, भूक तथा धनों और प्राणों तथा खाद्य पदार्थों की कमी से तुम्हारी परीक्षा करेंगे, और धैर्यवानों को शुभ समाचार सुना दो।

१५६.जिन पर कोई आपदा आ पड़े तो कहते हैं कि हम अल्लाह के हैं, और हमें उसी के पास फिर कर जाना है।

१५७.इन्हीं पर उन के पालनहार की कृपायें तथा दया है, और यही सीधी राह पाने वाले हैं।

---

[१] अर्थात मेरी आज्ञा का अनुपालन और मेरी अराधना करो।

[२] अर्थात अपनी क्षमा और पुरस्कार द्वारा।

१५८.बेशक सफा तथा मरवा पहाड़ी[१] अल्लाह (के धर्म) की निशानियों में से है। अत: जो अल्लाह के घर का हज्ज या उमरह करे तो उस पर कोई दोष नहीं कि उन दोनों का फेरा लगाये। और जो स्वेच्छा से भलाई करे, तो नि:सन्देह अल्लाह उस का गुणग्राही अति ज्ञानी है।

१५९. तथा जो हमारी उतारी हुई आयतों (अन्तिम नबी के गुणों) तथा मार्गदर्शन को इस के पश्चात् कि: हम ने पुस्तक[२] में उसे लोगों के लिये उजागर कर दिया है, छुपाते हैं उन्हीं को अल्लाह धिक्कारता है[३], तथा सब धिक्कारने वाले धिक्कारते हैं।

१६०.और जिन लोगों ने तोबा (क्षमा याचना) कर ली, और सुधार कर लिया, और उजागर कर दिया, तो मैं उन की तोबा स्वीकार कर लूँगा, तथा मैं अत्यन्त क्षमाशील दयावान हूँ।

१६१.वास्तव में जो काफिर (अविश्वासी) हो गये, और इसी दशा में मरे तो वही है जिन पर अल्लाह तथा फरिश्तों और सब लोगों की धिक्कार है।

१६२.वह इस (धिक्कार) में सदावासी होंगे, उन से यातना मंद नहीं की जायेगी, और न उन को अवकाश दिया जायेगा।

१६३.और तुम्हारा पूज्य एक ही[४] पूज्य है, उस अत्यन्त दयालु, दयावान के सिवा कोई पूज्य नहीं।

१६४.बेशक आकाशों तथा धरती की रचना में रात तथा दिन के एक दूसरे के पीछे निरन्तर आने जाने में, उन नावों में जो मानव के लाभ के साधनों को लिये सागरों में चलती फिरती है, और वर्षा के उस पानी में जिसे अल्लाह आकाश से बरसाता है, फिर धरती को उस के द्वारा उस के मरण (सूखने) के पश्चात् जीवित करता है, और उसमें प्रत्येक जीवों को फैलाता है, तथा वायुओं को फेरने में, और धरती के बीच उस की

---

[१] यह दो पर्वत है जो काबा की पूर्वी दिशा में स्थित है। जिन के बीच सात फेरे लगाना हज्ज तथा उमरे का अनिवार्य कर्म है। जिस का आरंभ सफा पर्वत से करना सुन्नत है।

[२] अर्थात तौरात, इंजीलआदि पुस्तकों में।

[३] अल्लाह के धिक्कारने का अर्थ अपनी दया से दूर करता है।

[४] अर्थात जो अपने अस्तित्व तथा नामों और गुणों तथा कर्मों में अकेला है।

आज्ञा[१] के अधीन रहते हैं, (इन सब चीजों में) अगणित निशानियाँ (लक्षण) हैं, उन लोगों के लिये जो समझ बूझ रखते हैं।

१६५.कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो अल्लाह के सिवा दूसरों को उस का साझी बनाते हैं, और उन से, अल्लाह से प्रेम करने जैसा प्रेम करते हैं, तथा जो ईमान लाये वह अल्लाह से सर्वाधिक प्रेम करते हैं, और क्या ही अच्छा होता यदि यह अत्याचारी यातना देखने के समय[२] जो बात जानेंगे इसी समय[३] जानते कि सब शक्ति तथा अधिकार अल्लाह ही को है। और अल्लाह का दण्ड भी बहुत कड़ा है (तो अल्लाह के सिवा दूसरे की पूजा अराधना नहीं करते।)

१६६.जब यह दशा[४] होगी कि जिस का अनुसरण किया गया[५] वह अपने अनुयायियों से विरक्त हो जायेंगे, और उन के आपस के सभी सम्बन्ध[६] टूट जायेंगे ।

१६७.तथा जो अनुयायी होंगे, वह यह कामना करेंगे कि एक बार और हम संसार में जाते, तो इन से ऐसे ही विरक्त हो जाते जैसे यह हम से विरक्त हो गये। ऐसे ही अल्लाह उन के कर्मों को उन के लिये संताप बना कर दिखाएगा, और वह अग्नि से निकल नहीं सकेंगे।

१६८.हे लोगो! धरती में जो अनुसरण किया गया हलाल (वैध) स्वच्छ चीजें हैं उन्हें खाओ। और शैतान की बताई राहों पर न चलो[७], वह तुम्हारा खुला शत्रु है।

१६९.वह तुम को बुराई तथा निर्लज्ञा का आदेश देता है, और यह कि अल्लाह पर उस चीज का आरोप[८] धरो, जिसे तुम नहीं जानते हो।

१७०.और जब उन[९] से कहा जाता है कि जो (कुर्आन) अल्लाह ने उतारा है, उस पर चलो, चलो, तो कहते हैं कि हम तो उसी रीति पर चलेंगे जिस पर अपने पूर्वजों को पाया है

---

[१] अर्थात इस विश्व की पूर व्यवस्था इस बात का तर्क और प्रमाण है कि इस का व्यवस्थापक अल्लाह ही एकमात्र पूज्य तथा अपने गुण कर्मों में एकता है। अत: पूजा अर्चना भी उसी एक की होनी चाहिये। यही समझ बूझ का निर्णय है

[२] अर्थात प्रलय के दिन।

[३] अर्थात संसार ही में।

[४] अर्थात प्रलय के दिन।

[५] अर्थात संसार में जिन प्रमुखों का अनुसरण किया गया।

[६] अर्थात सामीप्य, अनुसरण तथा धर्म अदि के।

[७] अर्थात उस की बताई बातों को न मानो।

[८] अर्थात वैध को अवैध करने आदि का।

[९] अर्थात अहले किताब तथा मिश्रणवादियों से।

क्या यदि उन के पूर्वज कुछ न समझते रहे, तथा कुपथ पर रहे हों (तब भी वह उन्हीं का अनुसरण करते रहेंगे?)

१७१.उन की दशा जो काफिर हो गये उस के समान है जो उस (पशु) को पुकारता है, जो हॉक पुकार के सिवा कुछ[1] नहीं सुनता, यह (काफिर) बहरे, गूँगे तथा अँधे हैं। इस लिए कुछ नहीं समझते।

१७२.हे ईमान वालो! उन स्वच्छ चीजों में से खाओ जो हम ने तुम्हें दी है। तथा अल्लाह की कृतज्ञता का वर्णन करो। यदि तुम केवल उसी की इबादत (वंदना) करते हो।

१७३.(अल्लाह) ने तुम पर मुर्दार[2] तथा (बहता) रक्त और सुअर का माँस, तथा जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम पुकारा गया हो उन को हराम (निषेध) कर दिया है। फिर भी जो विवश हो जाये जब कि वह नियम न तोड़ रहा हो, और आवश्यकता की सीमा का उल्लंघन न कर रहा हो तो उस पर कोइ दोष नहीं। अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।[3]

१७४.वास्तव में जो लोग अल्लाह की उतारी पुस्तक (की बातों) को छुपा रहे हैं, और उस के बदले तनिक मूल्य प्राप्त कर लेते है, वही अपने उदर में केवल अग्नि भर रहे हैं। तथा अल्लाह उन से बात नहीं करेगा, और न उन को विशुद्ध करेगा। और उन्हीं के लिये दु:खदायी यातना है।

१७५. यही वह लोग हैं जिन्होंने सुपथ (मार्गदर्शन) के बदले कुपथ खरीद लिया है। तथा क्षमा के बदले यातना। तो नरक की अग्नि पर वह कितने सहनशील हैं?

१७६.इस यातना के अधिकारी वह इस लिये हुये कि अल्लाह ने पुस्तक को सत्य के साथ उतारा। और जो पुस्तक में विभेद कर बैठे। वह वास्तव में विरोध में बहुत दूर निकल गये।

१७७.भलाई यह नहीं है कि तुम अपने मुख को पूर्व अथवा पश्चिम की ओर फेर लो। भला कर्म तो उस का है। जो अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान लाया । तथा

[1] अर्थात ध्वनि सुनता है परन्तु बात का अर्थ नहीं समझता।

[2] जिसे धर्म विधान के अनुसार बध न किया गया हो, अधिक विवरण सूरह माइदह में आ रहा है।

[3] अर्थात ऐसा विवश व्यक्ति जो हलाल जीविका न पा सके उस के लिये निषेध नहीं कि वह अपनी आवश्यकतानुसार हराम चीजें चीजें खा ले। परन्तु उस पर अनिवार्य है कि वह उस की सीमा का उल्लंघन न करे और जहाँ उसे हलाल जीविका मिल जाये वहाँ हराम खाने से रूक जायें।

फरिश्तों और सब पुस्तकों तथा नबियों पर, तथा धन का मोह रखते यात्रियों तथा याचकों (फकीरों) को और दास मुक्ति के लिये दिया, और नमाज की स्थापना की, तथा जकात दी, और अपने वचन को, जब भी वचन दिया, पूरा करते रहो। और विर्धनता और रोग तथा युद्ध की स्थिती में धैर्यवान रहे। यही लोग सच्चे हैं, तथा यही अल्लाह से डरते[१] हैं।

१७८.हे ईमान वालो! तुम पर निहत व्यक्तियों के बारे में किसास (बराबरी का बदला) अनिवार्य[२] कर दिया गया है। स्वतंत्र का बदला स्वतंत्र से लिया जायेगा, तथा दास का दास से, और नारी का नारी से, और जिस अपराधी के लिये उस के भाई की ओर से कुछ क्षमा कर[३] दिया जाये, तो उसे सामान्य नियम का अनुसरण (अनुपालन) करना चाहिये। निहत व्यक्ति के वारिस को भलाई के साथ दियत (अर्थदण्ड) चुका देना चाहिये। यह तुम्हारे पालनहार की ओर से सुविधा तथा दया है। इस पर भी जो अत्याचार करे[४] तो उस के लिये दु:खदायी यातना है।

१७९.और हे समझ वालो! तुम्हारे लिये (क़िसास के नियम में) जीवन है, ताकि तुम रक्तपात से बचो।[५]

१८०.और जब तुम में से किसी के निधन का समय हो, और वह धन छोड़ रहा हो तो उस पर माता पिता और समीपवर्तियों के लिये साधारण नियमानुसा वसिय्यत (उत्तरदान) करना अनिवार्य कर दिया गया है। यह आज्ञाकारियों के लिये सुनिश्चित[१] है।

---

[१] इस आयत का भावार्थ यह है कि नमाज में किब्ले की ओर मुख करना अनिवार्य है, फिर भी सत्धर्म इतना ही नहीं कि धर्म की किसी एक बात को अपना लिया जाये। सत्धर्म तो सत्य आस्था, सत्कर्म और पूरे जीवन को अल्लाह की आज्ञा के अधीन कर देने का नाम है।

[२] अर्थात यह नहीं हो सकता कि निहत की प्रधानता अथवा उच्च वंश का होने के कारण कई व्यक्ति मार दिये जायें, जैसा कि इस्लाम से पूर्व जाहिलिय्यत की रीति थी कि एक के बदले कई को ही नहीं, यदि निर्बल कबीला हो तो पूरे कबीले ही को मार दिया जाता था। इस्लाम ने यह नियम बना दिया कि स्वतंत्र तथा दास और नर नारी सब मानवता में बराबर है। अत:बदले में केवल उसी को मारा जाये जो अपराधी है। वह स्वतंत्र हो या दास, नर हो या नारी। (संक्षिप्त, इब्ने कसीर)

[३] क्षमा दो प्रकार से हो सकता है: एक तो यह कि निहत के लोग अपराधी को क्षमा कर दें। दूसरा यह कि किसास को क्षमा कर के दियत (अर्थदण्ड) लेना स्वीकार कर लें। इसी स्थिती में कहा गया है कि नियमानुसार दियत (अर्थदण्ड) चुका दे।

[४] अर्थात क्षमा कर देने या दियत लेने के पश्चात् भी अपराधी को मार डाले तो उसे किसास में हत किया जायेगा।

[५] क्योंकि इस नियम के कारण कोई किसी को हत करने का साहस नहीं करेगा। इस लिये इस के कारण समाज शान्तिमय हो जायेगा। अर्थात एक किसास से लोगों के जीवन की रक्षा होगी। जैसा कि उन देशों में जहाँ किसास का नियम है देखा जा सकता है। कुर्आन इसी ओर संकेत करते हुये कहता है कि किसास नियम के अन्दर वास्तव में जीवन है।

१८१.फिर जिस ने वसिय्यत सुनने पश्चात् उसे बदल दिया तो उस का पाप उन पर है जो उसे बदलेंगे। और अल्लाह सब कुछ सुनता जानता है।

१८२.फिर जिसे डर हो किय वसिय्यत करने वाले ने पक्षपात या अत्याचार किया है, फिर उस ने उन के बीच सुधार करा दिया तो उस पर कोई पाप नहीं। निश्चत अल्लाह अति क्षमाशील तथा दयावान् है।

१८३.हे ईमान वालो! तुम पर रोज़े[२] उसी प्रकार अनिवार्य कर दिये गये हैं, जैसे तुम से पूर्व लोगों पर अनिवार्य किये गये, ताकि तुम अल्लाह से डरो।

१८४.वह गिनती के कुछ दिन है। फिर यदि तुम में से कोई रोगी, अथवा यात्रा पर हो तो यह गिनती दूसरे दिनों से पूरी करे। और जो उस (रोज़े) को सहन न कर सके[३] वह फिद्या (प्रायश्चित) दे। जो एक निर्धन को खाना खिलाना है। और जो स्वेच्छा भलाई करे वह उस के लिये अच्छी बात है। और यदि तुम समझो तो तुम्हारे लिये रोजा रखना ही अच्छा है।

१८५.रमज़ान का महीना वह है, जिस में कुर्आन उतारा गया, जो सब मानव के लिये मार्गदर्शन है। तथा मार्गदर्शन और सत्योसत्य के बीच अन्तर करने के खुले प्रमाण रखता है। अतः जो व्यक्ति इस महीने में उपस्थित[४] हो तो वह उस का रोज़ा रखे, फिर यदि तुम में से कोई रोगी[५] अथवा यात्रा[६] पर हो तो उसे दूसरे अल्लाह तुम्हारे लिये सुविधा चाहता है, तंगी (असुविधा) नहीं चाहता। और चाहता है कि तुम गिनती

---

[१] यह वसय्यित (मीरास) की आयत उतरने से पहले अनिवार्य थी, जिसे (मीरास) की आयत से निरस्त कर दिया गया। आप सल्लाहू अलैहि व सल्लम का कथन है कि अल्लाह ने प्रत्येक अधिकारी को उस का अधिकार दे दिया है, अतः अब वारिस के लिये कोई वसिय्यत नहीं है। फिर जो वारिस न हो तो उसे भी तिहाई धन से अधिक की वसिय्यत उचित नहीं है। (सहीह बुख़ारी – ४५७७, सुनन अबू दावूद–२८७०, इब्ने माजा–२२१०)

[२] रोज़े को अर्बी भाषा मैं ''सौम'' कहा गया है, जिस का अर्थः रूकना तथा त्याग देना है। इस्लाम में रोज़ा सन् दो हिजरी में अनिवार्य किया गया। जिस का अर्थ है प्रत्युष (भोर) से सूर्यास्त तक रोजे की नीति से खाने पीने तथा संभोग आदी चीजों से रूक जाना।

[३] अर्थात अधिक बुढ़ापे अथावा ऐसे रोग के कारण जिस से आरोग्य होने की आशा न हो तो प्रत्येक रोजे के बदले एक निर्धन को खाना खिला दिया करें।

[४] अर्थात अपने नगर में उपस्थित हो।

[५] अर्थात रोग के कारण रोज़े न रख सकता हो।

[६] अर्थात इतनी दूर की यात्रा पर हो जिस में रोज़ा न रखने की अनुमति हो।

पूरी करो, तथा इस बात पर अल्लाह की महिमा का वर्णन करो कि उस ने तुम्हें मार्गदर्शन दिया, इस प्रकार तुम उस के कृतज्ञ[१] बन सको।

१८६.(हे नबी!) जब मेरे भक्त मेरे विषय में आप से प्रश्न करें, तो उन्हें बता दें कि निश्चय मैं समीप हूं। मैं प्रार्थी की प्रार्थना का उत्तर देता हूँ। अतः उन्हें भी चाहिये कि मेरे आज्ञाकारी बनें, तथा मुझ पर ईमान (विश्वास) रखें, ताकि वह सीधी राह पायें।

१८७.तुम्हारे लिये रोज़े की रात में अपनी स्त्रियों से सहवास हलाल (उचित) कर दिया गया है। वह तुम्हारा वस्त्र[२] है। अल्लाह को ज्ञान हो गया कि तुम अपना उपभोग[३] कर रहे थे। उस ने तुम्हारी तौबा (क्षमा याचना) स्वीकार कर ली, तथा तुम्हें क्षमा कर दिया। अब उन से (रात्रि में) सहवास करो, और अल्लाह के (अपने भाग्य में) लिखे की खोज करो, और (रात्रि में) खाओ तथा पीओ, यहाँ तक कि भोर की सफेद धारी, रात की काली धारी से उजागर हो[४] जाये फिर रोजे की रात्रि (सुर्यास्त) तक पूरा करो, और उन से सहवास न करो, जब मस्जिदों में ऐतिकाफ (एकान्तवास) में रहो। यह अल्लाह की सीमायें हैं, इन के समीप भी न जाओ। इसी प्रकार अल्लाह लोगों के लिये अपनी अपनी आयतों को उजागर करता है, ताकि वह (उन के उल्लंघन) से बचें।

१८८.तथा आपस में एक दूसरे का धन अवैध रूप से न खाओ, और न अधिकारियों के पास उसे इस धेय से ले जाओ कि लोगों के धन का कोई भाग जान बूझ कर पाप[५] द्वारा खा जाओ।

१८९.(हे नबी!) लोग आप से चन्द्रमा के (घटने बढ़ने) के विषय में प्रश्न करते हैं? कह देंः इस से लोगों को तिथियों के निर्धारण तथा हज्ज के समय का ज्ञान होता है। और यह कोई भलाई नहीं कि घरों में उन के पीछे से प्रवेश करो, परंतू भलाइ तो अल्लाह

---

[१] इस आयत में रोज़े की दशा तथा गिनती पूरी करने पर प्रार्थना करने की प्रेरण दी गयी है।

[२] इस से पति पत्नी के जीवन साथी, तथा एक की दूसरे के लिये आवश्यकता को दर्शाया गया है।

[३] अर्थात पत्नी से सहवास कर रहे थे।

[४] इस्लाम के आरंभिक युग में रात्री में सो जाने के पश्चात् रमजान में खाने पीने तथा स्त्री से सहवास की अनुमति नहीं थी। इस इस आयत में इन सब की अनुमति दी गयी है।

[५] इस आयत में यह संकेत है कि यदि कोई व्यक्ति दूसरों के स्वत्व और धन से तथा अवैध धन उपार्जन से स्वयं को रोक न सकता हो इबादत का कोई लाभ नहीं।

की अवैज्ञा से बचना है। और घरों में उन के द्वारों से आओ, तथा अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम सफल हो जाओ।

१९०.तथा तुम अल्लाह की राह में, उन से युद्ध करो जो तुम से युद्ध करते हों। और अत्याचार न करो, अल्लाह अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।

१९१.और उन को हत करो, जहाँ पाओ, और उन्हें निकालो, जहाँ से उन्हों ने तुम को निकाला है, इस लिये कि फितना (उपद्रव) हत करने से भी बुरा है। और उन से मस्जिदे हराम के पास युद्ध न करो, जब तक वह तुम से वहाँ युद्ध न करें। परन्तु यदि वह तुम से युद्ध करें तो उन की हत्या करो, यही काफिरों का बदला है।

१९२.फिर यदि वह (आक्रमण करने से) रूक जायें तो अल्लाह अति क्षमी, दयावान है।

१९३.तथा उन से युद्ध करो, यहाँ तक कि फितना न रह जाये, और धर्म केवल अल्लाह के लिये रह जाये, फिर यदि वह रूक जायें, तो अत्याचारियों के अतिरिक्त किसी और पर अत्याचार नहीं करना चाहिये।

१९४. सम्मानित[1] मास, सम्मानित मास के बदले हैं। और सम्मानित विषयों में बराबरी है, अतः जो तुम पर अतिक्रमण (अत्याचार) करें तो तुम भी उन पर उसी के समान (अतिक्रमण) करो। तथा अल्लाह के आज्ञाकारी रहो, और जान लो कि अल्लाह आज्ञाकारियों के साथ है।

१९५.तथा अल्लाह की राह (जिहाद) में धन खर्च करो, और अपने आप को विनाश में न डालो, तथा उपकार करो, निश्चय अल्लाह उपकारियों से प्रेम करता है।

१९६.तथा हज्ज और उमरा अल्लाह के लिये पूरा करो, और यदि रोक दिये जाओ[2] तो जो कुर्बानी सुलभ हो (कर दो), और अपने सिर न मुंडाओ, जब तक कि कुर्बानी अपने स्थान पर न पहुंच[3] जाये, यदि तुम में कोई व्यक्ति रोगी हो, या उस के सिर में कोई पीड़ा हो (और सिर मुंडा ले) तो उस के बदले में रोज़ा रखना या दान[4] देना अथवा कुर्बानी देना है, और जब तुम निर्भय (शान्त) रहो तो जो उमरे से हज्ज तक

---

[1] सम्मानित मासों से अभिप्रेत चार अर्बी महीनेः जुलकादह, जुलहिज्जह, मुहर्रम तथा रजब है। इब्राहीम अलैहिस्सलाम के युग से इन मासों का आदर सम्मान होता आ रहा है। आयत का अर्थ यह है कि कोई सम्मानित स्थान अथवा युग में अतिक्रमण करे तो उसे बराबरी का बदला दिया जाये।

[2] अर्थात शत्रु अथवा रोग के कारण।

[3] अर्थात कुरबानी न कर लो।

[4] जो तीन रोजे अथवा तीन निर्धनों को खिलाना या एक बकरे की कुरबानी देना है (तफ्सीरे कुर्तुबी)

लाभान्वित[1] हो वह जो कुर्बानी सुलभ हो उसे करे। और जिसे उपलबध न हो तो वह तीन रोज़े हज्ज केदिनों में रखे, और सात जब रखे जब तुम (घर) वापस आओ। यह पूरे दस हुये। यह उसके लिये है जो मस्जिदे हराम का निवासी न हो। और अल्लाह से डरो, तथा जान लो कि अल्लाह की यातना बहुत कड़ी है।

१९७.हज्ज के महीने प्रसिद्ध हैं, तो जो व्यक्ति इन में हज्ज का निश्चय कर ले तो (हज्ज के बीच) काम वासना तथा अवैज्ञा और झगड़े की बातें न करे, तथा तुम जो भी अच्छे कर्म करोगे तो उस का ज्ञान अल्लाह को हो जायेगा, और अपने लिये पाथेय बना लो, उत्तम पाथेय अल्लाह की आज्ञाकारिता है, तथा हे समझ वालो! मुझी से डरो।

१९८.तथा तुम पर कोई दोष[2] नहीं कि अपने पालनहार के अनुग्रह की खोज करो, तो फिर जब तुम अरफात[3] से चलो, तो मश्अरे हराम (मुज़दलिफह) के पास अल्लाह का स्मरण करो जिस अल्लाह ने तुम्हें बताया है। यद्यपि इस से पहले तुम कुर्थों में थे।

१९९.फिर तुम[4] भी वहीं से फिरो जहाँ से लोग फिरते हैं। तथा अल्लाह से क्षमा माँगों। निश्चय अल्लाह अति क्षमाशील, दयावान है।

२००.और जब तुम अपने (हज्ज के) मानसिक (कर्म) पूरे कर लो तो जिस प्रकार पहले अपने पूर्वजों की चर्चा करते रहे, उसी प्रकार बल्कि उस से भी अधिक अल्लाह का स्मरण[5] करो। उन में से कुछ ऐसे हैं जो यह कहते हैं किः हे हमारे पालनहार! (हमें जो देना है) संसार ही में दे दे। अतः ऐसे व्यक्ति के लिये परलोक में कोई भाग नहीं है।

---

[1] लाभान्वित होने का अर्थ यह है कि उमरे का एहराम बांधे, और उस के कार्यक्रम पूरे कर के एहराम खोल दे, और जो चीजे एहराम की स्थिति में अवैध थी, उन से लाभन्वित हो। फिर हज्ज के समय उस का एहराम बांधे, इसे (हज्ज तमत्तुअ) कहा जाता है। (तफ़्सीरे कुर्तुबी)

[2] अर्थात व्यापार करने में कोई दोष नहीं है।

[3] अरफात उस स्थान का नाम है जिस में हाजी ९ जिलहिज्जह को विराम करते, तथा सूर्यास्त के पश्चात् वहां से वापिस होते है।

[4] यह आदेश कुरैश के उन लोगों को दिया गया है जो मुजदलिफह ही से वापिस चले आते थे। और अरफात नहीं जाते थे।

[5] जाहिलिय्यत में अरबों की यह रीति थी कि हज्ज पूरा करने के पश्चात अपने पूर्वजों के कर्मो की चर्चा कर के उन पर गर्व किया करते थे। तथा इब्ने अब्बास रजियाल्लाहु अन्हु ने इस का अर्थ यह किया है कि जिस प्रकार शिशु अपने माता पिता को गुहारता, पुकारता है उसी प्रकार तुम अल्लाह को गुहारो और पुकारो। (तफ़्सीरे कुर्तुबी)

२०१.तथा उन में से कुछ ऐसे हैं जो यह कहते हैं किः हमारे पालनहार! हमें संसार की भलाई दे, तथा परलोक में भी भलाई दे, और हमें नरक की यातना से सुरक्षित रख।

२०२.इन्हीं को इन की कमाई के कारण भाग मिलेगा, और अल्लाह शीघ्र हिसाब चुकाने वाला है।

२०३.तथा इन गिनती[१] के कुछ दिनों में अल्लाह की स्मरण (याद) करो, फिर जो कोई व्यक्ति शीघ्रता से दो ही दिन में (मिना से) चल[२] दे, तो उस पर कोई दोष नहीं, और जो विलम्ब[३] करे, तो उस पर भी कोई दोष नहीं, उस व्यक्ति के लिये जो अल्लाह से डरा, तथा तुम अल्लाह से डरते रहो और यह समझ लो कि तुम उसी के पास प्रलय के दिन एकत्र किये जाओगे।

२०४.हे नबी! लोगों[४] में ऐसा व्यक्ति भी है जिस की बात आप को (सांसारिक) विषय में भाती है, तथा जो कुछ उस के दिल में है, वह उस पर अल्लाह को साक्षी बनाता है, जब कि वह बड़ा झगड़ालू है।

२०५.तथा जब वह आप के पास से जाता है तो धरती में उपद्रव मचाने का प्रयास करता है, और खेती तथा पशुओं का विनाश करता है। और अल्लाह उपद्रव से प्रेम नहीं करता।

२०६.तथा जब उस से कहा जाता है कि अल्लाह से डर, तो अभिमान उसे पाप पर उभार देता है। अतः उस के (दण्ड) के लिये नरक काफी है। और वह बहुत बुरा बिछोना है।

२०७.तथा लोगों में ऐसा व्यक्ति भी है जो अल्लाह की प्रसन्नता की खोज में अपना प्राण बेच[५] देता है। और अल्लाह अपने भक्तों के लिये अति करूणामय है।

२०८.हे ईमान वालो। तुम सर्वथा इस्लाम में प्रवेश[६] कर जाओ, और शैतान की राहों पर मत चलो. निश्चय वह तुम्हारा खुला शत्रु है।

[१] गिन्ती के कुछ दिनों से अभिप्रेत जुलहिज्जह मास की ११, १२ और १३ तारीखें है। जिन को (अय्यामें तशरीक) कहते है।

[२] अर्थात १२ जुलहिज्जह को ही सूर्यास्त के पहले कँकरी मारने के पश्चात चल दें।

[३] विलम्ब करे, अर्थात मिना में रात बिताये। और तेरह जुलहिज्जह को कँकरी मारे, फिर मिना से निकल जाये।

[४] अर्थात मुनाफिकों (दुविधा वादियों) में।

[५] अर्थात उस की राह में और उस की आज्ञा के अनुपालन द्वारा।

[६] अर्थात इस्लाम के पूरे संविधान का अनुपालन करो।

२०९.फिर यदि तुम खुले तर्कों(दलीलों)[१] के आने के पश्चात विचलित हो गये, तो जान लो कि अल्लाह प्रभत्वशाली तथा तत्वज्ञ[२] है।

२१०.क्या (इन खुले तर्को के आ जाने के पश्चात) वह इस की प्रतिक्षा कर रहे हैं कि उन के समक्ष अल्लाह बादलों के छत्र में आ जाये, तथा फरिश्ते भी, और निर्णय ही कर दिया जाये? और सभी विषय अल्लाह ही की ओर फेरे[३] जायेंगे।

२११.बनी इस्राईल से पूछो कि हम ने उन्हें कितनी खुली निशानियाँ दी? इस पर भी जिस ने अल्लाह की अनुकम्पा को, उस के अपने पास आ जाने के पश्चात बदल दिया, तो अल्लाह की यातना भी बहुत कड़ी है।

२१२.काफिरों के लिये संसारिक जीवन शोभनीय (मनोहर) बना दिया गया है। तथा जो ईमान लाये यह उन का उपहास[४] करते हैं, और प्रलय के दिन अल्लाह के आज्ञाकारी उन से उच्च स्थान[५] पर रहेंगे। तथा अल्लाह जिसे चाहे अगणित आजीविका प्रदान करता है।

२१३.(आरंभ में) सभी मानव एक ही (स्वाभाविक) सत्धर्म पर थे। (फिर विभेद हुया)। तो अल्लाह ने नबियों को शुभ समाचार सुनाने,[६] और (अवैज्ञा) से सचेत करने के लिये लिये भेजा, और उन पर सत्य के साथ पुस्तक उतारी, ताकि वह जिन बातों पर विभेद कर रहे हैं, उन का निर्णय कर दें, और आप की दुराग्रह से उन्हों ने ही विभेद किया, जिन को (विभेद निवारण के लिये) यह पुस्तक दी गयी. तो जो ईमान लाये अल्लाह ने उस विभेद में उन्हें अपनी अनुमति से सत्पथ दर्शा दिया। और अल्लाह जिसे चाहे सत्पथ दर्शा देता है।

---

[१] खुले तर्को से अभिप्राय कुरआन और सन्नत है।

[२] अर्थात तथ्य को जानता और प्रत्येक वस्तु को उस के उचित स्थान पर रखता है।

[३] अर्थात सब निर्णय परलोक में वही करेगा।

[४] अर्थात उन की निर्धनता तथा दरिद्रता के कारण.

[५] आयत का भावार्थ यह है कि काफिर संसारिका धन धान्य ही को महत्व देते है। जब कि परलोक की सफलता जो सत्धर्म और सत्कर्म पर आधारित है वही सब से बड़ी सफलता है।

[६] आयत २१३ का सारांश यह है कि सभी मानव आरंभिक युग में स्वभाविक जीवन व्यतीत कर रहे थे। फिर आपस में विभेद हुआ तो अत्याचार और उपद्रव होने लगा। तब अल्लाह की ओर से नबी आने लगे ताकि सब को एक सत्धर्म पररर कर दें। और आकाशीय पुस्तकें भी इसी लिये अवतरित हुई कि विभेद में निर्णय कर के सब को एक मूल सत्धर्म पर लायें। परन्तु लोगों की दुराग्रह और आपसी द्वेष विभेद का कारण बने रहे। अन्यथा सत्धर्म (इस्लाम) जो एकता का आधार है वह अब भी सुरक्षित है। और जो व्यक्ति चाहेगा तो अल्लाह उस के लिये यह सत्य दर्शा देगा। परन्तु यह स्वयं उस की इच्छा पर आधारित है।

२१४.क्या तुम ने समझ रखा है कि यूं ही स्वर्ग में प्रवेश कर जाओगे, हालॉकि अभी तक तुम्हारी वह दशा नहीं हुई जो तुम से पूर्व के ईमान वालों की हुई? उन्हें तंगियों तथा आपदाओं ने घेर लिया, और वह झँझोड़ दिये गये, यहाँ तक कि रसूल और जो उस पर ईमान लाये गुहारने लगे कि अल्लाह की सहायता कब आयेगी? (उस समय कहा गयाः) सुन लो! अल्लाह की सहायता समीप[1] है।

२१५.हे नबी! वह आप से प्रश्न करते हैं कि कैसे व्यय (खर्च) करें? उन से कहो कि जो भी धन तुम खर्च करो, अपने माता पिता, समीपवर्तियों, अनाथों, निर्धनों तथा यात्रियों (को दो)। तथा जो भी भलाई तुम करते हो, उसे अल्लाह भली भाँति जानता है।

२१६.हे ईमान वालो! तुम पर युद्ध करना अनिवार्य कर दिया गया है, और वह तुम्हें अप्रिय है, हो सकता है कि कोई चीज तुम्हें अप्रिय हो, और वही तुम्हारे लिये अच्छी हो, और इसी प्रकार सम्भव है कि कोई चीज तुम्हे प्रिय हो, और वह तुम्हारे लिये बुरी हो। अल्लाह जानता है और तुम नहीं[2] जानते।

२१७. हे नबी! वह[3] आप से प्रश्न करते हैं कि सम्मानित मास में युद्ध करना कैसा हैं? तो आप उन से कह दें कि उस में युद्ध करना घोर पाप है, परन्तु अल्लाह की राह से रोकना और उस का इन्कार करना, तथा मस्जिदे हराम से रोकना, और उस के निवासियों को उस से निकालना, अल्लाह के समीप उस से भी घोर पाप है। तथा फितना (सत्धर्म) से विचलाना हत्या से भी भारी है। और वह तो तुम से युद्ध करते ही जायेंगे, यहाँ तक कि उन के बस में हो तो तुम्हें तुम्हारे धर्म से फेर दें, और तुम में से जो व्यक्ति अपने धर्म (इस्लाम) से फिर जायेगा, फिर कुफ्र पर ही उस की मौत होगी, तो ऐसों का किया कराया संसार तथा परलोक में व्यर्थ हो जायेगा वही तथा नारकी हैं। और वह उस में सदावासी होंगे।

---

[1] आयत का भावार्थ यह है कि ईमान के लिये इतना ही बस नहीं कि ईमान को स्वीकार कर लिया तथा स्वर्गीय हो गये। इस के लिये यह भी आवश्यक है कि उन सभी परीक्षाओं में स्थिर रहो जो तुम से पूर्व सत्य के अनुयायियों के सामने आयीं. और तुम पर भी आयेंगी।

[2] आयत का भावार्थ यह है कि युद्ध ऐसी चीज नहीं जो तुम्हें प्रिय हो। परन्तु जब ऐसी स्थिति आ जाये कि शत्रु इस लिये आक्रमण और अत्याचार करने लगे कि लोगों ने अपने पूर्वजों की आस्था परम्परा त्याग कर सत्य को अपना लिया है, जैसा कि इस्लाम केआरंभिक युग में हुआ, तो सत्धर्म की रक्षा के लिये युद्ध करना अनिवार्य हो जाता है।

[3] अर्थात मिश्रणवादी।

२१८.(इस के विपरीत) जो लोग ईमान लाये, और उन्होंने हिजरत[1] की, तथा अल्लाह की राह में जिहाद किया, तो वास्तव में वही अल्लाह की दया की आशा रखते हैं। तथा अल्लाह अति क्षमाशील और बहुत दयालु है।

२१९.हे नबी। वह आप से मदिरा और जूआ के विषय में प्रश्न करते हैं। आप बता दें कि इन दोनों में बड़ा पाप है। तथा लोगों का कुछ लाभ भी है। परन्तु उन का पाप उन के लाभ से अधिक[2] बड़ा है। तथा वह आप से प्रश्न करते हैं। कि अल्लाह की राह में क्या खर्च करें? उन से कह दो कि जो अपनी आवश्यकता से अधिक हो। इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये आयतों (धर्मदेशों) को उजागर करता है। ताकि तुम सोच विचार करो।

२२०.और वह आप से अनाथों के विषय में प्रश्न करते हैं। तो उन से कह दो कि जिस बात में उन का सुधार हो वही सब से अच्छी है। यदि तुम उस से मिल कर रहो तो वह तुम्हारे भाई ही हैं, और अल्लाह जानता है कि कौन सुधारने और कौन बिगाड़ने वाला है। और यदि अल्लाह चाहता तो तुम पर सख्ती कर देता। वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्वज्ञ है।

२२१.तथा मुश्रिक स्त्रियों से तुम विवाह न करो, जब तक वह ईमान वाली दासी मुश्रिक स्त्री से उत्तम है, यद्यपि वह तुम्हारे मन को भा रही हो, और अपनी स्त्रियों का विवाह मुश्रिकों से न करो जब तक वह ईमान न लायें। और ईमान वाला दास मुश्रिक से उत्तम है, यद्यपि वह तुम्हें भा रहा हो। वह तुम्हें अग्नि की ओर बुलाते हैं तथा अल्लाह स्वर्ग और क्षमा की ओर बुला रहा है। और सभी मानव के लिये अपनी आयतें (आदेश) उजागर कर रहा है ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें।

२२२.तथा वह आप से मासिक धर्म के विषय में प्रश्न करते हैं, तो कह दें कि वह मलीनता है। और उन के समीप भी न[3] जाओ जब तक पवित्र न हो जायें। फिर जब वह भली भाँति स्वच्छ[4] हो जायें तो उन के पास उसी प्रकार जाओ जैसे अल्लाह ने तुम्हें

---

[1] हिजरत का अर्थ हैः अल्लाह के लिये स्वदेश त्याग देना।

[2] अर्थात अपने लोक परलोक के लाभ के विषय में विचार करो और जिस में अधिक हानि हो उसे त्याग दो। यद्यपि उस में थोड़ा लाभ ही क्यों न हो यह मदिरा और जूआ से सम्बन्धित प्रथम आदेश है। आगामी सूरह निसा आयत ४३ तथा सूरह माइदह आयत ९० में इन के विषय में अन्तिम आदेश आ रहा है।

[3] अर्थात संभोग के लिये

[4] मासिक धर्म बन्द होने के पश्चात स्नान कर के स्वच्छ हो जायें।

आदेश[1] दिया है। निश्चय अल्लाह तौबा करने वालों तथा पवित्र रहने वालों से प्रेम करता है।

२२३.तुम्हारी पत्नियाँ तुम्हारे लिये खेतियाँ[2] हैं। तुम्हें अनुमति है कि जैसे चाहो अपनी खेतियों में जाओ। परन्तु भविष्य के लिये भी सत्कर्म करो। तथा अल्लाह से डरते रहो। और विश्वास रखो कि तुम्हें उस से मिलना है। और ईमान वालों को शुभ सूचना सुना दो।

२२४.तथा अल्लाह के नाम पर अपनी शपथों को उपकार तथा सदाचार और लोगों में मिलाप कराने के लिये रोक[3] न बनाओ। और अल्लाह सब कुछ सुनता जानता है।

२२५.अल्लाह तुम्हारी निरर्थक शपथों पर तुम्हें नहीं पकड़ेगा, परन्तु जो शपथ अपने दिलों के संकल्प से लोगे, उन पर पकड़ेगा, और अल्लाह अति क्षमाशील सहनशील है।

२२६.तथा जो लोग अपनी पत्नियों से संभोग न करने की शपथ लेते हों, वह चार महीने प्रतीक्षा करें। फिर[4] यदि अपनी शपथ से इस (बीच) फिर जायें तो अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

२२७.और यदि उन्होंने तलाक का संकल्प ले लिया हो तो निःसन्देह अल्लाह सब कुछ सुनता और जानता है।

२२८.तथा जिन स्त्रियों को तलाक दी गयी हो वह तीन बार रजवती होने तक अपने आप को विवाह से रोकी रखें। उन के लिये हलाल (वैध) नहीं है कि अल्लाह ने जो उन के गर्भाषयों में पैदा किया[5] है, उसे छुपायें। यदि वह अल्लाह तथा अखिरत (परलोक) पर ईमान रखती हों। तथा उन के पति इस अवधि में अपनी पत्नियों को लौटा लेने के अधिकारी[6] हैं यदि वह मिलाप[1] चाहते हों। तथा सामान्य नियमानुसार

---

[1] अर्थात जिस स्थान को अल्लाह ने उचित किया है, वही संभोग करो।

[2] अर्थात संतान उत्पन्न करने का स्थान और इस में यह संकेत भी है कि भग के सिवा अन्य स्थान में संभोग हराम (अनुचित) है।

[3] अर्थात सदाचार और पुण्य न करने की शपथ लेना अनुचि है।

[4] यदि पत्नी से संबंध न रखने की शपथ ली जाये जिसे अर्बी में ''ईला'' के नाम से जाना जाता है तो उस का यह नियम है कि चार महीने प्रतीक्षा की जायेगी। यदि इस बीच पति ने फिर संबंध स्थापित कर लिया तो उसे शपथ का कफ्फारह (प्रायश्चित) देना होगा। अन्यथा चार महीने पूरे हो जाने पर न्यायालय उसे शपथ से फिरने या तलाक देने के लिये बाध्य करेगा।

[5] अर्थात मासिक धर्म अथवा गर्भ को।

[6] यह बताया गया है कि पति तलाक के पश्चात पत्नी को लौटाना चाहे तो उसे इस का अधिकार है। क्यों कि विवाह का मूल लक्ष्य मिलाप है, अलगाव नहीं।

नियमानुसार स्त्रियों[2] के लिये वैसे ही अधिकार है जैसे पुरुषों को स्त्रियों पर एक प्रधानता प्राप्त है। और अल्लाह अति प्रभत्वशील तत्वज्ञ है।

२२९.तलाक दो बार है। फिर नियमानुसार स्त्री को रोक लिया जाये या भली भाँति विदा कर दिया जाये। और तुम्हारे लिये यह हलाल (वैध) नहीं है कि उन्हें जो कुछ तुम ने दिया है उस में से कुछ वापस लो। फिर यदि तुम्हें यह भय[3] हो कि पति पत्नी अल्लाह की निर्धारित सीमाओं को स्थापित न रख सकेंगे तो उन दोनों पर कोई दोष नहीं कि पत्नी अपने पति को कुछ देकर मुक्ति[4] करा ले। यह अल्लाह की सीमायें हैं इन का उल्लघन न करे। और जो करेंगे वही अत्याचारी है।

२३०.फिर यदि उसे (तीसरी बार) तलाक दे दी तो वह स्त्री उस के लिये हलाल (वैध) नहीं होगी, जब तक दूसरे पति से विवाह न कर ले। अब यदि दूसरा पति (संभोग के पश्चात) उसे तलाक दे दे तब प्रथम पति से (निर्धारित अवधि पूरी कर के) फिर

[1] हानि पहुंचाने अथवा दुःख देने के लिये नहीं।

[2] यहां यह ज्ञातव्य है कि जब इस्लाम आया तो संसार यह जानता ही न था कि स्त्रियों के भी कुछ अधिकार हो सकते है। स्त्री को संतान उत्पन्न करने का एक साधन समझा जाता था, और उन की मुक्ति इसी में थी कि वह पुरुषों की सेवा करें, प्राचीन धर्मानुसार स्त्री को पुरुष की सम्पति समझा जाता था। पुरुष तथा स्त्री समान नहीं थे। स्त्री में मानव आत्मा के स्थान पर एक दूसरी आत्मा होती थी. रूमी विधान में भी स्त्री का स्थान पुरुष से बहुत नीचा था। जब कभी मानव शब्द बोला जाता तो उस से संबोधित पुरुष होता था। स्त्री पुरुष के साथ, खड़ी नहीं हो सकती थी। कुछ अमानवीय विचारों में जन्म से पाप का सारा बोझ स्त्री पर डाल दिया जाता। आदम के पाप का कारण हव्वा हुई। इस लिए पाप का पहला बीज स्त्री के हाथों पड़ा। और वही शैतान का साधन बनी। अब सदा स्त्री में पाप की प्रेरणा उभरती रहेगी, धार्मिक विषय में भी स्त्री पुरुष के समान न हो सकी। परन्तु इस्लाम ने केवल स्त्रियों के अधिकार का विचार ही नहीं दिया बल्कि खुला एलान कर दिया कि जैसे पुरुषों के अधिकार हैं उसी प्रकार स्त्रियों के भी पुरुषों पर अधिकार हैं।

कुर्आन ने इन चार शब्दों में स्त्री को वह सब कुछ दे दिया है जो उस का अधिकार था। और जो उसे कभी नहीं मिला था। इन शब्दों द्वारा उस के सम्मान अधिकार और समता की घोषणा कर दी। दाम्पत्य जीवन तथा सामाजिक्ता की कोई ऐसी बात नहीं जो इन चार शब्दों में न आ गई हो। यद्यपि आगे यह भी कहा गया है कि पुरुषों के लिये स्त्रियों पर एक विशेष प्रधानता है। ऐसा क्यों है? इस का कारण हमें आगामी सूरह ''निसा'' में मिल जाता है कि यह इस लिये ह कि पुरुष अपना धन स्त्रियों पर खर्च करते हैं । अर्थात परिवारिक जीवन की व्यवस्था के लिये कोई व्यवस्थापक अवश्य होना चाहिये । और इस का भार पुरुषों पर रखा गया है। यही उन की प्रधानता तथा विशेषता है। जो केवल एक भार है इस से पुरुष की जन्म से कोई प्रधानता सिद्ध नहीं होती । यह केवल एक परिवारिक व्यवस्था के कारण हुआ है।

[3] अर्थात पति के संरक्षकों को।

[4] पत्नी के अपने पति को कुछ दे कर विवाह बंधन से मुक्त करा लेने को इस्लाम की परिभाषा में ''खुलअ'' कहा जाता है। इस्लाम ने जैसे पुरुषों को तलाक का अधिकार दिया है उसी प्रकार स्त्रियों को भी ''खुलअ'' ले लेने का अधिकार दिया है। अर्थात वह अपने पति से तलाक मांग सकती है।

विवाह कर सकती है, यदि वह दोनों समझते हों कि अल्लाह की सीमाओं को स्थापित रख[1] सकेंगे। और यह अल्लाह की सीमायें हैं, जिन्हें उन लोगों के लिये उजागर कर रहा है जो ज्ञान रखते हों।

२३१.और यदि स्त्रियों को (एक या दो) तलाक दे दो और उन की निर्धारित अवधि (इद्दत) पूरी होने लगे तो नियमानुसार उसे रोक लो, अथवा नियमानुसार विदा कर दो। उन्हें हानि पहुंचाने के लिये न रोको, ताकि उन पर अत्याचार करेगा। तथा अल्लाह की आयतों (आदेशों) को उपहास न बनाओ। और अपने ऊपर अल्लाह के उपकार तथा उस पुस्तक (कुर्आन) तथा हिक्मत (सुन्नत) को याद करो जिसे उस ने तुम पर उतारा है। और उस के द्वारा तुम को शिक्षा दे रहा है। तथा अल्लाह से डरो, और विश्वास रखो कि अल्लाह सब कुछ जानता है।[2]

२३२.और जब तुम अपनी पत्नियों को (तीन से कम) तलाक दो, और वह अपनी निश्चित अवधि (इद्दत) पूरी कर लें, तो (स्त्रियों के संरक्षको!) उन्हें अपने पतियों से विवाह करने से न रोको, जब कि सामान्य नियमानुसार वह आपस में विवाह करने पर सहमत हों, यह तुम में से उसे निर्देश दिया जा रहा है जो अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान (विश्वास) रखता है, यही तुम्हारे लिये अधिक स्वच्छ तथा पवित्र है। और अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते।

२३३.और मातायें अपने बच्चों को पूरे दो वर्ष दूध पिलायें, और पिता को नियमानुसार उन्हे खाना कपड़ा देना है, किसी पर उस की सक्त से अधिक भार नहीं डाला जायेगा, न माता को उस के बच्चे के कारण हानि पहुंचाई जाये, और न पिता को उस के बच्चे के कारण। और इसी प्रकार उस (पिता) के वारिस (उत्तराधिकारी) पर (खाना कपड़ा देने का) भार है। फिर यदि दोनों आपस की सहमति तथा परामर्श से (दो वर्ष से

---

[1] आयत का भावार्थ यह है कि प्रथम पति ने तीन तलाक दे दी हों तो निर्धारित अवधि में भी उसे पत्नी को लौटाने का अवसर नहीं दिया जायेगा। तथा पत्नी को यह अधिकार होगा कि निर्धारित अवधि पूरी कर के किसी दूसरे पति से धर्मविधान के अनुसार सहीह विवाह कर ले, फिर यदि दूसरा पति उसे सम्भोग के पश्चात तलाक दे, या उस का देहान्त हो जाये तो प्रथम पति से निर्धारित अवधि पूरी करने के पश्चात नये महर के साथ नया विवाह कर सकती है। लेकिन यह उस समय है जब दोनों यह समझते हों कि वे अल्लाह के आदेशों का पालन कर सकेंगे।

[2] आयत का अर्थ यह है कि पत्नी के रूप में रखो, और उन के अधिकार दो। अन्यथा तलाक दे कर उन की राह खोल दो। जाहिलिय्यत के युग के समान अंधेरे में न रखो। इस विषय में भी नैतिक्ता एवं संयम के आदर्श बनो और कुर्आन तथा सुन्नत के आदेशों का अनुपालन करो।

पहले) दूध छुड़ाना चाहें तो दोनों पर कोई दोष नहीं। और यदि (तुम्हारा विचार किसी अन्य स्त्री से) दूध पिलवाने का हो तो इस में भी तुम पर कोई दोष नहीं, जब कि जो कुछ नियमानुसार उसे देना है उस को चुका दिया हो, तथा अल्लाह से डरते रहो। और जान लो कि तुम जो कुछ करते हो उसे अल्लाह देख रहा[१] है।

२३४.और तुम में से जो मर जायें और अपने पीछे पत्नियाँ छोड़ जायें तो वह स्वयं को चार महीने दस दिन रोके रखें। फिर जब उन की अवधि पूरी हो जाये तो वह सामान्य नियमानुसार अपने विषय में जो भी करें उस में तुम पर कोई दोष नहीं। तथा अल्लाह तुम्हारे कर्मों से सूचित है।

२३५.इस अवधि में यदि तुम (उन) स्त्रियों को विवाह का संकेत दो अथवा अपने मन में छुपाये रखो तो तुम पर कोई दोष नहीं। अल्लाह जानता है कि उनका विचार तुम्हारे मन में आयेगा, परन्तु गुप्त रूप से उन्हें विवाह का वचन न दो। परन्तु यह कि नियमानुसार[२] कोई बात कहो। तथा विवाह के बंधन का निश्चय उस समय तक न करो जब तक निर्धारित अवधि पूरी न हो जाये[३]। तथा जान लो कि जो कुछ तुम्हारे मन में है उसे अल्लाह जानता है। अतः उससे डरते रहो और जान लो कि अल्लाह क्षमाशील, सहनशील है।

२३६.और तुम पर कोई दोष नहीं यदि तुम स्त्रियों को संभोग करने तथा महर (विवाह उपहार) निर्धारित करने से पहले तलाक दे दो। (इस स्थिती में) उन्हें कुछ दो। नियमानुसार धनी पर अपनी शक्ति के अनुसार तथा निर्धन पर अपनी शक्ति के अनुसार देना है। यह उपकारियों पर आवश्यक है।

२३७.और यदि तुम उनको उनसे संभोग करने से पहले तलाक दो इस स्थिती में कि तुम ने उनके लिये मह्र निर्धारित किया है तो निर्धारित मह्र का आधा देना अनिवार्य है। यह और बात है कि वह क्षमा कर दे। अथवा वह क्षमा कर दें

---

[१] तलाक की स्थिति में यदि मां की गोद में बच्चा हो तो यह आदेश दिया गया है कि मां ही बच्चे को दूध पिलाये और दूध पिलाने तक उस का खर्च पिता पर है। और दूध पिलाने की अवधि दो वर्ष है। साथ ही दो मूल नियम भी बताये गये हैं कि न तो मां को बच्चे के कारण हानि पहुंचाई जायै और न पिता को। और किसी पर उस की शक्ति से अधिक खर्च का भार न डाला जाये।

[२] विवाह के विषय में जो बात की जाये वह खुली तथा नियमानुसार हो, गुप्त नहीं।

[३] जब तक अवधि पूरी न हो विवाह की बात तथा वचन नहीं होना चाहिये।

जिनके हाथ में विवाह का बंधन[1] है। और क्षमा कर देना संयम से अधिक समीप है। और आपस में उपकार को न भूलो। तुम जो कुछ कर रहे हो अल्लाह सब देख रहा है।

२३८.नमाज़ों का विशेष रूप से माध्यमिक नमाज़ (अस्र) का ध्यान रखो[2]। तथा अल्लाह के लिये विनयपूर्वक खड़े रहो।

२३९.और यदि तुम्हें भय[3] हो तो पैदल या सवार (जैसे संभव हो) नमाज़ पढ़ो, फिर जब निश्चिंत हो जाओ तो अल्लाह ने तुम्हें जैसे सिखाया है, जिसे पहले तुम नहीं जानते थे, वैसे अल्लाह को याद करो।

२४०.और जो तुम में से मर जायें, तथा पत्नियाँ छोड़ जायें, वह अपनी पत्नियों के लिये एक वर्ष तक उनको खर्च देने, तथा (घर से) न निकालने की वसिय्यत कर जायें तो यदि वह स्वयं निकल जायें[4] तथा सामान्य नियमानुसार अपने विषय में कुछ भी करें, तो तुम पर कोई दोष नहीं। अल्लाह प्रभावशाली तत्वज्ञ है।

२४१.तथा जिन स्त्रियों को तलाक दी गयी हो, तो उन्हें भी उचित रूप से सामग्री मिलनी चाहिये, यह आज्ञाकारियों पर आवश्यक है।

२४२.इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये अपनी आयतों को उजागर कर देता है ताकि तुम समझो।

२४३.क्या आप ने उनकी दशा पर विचार नहीं किया जो अपने घरों से मौत के भय से निकल गय[5], जबकि उनकी संख्या हज़ारों में थी, तो अल्लाह ने उनसे कहा

[1] अर्थात पती अपनी ओर से अधिक अथवा पूरा मह्र दे तो यह प्रधानता की बात होगी। इन दो आयतों में यह नियम बताया गया है कि यदि विवाह के पश्चात पति और पत्नी में को संबंध स्थापित न हुआ हो, तो इस स्थिती में यदि मह्र तय नहीं हुआ है तो पती अपनी शक्ति अनुसार जो भी दे सकता है, अवश्य दे। और यदि मह्र तय हो तो इस स्थिती में आधा मह्र पत्नी को देना अनिवार्य है। और यदि पुरुष इससे अधिक दे तो संयम तथा प्रधानता की बात होगी।

[2] अस्र की नमाज़ पर ध्यान रखने के लिये इस कारण बल दिया गया है कि व्यवसाय में लीन रहने का समय होता है।

[3] अर्थात शत्रु आदि का।

[4] अर्थात एक वर्ष पूरा होने से पहले। क्योंकि उनकी निश्चित अवधि चार महीने और दस दिन ही निर्धारित हैं।

[5] इसमें बनी इस्राईल के एक गिरोह की ओर संकेत किया गया है।

की मर जाओ, फिर उन्हें जीवित कर दिया। वास्तव में अल्लाह लोगों के लिये बड़ा उपकारी है, परन्तु अधिकांश लोग कृतज्ञता नहीं करते।[१]

२४४.और तुम अल्लाह (के धर्म के समर्थन) के लिये युद्ध करो, और जान लो कि अल्लाह सब कुछ सुनता और जानता है।

२४५.कौन है जो अल्लाह को अच्छा उधार[२] देता है, ताकि अल्लाह उसे उसके लिये कई गुना अधिक कर दे? और अल्लाह ही थोड़ा और अधिक करता है, और उसी की ओर तुम सब फेरे जाओगे।

२४६.हे नबी क्या आपने बनी इस्राईल के प्रमुखों के विषय पर विचार नहीं किया, जो मूसा के बाद सामने आया? जब उन्होंने अपने नबी से कहा: हमारे लिये एक राजा बना दो। हम अल्लाह की राह में युद्ध करेंगे, (नबी ने) कहा: ऐसा तो नहीं होगा तुम्हें युद्ध का आदेश दे दिया जाये तो अवैज्ञा कर जाओ? उन्होंने कहा ऐसा नहीं हो सकता कि हम अल्लाह की राह में युद्ध न करें। जबकि हम अपने घरों और अपने पुत्रों से निकाल दिये गये हैं। परन्तु जब उन्हें युद्ध का आदेश दिया गया तो उन में से थोड़े के सिवा सब फिर गये। और अल्लाह अत्याचारियों को भली भाँती जानता है।

२४७.तथा उनके नबी ने कहा: अल्लाह ने "तालूत" को तुम्हारा राजा बना दिया है। वह कहने लगे: "तालूत" हमारा राजा कैसे हो सकता है? हम उससे अधिक राज्य का अधिकार रखते हैं, वह तो बड़ा धनी भी नहीं है। (नबी ने) कहा: अल्लाह ने उसे तुम पर निर्वाचित किया है, और उसे अधिक ज्ञान तथा शारीरिक बल प्रदान किया है। और अल्लाह जिसे चाहे अपना राज्य प्रदान करे तथा अल्लाह ही विशाल, अती ज्ञानी[३] है।

२४८.तथा उनके नबी ने उनसे कहा: उसके राज्य का लक्षण यह है कि वह ताबूत तुम्हारे पास आयेगा, जिसमें तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम्हारे लिये संतोष तथा मूसा और हारून के घराने के छोड़े हुये अवशेष हैं, उसे फरिश्ते उठाये हुये

---

[१] आयत का भावार्थ यह है कि जो लोग मौत से डरते हों, वह जीवन में

[२] अर्थात जिहाद के लिये धन खर्च करना अल्लाह को उधार देना है।

[३] अर्थात उसी के अधिकार में सब कुछ है। और कौन राज्य की क्षमता रखता है? उसे भी वही जानता है।

होंगे। निश्चय यदि तुम ईमान वाले हो तो इसमें तुम्हारे लिये बड़ी निशानी[१] (लक्षण) है।

२४९.फिर जब तालूत सेना लेकर चला, तो उसने कहा: निश्चय अल्लाह एक नहर द्वारा तुम्हारी परिक्षा लेने वाला है। तो जो उसमें से पियेगा वह मेरा साथ नहीं देगा, और जो उसे नहीं चखेगा, वह मेरा साथ देगा, परंतु जो अपने हाथ से चुल्लु भर पी ले(तो कोई दोष नहीं)। तो थोड़े के सिवा सब ने उसमें से पी लिया। फिर जब उस (तालूत) ने और जो उसके साथ ईमान लाये, उस (नहर) को पार किया, तो कहा आज हम में (शत्रू) जालूत और उसकी सेना से युद्ध करने की शक्ती नहीं। (परंतु) जो समझ रहे थे कि उन्हें अल्लाह से मिलना है उन्होंने कहा: बहुत से छोटे दल अल्लाह की अनुमती से भारी दलों पर विजय प्राप्त कर चुके हैं। और अल्लाह सहनशीलों के साथ है।

२५०.और जब वह जालूत और उसकी सेना के सम्मुख हुये तो प्रार्थना की, हे हमारे पालनहार! हम को धैर्य प्रदान कर तथा हमारे चरणों को (रण क्षेत्र) में स्थिर कर दे। और काफिरों पर हमारी सहायता कर।

२५१.तो उन्होंने अल्लाह की अनुमती से उन्हें पराजित कर दिया, और दावूद ने जालूत का बध कर दिया। और अल्लाह ने उस (दावूद)[२] को राज्य और हिकमत (नुबुवत) प्रदान की, तथा उसे जो ज्ञान चाहा दिया, और यदि अल्लाह कुछ लोगों की कुछ लोगों द्वारा रक्षा न करता तो धरती की व्यवस्था बिगड़ जाती, परंतु संसार वासियों पर अल्लाह बड़ा दयाशील है।

२५२.(हे नबी!) यह अल्लाह की आयतें हैं, जो हम आपको सुना रहे हैं, तथा वास्तव में आप रसूलों में से हैं।

२५३.वह रसूल है। उनको हमने एक दूसरे पर प्रधानता दी है। उन में से कुछ ने अल्लाह से बात की । और कुछ को कई श्रेणियाँ ऊँचा किया। तथा मरयम के

---

[१] अर्थात अल्लाह की ओर से तालूत को निर्वाचित किये जाने की।

[२] दावूद अलैहिस्सलाम तालूत की सेना में एक सैनिक थे, जिनको अल्लाह ने राज्य देने के साथ नबी भी बनाया। उन्ही के पुत्र सुलैमान अलैहिस्सलाम थे। दावूद अलैहिस्सलाम को अल्लाह ने धर्मपुस्तक ज़बूर प्रदान की सूरह साद में उनकी कथा आ रही है।

पुत्र ईसा को खुली निशानियाँ दीं। और रूहुलकुदुस[१] द्वारा उसे समर्थन दिया। और यदि अल्लाह चाहता तो इन रसूलों के पश्चात खुली निशानियाँ आ जाने पर लोग आपस में न लड़ते, परन्तु उन्होंने विभेद किया, तो उन में से कोई ईमान लाया और किसी ने कुफ्र किया। और यदि अल्लाह चाहता तो वह नहीं लड़ते, परन्तु अल्लाह जो चाहता है करता है।

२५४.हे ईमान वालो! हमने तुम्हें जो कुछ दिया है उसमें से दान करो, उस दिन (अर्थात प्रलय) के आने से पहले, जिसमें कोई सौदा नहीं होगा, और न कोई मैत्री, तथा न कोई सिफारिश काम आयेगी, तथा काफिर लोग[२] ही अत्याचारी[३] हैं।

२५५.अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह जीवित[४] तथा नित्य स्थाई है, उसे ऊँघ तथा निद्रा नहीं आती, आकाश और धरती में जो कुछ है सब उसी का[५] है। कौन है जो उसके पास उसकी अनुमती के बिना सिफारिश कर सके? झो कुछ उनके समक्ष और जो कुछ उनसे ओझल है सब को जानता है। वह उसके ज्ञान में से वही जान सकते हैं जिसे वह चाहे। उसकी कुर्सी आकाश तथा धरती को समोये हुये है। उन दोनों की रक्षा उसे नहीं थकाती। वही सर्वोच्च[६] महान है।

२५६.धर्म में बल प्रयोग नहीं। सुपथ कुपथ से अलग हो चुका है। अत: अब जो तागूत (अल्लाह के सिवा पूज्यों) को नकार दे, तथा अल्लाह पर ईमान लाये तो उसने मज़बूत (सहारा) पकड़ लिया जो कभी खण्डित नहीं हो सकता। तथा अल्लाह सब कुछ सुनता जानता[७] है।

---

[१] रूहुलकुदुस का शाब्दिक अर्थ: पवित्रात्मा है। और इससे अभिप्रेत एक फरिश्ता है, जिसका नाम जिब्रील अलैहिस्सलाम है।

[२] अर्थात जो इस तथ्य को नहीं मानते वह स्वयं ही को हानी पहुँचा रहे हैं।

[३] इसका भावार्थ यह है कि परलोक की मुक्ति ईमान और सदाचार पर निर्भर है, न वहाँ मुक्ति का सौदा होगा न मैत्री और न ही सिफारिश काम आयेगी।

[४] अर्थात स्वयंभू, अनंत।

[५] अर्थात जो स्वयं स्थित तथा सब उसकी सहायता से स्थित हैं।

[६] यह कुर्आन की सर्वमहान आयत है। इसका नाम आयतुलकुर्सी है। हदीस में इसकी बड़ी प्रधानता बताई गई है। (तफसीर इब्ने कसीर)

[७] आयत का भावार्थ यह है कि धर्म तथा आस्था के विषय में बल प्रयोग की अनुमती नहीं, यह दिल की आस्था तथा विश्वास की चिज़ है। जो शिक्षा दिक्षा से पैदा हो सकता है, न की बल प्रयोग और दबाव से। इसमें यह संकेत भी है कि इस्लाम में जिहाद अत्याचार को रोकने तथा सत्यधर्म की रक्षा के लिये है न कि धर्म के प्रसार के लिये। धर्म के प्रसार का साधन एक

२५७.अल्लाह उनका सहायक है जो ईमान लाये। वह उनको अंधेरों से निकालता है। और प्रकाश में लाता है। और जो काफिर(विश्वासहीन) हैं, उनके सहायक ताग़ूत (उनके मिथ्या पूज्य) हैं। जो उन्हें प्रकाश से अंधेरों की ओर ले जाते हैं। यही नारकी हैं जो उसमें सदावासी होंगे।

२५८.हे नबी! क्या आपने उस व्यक्ति की दशा पर नहीं किया, जिसने इब्राहीम से उसके पालनहार के विषय में विवाद किया, इसलिये कि अल्लाह ने उसे राज्य दिया था? जब इब्राहीम ने कहाः मेरा पालनहार वह है जो जीवित[१] करता तथा मारता है तो उसने कहाः मैं भी जीवित करता तथा मारता हूँ। इब्राहीम ने कहाः अल्लाह सूर्य को पूर्व से लाता है, तू उसे पश्चिम से ला दे! यह सुन कर काफिर चकित रह गया। और अल्लाह अत्याचारियों को मार्गदर्शन नहीं देता।

२५९.अथवा उस व्यक्ति के प्रकार जो एक ऐसी नगरी से गुज़रा जो अपनी छतों सहित ध्वस्त पड़ी थी? उसने कहाः अल्लाह इसके ध्वस्त हो जाने के पश्चात इसे कैसे जीवित(आबाद) करेगा? फिर अल्लाह ने उसे सौ वर्ष तक मौत दे दी। फिर उसे जीवित किया। और कहा तुम कितनी अवधि तक मुर्दे पड़े रहे? उसने कहाः एक दिन अथवा दिन के कुछ क्षण। (अल्लाह ने) कहाः बल्कि तुम सौ वर्ष तक पड़े रहे। अपने खाने पीने को देखो कि तनिक परिवर्तन नहीं हुआ है। तथा अपने गधे की ओर देखो, ताकि हम तुम्हें लोगों के लिये एक निशानी बना दें। तथा (गधे की) स्थियों को देखो कि हम उसे कैसे खड़ा करते हैं। और उनपर कैसे मास चढ़ाते हैं। इस प्रकार जब उसके समक्ष बातें उजागर हो गयीं, तो वह[२] पुकार उठा कि मुझे ज्ञान (प्रत्यक्ष) हो गया कि अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

ही है और वह प्रचार है, सत्यप्रकाश है। यदि अंधकार हो तो केवल प्रकाश की आवश्यक्ता है। फिर प्रकाश जिस ओर फिरेगा तो अंधकार स्वयं दूर हो जायेगा।

[१] अर्थात जिसे चाहूँ मार दूँ, और जिसे चाहूँ क्षमा कर दूँ। इस आयत में अल्लाह के विश्व व्यवस्थापक होने का प्रमाणिकरण है। और इसके बाद की आयत में उसके मुर्दा को जीवित करने का प्रमाणिकरण है।

[२] इस व्यक्ति के बारे में भाष्यकारों ने विभेद किया है। परन्तु संभवतः वह व्यक्ति (उज़ैर) थे। और नगरी बैतुल मक्दिस थी। जिसे बुख्तन्नसर राजा ने आक्रमण पश्चात उजाड़ दिया था। (तफ्सीर इब्ने कसीर)

२६०.तथा याद करो जब इब्राहीम ने कहा: हे मेरे पालनहार! मुझे दिखा दे कि तू मुर्दों को कैसे जीवित कर देता है? कहा: क्या तुम ईमान नहीं लाये? उस ने कहा: क्यों नहीं? परन्तु ताकि मेरे दिल को संतोष हो जाये। अल्लाह ने कहा: चार पक्षी ले आओ। और उनको अपने से परचा लो। (फिर उनको बध करके) उनका एक अंश (भाग) पर्वत पर रख दो। फिर उनको पुकारो। वह तुम्हारे पास दौड़े चले आयेंगे। और यह जान ले कि अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

२६१.जो अल्लाह की राह में अपने धनों को दान करते हैं, उस की दशा, उस एक दाने जैसी है जिसने सात बालियाँ उगाई हों। (उसकी प्रत्येक) बाली में सौ दाने हों। और अल्लाह जिसे चाहे और भी अधिक देता है। तथा अल्लाह विशाल ज्ञानी है।

२६२.जो अपना धन अल्लाह की राह में दान करते हैं, फिर दान करने के पश्चात उपकार नहीं जताते, और न (जिसे दिया हो) दु:ख देते हैं उन्हीं के लिये उनके पालनहार के पास उनका प्रतिकार (बदला) है, और उन पर कोई डर नहीं होगा, और न ही वह उदासीन[१] होंगे।

२६३.भली बात बोलना तथा क्षमा, उस दान से उत्तम है जिस के पश्चात दु:ख दिया जाये। तथा अल्लाह निस्पृह सहनशील है।

२६४.हे ईमान वालो! उस व्यक्ति के समान उपकार जता कर तथा दु:ख दे कर, अपने दानों को व्यर्थ न करो जो लोगों को दिखाने के लिये दान करता है, और तथा अल्लाह तथा अन्तिम दिन (परलोक) पर ईमान नहीं रखता। उसका उदाहरण उस चटेल पत्थर जैसा है जिस पर मिट्टी पड़ी हो, और उस पर घोर वर्षा हो जाये, और उस पत्थर को चटेल छोड़ दे। वह अपनी कमाई का कुछ भी न पा सकेंगे, और अल्लाह काफिरों को सीधी डगर नहीं दिखाता।

२६५.तथा उनकी उपमा जो अपना धन अल्लाह की प्रसन्नता की इच्छा में अपने मन की स्थिरता के साथ दान करते हैं, उस बाग़ जैसी है, जो पृथ्वी तल के किसी ऊँचे स्थान पर हो, उसपर वर्षा हुई तो दुगना फल लाया, और यदि घोर वर्षा

[१] अर्थात संसार में दान न करने पर संताप होगा।

नहीं हुई, तो उसके लिये फुहार ही बस[1] हो, तथा तुम जो कुछ कर रहे हो उसे अल्लाह देख रहा है।

२६६.क्या तुम में से कोई चाहेगा कि उसके खजूर तथा अंगूरों के बाग हों, जिन में नहरें बह रही हों, उन में उसके लिये प्रत्येक प्रकार के फल हों, तथा वह बूढ़ा हो गया हो, और उसके निर्बल बच्चे हों, फिर वह बगोल के आघात से जिस में आग हो झुलस जायें।[2] इसी प्रकार अल्लाह तुम तुम्हारे लिये आयतों उजागर करता है, ताकि तुम सोच विचार करो।

२६७.हे ईमान वालो! उन स्वच्छ चीज़ों में से जो तुमने कमाई है, तथा उन चीज़ों में से जो हमने धरती से तुम्हारे लिये उपजाईं हैं, दान करो। तथा उसमें से उस चीज़ को दान करने का निश्चय न करो जिसे तुम स्वयं न ले सको। परन्तु यह की अनदेखी कर जाओ। तथा जान लो कि अल्लाह निःस्पृह प्रशंसित है।

२६८.शैतान तुम्हें निर्धनता से डराता है, तथा निर्लज्जा की प्रेरणा देता है, तथा अल्लाह तुम को क्षमा तथा अधिक देने का वचन देता है, तथा अल्लाह विशाल ज्ञानी है।

२६९.वह जिसे चाहे प्रबोध (धर्म की समझ) प्रदान करता है, और जिसे प्रबोध प्रदान कर दिया गया, उसे बड़ा कल्याण मिल गया, और समझ वाले ही शिक्षा प्रदान करते हैं।

२७०.तथा तुम जो भी दान करो, अथवा मनौती मानो, अल्लाह उसे जानता है, तथा अत्याचारियों का कोई सहायक न होगा।

---

[1] यहाँ से अल्लाह की प्रसन्नता के लिये जिहाद तथा दीन, दुखियों की सहायता के लिये धन दान करने की विभिन्न रूप से प्रेरणा दी जा रही है। भावार्थ यह है कि यदि निःस्वार्थता से थोड़ा भी दान किया जाये, तो शुभ होता है, जैसे वर्षा की फुहारें भी एक बाग को हरा भरा कर देती हैं।

[2] अर्थात यही दशा काफिरों की प्रलय के दिन होगी उसके पास फल पाने के लिये कोई कर्म नहीं होगा। और न कर्म का अवसर होगा। तथा जैसे उसके निर्बल बच्चे उसके कोई काम न आ सके, उसी प्रकार उसका दिखावे का दान भी काम नहीं आयेगा। वह अपनी आवश्यक्ता के समय अपने कर्मों के फल से वंचित कर दिया जायेगा। जैसे इस व्यक्ति ने अपने बुढ़ापे और बच्चों की निर्बलता के समय अपना बाग खो दिया।

२७१.यदि तुम खुले दान करो तो वह भी अच्छा है, तथा यदि छुपाकर करो और कंगालो को दो तो वह तुम्हारे लिये अधिक अच्छा[१] है। यह तुम से तुम्हारे पापों को दूर कर देगा। तथा तुम जो कुछ कर रहे हो उससे अल्लाह सूचित है।

२७२.उनको सीधी डगर पर लगा देना आपका दायित्व नहीं परन्तु अल्लाह जिसे चाहे सीधि डगर पर लगा देता है। तथा तुम जो भी दान देते हो तो अपने लाभ के लिये देते हो, तथा तुम अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये ही देते हो, तथा तुम जो भी दान दोगे तुम्हें उसका भरपूर प्रतिफल दिया जायेगा। और तुम पर अत्याचार[२] नहीं किया जायेगा।

२७३.दान उन निर्धनों (कंगालों) के लिये है जो अल्लाह की राह में ऐसे घिर गये हों कि धरती में दौड़ भाग न कर[३] सकते हों, उन्हें अज्ञान लोग न माँगने के कारण धनी समझते हैं, वह लोगों के पीछे पड़ कर नहीं माँगते। तुम उन्हें उन के लक्षणों से पहचान लोगे। तथा जो भी धन तुम दान करोगे, निस्संदेह अल्लाह उसे भली भाँति जानने वाला है।

२७४.जो लोग अपना धन रात दिन, खुले छुपे दान करते हैं तो उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास, उन का प्रतिफल (बदला) है। और उन को कोई डर नहीं होगा। और न वह उदासीन होंगे।

२७५.जो लोग व्याज खाते हैं ऐसे उठेंगे जैसे वह उठता है जिसे शैतान ने छू कर उन्मत्त कर दिया हो। उन की यह दशा इस कारण होगी कि उन्हों ने कहा कि व्यापार भी तो व्याज ही जैसा है, जब कि अल्लाह ने व्यापार को हलाल (वैध), तथा व्याज को हराम (अवैध) कर दिया[४] है। अब जिस के पास उस के पालनहार की ओर से निर्देश

---

[१] दिखावे के दान से रोकने का यह अर्थ नहीं की छुपा कर ही दान किया जाये, बल्कि इसका अर्थ यह है कि नि:स्वार्थ दान जैसे भी दिया काये उसका फल मिलेगा।

[२] अर्थात उसके प्रतिफल में कोई कमी नहीं की जायेगी।

[३] इस से सांकेतिक वह मुहाजिर हैं जो मक्का से मदीना हिज्रत कर गये। जिस के कारण उन का सारा सामान मक्का में छूट गया। और अब उन के पास कुछ भी नहीं बचा। परन्तु वह लोगों के सामने हाथ फैला कर भीख नहीं मांगते।

[४] इस्लाम मानव में परस्पर प्रेम तथा समानुभूति उत्पन्न करना चाहता है, इसी कारण उस ने दान करने का निर्देश दिया है कि एक मानव दूसरे की आवश्यकता पूर्ति करे। तथा उस की आवश्यकता को अपनी आवश्यक्ता समझे। परन्तु व्याज खाने की मांसिकता सर्वथा इस के विपरीत है। व्याज भक्षी किसी की अवश्यकता को देखता है तो उस के भीतर उस की सहायता की भावना उत्पन्न नहीं होती। वह उस की विवशता से अपना स्वार्थ पूरा करता तथा उस की आवश्यक्ता को अपने धनी होने का साधन बनाता है। और क्रमशः एक निर्दयी हिंसक पशु बन कर रह जाता है, इस के सिवा व्याज की रीति धन को सीमित

आ गया, और इस कारण उस से रूक गया, तो जो कुछ पहले लिया वह उसी का हो गया। तथा उस का मुआमला अल्लाह के हवाले है, और जो फिर वही करें तो वही नारकी हैं, जो उस में सदावासी होंगे।

२७६.अल्लाह व्याज को मिटाता है, और दानों को बढ़ाता है। और अल्लाह किसी कृतघ्न घोर पापी से प्रेम नहीं करता।

२७७.वास्तव में जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये, तथा नमाज की स्थापना करते रहे, और जकात देते रहे तो उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास उन का प्रतिफल है, और उन्हें कोई डर नहीं होगा और न उदासीन होंगे।

२७८.हे ईमान वालो! अल्लाह से डरो, और जो व्याज शेष रह गया है उसे छोड़ दो, यदि तुम ईमान रखने वाले हो तो।

२७९.और यदि तुम ने ऐसा नहीं किया, तो अल्लाह तथा उस के रसूल से युद्ध के लिये तैयार हो जाओ। और यदि तुम तौबा (क्षमा याचना) कर लो तो तुम्हारे लिये तुम्हारा मूल धन है। न तुम अत्याचार करो[१], न तुम पर अत्याचार किया जाये।

२८०.और यदि तुम्हारा ऋृणी असुविधा में हो तो उसे सुविधा तक अवसर दो। और अगर क्षमा कर दो (अर्थात दान कर दो) तो यह तुम्हारे लिये अधिक अच्छा है, यदि तुम समझो तो।

२८१.तथा उस दिन से डरो जिस में तुम अल्लाह की ओर फेरे जाओगे, फिर प्रत्येक प्राणी को उस की कमाई का भरपूर प्रतिकार दिया जायेगा, तथा किसी पर अत्याचार न होगा।

२८२.हे ईमान वालो! जब तुम आपस में किसी निश्चित अवधि तक के लिये उधार लेन देन करो, तो उसे लिख लिया करो, तुम्हारे बीच न्याय के साथ कोई लेखक लिखे, जिसे अल्लाह ने लिखने से इन्कार न करे। तथा वह लिखवाये जिस पर उधार है। और अपने पालनहार अल्लाह से डरे। और उस में से कुछ कम न करे। यदि जिस पर उधार है वह निर्बोध अथवा निर्बल हो, अथवा लिखवा न सकता हो तो उस का संरक्षक न्याय के साथ लिखवाये। तथा अपने में से दो पुरुष न हों तो एक पुरुष तथा

करती है, जब कि इस्लाम धन को फैलाना चाहता है, इस के लिये व्याज को मिटाना, तथा दान की भावना का उत्थान चाहता है। यदि दान की भावना का पूर्णतः उत्थान हो जाये तो कोई व्यक्ति दीन तथा निर्धन रह ही नहीं सकता।

[१] अर्थात मूल धन से अधिक लो।

दो स्त्रियों को उन साक्षियों में से जिन को साक्षी बनाना पसंद करो। ताकि दोनों (स्त्रियों) में से एक भूल जाये तो दूसरी याद दिला दे। तथा जब साक्षी बुलाये जायें तो इन्कार न करें। तथा विषय छोटा हो या बड़ा उस की अवधि सहित लिखवाने में आलस्य न करो, यह अल्लाह के समीप अधिक न्याय है। तथा साक्ष्य के लिये अधिक सहायक है। और इस से अधिक समीप है कि संदेह न करो। परन्तु यदि तुम व्यापारिक लेन देन हाथों हाथ (नगद करते हो) तो तुम पर कोई दोष नहीं कि उसे न लिखो। तथा जब आपस में लेन देन करो तो साक्षी बना लो। और लेखक तथा साक्षी को हानि न पहुंचाई जाये। और यदि ऐसा करोगे तो तुम्हारी अवैज्ञा ही होगी, तथा अल्लाह से डरो। और अल्लाह तुम्हें सिखा रहा है। और निःसंदेह अल्लाह सब कुछ जानता है।

२८३.और यदि तुम यात्रा में रहो, तथा लिखने के लिये किसी को न पाओ तो धरोहर रख दो। और यदि तुम में परस्पर एक दूसरे पर भरोसा हो (तो धरोहर की भी आवश्यकता नहीं) जिस पर अमानत (उधार) है, वह उसे चुका दे। तथा अल्लाह (अपने पालनहार) से डरे, और साक्ष्य को न छुपाओ, और जो उसे छुपायेगा तो उस का दिल पापी है, तथा तुम जो करते हो अल्लाह सब जानता है।

२८४.आकाशों तथा धरती में जो कुछ है सब अल्लाह का है। और जो तुम्हारे मन में है उसे बोलो अथवा मन ही में रखो अल्लाह तुम से उस का हिसाब लेगा। फिर जिसे चाहे क्षमा कर देगा। और जिसे चाहे दण्ड देगा। और अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

२८५.रसूल उस चीज पर ईमान लाया जो उस के लिये अल्लाह की ओर से उतारी गई। तथा सब ईमान वाले उस पर ईमान लाये। वह सब अल्लाह तथा उस के फरिश्तों और उस की सब पुस्तकों एवं रसूलों पर ईमान लाये। (वह कहते हैं:) हम उस के रसूलों में से किसी के बीच अंतर नहीं करते। हम ने सुना, और हम आज्ञाकारी हो गये। हे हमारे पालनहार! हमें क्षमा कर दें, और हमें तेरे ही पास[१] आना है।

२८६.अल्लाह किसी प्राणी पर उस की सकत से अधिक (दायित्व का) भार नहीं रखता। जो सदाचार करेगा उस का लाभ उसी को मिलेगा, और जो दुराचार करेगा उस की

[१] इस आयत में सत्धर्म इस्लाम की आस्था तथ कर्म का सारांश बताया गया है।

हानि भी उसी को होगी। हे हमारे पालनहार! यदि हम भूल चूक जायें तो हमें न पकड़! हे हमारे पालनहार हमारे ऊपर इतना बोझ न डाल जितना हम से पहले के लोगों पर डाला गया। हे हमारे पालनहार! हमारे पापों की अनदेखी कर दे, और हमें क्षमा कर दे, तथा हम पर दया कर, तू ही हमारा स्वामी है, तथा काफिरों के विरूद्ध हमारी सहायता कर।

*****

सूरह आले इमरान – ३

सूरह आले इमरान के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में २०० आयतें है।

●इस सूरह की आयत ३३ में आले इमरान (इमरान की संतान) का वर्णन हुआ है जो ईसा (अलैहिस्सलाम) की माँ मरयम (अलैहिस्सलाम) के पिता का नाम है। इस लिये इस का नाम (आले इमरान) रखा गया है।

●इस की आरंभिक आयत ९ तक तौहीद (अद्वैतवाद) को प्रस्तुत करते हुये यह बताया गया है कि कुर्आन अल्लाह की वाणी है इस लिये सभी धार्मिक विवाद में यही निर्णयकारी है।

●आयत १० से ३२ तक अहले किताब तथा दूसरों को चेतावनी दी गई है कि यदि उन्हों ने कुर्आन के मार्गदर्शन को जिस का नाम इस्लाम है नहीं माना तो यह अल्लाह से कुफ्र होगा जिस का दण्ड सदैव के लिये नरक होगा। और उन्हों ने धर्म का जो वस्त्र धारण कर रखा है प्रलय के दिन उस की वास्तविक्ता खुल जायेगी और वह अपमानित हो कर रह जायेंगे।

●आयत ३३ से ६३ तक में मरयम (अलैहस्सलाम) तथा ईसा (अलैहिस्सलाम) से संबन्धित तथ्यों को उजागर किया गया जो उन निर्मूल विचारों को खंडन करते हैं जिन्हें ईसाईयों ने धर्म में मिला लिया है और इस संदर्भ में जकरिय्या (अलैहिस्लाम) तथा यह्या (अलैहिस्सलाम) का वर्णन करते हुये मुसलमानों को उन से बचने के निर्देश दिये गये हैं।

● आयत १०२ से १२० तक मुसलमानों को इस्लाम पर स्थित रहने तथा कुर्आन पाक को दृढ़ता से थामे रहने और अपने भीतर एक ऐसा गिरोह बनाने निर्देश दिये गये है जो धार्मिक सुधार तथा सत्य का प्रचार करे और इसी के साथ अहले किताब के उपद्रव से सावधान रहने पर बल दिया गया है।

●आयत १२१ से १८९ तक उहुद के युद्ध की स्थितियों की समीक्षा की गई है। तथा उन कमजोरियों की ओर संकेत दिया गया है जो उस समय उजागर हुई।

● आयत १९० से अन्त तक इस का वर्णन है कि ईमान कोई अन्ध विश्वास नहीं, यह समझ बूझ तथ स्वभाव की आवाज है। और जब मनुष्य इसे दिल से स्वीकार कर

लेता है तो उस का संबंध अल्लाह से हो जाता और उस की यह प्रार्थना होती है कि उस का अंत शुभ हो। उस समय उस का पालनहार उसे शुभपरिणाम की शुभसूचना सुनाता है कि उस ने सत्धर्म का पालन करने में जो योगदान दिये है वह उसे उन का भरपूर सुफल प्रदान करेगा। फिर अन्त में सत्य की राह में संघर्ष करने और सत्य तथा असत्य के संघर्ष में स्थित रहने के निर्देश दिये गये है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. अलिफ, लाम, मीम!

२. अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह जीवित नित्य स्थायी है।

३. उसी ने आप पर सत्य के साथ पुस्तक (कुर्आन) उतारी है, जो इस से पहले की पुस्तकों के लिये प्रमाणकारी है, और उसी ने तौरात तथा इंजील उतारी है।

४. इस से पूर्व लोगों के मार्गदर्शन के लिये, और फुर्कान उतारा है[१], तथा जिन्हों ने अल्लाह की आयतों को अस्वीकार किया, उन्हीं के लिये कडी यातना है। और अल्लाह प्रभुत्वशाली, बदला लेने वाला है।

५. निस्संदेह अल्लाह से आकाशों तथा धरती की कोई चीज छुपी नहीं है।

६. वही तुम्हारा रूप आकार गर्भाषयों में जैसे चाहता है, बनाता है, कोई पूज्य नहीं, परन्तु वही प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

७. उसी ने आप पर[२] यह पुस्तक (कुर्आन) उतारी है जिस में कुछ पुस्तक का मूल आधार है[३], तथा कूछ दूसवरी मुतशाबिह[४] (संदिग्ध) है। तो जिन के दिलों में कुटिलता है वह उपद्रव की खोज तथा मनमानी अर्थ करने के लिये संदिग्ध के पीछे पड जाते है। जब कि उन का वास्तविक अर्थ अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। तथा जो ज्ञान में पक्के है वह कहते हैं कि सब हमारे पालनहार के पास से है, और बुद्धिमान लोग ही शिक्षा ग्रहण करते है।

---

[१] अर्थात तौरात और इंजील अपने समय में लोगों के लिये मार्गदर्शन थीं। परन्तु फुर्कान (कुर्आन) उतरने के पश्चात् अब वह मार्गदर्शन केवल कुर्आन पाक में है।

[२] आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह ने मानव का रूप आकार बनाने और उसकी आर्थिक आवश्यकता की व्यवस्था करने के समान, उस की आत्मिक आवश्यकता के लिये कुर्आन उतारा है, जो अल्लाह की प्रकाशना तथा मार्गादर्शन और फुर्कान है। जिस के द्वारा सत्योसत्य में विवेक (अन्तर) कर के सत्य को स्वीकार करे।

[३] मुहकम (सुदृढ) से अभिप्राय वह आयतें हैं जिन के अर्थ स्थिर, खुले हुये है। जैसे एकेश्वरवाद, रिसालत तथा आदेशों और निषेधों एवं हलाल (वैध) और हराम (अवैध) से सम्बन्धित आयतें, यही पुस्तक का मूल आधार है।

[४] मुतशाबिह (संदिग्ध) से अभिप्राय वह आयतें है जिन में उन तथ्यों की ओर संकेत किया गया है जो हमारी ज्ञानेंन्द्रियों में नहीं आ सकते, जैसे मौत के पश्चात जीवन, तथा परलोक की बातें, इन आयतों के विषय में अल्लाह ने हमें जो जानकारी दी है हम उन पर विश्वास करते है, क्यों कि इनका विस्तार विवरण हमारी बुद्धि से बाहर है, परन्तु जिन के श दिलों में खोट है वह इन की वास्तविक्ता जानने के पीछे पड जाते है जो उन की शक्ति से बाहर है।

८. (तथा कहते हैं): हे हमारे पालनहार! हमारे दिलों को हमें मार्गदर्शन देने के पश्चात कुटिल न कर, तथा हमें अपनी दया प्रदान कर। वास्तव में तू बहुत बडा दाता है।
९. हमारे पालनहार! तू उस दिन सब को एकत्र करने वाला है जिस में कोई संदेह नहीं, निस्संदेह अल्लाह अपने निर्धारित समय का विरूद्ध नहीं करता।
१०. निश्चय जो काफिर हो गये उन के धन तथा उन की संतान अल्लाह (की यातना) से (बचाने में) उन के कुछ काम नहीं आयेगी, तथा वही अग्नि के ईंधन बनेंगे।
११. जैसे फिरओनियों तथा उन के पहले के लोगों की दशा हुई, उन्हों ने हमारी निशानियों को मिथ्या कहा, तो अल्लाह ने उन के पापों के कारण उन को धर लिया। तथा अल्लाह कडा दण्ड देने वाला है।
१२. है नबी! काफिरों से कह दो कि तुम शीघ्र ही परास्त कर दिये जाओगे, तथा नरक की ओर एकत्रित किये जाओगे, और वह बहुत बुरा ठिकाना[१] है।
१३. वास्तव में तुम्हारे लिये उन दो दलों में जो (बद्र में) सम्मुख हो गये, एक निशानी थी। एक अल्लाह की राह में युद्ध कर रहा था, तथा दूसरा काफिर था, वह अपनी आँखो से देख रहे थे कि यह (मुसलमान) तो दुगने लग रहे है। तथा अल्लाह अपनी सहायता द्वारा जिसे चाहे समर्थन देता है। नि:संदेह इस में समझ बूझ वालों के लिये बडी शिक्षा[२] है।
१४. लोगों के लिये उन के मन को मोहने वाली चीजें, जैसे स्त्रियों, संतान, सोने चाँदी के ढेर, निशान लगे घोडे, पशुओं तथा खेती, शोभनीय बना दी गई है। यह सब संसारिक जीवन के उपभोग्य है। और उत्तम आवास अल्लाह के पास है।
१५. (हे नबी!) कह दो: क्या मैं तुम्हें इस से उत्तम चीज बता दूँ? उन के लिये जो डरें। उन के पालनहार के पास ऐसे स्वर्ग है। जिन में नहरें बह रही है। वह उन में सदावासी होंगे। और निर्मल पत्नियाँ हागी, तथा अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त होगी। और अल्लाह अपने भक्तों को देख रहा है।
१६. जो (यह) प्रार्थना करते है कि हमारे पालनहार! हम ईमान लाये, अत: हमारे पापों को क्षमा कर दे, और हमें नरक की यातना से बचा।

[१] इस में काफिरों की मुसलमानों के हाथों पराजय की भविष्यवाणी है।
[२] अर्थात इस बात की कि विजय अल्लाह के समर्थन से प्राप्त होती है, सेना की संख्या से नहीं।

१७. जो सहनशील है, सत्यवादी है, आज्ञाकारी है, दानशील तथा भारों में अल्लाह से क्षमा याचना करने वाले है।

१८. अल्लाह साक्षी है जो न्याय के साथ कायम है, कि उस के सिवा कोई पूज्य नहीं है, इसी प्रकार फरिश्ते और ज्ञानी लोग भी (साक्षी है) कि उस के सिवा कोई पूज्य नहीं। वह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

१९. निस्संदेह (वास्तविक) धर्म अल्लाह के पास इस्लाम ही है, और अहले किताब ने जो विभेद किया तो अपने पास ज्ञान आने पश्चात् आपस में द्वेष के कारण किया। तथा जो अल्लाह की आयतों के साथ कुफ्र (अस्वीकार) करेगा, तो निश्चय अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

२०. फिर यदि वह आप से विवाद करें तो कह दें कि मैं स्वयं तथा जिस ने मेरा अनुसरण किया अल्लाह के आज्ञाकारी हो गये। तथा अहले किताब, और उम्मियों (अर्थात जिन के पास किताब नहीं आई) से कहो कि क्या तुम भी आज्ञाकारी हो गये? यदि वह आज्ञाकारी हो गये तो मार्गदर्शन पा गये। और यदि विमुख हो गये तो आप का दायित्व (संदेश) पहुँचा[१] देना है। तथा अल्लाह भक्तों को देख रहा है।

२१. जो लोग अल्लाह की आयतों के साथ कुफ्र करते हों, तथा नबियों को अवैध बध करते हों, तथा उन लोगों का बध करते हों जो न्याय का आदेश देते हें तो उन्हें दु:खदायी यातना[२] की शुभ सूचना सुना दो।

२२. यही है जिन के कर्म संसार तथा परलोक में अकारथ गये, और उन का कोई सहायक नहीं होगा।

२३. है नबी! क्या आप ने उन की[३] दशा नहीं देखी जिन को पुस्तक का कुछ भाग दिया गया? वह अल्लाह की पुस्तक की ओर बुलाये जा रहे है, ताकि उन के बीच निर्णय[४] करे तो उन का एक गिरोह मुँह फेर रहा है। और वह है ही मुँह फेरने वाले।

---

[१] अर्थात उन से वाद विवाद करना व्यर्थ है।

[२] इस में यहूद की आस्थिक तथा कर्मिक कुपथा की ओर संकेत है।

[३] इस से अभिप्राय यहूदी विद्वान है।

[४] अर्थात विभेद का निर्णय कर दे। इस आयत में अल्लाह की पुस्तक से अभिप्राय: तौरात और इंजील है। और अर्थ यह है कि जब उन्हें उन की पुस्तकों की ओर बुलाया जाता है कि अपनी पुस्तकों ही को निर्णायक मान लो, तथा बताओ कि उन में अंतिम नबी पर ईमान लाने का आदेश दिया गया है या नहीं? तो वह कतरा जाते है, जैसे कि उन्हें कोई ज्ञान ही न हो।

२४. उन की यह दशा इस लिये है कि उन्हों ने कहा कि नरक की अग्नि हमें गिनती के कुछ दिन ही छूऐगी, तथा उन को अपने धर्म में उन की मिथ्या बनाई हुई बातों ने धोखे में डाल रखा है।

२५. तो उन की क्या दा होगी, जब हम उन को उस दिन एकत्र करेंगे, जिस (के आने) में कोई संदेह नहीं, तथा प्रत्येक प्राणी को उस के किये का भरपूर प्रतिफल दिया जायेगा, और किसी के साथ कोई अत्याचार नहीं किया जायेगा।?

२६. हे (नबी)! कहो: हे अल्लाह! राज्य के[१] अधिपति (स्वामी)! तू जिसे चाहे राज्य दे, और जिस से चाहे राज्य छीन ले, तथा जिसे चाहे सम्मान दे, और जिसे चाहेर अपमान दे। तेरे ही हात में भलाई है। नि:संदेह तू जो चाहे कर सकता है।

२७. तू रात को दिन में प्रविष्ट कर देता है, तथा दिन को रात में प्रविष्ट कर[२] देता है। और जीव को निर्जीव से निकालता है। तथा निर्जीव को जीव से निकालता है, और जिसे चाहे अगणित आजीविका प्रदान करता है।

२८. मुमिनों को चाहिये कि वह ईमान वालों के विरूद्ध काफिरों को अपना सहायकमित्र न बनायें। और जो ऐसा करेगा उस का अल्लाह सेकोई संबंध नहीं। परन्तु उन से बचने के लिये[३] और अल्लाह तुम्हें स्वयं अपने से डरा रहा है। और अल्लाह ही की ओर जाना है।

२९. हे नबी! कह दो कि जो तुम्हारे मन में है उसे मन ही में रखो या व्यक्त करो अल्लाह उसे जानता है। तथा जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, वह सब को जानता है। और अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

३०. जिस दिन प्रत्येक प्राणी ने जो सुकर्म किया है, उसे उपस्थित पायेगा, तथा जिस ने कुकर्म किया है व ह कामना करेगा कि उस के तथा उस के कुकर्मों के बीच बडी दूरी होती। तथा अल्लाह तुम्हें स्वयं से डराता[४] है। और अल्लाह अपने भक्तों के लिये अति करूणामय है।

---

[१] अल्लाह की अपार शक्ति का वर्णन ।

[२] इस में रात्रि–दिवस के परिवर्तन की ओर संकेत है।

[३] अर्थात संधि मित्र बना सकते हो।

[४] अर्थात अपनी अवैज्ञा से ।

३१. हे नबी! कह दो: यदि तुम अल्लास से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो, अल्लाह तुम से प्रेम[1] करेगा। तथा तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा। और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

३२. हे नबी! कह दो: अल्लाह और रसूल की आज्ञा का अनुपालन करो। फिर भी यदि वह विमुख हों तो निस्संदेह अल्लाह काफिरों से प्रेम नहीं करता।

३३. वस्तुत: अल्लाह ने आदम, नूह, इब्राहीम की संतान तथा इमरान की संतान को संसार वासियों में चुन लिया था।

३४. यह एक दूसरे की संतान है, और अल्लाह सब सुनता और जानता है।

३५. जब इमरान की पत्नी[2] ने कहा: है मेरे पालनहार! जो मेरे गर्भ में है, मै ने तेरे[3] लिये उसे मुक्त करने की मनौती मान ली है। तू इसे मुझ से स्वीकार कर ले। वास्तव में तू ही सब कुछ सुनता और जानता है।

३६. फिर जब उस ने बालिया जनी तो (संताप से) कहा: मेरे पालनहार मुझे तो बालिका हो गई, हालाँकि जो उस ने जना उस का अल्लाह को भली भाँति ज्ञान था–और नर, नारी के समान नहीं होता–, और मैं ने उस का नाम मर्‌यम रखा है। और मैं उसे तथा उस की संतान को धिक्कारे हुये शैतान से तेरी शरण में देती हूँ।[4]

३७. तो तेरे पालनहार ने उसे भली भाँति स्वीकार कर लिया। तथा उस का अच्छा प्रतिपालन किया। और जकरिय्या को उस का संरक्षक बनाया। जकरिय्या जब भी उस के मेहराब (उपासन कोष्ट) में जाता तो उस के पास कुछ खाद्य पदार्थ पाता वह कहता कि हे मर्‌यम। यह कहाँ से (आया) है? वह कहती: यह अल्लाह के पास से (आया) है। वास्तव में अल्लाह जिसे चाहता है अगणित जीविका प्रदान करता है।

---

[1] इस में यह संकेत है कि जो अल्लाह से प्रेम का दावा करता हो, और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का अनुसरण न करता हो तो वह अल्लाह का प्रेमी नहीं हो सकता।

[2] अर्थात मर्‌यम की माँ।

[3] अर्थात बैतुल मकदिस की सेवा के लिये।

[4] हदीस में है कि जब कोई शिशु जन्म लेता है, तो शैतान उसे स्पर्श करता है जिस के कारण वह चीख कर रोता है, परन्तु मर्‌यम और उस के पुत्र को स्पर्श नहीं किया है। (सही बुखारी भ ४५४८) सूचना दे रहा है, जो अल्लाह के शब्द (ईसा) का पुष्टि करने वाला, प्रमुख तथा संयमी और सदाचारियों में से एक नबी होगा।

३८. तब जकरिय्या ने अपने पालनहार से प्रार्थना की हे मेरे पालनहार। मुझे अपनी ओर से सदाचारी संतान प्रदान कर। निस्संदेह तू प्रार्थना सुनने वाला है।

३९. तो फरिश्तों ने उसे पुकारा–जब वह मेहराब में खडा नमाज पढ रहा था– कि: अल्लाह तुझे ''यह्या'' की शुभ:

४०. उस ने कहा: मेरे पालनहार! मेरे कोई पुत्र कहाँ से होगा, जब कि में बूढा हो गया हूँ। और मेरी पत्नी बाँझ है? उस ने कहा: अल्लाह इसी प्रकार जो चाहता है कर देता है।

४१. उस ने कहा: मेरे पालनहार! मेरे लिये कोई लक्षण बना दे। उस ने कहा: तेरा लक्षण यह होगा कि तीन दिन तक लोगों से बात नहीं कर सकेगा। परन्तु संकेत से। तथा अपने पालनहार का बहुत स्मरण करता रह। और संध्या, प्रात: उस की पवित्रता का वर्णन कर।

४२. और (याद करो) जब फरिश्तों ने मर्‌यम से कहा: हे मर्‌यम! तुझे अल्लाह ने चुन लिया, तथा पवित्रता प्रदान की, और संसार की स्त्रियों पर तुझे चुन लिया।

४३. हे मर्‌यम! अपने पालनहार की आज्ञाकारी रहो। और सज्दा करो तथा रूकूअ करने वालों के साथ रूकूअ करती रहो।

४४. यह गैब (परोक्ष) की सूचनायें है। जिन्हें हम आप की ओर प्रकाशन कर रहे है। और आप उन के पास उपस्थित न थे जब वह अपनी लेखनियाँ[1] फेंक रहे थे कि कौन मर्‌यम का अभिरक्षण करेगा। और न उन के पास उपस्थित थे जब वह झगड रहे थे।

४५. जब फरिश्तों ने कहा: हे मर्‌यम। अल्लाह तुझे अपने एक शब्द[2] की शुभ सूचना दे रहा है। जिस का नाम मसीह ईसा पुत्र पर्‌यम होगा। वह लोक–परलोक में प्रमुख, तथा (मेरे) समीपवर्तियों में होगा।

४६. वह लोगों से गोद में तथा अधेड आयु में बातें करेगा, और सदाचारियों में होगा।

४७. मर्‌यम ने (आश्चर्य से) कहा: मेरे पालनहार! मुझे पुत्र कहाँ से होगा, मुझे तो किसी पुरूष ने हाथ भी नहीं लगाया है? उस ने[1] कहा: इसी प्रकार अल्लाह जो चाहता है

---

[1] अर्थात यह निर्णय करने के लिये कि: मर्‌यम का संरक्षक कौन हो?

[2] अर्थात वह अल्लाह के शब्द ''कुन'' से पैदा होगा। जिस का अर्थ है ''हो जा''।

उत्पन्न कर देता है। जब वह किसी काम के करने का निर्णय कर लेता है तो उस के लिये कहता है कि: ''हो जा'' तो वह हो जाता है।

४८. और अल्लाह उस को पुस्तक तथा प्रबो और तौरात तथा इंजील की शिक्षा देगा।

४९. और फिर वह बनी इस्राईल का एक रसूल होगा कि मैं तुम्हारे पालनहार की ओर से निशानी लाया हूँ । मैं तुम्हारे लिये मिट्टी से पक्षी के आकार के समान बनाऊँगा, फिर उस में फूँक दूँगा तो वह अल्लाह की अनुमति से पक्षी बन जायेगा। और अल्लाह की अनुमति से जन्म से अंधे तथा कोढी को स्वस्थ कर दूँगा। और मुर्दों को जीवित कर दूँगा। तथा जो कुछ तुम खाते तथा अपने घरों में संचित करते हो उसे तुम्हें बता दूँगा। निस्संदेह इस में तुम्हारे लिये बडी। निशानियाँ है, यदि तुम ईमान वाले हो।

५०. तथा मैं उस की सिद्धि करने वाला हूँ जो मुझ से पहले की है ''तौरात''। तुम्हारे लिये कुछ चीजों को हलाल (वैध) करने वाला हूँ, जो तुम पर हराम (अवैध) की गयी है। तथा मैं तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की निशानी ले कर आया हूँ। अत: तुम अल्लाह से डरो, और मेरे अज्ञाकारी हो जाओ।

५१. वास्तव में अल्लाह मेरा और तुम सब का पालनहार है, अत: उसी की इबादत (वंदना) करो। यही सीधी डगर है।

५२. तथा जब ईसा ने उन से कुफ्र का संवेदन किया तो कहा: अल्लाह के धर्म की सहायता में कौन मेरा साथ देगा? तो हवारियों (सहचरो) ने कहा: हम अल्लाह के सहायक है। हम अल्लाह पर ईमान लाये, तुम इस के साक्षी रहो कि हम मुस्लिम (अज्ञाकारी) है।

५३. हे हमारे पालनहार! जो कुछ तू ने उतारा है, हम उस पर ईमान लाये, तथा तेरे रसूल का अनुसरण किया, अत: हमें भी साक्षियों में अंकित कर ले।

५४. तथा उन्होंने षड्यंत्र[२] रचा, और हम ने भी षड्यंत्र रचा। तथा अल्लाह षड्यंत्र रचनेवालों में सब से अच्छा है।

---

[१] अर्थात फरिश्ते ने।

[२] अर्थात ईसा (अलैहिस्सलाम) को हत् करने का। तो अल्लाह ने उन्हें विफल कर दिया (देखिये: सूरह निसा, आयत १५७)।

५५. जब अल्लाह ने कहा: हे ईसा। मैं तुझे पूर्णत: लेने वाला तथाअपनी ओर उठाने वाला हूँ। तथा तुझे काफिरों से पवित्र (मुक्त) करने वाला हूँ। तथा तेरे अनुयायियों को प्रलय के दिन तक काफिरों के ऊपर[१] करने वाला हूँ। फिर तुम्हारा लौटना मेरी ही ओर है। तो मैं तुम्हारे बीच उस विषय में निर्णय कर दूँगा जिस में तुम विभेद कर रहे हो।

५६. फिर जो काफिर हो गये, उन्हें लोक परलोक में कडी यातना दूँगा, तथा उन का कोई सहायक न होगा।

५७. तथा जो ईमान लाये, और सदाचार किये तो उन्हें उन का भरपूर प्रतिफल दूँगा। तथा अल्लाह अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।

५८. हे नबी! यह हमारी आयतें और तत्वज्ञयता की शिक्षा है जो हम तुम्हें सुना रहे है।

५९. वस्तुत: अल्लाह के पास ईसा की मिसाल ऐसी ही है,[२] जैसे आदम की। उसे (अर्थात आदम को) मिट्टी से उत्पन्न किया, फिर उस से कहा: ''हो जा'' तो वह हो गया।

६०. यह आप के पालनहार की ओर से सत्य[३] है, अत: आप संदेह करने वालों में न हो।

६१. फिर आप के पास ज्ञान आ जाने के पश्चात् कोई आप से ईसा के विषय में विवाद करे, तो कहो कि आओ हम अपने पुत्रों तथा तुम्हारे पुत्रों और अपनी स्त्रियों तथा तुम्हारी स्त्रियों को बुलाते है, और स्वयं को, भी, फिर अल्लास से सविनय प्रार्थना करें, कि अल्लाह की धिक्कार मिथ्यावादियों पर[४] हो।

६२. वास्तव में यही सत्य वर्णन है, तथा अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं। निश्चय अल्लाह ही प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

---

[१] अर्थात यहूदियों तथा मुश्रिकों के ऊपर।

[२] अर्थात जैसे प्रथम पुरूष आदम (अलैहिस्सलाम) को बिना माता–पिता के उत्पन्न किया, उसी प्रकार ईसा (अलैहिस्सलाम) को बिना पिता के उत्पन्न कर दिया, अत: वह भी मानव पुरूष है।

[३] अर्थात ईसा अलैहिस्सलाम का मानव पुरूष होना। अत: आप उन के विषय में किसी संदेह में न पडें।

[४] अल्लाह से यह प्रार्थना करें कि वह हम में से मिथ्यावादियों को अपनी दया से दूर कर दे।

६३. फिर भी यदि वह मुँह[1] फेरें, तो निस्संदेह अल्लाह उपद्रवियों को भली माँति जानता है।

६४. हे नबी ! कहो कि हे अहले किताब! एक ऐसी बात की ओर आ जाओ जो हमारे तथा तुम्हारे बीच समान रूप से मान्य है। कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत (वंदना) न करें, और किसी को उस का साझी न बनायें, तथा हम में से कोई एक दूसरे को अल्लाह के सिवा पालनहार न नाये। फिर यदि वह विमुख हों तो आप कह दें कि तुम साक्षी रहो कि हम (अल्लाह के)[2] आज्ञाकारी है।

६५. हे अहले किताब! तुम इब्राहीम के बारे में विवाद[3] क्यों करते हो, जब कि तौरात तथा इंजील इब्राहीम के पश्चात उतारी गई है? क्या तुम समझ नहीं रखते?

६६. और फिर तुम्हीं ने उस विषय में विवाद किया जिस का तुम को कुछ ज्ञान[4] था, तो उस विषय में क्यों विवाद कर रहे हो जिस का तुम्हें कोई ज्ञान[5] नहीं? तथा अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते।

६७. इब्राहीम न यहूदी था, न नसरानी (ईसाई)। परन्तु वह एकेश्वरवादी मुस्लिम ''आज्ञाकारी'' था। तथा वह मिश्रणवादियों में से नहीं था।

६८. वास्तव में इब्राहीम से सब से अधिक समीप तो वह लोग है जिन्हों ने उस का अनुसरण किया, तथा यह नबी[6] और जो ईमान लाये। और अल्लााह ईमान वालों का का संरक्षक व मित्र है।

६९. अहले किताब में से एक गिरीह की कामना है कि तुम्हें कुपथ कर दे। जब कि वह स्वयं को कुपथ कर रहा है, परन्तु वह समझते नहीं है।

७०. है, अहले किताब! तुम अल्लाह की आयतों[7] के साथ कुफ्र क्यों कर रहे हो, जब कि: तुम साक्षी[1] हो? के विषय में।

---

[1] अर्थात सत्य को जानने की इस विधि को स्वीकार न करें।

[2] इस आयत में ईसा अलैहिस्सलाम से संबंधित विवाद के निवारण के लिये एक दूसरी विधि बताई गई है।

[3] अर्थात यह क्यों कहते हो कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम हमारे धर्म पर थे। तौरात और इंजील तो उन को सहस्त्रों वर्ष के पश्चात् अवतरित हूई। तो वह इन धर्मों पर कैसे हो सकते है।

[4] अर्थात अपने धर्म के विषय में

[5] अर्थात इब्राहीम अलैहिस्सलाम के धर्म के बारे में।

[6] अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के अनुयायी।

[7] जो तुम्हारी किताब में अंतिम नबी से संबंधित है।

७१. हे अहले किताब! क्यों सत्य को असत्य के साथ मिलाकर संदिग्ध कर देते हो, और सत्य को छुपाते हो, जब कि तुम जानते हो।

७२. अहले किताब के एक समुदाय ने कहा: कि दिन के आरंभ में उस पर ईमान ले आओ जो ईमान वालों पर उतारा गया है, और उस के अन्त (अर्थात: संध्या समय) कुफ्र कर दो, संभवत: वह फिर[२] जाये।

७३. और केवल उसी की मानो जो तुम्हारे (धर्म) का अनुसरण करे। (हे नबी!) कह दो कि मार्गदर्शन है। (और यह भी न मानो कि) जो (धर्म) तुम को दिया गया है वैसा किसी और को दिया जायेगा, अथवा वह तुम से तुम्हारे पालनहार के पास विवाद कर सकेंगे। आप कह दें कि प्रदान अल्लाह के हाथ में है, वह जिसे चाहे देता है। और अल्लाह विशाल ज्ञानी है।

७४. वह जिसे चाहे अपनी दया के साथ विशेष कर देता है, तथा अल्लाह बड़ा दानशील है।

७५. तथा अहले किताब में वह भी है जिस के पास चांदी–सोने का ढ़ेर धरोहर रख दो तो उसे तुम्हें चुका देगा। तथा उन में वह भी है किः जिस के पास एक दीनार[३] भी धरोहर रख दो. तो वह तुम्हें नहीं चुकायेगा, परन्तु जब सदा उस के सिर पर सवार रहो। यह (बात) इस लिये है कि उन्हों ने कहा कि उम्मियों के बारे में हम पर कोई दोष[४] नहीं। तथा अल्लाह पर जानते हुये झूठ बोलते है।

७६. क्यों नहीं, जिस ने अपना वचन पूरा किया और (अल्लाह से) डरा तो वास्तव में अल्लाह डरने वालों से प्रेम करता है।

७७. निस्संदेह जो अल्लाह के[५] वचन तथा अपनी शपथों के बदले तनिक मूल्य खरीदते हैं, उन्हीं का अखिरत (परलोक) में कोई भाग नहीं। न प्रलय के दिन अल्लाह उन

---

[१] अर्थात उन अयतों के सत्य होने के साक्षी हो।

[२] अर्थात मुसलमान इस्लाम से फिर जायें।

[३] दीनार– सोने के सिक्के को कहा जाता है।

[४] अर्थात उन के धन का अपभोग करने पर कोई पाप नहीं। क्यों किः यहूदियों ने अपने अतिरिक्त सब का धन हलाल समझ रखा था। और दूसरों को वह ''उम्मी'' कहा करते थे। अर्थात वह लोग जिन के पास कोई आसमानी किताब नहीं है।

[५] अल्लाह के वचन से अभिप्राय वह वचन है, जो उन से धर्म पुस्तकों द्वारा लिया गया है।

से बात करेगा, और न उन की ओर देखेगा, और न उन्हें पवित्र करेगा। तथा उन्हीं के लिये दुखदायी यातना है। ड़

७८. और बैशक उन में से एक गिरोह[१] ऐसा है जो अपनी जुबानों को किताब पढ़ते समय मरोड़ते हैं ताकि तुम उसे पुस्तक में से समझों जब कि वह पुस्तक में से नहीं है। और कहते है कि वह अल्लाह के पास से है जब कि वह अल्लाह नहीं है। और अल्लाह पर जानते हुये झूठ बोलते हैं।

७९. किसी पुरुष जिस के लिये अल्लाह ने पुस्तक, निर्णयशक्ति और नुबुव्वत दी हो उस के लिये योग्य नहीं कि लोगों से कहे कि अल्लाह को छोड़ कर मेरे दास बन जाओ[२] अपितु (वह तो यही कहेगा कि) तुम अल्लाह वाले बन जाओ। इस कारण कि तुम पुस्तक की शिक्षा देते हो। तथा इस कारण कि उस का अध्ययन स्वयं भी करते रहते हो।

८०. तथा वह तुम्हें कभी आदेश नहीं देगा कि फरिश्तों तथा नबियों को अपना पालनहार[३] (पूज्य) बना लो, क्या तुम को कुफ्र करने का आदेश देगा, जब कि तुम अल्लाह के आज्ञाकारी हो?

८१. तथा (याद करो) जब अल्लाह ने नबियों से वचन लिया कि जब भी मैं तुम्हें कोई पुस्तक और प्रबोध (तत्वदर्शिता) दूं. फिर तुम्हारे पास कोई रसूल उसे प्रमाणित करते हूये आये, जो तुम्हारे पास है, तो तुम अवश्य उस पर ईमान लाना। और उस का समर्थन करना। (अल्लाह) ने कहाः क्या तुम ने स्वीकार किया, तथा इस पर मेरे वचन का भार उठाया? तो सब ने कहाः हम ने स्वीकार कर लिया। अल्लाह ने कहा तुम साक्षी रहो। और मैं भी तुम्हारे[४] साथ साक्षियों में हूं।

८२. फिर जिस ने इस के[५] पश्चात मुंह फेर लिया, तो वही अवैज्ञाकारी है।

---

[१] इस से अभिप्राय यहूदी विद्वान है। और पुस्तक से अभिप्राय तौरात है।

[२] भावार्थ यह है कि जब नबी के लिये योग्य नहीं किः लोगों से कहे कि मेरी इबादत करो तो किसी अन्य के लिये कैसे योग्य हो सकता है?

[३] जैसे अपने पालनहार के आगे झुकते हो, उसी प्रकार उन के आगे भी झुको।

[४] भावार्थ यह है किः जब आगामी नबियों को ईमान लाना आवश्यक है, तो उन के अनुयायियों को भी ईमान लाना आवश्यक होगा। अतः अंतिम नबी मुहम्मद (सल्लल्लहु अलैहि, व सल्लम) पर ईमान लाना सभी के लिये अनिवार्य है।

[५] अर्थात इस वचन और प्रण के पश्चात!

८३. तो क्या वह अल्लाह के धर्म (इस्लाम) के सिवा (कोई दूसरा धर्म) खोज रहे है? जब कि जो आकाशों तथा धरती में है, स्वेच्छा तथा अनिच्छा उसी के आज्ञाकारी[1] है, तथा सब उसी की ओर फेरे[2] जायेंगे।

८४. (हे नबी) आप कहें कि हम अल्लाह पर तथा जो हम पर उतारा गया, और जो इब्राहीम और इस्माईल तथा इस्हाक और याकूब एवं (उन की) संतानों पर उतारा गया, तथा जो मूसा, ईसा, तथा अन्य नबियों को उन के पालनहार की ओर से प्रदान किया गया है (उन पर) ईमान लाये। हम उन (नबियों) मे किसी के बीच कोई अंतर नहीं[3] करते और हम उसी (अल्लाह) के आज्ञाकारी हैं।

८५. और जो भी इस्लाम के सिवा (किसी और धर्म) को चाहेगा तो उसे उस से कदापि स्वीकार नहीं किया जायेगा और वह परलोक में क्षतिग्रस्तों में होगा।

८६. अल्लाह ऐसी जाति को कैसे मार्गदर्शन देगा जो अपने ईमान के पश्चात् काफिर हो गये, और साक्षी रहे कि यह रसूल सत्य है, तथा उन के पास खुले तर्क आ गये? और अल्लाह अत्याचारियों को मार्गदर्शन नहीं देता।

८७. इन्ही का प्रतिकार (बदला) यह है कि उन पर अल्लाह तथा फरिश्तों और सब लोगों की धिक्कार होगी।

८८. वह उस में सदावासी होंगे, उन से यातना कम नहीं की जायेगी, और न उन्हें अवकाश दिया जायेगा।

८९. परन्तु जिन्हों ने इस के पश्चात् तौबः (क्षमा याचना) कर ली, तथा सुधार कर लिया, तो निश्चय अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

९०. वास्तव में जो अपने ईमान लाने के पश्चात काफिर हो गये फिर कुफ्र में बढ़ते गये तो उन की तौबः (क्षमा याचना) कदापि[4] स्वीकार नहीं की जायेगी, तथा वही कुपथ है।

---

[1] अर्थात उसी की आज्ञा तथा व्यवस्था के अधीन है। फिर तुम्हें इस स्वभाविक धर्म से इन्कार क्यों है?

[2] अर्थात प्रलय के दिन अपने कर्मो के प्रतिफल के लिये।

[3] अर्थात मूल धर्म अल्लाह की आज्ञाकारिता है, और अल्लाह की पुस्तकों तथा उस के नबियों के बीच अंतर करना, किसी को मानना और किसी को न मानना अल्लाह पर ईमान और उस की आज्ञाकारिता के विपरित है।

[4] अर्थात यदि मौत के समय क्षमा याचना करें।

९१. निश्चय जो काफिर हो गये, तथा काफिर रहते हुये मर गये तो उन से धरती भर सोना भी स्वीकार नहीं किया जायेगा, यद्यपि उस के द्वारा अर्थदण्ड दे। उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है। और उन का कोई सहायक न होगा।

९२. तुम पुण्य नहीं पा सकोगे, जब तक उस में से दान न करो जिस से मोह रखते हो, तथा तुम जो भी दान करोगे, वास्तव में अल्लाह उसे भली भाँति जानता है।

९३. प्रत्येक खाद्य पदार्थ बनी इस्राईल के लिये हलाल (वैध) थे, परन्तु जिसे इस्राईल ने अपने ऊपर हराम (अवैध) कर लिया, इस से पहले कि तौरात उतारी जाये। (हे नबी!) कहा तुम सत्यवादी हो।

९४. फिर इस के पश्चात जो अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगायें, तो वही वास्तव में अत्याचारी है।

९५. उन से कह दो, अल्लाह सच्चा है, अतः तुम एकेश्वरवादी इब्राहीम के धर्म पर चलो, तथा वह मिश्रणवादियों में से नहीं था।

९६. निस्संदेह पहला घर जो मानव के लिये (अल्लाह की वन्दना का केन्द्र) बनाया गया, वह वही है जो मक्का में है, जो शुभ तथा संसार वासियों के लिये मार्गदर्शन है।

९७. उस में खुली निशानियाँ है (जिन में) मकामें[1] इब्राहीम है, तथा जो कोई उस (की सीमा) में प्रवेश कर गया तो वह शांत (सुरक्षित) हो गया। तथा अल्लाह के लिये लोगो पर इस घर का हज्ज अनिवार्य है, जो उस तक राह पा सकता हों। तथा जो कुफ्र करेगा, तो अल्लाह संसार वासियों से निस्पृह है।

९८.(हे नबी!) आप कह दें कि हे अहले किताब् यह क्या है कि तुम अल्लाह की आयतों के साथ कुफ्र कर रहे हो, जब कि अल्लाह तुम्हारे कर्मों का साक्षी है?

९९. हे अहले किताब! किस लिये लोगो को जो ईमान लाना चाहें, अल्लाह की राह से रोक रहे हो, उसे उसझाना चाहते हो जब कि तुम साक्षी[2] हो, और अल्लाह तुम्हारे कर्मो से असूचित नहीं है।?

---

[1] अर्थात वह पत्थर जिस पर खड़े हो कर इब्राहीम (अजैहिस्लाम) ने काबा का निर्माण किया जिस पर उन के पैरों के निशान आज तक है।

[2] अर्थात इस्लाम के सत्धर्म होने को जानते हो।

१००.हे ईमान वालो। यदि तुम अहले किताब के किसी गिरोह की बात मानोगे तो वह तुम्हारे ईमान के पश्चात् फिर तुम्हें काफिर बना देंगे।

१०१.तथा तुम कुफ़्र कैसे करोगे जब कि तुम्हारे सामने अल्लाह की आयतें पढ़ी जा रही है, और तुम में उस के रसूल[१] मौजूद हैं? और जिस ने अल्लाह को[२] थाम लिया तो उसे सुपथ दिखा दिया गया।

१०२.हे ईमान वालो! अल्लाह से ऐसे डरो जो वास्तव में उस से डरना हो, तथा तुम्हारी मौत इस्लाम पर रहते हुये ही आनी चाहिये।

१०३.तथा अल्लाह की रस्सी[३] को सब मिल कर दृढ़ता से पकड़ लो, और विभेद में न पड़ो। तथा अपने ऊपर अल्लाह के पुरस्कार को याद करो जब तुम एक दूसरे के शत्रु थे, तो तुम्हारे दिलों को जोड़ दिया, और तुम उस के पुरस्कार के कारण भाई भाई हो गये। तथा तुम अग्नि के गड़हे के किनारे पर थे, तो तुम्हें उस से निकाल दिया, इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये अपनी आयतों को उजागर करता है, ताकि तुम मार्गदर्शन पा जाओ।

१०४.तथा तुम में एक समुदाय ऐसा अवश्य होना चाहिये जो भली बातों[४] की ओर बुलाये, तथा भलाई का आदेश देता रहे, और बुराई[५] से रोकता रहे, और वहीं सफल होंगे।

१०५.तथा उन[६] के समान न हो जाओ, जो खुली निशानियाँ आने के पश्चात् विभेद तथा आपसी विरोध में पड़ गये, और उन्हीं के लिये घोर यातना है।

१०६.जिस दिन बहुत से मुख उजले, तथा बहुत से मुख काले होंगे। फिर जि के मुख काले होंगे (उन से कहा जायेगा): क्या तुम ने अपने ईमान के पश्चात् कुफ़्र कर लिया था? तो अपने कुफ़्र करने का दण्ड चखो।

---

[१] अर्थात मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)।

[२] अर्थात अल्लाह का आज्ञाकारी हो गया।

[३] अल्लाह की रस्सी से अभिप्राय क़ुर्आन और नबी (सल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सुन्नत है। यही दोनों मुसलमानों की एकता और परस्पर प्रेम का सूत्र है।

[४] अर्थात धर्मानुसार बातों का।

[५] अर्थात धर्म विरोधी बातों से।

[६] अर्थात अहले किताब (यहूदी व ईसाई)।

१०७.तथा जिन के मुख उजले होंगे वह अल्लाह की दया (स्वर्ग) में रहेंगे। वह उस में सदावासी होंगे।

१०८. यह अल्लाह की आयतें हैं, जो हम आप को हक्क के साथ सुना रहे हैं, तथा अल्लाह संसार वासियों पर अत्याचार नहीं करना चाहता.

१०९.तथा अल्लाह ही का है जो आकाशों में और जो धरती में है। तथा अल्लाह ही की और सब विषय फेरे जायेंगे।

११०.तुम सब से अच्छी उम्मत हो, जिसे सब लोगों के लिये उत्पन्न किया गया है कि तुम भलाई का आदेश देते हो, तथा बुराई से रोकते हो, और अल्लाह पर ईमान (विश्वास) रखते[१] हो। और यदि अहले किताब ईमान लाते तो उन के लिये अच्छा होता। उन में कुछ ईमान वाले है, और अधिकतर अवैज्ञाकारी है।

१११.वह तुम को सताने के सिवा कोई हानि नहीं पहुंचा सकेंगे। और यदि तुम से युद्ध करोगे तो वह तुम को पीठ दिखा देंगे। फिर सहायता नहीं दिये जायेंगे।

११२.इन (यहूदियों) पर जहाँ भी रहें, अपमान थोप दिया गया, (यह और बात है कि) अल्लाह की शरण[२] अथवा लोगों की शरण में हो[३] यह अल्लाह के प्रकोप के अधिकारी हो गये, तथा उन पर दरिद्रता थोप दी गयी। यह इस कारण हुआ कि वह अल्लाह की आयतों के साथ कुफ्र कर रहे थे और नबियों का अवैध बध कर रहे थे। यह इस कारण कि उन्हों ने अवैज्ञा की, और (धर्म की) सीमा का उल्लंघन कर रहे थे!

११३.वह सभी समान नहीं है, अहले किताब में एक (सत्य पर) स्थित उम्मत[४] भी है, जो अल्लाह की आयतें रातों में पढ़ते है, तथा सज्दा करते रहते है।

---

[१] इस आयत में मुसलमानों को संबोधित किया गया है, तथा उन्हें उम्मत कहा गया है। किसी जाति अथवा वर्ग और वर्ण के नाम से संबोधित नहीं किया गया है। और इस में यह संकेत है कि मुसलमान उन का नाम है जो सत्धर्म के अनुयायी हों। तथा उन के अस्तित्व का लक्ष्य यह बताया गया है कि वह संपूर्ण है। किसी विशेष जाति और क्षेत्र अथवा देश का धर्म नहीं है।

[२] दूसरा बचाव का तरीका यह है कि किसी गैर मुस्लिम शक्ति की उन्हें सहायता प्राप्त हो जाये।

[३] अल्लाह की शरण से अभिप्राय इस्लाम धर्म है।

[४] अर्थात जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर ईमान लाये। जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम (रजियल्लाहु अन्हु) आदि।

११४.अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान रखते हैं, तथा भलाई का आदेश देते, और बुराई से रोकते हैं, तथा भलाईयों में अग्रसर रहते हैं, और यही सदाचारियों में है।

११५.वह जो भलाई करेंगे, उस की उपेक्षा (अनादर) नहीं किया जायेगा और अल्लाह आज्ञाकारियों को भली भाँति जानता है।

११६.(परन्तु) जो काफिर[1] हो गये, उन के धन और उन की संतान अल्लाह (की यातना) से उन्हें तनिक भी बचा नहीं सकेगी, तथा वही नारकी हैं, वही उस में सदावासी होंगे।

११७.जो दान वह इस संसारिक जीवन में करतें हैं वह उस वायु के समान है जिस में पाला हो, जो किसी कौम की खेती को लग जाये जिन्हों ने अपने ऊपर अत्याचार[2] किया हो, और उस का नाश करे दे। तथा अल्लाह ने उन पर अत्याचार नहीं किया परन्तु वह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे।

११८.हे ईमान वालो! अपनों के सिवा किसी को अपना भेदी न बनाओ,[3] वह तुम्हारा बिगाड़ने में तनिक भी नहीं चूकेंगे, उन को वही बात भाती है जिस से तुम्हें दुःख हो। उन के मुखों से शत्रुता खुल चुकी है, तथा जो उन के दिल छुपा रहे है वह इस से बढ़कर है, हम ने तुम्हारे लिये आयतों का वर्णन कर दिया है, यदि तुम समझो।

११९.सावधान ! तुम ही वह हो कि उन से प्रेम करते हो, तथा वह तुम से प्रेम नहीं करते। और तुम सभी पुस्तकों पर ईमान रखते हो, तथा वह जब तुम से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाये। और जब अकेले होते हैं तो क्रोध से तुम पर उंगलियों की पोरें चबाते हैं। कह दो कि अपने क्रोध से मर जाओ, निस्संदेह अल्लाह सीनों की बातें जानता है।

१२०.यदि तुम्हारा कुछ भला हो तो उन्हें बुरा लगता है। और यदि तुम्हारा कुछ बुरा हो जाये तो उस से प्रसन्न हो जाते है। तथा यदि तुम सहन करते रहे, और

[1] अर्थात अल्लाह की आयतों (कुर्आन) को नकार दिया।

[2] अवैज्ञा तथा अस्वीकार करते रहे थे। इस में यह संकेत है कि अल्लाह पर ईमान के बिना दानों का प्रतिफल परलोक में नहीं मिलेगा।

[3] अर्थात वह गैर मुस्लिम जि पर तुम को विश्वास नहीं की वह तुम्हारे लिये किसी प्रकार की अच्छी भावना रखते हों।

आज्ञाकारी रहे, तो उन का छल तुम्हें कोई हानि नहीं पहुंचायेगा। उन के सभी कर्म अल्लाह के घेरे में हैं।

१२१.तथा (हे नबी!) वह समय याद करो जब आप प्रातः अपने घर से निकले, ईमान वालों को युद्ध[1] के स्थानों पर नियुक्त कर रहे थे, तथा अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

१२२.तथा (याद करो) जब तुम में से दो गिरोहों[2] ने कायरता दिखाने का विचार किया, और अल्लाह उन का रक्षक था। तथा ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिये।

१२३.अल्लाह बद्र में तुम्हारी सहायता कर चुका है, जब कि तुम निर्बल थे। अतः अल्लाह से डरते रहो, ताकि उस के कृतज्ञ रहो।

१२४.(हे नबी! वह समय भी याद करें) जब आप ईमान वालों से कह रहे थेः क्या तुम्हारे लिये यह बस नहीं है कि अल्लाह तुम्हें (आकाश से) उतारे हुये तीन हजार फरिश्तों द्वारा समर्थन दे?

१२५.क्यों[3] नहीं? यदि तुम सहन करोगे, तथा आज्ञाकारी रहोगे, और वह (शत्रु) तुम्हारे पास अपनी इसी उत्तेजना के साथ आ गये, तो तुम्हारा पालनहार तुम्हें (तीन नहीं) पाँच हजार चिन्ह[4] लगे फरिश्तों द्वारा समर्थन देगा।

---

[1] साधारण भाष्यकारों ने इसे उहुद के युद्ध से संबंधित माना है। जो बद्र के युद्ध के पश्चात् सन् ३ हिज्री में हुआ। जिस में कुरैश ने बद्र की पराजय का बदला लेने के लिये तीन हजार की सेना के साथ उहुद पर्वत के समीप पड़ाव डाल दिया। जब आप को इस की सूचना मिली तो मुसलमानों से परामर्श किया। अधिकांश की राय हुई कि मदीना नगर से बाहर निकल कर युद्ध किया जाये। और आप सल्लाहु अलैहि व सल्लम एक हजार मुसलमानों को लेकर निकले। जिस में से अब्दुल्लाह बिन उबय्य मुनाफिकों का मुख्या अपने तीन सौ साथियों के साथ वापिस हो गया। आप ने रणक्षेत्र में अपने पीछे से शत्रु के आक्रमण से बचाव के लिये ७० धनुर्धरों को नियुक्त कर दिया। और उन का सेनापति अब्दुल्लाह बिन जुबैर को बना दिया। तथा यह आदेश दिया कि कदापि इस स्थान को न छोड़ना। युद्ध आरंभ होते ही कुरैश पराजित हो कर भाग खड़े हुये। यह देख कर धनुर्धरों में से अधिकांश ने अपना स्थान छोड़ दिया। कुरैश के सेनापति खालिद पुत्र वलीद ने अपने सवारों के साथ फिर कर धनुर्धरों के स्थान पर आक्रमण कर दिया। फिर अकस्मात् मुसलमानों पर पीछे से आक्रमण कर के उन की विजय को पराजय में बदल दिया। जिस में आप सल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी आघात पहुंचा। (तफसीर इब्ने कसीर।)

[2] अर्थात दो कबीले बनू सलमा तथ बनू हारिसा ने भी अब्दुल्लाह बिन उबय्य के साथ वापिस हो जाना चाहा। (सहीह बुखारी हदीस ४५५८)

[3] अर्थात इतना समर्थन बहुत है।

[4] अर्थात उन पर तथा उन के घोड़ों पर चिन्ह लगे होंगे।

१२६.और अल्लाह ने इस को तुम्हारे लिये केवल शुभ सूचना बनाया है। और ताकि तुम्हारे दिलों को संतोष हो जाये, और समर्थन तो केवल अल्लाह ही के पास से है, जो प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

१२७.ताकि[१] वह काफिरों का एक भाग काट दे। फिर वह असफल वापिस हो जायें।

१२८.हे नबी! इस[२] विषय में आप को कोई अधिकार नहीं, अल्लाह चाहे तो उन की क्षमा याचना स्वीकार[३] करे, या दण्ड[४] दे, क्यों कि वह अत्याचारी है।

१२९.अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, वह जिसे चाहे क्षमा करे, और जिसे चाहे दण्ड दे। तथा अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

१३०.हे ईमान वालो! कई कई गुणा कर के ब्याज[५] न खाओ। तथा अल्लाह से डरो, ताकि सफल हो जाओ।

१३१.तथा उस अग्नि से बचो जो काफिरों के लिये तैयार की गयी है।

१३२.तथा अल्लाह और रसूल के आज्ञाकारी रहो, ताकि, तुम पर दया की जाये।

१३३.और अपने पालनहार ही क्षमा और उस स्वर्ग की ओर अग्रसर हो जाओ, जिस की चौड़ाई आकाशों तथा धरती के बराबर है, आज्ञाकारियों के लिये तैयार की गयी है।

१३४.जो सुविधा तथा असुविधा की दशा में दान करते रहते हैं, तथा क्रोध पी जाते, और लोगों के दोष क्षमा कर दिया करते हैं। और अल्लाह सदाचारियों से प्रेम करता है।

---

[१] अर्थात अल्लाह तुम्हें फरिश्तों द्वारा समर्थन इस लिये देगा ताकि काफिरों का कुछ बल तोड़ दे, और उन्हें निष्फल वापिस कर दे।

[२] नबी सल्लाहु अलैहि व सल्लम फज्र की नमाज में रूकूअ के पश्चात यह प्रार्थना करते थे कि हे अल्लाह! अमुक को अपनी दया से दूर कर दे। इसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी – ४५५९)

[३] अर्थात उन्हें मार्गदर्शन दे।

[४] यदि काफिर ही रह जायें।

[५] उहुद की पराजय का कारण धन का लोभ बना था। इस लिये यहां ब्याज से सावधान किया जा रहा है, जो धन के लोभ का अति भयावह साधन है। तथा आज्ञाकारिता की प्रेरणा दी जा रही है। कई गुणा व्याज न खाने का अर्थ यह नहीं कि इस प्रकार व्याज न खाओ, बल्कि व्याज अधिक हो या थोड़ी सर्वथा हराम (वर्जित) है। यहां जाहिलिय्यत के युग में व्याज की जो रीति थी, उस का वर्णन किया गया है। जैसा कि आधुनिक युग में व्याज पर व्याज लेने की रीति है।

१३५.और जब कभी वह कोई बड़ा पाप कर जायें, अथवा अपने ऊपर अत्याचार कर लें, तो अल्लाह को याद करतें हैं, फिर अपने पापों के लिये क्षमा माँगते हैं। तथा अल्लाह के सिवा कौन है, जो पापों को क्षमा करें? और अपने किये पर जान बूझ कर अड़े नहीं रहते।

१३६.इन्हीं का प्रतिफल (बदला) उनके पालनहार की क्षमा तथा ऐसी स्वर्ग है जिन में नहरें प्रवाहित हैं, जिन में वह सदावासी होंगे, तो क्या ही अच्छा है सत्कर्मियों का यह प्रतिफल ?

१३७.तुम से पहले भी इसी प्रकार को चुका[१] है। तुम धरती में फिरो और देखो कि झुठलाने वालों का परिणाम कैसा रहा?

१३८.यह (कुर्आन) लोगों के लिये एक वर्णन तथा मार्ग दर्शन, और एक शिक्षा है (अल्लाह से) डरने वालों के लिये!

१३९.(इस पराजय से) तुम निर्बल तथा उदासीन न बनो। और तुम ही सर्वोच्च रहोगे, यदि तुम ईमान वाले हो।

१४०.यदि तुम्हें कोई घाव लगा है, तो कौम (शत्रु)[२] को भी इसी के समान घाव लग चुका है। तथा उन दिनों को हम लोगों के बीच फेरते रहते[३] और ताकि अल्लाह उन को जान ले[४] जो ईमान लाये, और तुम में से साक्षी बनाये। और अल्लाह अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।

१४१.तथा ताकि अल्लाह उन्हें शुद्ध कर दे, जो ईमान लाये हैं, और काफिरों का नाश कर दे।

१४२.क्या तुम ने समझ रखा है कि स्वर्ग में प्रवेश कर जाओगे? जब कि अल्लाह ने (परीक्षा कर के) उन्हें नहीं जाना है जिन्होंने तुम में से जिहाद किया है, और न सहनशीलों को जाना है?

---

[१] उहुद की पराजय पर मुसलमानों को दिलासा दी जा रही है जिस में उन के ७० व्यक्ति मारे गये। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

[२] इस में कुरैश की बद्र में पराजय और उन के ७० व्यक्तियों के मारे जाने की ओर संकेत है।

[३] अर्थात कभी किसी की जीत होती है, कभी किसी की।

[४] अर्थात अच्छे बुरे में विवेक (अन्तर) कर दे।

१४३.तथा तुम मौत की कामना कर[1] रहे थे इस से पूर्व कि उस का सामना करो, तो अब तुम ने उसे आँखों से देख लिया है, और देख रहे हो।

१४४.मुहम्मद केवल एक रसूल है, इस से पहले बहुत से रसूल हो चुके है, तो क्या यदि वह मर गये अथवा मार दिये गये, तो तुम अपनी एडियों के बल[2] फिर जाओगे? तथा जो अपनी एडियों के बल फिर जायेगा, तो वह अल्लाह को कुछ हानि नहीं पहुँचा सकेगा, और अल्लासह शीघ्र ही कृतज्ञों को प्रतिफल प्रदान करेगा।

१४५.कोई प्राणी ऐसा नहीं जो अल्लाह की अनुमति के बिना मर जाये, उस का अंकित निर्धारित समय है, और जो संसारिक प्रतिफल चाहेगा, हम उसे उस में से कुछ देंगे, तथा जो परलोक का प्रतिफल चाहेगा हम उसे उस में से देंगे। और हम कृतज्ञों को शीघ्र ही प्रतिल देंगे।

१४६.कितने ही नबी थे जिन के साथ होकर बहुत से अल्लाह वालों ने युद्ध किया, तो वह अल्लाह की राह में आई आपदा पर न आलसी हुये, न निर्बल बने और न (शत्रु से) दबे। तथा अल्लाह धैर्यवानों से प्रेम करता है।

१४७.तथा उन का कथन बस यही था कि उन्हों ने कहा: हे हमारे पालनहार। हमारे लिये हमारे पापों को क्षमा कर दे, तथा हमारे विषय में हमारी अति को, और हमारे पैरों को दृढ कर दे, और काफिर जाति के विरूद्ध हमारी सहायता कर।

१४८.तो अल्लाह ने उन को संसारिक प्रतिफल तथा आखिरत (परलोक) का अच्छा प्रतिल प्रदान कर दिया, तथा अल्लाह सुकर्मियों से प्रेम करता है।

१४९.हे ईमान वालो! यदि तुम काफिरों की बात मानोंगे तो वह तुम्हें तुम्हारी एडियों के बल फेर देंगे, और तुम फिर से क्षति में पड़ जाओंगे।

---

[1] अर्थात अल्लाह की राह में शहीद हो जाने की।

[2] अर्थात इस्लाम से फिर जावोगे भावार्थ यह है कि सत्धर्म इस्लाम स्थायी है नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के न रहने से समाप्त नहीं हो जायेगा। उहुद में जब किसी विरोधी ने यह बात उडाई कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मार दिये गये तो यह सुन कर बहुत से मुसलमान हताश हो गये। कुछ ने कहा कि अब लडने से क्या लाभ? तथा मुनाफिकों ने कहा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) नबी होते तो मार नहीं खाते। इस आयत में यह संकेत है कि दूसरे नबियों के समान आप को भी एक दिन संसार से जाना है। तो क्या तुम उन्हीं के लिये इस्लाम को मानते हो, और आप नहीं रहेंगे तो इस्लाम नहीं रहेगा?

१५०.बल्कि अल्लाह तुम्हारा रक्षक है तथा वह सब से अच्छा सहायक है।

१५१.शीघ्र ही हम काफिरों के दिलों में तुम्हारा भय डाल देंगे, इस कारण कि उन्हों ने अल्लाह का साझी उसे बना लिया है, जिस का कोई तर्क (प्रमाण) अल्लाह ने नहीं उतारा है, और इन का आवास नरक है, और वह क्या ही बुरा आवास है?

१५२.तथा अल्लाह ने तुम से अपना वचन सच कर दिखाया है, जब तुम उस की अनुमति से उन को काट[१] रहे थे, यहाँ तक कि जब तुम ने कायरता दिखायी, तथा (रसूल के) आदेश[२] में विभेद कर लिया और अवैज्ञा की, इस के पश्चात् कि तुम्हें वह (विजय) दिखा दी, जिसे तुम चाहते थे, तुम में से कुछ संसार चाहते हैं, तथा कुछ लोग परलोक चाहते हैं। फिर तुम्हें उन से फेर दिया, ताकि तुम्हारी परीक्षा ले, और तुम्हें क्षमा कर दिया, तथा अल्लाह ईमान वालों के लिये दानशील है।

१५३.(और याद करो) जब तुम चढ़े (भागे) जा रहे थे, और किसी की ओर मुड़ कर नहीं देख रहे थे, और रसूल तुम्हें तुम्हारे पीछे से पुकार[३] रहे थे, तो (अल्लाह ने) तुम्हें शोक के बदले शोक दे दिया, ताकि जो तुम से खो गया और जो दुख तुम्हें पहुंचा उस पर उदासीन न हो, तथा अल्लाह उस से सूचित है, जो तुम कर रहे हो।

१५४.फिर तुम पर शोक के पश्चात् शान्ति (ऊँघ) उतार दी जो तुम्हारे एक गिरोह[४] को आने लगी, और एक गिरोह को अपनी[५] पड़ी हुई थी। वह अल्लाह के बारे में असत्य जाहिजिय्यत की सोच सोच रहे थे। वह कह रहे थे कि क्या हमारा भी कुछ अधिकार है? (हे नबी!) कह दें कि सब अधिकार अल्लाह को है। वह अपने

---

[१] अर्थात उहद के आरंभिक क्षणों में।

[२] अर्थात कुछ धनुर्धरों ने आप के आदेश का पालन नहीं किया, और परिहार का धन संचित करने के लिये अपना स्थान त्याग दिया, जो पराजय का कारण बन गया। और शत्रु को उस दिशा से आक्रमण करने का अवसर मिल गया।

[३] बराअ बिन अजिब कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उहुद के दिन अब्दुल्लाह बिन जुबैर को पैदल सेना पर रखा। और वह पराजित हो कर आ गये, इसी के बारे में यह आयत है। उस समय नबी के साथ बारह व्यक्ति ही रह गये। (सहीह बुखारी – ४५६१)

[४] अबु तलहा रजियल्लाह अन्हु ने कहाः हम उहुद में ऊँघने लगे। मेरी तलवार मेरे हाथ से गिरने लगती और मैं पकड़ लेता, फिर गिरने लगती और पकड़ लेता।

[५] यह मुनाफिक लोग थे।

मनों में जो छूपा रहे थे आप को नहीं बता रहे थे। वह कह रहे थे कि यदि तुम अपने घरों में रहते, तब भी जिन के (भाग्य में) मारा जाना लिखा है, वह अपने निहत होने के स्थानों की ओर निकल आते। और ताकि अल्लाह, जो तुम्हारे दिलों में है ताकि अल्लाह, जो तुम्हारे दिलों में है उस की परीक्षा ले। तथा जो तुम्हारे दिलों में है उसे शुद्ध कर दे। और अल्लाह दिलों के भेदों से अवगत है।

१५५.वस्तुतः तुम में से जिन्हों ने दो गिरोहों के सम्मुख होने के दिन मुंह फेर दिया, शैतान ने उन को उन के कुछ कुकर्मों के कारण फिसला दिया। तथा अल्लाह ने उन को क्षमा कर दिया है। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील सहनशील है।

१५६.हे ईमान वालो! उन के समान न हो जाओ जो काफिर हो गये, तथा अपने भाईयों से – जब यात्रा में हो, अथवा युद्ध में कहा कि यदि वह हमारे पास होते तो न मरते और न मारे जाते, ताकि अल्लाह उन के दिलों में इसे संताप बना दे। और अल्लाह ही जीवित करता तथा मौत देता है, और अल्लाह जो तुम कर रहे हो उसे देख रहा है।

१५७.यदि तुम अल्लाह की राह में मार दिये जाओ अथवा मर जाओ, तो अल्लाह की क्षमा उस से उत्तम है जो लोग एकत्र कर रहे है।

१५८.तथा यदि तुम मर गये अथवा मार दिये गये, तो अल्लाह ही के पास एकत्र किये जाओगे।

१५९.अल्लाह की दया के कारण ही आप उन के[१] लिये कोमल (सुशील) हो गये, और यदि आप अक्खड़ तथा कड़े दिल के होते, तो वह आप के पास से बिखर जाते। अतः उन्हें क्षमा कर दो, और उन के लिये क्षमा की प्रार्थना करो, तथा उन से भी मुआमले में परामर्श करो, फिर जब कोई दृढ़ संकल्प ले लो तो अल्लाह पर भरोसा करो। निस्संदेह अल्लाह भरोसा रखने वालों से प्रेम करता है।

१६०.यदि अल्लाह तुम्हारी सहायता करे तो तुम पर कोई प्रभुत्व नहीं पा सकता। तथा यदि तुम्हारी सहायता न करे, तो फिर कौन है जो उस के पश्चात् तुम्हारी सहायता कर सके? अतः ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिये।

[१] अर्थात अपने साथियों के लिये, जो उहुद में रणक्षेत्र से भाग गये।

१६१.किसी नबी के लिये योग्य नहीं कि अपभोग[1] करे। और जो अपभोग करेगा, प्रलय के दिन उसे लायेगा फिर प्रत्येक प्राणी को उस की कमाई का भरपूर प्रतिकार (बदला) दिया जायेगा, तथा उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

१६२.तो क्या जिस ने अल्लाह की प्रसन्नता का अनुसरण किया हो उस के समान हो जायेगा जो अल्लाह का क्रोध[2] लेकर फिरा, और उस का आवास नरक है?

१६३.अल्लाह के पास उन की श्रेणियाँ हैं, तथा अल्लाह उसे देख[3] रहा है जो वह कर रहें हैं।

१६४.अल्लाह ने ईमान वालों पर उपकार किया है कि उन में उन्हीं में से एक रसूल भेजा, जो उन के सामने उस (अल्लाह) की आयतें सुनाता है, और उन्हें शुद्ध करता है तथा उन्हें पुस्तक (कुरआन) और हिक्मत (सुन्नत) की शिक्षा देता है, यद्यपि वह इस से पहले खुले कुपथ में थे।

१६५.तथा जब तुम को एक दुःख पहुंचा[4] पहुंचाया[5], तो तुम ने कह दिया कि यह कहाँ से आ गया? (हे नबी!) कह दोः यह तुम्हारे पास से[6] आया। वास्तव में अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

१६६.तथा जो भी आपदा दो गिरोहों के सम्मुख होने के दिन तुम पर आई, तो वह अल्लाह की अनुमति से, और ताकि वह ईमान वालों को जान ले।

१६७.और ताकि उन को जान ले, जो मुनाफिक है। और उन से कहा गया कि आओ अल्लाह की राह में युद्ध करो, अथवा रक्षा करो, तो उन्हों ने कहा कि यदि हम युद्ध होना जानते तो अवश्य तुम्हारा साथ देते। वह उस दिन ईमान से अधिक

---

[1] उहुद के दिन जो अपना स्थान छोड़ कर इस विचार से आ गये कि यदि हम न पहुंचे तो दूसरे लोग गनीमत का सब धन ले जायेंगे, उन्हें यह चेतावनी दी जा रही है कि तुम ने कैसे सोच लिया कि इस धन में से तुम्हारा भाग नहीं मिलेगा, क्या तुम्हें नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) की अमानत पर भरोसा नहीं है? सुन लो ! नबी से किसी प्रकार का अपभोग असंभव है। यह घोर पाप है जो कोई नबी कभी नहीं कर सकता।

[2] अर्थात पापों में लीन रहा।

[3] अर्थात लोगों के कर्मो के अनुसार उन की अलग अलग श्रेणियां हैं।

[4] अर्थात उहुद के दिन।

[5] अर्थात बद्र के दिन।

[6] अर्थात तुम्हारे नबी सल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदेश का विरोध करने के कारण आया, जो धनुर्धरों को दिया गया था।

कुफ़्र के समीप थे, वह अपने मुखों से ऐसी बात बोल रहे थे जो उन के दिलों में बात नहीं थी। तथा अल्लाह जिसे वह छुपा रहे थे, अधिक जानता था।

१६८.इन्हों ने ही अपने भाईयों से कहा, और (स्वयं घरों में) आसीन रह गयेः यदि वह हमारी बात मानते, तो मारे नहीं जाते! (हे नबी!) कह दोः फिर तो मौत से[१] अपनी रक्षा कर लो, यदि तुम सच्चे हो।

१६९.जो अल्लाह की राह में मार दिये गये तो तुम उन को मरा हुआ न समझो, बल्कि वह जीवित हैं,[२] अपने पालनहार के पास जीविका दिये जा रहे है।

१७०.तथा उस से प्रसन्न है जो अल्लाह ने उन्हें अपनी दया से प्रदान किया है, और उन के लिये प्रसन्न (हर्षित) हो रहे हैं जो उन से मिले नहीं, उन के पीछे[३] रह गये है कि उन्हें कोई डर नहीं होगा, और न वह उदासीन होंगे।

१७१.वह अल्लाह के पुरस्कार और प्रदान के कारण प्रसन्न हो रहे हैं। तथा इस पर कि अल्लाह ईमान वालों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करता।

१७२.जिन्होंने अल्लाह और रसूल की पुकार को स्वीकार[४] किया, इस के पश्चात कि उन्हें आघात पहुंचा, उन में से उन के लिये जिन्हों ने सुकर्म किया तथा (अल्लाह से) डरें, महा प्रतिफल है।

१७३.यह वह लोग हैं, जिन से लोगों ने कहा कि तुम्हारे लिये लोगों (शत्रु) ने (वापिस आने का) संकल्प[५] लिया है। अतः उन से डरो, तो इस ने उन से डरो, तो इस ने उन के ईमान को और अधिक कर दिया, और उन्हों ने कहाः हमें अल्लाह बस है, और वह अच्छा काम बनाने वाला है।

---

[१] अर्थात अपने उपाय से सदाजीवी हो जाओ।

[२] शहीदों का जीवन कैसा होता है? हदीस में है कि उन की आत्मायें हरे पक्षियों के भीतर रख दी जाती है और वह र्स्वग में चुगते तथा आनंद लेते फिरते है। (सहीह मुस्लिम– हदीस – १८८७)

[३] अर्थात उन मुजाहिदीन के लिये जो अभी संसार में जीवित रह गये है।

[४] जब काफिर उहुद से मक्का वापिस हुये तो मदीने से ३० मील दूर ''रौहाअ'' से फिर मदीने वापिस आने का निश्चय किया। जब आप सल्लाहु अलैहि व सल्लम को सूचना मिली तो सेना लेकर ''हमराउल असद'' तक पहुंचे जिसे सुन कर वह भाग गये। इधर मुसलमान सफल वापिस आये। इस आयत में रसूल्लूल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियों की सहाराना की गई है जिन्हों ने उहुद में घाव खाने के पश्चात् भी नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का साथ दिया। यह आयतें इसी से संबंधित है।

[५] अर्थात शत्रु ने मक्का जाते हुये राह में सोचा कि मुसलमानों के परास्त हो जाने पर यह अच्छा अवसर था कि मदीने पर आक्रमण करके उनका उनमूलन कर दिया जाये। तथा वापिस आने का निश्चय किया।

१७४.तथा अल्लाह के अनुग्रह एवं दया के साथ वापिस हुये। उन्हें कोई दुःख नहीं पहुंचा। तथा अल्लाह की प्रसन्नता पर चले, और अल्लाह बड़ा दयाशील है।

१७५.वह शैतान है, जो तुम्हें अपने सहयोगियों से डरा रहा है, तो उन से न डरो, तथा मुझी से डरो यदि तुम ईमान वाले हो।

१७६.हे नबी! आप को वह काफिर उदासीन न करें, जो कुफ्र में अग्रसर हैं, वह अल्लाह को कोई हानि नहीं पहुंचा सकेंगे। अल्लाह चाहता है कि आखिरत (परलोक) में उन का कोई भाग न बनाये, तथा उन्हीं के लिये घोर यातना है।

१७७.वस्ततः जिन्हों ने ईमान के बदले कुफ्र खरीद लिया, वह अल्लाह को कोई हानि नहीं पहुंचा सकेंगे, तथा उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।

१७८.जो काफिर हो गये, वह कदापि यह न समझें कि हमारा उन को अवसर[१] देना उन के लिये अच्छा है, वास्तव में हम उन्हें इस लिये अवसर दे रहे हैं कि उन के पाप[२] अधिक हो जायें, तथा उन्हीं के लिये अपमानकारी यातना है।

१७९.अल्लाह ऐसा नहीं है कि ईमान वालों को उसी (दशा) पर छोड़ दे, जिस पर तुम हो, जब तक बुरे को अच्छे से अलग न कर दे, और अल्लाह ऐसा (भी) नहीं है कि तुम्हें गैब (परोक्ष) से[३] सूचित कर दे, और परन्तु अल्लाह अपने रसूलों में से (परोक्ष पर अवगत करने के लिये) जिसे चाहे चुन लेता है। तथा यदि तुम ईमान लाओ, और अल्लाह से डरते रहो, तो तुम्हारे लिये बड़ा प्रतिफल है।

१८०.वह लोग कदापि यह न समझें जो उस में कृपण (कंजूसी) करते है, जो अल्लाह ने उन को अपनी दया से प्रदान किया[४] है कि वह उन के लिये बुरा है, जिस में उन्हों ने कृपण किया है। प्रलय के दिन उसे उन के गले का हार[५] बना दिया जायेगा।

---

[१] अर्थात उन्हें सांसारिक सुःख सुविधा देना। भावार्थ यह है कि इस संसार में अल्लाह, सत्योसत्य, न्याय तथा अत्याचार सब के लिये अवसर देता है। परन्तु इस से धोखा नहीं खाना चाहिये, यह देखना चाहिये कि परलोक की सफलता किस में है। सत्य ही स्थायी है तथा असत्य को ध्वस्त हो जाना है।

[२] यह स्वभाविक नियम है कि पाप करने से पापाचारी में पाप करने की भावना अधिक हो जाती है।

[३] अर्थात तुम्हें बता दे कि कौन ईमान वाला और कौन दुविधावादी है।

[४] अर्थात धन धान्य की जकात नहीं देते ।

[५] सहीह बुखारी में अबू हुरैरह रजियल्लाह अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: जिसे अल्लाह ने धन दिया है, और वह उस की जकात नहीं देता तो प्रलय के दिन उस का धन गंजा सर्प बना दिया जायेगा, जो उस के

और आकाशों तथा धरती की मीरास (उत्तराधिकार) अल्लाह के[१] लिये है। तथा अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उस से सूचित है।

१८१.अल्लाह ने उन की बात सुन ली है जिन्होंने कहा कि अल्लाह निर्धन और हम धनी[२] है, उन्हों ने जो कुछ कहा है हम उसे लिख लेंगे, और उन के नबियों की अवैध हत्या करने को भी, तथा कहेंगे कि दहन की यातना चखो।

१८२.यह तुम्हारे? कर्तूतों का दुष्परिणाम है, तथा वास्तव में अल्लाह बंदों के लिये तनिक भी अत्याचारी नहीं है।

१८३.जिन्हों ने कहाः अल्लाह ने हम से वचन लिया है कि किसी रसूल का विश्वास न करें, जब तक हमारे समक्ष ऐसी बलि न दें जिस अग्नि खा[३] जाये। (हे नबी!) आप कह दें कि मुझ से पूर्व बहुत से रसूल खुली निशानियाँ और वह चीज लाये जो तुम ने कहीं। तो तुम ने उन की हत्या क्यों कर दी, यदि तुम सच्चे हो तो?

१८४.फिर यदि इन्हों ने[४] आप को झूठला दिया तो आप से पहले भी बहुत से रसूल झुठलाये गये है, जो खुली निशानियाँ तथा (आकाशीय) ग्रंथ और प्रकाशक पुस्तकें लाये।[५]

१८५.प्रत्येक प्राणी को मौत का स्वाद चखना है। और तुम्हें तुम्हारे (कर्मों का) प्रलय के दिन भरपूर प्रतिफल दिया जायेगा तो (उस दिन) जो व्यक्ति नरक से बचा लिया गया तथा स्वर्ग में प्रवेश पा गया[६], तोवह सफल हो गया। तथा संसारिक जीवन धोखे की पूंजी के सिवा कुछ नहीं है।

१८६.(हे ईमान वालो!) तुम्हारे धनों तथा प्राणों में तुम्हारी परीक्षा अवश्य ली जायेगी । और तुम उन से अवश्य बहुत सी दुःखद बातें सुनोगे जो तुम से पूर्व पुस्तक दिये

गले का हार बन जायेगा। और उसे अपने जबडों से पकड लेगा, तथा कहेगा कि मै तुम्हारा कोष हूँ, मैं तुम्हारा धन हूँ ।(सहीह बुखारी: ४५६५)

[१] अर्थात प्रलय के दिन वही अकेला सब का स्वामी होगा।

[२] यह बात यहूदियों ने कही थी (देखिये: सूरह बकरह आयत: २५४)

[३] अर्थात आकाश से अग्नि आकर जला दे, जो उस के स्वीकार्य होने का लक्षण है।

[४] अर्थात यहूद आदि ने ।

[५] प्रकाशक जो सत्य को उजागर कर दे ।

[६] अर्थात सत्य आस्था और सत्कर्मों के द्वारा इस्लाम के नियमों का पालन कर के।

गये। तथा उन से जो मिश्रणवादी[1] है। तथा यदि तुम ने सहन किया, और (अल्लाह से) डरते रहे तो यह बड़े साहस की बात होगी।

१८७.तथा (हे नबी!) याद करो जब अल्लाह ने उन से दृढ वचन लिया था जो पुस्तक[2] दिये गये कि तुम अवश्य इसे लोगों के लिये उजागर करते रहोगे और उसे छुपावोगे नहीं। तो उन्हों ने इस (वचन) को अपने पीछे डाल दिया (भंग कर दिया) और उस के बदले तनिक मूल्य खरीद[3] लिया। तो वह कितनी बुरी चीज खरीद रहे हैं?!

१८८.(हे नबी!) जो[4] अपने कर्तूतों पर प्रसन्न हो रहे है और चाहते हैं कि उन कर्मों के लिये सराहे जायें जो उन्हों ने नहीं किये। आप उन्हें कदापि न समझें कि यातना से बचे रहेंगे । तथा उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।

१८९.तथा आकशों और धरती का राज्य अल्ला ही का है। तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

१९०.वस्तुत: आकाशों तथा धरती की रचना, और रात्री तथा दिवस के एक के पश्चात् एक आते जाते रहने में मतिमानों के लिये बहुत सी निशानियाँ (लक्षण)[5] है।

१९१.जो खड़े, बैठे तथा सोये (प्रत्येक स्थिति में) अल्लाह की याद करते, तथा आकाशों और धरती की रचना में विचार करते रहते है। (कहते है:) हे मारे पालनहार! तू ने इसे[6] व्यर्थ नहीं रचा है। हमें अग्नि के दण्ड से बचा ले।

१९२.हे हमारे पालनहार ! तू ने जिसे नरक में झोंक दिया, तो उसे अपमानित कर दिया, और अत्याचारियों का कोई सहायक न होगा।

---

[1] मिश्रणवादी अर्थात मूर्तियों के पुजारी, जो पूजा अर्चना तथा अल्लाह के विशेष गुणों में अन्य को उस का साझी बनाते है।

[2] जो पुस्तक दिये गये, अर्थात: यहूद और नसारा (ईसाई) जिन को तौरात तथा इंजील दी गयी।

[3] अर्थात तुच्छ संसारिक लाभ के लिये सत्य का सौदा करने लगे।

[4] अबू सईस रजियल्लाहु अन्हु कहते है कि कुछ द्विधावादी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में आप युद्ध के लिये निकलते तो आप का साथ नहीं देते थे। और इस पर प्रसन्न होते थे और जब आप वापिस आते तो बहाने बनाते और थपथ लेते थे। और जो नहीं किया है उस की सराहना चाहते थे। इसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी – ४५६७)

[5] अर्थात अल्लाह के राज्य, स्वामित्व तथा एकमात्र पूज्य होने के।

[6] अर्थात यह विचित्र रचना तथा व्यवस्था अकारण नहीं तथा आवश्यक है कि इस जीवन के पश्चात् भी कोई जीवन हो। जिस में इस जीवन के कर्मों के परिणाम सामने आयें।

१९३.हे हमारे पालनहार! हम ने एक[1] पुकारने वाले को ईमान के लिये पुकारते हुये सुना, कि अपने पालनहार पर ईमान लाओ, तो हम ईमान ले आये, हे हमारे पालनहार! हमारे पाप क्षमा कर दे, तथा हमारी बुराईयों को अन देखी कर दे, तथा हमारी मौत पुनीतों (सदाचारियों) के साथ हो।

१९४.हे हमारे पालनहार! हम को, तू ने अपने रसूलों द्वारा जो वचन दिया है, हमें वह प्रदान कर, तथा प्रलय के दिन हमें अपमानित न कर, वास्तव में तू वचन विरोधी नहीं है।

१९५.तो उन के पालनहार ने उन की (प्रार्थना) सुन ली, (तथा कहा कि): निस्संदेह मैं किसी कार्यकर्ता के कार्य को व्यर्थ नहीं करता[2], नर हो अथवा नारी । तो जिन्हों ने हिजरत (प्रस्थान) की, तथा अपने घरों से निकाले गये, और मेरी राह में सताये गये और युद्ध किया, तथा मारे गये, तो हम अवश्य उन के दोषों को क्षमा कर देंगे। तथा उन्हें ऐसे स्वर्गों में प्रवेश देंगे जिन में नहरें बह रही है। यह अल्लाह के पास से उन का प्रतिफल होगा। और अल्लाह ही के पास अच्छा प्रतिफल है।

१९६.हे नबी! नगरों में काफिरों का (सुख सुविधा के साथ) फिरना आप को धोखे में न डाल दे।

१९७.यह तनिक लाभ[3] है, फिर उन का स्थान नरक है। और वह क्या ही बुरा आवास है।

१९८.परन्तु जो अपने पालनहार से डरे तो उन के लिये ऐसे स्वर्ग है जिन में नहरें प्रवाहित है। जिन में वह सदावासी होंगे। यह अल्लाह के पास से अतिथि सत्कार होगा। तथा जो अल्लाह के पास है पुनीतों के लिये उत्तम है।

१९९.और नि:संदेह अहले किताब (अर्थात यहूद और ईसाई) में से कुछ एसे भी है जो अल्लाह पर ईमान रखते है। और तुम्हारी ओर जो उतारा गया है उस पर भी। अल्लाह से डरे रहते है। और उस की आयतों को थोडी थोड़ी कीमतों पर बेचते भी

[1] अर्थात अन्तिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को।

[2] अर्थात अल्लाह का यह नियम है कि वह सत्कर्म अकारथ नहीं करता, उस का प्रतिफल अवश्य देता है।

[3] अर्थात सामायिक संसारिक आनन्द है।

नहीं।[१] उन का बदला उन के रब के पास है। नि:संदेह अल्लाह जल्दी ही हिसाब लेने वाला है।

२००.हे ईमान वालो! तुम धेर्य रखो।[२] और एक दूसरे को थामे रखो। और जिहाद के लिये तैयार रहो। और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम अपने उद्देश्य को पहुँचो।

*****

[१] अर्थात यह यहूदियों और ईसाईयों का दूसरा समुदाय है जो अल्लाह पर और उस की किताबों पर सहीह प्रकार से ईमान रखता था। और सत्य को स्वीकार करता था। तथा इस्लाम और रसूल तथा मुसलमानों के विपरीत साजिशें नहीं करता था। और चन्द टकों के कारण अल्लाह के आदेशों में हेर फेर नहीं करता था।

[२] अर्थात अल्लाह और उस के रसूल की फरमाँ बरदारी कर के और अपनी मनमानी छोड कर धेर्य करो। और यदि शत्रु से लडाई हो जाये तो उस में सामने आने वाली परेशानियों पर डटे रहना बहुत बडा धेर्य है । इसी प्रकार शत्रु के बारे में सदैव चोकन्ना रहना भी बहुत बडे साहस का काम है। इसी लिये हदीस में आया है कि अल्लाह के राहस्ते में एक दिन मोरचे बन्द रहना इस दुनिया और उस की तमाम चीजों से उत्तम है। (सहीह बुखारी)

सूरह निसा – ४

यह सूरह मद्नी है, इस में १७६ आयतें है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. हे मनुष्यों ! अपने[1] उस पालनहार से डरो, जिस ने तुम को एक जीव (आदम) से उत्पन्न किया, तथा उसी से उस की पत्नी (हव्वा) को उत्पन्न किया, और उन दोनों से बहुत से नर नारी फैला दिये। उस अल्लाह से डरो जिस के द्वारा तुम एक दूसरे से (अधिकार) माँगते हो, तथा रक्त संबंधों को तोड़ने से डरो, निस्संदेह अल्लाह तुम्हारा निरीक्षक है।

२. तथा (हे संरक्षको!) अनाथों को उन के धन चुका दो, और (उन की) अच्छी चीज से (अपनी) बुरी चीज न बदलो, और उन के धन अपने धनों में मिला कर न खाओ, निस्संदेह वह बहुत बड़ा पाप है।

३. और यदि तुम डरो की अनाथ (बालिकाओं) के विषय[2] में न्याय नहीं कर सकोगे तो नारियों में से जो भी तुम्हें भायें, दो से, तीन से चार तक से विवार कर लो। और यदि डरो कि न्याय नहीं करोगे तो एक ही से करो, अथवा जो तुम्हारे स्वामित्व[3] में हों उसी पर बस करो। यह अधिक समीप है कि अन्याय न करो।

४. तथा स्त्रियों को उन के महर (विवाह उपहार) सप्रसन्नता से चुका दो। फिर यदि वह उस में से कुछ तुम्हें अपनी इच्छा से दे दें तो प्रसन्न हो कर खाओ।

---

[1] यहाँ से सामाजिक व्यवस्था का नियम बताया गया है कि विश्व के सभी नर नारी एक ही माता पिता से उत्पन्न किये गये है। इस लिये सब सामान है। और सब के साथ अच्छा व्यवहार तथा भाई चारे की भावना रखनी चाहिये। और सब के अधिकार की रक्षा करनी चाहिये। यह उस अल्लाह का आदेश है जो तुम्हारे मूल का उत्पत्तिकार है। और जिस के नाम से तुम एक दूसरे से अपना अधिकार माँगते हो कि अल्लाह के लिये मेरी सहायता करो। फिर इस साधारण संबंध के सिवा गर्भाशयिक अर्थात समीपवर्ती परिवारिक संबंध भी है जिसे जोडने पर अधिक बल दिया गया है। एक हदीस में है कि संबंध भंगी स्वर्ग में नहीं जायेगा। (सहीह बुखारी–५९८४, मुस्लिम–२५५५) इस आयत के पश्चात् कई आयतों में इन्हीं अल्लाह के निर्धारित किये मानव अधिकारों का वर्णन किया जा रहा है।

[2] अरब में इस्लाम से पूर्व अनाथ बालिका का संरक्षक यदि उस के खुजूर का बाग हो तो उस पर अधिकार रखने के लिये उस से विवाह कर लेता था। और उस में उसे कोई रूचि नहीं होती थी। इसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी हदीस नं. ४५७३)

[3] अर्थात युद्ध में बंदी बनाई गई दासी।

५. तथा अपने धन जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिये जीवन स्थापन का साधन बनाया है अज्ञानों को न[१] दो। हाँ, उस में से उन्हें खाना, कपड़ा दो, और उन से भली बात बोलो।

६. तथा अनाथों की परीक्षा लेते रहो यहाँ तक कि वह विवाह की आयु को पहुँच जायें। तो यदि तुम उन में सुधार देखो तो उन का धन उन को समर्पित कर दो। और उसे अपव्यय तथा शीघ्रता से इस लिये न खाओ कि वह बड़े हो जायेंगे। और जो धनी हो तो वह नियमानुसार खा ले। तथा जब तुम उन का धन उन के हवाले करो तो उन पर साक्षी बना लो। और अल्लाह हिसाब लेने के लिये काफी है।

७. और पुरूषों के लिये उस में से भाग है जो माता पिता तथा समीपवर्तियों ने छोड़ा है।, तथा स्त्रियों के लिये उस में से भाग है जो माता पिता तथा समीपवर्तियों ने छोड़ा हो, वह थोड़ा हो अथवा अधिक, सब के भाग[२] निर्धारित है।

८. और जब मीरास विभाजन के समय समीपवर्ती, तथा अनाथ और निर्धन उपस्थित हों तो उन्हें भी थोड़ा बहुत दे दो, तथा उन से भली बात बोलो।

९. और उन लोगों को डरना चाहिये, जो यदि अपने पीछे निर्बल संतान छोड़ जायें, और उन के नाश होने का भय हो, अत: उन्हें चाहिये कि अल्लाह से डरें, और सीधी बात बोलें।

१०. जो लोग अनाथों का धन अत्याचार से खाते हैं वह अपने पेटों में आग भरते है, और शीघ्र ही नरक की अग्नि में प्रेवेश करेंगे।

११. अल्लाह तुम्हारी संतान के संबंध में तुम्हें आदेश देता है कि पुत्र का भाग दो पुत्रियों के बराबर है। और यदि पुत्रियों दो से अधिक हों तो उन के लिये छोड़े हुये धन का दो तिहाई (भाग) है। और यदि एक ही हो तो उस के लिये आधा है। और उस

---

[१] अर्थात धन, जीवन स्थापन का साधन है। इस लिये जब तक अनाथ चतुर तथा व्यस्क न हो जायें और अपने लाभ की रक्षा न कर सकें उस समय तक उन का धन उन के नियंत्रण में न दो।

[२] इस्लाम से पहले साधारणत: यह विचार था कि पुत्रियों का धन और संपत्ति की विरासत (उत्तराधिकार) में कोई भाग नहीं। इस में इस कुरीति का निवारण किया गया और यह नियम बना दिया गया कि अधिकार में पुत्र और पुत्री दोनों समान है। यह इस्लाम ही की विशेषता है जो संसार के किसी धर्म अथवा विधान में नहीं पाई जाती। इस्लाम ही ने सर्वप्रथम नारी के साथ न्याय किया, और उसे पुरूषों के बराबर अधिकार दिया है।

के माता पिता के लिये, दोनों में से प्रत्येक के लिये उस में से छठा भाग है जो छोड़ा हो, यदि उस के कोई संतान हो। और यदि उस के कोई संतान (पुत्र या पुत्री) न हों और उस का वारिस उस का पिता हो, तो उस की माता का तिहाई (भाग)[१] है, (और शेष पिता का)। फिर यदि (माता पिता के सिवा) उस के एक से अधिक भाई अथवा बहनें हो तो उस की माता के लिये उठा भाग है जो वसिय्यत[२] तथा कर्ज चुकाने के पश्चात् होगा। तुम नहीं जानते कि तुम्हारे पिताओं और पुत्रों में से कौन तुम्हारे लिये अधिक लाभदायक है। वास्तव में अल्लाह अति बड़ा तथा गुणी, ज्ञानी तत्वज्ञ है।

१२. और तुम्हारे लिये उस का आधा है जो तुम्हारी पत्नियाँ छोड़ जायें, यदि उन के कोई संतान (पुत्र या पुत्री) न हो। फिर यदि उन की कोई संतान हो तो तुम्हारे लिये उस का चौथाई है जो वह छोड़ गई हों, वसिय्यत (उत्तरदान) या ऋण चुकाने के पश्चात्। और (पतिनयाँ) के लिये उस का चौथाई है जो (माल आदि) तुम ने छोड़ा हो, यदि तुम्हारे कोई संतान (पुत्र या पुत्री) न हो। फिर यदि तुम्हारे कोई संतान हो तो उन के लिये उस का आठवा[३] (भाग) है, जो तुम ने छोड़ा है, वसिय्यत (उत्तरदान) जो तुम ने किया हो पूरा करने अथवा ऋण चुकाने के पश्चात् । और यदि किसी ऐसे पुरूष या स्त्री का वारिस होने की बात हो जो (कलाला)[४] हो, तथा (दूसरी माता से) उस का भाई अथवा बहन हो तो उन में से

---

[१] और शेष पिता का होगा। भाई, बहनों को कुछ नहीं मिलेगा।

[२] वसिय्यत का अर्थ उत्तरादान है, जो एक तिहाई या उस से कम होना चाहिये परन्तु वारिस के लिये उत्तरदान नहीं है। (देखिये: त्रिमिजी–९७५) पहले ऋण चुकाया जायेगा, फिर वसिय्यत पूरी की जायेगी, फिर माँ का छठा भाग दिया जायेगा।

[३] यहाँ यह बात विचारणीय है कि जब इस्लाम में पुत्र पुत्री तथा नर नारी बराबर है, तो फिर पुत्री को पुत्र के आधा, तथा पत्नी को पति के आधा भाग क्यों दिया गया है? इस का कारण यह है कि पुत्री जब युवती और विवाहित हो जाती है, तो उसे अपने पति से महर (विवाह उपहार) मिलता है, और उस के तथा उस की संतान के यदि हो, तो भरण पोषण का भार उस के पति पर होता है। इस के विपरीत पुत्र युवक होता है तो विवाह करने पर अपनी पत्नी को महर (विवाह उपहार) देने के साथ ही उस का तथा अपनी संतान के भरण पोषण का भार भी उसी पर होता है। इसीलिये पुत्र को पुत्री के भाग का दुगना दिया जाता है, जो न्यायोचित है।

[४] कलाल: वह पुरूष अथवा स्त्री है जिस के न पिता हो और न पुत्र–पुत्री।अब इस के वारिस तीन प्रकार के हो सकते है:

१. सगे भाई बहन

२. पिता एक तथा माताएँ अलग हों।

प्रत्येक के लिये छठा (भाग) है। फिर यदि (माँ जाये) (भाई या बहनें) इस से अधिक हों तो वह सब तिहाई (भाग) में (बराबर के) साझी होंगे। यह सब वसिय्यत (उत्तरदान) तथा ऋण चुकाने के पश्चात् होगा। और किसी को हानि नहीं पहुँचाई जायेगी। यह अल्लाह की ओर से वसिय्यत है। और अल्लाह ज्ञानी तथा हिक्मत वाला है।

१३. यह अल्लाह की(निर्धारित) सीमायें हैं, और जो अल्लाह तथा उस के रसूल का आज्ञाकारी रहेगा तो उसे ऐसे स्वर्गों में प्रवेश देगा जिन में नहरें प्रवाहित होंगी। जिन में सदावासी होंगे। तथा यही बड़ी सफलता है।

१४. और जो अल्लाह तथा उस के रसूल की अवज्ञा तथा उस की सीमाओं का उल्लघन करेगा तो उस को नरक में प्रवेश देगा। जिस में वह सदावासी होगा। उसी के लिये अपमान कारी यातना है।

१५. तथा तुम्हारी स्त्रियों में से जो व्याभिचार कर जायें तो उन पर अपनों में से चार साक्षी लाओ। फिर यदि वह साक्ष्य (गवाही) दें तो उन्हें घरों में बंद कर दो यहाँ तक कि उन को मौत आ जाये अथवा अल्लाह उन के लिये कोई अन्य[१] राह बना दे।

१६. और तुम में से जो दो व्यक्ति ऐसा करें तो देनों को दुःख पहुंचाओ। यहाँ तक कि वह तौबा (क्षमा याचना) कर लें और अपना सुधार कर लें। तो उन को छोड़ दो। निश्चय अल्लाह बड़ा क्षमाशील दयावान् है।

१७. अल्लाह के पास उन्हीं की तौबः (क्षम याचना) स्वीकार है, जो अन जाने में बुराई कर जाते है, फिर शीघ्र ही क्षमा याचना कर लेते है, तो अल्लाह उन की तौबः (क्षमायाचना) स्वीकार कर लेता है, तथा अल्लाह बड़ा ज्ञानी गुणी है।

१८. और उन की तौबः (क्षमा याचना) स्वीकार्य नहीं, जो बुराईयाँ करते रहते हैं, यहाँ तक कि जब उन में से किसी की मौत का समय आ जाता है, तो कहता है, अब

---

३. माता एक तथा पिता अलग हों। यहाँ इसी प्रकार का आदेश वर्णित किया गया है। ऋण चुकाने के पश्चात बिना कोई हानि पहुँचाये, यह अल्लाह की और से आदेश है, तथा अल्लाह अति ज्ञानी सहनशील है।

[१] यह आदेश इस्लाम के आरंभिक युग में व्याभिचार का अस्थायी दण्ड था इसका स्थाई दण्ड सूरह नूर आयत २ में आ रहा है। जिसके आवतरित होने पर मुहम्मद (स०) ने कहा : अल्लाह ने जो वचन दिया था उसे पूरा कर दिया, इसे मुझसे सीख लो।

मैं ने तौबः कर ली, और न ही उन की जो काफिर रहते हुये मर जाते हैं, इन्हीं के लिये हम ने दुखःदायी यातना तैयार कर रखी है।

१९. हे ईमान वालो! तुम्हारे लिये हलाल(वैध) नहीं है कि बलपूर्वक स्त्रियों के वारिस बन जाओ।[१] तथा उन्हें इस लिये न रोको कि उन्हें जो दिया हो उस में से कुछ मार लो। परन्तु यह कि खुली बुराई कर जायें। तथा उन के साथ उचित[२] व्यवहार से रहो। फिर यदि वह तुम्हें अप्रिय लगें तो संभव है कि तुम किसी चीज को अप्रिय समझो, और अल्लाह ने उस में बड़ी भलाई[3] रख दी हो।

२०. और यदि तुम किसी पत्नी के स्थान पर किसी दूसरी पत्नी से विवाह करना चाहो और तुम ने उन में से एक को (सोने चाँदी का) ढेर भी (मेहर में) दिया हो तो उस में से कुछ न लो। क्या तुम चाहते हो कि उसे आरोप लगा कर तथा खुले पाप द्वारा ले लो?

२१. तथा तुम उसे ले भी कैसे सकते हो, जब कि तुम एक दूसरे से मिलने कर चुके हो। तथा उन्होंने तुम से (विवाह के समय) दृढ़ वचन लिया है।

२२. और उन स्त्रियों से विवाह[४] न करो जिन से तुम्हारे पिताओं ने विवाह किया हो, परन्तु जो पहले हो चुका।[५] वास्तव में यह निर्लज्जा की तथा अप्रिय बात और बुरी रीति थी।

---

[१] हदीस में है कि जब कोई मर जाता तो उस के वारिस उस की पत्नी पर भी अधिकार कर लेते थे इसी को रोकने के लिये यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी – ४५७९)

[२] हदीस में है कि पूरा ईमान उस में है जो सुशील हो। और भला वह है जो अपनी पत्नियों के लिये भला हो। (त्रिमिजी – ११६२)

[3] अर्थात पत्नी किसी कारण न भाये तो तुरन्त तलाक न दे दो बल्कि धैर्य से काम लो।

[४] जैसा कि इस्लाम से पहले लोग किया करते थे। और हो सकता है कि आज भी संसार के किसी कोने में ऐसा होता हो। परन्तु यदि भोग करने से पहले बाप ने तलाक दे दी हो तो उस स्त्री से विवाह किया जा सकता है।

[५] अर्थात इस आदेश के आने से पहले जो कुछ हो गया अल्लाह उसे क्षमा करने वाला है।

२३. तुम पर[1] हराम (अवैध) कर दी गई हैंः तुम्हारी मातायें, तथा तुम्हारी पुत्रियाँ, और तुम्हारी बहनें, और तुम्हारी फूफियाँ, और तुम्हारी मौसियाँ, तथा तुम्हारी भतीजियाँ, और भांजियाँ, तथा तुम्हारी वह मातायें जिन्हों ने तुम्हें दूध पिलाया हो, तथा दूध पीने से संबंधित बहनें, और तुम्हारी पत्नियों की मातायें, तथा तुम्हारी पत्नियों की पुत्रियाँ जिन का पालन पोषण तुम्हारी तुम्हारी गोद में हुआ हो, जिन पत्नियों से तुम ने संभोग किया हो, और यदि उन से संभोग न किया हो तो तुम पर कोई दोष नहीं। तथा तुम्हारे सगे पुत्रों की पत्नियाँ, और यह[2] कि तुम दो बहनों को एकत्र करो, परन्तु जो हो चुका। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

२४. तथा उन स्त्रियों से (विवाह वर्जित है) जो दूसरों के निकाह में हों। परन्तु तुम्हारी दासियाँ[3] जो (सुद्ध में) तुम्हारे हाथ आई हों। (यह) तुम पर अल्लाह ने लिख दिया[4] है। इन के सिवा (स्त्रियाँ) तुम्हारे लिये हलाल(उचित) कर दी गयी है। (प्रतिबंध यह है कि) अपने धनों द्वारा व्याभिचार से सुरक्षित रहने के लिये विवाह करो। फिर उन में से जिस से लाभ उठाओं उन्हें उन का मह्र (विवाह उपहार) अवश्य चुका दो। तथा मह्र (विवाह उपहार) निर्धारित करने के पश्चात (यदि) आपस की सहमति से (कोई कमी या अधिक्ता कर लो) तो तुम पर कोई दोष नहीं। निःसंदेह अल्लाह अति ज्ञानी तत्वज्ञ है।

२५. और जो व्यक्ति तुम में से स्वतंत्र ईमा वालियों से विवाह करने की सकत न रखे तो वह अपने हाथों में अाी हुई अपनी ईमान वाली दासियों से (विवाह कर ले)।

---

[1] दादियां तथा नानियां भी इसी में आती है। इसी प्रकार पुत्रियां में अपनी संतान की नीचे तक की पुत्रियां, और बहनों में सगी हों या पिता अथवा माता से हों, फूफियों में पिता तथा दादाओं की बहनें, और मौसियों में माताओं तथा नानियों की बहनें, तथा भतीजी और भांजी में उन की संतान भी आती है। हदीस में है कि दूध से वह सभी रिश्ते हराम हो जाते हैं जो गोत्र से हराम होते है। पत्नी की पुत्री जो दूसरे पति से ही हो उसी समय हराम(वर्जित) होगी जब उस की माता से संभोग किया हो, केवल विवाह कर लेने से हराम नहीं होगी। जैसे दो बहनों को निकाह में एकत्र करना वर्जित है उसी प्रकार किसी स्त्री के साथ उस की फूफी अथवा मौसी को भी एकत्र करना हदीस से वर्जित है। (देखियेः सहीह बुखारी – ५१०९ सहीह मुस्लिम – १४०८)

[2] अर्थात जाहिलिय्यत के युग में।

[3] दासी वह स्त्री जो युद्ध में बंदी बनाई गई हो। उस से एक बार मासिक धर्म आने के पश्चात संभोग करना उचित है, और उसे मुक्त कर के उस से विवाह कर लेने का बड़ा पुण्य है। (इब्ने कसीर)

[4] अर्थात तुम्हारे लिये नियम बना दिया है।

तथा अल्लाह तुम्हारे ईमान को अधिक जानता है। तुम आपस में एक ही हो।[१] अतः तुम उन के स्वामिनों की अनुमति से उन (दासियों) से विवाह कर लो, और उन्हें नियमानुसार उन के महूरें (विवाह उपहार) चुका दो, वह सती हों, व्याभिचारिणी न हों, न गुप्त प्रेमी बना रखी हों। फिर जब वह विवाहित हो जायें तो यदि व्याभिचार कर जायें, तो उन पर उस का आधा[२] दण्ड है, जो स्वतंत्र स्त्रियों पर है। यह (दासी से विवाह) उस के लिये है, जो तुम में से व्याभिचार से डरता हो। और सहन करो तो यह तुम्हारे लिये अधिक अच्छा है। और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

२६. अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे लिये उजागर कर दे, तथा तुम को भी उन की नितियों की राह दर्शा दे जो तुम से पहले थे। और तुम्हारी क्षमा याचना स्वीकार करे। तथा अल्लाह अति ज्ञानी तत्वज्ञ है।

२७. और अल्लाह चाहता है कि तुम पर दया करो। तथा जो लोग आकांक्षाओं के पीछे पड़े हुये है वह चाहते है कि तुम बहुत अधिक झुक[३] जाओ।

२८. अल्लाह तुम्हारा(बोझ) हल्का करना[४] चाहता है। तथा मानव निर्बल पैदा किया गया है।

२९. हे ईमान वालो! आपस में एक दूसरे का धन अवैध रूप से न खाओ, परन्तु यह किः लेन देन तुम्हारी आपस की स्वीकृति से (धर्मविधानानुसार) हो। और आत्महत्या[५] न करो, वास्तव में अल्लाह तुम्हारे लिये अति दयावान् है।

---

[१] तुम आपस में एक ही हो, अर्थात मानवता में बराबर हो। ज्ञातव्य है कि इस्लाम से पहले दासिता की परम्परा पूरे विश्व में फैली हुई थी। बलवान जातियां निर्बलों को दास बना कर उन के साथ हिंसक व्यवहार करती थीं। कुरआन ने दासिता को केवल युद्ध के बंदियों में सीमित कर दिया। और उन्हें भी अर्थदण्ड ले कर अथवा उपकार कर के मुक्त करने की प्रेरणा दी। फिर उन के साथ अच्छे व्यवहार पर बल दिया। तथा ऐसे आदेश और नियम बना दिऐ किःदासिता, दासिता नहीं रह गई। यहां इसी बात पर बल दिया गया है कि दासियों से विवाह कर लेने में कोई दोष नहीं। इसलिये मानव्ता में सब बराबर हैं, और प्रधानता का मापदण्ड ईमान तथा सत्कर्म हैं।

[२] अर्थात पचास कोड़े।

[३] अर्थात सत्धर्म कतरा जाओ।

[४] अर्थात अपने धर्मविधान द्वारा।

[५] इस का अर्थ यह भी किया गया है किः अवैध कर्मो द्वारा अपना विनाश न करो, तथा यही भी किः आपस में रक्तपात न करो, और यह तीनों ही अर्थ सहीह है।(तफ़्सीरे कुर्तबी)

३०. और जो अतिक्रमण तथा अत्याचार से ऐसा करेगा, समीप है किः हम उसे अग्नि में झोंक देंगे, और यह अल्लाह के लिये सरल है।

३१. तथा यदि तुम मा पापों से बचते रहे, जिन से तुम्हें रोका जा रहा है, तो हम तुम्हारे लिये तुम्हारे दोषों को क्षमा कर देंगे। और तुम्हें सम्मानित स्थान में प्रवेश देंगे।

३२. तथा उस की कामना न करो, जिस के द्वारा अल्लाह ने तुम को एक दूसरे पर श्रेष्ठता दी है। पुरूषों के लिये उस का भाग है जो उन्होंने कमाया[१], और स्त्रियों के लिए उस का भाग है जो उन्होंने कमाया है। तथा अल्लाह से उस के अधिक की प्रार्थना करते रहो, निस्संदेह अल्लाह सब कुछ जानता है।

३३. और हम ने प्रत्येक के लिये वारिस (उत्तराधिकारी) बना दिये है उस में से जो माता पिता तथा समीपवर्तियों ने छोड़ा हो। तथा जिन से तुम ने समझौता[२] किया हो उन्हें उन का भाग दो। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक चीज से सूचित है।

३४. पुरूष स्त्रियों के व्यवस्थापक[३] हैं, इस कारण कि अल्लाह ने उन में से एक को दूसरे पर प्रधानता दी है। तथा इस कारण कि उन्हों ने अपने धनों में से (उन पर) खर्च किया है। अतः सदाचारी स्त्रियाँ वह है जो आज्ञाकारी तथा उनकी अनुपस्थिति में अल्लाह की रक्षा में उन के अधिकारों की रक्षा करती हों। और तुम्हें जिन की अवज्ञा का डर हो तो उन्हें समझाओ। और शयनागारों (सोने के स्थानों) में उन से अलग हो जाओ। तथा उनको मारो। फिर यदि वह तुम्हारी बात मानें तो उन पर अत्याचार का बहाना न खोजो। और अल्लाह सब से ऊपर, सब से बड़ा है।

---

[१] कुरआन उतरने से पहले संसार का यह साधारण विश्वव्यापी विचार था किः नारी का कोई स्थायी अस्तित्व नहीं है। उसे केवल पुरुषों की सेवा और काम वासना की पूर्ति के लिये बनाया गया है। कुर्आन इस विचार के विरूद्ध यह कहता है कि अल्लाह ने मानव को नर तथा नारी को लिंगों में विभाजित कर दिया है। और दोनों ही समान रुप से अपना अस्तित्व, अपने अपने कर्तव्य तथा कर्म रखते हैं। और जैसे आर्थिक कार्यालय के लिये एक लिंग की आवश्यक्ता है वैसे ही दूसरे की भी है। मानव के सामाजिक जीवन के लिये यह दोनों एक दूसरे के सहायक है।

[२] यह संधि मीरास इस्लाम के आरंभिक युग में थी, जिसे (मवारीस की आयत) से निरस्त कर दिया गया। (इब्ने कसीर)

[३] आयत का भावार्थ यह है कि पारिवारिक जीवन के प्रबंध के लिये एक प्रबंधक होना आवश्यक है। और इस प्रबंध तथा व्यवस्था का भार पुरुष पर रखा गया है। जो कोई विशेषता नहीं, बल्कि एक भार है। इस का यह अर्थ नहीं कि जन्म से पुरुष की स्त्री पर कोई विशेषता है। प्रथम आयत में यह आदेश दिया गया है कि यदि पत्नी पति की अनुगामी न हो तो वह उसे समझाये। परन्तु यदि दोष पुरुष का हो तो दोनों के बीच मध्यस्थता द्वारा संधि कराने की प्रेरणा दी गयी है।

३५. और यदि तुम[१] को दोनों के बीच वियोग का डर हो तो एक मध्यस्थ उस (पति) के घराने से तथा एक मध्यस्थ उस (पत्नी) के घराने से नियुक्त करो, यदि वह दोनों संधि कराना चाहेंगे तो अल्लाह उन दोनों[२] के बीच संधि करा देगा। वास्तव में अल्लाह अति ज्ञानी सर्वसूचित है।

३६. तथा अल्लाह की इबादत (वंदना) करो, और किसी चीज को उस का साझी न बनाओ। तथा माता पिता समीपवर्तियों और अनाथों एवं निर्धनों तथा समीप और दूर के पड़ोसी, यात्रा के साथी तथा यात्री और अपने दास दासियों के साथ उपकार करो। निःसंदेह अल्लाह उस से प्रेम नहीं करता जो अभिमानी अहंकारी[३] हो।

३७. और जो स्वयं कृपण (कंजूसी) करते हैं, तथा दूसरों का भी कृपण (कंजूसी) का आदेश देते हैं, और उसे छुपाते हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपनी दया से प्रदान किया है। और हम ने कृतघ्नों के लिये अपमानकारी यातना तैयार कर रखी है।

३८. तथा जो लोग अपना धन लोगों को दिखाने के लिए दान करते हैं, और अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान नहीं रखते। तथा शैतान जिस का साथी हो, तो वह बहुत बुरा साथी[४] है।

३९. और उन का क्या बिगड़ जाता, यदि वह अल्लाह तथा अंतिम दिन (परलोक) पर ईमान (विश्वास) रखते, और अल्लाह ने जो उन्हें दिया है उस में से दान करते? और अल्लाह उन्हें भली भाँति जानता है।

४०. अल्लाह करण भर भी किसी पर अत्याचार नहीं करता, यदि कुछ भलाई (किसी ने) की हो, तो (अल्लाह) उसे अधिक कर देता है, तथा अपने पास से बड़ा प्रतिफल प्रदान करता है।

---

[१] इस में पति पत्नी के संरक्षकों को संबोधित किया गया है।

[२] अर्थात पति पत्नी में।

[३] अर्थात डींगें मारता तथा इतराता हो।

[४] आयत ३६ से ३८ तक साधारण सहानुभूति और उपकार का आदेश दिया गया है किः अल्लाह ने जो धन धान्य तुम को दिया उस से मानव की सहायता और सेवा करो। जो व्यक्ति अल्लाह पर ईमान रखता हो उस का हाथ अल्लाह की राह में दान करने से कभी नहीं रूक सकता। फिर भी दान करो तो अल्लाह के लिये करो, दिखावे और नाम के लिये न करो। जो नाम के लिये दान करता है वह अल्लाह तथा अखिरत पर सच्चा ईमान (विश्वास) नहीं रखता।

४१. तो क्या दशा होगी जब हम प्रत्येक उम्मत (समुदाय) से एक साक्षी लायेंगे, और (हे नबी!) आप को उन पर साक्षी लायेंगे[१]।

४२. उस दिन जो काफिर तथा रसूल के अवैज्ञाकारी हो गये यह कामना करेंगे कि उन के सहित भूमि बराबर[२] कर दी जाये। और वे अल्लाह से कोई बात छुपा नहीं सकेंगे।

४३. हे ईमान वालो! तुम जब नशे[३] में रहो तो नमाज के समीप न जाओ। जब तक जो कुछ बोलो उसे न समझो। और न जनाबत[४] की स्थिति में (मस्जिदों के समीप जाओ) परन्तु रास्ता पार करते हुये। और यदि तुम रोगी हो अथवा यात्रा में रहो, या स्त्रियों से सहवास कर लो, फिर जल न पाओ, तो पवित्र मिट्टी से तयम्मुम[५] कर लो। उसे अपने मुखों तथा हाथों पर फेर लो। वास्तव` अल्लाह अति क्षान्त (सहिष्णु) क्षमाशील है।

४४. क्या आप ने उनकी दशा नहीं देखी जिन्हें पुस्तक[६] का कुछ भाग दिया गया? वह कुपथ खरीद रहे हैं, तथा चाहते है कि तुम भी सुपथ से विचलित हो जाओ।

४५. तथा अल्लाह तुम्हारे शत्रुओं से भली भाँति अवगत् है। और (तुम्हारे लिये) अल्लाह की रक्षा काफी है। तथा अल्लाह की सहायता काफी है।

४६. (हे नबी!) यहूदियों में से कुछ लोग ऐसे हैं जो शब्दों को उन के (वास्तविक) स्थानों से फेरते हैं। और (आप से) कहते हैं कि हम ने सुन लिया, तथा (आप की) अवज्ञा की, और आप सुनिये, आप सुनाये न जायें, तथा अपनी जुबानें मोड़ कर ''राइना'' कहते और सत्धर्म में व्यंग करते हैं, और यदि वह ''हम ने सुन

---

[१] आयत का भावार्थ यह है कि प्रलय के दिन अल्लाह प्रत्येक समुदाय के रसूल को उन के कर्म का साक्षी बनायेगा। इस प्रकार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वा सल्लम को भी अपने समुदाय पर साक्षी बनायेगा। तथा सब रसूलों पर कि उन्हों ने अपने पालनहार का संदेश पहुंचाया है। (इब्ने कसीर)

[२] अर्थात भूमि में धंस जायें, और उन के ऊपर से भूमि बराबर हो जाये। या वह भी मिट्टी हो जायें।

[३] यह आदेश इस्लाम के आरंभिक युग का है जब मदिरा को वर्जित नहीं किया गया था। (इब्ने कसीर)

[४] जनाबत का अर्थ वीर्यपात के कारण मलिन तथा अपवित्र होना है।

[५] अर्थात यदि जल का अभाव हो, अथवा रोग के कारण जल प्रयोग हानिकारक हो तो वुजू तथा स्नान के स्थान पर तयम्मुम कर लो।

[६] अर्थात अहले किताब की जिन को तौरात का ज्ञान दिया गया। भावार्थ यह है कि उन की दशा से शिक्षा ग्रहण करो। उन्हीं उन्हीं के समान सत्य से विचलित न हो जाओ।

लिया तथा आज्ञाकारी हो गये'', और ''हमें देखिये'' कहते, तो उन के लिये अधिक अच्छी तथा सही बात होती। परन्तु अल्लाह ने उन के कुफ़्र के कारण उन्हें धिक्कार दिया है। अतः उन में से थोड़े ही ईमान लायेंगे।

४७. हे अहले किताब! उस (कुर्आन) पर ईमान लाओ जिसे हम ने उन का प्रमाणकारी बना कर उतारा है जो (पुस्तकें) तुम्हारे साथ है। इस से पहले कि हम चेहरे बिगाड़ कर पीछे फेर दें। अथवा उन्हें ऐसे ही धिक्कार[1] दें जैसे शनिवार वालों को धिक्कार दिया। और अल्लाह का आदेश पूरा हो कर रहा।

४८. निःसंदेह अल्लाह यह नहीं क्षमा करेगा कि उस का साक्षी बनाया जाये[2], और उस के सिवा जिसे चाहे क्षमा कर देगा. और जो अल्लाह का साझी बनाता है तो उस ने महापाप गढ़ लिया।

४९. क्या आप ने उन्हें नहीं देखा जो अपने आप पवित्र बन रहे हैं? बल्कि अल्लाह जिसे चाहे पवित्र करता है। और (लोगों पर) कण बराबर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

५०. देखो यह लोग कैसे अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगा रहे[3] हैं! उन के खुले पाप के लिये यही बहुत है।

५१. हे नबी! क्या आप ने उन की दशा नहीं देखी जिन को पुस्तक का कुछ भाग दिया गया? वह मुर्तियों तथ शैतानों की इबादत (वंदना) करते है। और काफिरों[4] के बारे में कहते हैं कि यह ईमान वालों से अधिक सीधी डगर पर हैं।

---

[1] मदीने के यहूदियों का यह दुर्भाग्य था कि जब नबी सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिलते, तो द्विअर्थक तथा संदिग्ध शब्द बोल कर दिल की भड़ास निकालते, उसी पर उन्हें यह चेतावनी दी जा रही है। शनिवार वाले, अर्थात जिन को शनिवार के दिन शिकार से रोका गया था। और जब वे नहीं माने जो उन्हें बन्दर बना दिया गया।

[2] अर्थात पूजा, अराधना तथा अल्लाह के विशेष गुण–कर्मो में किसी में किसी वस्तु अथ्वा व्यक्ति को साझाी बनाना घोर अक्षम्य पाप है, जो सत्धर्म के मूलाधार एकेश्वरवाद के विरूद्ध, और अल्लाह पर मिथ्या आरोप है। यहूदियों ने अपने धर्माचार्यों तथा पादरियों के विषय में यह अंधविश्वास बना लिया किः उन की बात को धर्म समझ कर उन्हीं का अनुपालन कर रहे थे। और मूल पुस्तकों को त्याग दिया था. कुर्आन इसी को शिर्क के लिये क्षमा नहीं, क्योंकिः इस से मूलधर्म की नींव ही हिल जाती है। और मार्गदर्शन का केन्द्र ही बदल जाता है।

[3] अर्थात अल्लाह का नियम तो यह है किः पवित्रता, ईमान तथा सत्कर्म पर निर्भर है, और यह कहते हैं कि यहूदिय्यत पर है।

[4] अर्थात मक्का के मूर्ति के पूजारियों के बारे में मदीना के यहूदियों की यह दशा थी कि वह सदैव मुर्ति पूजा के विरोधी रहे। रहे। और उस का अपमान करते रहे। परन्तु अब मुसलमानों के विरोध में उन की प्रशंसा करते तथा कहते कि मुर्ति पूजकों का आचरण स्वभाग अधिक अच्छा है।

५२. और जिसे अल्लाह धिक्कार दे तो आप उस का कदापि कोई सहायक नहीं पायेंगे।

५३. क्या उन के पास राज्य का कोई भाग है, इस लिए लोगों को (उस में से) तनिक भी नहीं देंगे?

५४. बल्कि वह लोगों[1] से उस अनुग्रह पर विद्वेष कर रहें है जो अल्लाह ने उन को प्रदान किया है। तो हम ने (पहले भी) इब्राहीम के घराने को पुस्तक तथा हिक्मत (तत्वदर्शिता) दी है।

५५. फिर उन में से कोई ईमान लाया, और कोई उस से विमुख हो गया। (तो उस के लिए) नरक की भड़कती अग्नि बहुत है।

५६. वास्तव में जिन लोगों ने हमारी आयतों के साथ कुफ्र (अविश्वास) किया, हम उन्हें नरक में झोंक देंगे। जब जब उन की खालें पकेंगी हम उन की खालें दूसरी बदल देंगे, ताकि वह यातना चखें, निःसंदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

५७. और जो लोग ईमान लाये, तथा सदाचार किये तो हम उन्हें ऐसे सवर्गो में प्रवेश देंगे जिन में नहरें प्रवाहित है। जिन में वह सदावासी होंगे, उन के लिए उन में निर्मल पत्नियों होंगी और हम उन को घनी छाओं में रखेंगी।

५८. अल्लाह[2] तुम्हें आदेश देता है कि धरोहर उन के स्वामियों को चुका दो, और जब लोगों के बीच निर्णय करो तो न्याय के साथ निर्णय करो। अल्लाह तुम्हें अच्छी बात का निर्देश दे रहा है। निःसंदेह अल्लाह सब कुछ सुनने, देखने वाला है।

५९. हे ईमान वालो! अल्लाह की आज्ञा अनुपालन करो, और रसूल की आज्ञा का अनुपालन करो, तथा अपने शासकों की आज्ञापालन करो, फिर यदि किसी बात में तुम आपस में विवाद (विभेद) कर लो, तो उसे अल्लाह और रसूल की ओर फेर

[1] अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों पर कि अल्लाह ने आप को नबी बना दिया तथा मुसलमानों को ईमान दे दिया।

[2] यहां से ईमान वालों को संबोधित किया जा रहा है कि सामाजिक जीवन की व्यवस्था के लिए मूल नियम यह है कि जिस का जो भी अधिकार हो उसे स्वीकार किया जाये और दिया जाये। इसी प्रकार कोई भी निर्णय बिना पक्षपात के न्याय के साथ किया जाये, किसी प्रकार कोई अन्यान नहीं होना चाहिये।

दो, यदि तुम अल्लाह तथा अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान रखते हो। यह (तुम्हारे लिये) अच्छा[1] और इस का परिणाम अच्छा है।

६०. (हे नबी!) क्या आप ने उन (द्विधावादियों) को नहीं जाना, जिन का यह दावा है कि वह जो कुछ आप पर अवतरित हुआ है तथा जो कुछ आप से पूर्व अवतरित हुआ है, उस पर ईमान रखते हैं, तथा चाहते हैं कि अपने विवाद का निर्णय विद्रोही के पास ले जायें, जब कि उन्हें आदेश दिया गया है कि उसे अस्वीकार कर दें? और शैतान चाहता है कि उन्हें सत्धर्म से बहुत दूर[2] कर दे।

६१. तथा जब उन से कहा जाता है कि उस की ओर आओ जो (कुर्आन) अल्लाह ने उतारा है तथा रसूल की (सुन्नत की) ओर तो आप मुनफिकों (द्विधावादियों) को देखते हैं कि वह आप से मुंह फेर रहे है।

६२. फिर यदि उन के अपने ही कर्तूतों के कारण उन पर कोई आपदा आ पड़े, तो फिर आप के पास आकर शपथ लेते हैं कि हम ने[3] तो केवल भलाई तथा (दोनों पक्ष में) मेल कराना चाहा था।

६३. यही वह लोग है जिन के दिलों के भीतर की बातें अल्लाह जानता है। अतः आप उन को क्षमा कर दें, तथा उन्हें उपदेश दें, और उन से ऐसी प्रभावी बात बोलें जो उन के दिलों में उतर जाये।

६४. और हम ने जो भी रसूल भेजा वह इस लिसे ताकि अल्लाह की अनुमति से उस की आज्ञा का पालन किया जाये। और जब उन लोगों ने अपने ऊपर अत्याचार किया तो यदि वह आप के पास आते, फिर अल्लाह से क्षमा याचना करते तो अल्लाह से क्षमा याचना करते, तथा उन के लिये रसूल क्षमा की प्रार्थना करते तो अल्लाह को अति क्षमाशील दयावान् पाते।

---

[1] अर्थात किसी के विचार और राय को मानने से। क्यों कि कुर्आन और नबी सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत ही धर्मदेशों की शिलाधार है।

[2] आयत का भावार्थ यह है कि जो धर्म विधान कुरआन तथा सुन्नत के सिवा किसी अन्य विधान से अपना निर्णय लेना चाहते हों उनका ईमान का दावा मिथ्या है।

[3] आयत का भावार्थ यह है कि मुनाफिक ईमान का दावा तो करते थे, परन्तु अपने विवाद चुकाने के लिये इस्लाम के विरोधियों के पास जाते, फिर जब कभी उन की दो रंगी पकड़ी जाती तो नबी सल्लाल्लाहु व सल्लम के पास आकर मिथ्या शपथ लेते । और यह कहते कि हम केवल विवाद सुलझाने के लिये उन के पास चले गये थे। (इब्ने कसीर)

६५. तो आप के पालनहार की शपथ! वह कभी ईमान वाले नहीं हो सकते, जब तक अपने आपस के विवाद में आप को निर्णायक न बनायें[1], फिर आप जो निर्णय कर दें उस से अपने दिलों में तनिक भी संकीर्णता (तंगी) का अनुभव न करें, और पूर्णतः स्वीकार कर लें।

६६. और यदि हम उन्हें[2] आदेश देते कि स्वयं को बध करो, तथा अपने घरों से निकल जाओ तो इन में से थोड़े के सिवा कोई ऐसा नहीं करता। और यदि उन्हें जो निर्देश दिया जाता है वह उस का पालन करते तो उन के लिये अच्छा और अधिक स्थिरता का कारण होता।

६७. और हम उन को अपने पास से बहुत बड़ा प्रतिफल देते ।

६८. तथा हम उन्हें सीधी डगर दर्शा देते ।

६९. तथा जो अल्लाह और रसूल की आज्ञा का अनुपालन करेंगे तो वही (स्वर्ग में) उन के साथ होंगे जिन पर अल्लाह ने पुरस्कार किया है, अर्थात नबियों तथा सत्यवादियों, शहीदों और सदाचारियों के साथ। और वह क्या ही अच्छे साथी हैं?

७०. यह प्रदान अल्लाह की ओर से है, और अल्लाह का ज्ञान बहुत[3] है।

७१. हे ईमान वालो! अपने (शत्रु से) बचाव के साधन तय्यार रखो, फिर गिरोहों में अथवा एक साथ निकल पड़ों।

७२. और तुम में कोई ऐसा व्यक्ति[4] भी है जो तुम से अवश्य पीछे रह जायेगा, और यदि तुम पर (युद्ध में) कोई आपदा आ पड़े तो कहेगाः अल्लाह ने मुझ पर उपकार किया कि मैं उनके साथ उपस्थित न था।

७३. और यदि तुम पर अल्लाह की दया हो जाये, तो वह अवश्य यह कामना करेगा कि काश! मैं भी उन के साथ होता, तो बड़ी सफलता प्राप्त कर लेता। मानो उस के और तुम्हारे मध्य कोई मित्रता ही न थी।

---

[1] . यह आदेश आप सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन में था। तथा आप के निधन के पश्चात अब आप की सुन्नत से निर्णय लेना है।

[2] अर्थात जो दूसरों के निर्णय कराते है।

[3] अर्थात अपनी दया तथा प्रदान के योग्य को जानने के लिये।

[4] यहां युद्ध से संबंधित अब्दुल्लाह बिन उबय्य जैसे मुनफिकों (द्विधावादियों) की दशा का वर्णन किया जा रहा है।

७४. तो चाहिये कि अल्लाह की राह[१] में वह लोग युद्ध करें जो अखिरत (परलोक) के बदले संसारिक जीवन बेच चुके है। और जो अल्लाह की राह में युद्ध करेगा, तो वह मारा जाये अथवा विजयी हो जाये तो हम उसे बड़ा प्रतिफल प्रदान करेंगे।

७५. और तुम्हें क्या हो गया है कि अल्लाह की राह में युद्ध नहीं करते, जब कि कितने ही निर्बल पुरूष तथा स्त्रियाँ और बच्चे है, जो गुहार रहे है कि हे हमारे पालनहार! हमें इस नगर[२] से निकाल दे, जिस के निवासी अत्याचारी है। और हमारे लिये अपनी ओर से कोई रक्षक बना दे, और हमारे लिये अपनी ओर से कोई सहायक बना दे।

७६. जो लोग ईमान लाये वह अल्लाह की राह में युद्ध करते हैं। और जो काफिर है वह उपद्रव के लिये युद्ध करते है। तो शैतान के साथियों से युद्ध करो। निःसंदेह शैतान की चाल निर्बल होती है।

७७. (हे नबी!) क्या आप ने उन की नहीं देखी, जिस से कहा गया कि अपने हाथों को (युद्ध से) रोके रखो, तथा नमाज की स्थापना करो और जकात दो? और जब उन पर युद्ध करना लिख दिया गया तो उन में से एक गिरोह लोगों से ऐसे डर रहा है जैसे अल्लाह से डर रहा हो। या उस से भी अधिक। तथा वह कहते हैं कि हे हमारे पालनहार! हम को युद्ध करने का आदेश क्यों दे दिया, क्यों ने हमें थोड़े दिनों का और अवसर दिया? आप कह दें कि संसारिक सुख बहुत थोड़ा है, तथा परलोक उस के लिये अधिक अच्छा है जो अल्लाह[३] से डरा, और उन पर कण भर भी अत्याचार नहीं किया जायेगा।

७८. तुम जहाँ भी रहो, तुम्हें मौत आ पकड़ेगी, यद्यपि दृढ़ दुर्गों में क्यो न रहो। तथा उन को यदि कोई सुख पहुंचता है तो कहते है कि यह अल्लाह की ओर से है।

---

[१] अल्लाह के धर्म को ऊँचा करने, और उस की रक्षा के लिये। किसी स्वार्थ अथवा किसी देश और संसारिक धन धान्य की प्राप्ति के लिये नहीं।

[२] अर्थात मक्का नगर से। यहां इस तथ्य को उजागर कर दिया गया है कि कुर्आन ने युद्ध का आदेश इस लिये नहीं दिया है कि दूसरों पर अत्याचार किया जाये। बल्कि नृशंसितों तथा निर्बलों की सहायता के लिये दिया है। इसी लिये वह बार बार कहता है कि ''अल्लाह की राह में युद्ध करो'' अपने स्वार्थ और मनोकांक्षाओं के लिये नहीं। न्याय तथा सत्य की स्थापना और सुरक्षा के लिये युद्ध करो।

[३] अर्थात परलोक का सुख उस के लिये है जिस ने अल्लाह के आदेशों का पालन किया।

और यदि कोई आपदा आ पड़े तो कहते है कि यह आपके कारण है। (हे नबी!) उन से कह दो कि सब अल्लाह की ओर से है। इन लोगों को क्या हो गया कि कोई बात समझने के समीप भी नहीं[1] होते?

७९. (वास्तविक्ता तो यह है कि) तुम को जो सुख पहुंचता है वह अल्लाह की ओर से होता है। तथा जो हानि पहुंचती है वह स्वयं (तुम्हारे कुकर्मो के) कारण होती है। और हम ने आप को सब मानव का रसूल (संदेशवाहक) बना कर भेजा है। और (आपके रसूल होने के लिये) अल्लाह का साक्ष्य बहुत है।

८०. जिस ने रसूल की आज्ञा का अनुपालन किया (वास्तव में) उस ने अल्लाह की आज्ञा का पालन किया है। तथा जिस ने मुंह फेर लिया तो (हे नबी!) हम ने आप को उन का प्रहरी (रक्षक) बना कर नहीं भेजा है।

८१. तथा वह (आपके सामने कहते है कि हम आज्ञाकारी हैं, और जब आप के पास से जाते हैं तो इन में से कुछ लोग रात में आप की बात के विरुद्ध परामर्श करते है। और वह जो परामर्श कर रहे हैं उसे अल्लाह लिख रहा है। अतः आप उन पर ध्यान न दें। और अल्लाह पर भरोसा करें, तथा अल्लाह पर भरोसा काफी है।

८२. तो क्या वह कुर्आन (के अर्थो) पर सोच विचार नहीं करते? यदि वह अल्लाह के सिवा दूसरे की ओर से होता तो उस में बहुत सी प्रतिकूल (बे मेल) बातें पाते?[2]

८३. और जब उन के पास शान्ति या भय की कोई सूचना आती है तो उसे फैला देते हैं और यदि वह उसे अल्लाह के रसूल तथ अपने अधिकारियों की ओर फेर देते तो जो बात की तह तक पहुंचते हैं वे उस की वास्तविकता जान लेते। और यदि तुम अल्लाह की अनुकम्पा तथा दया न होती तो तुम में थोड़े के सिवा सब शैतान के पीछे लग[3] जाते।

---

[1] भावार्थ यह है कि जब मुसलमानों को कोई हानि हो जाती तो मुनाफिक (द्विधावादी) तथा यहूदी कहतेः यह सब नबी सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम के कारण हुआ। कुर्आन कहता है कि सब कुछ अल्लाह की ओर से होता है। अर्थात उस ने प्रत्येक दशा तथा परिणाम के लिए कुछ नियम बना दिये है। और जो कुछ भी होता है वह उन्हीं दशाओं का परिणाम होता है। अतः तुम्हारी यह बातें जो कह रहे हो, बड़ी अज्ञानता की बातें हैं।

[2] अर्थात जो व्यक्ति कुर्आन में विचार करेगा, उस पर यह तथ्य खुल जायेगा कि कुर्आन अल्लाह की वाणी है।

[3] इस आयत द्वारा यह निर्देश दिया जा रहा है कि जब भी साधारण शांति या भय की कोई सूचना मिले तो उसे अधिकारियों तथा शासकों तक पहुंचा दिया जाये।

८४. तो (हे नबी!) आप अल्लाह की राह में युद्ध करें। केवल आप पर यह भार डाला जा रहा है, तथा ईमान वालों को (इस की) प्रेरणा दें। संभव है कि अल्लाह काफिरों का बल (तोड़ दे)। और अल्लाह का बल और उस का दण्ड सब से कड़ा है।

८५. जो अच्छी अनुशंसा (सिफारिश) करेगा उसे उस का भाग (प्रतिफल) मिलेगा। तथा जो बुरी अनुशंसा (सिफारिश) करेगा तो उसे भी उस का भाग (कुफल)[1] मिलेगा। और अल्लाह प्रत्येक चीज का निरीक्षक है।

८६. और जब तुम से सलाम किया जाये, तो उस से अच्छा उत्तर दो, अथवा उसी को दुहरा दो। निःसंदेह अल्लाह प्रत्येक विषय का हिसाब लेने वाला है।

८७. अल्लाह के सिवा कोई बंदनीय (पूज्य) नहीं, वह अवश्य तुम्हें प्रलय के दिन एकत्र करेगा, इस में कोई संदेह नहीं। तथा बात कहने में अल्लाह से अधिक सच्चा कौन हो सकता है?

८८. तुम्हें क्या हुआ है कि मुनाफिकों (द्विधावादियों) के बारे में दो पक्ष[2] बन गये हो। जब कि अल्लाह ने उन के कुकर्मो के कारण उन्हें औंधा कर दिया है। क्या तुम उसे सुपथ दर्शा देना चाहते हो जिसे अल्लाह कुपथ कर दे तो तुम उस के लिये कोई राह नहीं पा सकते।

८९. (हे ईमान वालो!) वे तो यह कामना करते हैं कि उन्हीं के समान तुम भी काफिर हो जाओ, तथा उन के बराबर हो जाओ। अतः उन में से किसी को मित्र न बनाओ, जब तक अल्लाह की राह में हिज्रत न करें। और यदि वह इस से विमुख हों तो उन्हें जहाँ पाओ बध करो और उन में से किसी को मित्र न बनाओ, और न सहायक बनाओ।

---

[1] आयत का भावार्थ यह है कि अच्छाई तथा बुराई में किसी की सहायता करने का भी पुण्य और पाप मिलता है।

[2] मक्का वासियों में कुछ अपने स्वार्थ के लिये मौखिक मुसलमान हो गये थे, और जब युद्ध आरंभ हुआ तो उन के बारे में मुसलमानों में दो विचार हो गये। कुछ उन्हें अपना मित्र और कुछ उन्हें अपना शत्रु समझ रहे थे। अल्लाह ने यहां बता दिया कि वह लोग मुनाफिक (द्विधावादी) हैं। जब तक मक्का से हिजरत कर के मदीना में न आ जायें, और शत्रु ही के साथ रह जायें, तो उन्हें भी शत्रु समझा जायेगा। यह वह मुनाफिक नहीं है जिन की चर्चा पहले की गयी है। यह मक्का के विशेष मुनाफिक हैं, जिन से युद्ध की स्थिति में कोई मित्रता की जा सकती थी, और न ही उन से कोई संबंध रखा जा सकता था।

९०. परन्तु इन में से जो किसी ऐसी कौम से जा मिलें जिन के और तुम्हारे बीच संधि हो, अथवा ऐसे लोग हों जो तुम्हारे पास इस स्थिति में आयें कि उन के दिल इस से संकुचित हो रहे हों कि वह तुम से युद्ध करें, अथवा (तुम्हारे साथ) अपनी जाति से युद्ध करें। और यदि अल्लाह चाहता तो उन को तुम पर सामर्थ्य दे देता, फिर वह तुम से युद्ध करते, तो यदि वह तुम से बिलग रह गये और तुम से युद्ध नहीं किया, और तुम से संधि कर ली, तो उन के विरुद्ध अल्लाह ने तुम्हारे लिये कोई (युद्ध करने की) राह नहीं बनाई[1] है।

९१. तथ तुम को कुछ ऐसे दूसरे लोग भी मिलेंगे जो तुम्हारी ओर से भी शांत रहना चाहते हैं, और अपनी जाति की ओर से भी शांत रहना (चाहते है) फिर जब भी उपद्रव की ओर फेर दिये जायें, तो उस में औंधे हो कर गिर जाते हैं। तो यदि वह तुम से बिलग न रहें और तुम से संधि न करें, तथा अपना हाथ न रोकें तो उन्हें पकड़ों और जहाँ पाओ बध करो। हम ने उन के विरूद्ध तुम्हारे लिये खुला तर्क बना दिया है।

९२. किसी ईमान वाले के लिये वैध नहीं है कि वह किसी ईमान वाले की हत्या कर दे परन्तु चूक से। तथा जो किसी ईमान वाले की चूक से हत्या कर दे तो उसे एक ईमान वाला दास मुक्त करना है, और उस के घर वालों को दियत (अर्थदण्ड) दे, परन्तु यह कि वह दान (क्षमा) कर दें। फिर यदि वह (निहत) उस जाति में से हो जो तुम्हारी शत्रु है, और वह (निहत) ईमान वाला है तो एक ईमान वाला दास मुक्त करना है। और यदि ऐसी कौम से हो जिस के और तुम्हारे बीच संधि है तो उस के घर वालों को अर्थदण्ड देना, तथा एक ईमान वाला दास (भी) मुक्त करना है, और जो दास न पाये तो उसे निरंतर दो महीने रोजा रखना है। अल्लाह की ओर से (उस के पाप की) यही क्षमा है। और अल्लाह अति ज्ञानी तत्वज्ञ है।

९३. और जो किसी ईमान वाले की हत्या जान बूझ कर कर दे तो उस का कुफल (बदला) नरक है। जिस में वह सदावासी होगा, और उस पर अल्लाह का प्रकोप तथा धिक्कार है। और उस ने उस के लिये घोर यातना तैयार कर रखी है।

---

[1] अर्थात इस्लाम में युद्ध का आदेश उनके विरुद्ध दिया गया है जो इस्लाम के विरुद्ध युद्ध कर रहे हों। अथवा उनसे युद्ध करने का कोई कारण नहीं क्योंकि मूल चीज़ शांती और संधि है, युद्ध और हत्या नहीं।

९४. हे ईमान वालो! जब तुम अल्लाह की राह में (जिहाद के लिये) निकलो तो भली भाँति परख[1] लो, और कोई तुम को सलाम[2] करे तो यह न कहो कि तुम ईमान वाले नहीं हो। क्या तुम सांसारिक जीवन का उपकरण चाहते हो? और अल्लाह के पास बहुत से परिहार (शत्रुधन) है। तुम भी पहले ऐसे[3] ही थे, तो अल्लाह ने तुम पर उपकार किया। अतः भली भाँति परख लिया करो, निःसंदेह अल्लाह उस से सूचित है जो तुम कर रहे हो।

९५. ईमान वालों में जो अकारण अपने घरों में रह जाते हैं, और जो अल्लाह की राह में अपने धनों और प्राणों के द्वारा जिहाद करते हैं, दोनों बराबर नहीं हो सकते। अल्लाह ने उन को जो करते हैं, उन पर जो घरो में रह जाते हैं, पद में प्रधानता दी है। और प्रत्येक को अल्लाह ने भलाई का वचन दिया है। और अल्लाह ने जिहाद करने वालों को उन पर जो घरों में बैठे रह जाने वाले हैं, बड़े प्रतिफल में भी प्रधानता दी है।

९६. अल्लाह की ओर से कई (उच्च) श्रेणियाँ है। तथा क्षमा और दया है। और अल्लाह अति क्षामाशील दयावान् है।

९७. निःसंदेह वह लोग जिन के प्राण फरिश्ते निकालते हैं, इस दशा में कि वह अपने ऊपर (कुफ्र के देश में रह कर) अत्याचार करने वाले हों, तो उन से कहते हैंः तुम किस चीज में थे? वह कहते है कि हम धरती में विवश थे। तब फरिश्ते कहते हैंः क्या अल्लाह की धरती विस्तृत नहीं थी कि उस में हिज्रत कर[4] जाते तो इन्ही का आवास नरक है। और वह क्या ही बुरा स्थान है!

---

[1] अर्थात यह कि वह शत्रु हैं या मित्र है।

[2] सलाम करना मुसलमान होने का एक लक्षण है।

[3] अर्थात इस्लाम के शब्द के सिवा तुम्हारे पास इस्लाम का कोई चिन्ह नहीं था। इब्ने अब्बास रजियाल्लाह अन्हु कहते हैं कि रात के समय एक व्यक्ति यात्रा कर रहा था। जब उस के कुछ मुसलमान मिले तो उस ने अस्सलामु अलैकुम कहा। फिर भी एक मुसलमान ने उसे झूठा समझ कर मार दिया। इसी पर यह आयत उतरी। जब नबी सल्लल्लहु अलैहि व सल्लम को इस का पता चला तो आप बहुत नाराज हुये। (इब्ने कसीर)

[4] जब सत्य के विरोधियों के अत्याचार से विवश हो कर नबी सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीने हिज्रत (प्रस्थान) कर गये, तो अरब में दो प्रकार के देश हो गये। मदीना दारूल हिज्रत (प्रवास गृह) था। जिस में मुसलमान हिज्रत कर के एकत्र हो गये। तथा दारूल हर्ब। अर्थात वह क्षेत्र जो शत्रुओं के नियंत्रण में था। और जिस का केन्द्र मक्का था। यहां जो मुसलमान थे वह अपनी आस्था तथा धार्मिक कर्म से वंचित थे। उन्हें शत्रु का अत्याचार सहना पड़ता था। इस लिये उन्हें यह आदेश दिया गया था कि मदीने हिज्रत कर जायें। और यदि वह शक्ति रखते हुये हिज्रत नहीं करेंगे तो अपने इस

९८. परन्तु जो पुरुष और स्त्रियाँ तथा बच्चे ऐसे विवश हों कि कोई उपाय न रख सकें, और न (हिज्रत की) कोई राह पाते हों।

९९. तो आशा है कि अल्लाह उन को क्षमा का देगा। निःसंदेह अल्लाह अति ज्ञान्त क्षमाशील है।

१००. तथा जो कोई अल्लाह की राह में हिज्रत करेगा तो वह धरती में बहुत से निवास स्थान तथा विस्तार पायेगा। और जो अपने घर से अल्लाह और उस के रसूल की ओर निकल गया, फिर उसे (राह में ही) मौत ने पकड़ लिया तो उस का प्रतिफल अल्लाह के पास निश्चित हो गया और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान है।

१०१. और जब तुम धरती में यात्रा करो तो नमाज[१] कस्र (संक्षिप्त) करने में तुम पर कोई दोष नहीं, यदि तुम्हें डर हों कि काफिर तुम्हें सतायेंगे। वास्तव में काफिर तुम्हारे खुले शत्रु है।

१०२. तथा (हे नबी!) जब आप (रणक्षेत्र में) उपस्थित हों, और उन के लिये नमाज की स्थापना करें तो उन का एक गिरोह आप के साथ खड़ा हो जाये, और अपने अस्त्र शस्त्र लिये रहे! और जब वह सज्दा कर लें, तो तुम्हारे पीछे हो जायें, तथा दूसरा गिरोह आये जिस ने नमाज नहीं पढ़ी है, और आप के साथ नमाज पढ़ें। और अपने अस्त्र शस्त्र लिये रहें। काफिर चाहते है कि तुम अपने शस्त्रों से निश्वेत हो जाओ तो तुम पर कोई दोष नहीं, यदि वर्षा के कारण तुम्हें दुःख हो अथवा तुम रोगी रहो कि अपने शस्त्र[२] उतार दो। तथा अपने बचाव का ध्यान रखो। निःसंदेह अल्लाह ने काफिरों के लिये अपमान कारी यातना तय्यार कर रखी है।

आलस्य के लिये उत्तर दायी होंगे। इस के पश्चात आगामी आयत में उन की चर्चा की जा रही है जो हिज्रत करने से विवश थे। मक्का से मदीना हिज्रत करने का यह आदेश मक्का की विजय सन् ८ हिज्री के पश्चात निरस्त कर दिया गया। इब्ने अब्बास रजियाल्लाहु अन्हु कहते है कि नबी सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में कुछ मुसलमान काफिरों की संख्या बढ़ाने के लिये उन के साथ हो जाते थे। और तीर या तलवार लगने से मारे जाते थे, उन्ही के बारे में यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी, ४५९६)

[१] कस्र का आर्थ चार रकात वाली नमाज़ों संक्षिप्त कर के दो रकात पढ़ना। यह अनुमती प्रत्येक यात्रा के लिये है फिर चाहे शत्रु का भय हो या न हो।

[2] इसका नाम (सलातुल खौफ) अर्थात भय के समय की नमाज़ है।

१०३. फिर जब तुम नमाज पूरी कर लो , तो खड़े, बैठे, लेटे प्रत्येक स्थिति में अल्लाह का स्मरण करो। और जब तुम शान्त हो जाओ तो पूरी नमाज पढ़ो। निःसंदेह नमाज ईमान वालों पर निर्धारित समय पर अनिवार्य की गई है।

१०४. तथा तुम (शत्रु) जाति का पीछा करने में थिथिल न बनो, यदि तुम्हें दुःख पहुंचा है, तो तुम्हारे समान उन्हें भी दुःख पहुंचा है। तथा तुम अल्लाह से जो आशा[१] रखते हो, वह आशा वह नहीं रखते। तथा अल्लाह अति ज्ञानी तत्वज्ञ है।

१०५. (हे नबी!) हम ने आप की ओर इस पुस्तक (कुर्आन) को सत्य के साथ उतारा है, ताकि आप लोगों के बीच उस के अनुसार निर्णय करें, जो अल्लाह ने आप को बताया है, और विश्वासघातियों के पक्षधर न[२] बनें।

१०६. तथा अल्लाह से क्षमा याचना करते रहें, निःसंदेह अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

१०७. और उन का पक्ष न लें, जो स्वयं अपने साथ विश्वासघात करते हों, निःसंदेह अल्लाह विश्वासघाती, पापी से प्रेम नहीं करता।[३]

१०८. वह (अपने करतूत) लोगों से छुपा सकते है। तथा अल्लाह से नहीं छुपा सकते। और वह उन के साथ होता है, जब वह रात में उस बात का परामर्श करते हैं, जिस से वह प्रसन्न नहीं[४] होता। तथा अल्लाह उसे घेरे हुये है जो वह कर रहे है।

---

[१] अर्थात प्रतिफल तथा सहायता और समर्थन की।

[२] यहां से अर्थात आयत १०५ से ११३ तक, के विषय में भाष्यकारों ने लिखा है कि एक व्यक्ति ने एक अन्सारी की कवच (जिरह) चुरा ली। और जब देखा कि उस का भेद खुल जायेगा तो उस का आरोप एक यहूदी पर लगा दिया। और उस के कबीले के लोग भी उस के पक्षधर हो गये। और नबी सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आये, और कहा कि आप इसे निर्दोष घोषित कर दें। और उन की बातों के कारण समीप था कि आप उसे निर्दोष घोषित कर के यहूदी को अपराधी बना देते कि आप को सावधान करने के लिये यह आयतें उतरी (इब्ने जरीर) इन आयतों का साधारण भावार्थ यह है कि मुसलमान न्यायधीश को चाहिये कि किसी पक्ष का इस लिये पक्षपात न करे कि वह मुसलमान है। और दूसरा मुसलमान नहीं है, बल्कि उसे हर हाल में निष्पक्ष हो कर न्याय करना चाहिए।

[३] आयत का भावार्थ यह है कि न्यायधीश को ऐसी बात नहीं करनी चाहिये, जिस में किसी का पक्षपात हो।

[४] आयत का भावार्थ यह है कि मुसलमानों को अपना सहधर्मी अथवा अपनी जाति या परिवार का होने के कारण किसी अपराधी का पक्षमात नहीं करना चाहिये। क्योंकि संसार न जाने, परन्तु अल्लाह तो जानता है कि कौन अपराधी है, कौन नहीं।

१०९. सुनो! तुम्हीं वह हो कि संसारिक जीवन में उन की ओर से झगड़ लिये। तो प्रलय के दिन उन की ओर से कौन अल्लाह से झगड़ेगा, और कौन उन का अभिभाषक (प्रतिनिधि) होगा?

११०. जो व्यक्ति कोई कुकर्म करेगा, अथवा अपने ऊपर अत्याचार करेगा, और फिर अल्लाह से क्षमा याचना करेगा, तो वह उसे अति क्षमी दयावान् पाएगा।

१११. और जो व्यकित कोई पाप करता है तो अपने ऊपर करता[१] है। तथा अल्लाह अति ज्ञानी तत्वज्ञ है।

११२. और जो व्यक्ति कोई चूक अथवा पाप स्वयं करे, और फिर किसी निर्दोष पर उस का आरोप लगा दे तो उस ने मिथ्या दोषारोपण तथा खुले पाप का[२] बोझ अपने ऊपर लाद लिया।

११३. और (हे नबी!) यदि आप पर अल्लाह की दया तथा कृपा ने होती तो उन के एक गिरोह ने संकल्प ले लिया था कि आप को कुपथ कर दें, और वह स्वयं को ही कुपथ कर[३] रहे थे। तथा वह आप को कोई हानि नहीं पहुंचा सकते। क्यों कि अल्लाह ने आप पर पुस्तक (कुर्आन) तथा हिक्मत (सुन्नत) उतारी है। और आप को उस का ज्ञान दे दिया है जिसे आप नहीं जानते थे। तथा यह आप पर अल्लाह की बड़ी दया है।

११४. उन के अधिकांश सरगोशी में कोई भलाई नहीं होती, परन्तु जो दान अथवा सदाचार या लोगों में सुधार कराने का आदेश दे। और जो कोई ऐसे कर्म अल्लाह की प्रसन्नता के लिये करेगा तो हम उसे बहुत भारी प्रतिफल प्रदान करेंगे।

११५. तथा जो व्यक्ति अपने ऊपर मार्गदर्शन उजागर हो जाने के पश्चात रसूल का विरोध करे, और ईमान वालों[४] की राह के सिवा (दूसरी राह) का अनुसरण करे

---

[१] भावार्थ यह है कि जो अपराध करता है उस के अपराध का दुष्परिणाम उसी के ऊपर है। अतः तुम यह न सोचो कि अपराधी के अपने सहधर्मी अथवा संबंधी होने के कारण, उस का अपराध सिद्ध हो गया, तो हम पर भी धब्बा लग जायेगा।

[२] अर्थात स्वयं पाप कर के दूसरे पर आरोप लगाना दुहरा पाप है।

[३] कि आप निर्दोष को अपराधी समझ लें।

[४] ईमान वालों से अभिप्राय नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा (साथी) हैं।

तो हम उसे वहीं फेर[1] देंगे जिधर फिरा है। और उसे नरक में झोंक देंगे तथा वह बुरा निवास स्थान है।

११६. नि:संदेह अल्लाह इसे क्षमा[2] नहीं करेगा कि उस का साझी बनाया जाये, और इस के सिवा जिसे चाहेगा क्षमा कर देगा। तथा जो अल्लाह का साझी बनाता है वह कुपथ में बहुत दूर चला गया।

११७. वह (मिश्रणवादी) अल्लाह के सिवा देवियों को ही पुकारते है। और धिक्कारे हुये शैतान को पुकारते हैं।

११८. अल्लाह ने जिसे धिक्कार दिया है। और उस (शैतान) ने कहा था कि मैं तेरे भक्तों से एा निश्चित भाग ले कर रहूँगा।

११९. और उन्हें अवश्य बहकाऊँगा, तथा कामनायें दिलाऊँगा, और आदेश दूँगा कि वह पशुओं के कान चीर दें। तथा उन्हें आदेश दूँगा, तो व अवश्य अल्लाह की संरचना में परिवर्तन[3] कर देंगे । तथा जो शैतान को अल्लाह के सिवा सहायक बनायेगा तो वह खुली क्षति में पड़ गया।

१२०. वह उन को वचन देता, तथा कामनाओं में उलझाता है। और उन को जो वचन देता है वह धोखे के सिवा कुछ नहीं है।

१२१. उन्हीं का निवास स्थान नरक है। और वह उस से भागने की कोई राह नहीं पायेंगे।

१२२. तथा जो लोग ईमान लये, और सत्कर्म किये, हम उन को ऐसे स्वर्गों में प्रवेश देंगे जिन में नहरें प्रवाहित होंगी। वे उस में सदावासी होंगे। यह अल्लाह का सत्य वचन है। और अल्लाह से अधिक सत्य कथन किस का हो सकता है?

---

[1] विद्वानों ने लिखा है कि यह आयत भी उसी मुनाफ़िक़ से संबंधित है। क्योंकि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस के विरुद्ध दण्ड का निर्णय कर दिया तो वह भाग कर मक्का के मिश्रणवादियों से मिल गया। (तफ़्सीरे कुर्तुबी) । फिर भी इस आयत का आदेश साधारण है।

[2] अर्थात शिर्क (मिश्रणवादी) अक्षम्य पाप है।

[3] इस के बहुन से अर्थ हो सकते है, जैसे गोदना, गुद्वाना, स्त्री का पुरुष का आचरण और स्वभाव बनाना, इसी प्रकार पुरुष का स्त्री का आचरण, तथा रूप धारण करना आदि।

१२३. (यह प्रतिफल) तुम्हारी कामनाओं तथा अहले किताब की कामनाओं पर निर्भर नहीं। जो कोई भी दुष्कर्म करेगा तो वह उस का कुफल पायेगा, तथा अल्लाह के सिवा अपना कोई रक्षक और सहायक नहीं पायेगा।

१२४. तथा जो सत्कर्म करेगा, वह नर हो अथवा नारी, और ईमान भी[1] रखता होगा, तो वही लोग स्वर्ग में प्रवेश पायेंगे, और तनिक भी अत्याचार नहीं किये जायेंगे।

१२५. तथा उस व्यक्ति से अच्छा किस का धर्म हो सकता है जिस ने स्वयं को अल्लाह के लिये झुका दिया, और वह एकेश्वरवादी भी हो। और एकेश्वरवादी इब्राहीम के धर्म का अनुसरण कर रहा हो? और अल्लाह ने इब्राहीम को अपना विशुद्ध मित्र बना लिया।

१२६. तथा अल्लाह ही का है, जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, और अल्लाह प्रत्येक चीज़ को अपने नियंत्रण में लिये हुये है।

१२७. (हे नबी!) वह स्त्रियों के बारे में आप से धर्मादेश पूछ रहे हैं। आप कह दें कि अल्लाह उन के बारे में तुम्हें आदेश देता है, और वह आदेश भी हैं जो इस से पूर्व पुस्तक (कुरआन) में तुम्हें उन अनाथ स्त्रियों के बारे में सुनाये गये हैं, जिन के निर्धारित अधिकारी तुम नहीं देते, और उन से विवाह करने की रुचि रखते हो, तथा उन बच्चों के बारे में भी जो निर्बल है। तथा (यह भी आदेश देता है कि) अनाथों के लिये न्याय पर स्थित रहो।[2] तथा तुम जो भी भलाई करते हो अल्लाह उसे भली भाँति जानता है।

१२८. और यदि किसी स्त्री को अपने पति से दुर्व्यवहार अथवा विमुख होने की शंका हो, तो उन दोनों पर कोई दोष नहीं कि आपस में कोई संधि कर लें, और संधि

---

[1] अर्थात सत्कर्म का प्रतिफल सत्य आस्था और ईमान पर आधारित है कि अल्लाह तथा उस के सब नबियों पर ईमान लाया जाये। तथा हदीसों से विद्धित होता है कि एक बार मुसलमानों और अहले कितब के बीच विवाद हो गया। यहूदियों ने कहा कि हमारा धर्म सब से अच्छा है। मुक्ति केवल हमारे ही धर्म में है। मुसलमानों ने कहा: हमारा धर्म सब से अच्छा तथा अंतिम धर्म है। उसी पर यह आयत उतरी । (इब्ने जरीर)

[2] इस्लाम से पहले यदि अनाथ स्त्री सुन्दर होती तो उस का संरक्षक यदि उस का विवाह उस से हो सकता हो, तो उस से विवाह कर लेता परन्तु उसे मह्र (विवाह उपहार) नहीं देता। और यदि सुन्दर न हो तो दूसरे से उसे विवाह नहीं करने देता था। ताकि उस का धन उसी के पास रह जाये। इसी प्रकार अनाथ बच्चों के साथ भी अत्याचार और अन्याय किया जाता था. जिन से रोकने के लिये यह आयत उतरी । (इब्ने कसीर)

कर लेना ही अच्छा[१] है। और लोभ तो सभी में होता है। और यदि तुम एक दूसरे के साथ उपकार करो और (अल्लाह से) डरते रहो तो नि:संदेह तुम जो कुछ कर रहे हो अल्लाह उस से सूचित है।

१२९. ओर यदि तुम अपनी पत्नियों के बीच न्याय करना चाहों, तो भी ऐसा कदापि नहीं कर[२] सकोगे। अत: एक ही की ओर पूर्णत: झुक[३] न जाओं, और (शेष को) बीच में लटकी हुई न छोड़ दो। और यदि (अपने व्यवहार में) सुधार[४] रखो और अल्लाह से डरते रहो तो नि:संदेह अल्लाह अति क्षमाशिल दयावान् है।

१३०. और यदि दोनों अलग हो जायें तो अल्लाह प्रत्येक को अपनी दया से (दुसरे से) निच्श्रिंत[५] कर देगा । और अल्लाह बड़ा उदार तत्वज्ञ है।

१३१. तथा अल्लाह ही का है, जो आकाशों तथा धरती में है। और हम ने तुम से पूर्व अहले किताब को तथा तुम को आदेश दिया है कि अल्लाह से डरते रहो। और यदि तुम कुफ्र (अवैज्ञा) करोगे तो निस्संदेह जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, वह अल्लाह ही का है। तथा अल्लाह निस्पृह[६] प्रशंसित है।

१३२. तथा अल्लाह ही का है जो आकाशों तथा धरती में है। और अल्लाह काम बनाने के लिय बस है।

१३३. और वह चाहे तो, हे लोगो ! तुम्हें ले जाये[७] और तुम्हारे स्थान पर दुसरों को ला दे । तथा अल्लाह ऐस कर सकता है।

१३४. जो संसारिक प्रतिकार (बदला) चाहता हो तो अल्लाह के पास संसार तथा परलोक दोनों का प्रतिकार (बदला) है। तथा अल्लाह सब की बात सुनता और सब के कर्म देख रहा है।

---

[१] अर्थ यह है कि स्त्री, पुरुष की इच्छा और रुचि पर ध्यान दे । तो यह संधि की रीति अलगाव से अच्छी है।

[२] क्यों कि यह स्वभाविक है कि मन का आकर्षण किसी एक की और होगा।

[३] अर्थात जिस में उसके पति की रुचि न हो, और न व्यवहारिक रूप से बिना पति के है।

[४] अर्थात सब के साथ व्यवहार तथा सहवास संबंध में बराबरी करो ।

[५] अर्थात यदि निभाव न हो सके तो विवाह बंधन में रहना आवश्यक नहीं। दोनों अलग हों जायें, अल्लाह दोनों के लिये पति तथा पत्नी की व्यवस्था बना देगा।

[६] अर्थात उस की अवैज्ञा से तुम्हार ही बिगड़ेगा।

[७] अर्थात तुम्हारी अवैज्ञा के कारण तुम्हें ध्वस्त कर दे। और दूसरे आज्ञाकारियों को पैदा कर दे।

१३५. हे ईमान वालो! न्याय के साथ खड़े रह कर अल्लाह के लिये साक्षी (गवाही) तुम्हारे अपने अथवा माता पिता और समीपवर्तियों के विरुद्ध हो, यदि कोई धनी अथवा निर्धन हो तो अल्लाह तुम से अधिक उन दोनों का हितैषी है। अत: अपनी मनोकांक्षा के लिये न्याय से न फिरो। और यदि तुम बात घुमा फिरा कर करोगे, अथवा साक्ष्य देने से कतराओगे, तो नि:संदेह अल्लाह उस से सूचित है जो तुम करते हो।

१३६. हे ईमानवालो! अल्लाह तथा उस के रसूल, और उस पुस्तक (कुरआन) पर जो उस ने अपने रसूल पर उतारी है, तथा उन पुस्तकों पर जो इस से पहले उतारी हैं, इमान लाओ। और जो अल्लाह तथा उस के फरिशतों, उस की पुस्तकों और अन्त दिवस (प्रलय) को अस्वीकार करेगा, तो वह कुपथ में बहुत दूर जा पड़ा।

१३७. नि:संदेह जो ईमान लाये, फिर काफिर हो गये, फिर ईमान लाये, फिर काफिर हो गये, फिर कुफ्र में बढते ही चले गये तो अल्लाह उन्हें कदापि क्षमा नहीं करेगा और न उन्हें सीधी डगर दिखायेगा।

१३८. (हे नबी!) आप मुनाफिकों (द्विधावादियों) को शुभ सूचना सुना दें कि उन्हीं के लिये दु:दायी यातना है।

१३९. जो ईमान वालों को छोड़ कर, काफिरों को अपना सहायक मित्र बनाते है, क्या वह उन के पास मान सम्मान चाहते है? तो नि:संदेह सब मान सम्मान अल्लाह ही के लिये[1] है।

१४०. और उस (अल्लाह) ने तुम्हारे लिय अपनी पुस्तक (कुरआन) में यह आदेश उतार[2] दिया है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की आयतों को अस्वीकार किया जा रहा है, तथा उन का उपहास किया जा रहा है, तो उन के साथ न बेठो, यहाँ तक कि वह दूसरी बात में लग जायें। नि:संदेह तुम उस समय उन्हीं के समान हो जाओगे। निश्चय अल्लाह मुनाफिकों (द्विधावादियों) तथा काफिरो सब को नरक में एकत्र करने वाला है।

---

[1] अर्थात अल्लाह के अधिकार में है, काफिरों के नहीं।

[2] अर्थात सूरह अन्आम आयत नमब्र ६८ में।

१४१. जो तुम्हारी प्रतीक्षा में रहा करते हैं, यदि तुम्हें अल्लाह की सहायता से विजय प्राप्त हो, तो कहते है: क्या हम तुम्हारे साथ न थे? और यदि उन (काफिरों) का पल्ला भारी रहे, तो कहते हैं कि क्या हम तुम पर छा नहीं गये थे, और तुम्हें ईमान वालों से बचा रह थे? तो अल्लाह ही प्रलय के दिन तुम्हार बीच निर्णय करेगा। और अल्लाह काफिरों के लिये ईमान वालों पर कदापि कोई राह नहीं बनायेगा।[1]

१४२. वास्तव में मुनाफिक (द्विधावादी) अल्लाह को धोखा दे रहे हैं, जब कि: वही उन्हें धोखे में डाल रहा[2] है, और जब वह नमाज़ के लिये खड़े होते हैं, तो आलसी होकर खड़े होते हैं, वह लोगों को दिखाते हैं, और अल्लाह का स्मरण थोड़ा ही करते है।

१४३. वह इस के बीच द्विधा में पड़े हुये है, न इधर न उधर । तथा जिसे अल्लाह कुपथ कर दे, तथा आप उस के लिये कोई राह नहीं पा सकेंगे।

१४४. हे ईमान वालों! ईमान वालों को छोड़ कर काफिरों को सहायक मित्र न बनाओ। क्या तुम अपने विरुद्ध अल्लाह के लिये खुला तर्क बनाना चाहते हो?

१४५. निश्य मुनाफिक (द्विधावादी) नरक की सब से नीची श्रेणी में होंगे। और आप उन का कोई सहायक नहीं पायेंगे।

१४६.परन्तु जिन्हों ने क्षमा याचना कर ली, तथा अपना सुधार कर लिया, और अल्लाह को सुदृढ़ पकड़ लिया, तथा अपने धर्म को विशुद्ध कर लिया, तो वह लोग ईमान वालों के साथ होंगे. और अल्लाह ईमान वालों को बहुत बड़ा प्रतिफल प्रदान करेगा।

---

[1] अर्थात द्विधावादी काफिरों की कितनी ही सहायता करें, उन की ईमान वालों पर स्थायी विजय नहीं होगी। यहाँ से द्विधावादियों के आचरण और स्वाभाव की चर्चा की जा रही हैं।

[2] अर्थात उन्हें अवसर दे रहा है, जिसे वह अपनी सफलता समझते है। आयत १३९ स यहाँ तक मुनाफिकों के कर्म और आचरण से संबंधित जो बातें बताई गई है वह चार है:

१–वह मुसलमानों की सफलता पर विश्वास नही रखते।

२–मुसलमानों को सफलता मिले तो उनके साथ हो जाते हैं, और काफिरों को मिले तो उन के साथ।

३–नमाज़ मन से नहीं बल्कि केवल दिखाने के लिये पढते है।

४–वह ईमान और कुफ्र के बीच द्विधा में रहते है।

१४७. अल्लाह को क्या पड़ी है कि तुम्हें यातना दे, यदि तुम कृतज्ञ रहो, तथा ईमान रखो । और अल्लाह[१] बड़ा गुणग्राही अति ज्ञानी है।

१४८, अल्लाह को अपशब्द (बुरी बात) की चर्चा नहीं भाती, परन्तु जिस पर अत्याचार किया गया[२] हो। और अल्लाह सब सुनता और जानता है।

१४९. यदि तुम कोई भी बात खुल कर करो अथवा उसे गुप्त करो या किसी बुराई को क्षमा कर दो, तो निःसंदेह अल्लाह अति क्षमी सर्व शक्तिशाली है।

१५०. जो लोग अल्लाह और उस के रसूलों के साथ कुफ़्र (अविश्वास) करते है, और चाहते हैं कि अल्लाह तथा उस के रसूलों के बीच अन्तर करें, तथा कहते हैं कि हम कुछ पर ईमान रखते है, तथा कुछ के साथ कुफ़्र करते है, और इस के बीच राह[३] बनाना चाहते है।

१५१. वही शुद्ध काफिर हैं, और हम ने काफिरों के लिये अपमानकारी यातना तय्यार कर रखी है।

१५२. तथा जो लोग अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाये, और उन में से किसी के बीच अंतर नहीं किया, तो उन्हीं को हम उन का प्रतिफल प्रदान करेंगे, तथा अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

१५३. हे नबी! आप से अहले किताब माँग करते हैं कि आप उन पर आकाश से कोई पुस्तक उतार दें, तो इन्होंने मुसा से इस से भी बड़ी माँग की थी। उन्हों ने कहा कि हमें अल्लाह को प्रत्यक्ष[४] दिखा दो, तो इन के अत्याचारों के कारण इन्हें बिजली ने धर लिया, फिर इन्होंने खुली निशानियाँ आने के पश्चात् बछड़े को पूज्य बना लिया, फिर हम ने इसे भी क्षमा कर दिया, और हम ने मूसा को खुला प्रभुत्व प्रदान किया।

---

[१] इस आयत में यह संकेत है कि अल्लाह, कुफल और सुफल मानव कर्म के परिणाम स्वरूप देता है। जो उसके निर्धारित किये हुये नियम का परिणाम होता है। जिस प्रकार संसार की प्रत्येक चीज़ का एक प्रभाव होता है, ऐसे ही मानव के प्रत्येक कर्म का भी एक प्रभाव होता है।

[२] आयत में कहा गया है कि किसी व्यक्ति में कोई बुराई हो तो उस की चर्चा न करते फिरो। परन्तु उत्पीड़ित व्यक्ति अत्याचारी के अत्याचार की चर्चा कर सकता है।

[३] नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस है कि सब नबी भाई हैं उन के बाप एक और मायें अलग-अलग हैं। सब का धर्म एक है, और हमारे बीच कोई नबी नहीं है। (सहीह बुख़ारी – ३४४३)

[४] अर्थात आँखों से दिखा दो।

१५४. और हम ने (उन से वचन लेने के लिये) उन के ऊपर तूर (पर्वत) उठा दिया, तथा हम ने उन से कहा: द्वार में सज्दा करते हुये प्रवेश करो, तथा हम ने उन से कहा कि शनिवार[1] के विषय में अति न करो। और हम ने उन से दृढ़ वचन लिया।

१५५. तो उन के अपना वचन भंग करने, तथा उन के अल्लाह की आयतों नबियों को अवैध बध करने, तथा हमारे दिल बंध हैं। (ऐसी बात नहीं हैं) बल्कि अल्लाह ने उन के दिलों पर मुहर लगा दी है। अत: इन में से थोड़े ही ईमान लायेंगे।

१५६. तथा उन के कुफ्र और मर्यम पर घोर आरोप लगाने के कारण।

१५७. तथा उन के (गर्व से) कहने के कारण कि हम ने अल्लाह के रसूल, मर्यम के पुत्र: ईसा मसीह को बध कर दिया, जब कि (वास्तव में) उसे बध नहीं किया। और न सलीब (फाँसी) दी, परन्तु उन के लिये (इसे) संदिग्ध कर दिया गया। और नि:संदेह जिन लोगों ने इस में विभेद किया वह भी शंका में पड़े हुये हैं। और उन्हें इस का कोई ज्ञान नहीं, केवल अनुमान के पीछे पड़े हुये हैं। और निश्चय उसे उन्होंने बध नहीं किया है।

१५८. बल्कि अल्लाह ने उसे अपनी ओर (आकाश) में उठा लिया है, तथा अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

१५९. और सभी अहले किताब उस (ईसा) के मरण से पहले उस पर अवश्य ईमान[2] लायेंगे, और प्रलय के दिन वह उन के विरुद्ध साक्षी[3] होगा।

१६०. यहूदियों के (इन्हीं) अत्याचार के कारण हम ने उन पर स्वच्छ खाद्य पदार्थों को हराम (वर्जित) कर दिया जो उन के लिये हलाल (वैध) थे। तथा उन के बहुधा अल्लाह की राह से रोकने के कारण ।

१६१. तथा उन के ब्याज लेने के कारण जब कि उन्हें उस से रोका गया था, और उन के लोगों का धन अवैध रूप से खाने के कारण, तथा हम ने उन में से काफिरों के लिये दु:खदायी यातना तय्यार कर रखी है।

---

[1] देखिये: सूरह बक़रह आयत–६५।

[2] अर्थात प्रलय के समीप ईसा अलैहिस्सलाम के आकाश से उतरने पर उस समय के सभी अहले किताब उन पर ईमान लायेंगे, और वह उस समय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुयायी होंगे। सलीब तोड़ देंगे, और सूअरों को मार डालेंगे, तथा इस्लाम के नियमानुसार निर्णय और शासन करेंगे । (सहीह बुखारी–२२२२, ३४४९, मुस्लिम – १५५,१५६)

[3] अर्थात ईस अलेहिस्सलाम प्रलय के दिन ईसाइयों के बारे में साक्षी होंगे । (देखिये: सूरह माइदा, आयत ११७)

१६२. परन्तु जो उन में से ज्ञान में पक्के हैं, तथा वह ईमान वाले जो आप की और उतारी गयी (पुस्तक कुरआन) तथा आप से पूर्व उतारी गयी (पुस्तक) पर ईमान रखते हैं, और जो नमाज़ की स्थापना करनेवाले, तथा ज़कात देने वाले, और अल्लाह तथा अन्तिम दिन पर ईमान रखने वाले है, उन्हीं को हम बहुत बड़ा प्रतिफल प्रदान करेंगे.

१६३. (हे नबी !) हम ने आप की ओर वैसे ही वह्यी भेजी है, जैसे नूह और उस के पश्चात के नबियों के पास भेजी, और इब्राहीम तथा इस्माईल और इस्हाक तथा याकूब और उस की यूनुस और हारून तथा सुलैमान के पास वह्यी भेजी, और हम ने दावूद को जबूर प्रदान[१] की थी।

१६४. कुछ रसूल तो ऐसे हैं जिन की चर्चा हम इस से पहले आप से कर चुके हैं। और कुछ की चर्चा आप से नहीं की है, और अल्लाह ने मूसा से वास्तव में बात की।

१६५. यह सभी रसूल शुभ सूचना सुनाने वाले और डराने वाले थे, ताकि इन रसूलों के (आगमन के) पश्चात् लोगों के लिये अल्लाह पर कोई तर्क न रह[२] जाये। और अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

१६६. (हे नबी!) (आप को यहूदी आदि नबी न मानें) परन्तु अल्ला उस (कुरआन) के द्वारा जिसे आप पर उतारा है, साक्ष्य (गवाही) देता है कि (आप नबी हैं)। उस ने इसे अपने ज्ञान के साथ उतारा है, तथा फरिश्ते साक्ष्य देते हैं, और अल्लाह का साक्ष्य ही बहुत है।

१६७. वास्तव में जिन्हों ने कुफ्र किया और अल्लाह की राह[३] से रोका वह सुपथ से बहुत दूर जा पड़े।

१६८. नि:संदेह जो काफिर हो गये, और अत्याचार करते रह गये, अतो अल्लाह ऐसा नहीं है कि उन्हें क्षमा करदे, तथा न उन्हें कोई राह दिखायेगा।

---

[१] वह्यी का अर्थ: संकेत करना, दिल में कोई बात डाल देना, गुप्त रूप से कोई बात कहना तथा संदेश भेजना है। हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु ने प्रश्न किया: अल्लाह के रसूल आप पर वह्यी कैसे आती है? आप ने कहा: कभी निरन्तर घंटी की ध्वानि जैसे आती है जो मेरे लिये बहुत भारी होती है। और यह दशा दूर होने पर मुझे सब बात याद रहती है। और कभी फरिशता मनुष्य के रूप में आकर मुझ से बत करता है तो मैं उसे याद कर लेता हूँ। (सहीह बुखारी–२, मुस्लिम – २३३३)

[२] अर्थात कोई अल्लाह के सामने यह न कह सके कि हमें मार्गदर्शन देने के लिये कोई नहीं आया।

[३] अर्थात इस्लाम से रोका।

१६९. परन्तु नरक की राह, जिस में वह सदावासी होंगे, और यह अल्लाह के लिये सरल है।

१७०. है लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से रसूल सत्य ले कर[१] आ गये हैं। अत: उन पर ईमान लाओ, यही तुम्हारे लिये अच्छा है, तथा यदि कुफ्र करोगे, तो अल्लाह ही का है, जो आकाशी तथा धरती में है, और अल्लाह बड़ा ज्ञानी गुणी है।

१७१.हे अहले किताब (ईसाइयो!) अपने धर्म में अधिकता न[२] करो, और अल्लाह पर केवल सत्य ही बोलो। मसीह मर्यम का पुत्र केवल अल्लाह का रसूल और उस का शब्ध है, जिसे मर्यम की ओर डाल दिया, तथा उस की ओर से एक आत्मा[३] है, अत: अल्लाह और उस के रसूलों कि (अल्लाह) तीन है, इस से रुक जाओ, यही तुम्हारे लिये अच्छा है, इस के सिवा कुछ नहीं कि अल्लाह ही अकेला पूज्य है, वह इस से पवित्र है कि उस का कोई पुत्र हो आकाशों तथा धरती में जो कुछ है उसी का है, और अल्लाह काम बनाने के[४] लिये बहुत है।

१७२. मसीह कदापि अल्लाह का दास होने को अपमान नहीं समझता, और न (अल्लाह के) समीपवर्ती फरिश्ते, तथा जो व्यक्ति उस की (वंदना को) अपमान समझेगा, तथा अभिमान करेगा, तो उन सभी को वह अपने पास एकत्र करेगा।

१७३. फिर जो लोग ईमान लाये, तथा सत्यकर्म किये, तो उन्हें उन का भरपूर प्रतिफल देगा, और उन्हें अपनी दया से अधिक भी देगा[५] परन्तु जिन्हों ने (वंदना को)

---

[१] अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस्लाम धर्म लेकर आ गये। यहाँ पर यह बात विचारणीय है कि कुरआन ने किसी जाति अथवा देशवासी को संबोधित नहीं किया है। वह कहता है कि आप पूरे मानव विश्व के नब हैं। तथा इस्लाम और कुरआन पूरे मानव विश्व के लिये सत्धर्म है जो उस अल्लाह का भेजा हुआ सत्धर्म है जिस की आज्ञा के आधीन यह पूरा विश्व है। अत: तुम भी उस की आज्ञा के आधीन हो जाओ।

[२] अर्थात ईसा अलैहिस्सलाम को रसूल से पूज्य न बनोओ, और यह न कहो कि वह अल्लाह का पुत्र है, और अल्लाह तीन है: पिता और पुत्र तथा पवित्रात्मा।

[३] अर्थात ईसा अल्लाह का एक भक्त है, जिसे अपने शब्द (कुन्) अर्थात ''हो जा'' से उत्पन्न किया है। इस शब्द के साथ उस ने फरिशते जिबरील को मर्यम के पास भेजा, और उस ने उस में अल्लाह की अनुमति से यह शब्द फूँक दिया, और ईसा अलैहिस्सलाम पैदा हुये । (इब्ने कसीर)

[४] अर्थात उसे क्या आवश्यक्ता है कि किसी को संसार में अपना पुत्र बना कर भेजे।

[५] यहाँ (अधिक) से अभिप्राय : स्वर्ग में अल्लाह का दर्शन है। (सहीह मुस्लिम:१८१ त्रिमिज़ी:२५५२)

अपमान समझा, और अभिमान किया, तो उन्हें दुःखदायी यातना देगा। तथा अल्लाह के सिवा वह कोई रक्षक और सहायक नहीं पायेंगे।

१७४. हे लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से खुला प्रमाण[१] आ गया है। और हम ने तुम्हारी और खुली वह्यी[२] उतार दी है।

१७५. तो जो लोग अल्लाह पर ईमान लाये. तथा इस (कुरआन को) दृढ़ता से पकड़ लिया वह उन्हीं को अपनी दया तथा अनुग्रह से (स्वर्ग) में प्रवेश देगा । और उन्हें अपनी ओर सीधी राह दिखा देगा।

१७६. (हे नबी!) वह आप से कलाला के विषय में आदेश चाहते हैं। तो आप कह दें कि वह कलाला के विषय में तुम्हें आदेश दे रहा है कि यदि कोई एसा पुरुष मर जाये जिस के संतान न हो, (और न पिता और दादा) और उस के एक बहन हो, तो उस के लिये उस के छोड़े हुये धन का आधा है। और वह (पुरुष) उस के पूरे (धन का) वारिस होगा यदि उस (बहन) के कोई संतान न हो (और न पिता और दादा हो)। और यदि उस की दो बहनें हों (अथवा अधिक) तो उन्हें छोड़े हुये धन का दो तिहाई मिलेगा। और यदि भाई बहन दोनों हों तो नर (भाई) को दो नारियों (बहनों) के बराबर[3] भाग मिलेगा । अल्लाह तुम्हारे लिये (आदेश) उजगर कर रहा है ताकि तुम कुपथ न हो जाओ, तथा अल्लाह सब कुछ जानता है।

*****

[१] अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

[२] अर्थात कुरआन शरीफ। (इब्ने जरीर)

[३] कलाला की मीरास का नियम आयत नं १२ में आ चुका । जो उस के तीन प्रकार में से एक के लिये था। अब यहाँ शेष दो प्रकारों का आदेश बताया जा रहा है। अर्थात यदि कलाला के सगे भाई बहन हों अथवा (जो एक पितत तथा कई माता से हों) तो उन के लिये यह आदेश है।

सूरह माइदा – ५

सूरह माइदा के संक्षिप्त विषय

सयह सूरह मद्नी है, इस में १२० आयतें हैं

- इस सूरह में शरीअत (धर्म विधान) के पूरे होने की घोषणा के साथ इस के आदेशो तथा नियमोय के पालन और धार्मिक नियमों को लागू करने पर बल दिया गया है। यह चूंकि धार्मिक विधान के पूरे होने का समय या इस लिये व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन से संबधित धार्मिक आदेशों को बताने के साथ मुसलमानों को अल्लाह की प्रतिज्ञा पर अस्थित रहने पर बल दिया गया है। और इस संदर्भ में मुलसमोनों को सावधान किया गया हैकि वह यहूदियों तथा ईसाईयों की नीति न अपनायें जिन्हों ने वचन भंग कर दिया और धर्म विधान नो नाश कर दिया और उस की सीमा से निकल भागे और धर्म में नई–नई बातें पैदा कर लीं। चूंकि कुरआन की शैली मार्गदर्शन तथा प्रशिक्षण की है इसलिये इस सभी बातों को मिला जुलाकर वर्णित किया गया है ताकि मनों में धार्मिक नियमों के पालन की भावना पैदा हो जाये। इस में यहूदियें तथा ईसाईयों को अन्तिम सीमा तक झंझोड़ा गया है और मुसलमानों का मार्ग उजागर किया गया है।
- इस में प्रतिबंधो तथा अल्लाह से किये वचन के पालन और न्याय की नीति अपनाने पर बल दिया गया है।
- इस में धर्म के वह आदेश बताये गये हैं जो वैध तथा अवैध से संबंधित है।
- इस में प्रलय के दिन नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के गवाही देने की बात कही गई है। और ईसा (अलैहिस्सलाम) का उदाहरण दिया गया है।
- इस में यहूदियों तथा ईसाईयों आदि को अरबी नबी पर ईमान लाने का आमंत्रण दिया गया है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपशील तथा दयावान् है।

१. हे वह लोगो जो ईमान लाये हो! प्रतिबंधों का पूर्णरूप[1] से पालन करो, तुम्हारे लिये सब पशु हलाल (वैध) कर दिये गये, परन्तु जिन का आदेश तुम्हें सुनाया जायेगा, सिवाये इस के कि तुम एहराम[2] की स्थिति में अपने लिये शिकार को हलाल (वैध न कर ले, बैशक अल्लाह जो आदेश चाहता है, देता है।

२. हे ईमान वालो! अल्लाह की निशानियों[3] (चिन्हों) का अनादर न करो, और न सम्मानित मासों[4] का, और न (हज्ज की) कुबर्आश्री का, न उन में से जिन के गले में पट्टे पड़े हों, और न उन का जो अपने पालनहार की अनुग्रह और उस की प्रसन्नता की खोज में सम्मानित घर (काबा) की ओर जा रहे हों, और जब एहराम खोल दो, तो शिकार कर सकते होत, तथा तुम्हें किसी गिरोह की शत्रुता इस बात पर न उभार दे कि अत्याचार करने लगो, क्यों कि उन्हों ने मस्जिदे–हराम से तुम्हें रोक दिया था, सदाचार तथा संयम में एक दूसरे की सहायता करो, तथा पाप और अत्याचार मे एक दूसरे की सहायता न करो। और अल्लाह से डरते रहो। निस्संदेह अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।

३. तुम पर मुर्दार[5] हराम (अवैध) कर दिया गया है, तथा (बहता हुआ) रक्त और सूअर का मांस, तथा जिस पर अल्लाह से अन्य का नाम पुकारा गया हो, तथा जो श्वास रोध और आघात के कारण, तथा गिरकर और दूसरे के सींग मारने से मरा हो, तथा जिसे हिंसक पशु ने खा लिया हो, परन्तु इस में[6] से जिसे तुम वध (ज़िव्ह) कर लो, और जिसे थान पर बध किया गया हो, और यह कि पाँसे द्वारा अपना भाग्य निकालो, यह सब आदेश उल्लंघन के कार्य हैं। आज काफ़र तुम्हारे धर्म से निराश[7] हो गये हैं। अत: उन से न डरो, मुझी से डरो। आज[1] मैंने तुम्हारा

---

[1] यह प्रतिबंध धार्मिक आदेशों से संबंधित हों अथवा आपस के हो।

[2] अर्थात जब हज्ज अथवा उमरे का एहराम बाँधे रहो।

[3] अल्लाह की वंदना के लिये निर्धारित चिन्हों का।

[4] अर्थात जुलक़ादा, जुलहिज्ज़ा, मुहर्रम तथा रजब के मासों में युद्ध न करो।

[5] मुर्दार से अभिप्राय वह पशु है, जिसे धर्म के नियमानुसार वध (ज़िब्ह) न किया गया हो।

[6] अर्थात जीवित मिल जाये और उसे नियमानुसार बध (ज़िब्ह) कर दो।

[7] अर्थात इस से कि तुम फिर से मूर्तियों के पुजारी हो जाओगे।

तुम्हारा धर्म तुम्हारे लिये परिपूर्ण कर दिया है। तथा तुम पर अपना पुरस्कार पूरा कर दिया, और तुम्हारे लिये इस्लाम को धर्म स्वरूप स्वीकार कर लिया। फिर जो भूक से आतुर हो जाये जब कि उस का झुकाव पाप के लिये न हो, (प्राण रक्षा के लिये खा ले) तो निश्चय अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

४. वे आप से प्रश्न करते है कि उन के लिये क्या हलल (वैध) किया गया?आप कह दें कि सभी स्वच्छ पवित्र चीज़ें तुम्हारे लिये हल्ला (वैध) कर दी गयी हैं। और उन शिकारी जानवरों का शिकार जिन को तुम ने उस ज्ञान द्वारा जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है उस में से कुछ सिखा कर सधाया हो। तो जो, (शिकार) वह तुम पर रोक दें उस में से खाओ, और उस पर अल्लाह का नाम[२] लो। तथा अल्लाह से डरते रहो। नि:संदेह अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

५. आज सब स्वच्छ खद्य तुम्हरे लिये हल्लाह (वैध) कर दिये गये हैं। और ईमान वाली सतवंती स्त्रियाँ, तथा उन में से सतवंती स्त्रियाँ जो तुम से पहले पुस्तक दिये गये हैं। जब कि उन को उन को उन का मह्र (विवाह उपहार) चुका दिया हो, विवाह में लाने के लिये, व्याभिचार के लिये नहीं, और न प्रेमिका बनाने के लिये। और जो ईमान को नकार देगा, उस का सत्कर्म व्यर्थ हो जायेगा, तथा परलोक में वह विनाशों में होगा।

६. हे ईमान वालो! जब नमाज़ के लिये खड़े हो तो (पहले) अपने मुँह तथा हाथों को कुहनियों तक धो लो, और अपने सिरों का मसह[३] कर लो, तथा अपने पावों

---

[१] सूरह बक़रह आयत नं. २८ में कहा गया कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने यह प्रार्थना की थी कि ''इन में से एक आज्ञाकारी समुदाय बना दे''। फिर आयत १५० में अल्लाह ने कहा कि ''अल्लाह चाहता है कि तुम पर अपना पुरस्कार पूरा कर दें''। और यहाँ कहा कि आज अपना पुरस्कार पूरा कर दिया। यह आयत हज्जतुल वदाअ में अरफ़ा के दिन अरफ़ात में उतरी। (सहीह बुख़ारी – ४६०६) जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अंतिम हज्ज था, जिस के लगभग तीन महीने बाद आप संसार से चले गये।

[२] अर्थात सधाये हुये कुत्ते और बाज़–शिकरे आदि का शिकार, उस के शिकार के उचित होने के लिये निम्नलिखित दो बातें आवश्यक है :

१) उसे बिस्मिल्लाह कह कर छोड़ा गया हो। इसी प्रकार शिकार जीवित हो तो बिस्मिल्लाह कर के वध किया जाये।

२) उस ने शिकार में से कुछ खाया न हो। बुख़ारी : ५४७८, मु. १९३०)

[३] मसह का अर्थ है, दानों हाथ भिगो कर सिर पर फेरना।

टख्नों तक (धो लो) और यदि जनाबद[1] की स्थिति में हो तो (स्नान कर के) पवित्र हो जोओ। तथा यदि रोगी अथवा यात्रा में हो अथवा तुम में से कोई शौच से आये, अथवा तुम ने स्त्रियों को स्पर्श किया हो और तुम जल न पाओ तो शुद्ध धूल से तयम्मुम कर ले, और उस से अपने मुखों तथा हाथों का मसह[2] कर लो। अल्लाह तुम्हारे लिये कोई संकीर्णता (तंगी) नहीं चाहता। परन्तु तुम्हें पवित्र करना चाहता है, और ताकि तुम पर अपना पुरस्कार पूरा कर दें, और ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

७. तथा अपने ऊपर अल्लाह के पुरस्कार और उस दृढ़ वचन को याद करो जो तुम से लिया है। जब तुम ने कहा: हम ने सुन लिया और आमाकारी हो गये। तथा अल्लाह से डरते रहो। नि:संदेह अल्लाह दिलों के भेदों को भली भाँति जानने वाला है।

८. हे ईमान वालो! अल्लाह के लिये खड़े रहने वाले, न्याय के साथ साक्ष्य देने वाले रहो, तथा किसी गिरोक की शत्रुता तुम्हें इस पर न उभार दे कि न्याय न करो। वह (अर्थात: सब के साथ न्याय) अल्लाह से डरने के अधिक समीप[3] है। नि:संदेह तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उस से भली भाँति सूचित है।

९. जो लोग ईमान लाये, तथा सत्कर्म किये तो उन से अल्लाह का वचन है कि उन के लिये क्षमा तथा बड़ा प्रतिफल है।

१०. तथा जो काफ़िर रहे, और हमारी आयतों को मिथ्या कहा, तो वही लोग नारकी है।

---

[1] जनाबत से अभिप्राय वह मलिनता है जो स्वप्न दोष तथा स्त्री संभोग से होती है। यही आदेश मासिक धर्म तथा प्रसव का भी है।

[2] हदीस में है कि एक यात्रा में आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का हार खो गया, जिस के लिये बैदा के स्थान पर रुकना पड़ा। भोर की नमाज़ के वुज़ू के लिये पानी नहीं मिल सका और यह आयत उतरी। (देखिये: सहीह बुख़ारी – ४६०७) मसह का अर्थ हाथ फेरना है। तयम्मुम के लिये देखिये सूरह निसा, आयत ४३

[3] हदीस में वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: जो न्याय करते हैं वह अल्लाह के पास नूर (प्रकाश) के मंच पर उस के दायें ओर रहेंगे – और उस के दोनों हाथ दायें है – जो अपने आदेश तथा अपने परिजनों और जो उन के अधिकार में हो, में न्याय करते हैं। (सहीह मुस्लिम – १८२७)

११. हे ईमान वालो! उस समय को याद करो जब एक गिरोह ने तुम्हारी ओर हाथ बढ़ाना[1] चाहा, तो अल्लाह ने उन के हाथों को तुम से रोक दिया, तथा अल्लाह से डरते रहो, और ईमान वालों को अल्लाह ही पर निर्भर करना चाहिये।

१२. तथा अल्लाह ने बनी इस्राईल से (भी) दृढ़ वचन लिया था, और उन में बारह प्रमुख नियुक्त कर दिये ते, तथा अल्लाह ने कहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, यदि तुम नमाज़ की स्थापना करते, और ज़कात देते रहे, तथा मेरे रसूलों पर ईमान (विश्वास) रखते, और उन के समर्थन देते रहे, तथा अल्लाह को उत्तम ऋण देते रहे, तो मैं अवश्य तुम को तुम्हारे पाप क्षमा कर दूँगा, और तुम्हें ऐसे स्वर्गों में प्रवेश दूँगा जिन में नहरें प्रवाहित होंगी। और तुम में से जो इस के पश्चात् भी कुफ़्र (अविश्वास) करेगा वह सुपथ[2] से विचलित हो गया।

१३. तो उन के अपना वचन भंग करने के कारण, हम ने उन को धिक्कार दिया, और उन के दिलों को कड़ा कर दिया, वह अल्लाह की बातों को उन के वास्तविक स्थानों से फेर देते[3] हैं, तथा जिस बात का उन को निर्देश दिया गया था, उसे भुचला दिया, और (अब) आप बराबर उन के किसी न किसी विश्वासघात से सूचित होते रहेंगे, परन्तु उन में बहुत थोड़े के सिवा जो ऐसा नहीं करते, अत: आप उन्हें क्षमा कर दें, और उन को जाने दें, निस्संदेह अल्लाह उपकारियों से प्रेम करता है।

---

[1] अर्थात तुम पर आक्रमण करने का निश्चय किया तो अल्लाह ने उन के आक्रमण से तुम्हारी रक्षा की। इस आयत से सम्बन्धित बुख़ारी में सहीह हदीस आत है कि एक युद्ध में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एकान्त में एक पेड़ के नीचे विश्राम कर रहे थे कि एक व्यक्ति आया और आप की तलवार खींच कर कहा तुम को अब मुझ से कौन बचायेगा? आप ने कहा: अल्लाह। यह सुनते ही तलवार उसके हाथ से गिर गई। और आप ने उसे क्षमा कर दिया। (सहीह बुख़ारी – ४१३९)

[2] अल्लाह को ऋण देने का अर्थ उस के लिये दान करना है। इस आयत में ईमान वालों को सावधान किया गया है कि तुम अहले किताब: यहूद और नसरा जैसे न हो जाना जो अल्लाह के वचन को भंग कर के उस की धिक्कार के अधिकारी बन गये। (इब्ने कसीर)

[3] सही हसीद में आया है कि कुछ यहूदी, रसुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एक नर और नारी को लाये जिन्होंनेह व्यभिचार किया था, आप ने कहा: तुम तौरात में क्या पाते हो? उन्होंने कहा: उन का अपमान करें और कोड़े मारें। अब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहा: तुम झुठे हो। बल्कि उस में (रज्म) करने का आदेश है। तौरत लाओ। वह तौरात लाये तो एक ने रज्म की आयत पर हाथ रख दिया और आगे–पीछे पढ़ दिया। अब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहा: हाथ उठाओ। उस ने हाथ उठाया तो उस में रज्म की आयत थी। (सहीह बुख़ारी – ३५५९, सहीह मुस्लिम – १६९९)

१४. तथ जिन्होंने कहा कि हम नसारा (ईसाई) हैं, हम ने उन से (भी) दृढ़ वुचन लिया था, तो उन्हें जिस बात का निर्देश दिया गया ता, उसे भुला दिया, तो प्रलय के दिन तक के लिये डम ने उन के बीच शत्रुता तथा पारस्परिक (आपसी) विद्वेष भड़का दिया, और शीघ्र ही अल्लाह जो कुछ वह करते रहे है, उन्हें[1] बता देगा।

१५. हे अहले किताब! तुम्हारे पास हमारे रसूल आगये हैं[2] जो तुम्हारे लिये उन बहुत सी बातों को उजागर कर रहें हैं, जिन्हें तुम छुपा रहे थे, और बहुत सी बातों को छोड़ भी रहे हैं।, अब तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से प्रकाश तथा खुली पुस्तक (कुरआन) आ गई है।

१६. जिस के द्वारा अल्लाह उन्हें शान्ति का मार्ग दिखा रहा है, जो उस की प्रसन्नता पर चलते हों, उन्हें अपनी अनुमति से अंधेरों से निकाल कर प्रकाश की अेर ले जाता हैं, और उन्हें सुपथ दिखाता है।

१७. निश्चय वह काफ़िर[3] हो गये, जिन्हों ने कहा कि मर्‌यम का पुत्र मसीह ही अल्लाह है। (हे नबी!) उन से कह दो कि यदि अल्लाह मर्‌यम के पुत्र और ुस की माता तथा जो भी धरती में है,सब का विनाश कर देता चाहे, तो किसी में शक्ति है कि वह उसे रोक दे? तथा अकाशों और धरती और जो भी इन के बीच है सब अल्लाह ही का राज्य है, वह जो चाहे उत्पन्न करता है, तथा वह जो चाहे कर सकता है।

१८. तथा यहूदी और ईसाइयों ने कहा कि हम अल्लाह के पुत्र तथा प्रियवर हैं। आप पूछें कि फिर वह तुम्हें तुम्हारे पापों का दण्ड क्यों देता है? बल्कि तुम भी वसे ही मानव पुरुष हो जैसे दूसरे हैं, जिन की उत्पत्ति उस ने की है। वह जिसे चाहे क्षमा कर दे और जिसे चाहे दण्ड दे। तथा आकाशें और धरती तथा जो उन दोनों के

---

[1] आयत का अर्थ यह है कि जब ईसाइयों ने वचन भंग कर दिया तो उन में कई परस्पर विरोधी समप्रदाय हो गये, जैसे याकूबिय्य:, नसतूरिय: आरयूसिय: और सभी एक दूसरे के शत्रु हो गये। तथा इस समय आर्थिक और राजनितिक सम्प्रदायों में विभाजित हाकर आप में रक्तपात कर रहें। हैं। इइ में भी मुसलमानों को सावधान किया गया[ै] कि कुरआन के अर्थों में परिवर्तन कर के ईसाइयों के समान सम्प्रदायों में विभाजित न होना।

[2] अर्थात मुहम्मद सल्लाहु अलैहि वसल्लम। तथा प्रकाश से अभिप्राय कुरआन पाक है

[3] इइ आयत में ईसाअलैहिस्सलाम के अल्लाह होने की मिथ्या आस्था का खण्डन किया जा रहा है।

बीच है, अल्लाह ही का राज्य (अधिपत्य)[1] है, और उसी की ओर सब को जाना है।

१९. हे अहले किताब! तुम्हारे पास रसूलों के आने का क्रम बंद होने के पश्चात् हमारे रसूल आ गये[2] हैं, वह तुम्हारे लिये (सत्य को) उजागर कर रहे हैं, ताकि तुम यह न कहो कि हमारे पास कोई शुभ सूचना सुनाने वाला तथा सावधान करने वाला (नबी) नहीं आया, तो तुम्हारे पास शुभ सूचना सुनाने तथा सावधान करने वाला अ गया है। तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

२०. तथा याद करो, जब मूसा ने अपनी जाति से कहा: हे मेरी जाति! अपने ऊपर अल्लाह के पुरस्कार को याद करो कि उस ने उम में नबी और शासक बनाये, तथा तुम्हें वह कुछ दिया जो संसार वासियों में किसी को नहीं दिया।

२१. हे मेरी जाति! उस पवित्र धरती (बैतुल मक़दिस) में प्रवेश कर जाओ, जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिये लिख दिया है, और पीछे न फिरे, अन्यथा असफल हो जाओगे।

२२. उन्होंने कहा: हे मूसा! उस में बड़े बलवान लोग हैं, और हम उस में कदापि प्रवेश नहीं करेंगे, जब तक वह उस से निकल न जायें, तभी हम उस में प्रवेश कर सकते हैं।

२३. उन में से दो व्यक्तियों ने जो (अल्लाह से) हरते थे, जिन पर अल्लाह ने पुरस्कार किया, कहा कि: उन पर द्वार से प्रवेश करजाओ, तुम जब उस में प्रवेश कर जाअेंगे, तो निश्चय तुम प्रभुत्वशाली होगे। तथा अल्लाह ही परभरोसा करो यदि तुम ईमान वाले हो।

२४. वह बोले: हे मूसा! हम उस में कदापि प्रवेश न करेंगे, जब तक वह उस में (उपस्थित) रहेंगे, अत: तुम और तुम्हारा पालनहार जाये, फिर तुम दोनों युद्ध करो, हम यहीं बैंठे रहेंगे।

---

[1] इस आयत में ईसाइयों तथा यहूदियों के इस भ्रम का खण्डन किया जा रहा है कि वह अल्लाह के प्रियवर हैं. इस लिये जो भी करें, उन के लिये मुक्ति ही मुक्ति है।

[2] अंतिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, ईसा अलैहिस्सलाम के छ: सौ वर्ष पश्चात् ६१० – ई. में नबी हुये। आप के और ईसा अलैहिस्सलाम के बीच कोई नबी नहीं आया।

२५. यह दशा देखकर मूसा ने कहा: हे मेरे पालनहार मैं अपने और अपने भाई के सिवा किसी पर कोई अधिकार नहीं रखथा। अत: तू हमारे तथा अवैज्ञानाकरी जाति के बीज निर्णय कर दे।

२६. अल्लाह ने कहा: वह (धरती) उन पर चालीस वर्ष के लिये हरम (वर्जित) कर दी गई। वह धरती में पिरते रहेंगे, अत: तुम अवैअज्ञानकारी जाति पर तरस न खाओ।[1]

२७. तथा उन को आदम के दो पुत्रो का सहीह समाचार[2] सुना दो, जब दोनों ने एक उपायन (कुर्बानी) प्रस्तुत की, तो एक से स्वीकार की गई तथा दूसरे से स्वीकार नहीं की गई। उस (दूसरे) ने कहा: मैं अवश्य तेरी हत्या कर दूँगा। उस (प्रथम) ने कहा: अल्लाह आज्ञाकारियों ही से स्वीकार करता है।

२८. यदि तुम मेरी हत्या करने के लिये मेरी ओर हाथ बढ़ाओगे[3], तो भी मैं तुम्हारी ओर तुम्हारी हत्या करने के लिये हाथ बढ़ाने वाला नहीं हूँ। मैं विश्व के पालनहार अल्लाह से डरता हूँ।

२९. मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी (हत्या के) पाप और अपने पाप के साथ फिरो, तो नारकी हो जाओगे, और यही अत्याचारियों का प्रतिकार (बदला) है।

३०. अंतत: उस ने स्वयं को अपने भाई की हत्या पर तय्यार कर लिया, और विनाशों में हो गया।

३१. फिर अल्लाह ने एक कौआ भेजा, जो भूमि कुरेद रहा था, ताकि उसे दिखाये कि अपने भाई के शव को कैसे छुपाये, उस ने कहा: मुझ पर खेद है! क्या मैं इस कौआ जैसा भी न हो सका कि अपने भाई का शव छुपा सकूँ, फिर बड़ा लज्ज़ित हुआ।

---

[1] इस आयतें का भावार्थ यह है कि जब मूसा अलैहिस्सलाम बनी इसराईल को ले कर मिस्र से निकले, तो अल्लाह ने उन्हें बैतुल मक्दिस में प्रवेश कर जाने का आदेश दिया, जिस पर अमालिक़ा जाति का अधिकार था। और वही उस के शासक थे, परन्तु बनी इस्राईल ने जो कायर हो गये थे, अमालिक़ा से युद्ध करने का साहस नहीं किया। और इस आदेश का विरोध किया, जिस के परिणाम स्वरूप उस क्षेत्र में ४० वर्ष तक फिरते रहे। और जब ४० वर्ष बीत गये, और एक नया वंश जो साहसी था पैदा हो गया तो उस ने उस धरती पर अधिकार कर लिया। (इब्ने कसीस)

[2] भाष्यकरों ने इन दोनों के नाम क़ाबील और हाबील बताये है।

[3] नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: जो भी प्राणी अत्याचार से मारा जाये तो आदम के प्रथम पुत्र पर उन के खून का भाग होता है क्योंकि उस ने प्रथम हत्या की रीति बनाई है। (सहीह बुख़ारी : ६८६७, मुस्लिम : १६७७)

३२. इसी कारण हम ने बनी इस्राईल पर लिख दिया[१] कि जिस ने भी किसी प्राणी की हत्या की किसी प्राणी का खून करने अथवा धरती में विद्रोह के बिना तो समझो उस ने पुरे मनुष्यों की हत्या[२] कर दी। और जिस ने जीवित रखा एक प्राणी को तो वास्तव में उस ने जीवित रखा सभी मनुष्यों को। तथा उन के पास हमारे रसूल खुली निशानियाँ लाये, फिर भी उन में से अधिकांश धरती में विद्रोह करने वाले हैं।

३३. जो लोग[३] अल्लाह अैर उस के रसूल से युद्ध करते हों, तता धरती में उपद्रव करते फिर रहे हों, उन का दण्ड यह है कि उन की हत्या की जाये, तता उन्हें फाँसी दी जाये, अथवा उन के हाथ पाँव विपरीत दिशाओं से काट दिये जायें, अथवा उन्हें देश निकाला दे दिया जाये। यह उन के लिये संसार में अपमान है, तथा परलोक में उन के लिये इस से बड़ा दण्ड है।

३४. परन्तु जो तौबा (क्षमा याचना) कर लें, इस से पहले कि तुम उन्हें अपने यिंत्रण में लाओ, तो तुम जान लो कि अल्लाह अति क्षमाक्षल दयावान् है।

३५. हे ईमानवालो! अल्लाह (की अवैज्ञा) से डरते रहो, और उस की ओर वसीला[४] खोजो, तथा उस की राह मे जिहाद करो, ताकि तुम सफल हो जाओ।

३६. जो लोग काफ़िर हैं, यद्यपि धरती के सभी (धन धान्य) उन के अधिकार (स्वामित्व) में आ जायें अैर उसी के समान और भी हो, ताकि वे, यह सब प्रलय के दिन की यातना से अर्थ दण्ड स्वरूप देकर मुक्त हो जायें, तो भी उन से स्वीकार नहीं किया जायेगा और उन्हें दुखदायी यातना होगी।

---

[१] अर्तात नियम बना दिया, इस्लाम में भी यही नियम और आदेश है।

[२] क्योंकि सभी प्राण, प्राण होने में बराबर हैं।

[३] इस आयत में देश द्रोहियों तथा तस्करों को दण्ड देने का नियम तथा आदेश बताया जा रहा है। तथा अल्लाह और उस के रसूल के आदेशों के उल्लंघन को उन के विरुद्ध युद्ध कहा गया हैं। (अधिक विवरण के लिये देखिये: सहीह बुख़ारी, हदीस – ४६१०

[४] (वसीला) का अर्थ है : अल्लाह की आज्ञा का पालन करने और उस की अवैज्ञा से बचने तथा ऐसे कर्मों के करने का जिन से वह प्रसन्न हो। वसीला हदीस में स्वर्ग के उस सर्वोच्च स्थान को भी कहा गया है जो स्वर्ग में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को मिलेगा जिस का नाम ((मक़ामे महमूद)) हैः इसी लिये आप ने कहा: जो अज़ान के पश्चात् मेरे लिये वसीला की दुआ करेगा वह मरी सिफ़ारिश के योग्य होगा। पीरों और फ़क़ीरों आदि की समाधियों को वसीला समझना निर्मूल और शिर्क है।

३७. वह चाहेंग कि नरक से निकल जायें, जब कि वह उस से निकल नहीं सकेंगे, और उन्हीं के लिये स्थायी यातना है।

३८. चोर, पुरुष और स्त्री दोनों के हाथ काट दो, उन के करतूत के बदले, जो अल्लाह की ओर से शिक्षाप्रद दण्ड है[1] और अल्लाह प्रभावशाली गुणी है।

३९. फिर जो अपने अज्याचार (चोरी) के पश्चात् तौब: (क्षमा याचना) कर ले, अेर अपने को सुधार ले, तो अल्लह उस की तौब: स्वीकार कर लेगा[2] नि:संदेह अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

४०. क्या तुम जानते नहीं कि अल्लाह ही के लिये है आकाशें तथा धरती का राज्य। वह जिसे चाहे क्षमा कर दे, और जिसे चाहे दण्ड दे, तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

४१. हे नबी! वह आप को ुदासीन न करें, जो कुफ़्र में तीव्रगामी हैं, उन में से जिन्होंने कहा कि हम ईमान लये, जब कि उन के दिल ईमान नहीं लाये और उन में से जो यहूदी हैं, जिन की दशा यह है कि मिथ्र्या बातें सुनने के लिये कान लगाये रहते हैं, तथा दूसरों के लिये जो आप के पास नहीं आये कान लगाये रहते हैं, वह शब्दों को उन के निश्चत स्थानों के पश्चातथ वास्तविक अर्थों से फेर देते हैं। वह कहते हैं कि यदि तुम को यही आदेश दिया जाये (जो हम ने बताया हैं) तो मान लो,

---

[1] यहाँ पर चोरी के विषय में इस्लाम का धर्म विधान वर्णित किया जा रहा है कि यदि चौथाई दीनार अथवा उस के मूल्य के समान की चोरी की जाये, तो चोर का सीधा हाथ कलाई से काट दो। इस के लिये स्थान तथा समय के और भी प्रतिबंध हैं। शिक्षाप्रद दण्ड होने का अर्थ यह है कि दूसरे इस से शिक्षा ग्रहण करें, ताकि पूरा देश और समाज चोरी के अपराध से स्वच्छ और पवित्र ग्रहण करें, ताकि पूरा देश और समाज चोरी के अपराथ से स्वच्छ और पवित्र हे जाये। तथा यह ऐतिहासिक सत्य है कि इस घोर दण्ड के कारण, इस्लाम के चौदह सौ वर्षों में जिन्हें यह दण्ड दिया गया है, वह बहुत कम हैं। क्योंकि यह सज़ा ही ऐसी है कि जहाँ भी इस को लागू किया जायेगा वहाँ चोर ौर डाकू बहुत कुछ सोच समझकर ही आगे कदम बढ़ायेंगे। जिस के फलस्वरूप पूरा समाज अम्न और चेन का गह्वारा बन जायेगा। इस के विपरीत संसार के आधुनिक विधानों ने अपराधियों को सुधारने तथा उन्हें सभ्य बनाने का जो नियम बनाया है, उस ने अपराधियों में अपराध का साहस बढ़ा दिया है। अत: यह मानना पड़ेगा कि इस्लाम का यह दण्ड चोरी जैसे अपराध को रोकने में अब तक सब से अधिक सफल सिद्ध हुआ है। और यह दण्ड मानव्ता के मान और उस के अधिकार के विपरीत नहीं है। क्योंकि जिस व्यक्ति ने अपना माल अपने खून पसीना, परिश्रम तथा अपने हाथों की शक्ति से कमया हैं तो यदि कोई चोर आ कर उस को उचकना चाहे तो उस की सज़ा यही होनी चाहिये कि उस का वह हाथ ही काट दिया जाये जिस से वह अन्य का माल हड़प करना चाह रहा है।

[2] अर्थात उसे परलोक में दण्ड नहीं देगा, परन्तु न्यायालय चोरी सिद्ध होने पर उसे चोरी का दण्ड देगा। (तफ़्सीरे कुर्तुबी)

और यदि वह न दिये जाओ, तो उस से बचो। (हे नबी!) जिसे अल्लाह अपनी परीक्षा में डालना चाहे, आप उसे अल्लह से बचाने के लिये कुछ नहीं कर सकते। यही वह हैं जिन के दिलों को अल्लाह ने पवित्र करना नहीं चाहा। उन्हीं के लिये संसार में अपमान है, और उन्हीं के लिये परलोक में घोर[1] यातना है।

४२. वह मिथ्या बातें सुनने वाले अवैध भक्षी हैं। अत: यदि वह आप के पास आयें, तो आप उन के बीच निर्णय कर दें, अथवा उन से मुँह फेर लें (आप को अधिकार है)। और यदि आप उन से मुँह फेर लें, तो वे आप को कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे। और यदि निर्णय करें, तो न्याय के साथ निर्णय करें। निस्संदेह अल्लाह न्यायकारियों से प्रेम करता है।

४३. और वह अप को निर्णयकारी कैसे बना सकते हैं, जब कि उन के पास तौरात (पुस्तक) मौजूद है, जिस में अल्लाह का आदेश है। फिर इस के पश्चात् उस से मुँह फेर रहे हैं? वास्तव में वह ईमान वाले हैं ही[2] नहीं।

४४. नि:संदेह हम ने ही तौरात उतारी जिस में मार्गदर्शन तथा प्रकाश है, जिस के अनुसार वह नबी निर्णय करते रहे जो आज्ञाकारी थे,[3] उन के लिये जो यहूदी थे। तथा धर्माचारी और विद्वान लोग। क्योंकि वह अल्लाह की पुस्तक के रक्षक बनाये गये थे, और उस के (सत्य होने के) साक्षी थे। अत: तुम (भी) लोगों से न डरो, मुझी से डरो, और मेरी आयतों के बदले तनिक मूल्य न ख़रीदो, और जो अल्लाह की उतारी (पुस्तक के) अनुसार निर्णय न करें, तो वही काफ़िर हैं।

४५. और हम ने उन (यहूदियों) पर उस (तौरात) में लिख दिया कि प्राण के बदले प्राण है, तथा आँख के बदले आँख, और नाक के बदले नाक, तथा कान के बदल कान, और दाँत के बदले दाँत, तथा सभी आघातों मे बराबरी का बदला है। फिर जो कोई बदला लेने को दान (क्षमा) कर दे तो वह उस के लिये(उस के पापों

---

[1] मदीना के यहूदी विद्वान, मुनाफ़िक़ों (द्विधावादियों) को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास भेजते कि आप की बातें सुनें। और उन को सूचित करें। तथा अपने विवाद आपके पास ले जायें। और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कोई निर्णय करें तो हमारे आदेशानुसार हो तो स्वीकार करें अन्यथा स्वीकार न करें। जब कि तौरात की आयतों में इन के आदेश थे, फिर भी वे उन में परिवर्तन कर के उन का अर्थ कुछ का कुछ बना देते थे। (देखिये व्याख्या आयत – १३)

[2] क्यों कि वह न तो आप को नबी मानते, और न आप का निर्णय मानते, तथा न तौरात का आदेश मानते हैं।

[3] इस्लाम में भी यही नियम हैं और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दाँत तोड़ने पर यही निर्णय था। (सहीह बुख़ारी : ४६११)

का) प्रायश्चित हो जायेगा, तथा जो अल्लाह की उतारी (पुस्तक के) अनुसर निर्णय न करें, तो वही अत्याचारी है।

४६. फिर हम ने उन(नबियों) के पश्चात् मर्‌यम के पुत्र ईसा को भेजा, उसे सच बताने वाला जो उस के सामने तौरात थी। तथा उसे इंजली प्रदान की, जिस में मार्गदर्शन तथा प्रकाश है। उसे सच बताने वाली जो उस के आगे तौरात थी तथा अल्लाह से डरने वालों के लिये सर्वथा मााार्गदर्शन तथा शिक्षा थी।

४७. और इंजील के अनुयायी भी उसी से निर्णय करें, जो अल्लाह ने उस में उतारा है, और जो उस से निर्णय न करें, जिसे अल्लाह ने उतारा है, तो वही अधर्मी हैं।

४८. और (हे नबी!) हम ने आप की ओर सत्य पर आधारित पुस्तक (कुरआन) उतार दी, जो अपने पूर्व की पुस्तकों को सच बताने वाली तथा संरक्षक[१] है, अत: आप लोगों का निर्णय उसी से करें, जो अल्लाह ने उतारा है, तथा उन की मन मानी पर उस सत्य से विमुख होकर न चलें, जो आप के पास आया है। हम ने तुम में से प्रत्येक के लिये एक धर्म विधान तथा एक कार्य प्रणाली बना दिया[२] था, और यदि अल्लाह चाहता तो तुम्हें एक ही समुदाय बना देता, परन्तु उस ने जो कुछ दिया है, उस में तुम्हारी परीक्षा लेना चाहता है। अत: भलाईयों में एक दूसरे से अग्रसर होने का प्रयास करो[३], अल्लाह ही की ओर तुम सब को लोट कर जाना है। फिर वह तमुहें बता देगा, जिन बातों में तुम विभेद करते रहे।

४९. तथा (हे नबी!) आप उन का निर्णय उसी से करें, जो अल्लाह ने उतारा है, और उन की मनमानी पर न चलें तथा उन से सावधान रहें कि आप को जो अल्लाह ने

---

[१] संरक्षक होने का अर्थ यह है कि कुरआन अपने पूर्व की धर्म पुस्तकों को केवल प्रष्टिकर ही नहीं, कसोटि (परख) भी है। अत: आदि पुस्तकों में जो भी बात कुरआन के विरुद्ध होगी वह सत्य नहीं परिवर्तित होगी, सत्य वही होगी जो अल्लाह की अन्तिम किताब कुरआन पाक के अनुकूल हो।

[२] यहाँ यह प्रश्न उठता है कि जब तौरात तथा इंजील और कुरआन सब एक ही सत्य लाये हैं, तो फिर इन के धर्म विधानों तथा कार्यप्रणाली में अन्तर क्यो है? कुरआन उस का उत्तर देता है कि एक चीज़ मूल धर्म है, अर्थात एकेश्वरवाद तथा सत्कर्म का नियम, और दूसरी चीज़ धर्म विधान तथा कार्यप्रणाली है, जिस के अनुसार जीवन व्यतीत किया जाये, तो मूल धर्म तो एक ही है, परन्तु समय और स्थितियों के अनुसार कार्यप्रणाली में अन्तर होता रहा हैं, क्योंकि प्रत्येक युग की स्थितियाँ एक समान नहीं थीं, और यह मूल धर्म का अन्तर नहीं, कार्यप्रणाली का अन्तर हुआ। अत: अब समय तथा स्थितियाँ बदल जाने के पश्चात कुरआन जो धर्म विधान तथा कार्यप्रणली प्रस्तुत कर रहा है वही सत्धर्म है।

[३] अर्थात कुरआन के आदेशों का पालन करने में।

आप की ओर उतारा है, उस में से कुछ से फेर न दें। फिर यदि वह मुँह फेरें, तो जान लें कि अल्लाह चाहता है कि उन के कुछ पापों के कारण उन्हें दण्ड दे। वास्तव में बहुत से लोग उल्लंघनकारी हैं।

५०. तो क्या वह जाहिलिय्यत (अंधकार युग) का निर्णय चाहते हैं? और अल्लाह से अच्छा निर्णय किस का हो सकता है, उन के लिये जो विश्वास रखते हैं?

५१. हे ईमान वालो! तुम यहूदी तथा ईसाईयों को अपना मित्र न बनाओ, वह एक दूसरे के मित्र हैं, और जो कोई तुम में से उन को मित्र बनायेगा, वह उन्हीं में होगा। तथा अल्लाह अत्याचारियों को सीधी राह नहीं दिखाता।

५२. फिरी (हे नबी!) आप देखेंगे कि जिन के दिलों में (द्विधा का) रोग है, वह उन्हीं में दौंड़े जा रहा हैं, वह कहते हैं कि हम डरते हैं कि हम किसी आपदा के कुचक्र में न आ जायें, तो दूर नहीं कि अल्लाह तुम्हें विजय प्रदान करेगा, अथवा उस के पास से कोइ बात हो जायेगी, तो वह लोग उस बात पर जो उन्हों ने अपने मनों मे छुपा रखी है, लज्जित होंगे।

५३. तथा (उस समय) ईमानवाले कहेंगे। क्य यही वह हैं, जो अल्लाह की बड़ी गंभीर शपथें लेकर कहा करते थे कि वह तुम्हारे साथ हैं? इन के कर्म अकारथगये और अंततः वह असफल हो गये।

५४. हे ईमान वालो!ः तुम में से जो अपने धर्म से फिर जायेगा, तो अल्लाह ऐसे लोगों को पैदा कर देगा, जिन से वह प्रेम करेगा, और वह उससे प्रेम करेंगे। वह ईमान वालों के लिये कोमल तथा काफ़िरों के लिये कड़े[१] होंगे। अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे, किसी निन्दा करने वाले की निन्दा से नहीं डरेंगे। यह अल्लाह की दया है, जिसे चाहे प्रदान करता है, और अल्लाह (की दया) विशाल है और वह अति ज्ञान है।

५५. तुम्हारे सहायक केवल अल्लाह और उस के रसूल तथा वह हैं, जो ईमान लाये, जो नमाज़ की स्थापना करते तथा ज़कात देते हैं, और अल्लाह के आगे झुकने वाले हैं।

---

[१] कड़े होने का अर्थ यह है कि वह युद्ध तथा अपने धर्म की रक्षा के समय उन के दबाव में नहीं आयेंगे, न जिहाद की निन्दा उन्हें अपने धर्म की रक्षा से रोक सकेगी।

५६. तथा जो अल्लाह और उस के रसूल तथा ईमान वालों को सहायक बनायेगा, तो निश्चय अल्लाह का दल ही छा कर रहेगा।

५७. हे ईमान वालो! उन को जिन्होंने तुम्हारे धर्म को उपहास तथा खेल बना रखा है उन में से जो तुम से पहले पुस्तक दिये गये हैं, तथा काफ़िरों को सहायक (मित्र) न बनाओ, और अल्लाह से डरते रहो, यदि तुम वास्तव में ईमान वाले हो।

५८. और जब तुम नमाज़ के लिये पुकारते हो, तो वे उस का उपहास करते तथा खेल बनाते हैं, इस लिये कि वह समझ नहीं रखते।

५९. (हे नबी!) आप कह दें कि हे अहले किताब! इस के सिवा हमारा दोष क्या है, जिस का तुम बदला लेना चाहते हो, कि हम अल्लाह पर तथा जो हमारी ओर उतारा गया और जो हम से पूर्व उतारा गया उस पर ईमान लये है, और इस लिये कि तुम में अधिक्तर उल्लंघनकारी हैं?

६०. आप उन से कह दें कि क्या मैं तुम्हें बता दूँ जिन का प्रतिफल (बदला) अल्लाह के पास इस से भी बुरा है? वह हैं जिन को अल्लाह ने धिक्कार दिया और उन पर उस का प्रकोप हुआ, तथा उन में से बंदर और सूअर बना दिये गये, तथा तागूत (असूर–धर्म विरोध शक्तियों) को पूजने लगे। इन्हीं का स्थान सब से बुरा है, तथा सर्वाधि कुपथ हैं।

६१. जब वह[1] तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाये जब कि वह कुफ़्र लिये हुये आये और उसी के साथ वापिस हुये, तथा अल्लाह उसे भली भाँति जानता है, जिस को वह छुपा रहे हैं।

६२. तथा आप उन में से बहुतों को देखेंगे कि पाप तथा अत्याचार और अपने अवैध खाने में दौड़ रहे हैं, वह बड़ा कुकुर्म कर रहे हैं।

६३. उन को उन के धर्माचारी तथा विद्वान पाप की बात करने तथा अवैध खाने से क्यों नहीं रोकते? वह बहुत बुरी रीति बना रहे हैं?

६४. तथा यहूदियों ने कहा कि अल्लाह के हाथ बँधे[1] हुये हैं, उन्हीं के हाथ बँधे हुये हैं। और वह अपने इस कथन के कारण धिक्कार दिये गये हैं, बल्कि उस के दोनों हाथ

[1] इस में द्विविधावादियों का दूराचार बताया गया है।

खुले हुये हैं, वह जैसे चाहे व्यय (ख़र्च) करता है, और इन में से अधिक्तर को जो (कुरआन) आप के पालनहार की ओर से आप पर उतारा गया है, उल्लंघन तथा कुफ़्र (अविश्वास) में अधिक कर देगा, और हम ने उन के बीच प्रलय के दिन तक के लिये शत्रुता तथा बैर डाल दिया है। जब कभी वह युद्ध की अग्नि सुलगाते हैं, तो अल्लाह उसे बुझा[२] देता है। वह धरती में उपद्रव का प्रयास करते हैं, और अल्लाह विद्रोहियों से प्रेम नहीं करता।

६५. और यदि अपले किताब ईमान लाते, तथा अल्लाह से डरते, तो हम अवश्य उन के दोषों को क्षमा कर देते, और उन्हें सुख के स्वर्गों में प्रवेश देते।

६६. तथा यदि वह स्थापि[३] रखते तौरात और इंजील को, और जो भी उन की ओर उतारा गया है, उन के पालनहार की ओर से, तो अवश्य उन को अपने ऊपर (आकाश) से,तथा पैरों के नीचे (धरती) से[४] जीविका मिलती, उन में एक संतुलित समुदाय भी है। और उन में से बहुत से कुकर्म कर रहे हैं।

६७. हे रसूल![५] जो कुछ आप पर आप के पालनहार की ओर से उतारा गया है उसे (सब को) पहुँचा दें, और यदि ऐसा नहीं किया, तो आप ने उस का उपदेश नहीं पहुँचाया। और अल्लाह (विरेधियों से) आप की रक्षा करेगा[६], निश्चय अल्लाह, काफ़िरों को मार्गदर्शन नहीं देता।

---

[१] अरबी मुहावरे में हाथ बंधे का अर्थ है कंजूस होना, और दान–दक्षिणा से हाथ रोकना। (देखियेः सूरह आले इमरान, आयत – १८१)

[२] अर्थात उन षड्यंत्र को सफल नहीं होने देता बल्कि उस का कुफल उन्हीं को भोगना पड़ता है। जैसा कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के समय में विभिन्न दशाओं में हुआ।

[३] अर्थात उन के आदेशों को पालन करते और उसे अपना जीवन विधान बनाते।

[४] अर्थात आकाश की वर्षा तथा धरती की उपज में अधिक्ता होती।

[५] अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

[६] नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के नबी होने के पश्चात आप पर विरोधियों ने कई बार प्राणघातक आक्रमण का प्रयास किया। जब आप ने मक्का में सफ़ा पर्वत से एकेश्वरवाद का उपदेश दिया तो आप के चचा अबू लह्ब ने आप पर पत्थर चलाये। फिर उसी युग में आप काबा के पास नमाज़ पढ़ रहे थे कि अबू जह्ल ने आप की गरदन रौंदने का प्रयास किया, किन्तु आप के रक्षक फ़रिश्तों को देख कर भागा। और जब कुरैश ने यह योजना बनाई कि आप को बध कर दिया जाये और प्रत्येक क़बीले का एक युवक आप के द्वार पर तलवार लेकर खड़ा रहे और आप निकलें तो सब एक साथ प्रहार कर दें, तब भी आप उन के बीच से निकल गये। और किसी ने देखा भी नहीं। फिर आन ने अपने साथी अबू बक्र के साथ हिज्रत के समय सौर पर्वत की गुफ़ा में शरण ली।

६८. (हे नबी!) आप कह दें कि हे अहल किताब! तुम किसी धर्म पर नहीं हो, जब तक तौरात तथा इंजील और उस (कुरआन) की स्थापना[१] न करो, जो तुम्हारी ओर तुम्हारे पालनहार की ओर से उतारा गया है, तथा उन में से अधिक्तर को जो (कुरआन) आप पर आप के पालनहार की ओर से उतारा गया है, अवश्य उल्लंघन तथा कुफ़्र (अविश्वास) में अधिक कर देगा, अत: आप काफ़िरों (के अविश्वास) पर दुखी न हों।

६९. वास्तव में जो ईमान लाये, तथा जो यहूदी हुये, और साबी, तथा ईसाई, जो भी अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान लायेगा, तथा सत्कर्म करेगा, तो उन्हीं के लिये कोई डर नहीं, और न वह उदासीन[२] होंगे।

और गुफ़ा के मुंह तक अप की खोज में आ पहुँचे। उन्हें आप के साथी ने देखा, किन्तु वे आप को नहीं देख सके। और जब वहाँ से मदीना चले तो सुराक़ा नामी एक व्यक्ति ने कुरैश के पुरस्कार के लोभ में आकर आप का पीछा किया। किन्तु उस के घोड़े के अगले पैर भूमी में धंस गये। उस ने आप को गुहारा, आप ने दुआ कर दी, और उस को घोड़ा निकल गया। उस ने एके प्रयास तीन बार किया फिर भी असफल रहा। आप ने उस को क्षमा कर दिया। और यह देखकर वह मुसलमान हो गया। आप ने फरमाया कि एक दिन तुम अपने हाथ में ईरान के राजा के कंगन पहनोंगे। और उमर बिन ख़त्ताब के युग में यह बत सच साबित हुई। मदीने में भी यहूदियों के क़बीले बनू नज़ीर ने छत के ऊपर से आप पर भारी पत्थर गिराने का प्रयास किया जिस से अल्लाह ने आप को सूचित कर दिया। ख़ैबर की एक यहूदी स्त्री ने आप को विष मिला के बकरी का माँस खिलाया। परन्तु आप पर उस का कोई बड़ा प्रभाव नहीं हुआ। जब कि आप का एक साथी उसे खाकर मर गया। एक युद्ध यात्रा में आप अकेले एक वृक्ष के नीचे सो गये, एक व्यक्ति आया, और आप की तलवार ले कर कहा: मुझ से आपको कौन बचायेगा? आप ने कहा: अल्लाह। यह सुनकर वह काँपने लगा, और उस के हाथ से तलवार गिर गई और आप ने उसे क्षमा कर दिया। इन सब घटनाओं से यह सिद्ध हो जाता है कि अल्लाह ने आप की रक्षा करने का जो वचन आप को दिया, उस को पूरा कर दिया।

[१] अर्थात उन के आदेशों का पालन न करो।

[२] आयत का भावार्थ यह है कि इस्लाम से पहले यहूदी, ईसाई तथा साबी जिन्होंने अपने धर्म को पकड़ रखा है, और उस में किसी प्रकार का हेर–फेर नहीं किया, अल्लाह तथा आख़िरत पर ईमान रखा और सदाचार किये उन को कोई भय और चिन्ता नहीं होनी चाहिये। इसी प्रकार की आयत सूरह बकरह (६२) में भी आई है जिस के विषय में आता है कि कुछ लोगों ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से प्रश्न किया कि उन लोगों का क्या होगा जो अपने धर्म पर स्थिर थे और मर गये? इसी पर यह आयत उतरी। परन्तु जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और आप के लाये धर्म पर ईमान लाना अनिवार्य है इस के बिना मोक्ष नहीं मिल सकता।

७०. हम ने बनी इस्राईल से दृढ़ वचन लिया, तथा उन के पास बहुत से रसूल भेजे, (परन्तु) जब कभी कोई रसूल उन की अपनी आकांक्षाओ के विरुद्ध कुछ लाया, तो एक गिरोह को उन्होंने झुठला दिया, तथा एक गिरोह को बध करते रहे।
७१. तथा वह समझे कि कोई परीक्षा न होगी, इस लिये अंधे बहरे हो गये, फिर अल्लाह ने उन को क्षम कर दिया, फिर भी उन में से अधिक्तर अंधे और बहरे हो गये, तथा वह जो कुछ कर रहे हैं, अल्लाह उसे देख रहा है।
७२. निश्चय वह काफ़िर हो गये, जिन्होंने कहा कि अल्लाह,[१] मर्यम का पुत्र मसीह ही है। जब कि मसीह ने कहा था: हे बनी इसराईल! उस अल्लाह की इबादत (वंदना) करो जो मेरा पालनहार तथा तुम्हारा पालनहार है, वास्तव में जिस ने अल्लाह का साझी बना लिया उस पर अल्ल्राह ने स्वर्ग को हराम (वर्जित) कर दिया। और उस का निवास स्थान नरक है। तथा अत्याचारियों का कोई सहायक न होगा।
७३. निश्चय वह भी काफ़िर हो गये, जिन्होंने कहा कि अल्लाह तीन का तीसरा है, जब कि कोई पूज्य नहीं है, परन्तु वही अकेला पूज्य है, और यदि वह जो कुछ कहते हैं, उस से नहीं रुके, तो उन में से काफ़िरों को दुखदायी यातना होगी।
७४. वह अल्लाह से तौब: तथा क्षमा याचना क्यों नहीं करते, जब कि अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है?
७५. मर्यम का पुत्र मसीह इस के सिवा कुछ नहीं कि वह एक रसूल हैं, उस से पहले भी बहुत से रसूल हो चुके हैं, उस की माँ सची थी, दोनों भोजन करते थे, आप देखें कि हम कैसे उन के लिये निशानियाँ (एकेश्वरवाद के लक्षण) उजागर कर रहें हैं, फिर देखिये कि वह कहाँ बहके जा रहे हैं।
७६. आप उन से कह दें कि क्या तुम अल्लाह के सिवा उस की इबादत (वंदना) कर रहे हो, जो तुम्हें कोई हानि और लाभ नहीं पहुँचा सकता? तथा अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

---

[१] आयत का भावार्थयह है कि ईसाइयों को भी मूल धर्म एकेश्वरवाद और सदाचार की शिक्षा दी गयी थी। परन्तु वह भी उस से फिर गये, तथा ईसा को स्वयं अल्लाह अथवा अल्लाह का अंश बना दिया, और पिता पुत्र और पवित्रात्मा तीन के योग को एक प्रभु मानने लगे।

७७. (हे नबी!) कह दो कि हे अहले किताब! अपने धर्म में अवैध अति न करो[1] तथा उन की अभिलाषाओं पर न चलो, जो तुम से पहले कुपथ हो[2] चुके, और बहुतों को कुपथ कर गये, और संमार्ग से विचलित हो गये।

७८. बनी इस्राईल में से जो काफ़िर हो गये, वह दावूद तथा मर्यम के पुत्र ईसा की ज़ुबान पर धिक्कार दिये[3] गये, यह इस कारण कि उन्होंने अवैज्ञा की, तथा (धर्म की सीमा का) उल्लंघन कर रहे थे।

७९. वह एक दूसरे को किसी बुराई से, जो वे करते, रोकते नहीं थे, निश्चय वह बड़ी बुराई कर रहे थे।[4]

८०. आप उन में से अधिक्तर को देखेंगे कि काफ़िरों को अपना मित्र बना रहे हैं। जो कर्म उन्हों ने अपने लिये आगे भेजा है बहुत बुरा है कि अल्लाह उन पर क्रुद्ध हो गया तथा यातना में वही सदावासी होंगे।

८१. और यदि वह अल्लाह पर, तथा नबी पर, और जो उन पर उतारा गया, उस पर ईमान लाते, तो उन को मित्र न बनाते[5], परन्तु उन में अधिक्तर उल्लंघनकारी हैं।

८२. (हे नबी!) आप उन का जो ईमान लाये हैं, सब से कड़ा शत्रुः यहूदियों तथा मिश्रणवादियों को पायेंगे। और जो ईमान लाये हैं उन के सब से अधिक समीप आप उन्हें पायेंगे, जो अपने को ईसाई कहते हैं। यह बात इस लिये है कि उन में उपासक तथा सन्यासी हैं, और वह अभिमान[6] नहीं करते।

८३. तथा जब वह (ईसाई) उस (कुरआन) को सुनते हैं, जो रसूल पर उतरा है, तो आप देखते है कि उन की आँखें आँसू से उबल रहीं हैं, उस सत्य के कारण जिसे

---

[1] (अति न करो): अर्थात ईसा अलैहिस्सलाम को प्रभु अतवा प्रभु का पुत्र न बनाओ।

[2] इस ने अभिप्राय वह हो सकते हैं, जो नबियों को स्वयं प्रभु अथवा प्रभु का अंश मानते हैं।

[3] अर्थात धर्म पुस्तक ज़बूर तथा इंजील में इन के धिक्कृत होने की सूचना दी गयी है। (इब्ने कसीर)

[4] इस आयत में उन पर धिक्कार का कारण बताया गया है।

[5] भावार्थ यह है कि यदि यहूदी, मूसा अलैहिस्सलाम को अपना नबी, और तौरात को अल्लाह की किताब मानते है, जैसा कि उन का दावा है तो वे मुसलमानों के शत्रु और काफ़िरों को मित्र नहीं बनाते। कुरआन का यह सच आज भी देखा जा सकता है।)

[6] अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) कहते हैं कि यह आयत हब्शा के राजा नजाशी और उस के साथियों के बारे में उतरी, जो कुरआन सुनकर रोने लगे, और मुसलमान हो गये। (इब्ने जरीर)

उन्होंने पह्चान लिया है। वे कहते हैं: हे हमारे पालनहार! हम ईमान ले आये अत: हमें (सत्य) के साक्षियों में लिख[१] ले।

८४. (तथा कहते हैं): क्या कारण है कि हम अल्लाह पर तथा इस सत्य (कुरआन) पर ईमान (विश्वास) न करें? और हम आशा रखते हैं कि हमारा पालनहार हमें सदाचारियों में सम्मिलित कर देगा।

८५. तो अल्लाह ने उन के यह कहने के कारण उन्हें ऐसे स्वर्ग प्रदान कर दिये, जिन में नहरें प्रवाहित हैं, वह उन में सदावासी होंगे। तथा यही सत्कर्मियों का प्रतिफल (बदला) है।

८६. तथा जो काफ़िर हो गये, और हमारी आयतों को झुठला दिया, तो वही नारकी हैं।

८७. हे ईमानवालो! उन स्वच्छ पवित्र चीज़ों को जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये हलाल (वैध) की हैं, हराम (अवैध)[२] न करो, और सीमा का उल्लंघन न करो। निस्संदेह अल्लाह उल्लंघनकारियों[३] से प्रेम नहीं करता।

८८. तथा उस में से खाओ जो हलाल (वैध) स्वच्छ चीज़ अल्लाह ने तुम्हें प्रदान की हैं। तथा अल्लाह (की अवैज्ञा) से डरते रहो. यदि तुम उसी पर ईमान (विश्वास) रखते हो।

८९. अल्लाह तुम्हे तुम्हारी व्यर्थ शपथों[४] पर नहीं पकड़ता, परन्तु जो शपथ जान बूझकर बूझकर ली हो, उस पर पकड़ता है, तो उस का[५] प्रायश्चित दस निर्धनों को भोजन भोजन कराना है, उस माध्यमिक भोजन में से जो अपने परिवार को खिलाते हो, अथवा उन्हें वस्त्र दो, अथवा एक दास मुक्त करो, और जिसे यह सब उपलब्ध

---

[१] जब जाफ़र (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने हब्शा के राजा नजाशी को सूरह मर्यम की आरंभिक आयतें सुनाईं तो वह और उस के पादरी रोने लगे। (सीरत इब्ने हिशाम – १/३५९)

[२] अर्थात किसी भी खाद्य अथवा वस्तु को वैध अथवा अवैध करने का अधिकार केवल अल्लाह को है।

[३] यहाँ से वर्णन क्रम, फिर आदेशों तथा निषेधों की ओर फिर रहा है। अन्य धर्मों के अनुयायियों ने सन्यास को अल्लाह के सामिप्य का साधन समज लिया था, और ईसाइयों ने सन्यास की रीति बना ली थी और अपने ऊपर संसारिक उचित स्वाद तथा सुख को अवैध कर लिया था। इस लिये यहाँ सावदान किया जा रहा है कि यह कोई अच्छाई नहीं, बल्कि धर्म सीमा का उल्लंघन है।

[४] व्यर्थ: अर्थात बिना निश्चय के। जैसे कोई बात बात पर बोलता है : (नहीं, अल्लाह की शपथ!) अथवा : (हाँ, अल्लाह की शपथ!) (बुख़ारी – ४६१३)

[५] अर्थात यदि शपथ तोड़ दे, तो यह प्रायश्चित है

न हो, तो तीन दिन रोज़ा रखना है। यह तुम्हारी शपथें का प्रायश्चित है, जब तुम शपथ लो। तथा अपनी शपथों की रक्षा करो, इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये अपनी आयतो (आदेशों) का वर्णन करता है, ताकि तुम उस का उपकार मानो।

९०. हे ईमान वालो! निस्संदेह[1] मदिरा, जुआ तथा देवस्थान[2] और पाँसे[3] शैतानी मलिन कर्म हैं, अत: इन से दूर रहो, ताकि तुम सफल हो जाओ।

९१. शैतान तो यही चाहता है कि शराब (मदिरा) तथा जूए द्वारा तुम्हारे बीच बैर तथा द्वेष डाल दे, और तुम्हें अल्लह की याद तथा नमाज़ से रोक दे, तो क्या तुम रुकोगे या नहीं?

९२. तथा अल्लाह के अज्ञाकारी रहो, और उस के रसूल के आज्ञाकारी रहो, तथा (उन की अवैज्ञा से) सावधान रहो और यदि तुम विमुख हुये, तो जान ले कि हमारे रसूल पर केवल खुला उपदेश पहुँचा देना है।

९३. उन पर जो ईमान लाये तथा सदाचार करते रहे, उस में कोई दोष नहीं, जो (निषेधाज्ञा से पहले) खा लिया, जब वह अल्लाह से डरते रहे तथा ईमान पर स्थिर रह गये, और सत्कर्म करते रहे, फिर डरते और सत्कर्म करते रहे, फिर (रोके गये तो) अल्लाह से डरे और सदाचार करते रहे, तो अल्लाह सदाचारियों से प्रेम करता[4] है।

९४. हे ईमान वालो! अल्लाह कुछ शिकार द्वारा जिन तक तुम्हारे हाथ तथा भाले पहुँचेंगे, अवश्य तुम्हारी परीक्षा लेगा, ताकि यह जान ले कि तुम में से कौन उस से बिन

[1] शराब के निषेध के विषय में पहले सूरह बकरा आयत २१९, और सूरह निसा आयत ४३ में दो आदेश आ चुके हैं। और यह अन्तिम आदेश हैं, जिस में शराब को सदैव के लिये वर्जित कर दिया गया है।

[2] देवस्थान: अर्थात वह वेदियाँ जिन पर देवी देवताओं के नाम पर पशुओं की बलि दी जाती हैं। आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह के सिवा किसी अन्य के नाम से बलि दिया हुआ पशु अथवा प्रसाद अवैध है।

[3] पाँसे: यह तीन तीर होते थे, जिन से वह कोई काम करने के समय यह निर्णय लेते थे कि उसे करें या न करें। उन में एक पर ''करो'' और दूसरे पर ''मत करो' और तीसरे पर ''शून्य'' लिखा होता था। जूवे में लाट्री और रेस इत्यादि भी शामिल हैं।

[4] आयत का भावार्थ यह है कि जिन्होंने वर्जित चीज़ों का निषधाज्ञा से पहले प्रयोग किया, फिर जब भी उन को अवैध किया गया तो उन से रुक गये, उन पर कोई दोष नहीं। सहीह हसीद में है कि जब शराब वर्जित की गयी तो कुछ लोगो ने कहा कि कुछ लोग इस स्थिति में मारे गये कि वह शराब पिये हुये थे, उसी पर यह आयत उतरी। (बुख़ारी – ४६२०)। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: जो भी नशा लाये वह मदिरा और अवैध है। (सहीह बुख़ारी – २००३)। और इस्लम में उस का दण्ड अस्सी कोड़े हैं। (बुख़ारी – ६७७९)

देखे डरता है? फिर इस (आदेश) के पश्चात् जिस ने (इस का) उल्लंघन किया, तो उस के लिये दु:खदायी यातना है।

९५. हे ईमान वालो! शिकार न करो[1] जब तुम एहराम की स्थिति में रहो, तथा तुम में से जो कोई जान बूझकर ऐसा कर जाये, तो पालतू पशु से शिकार किये पशु जैसा बदला (प्रतिकार) है, जिस का निर्णय तुम में से दो न्यायकारी व्यक्ति करेंगे, जो काबा तक हद्य (उपहार स्वरूप) भेजा जाये। अथवा[2] प्रायश्चित है, जो कुछ निर्धानों को खाना है, अथवा उस के बराबर रोज़े रखना है। ताकि अपने किये का दुष्परिणाम चखे। इस आदेश से पूर्व जो हुआ अल्लाह ने उसे क्षमा कर दिया, और जो फिर करेगा, अल्लाह उस से बदला लेगा, और अल्लाह प्रभुत्वशाली बदला लेने वाला है।

९६. तथा तुम्हारे लिये जल का शिकार और उस का खाद्य[3] हलाल (वैध) कर दिया गया हैं, तुम्हारे तथा यात्रियों के लाभ के लिये, तथा तुम पर थल का शिकार जब तक एहराम की स्थिति में रहो, हराम (अवैध) कर दिया गया है, और अल्लाह (की अवैज्ञा) से डरते रहो, जिस की ओर तुम सभी एकत्र किये जाओगे।

९७. अल्लाह ने आदरणीय घर काबा को लोगों के लिये (शान्ति तथा एकता की) स्थापना का साधन बना दिया है, तथा आदरणीय मासों[4] और (हज्ज) की कुर्बानी तथा कुर्बानी के पशुओं को जिन्हें पट्टे पहनाये गये हों, यह इस लिये किया गया ताकि तुम्हें ज्ञान हो जाये कि अल्लाह जो कुछ आकाशें और जो कुछ धरती में है सब को जानता है। तथा निस्संदेह अल्लाह प्रत्येक विषय का ज्ञानी है।

९८. तुम जान लो कि अल्लाह कड़ा दण्ड देने वाला है, और यह कि अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् (भी) है।

---

[1] इस से अभिप्राय थल का शिकार है।

[2] अर्थात यदि शिकार के पशु के समान पालतू पशु न हो, तो उस का मूल्य हरम के निर्धनों को खाने के लिये भेजा जाये अथवा उस के मूल्य से जितने निर्धनों को खिलाया जा सकता हो उतने ब्रत रखे

[3] अर्थात जो बिना शिकार किये हाथ आये, जैसे मरी हुई मछली। अर्थात जल का शिकार एहराम की स्थिति में तथा साधारण अवस्था में उचित है।

[4] आदरणीय मासों से अभिप्रेत: जुलक़ादा जुलहिज्जा तथा मुहर्रम और रजब के महीने है।

९९. अल्लाह के रसूल का यायित्व इस के सिवा कुछ नहीं कि उपदेश पहुँचा दे। और अल्लाह जो तुम बोलते और जो मन में रखते हो, सब जानता है।

१००.(हे नबी!) कह दो कि मलिन तथा पवित्र समान नहीं हो सकते। यद्यपि मलिन की अधिकता तुम्हें भा रही हो। तो हे मतिमानों! अल्लाह (की अवैज्ञा) से डरो, ताकि तुम सफल हो जाओ।[1]

१०१.हे ईमान वालो! ऐसी बहुत सी चीज़ों के विषय में प्रश्न न करो, जो यदि तुम्हें बता दी जायें, तो तुम्हें बुरा लग जाये। तथा यदि तुम उन के विषय में जब कि कुरआन उतर रहा है, प्रश्न करोगे, तो वह तुम्हारे लिये खोल दी जायेंगी, अल्लाह ने तुम्हें क्षमा कर दिया। और अल्लाह अति क्षमाशील सहनशील[2] है।

१०२.ऐसे ही प्रश्न एक समुदाय ने तुम से पहले[3] किये, फिर इस के कारण वह काफ़िर हो गये।

१०३.अल्लाह ने बहीरा और साइबा तथा वसीला और हाम कुछ नहीं बनाया[4] है, परन्तु जो काफ़िर हो गये, वह अल्लाह पर झूठ घड़ रहे हैं, और उन में अधिक्तर निर्बोध हैं।

---

[1] आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह ने जिसे रोक दिया है, वही मलिन और जिस की अनुमति दी है, वही पवित्र है। अत:मलिन में रुची न रखो, और किसी चीज़ की कमी और अधिक्ता को न देखो, उस के लाभ और हानि को देखो।

[2] इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि कुछ लोग नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से उपहास के लिये प्रश्न किया करते थे। कोई प्रश्न करता कि मेरा पिता कौन है? किसी की ऊँटनी खो गयी हो तो आप से प्रश्न करता कि मेरी ऊँटनी कहाँ है? इसी पर यह आयत उतरी।(सहीह बुख़ारी – ४६२२)

[3] अर्थात अपने रसूलों से१ आयत का भावार्थ यह है कि धर्म के विषय में कुरेद न करो। जो करना है, अल्लाह ने बता दिया है, और जो नहीं बताया है, उसे क्षमा कर दिया है, अत: अपने मन से प्रश्न न करो, अन्यथा धर्म में सुविधा की जगह असुविधा पैदा होगी, और प्रतिबंध अधिक हो जायेंगे, तो फिर तुम उन का पालन न कर सकोंगे।

[4] अरब के मिश्रणवादी देवी देवता के नाम पर कुछ पशुओं को छोड़ देते थे, और उन्हें पवित्र समझते थे, यहाँ उन्हीं की चर्चा की गयी है।

बहीरा – वह ऊँटनी जिस को, उस का कान चीर कर देवताओं के लिये मुक्त कर दिया जाता था, और उस का दूध कोई नहीं दूह सकता था।

साइबा – वह पशु जिसे देवताओं के नाम पर मुक्त कर देते थे, जिस पर कोई बोझ लाद सकता था, न सवार हो सकता था।

वसीला – वह ऊँटनी जिस का पहला तथा दूसरा बच्चा मादा हो, ऐसी ऊँटनी को भी देवताओं के नाम पर मुक्त कर देते थे।

हाम – नर जिस के वीर्य से दस बच्चे हो जायें, उन्हें भी देवताओं के नाम पर साँड बनाकर मुक्त कर दिया जाता था।

भावार्थ यह है कि: यह अनर्गल चीज़ें हैं। अल्लाह ने इस का आदेश नहीं दिया है। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: मैंने नरक को देखा कि उस की ज्वाला एक दूसरे को तोड़ रही है। और अमर बिन लुहय्य को देखा कि वह अपनी आँते खींच रहा है। उसी ने सब से पहले साइबा बनाया था। (बुख़ारी – ४६२४)

१०४.और जब उन से कहा जाता है कि उस की ओर आओ जो अल्लाह ने उतारा है, तथा रसूल की ओर (आओ) तो कहते हैं: हम को वही बस है, जिस पर हम ने अपने पूर्वजों को पाया है, क्या उन के पूर्वज कुछ न जानते रहे हों और न संमार्ग पर रहे हों?

१०५.हे ईमान वालो! तुम अपनी चिन्ता करो, तुम्हें वे हानि नहीं पहुँचा सकेंगे जो कुपथ हो गये, जब तुम सुपथ पर रहो। अल्लाह की ओर तुम सब को (परलोक में) फिर कर जाना है, फिर वह तुम्हें तुम्हारे[1] कर्मों से सूचित कर देगा।

१०६. हे ईमान वालो! यदि किसी के मरण का समय हो, तो वसिय्यत[2] के समय तुम में से दो न्यायकारियों को अथवा तुम्हारे सिवा दो दूसरों को गवाह बनाये, यदि तुम धरती में यात्रा कर रहे हो, और तुम्हें मरण की आपदा आ पहुँचे। और उन दोनों को नमाज के बाद रोक लो, फिर वह दोनों अल्लाह की शपथ लें, यदि तुम्हें उन पर संदेह हो। वह यह कहें कि हम गवाही के द्वारा कोई मूल्य नहीं खरीतदे, यद्यपि वह समीपवर्ती क्यों न हों, और न हम अल्लाह की गवाही को छुपाते हैं, यदि हम ऐसा करें तो पापियों में हैं।

१०७. फिर यदि ज्ञान हो जाये कि वह दोनों (साक्षी) किसी पाप के अधिकारी हुये हैं, तो उन दोनों के स्थान पर दो दूसरे गवाह खड़े हो जाये, उन में से जिन का अधिकार पहले दोनों ने दबाया है, और वह दोनों शपथ लें कि हमारी गवाही उन दोनों की गवाही से अधिक सहीह है, और हम ने कोई अत्याचार नहीं किया है। यदि किया है, तो (निस्संदेह) हम अत्याचारी है।

१०८. इस प्रकार अधिक आशा है कि वह सही गवाही देंगे, अथवा इस बात से डरेंगे कि उन की शपथों को दूसरी शपथों के पश्चात् न माना जाये, तथा अल्लाह से डरते

[1] आयत का भावार्थ यह है कि यदि लोग कुपथ हो जायें, तो उन का कुपथ होना तुम्हारे लिये तर्क (दलील) नहीं हो सकता कि जब सभी कुपथ हो रहें" तो हम अकेले क्या करें? प्रत्येक व्यक्ति पर स्वयं अपना दायित्व है, दूसरों का दायित्व उस पर नहीं, अत: पूरा संसार कुपथ हो जाये तब भी तुम सत्य पर स्थित रहो।

[2] वसिय्यत का अर्थ है: उत्तरदान, मरणासन्न आदेश।

रहो, और (उस का आदेश) सुनो, और अल्लाह उल्लंघनकारियों को सीधी राह नहीं[1] दिखाता।

१०९. जिस दिन अल्लाह सब रसूलों को एकत्र करेगा, फिर उन से कहेगा कि तुम्हें (तुम्हारी जातियों की ओर से) क्या उत्तर दिया गया? वह कहेंगे कि हमें इस का कोई ज्ञान[2] नहीं। निस्संदेह तू ही सब छुपे तथ्यों का ज्ञानी है।

११०. तथा याद करो, जब अल्लाह ने कहा: हे मर्यम के पुत्र ईसा! अपने ऊपर तथा अपनी माता पर मेरे पुरस्कार को याद कर, जब मैं ने पवित्रात्मा (जिब्रील) द्वारा तुमझे समर्थन दिया, तू गहवारे (गोद) में तथा बड़ी आयु में लोगों से बातें कर रहा था, तथा तुझे पुस्तक और प्रबोध तथा तौरात और इंजील की शिक्षा दी, जब तू मेरी अनुमति से मिट्टी से पक्षी का रूप बताता, और उस में फूँकता, तो वह मेरी अनुमति से वास्तव में पक्षी बन जाता था। और तू जन्म से अंधे तथा कोढ़ी को मेरी अनुमति से स्वस्थ कर देता था, और जब तू मुर्दों को मेरी अनुमति से जीवित कर देता था, और मैंने बनी इस्राईल से तुझे बचाया था, जब तू उन के पास खुली निशानियाँ लाया, तो उन में से काफ़िरों ने कहा कि यह तो खुले जादू के सिवा कुछ नहीं हैं।

१११. तथा याद कर, जब मैंने तेरे हवारियों के दिलों में यह बात डाल दी कि मुझ पर तथा मेरे रसूल (ईसा) पर ईमान लाओ, तो सब ने कहा कि हम ईमान लाये, और तू साक्षी रह कि हम मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं।

११२. जब हवारियों ने कहा: हे मर्यम के पुत्र ईसा! क्या तेरा पालनहार यह कर सकता है कि हम पर आकाश से था (दस्तर ख़्वान) उतार दे। उस (ईसा) ने कहा: तुम अल्लाह से डरो, यदि तुम वास्तव में ईमान वाले हो।

---

[1] आयत १०६ से १०८ तक में वसिय्यत तथा उस के साक्ष्य का नियम बताया जा रहा है कि दो विश्वस्त व्यक्तियों को साक्षी बनाया जाये, और यदि मुसलमान न मिलें जो ग़ैर मुस्लिम भी साक्षी हो सकते हैं। साक्षियों को शपथ के साथ साक्ष्य देना चाहिये। विवाद की दशा में दोनों पक्ष अपने अपने साक्षी लायें। जो इन्कार करे उस पर शपत है।

[2] अर्थात हम नहीं जानते कि उन के मन में क्या था, और हमारे बाद उन का कर्म क्या रहा?

११३. उनहों ने कहा: हम चाहते हैं कि उस में से खायें, और हमारे दिलों को संतोष हो जाये, तथा हमें विश्वस हो जाये कि तू ने हमें जो कुछ बताया है सच्च है, और हम उस के साक्षियों में से हो जायें।

११४. मर्यम के पुत्र ईसा ने प्रार्थना की: हे अल्लाह हमारे पालनहार! हम पर आकाश से एक थाल उतार दे, जो हमारे तथा हमारे पश्चात् के लोगों के लिये उत्सव (का दिन) बन जाये, तथा तेरी ओर से एक चिन्ह (निशानी)। तथा हमें जीविका प्रदान कर, तू उत्तम जीविका प्रदाता है।

११५. अल्लाह ने कहा मैं तुम पर उसे उतारने वाला हूँ, फिर उस के पश्चात् भी जो कुफ़्र (अविश्वास) करेगा, तो मैं निश्चय उस दण्ड दूँगा, ऐसा दण्ड[1] कि संसार वासियों में से किसी को वैसा दण्ड नहीं दूंगा।

११६. तथा जब अल्लाह (प्रलय के दिन) कहेगा: हे मर्यम के पुत्र ईसा! क्या तुम ने लोगों से कहा था कि अल्लाह को छोड़कर मुझे तथा मेरी माता को पूज्य (अराध्य) बना लो? वह कहेगा: तू पवित्र है, मुझ से यह कैसे हो सकता है कि ऐसी बात कहूँ जिस का मुझे कोई अधिकार नहीं? यदि मैंने कहा होगा, तो तुझे अवश्य उस का ज्ञान हुआ होगा। तू मेरे मन की बात जानता है, और मैं तेरे मन की बात नहीं जानता। वास्तव में तू ही परोक्ष (ग़ैब) का अति ज्ञानी है।

११७. मैंने तो उन से केवल वही कहा था, जिस का तू ने आदेश दिया था कि अल्लाह की इबादत करो, जो मेरा पालनहार तथा तुम सभी का पालनहार है। मैं उन की दशा जानता था जब तक उन में था और जब तू ने मेरा समय पूरा कर दिया[2] तो तू ही उन को जानता था। और तू प्रत्येक वस्तु से सूचित है।

११८. यदि तू उन्हें दण्ड दे, तो वह तेरे दास (बन्दे) हैं, और यदि तू उन्हें क्षमा कर दे, तो वास्तव में तू ही प्रभावशाली गुणी है।

११९. अल्लाह कहेगा: यह वह दिन है, जिस में सच्चों को उन का सच्च ही लाभ देगा। उन्हीं के लिये ऐसे स्वर्ग हैं जिन में नहरें प्रवाहित हैं। वह उन में नित्य सदावासी

---

[1] अधिक्तर भाष्यकारों ने लिखा है, कि वह थाल आकाश से उतरा। (इब्ने कसीर)

[2] और मुझे आकाश पर उठा लिया, नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा, जब प्रलय के दिन कुछ लोग बायें से धर लिये जायेंगे तो मैं भी यही कहूँगा। (बुख़ारी – ४६२६)

होंगे, अल्लाह उन से प्रसन्न हो गया तथा वह अल्लाह से प्रसन्न हो गये और यही सब से बड़ी सफलता है।

१२०. आकाशों तथा धरती और उन में जो कुछ है, सब का राज्य अल्लाह ही का[1] हैं, तथा वह जो चाहे कर सकता है।

*****

[1] आयत ११६ से अब तक की आयतों का सारांश यह है कि अल्लाह ने पहले अपने वह पुरस्कार याद दिलाये जो ईसा अलैहिस्सलाम पर किये। फिर कहा कि सत्य की शिक्षावों के होते तेरे अनुयायियों ने क्यों तुझे तथा तेरी माता को पूज्य बना लिया? इस पर ईसा अलैहिस्सलाम कहेंगे कि मैं इस से नर्दोष हूँ। अभिप्राय यह है कि सभी नबियों ने एकेश्वरवाद तथा सत्कर्म की शिक्षा दी। परन्तु उन के अनुयायियों ने उन्ही को पूज्य बना लिया। इसलिये इस का भार अनुयायियों और वे जिस की पूजा कर रहें हैं उन उन है। वह स्वयं इस से निर्दोष हैं।

सूरह अन्आम – ६

सूरह अन्आम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में १६५ आयतें हैं।

- अन्आम का अर्थ: चौपाये होता है। इस सूरह में कुछ चौपायों के वैध तथा अवैध होने के संबंध में अरब वासियों के भ्रम को खण्डन किया गया है। और इसी लिये इस सूरह का नाम (अन्आम) रखा गया है।
- इस में शिर्क का खण्डन किया गया है। और एकेश्वर का आमंत्रण दिया गया है।
- इस में आख़िरत (परलोक) के प्रति आस्था का प्रचार है। तथा इस कुविचार का खण्डन है कि जो कुछ है यही संसारिक जीवन है।
- इस में उन नैतिक नियमों को बताया गया है जिन पर इस्लामी समाज की स्थापना होती है और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विरुद्ध आपत्तियों का उत्तर दिया गया है।
- आकाशों तथा धरती और स्वयं मनुष्य में अल्लाह के एक होने की निशानियों पर धयान दिलाया गया है।
- इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा मुसलमानों को दिलासा दी गई है।
- इस्लाम के विरोधियों को उन की अचेतना पर सावधान किया गया है।
- अन्त में कहा गया है कि लोगों ने अलग-अलग धर्म बना लिये है जिन का सत्धर्म से कोई संबंध नहीं। और प्रत्येक अपने कर्म का उत्तरदायी है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है, जिस ने आकाशें तथा धरती को बनाया तथा अंधेरे और उजाला बनाया, फिर भी जो काफ़िर हो गये, वह (दूसरों को) अपने पालनहार के बराबर समझते[१] हैं।

२. वही है जिस ने तुम्हें मिट्टी से उत्पन्न[२] किया फिर (तुम्हारे जीवन की) अवधि निर्धारित कर दी, और एक निर्धारित अवधि (प्रलय का समय) उस के पास[३] है, फिर भी तुम संदेह करते हो।

३. वही अल्लाह पूज्य है आकाशों तथा धरती में। वह तुम्हारे भेदों तथा खुली बातों को जानता है। तथा तुम जो भी करते हो उस को जानता है।

४. और उन के पास उन के पालनहार की आयतों (निशानियों) में से कोई आयत (निशानी) नहीं आई, जिस से उन्होंने मुँह फेर[४] लिये हों।

५. उन्होंने सत्य को झुठला दिया है, जब भी उन के पास आया। तो शीघ्र ही उन के पास उस के समाचार आ जायेंगे[५] जिस का उपहास कर रहे हैं।

६. क्या वह नहीं जानते कि उन के पहले हम ने कितनी जातियों का नाश कर दिया जिन्हें हम ने धरती में ऐसी शक्ति और अधिकार दिया था जो अधिकार और शक्ति तुम्हें नहीं दिये हैं। और हम ने उन पर धारा प्रवाह वर्षा की, और उन की धरती में नहरें प्रवाहित कर दीं, फिर हम ने उन के पानों के कारण उन्हें नाश कर दिया,[६] और उन के पश्चात् दूसरी जातियों को पैदा कर दिया।

---

[१] अर्थात वह अधोरों और प्रकाश में विवेक (अन्तर) नहीं करते, और रचित को रचियिता का स्थान देते है।

[२] अर्थात तुम्हारे पिता आदम अलैहिस्सलाम को।

[३] दो अवधि एक जीवन और कर्म के लिये, तथा दूसरी कर्मों के फल के लिये।

[४] अर्थात मिश्रणवादियों के पास।

[५] अर्थात उस के तथ्य का ज्ञान हो जायेगा। यह आयत मक्का में उस समय उतरी जब मुलसमान विवश थे, परन्तु बद्र के युद्ध के बाद यह भविष्य वाणी पूरी होने लगी और अन्ततः मिश्रणवादी परास्त हो गये।

[६] अर्थात अल्लाह का यह नियम है कि पापियों को कुछ अव्सर देता है, और अन्ततः उन का विनाश कर देता है।

७. (हे नबी!) यदि हम आप पर कागज़ में लिखी हुई कोई पुस्तक उतार[1] दें, फिर वह उसे अपने हाथों से छूयें, तब भी जो काफ़िर हैं, कह देंगे कि यह केवल खुला हुआ जादू है।

८. तथा उन्होंनें कहा:[2] इस (नबी) पर कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतारा[3] गया? और यदि हम कोई फ़रिश्ता उतार देते, तो निर्णय ही कर दिया जाता, फिर उन्हें अव्सर नहीं दिया जाता।[4]

९. और यदि हम किसी फ़रिश्ते को नबी बनाते, तो उस किसी पुरुष ही के में बनाते,[5] और उन को उसी संदेह में डाल देते जो संदेह (अब) कर रहे है।

१०. हे नबी! आप से पहले भी रसूलों के साथ उपहास किया गया, तो जिन्होंने उन से उपहास किया, उन को उन के उपहास के (दुष्परिणाम ने घेर लिया।)

११. (हे नबी!) उन से कहो कि धरती में फिरो, फिर देखो कि झुठलाने वालों का दुष्परिणाम कया[6] हुआ?

१२. (हे नबी!) उन से पूछिये कि जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, वह किस का है? कहो: अल्लाह का है, उस ने अपने ऊपर दया को अनिवार्य कर[7] लिया है, वह तुम्हें अवश्य प्रलय के दिन एकत्र[8] करेगा जिस में कोई संदेह नहीं, जिन्होंने अपने अपने आप को क्षति में डाल लिया वही ईमान नहीं ला रहे हैं।

---

[1] इस में इन काफ़िरों के दुराग्रह की दशा का वर्णन है।

[2] जैसा कि वह माँग करते हैं। (देखिये : सूरह बनी इस्राईल, आयत: ९३)

[3] अर्थात अपने वास्तविक रूप में जब कि जिब्रील (अलैहिस्सलाम) मनुष्य के रूप में आया करत थे।

[4] अर्थात मानने या न मानने का।

[5] क्योंकि फ़रिशते को आँखों से उस के स्वभाविक रूप में देखना मानव के बस में नहीं है। और यदि फ़रिश्ते को रसूल बना कर मनुष्य के रूप में भेजा जाता तब भी यह कहते यह तो मनुष्य है। यह रसूल कैसे हो सकता है?

[6] अर्थात मक्का से शाम तक आद, समूद तथा लूत (अलैहिस्सलाम) की बस्तियों के अवशेष पड़े हुये हैं, वहाँ जाओ और उन के दुष्परिणामों से शिक्षा लो।

[7] अर्थात पूरे विश्व की व्यवस्था उस की दया का प्रमाण है। तथा अपनी दया के कारण ही विश्व में दण्ड नहीं दे रहा है। हदीस में है कि जब अल्लाह ने उत्पत्ति कर ली तो एक लेख लिखा जो उस के पास उस के अर्श (सिंहासन) के ऊपर है: (निश्चय मेरी दया मेरे क्रोध से बढ़कर है।) (सहीह बुख़ारी – ३१९४, मुस्लिम – २७५१) दूसरी हदीस में है कि अल्लाह के पास सौ दया हैं। उस में से एक को जिन्नों, इन्सानों तथा पशुवों और कीड़ों–मकोड़ों के लिये उतारा है। जिस से वह आपस में प्रेम तथा दया करते हैं तथा निन्नावे दया अपने पास रख ली है। जिन से प्रलय के दिन अपने बंदों (भक्तों) पर दया करेगा। (सहीह बुख़ारी – ६०००, सहीह मुस्लिम – २७५२)

[8] अर्थात कर्मों का फल देने के लिये।

१३. तथा उसी का[१] है, जो कुछ रात और दिन में बस रहा है, और वह सब कुछ सुनता जानता है।

१४. (हे नबी!) उन से कहो कि क्या मैं उस अल्लाह के सिवा (किसी) को सहायक बना लूँ, जो आकाशों तथा धरती का बनाने वाला है, वह सब को खिलाता है और उसे कोई नहीं खिलाता? आप कहिये कि मुझे तो यही आदेश दिया गया है कि प्रथम आज्ञाकारी हो जाऊँ तथा कदापि मुश्रिकों में से न बनूँ।

१५. आप कह दें कि मैं डरता हूँ यदि अपने पालनहार की अवज्ञा करूँ तो एक घोर दिन[२] की यातना से।

१६. तथा जिस से उस (यातना) को उस दिन फेर दिया गया, तो अल्लाह ने उस पर दया कर दी, और यही खुली सफलता है।

१७. यदि अल्लह तुम्हें कोई हानि पहुँचाये, तो उस के सिवा कोई नहीं जो उसे दूर कर दे और यदि तुम्हें कोई लाभ पहुँचाये, तो वही जो चाहे कर सकता है।

१८. तथा वही है, जो अपने सेवकों पर पूरा अधिकार रखता है तथा वह बड़ा ज्ञानी सर्वसूचित है।

१९. हे नबी! इन (मुश्रिकों) से पूछों कि किस की गवाही सब से बढ़कर है? आप कह दें कि अल्लाह मेरे तथा तुम्हारे बीच गवाह[३] है। तथा मेरी और यह कुरआन वह्यी (प्रकाशना) द्वारा भेजा गया है, ताकि मैं तुम्हे सावधान करूँ[४] तथा उसे जिस तक तक यह पहुँचे। क्या वास्तव में तुम यह साक्ष्य (गवाही) दे सकते हो कि अल्लाह के साथ दूसरे पूज्य भी हैं? आप कह दें कि मैं तो इस की गवाही नहीं दे सकता। आप कह दें कि वह तो केवल एक ही पूज्य है, तता वास्तव में मैं तुम्हारे शिर्क से विरक्त हूँ।

---

[१] अर्थात उसी के अधिकार में तथा उसी के आधीन है।

[२] इस आयतों को भावार्थ यह है कि जब अल्लाह ही ने इस विश्व की उत्पत्ति की है, वही अपनी दया से इस की व्यवस्था कर रहा है, और सब को जीविका प्रदान कर रहा है, तो फिर तुम्हारा स्वभाविक कर्म भी यही होना चाहिये कि उसी एक की वंदना करो। यह तो बड़े कुपथ की बात होगी कि उस से मुँह फेर कर दूसरों की पूजा अराधना करो और उन के आगे झुको।

[३] अर्थात मेरे नबी होने का साक्षी अल्लाह तथा उस का मुझ पर उतारा हुआ कुरआन है।

[४] अर्थात अल्लाह की अवैज्ञा के दुष्परिणाम से।

२०. जिन लोगों को हम ने पुस्तक[1] प्रादन की है, वह आप को उसी प्रकार पहचानते हैं, जैसे अपने पुत्रों को पहचानते[2] हैं, परन्तु जिन्हों ने स्वयं को क्षति में डाल रखा है, वही ईमान नहीं ला रहे हैं।

२१. तथा उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर झूठा आरोप लगाये[3], अथवा उस की आयतों को झुठलाये? निस्संदेह अत्याचारी सफल नहीं होंगे।

२२. जिस दिन हम सब को एकत्र करेंगे, तो जिन्हों ने शिर्क किया है, उन से कहेंगे कि तुम्हारे वह साझी कहाँ गये जिन्हें तुम (पूज्य) समझ रहे थे?

२३. फिर नहीं होगा उन का उपद्रव इस के सिवा कि: वह कहेंगे कि अल्लाह की शपथ! हम मुश्रिक थे ही नहीं।

२४. देखो कि कैसे अपने ऊपर ही झूठ बोल गये और उन से वह (मिथ्या पूज्य) जो बना रहे थे खो गये!

२५. और उन (मुश्रिकों) में से कुछ आप की बात ध्यान से सुनते हैं, और(वास्तव में) हम ने उन के दिलों पर पर्दे (आवरण) डाल रखे हैं कि बात न इमझें[4], और उन के कान भारी कर दिये हैं, यदि वह (सत्य के) प्रत्येक लक्षण देख लें, तब भी उस पर ईमान नहीं लायेंगे यहाँ तक कि जब वह आप के पास आ कर झगड़ते हैं, जो काफ़िर हैं तो वह कहते हैं कि यह तो पूर्वजों की कतायें हैं।

२६. वह उसे[5] (सुनने से) दूसरों को रोकते हैं, तथा स्वयं भी दूर रहते हैं। और वह अपना ही विनाथ कर रहें हैं। परन्तु समझते नहीं हैं।

२७. तथा (हे नबी!) यदि आप उन्हें उस समय देखेंगे, जब वह नरक के समीप खड़े किये जायेंगे, तो वह कामना कर रहे होंगे कि ऐसा होता कि हम संसार की ओर पेर दिये जाते और अपने पालनहार की आयतों को नहीं झुठलाते, और हम ईमान वालो में हो जाते।

---

[1] अर्थात तौरात तथा इंजील आदि।

[2] अर्थात आप के उन गुणों द्वारा जो उन की पुस्तकों में वर्णित है।

[3] अर्थात अल्लाह का साझी बनाये।

[4] न समझने तथा न सुनने का अर्थ यह है कि उस से प्रभावित नहीं होते क्यों कि कुफ़्र तथा निफ़ाक़ के कारण सत्य से प्रभावित होने की क्षमता खो जाती है।

[5] अर्थात कुरआन सुनने से।

२८. बल्कि उन के लिये वह बात खुल जायेगी, जिसे वह इस से पहले छुपा रहे थे[१] और यदि संसार मे फेर दिये जायें, तो फिर वही करेंगे जिस से रोके गये थे। वास्तव में वह हैं ही झूठे।

२९. तथा उन्होंने कहा कि: जीवन बस हमारा संसारिक जीवन है और हमें फिर जीवित होना[२] नहीं है।

३०. तथा यदि आप उन्हें उस समय देखेंगे जब वह (प्रलय के दिन) अपने पालनहार के समक्ष खड़े किये जायेंगे, उस समय अल्लाह उन से कहेगा: तो अब अपने कुफ़्र करने की यातना चखो।

३१. निश्चय वह क्षति में पड़ गये, जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठला दिया, यहाँ तक कि जब प्रलय अचानक उन पर आ जायेगी तो कहेंगे: हाय! इस विषय में हम से बड़ी चूक हुई। और वह अपने पापों का बोझ अपनी पीठों पर उठाये होंगे। तो कैसा बुरा बोझ है जिसे वह उठा रहे हैं।

३२. तथा संसारिक जीवन एक खेल और मनोरंजन[३] है। तथा परलोक का घर ही उत्तम[४] है, उन के लिये जो अल्लाह से डरते हों, तो क्या तुम समझते[५] नहीं हो?

३३. (हे नबी!) हम जानते हैं कि उन की बातें आप को उदासीन कर देती हैं, तो वास्तव में वह आप को नहीं झुठलाते, परन्तु यह अत्याचारी अल्लाह की आयतों को नकारते हैं।

३४. और आप से पहले भी बहुत से रसूल झुठलाये गये। तो इसे उन्होंने सहन किया, और उन्हें दुःख दिया गया, यहाँ तक कि हमारी सहायता आ गयी। तथा अल्लाह

---

[१] अर्थात जिस तथ्य को वह शपथ लेकर छुपा रहे थे कि हम मिश्रणवादी नहीं थे, उस समय खुल जायेगा। अथवा आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को पहचानते हुये भी यह बात जो छुपा रहे थे, वह खुल जायेगी। अथवा द्विधावादियों के दिल का वह रोग खुल जायेगा, जिसे वह संसार में छुपा रहे थे। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

[२] अर्थात हम मरने के पश्चात् परलोक में कर्मों का फल भोगने के लिये जीवित नहीं किये जायेंगे।

[३] अर्थात साम्यिक और आस्थायी है।

[४] अर्थात स्थायी है।

[५] आयत का भावार्थ यह है कि यदि कर्मों के फल के लिये कोई दूसरा जीवन न हो तो, संसारिक जीवन एक मनोरंजन और और खेल से अधिक कुछ नहीं रह जायेगा। तो क्या यह संसारिक व्यवस्था इसी लिये की गयी है कि कुछ दिनों खेलो और फिर समाप्त हो जाये? यह बात तो समझ बूझ का निर्णय नहीं हो सकती। अत: एक दूसरे जीवन का होना ही समझ बूझ का निर्णय है।

की बातों को कोई बदल नहीं[1] सकता, और आप के पास रसूलों के समाचार आ चुके हैं।

३५. और यदि आप को उन की विमुखता भारी लग रही है, तो यदि आप से हो सके, तो धरती में कोई सुरंग खोज लें, अथवा आकाश में कोई सीढ़ी लगा लें, फिर उन के पास कोई निशानी (चमत्कार) ला दें, और यदि अल्लाह चाहे तो इन्हें मार्गदर्शन पर एकत्र कर दे। अतः आप कदापि अज्ञानों में न हों।

३६. आप की बात वही स्वीकार करेंगे, जो सुनते हों, परन्तु जो मुर्दे हैं उन्हें तो अल्लाह[2] ही जीवित करेंगा, फिर उसी की ओर फेरे जायेंगे।

३७. तथा उन्होंने कहा कि: नबी पर उस के पालनहार की ओर से कोई चमत्कार क्यों नहीं उतारा गया? आप कह दें कि अल्लाह इस का सामर्थ्य रखता है, परन्तु अधिक्तर लोग अज्ञान है।

३८. धरती में विचरते जीव तथा अपने दो पंखों से उड़ते पक्षी तुम्हारी जैसी जातियाँ हैं, हम ने पुस्तक[3] में कुछ कमी नहीं की[4] है, फिर वह अपने पालनहार की ओर ही एकत्र किये[5] जायेंगे।

३९. तथा जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठला दिया, वह गूँगे, बहरे, अंधेरों में हैं। जिसे अल्लाह चाहता है कुपथ करता है, और जिस चाहता है सीधी राह पर लगा देता है।

---

[1] अर्थात अल्लाह के निर्धारित नियम को, कि पहले वह परीक्षा में डालता है, फिर सहायता करता है।

[2] अर्थात प्रलय के दिन उन की समाधियों से। आयत का भावार्थ यह है कि आप के सदुपदेश को वही स्वीकार करेंगे जिन की अन्तरात्मा जीवित हो। परन्तु जिन के दिल निर्जीव हैं तो यदि आप धरती अथवा आकाश से लाकर उन्हें कोई चमत्कार भी दिखा दें तब भी वह उन के लिये व्यर्थ होगा। यह सत्य को स्वीकार करने की योग्यता ही खो चुके हैं।

[3] पुस्तक का अर्थ (लौहे मह्फूज़) है जिस में सारे संसार का भाग्य लिखा हुआ है।

[4] इस आयतों का भावार्थ यह है कि यदि तुम निशानियों और चमत्कार की माँग करते हो, तो यह पूरे विश्व में जो जीव और पक्षी हैं, जिन के जीवन साधनों की व्यवस्था अल्लाह ने की है, और सब के भाग्य में जो लिख दिया है, वह पूरा हो रहा है। क्या तुम्हारे लिये अल्लाह के अस्तित्व और गुणों के प्रतीक नहीं हैं? यदि तुम ज्ञान तथा समझ से काम लो, तो यह विश्व की व्यवस्था ही ऐसा लक्षण और प्रमाण है कि जिस के पश्चात् किसी अन्य चमत्कार की आवश्यकता नहीं रह जाती।

[5] अर्थ यह है सब जीवों के प्राण मरने के पश्चात् उसी के पास एकत्रित हो जाते हैं क्यों कि वही सब का उत्पत्तिकार है।

४०. (हे नबी!) उन से कहो कि यदि तुम पर अल्लाह का प्रकोप आ जाये अथवा तुम पर प्रलय आ जाये, तो क्या तुम अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे, यदि तुम सच्चे हो?

४१. बल्कि तुम उसी को पुकारते हो, तो वह दूर करता है उस को जिस के लिये तुम पुकारते हो, यदि वह चाहे, और तुम उसे भूल जाते हो, जिसे साझी[१] बनाते हो।

४२. और आप से पहले भी समुदयों की ओर उम ने रसूल भेजे, तो हम ने उन्हें आपदाओं और दुखों में डाला[२], ताकि वह विनय करें।

४३. तो जब उन पर हमारी यातना आई, तो वह हमारे समक्ष झुक क्यों नहीं गये? परन्तु उन के दिल और भी कड़े हो गये, तथा शैतान ने उन के लिये उन के कुकर्मों को सुन्दर बना[३] दिया।

४४. तो जब उन्होंने उसे भुला दिया जो याद दिलाये गये थे, तो हम ने उन पर प्रत्येक (सुख सुविधा) के द्वार खोल दिये। यहाँ तक कि जब जो कुछ वह दिये गये उस से प्रफुल्ल हो गये, तो हम ने उन्हें अचानक घेर लिया, और वह निराश होकर रह गये।

४५. तो उन की जड़ काट दी गई जिन्होंने अत्याचार किया, और सब प्रशंसा अल्लाह ही के लिये है। जो पूरे विश्व का पालनहार है।

४६. (हे नबी!) आप कहें कि क्या तुम ने इस पर भी विचार किया कि यदि अल्लाह तुम्हारे सुनने तथा देखने की शक्ति छीन ले, और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे, तो अल्लाह के सिवा कौन है जो तुम्हें इसे वापस दिला सके? देखो, हम कैसे बार बार आयतें[४] प्रस्तुत कर रहे हें। फिर भी वह मुँह[५] फेर रहे हैं।

---

[१] इस आयत का भावार्थ यह है कि किसी घोर आपदा के समय तुम्हारा अल्लाह ही को गुहारना स्वयं तुम्हारी ओर से उस के अकेले पूज्य होने का प्रमाण और स्वीकार है।

[२] अर्थात ताकि अल्लाह से विनय करें, और उस के सामने झुक जायें।

[३] आयत का अर्थ यह है कि जब कुकर्मों के कारण दिल कड़े हो जाते हैं, तो कोई भी बात उन्हें सुधार के लिये तय्यार नहीं कर सकती।

[४] अर्थात इस बात की निशानियाँ की अल्लाह ही पूज्य है, और दूसरे सभी पूज्य मिथ्या हैं। (इब्ने कसीर)

[५] अर्थात सत्य से।

४७. आप कहें कि कभी तुम ने इस बात पर विचार किया कि यदि तुम पर अल्लाह की यातना अचानक या खुलकर आ जाये, तो अत्याचारियों (मुश्रिकों) के सिवा किसका विनाश होगा?

४८. और हम रसूलों को इसी लिये भेजते हैं कि वह (आज्ञाकारियों को) शुभ सूचना दें। तथा (अवैज्ञाकारियों को) डरायें। तो जो ईमान लाये तथा अपने कर्म सुधार लिये, उन के लिये कोई भय नहीं, और न वह उदासीन होंगे।

४९. और जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया, उन्हें अपनी अवैज्ञा के कारण यातना अवश्य मिलेगी।

५०. (हे नबी!) आप कह दें कि मेरे पास अल्लाह का कोष नहीं है, और न मैं परोक्ष का ज्ञान रखता हूँ, तथा न मैं यह कहता कि मैं कोई फ़रिश्ता हूँ। मैं तो केवल उसी पर चल रहा हूँ जो मेरी ओर वह्यी (प्रकाशना) की जा रही है। आप कहें कि क्या अन्धा[१] तथा आँख वाला बराबर हो जायेंगे? क्या तुम सोच विचार नहीं करते?

५१. और इस (वह्यी द्वारा) उन को सचेत करो, जो इस बात से डरते हों कि वे अपने पालनहार के पास (प्रलय के दिन) एकत्र किये जायेंगे, इस दशा में कि अल्लाह के सिवा कोई सहायक तथा अनुशंसक (सिफ़ारशी) न होगा, संभवत: वह आज्ञाकारी हो जायें।

५२. (हे नबी!) आप उन्हें अपने से दूर न करें जो अपने पालनहार की वंदना प्रात: संध्या करते उस की प्रसन्नता की चाह में लगे रहते हैं। उन के हिसाब का कोई भार आप पर नहीं है और न आप के हिसाब का कोई भार उन पर[२] है, अत: यदि आप उन्हें दूर करेंगे, तो अत्याचारियों में हो जायेंगे।

[१] अन्धा से अभिप्राय: सत्य से विचलित है। इस आयत में कहा गया है कि नबी, मानव पुरुष से अधिक और कुछ नहीं हो। वह सत्य का अनुयायी तथा उसी का प्रचारक होता है।

[२] अर्थात न आप उन के कर्मों के उत्तरदायी हैं, न वे आप के कर्मों के। रिवायतों से विद्धित होता है कि मक्का के कुछ धनी मिश्रणवादियों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि हम आप की बातें सुनना चाहते हैं। किन्तु आप के पास नीच लोग रहते हैं, जिन के साथ हम नहीं बैठ सकते। इसी पर यह आयत उतरी। (इब्ने कसीर)। हदीस में है कि अल्लाह, तुम्हारे रूप और वस्त्र नहीं देखता किन्तु तुम्हारे दिलों और कर्मों को देखता है। (सहीह मुस्लिम – २५६४)

५३. और इसी प्रकार[१] हम ने कुछ लोगों की परीक्षा कुछ लोगों द्वारा की है, ताकि वह कहें कि क्या यही हैं जिन पर हमारे बीच से अल्लाह ने उपकार किया[२] है? तो क्या अल्लाह कृतज्ञों को भली भाँति जानता नहीं है?

५४. तथा (हे नबी!) जब आप के पास वह लोग आये, जो हमारी आयतों (कुरआन) पर ईमान लाये हैं तो आप कहें कि तुम[३] पर सलाम (शान्ति)है। अल्लाह ने अपने ऊपर दया अनिवार्य कर ली है कि तुम में से जो भी अज्ञानता के कारण कोई कुकर्म कर लेगा, फिर उस के पश्चात् तौबा (क्षमा याचना) कर लेगा, और अपना सुधार कर लेगा तो निःसंदेह अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

५५. और इसी प्रकार हम आयतों का वर्णन करते हैं, और इस के लिये ताकि अपराधियों का पथ उजागर हो जाये (और सत्यवादियों का पथ संदिग्नध न हो।)

५६. (हे नबी!) आप (मुश्रिकों से) कह दें कि मुझे रोक दिया गया है कि मैं उन की वंदना करूँ जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो। उन से कह दो कि मैं तुम्हारी आकांक्षाओं पर नहीं चल सकता। मैंने ऐसा किया तो मैं सत्य से कुपथ हो गया, और मैं सुपथों में से नहीं रह जाऊँगा।

५७. आप कह दें कि मैं अपने पालनहार के खुले तर्क पर स्थित[४] हूँ। और तुम ने उसे झुठला दिया हैं। जिस (निर्णय) के लिये तुम शीघ्रता करते हो, वह मेरे पास नहीं। निर्णय तो केवल अल्लाह के अधिकार में है। वह सत्य को वर्णित कर रहा है। और वह सर्वोत्तम निर्णयकारी है।

५८. आप कह दें कि जिस (निर्णय) के लिये तुम शीघ्रता कर रहे हो, मेरे अधिकार में होता तो हमारे और तुम्हारे बीच निर्णय हो गया होता। तथा अल्लाह अत्याचारियों[५] को भलि भाँति जानता है।

[१] अर्थात धनी और निर्धन बना कर।

[२] अर्थात मार्गदर्शन प्रदान किया।

[३] अर्थात उन के सलाम का उत्तर दें, और उन का आदर सम्मान करें।

[४] अर्थात सत्धर्म पर जो वह्यी द्वारा मुझ पर उतारा गया है। आयत का भावार्थ यह है कि वह्यी (प्रकाशना) की राह ही सत्य और विश्वास तथा ज्ञान की राह है। और जो उसे नहीं मानते उनके पास शंक और अनुमान के सिवा कुछ नहीं।

[५] अर्थात निर्णय का अधिकार अल्लाह को है, जो उस के निर्धारित समय पर हो जायेगा।

५९. और उसी (अल्लाह) के पास ग़ैब (परोक्ष) की कुंजियाँ[1] हैं। उन्हें केवल वही जानता है। तथा जो कुछ थल और जल में है, वह सब का ज्ञान रखता है। और कोई पत्ता नहीं गिरता परन्तु उसे वह जानता है। और न कोई अन्न जो धरती के अंधेरों में हो, और न कोई आर्द्र (भीगा) और शुष्क (सूखा) है परन्तु वह एक खुली पुस्तक में है।

६०. वही है जो रात्री में तुम्हारी आत्माओं को ग्रहण कर लेता है, तथा दिन में जो कुछ किया है उसे जानता है। फिर तुम्हें उस (दिन) में जगा देता है, ताकि निर्धारित अवधि पूरी हो जाये।[2] फिर तुम्हें उसी की ओर प्रत्यागत (वाप) होता है। फिर वह तुम्हें तुम्हारे कर्मों से सूचित कर देगा।

६१. तथा वही है, जो अपने सेवकों पर पूरा अधिकार रकता है, और तुम पर रक्षकों[3] को भेजता है। यहाँ तक कि जब तुम में से किसी के मरण का समय आ जाता है तो हमारे फ़रिश्ते उस का प्राण ग्रहण कर लेते हैं और वह तनिक भी आलस्य नहीं करते।

६२. फिर सब अल्लाह, अपने वास्तविक स्वीमा की ओर वापिस लाये जाते हैं। सावधान! उसी को निर्णय करने का अधिकार है। और वह अति शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

६३. हे नबी! उन से पूछिये कि थल तथा जल के अंधेरों में तुम्हें कौन बचाता है, जिसे तुम विनयपूर्वक और धीरे धीरे पुकारते हो कि यदि उस ने हमें बचा दिया, तो हम अवश्य कृतज्ञों में हो जायेंगे?

६४. आप कह दें कि अल्लाह ही उस से तथा प्रत्येक आपदा से तुम्हें बचाता है। फिर भी तुम उस का साझी बनाते हो।

६५. आप उन से कह दें कि वह इस का सामर्थ्य रखता है कि वह कोई यातना तुम्हारे ऊपर (आकाश) से भेज दे। अथवा तुम्हारे पैरों के नीचे (धरती) से, या तुम्हें

---

[1] सहीह हदीस में है कि ग़ैब की कुंजियाँ पाँ हैं: अल्लाह ही के पास प्रलय का ज्ञान है। और वही वर्षा करता है। और जो गर्भाशयों में है उस को वही जानता है। तथा कोई जीवन नहीं जानता कि वह कल क्या कमायेंगा। और न ही यह जानता है कि वह किस भूमि में मरेगा। (सहीह बुख़ारी – ४६२७)

[2] अर्थात संसारिक जीवन की निर्धारित अवधि।

[3] अर्थात फ़रिश्तों को तुम्हारे कर्म लिखने के लिये।

सम्प्रदायों में कर के एक को दूसरे के आक्रमण[1] का स्वाद चखा दे। देखिये कि हम किस प्रकार आयतों का वर्णन कर रहे हैं कि संभवत: वह समझ जायें।

६६. और (हे नबी!) आप की जाति ने इस (कुरआन) को झुठला दिया, जब कि वह सत्य है। और आप कह दें कि मैं तुम पर अधिकारी नहीं[2] हूँ।

६७. प्रत्येक सुचना के पूरे होने का एक निश्चित समय है, और शीघ्र ही तुम जान लोगे।

६८. और जब आप उन लोगों को देखें जो हमारी आयतों में दोष निकालते हों तो उन से विमुख हो जायें, यहाँ तक कि वह किसी दूसरी बात में लग जाये। और यदि आप को शैतान भुला दे तो याद आ जाने के पश्चात् अत्याचारी लोगों के साथ न बैठें।

६९. तथा उन[3] के हिसाब में से कुछ का भार उन पर नहीं है जो अल्लाह से डरते हों, परन्तु याद दिला[4] देना उन का कर्तव्य है, ताकि वह भी डरने लगें।

७०. तथा आप उन्हें छोड़ें जिन्होंने अपने धर्म को क्रीड़ा और केल बना लिया है। और संसारिक जीवन ने उन्हें धोखे में डाल रखा है। और इस (कुरआन) द्वारा उन्हें शिक्षा दें। ताकि कोई प्राणी अपने कर्तूतों के कारण बंधक न बन जाये, जिस का अल्लाह के सिवा कोई सहायक और अभिस्तावक (सिफ़ारशी) न होगा। और यदि वह सब कुछ बदले में दें तो भी उन से नहीं लिया जायेग।[5] यही लोग अपने कर्तूतों के कारण बंधक होंगे। उन के लिये उन के कुफ्र (अविश्वास) के कारण खौलता पेय तथा दु:खदायी यातना होगी।

७१. हे नबी! उन से कहिये कि क्या हम अल्लाह के सिवा उन की वंदना करें जो हमें कोई लाभ और हानि नहीं पहुँचा सकते? और हम एड़ियों के बल फिर जायें, इस

---

[1] हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपनी उम्मत के लिये तीन दुआऐं की: मेरी उम्मत का विनाश डूब कर न हो। साधारण आकाल से न हो। और आपस के संघर्ष से न हो। तो पहली दो दुआ स्वीकार हुईं। और तिसरी से आप को रोक दिया गया। (बुख़ारी – २२१६)

[2] कि तुम्हें बलपूर्वक मनवाऊँ। मेरा दायित्व केवल तुम को अल्लाह का आदेश पहुँचा देना है।

[3] अर्थात जो अल्लाह की आयतों में दोष निकालते हैं।

[4] अर्थात समझा देना।

[5] संसारिक दण्ड से बचाव के लिये तीन साधनों से काम लिया जाता है: मैत्री, सिफ़ारिश और अर्थदण्ड। परन्तु अल्लाह के हाँ ऐसे साधन किसी काम नहीं आयेंगे। वहाँ केवल ईमान और सत्कर्म ही काम आयेंगे।

के पश्चात जब हमे अल्लाह ने मार्गदर्शन दे दिया है, उस के समान जिसे शैतानों ने धरती में बहका दिया हो, वह आश्चर्यचकित हो, उस के साथी उस को पुकार रहे हों कि सीधी राह की ओर हमारे पास आ जाओ?[१] आप कह दें कि मार्गदर्शन तो वास्तव में वही है जो अल्लाह का मार्गदर्शन है। और हमें तो यही आदेश दिया गया कि हम विश्व के पालनहार के आज्ञाकारी हो जायें।

७२. और नमाज़ की स्थापना करें, और उस से डरते रहें। तथा वही है जिस के पास तुम एकत्रित किये जाओगे।

७३. और वही है, जिस ने आकाशों तथा धरती की रचना सत्य के साथ की[२] है। और जिस दिसन वह कहेगा कि ''हो जा'' तो वह (प्रलय) हो जायेगी। उस का कथन सत्य है। और जिस दिन नरसिंघा में फूँक दिया जायेगा उस दिन उसी का राज्य होगा। वह परोक्ष तथा[३] प्रत्यक्ष का ज्ञानी है। और वही गुणी सर्वसूचित है।

७४. तथा जब इब्राहीम ने अपने पिता आजर से कहा: क्या आप मूर्तियों को पूज्य बनाते हैं? मैं आप को तथा आप की जाति को खुले कुपथ में देख रहा हूँ।

७५. और इब्राहीम को इसी प्रकार हम आकाशों तथा धरती के राज्य की व्यवस्था दिखाते रहे, और ताकि वह विश्वासियों में हो जाये।

७६. तो जब उस पर रात छा गयी, तो उस ने एक तारा देखा। कहा: यह मेरा पालनहार है। फिर जब वह डूब गया, तो कहा मैं डूबने वालों से प्रेम नहीं करता।

७७. फिर जब उस ने चाँद को चमकते देखा तो कहा: यह मेरा पालनहार है। फिर जब वह डूब गया तो कहा: यदि मुझे मेरे पालनहार ने मार्गदर्शन नहीं दिया तो मैं अवश्य कुपथों में से हो जाऊँगा।

७८. फिर जब (प्रात:) सूर्य को चमकते देखा तो कहा यह मेरा पालनहार है। यह सब से बड़ा है। फिर जब वह भी डूब गया तो उसने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! नि:संदेह मैं उस से विरक्त हूँ जिसे तुम (अल्लाह का) साझी बनाते हो।

---

[१] इस में कुफ़्र और ईमान का उदाहरण दिया गया है कि ईमान की राह निश्चित है। और अविश्वास की राह अनिश्चित तथा अनेक हैं।

[२] अर्थात विश्व की व्यवस्था यह बता रही है कि इस का कोई रचियिता है।

[३] जिन चीज़ों को हम अपनी पाँच ज्ञानइन्द्रियों से जान लेते हैं वह हमारे लिये प्रत्यक्ष है, और जिन का ज्ञान नहीं कर सकते वह परोक्ष है।

७९. मैंने तो अपना मुख एकाग्र होकर उस की ओर कर लिया है जिस ने आकाशों तथा धरती की रचना की है। और मैं मुश्रिकों में से नहीं[1] हूँ।
८०. और जब उस की जाति ने उस से वाद झगड़ा किया तो उस ने कहा क्या तुम अल्लाह के विषय में मुझ से झगड़ रहे हो, जब कि उस ने मुझ सुपथ दिखा दिया है। तथा मैं उस से नहीं डरता हूँ जिसे तुम साझी बनाते हो। परन्तु मेरा पालनहार कुछ चाहे (तभी वह मुझे हानि पहुँचा सकता है।) मेरा पालनहार प्रत्येक वस्तु को अपने ज्ञान में समोये हुये है। तो क्या तुम शिक्षा नहीं लेते?
८१. और मैं उन से कैसे डरूँ जिन को तुम ने उस का साझी बना लिया है, जब तुम उस चीज़ को उस का साझी बनाने से नहीं डरते जिस का अल्लाह ने तुम पर कोई तर्क (प्रमाण नहीं उतारा है? तो दोनों पक्षों में कौन अधिक शान्त रहने का अधिकारी है, यदि तुम कुछ ज्ञान रखते हो?
८२. जो लोग ईमान लाये, और अपने ईमान को अत्याचार (शिर्क) से लिप्त नहीं[2] किया, उन्हीं के लिये शान्ति है, तथा वही मार्ग दर्शन पर हैं।
८३. यह हमारा तर्क था, जो हम ने इब्राहीम को उस की जाति के विरुद्ध प्रदान किया, हम जिस के पदों[3] को चाहते हैं ऊँचा कर देते हैं। वास्तव में आप का पालनहार गुणी तथा ज्ञानी है।
८४. और हम ने इब्राहीम को (पुत्र) इस्हाक़ तथा (पौत्र) याकूब प्रदान किये। प्रत्येक को हम ने मार्गदर्शन दिया। और उस से पहले हम ने नूह को मार्गदर्शन दिया। और इब्राहीम की संतति में से दावूद तथा सुलैमान और अय्यूब तथा यूसुफ़ और

---

[1] इब्राहीम अलैहिस्सलाम उस युग में नबी हुये जब बाबिल तथा नेनवा के निवासी आकाशीय ग्रहों की पूजा कर रहे ते। परन्तु इब्राहील अलैहिस्सलाम पर अल्लाह ने सत्य की राह खाल दी। उन्होंने इन आकाशीय ग्रहों पर विचार किया तथा उन को निकलते और फिर डूबते देख कर यह निर्णय लिया कि यह किसी की रचना तथा उस के अधीन हैं। और इन का रचयिता कोई और है। अत: रचित तथा रचना कभी पूज्य नहीं हो सकती, पूज्य वही हो सकता है जो इन सब का रचयिता तथा व्यवस्थापक है।

[2] हदीस में है कि जब यह आयत उतरी तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियों ने कहा: हम में कौन है जिस ने अत्याचार न किया हो? उस समय यह आयत उतरी। जिस का अर्थ यह है कि निश्चय शिर्क (मिश्रणवाद) ही सब से बड़ा अत्याचार है। (सहीह बुख़ारी – ४६२९)

[3] एक व्यक्ति नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास आया और कहा: हे सर्वोत्तम पुरुष! आप ने कहा: वह (सर्वोत्तम पुरुष) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) है। (सहीह मुस्लिम – २३६९)

मूसा तथा हारून को। और इसी प्रकार हम सदाचारियों को प्रतिफल प्रदान करते हैं।

८५. तथा ज़करिय्या और यह्या तथा ईसा और इल्यास को। यह सभी सदाचारियों में से थे।

८६. तथा इस्माईल और यसअ् तथा सूनुस और लूत को। प्रत्येक को हम ने संसार वासियों पर प्रधानता दी।

८७. तथा उन के पूर्वजों और उन की संतति तथा उन के भाईयों को और हम ने इन सब को निर्वाचित कर लिया। और उन्हें सुपथ दिखा दिया था।

८८. यही अल्लाह का मार्गदर्शन है जिस के द्वारा अपने भक्तों में से जिसे चाहे सुपथ दर्शा देता है। और यदि वह शिर्क करते, तो उन का सब किया धरा व्यर्थ हो जाता।[1]

८९. (हे नबी!) यही वह लोग हैं जिन्हें हम ने पुस्तक तथा निर्णय शक्ति एवं नुबूवत प्रदान की। फिर यदि यह (मुश्रिक) इन बातों को नहीं मानते तो हम ने इसे कुछ ऐसे लोगो को सौंप दिया है जो इसका इन्कार नहीं करते।

९०. (हे नबी!) यही वह लोग हैं जिन को अल्लाह ने सुपथ दर्शा दिया, तो आप भी उन्हीं के मार्गदर्शन पर चलें तथा कह दें कि मैं इस (कार्य)[2] पर तुम से कोई प्रतिदान नहीं माँगता। यह सब संसार वासियों के लिये एक शिक्षा के सिवा कुछ नहीं है।

९१. तथा उन्होंने अल्लाह का सम्मान जैसे करना चाहिये नहीं किया। जब उन्होंने कहा कि अल्लाह ने किसी पुरुष पर कुछ नहीं उतारा, उन से पूछिये कि वह पुस्तक जिसै मूसा लाये, जो लोगों के लिये प्रकाश तथा मार्गदर्शन है, किस ने उतारी है जिसे तुम पन्नों में कर के रखते हो? जिस में से तुम कुछ को लोगों के लिये बयान करते हो और बहुत कुछ छुपा रहे हो। तथा तुम को उस का ज्ञान दिया गया, जिस का तुम को और तुम्हारे पूर्वजों को ज्ञान न था? आप कह दें कि अल्लाह ने। फिर उन्हें उन के विवादों में खेलते हुये छोड़ दें।

[1] इन आयतों में १८ नबियों की चर्चा करने के पश्चात यह कहा है कि यंदि यह सब भी मिश्रण करते तो इन के सत्कर्म व्यर्थ हो जाते। जिस से अभिप्राय शिर्क (मिश्रणवाद) की गंभीरता से सावधान करना है।

[2] अर्थात इस्लाम का उपदेश देने पर

९२. तथा यह (कुरआन) एक पुस्तक है जिसे हम ने (तौरात के समान) उतारा है। जो शुभ, अपने से पूर्व(की पुस्तकों) को सच्च बताने वाली है, तथा ताकि आप उम्मुल कुरा (मक्का नगर) तथा उस के चतुर्दिक के निवासियों को सचेत[1] करें। तथा जो परलोक के प्रति विश्वास रखते हैं वही इस पर ईमान लाते हैं। और वही अपनी नमाज़ों का पालन करते[2] हैं।

९३. और उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ घड़े और कहे कि मेरी ओर प्रकाशना (वह्यी) की गई है, जब कि उस की ओर वह्यी (प्रकाशना) नहीं की गयी।? तथा जो यह कहे कि अल्लाह ने जो उतारा है उस के समान मैं भी उतार दूँगा? और (हे नबी!) आप यदि ऐसे अत्याचारी को मरण की घोर दशा में देखते जब की फ़रिश्ते उन की ओर हाथ बढ़ाये (कहते हैं): अपने प्राण निकालो! आज तुम्हें इस कारण अपमानकारी यातना दी जायेगी जो अल्लाह पर झूठ बोलते और उस की आयतों (को मानने) से अभिमान कर रहे थे।

९४. तथा (अल्लाह) कहेगा: तुम मेरे सामने उसी प्रकार अकेले आ गये जैसे तुम्हें प्रथम बार हम ने पैदा किया था। तथा हम ने जो कुछ दिया था, अपने पीछे (संसार ही मैं) छोड़ आये। और आज हम तुम्हारे साथ तुम्हारे अभिस्तावकों (सिफ़ारशियों) को नहीं देख रहे हैं? जिन के बारे में तुम्हारा भ्रम था कि तुम्हारे कामों में वह (अल्लाह के) साझी हैं। निश्चय तुम्हारे बीच के संबंध भंग हो गये हैं, और तुम्हारा सब भ्रम खो गया है।

९५. वास्तव में अल्लाह ही अन्न तथा गुठली को (धरती के भीतर) फाड़ने वाला है। वह निर्जीव से जीवित को निकालता है, तथा जीवित से निर्जीव को निकालने वाला। वही अल्लाह (सत्य पूज्य) है। फिर तुम कहाँ बहके जा रहे हो?

---

[1] अर्थात पूरे मानव संसार को अल्लाह की अवैज्ञा के दुष्परिणाम से सावधान करें। इस में यह संकेत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पूरे मानव संसार के पथ प्रदर्शक तथा कुरआन सब के लिये मार्गदर्शन है। और आप केवल किसी एक जाति या क्षेत्र अथवा देश के नबी नहीं हैं।

[2] अर्थात नमाज़ उस के निर्धारित समय पर बराबर पढ़ते हैं।

९६. वह प्रभात का तड़काने वाला, और उसी ने सुख के लिये रात्री बनाई तथा सूर्य और चाँद हिसाब के लिये बनाया। यह प्रभावी गुणी का निर्धारित किया हुआ अंकन (माप)[१] है।

९७. उसी ने तुम्हारे लिये तारे बनाये हैं, ताकि उन की सहायता से थल तथा जल के अंधकारों में रास्ता पाओ। हम ने (अपनी दया के) लक्षणों का उन के लिये विवरण दे दिया है जो लोग ज्ञान रखते हैं।

९८. वही है जिस ने तुम्हें एक जीव से पैदा किया। फिर तुम्हारे लिये (संसार में) रहने का स्थान है। और एक समर्पण (मरण) का स्थान हैं। हम ने उन्हें अपनी आयतों (लक्षणों) का विवरण दे दिया जो समझ बूझ रखते हैं।

९९. वही है जिस ने आकाश से जल की वर्षा की, फिर हमने उस से प्रत्येक प्रकार की उपज निकाल दी। फिर उस से हरियाली निकाल दी। फिर उस से तह पर तह दाने निकालते हैं। तथा खजूर के गाभ से गुच्छे झुके हुये। और अँगूरों तथा ज़ैतून और अनार के बाग़ समरूप तथा स्वाद में अलग–अलग। उस के फल को देखो जब फल लाता है, तथा उस के पकने को। नि:संदेह इन में उन लोगों के लिये बड़ी निशानियाँ (लक्षण)[२] हैं जो ईमान लाते हैं।

१००.और उन्होंने जिन्नों को अल्लाह का साझी बना दिया। जब कि अल्लाह ही ने उन की उत्पत्ति की है। और बिना ज्ञान के उस के लिये पुत्र तथा पुत्रियाँ गढ़ लीं। वह पवित्र तथा उच्च है उन बातों से जो वह लोग कह रहे हैं।

१०१.वह आकाशों तथा धरती का अविष्कारक है, उस के संतान कहाँ से हो सकती है, जब कि उस की पत्नी ही नहीं है? तथा उसी ने प्रत्येक वस्तु को पैदा किया है। और वह प्रत्येक वस्तु का भली भाँति जानता है।

१०२.वही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है, उस के अतिरिक्त कोई सच्चा पूज्य नहीं। वह प्रत्येक वस्तु का उत्पत्तिकार है। अत: उस की इबादत (वंदना) करो। तथा वही प्रत्येक चीज़ का अभिरक्षक है।

---

[१] जिस में एक पल की भी कमी अथवा अधिक्ता नहीं होती।

[२] अर्थात अल्लाह के पालनहार होने की निशानियाँ। आयत का भावार्थ यह है कि जब अल्लाह ने तुम्हारे आर्थिक जीवन के साधन बनाये हैं तो फिर तुम्हारे आत्मिक जीवन के सुधार के लिये भी प्रकाशना और पुस्तक द्वारा तुम्हारे मार्गदर्शन की व्यवस्था की है तो तुम्हें उस पर आश्चर्य क्यों है, तथा इे अस्वीकार क्यों करते हो?

१०३.उस का आँख इद्राक नहीं कर सकती[१] जब कि वह सब कुछ देख रहा है। वह अत्यंत सूक्ष्मदर्शी और सब चीज़ों से अवगत है।

१०४.तुम्हारे पास निशानियाँ आ चुकी है। तो जिस ने समझ बूझ से काम लिया उस का लाभ उसी के लिये है। और जो अन्धा हो गया तो उस की हानि उसी पर है। और मैं तुम पर संरक्षक[२] नहीं हूँ।

१०५.और इसी प्रकार हम अनेक शैलियों में आयतों का वर्णन कर रहे है। और ताकि वह (काफ़र) कहें कि आप ने पढ़[३] लिया है। और ताकि हम उन लोगों के लिये (तर्कों को) उजागर कर दें जो ज्ञान रखते हैं।

१०६. आप उस पर चलें जो आप पर आप के पालनहार की ओर से वह्यी (प्रकाशना) की जा रही है। उस के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है। और मुश्रिकों की बातों पर ध्यान न दें।

१०७.और यदि अल्लाह चाहता तो वह लोग साझी न बनाते। और हम ने आप को उन पर निरीक्षक नहीं बनाया है। तथा न आप उन पर[४] अभिकारी हैं।

१०८.और (हे ईमान वालो!) उन्हें बुरा न कहो जिन (मूर्तियों) को वह अल्लाह के सिवा पुकारते हैं। अन्यथा वह लोग अज्ञानता के कारण अति कर के अल्लाह को बुरा कहेंगे। इसी प्रकार हम ने प्रत्येक समुदाय के लिये उन के कर्म को सुशोभित बना दिया है। फिर उन के पालनहार की ओर ही उन्हें जाना है। तो उन्हें बता देगा जो वे करते रहे।

१०९.और उन (मुश्रिकों) ने बलपूर्वक शपथें लीं कि यदि हमारे पास कोई आयत (निशानी) आ जाये तो उस पर वह अवश्य ईमान लायेंगे। आप कह दें: आयतें

[१] अर्थात इस संसार में उसे कोई नहीं देख सकता।

[२] अर्थात नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) सत्धर्म के प्रचारक हैं।

[३] अर्थात काफ़िर यह कहें कि आप ने यह अहले किताब से सीख लिया है और इसे अस्वीकार कर दें।

[४] आयत का भावार्थ यह है कि नबी का यह कर्तव्य नहीं कि वह सब को सीधी राह दिखा दे। उस का कर्तव्य केवल अल्लाह का संदेश पहुँचा देना है।

(निशानियाँ) तो अल्लाह ही के पास हैं। और (हे ईमान वालो!) तुम्हें क्या पता कि वह निशानियाँ जब आ जायेंगी तो वह ईमान[1] नहीं लायेंगे।

११०.और हम उन के दिलों और आँखों को ऐसे ही पेर[2] देंगे जैसे वह पहली बार इस (कुरआन) पर ईमान नहीं लाये। और हम उन्हें उन के कुकर्मों में बहकते छोड़ देंगे।

१११.और यदि हम इन की ओर (आकाश से) फ़रिश्ते उतार देते और इन से मुर्दे बात करते और इन के समक्ष प्रत्येक वस्तु एकत्र कर देते, तब भी यह ईमान नहीं लाते परन्तु जिसे अल्लाह (मार्गदर्शन देना) चाहता। और इन में से अधिक्तर (तथ्य से) अज्ञान हैं।

११२.और (हे नबी!) इसी प्रकार हम ने मनुष्यों तथा जिन्नों में से प्रत्येक नबी का शत्रु बना दिया जो धोका देने के लिये एक दूसरे को शोभनीय बात सुझाते रहते हैं। और यदि आप का पालनहार चाहता तो ऐसा नहीं करते। तो आप उन्हें छोड़ दें, और उन की घड़ी हुई बातों को।

११३.(वह ऐसा इस लिये करते हैं) ताकि उस की ओर उन लोगों के दिल झुक जायें जो परलोक पर विश्वास नहीं रखते। और ताकि वह उस से प्रसन्न हो जायें और ताकि वह भी वही कुकर्म करने लगें जो कुकर्म वह लोग कर रहे हैं।

११४.(हे नबी!) उन से कहो कि क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी दूसरे न्यायकारी की खोज करूँ, जब कि उसी ने तुम्हारी ओर यह खुली पुस्तक (कुरआन) उतारी[3]

---

[1] मक्का के मुश्रिकों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि यदि सफ़ा (पर्वत) सोने का हो जाये तो वह ईमान लायेंगे। कुछ मुसलमानों ने भी सोचा कि यदि ऐसा हो जाये तो संभव है कि वह ईमान ले आयें। इसी पर यह आयत उतरी। (इब्ने कसीर)

[2] अर्थात कोई चमत्कार आ जाने के पश्चात् भी ईमान नहीं लायेंगे, क्योंकि अल्लाह, जिसे सुपथ दर्शाना चाहता है, वह सत्य को सुनते ही उसे स्वीकार कर लेता है। किन्तु जिस ने सत्य के विरोध ही को अपना आचारण–स्वभाव बना लिया हो तो वह चमत्कार देख कर भी कोई बहाना बना लेता है। और ईमान नहीं लाता। जैसे इस से पहले नबियों के साथ हो चुका है। और स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बहुत सी निशानियाँ दिखाईं फिर भी ये मुश्रिक ईमान नहीं लाये। जैसे आप ने मक्का वासियों की माँग पर चाँद के दो भाग कर दिये। जिन दोनों के बीच लोगों ने हिरा (पर्वत) को देखा। परन्तु वे फिर भी ईमान नहीं लाये। (सहीह बुख़ारी)

[3] अर्थात इस में निर्णय के नियमों का विवरण है।

है? तथा जिन को हम ने पुस्तक[1] प्रदान की है वह जानते हैं कि यह (कुरआन) आप के पालनहार की ओर से सत्य के साथ उतारा है। अत: आप संदेह करने वालों में न हों।

११५.आप के पालनहार की बात सत्य तथा न्याय की है, कोई उस की बात (नियम) बदल नहीं सकता और वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

११६.और (हे नबी!) यदि आप संसार के अधिक्तर लोगों की बात मानेंगे तो वह आप को अल्लाह के मार्ग से बहका देंगे। वह केवल अनुमान पर चलत[2] हैं, और आँकलन करते हैं।

११७.वास्तव में आप का पालनहार ही अधिक जानता है कि कौन उस की राह से बहकता है। तथा वही उन्हें भी जानता है जो सुपथ पर हैं।

११८. तो उन पशुवों में से जिस पर बध करते समय अल्लाह का नाम लिया गया हो खाओ,[3] यदि तुम उस की आयतों (आदेशों) पर ईमान (विश्वास) रखते हो।

११९. और तुम्हारे उस में से न खाने का क्या कारण है जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया[4] हो, जब कि उस ने तुम्हारे लिये स्पष्ट कर दिया है जिसे तुम पर हराम (अवैध) किया है? परन्तु जिस (वर्जित) के (खाने के लिये) विवश कर दिये जाओ[5] और वास्तव में बहुत से लोग अपनी मनमानी के लिये लोगों को अपनी

---

[1] अर्थात जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर जिब्रील प्रथम वह्यी लाये और आप ने मक्का के ईसाई विद्वान वर्क़ा बिन नौफ़ल को बताया तो उस ने कहा कि यह वही फ़रिश्ता है जिसे अल्लाह ने मूसा (अलैहिस्सलाम) पर उतारा था। (बुख़ारी, मुस्लिम) इसी प्रकार मदीना के यहूदी विद्वान अब्दुल्लाह बिन सलाम ने भी नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को माना और इस्लाम लाये।

[2] आयत का भावार्थ यह है कि सत्योसत्य का निर्णय उस के अनुयायियों की संख्या से नहीं। सत्य के मूल नियमों से ही किया जा सकता है। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: मेरी उम्मत के ७२ सम्प्रदाय नरक में जायेंगे। और एक स्वर्ग में जायेगा। और वह, वह होगा जो मेरे और मेरे साथियों के पथ पर होगा। (तिर्मिज़ी)

[3] इस का अर्थ यह है कि बध करते समय जिस जानवर पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो, बल्कि देवी–देवता तथा पीर–फ़क़ीर के नाम पर बलि दिया गया हो तो वह तुमहारे लिये वर्जित है। (इब्ने कसीर)

[4] अर्थात उन पशुवों को खाने में कोई हरज नहीं जो मुसलमानों की दुकानों पर मिलते हैं क्यों कि कोई मुलसमान अल्लाह का नाम लिये बिना बध नहीं करता। और यदि शंका हो तो खाते समय (बिस्मिल्लाह) कह ले। जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया है। (बुख़ारी)

[5] अर्थात उस वर्जित को प्राण रक्षा के लिये खाना उचित है।

अज्ञानता के कारण बहकाते हैं। निश्चय आप का पालनहार उल्लंघनकारियों को भली भाँति जानता है।

१२०.(हे लोगो!) खुले तथा छुपे पाप छोड़ दो। जो लोग पाप कमाते हैं वे अपने कुकर्मों का प्रतिकार (बदला) दिये जायेंगे।

१२१.तथा उस में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो। वास्तव में उसे खाना (अल्लाह की) अवैज्ञा है। निःसंदेह शैतान अपने सहायकों के मनों में संशय डालते रहते हैं, ताकि वह तुम से विवाद करें।[1] और यदि तुम ने उन की बात मान ली तो निश्चय तुम मुश्रिक हो।

१२२.तो क्या जो निर्जीव रहा हो फिर हम ने उसे जीवन प्रदान किया हो तथा उस के लिये प्रकाश बना दिया हो जिस के उजाले में वह लोगों के बोच चल रहा हो, उस जैसा हो सकता है जो अंधेरों में हो उस से निकल न रहा हो?[2] इसी प्रकार काफ़िरों के लिये उन के कुकर्म सुन्दर बना दिये गये हैं।

१२३.और इसी प्रकार हम ने प्रत्येक बस्ती में उस के बड़े अपराधियों को लगा दिया ताकि उस में षड्यंत्र रचें। तथा वह अपने ही विरुद्ध षड्यंत्र रचते[3] हैं परन्तु समझते नहीं हैं।

१२४.और जब उन के पास कोई निशानी आती है तो कहते हैं कि हम उसे कदापि नहीं मानेंगे, जब तक उसी के समान हमें भी प्रदान न किया जाये जो अल्लाह के रसूलों को प्रदान किया गया है। अल्लाह ही अधिक जानता है कि अपना संदेश पहुँचाने का काम किस से ले। जो अपराधी हैं शीघ्र ही अल्लाह के पास उन्हें अपमान तथा कड़ी यातना उस षड्यंत्र के बदले मिलेगी जो वे कर रहे हैं।

१२५.तो जिसे अल्लाह मार्ग दिखाना चाहता है, उस का सीना (वक्ष) इस्लाम के लिये खोल देता है और जिसे कुपथ करना चाहता है उस का सीना संकीर्ण (तंग) कर

---

[1] अर्थात यह कहें कि जिसे अल्लाह ने मारा हो, उसे नहीं खाते। और जिसे तुम ने बध किया हो उसे खाते हो?

[2] इस आयत में ईमान की उपमा जीवन से तथा ज्ञान की प्रकाश से और अविश्वास की मरण तथा अज्ञानता की उपमा अँधकारों से दी गयी है।

[3] भावार्थ यह है कि जब किसी नगर में कोई सत्य का प्रचारक खड़ा होता है तो वहाँ के प्रमुखों को यह भय होता है कि हमारा अधिकार समाप्त हो जायेगा। इस लिये वह सत्य के विरोधी बन जाते हैं। और उस के विरुद्ध षड्यंत्र रचने लगते हैं। मक्का के प्रमुखों ने भी यही नीति अपना रखी थी।

देता है। जैसे वह बड़ी कठिनाई से आकाश पर चढ़ रहा[1] हो। इसी प्रकार अल्लाह उन पर यातना भेज देता है जो ईमान नहीं लाते।

१२६.और यही (इस्लाम) आप के पालनहार की सीधी राह है। हम ने उन लोगों के लिये आयतों को खोल यिा है जो शिक्षा ग्रहण करते हों।

१२७.उन्हीं के लिये आप के पालनहार के पास शान्ति का घर (स्वर्ग) है। और वही उन के सुकर्मों के कारण उन का सहायक होगा।

१२८.तथा (हे नबी!) याद करो जब वह सब को एकत्र कर के (कहेगा): हे जिन्नों के गिरोह! तुम ने बहुत से मनुष्यों को कुपथ कर दिया और मानव में से उन के मित्र कहेंगे कि हे हमारे पालनहार! हम एक दूसरे से लाभांवित होते रहे,[2] और वह समय आ पहुँचा जो तू ने हमारे लिये निर्धारित किया था। (अल्लाह) कहेगा: तुम सब का आवास नरक है जिस में सदावासी रहोगे। परन्तु जिसे अल्लाह (बचाना) चाहे। वास्तव में आप का पालनहार गुणी सर्व ज्ञानी है।

१२९.और इसी प्रकार हम अत्याचारियों को उन के कुकर्मों के कारण एक दूसरे का सहायक बना देते हैं।

१३०.(तथा कहेगा:) हे जिन्नों तथा मनुष्यों के मुश्रिक) समुदाय! क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल नहीं आये[3] जो तुम्हें हमारी आयतें सुनाते और तुम्हें तुम्हारे इस दिन (के आने) से सावधान करते? वह कहेंगे: हम स्वयं अपने ही विरुद्ध गवाह हैं। तथा उन्हें संसारिक जीवन ने धोखे में रखा था। और अपने ही विरुद्ध गवाह हो गये कि वास्तव में वही काफ़िर थे।

---

[1] अर्थात उसे इस्लाम का मार्ग एक कठीन चढ़ाई लगता है जिस के विचार ही से उस का सीना तंग हो जाता हैं और श्वास रोध होने लगात है।

[2] इस का भावार्थ यह है कि जिन्नों ने लोगों को संशय और धोखे में रख कर कुपथ किया, और लोगों ने उन्हें अल्लाह का साझी बनाया और उन के नाम पर बलि देते और चढ़ावे चढ़ाते रहे और ओझाई तथा दाजू तंत्र द्वारा लोगों को धोखा दे कर अपना उल्लू सीधा करते रहे।

[3] कुरआन की अनेक आयतों से यह विद्धित होता है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जिन्नों के भी नबी थे जैसा कि सूरह जिन्न आयत १,२ में उन के कुरआन सुनने और ईमान लाने का वर्णन है। ऐसे ही सूरह अह्क़ाफ़ में है कि जिन्नों ने कहा: हम ने ऐसी पुस्तक सुनी जो मूसा के पश्चात् उतरी है। इसी प्रकार वह सुलैमान के आधीन थे। परन्तु कुरआन और हदीस से जिन्नों में नबी होने का कोई संकेत नहीं मिलता। एक विचार यह भी है कि जिन्न आदम (अलैहिस्सलाम) से पहले के हैं इसलिये हो सकता है पहले उन में भी नबी आये हों।

१३१.(हे नबी!) यह (नबियों को भेजना) इस लिये हुआ कि आप का पालनहार ऐसा नहीं है कि अत्याचार से बस्तियों का विनाश कर दे,[1] जब कि उस के निवासी (सत्य से) अचेत रहे हों।

१३२.प्रत्येक के लिये उस के कर्मानुसार पद हैं। और आप का पालनहार लोगों के कर्मों से अचेत नहीं है।

१३३.तथा आप का पालनहार निस्पृह दयाशील है। वह चाहे तो तुम्हें ले जाये और तुम्हारे स्थान पर दूसरों को ले आये। जैसे तुम लोगों को दूसरे लोगों की संतति से पैदा किया है।

१३४.तुम्हें जिस (प्रलय) का वचन दिया जा रहा है उसे अवश्य आना है। और तुम (अल्लाह को) विवश नहीं कर सकते।

१३५.आप कह दें: हे मेरी जाति के लोगो! (यदि तुम नहीं मानते) तो अपनी दशा पर कर्म करते रहो। मैं भी कर्म कर रहा हूँ। शीघ्र ही तुम्हें यह ज्ञान हो जायेगा कि किस का अन्त (परिणाम)[2] अच्छा है। नि:संदेह अत्याचारी सफल नहीं होंगे।

१३६.तथा उन लोगों ने उस खेती और पशुओं में जिन्हें अल्लाह ने पैदा किया है। उस का एक भाग निश्चित कर दिया, फिर अपने विचार से कहते हैं: यह अल्लाह का है और यह उन (देवतावों) का है जिन को उन्होंने (अल्लाह का) साझी बनाया है। फिर जो उन के बनाये हुये साझियों का है वह तो अल्लाह को नहीं पहुँचता परन्तु जो अल्लाह का है वह उन के साझियों[3] को पहुँचता है। वह क्या ही बुरा निर्णय करते हैं!

१३७.और इसी प्रकार बहुत से मुश्रिकों के लिये अपनी संतान के बध करने को उन के बनाये हुये साझियों ने सुशोभित बना दिया है, ताकि उन का विनाश कर दें। और

---

[1] अर्थात संसार की कोई बस्ती ऐसी नहीं है जिस में संमार्ग दर्शाने के लिये नबी न आये हों। अल्लाह का यह नियम नहीं है कि किसी जाति को वह्यी द्वारा मार्गदर्शन से वंचित रखे और फिर उस का नाश कर दें। यह अल्लाह के न्याय के बिल्कुल प्रतिकूल है।

[2] इस आयत में काफ़िरों को सचेत किया गया है कि यदि सत्य को नहीं मानते तो जो कर रहे हो वही करो तुम्हें जल्द ही इस के परिणाम का पता चला जायेगा।

[3] इस आयत में अरब के मुश्रिकों की कुछ धार्मिक परम्पराओं का खण्डन किया गया है कि सब कुछ तो अल्लाह पैदा करता है और यह उस में से अपने देवतावों का भाग बनाते हैं। फिर अल्लाह का जो भाग हैं उसे देवतावों को दे देते हैं। परन्तु देवतावों के भाग में से अल्लाह के लिये व्यय करने को तैयार नहीं होते।

ताकि उन के धर्म को उन पर संदिग्ध कर दें। और यदि अल्लाह चाहता तो वह यह (कुकर्म) नहीं करते। अत: आप उन्हें छोड़[1] दें तथा उन की बनाई हुई बातों को।

१३८.तथा वे कहते हैं कि यह पशु और खेत वर्जित हैं, इसे वही खा सकता है, जिसे हम अपने विचार से खिलाना चाहें। फिर कुछ पशु हैं, जिन की पीठ हराम[2] (वर्जित) है, और कुछ पशु हैं, जिन पर (बध करते समय) अल्लाह का नाम नहीं लेते, अल्लाह पर आरोप लगाने के कारण, अल्लाह उन्हें उन के आरोप लगाने का बदला अवश्य देगा।

१३९.तथा उन्होंने कहा कि जो इस पशुवों के गर्भों में है वह हमारे पुरुषाों के लिये विशेष है, और हमारी पत्नियों के लिये वर्जित है। और यदि मुर्दा हो तो सभी उस में साझी हो सकते[3] हैं। अल्लाह उन के विशेष करने का कुफल उन्हें अवश्य देगा, वास्तव में वह तत्वज्ञ अति ज्ञानी है।

१४०.वास्तव में वह क्षति में पड़ गये जिन्हों ने मूर्खता से किसी ज्ञान के बिना अपनी संतान को बध किया और उस जीविका को जो अल्लाह ने उन्हें प्रदान कि अल्लाह पर आरोप लगाकर, अवैध बना लिया, वह बहक गये और सीधी राह पर नहीं आ सके।

१४१.अल्लाह वही हैह जिस ने बेलों वाले तथा बिना बेलों वाले बाग़ पैदा किये। तथा खजूर और खेत जिन से विभिन्न प्रकार की पैदावार होती है और ज़ैतून तथा अनार सम्रूप तथा स्वाद में विभिन्न, इस का फल खाओ जब फले, और फल तोड़ने के समय कुछ दान करो, तथा अपव्यय[4] (बेजा ख़र्च) न करो। नि:संदेह अल्लाह बेजा ख़र्च करने वालों से प्रेम नहीं करता।

---

[1] अरब के कुछ मुश्रिक अपनी पुत्रियों को जन्म लेते ही जीवित गाड़ दिया करते थे।

[2] अर्थात उन पर सवारी करना तथा बोझ लादना अवैध है। (देखिये: सूरह माइदा – १०३)

[3] अर्थात बधित पशु के गर्भ से बच्चा निकल जाता और जीवित होता तो उसे केवल पुरुष खा सकते थे। और मुर्दा होता तो सभी (स्त्री–पुरुष) खा सकते थे। (देखिये: सूरह नह्ल ५८–५९, सूरह अनआम – १५१, तथा सूरह इस्रा – ३१)। जैसा कि आधुनिक सभ्य समाज में (सुखी परिवार) के लिये अनेक प्रकार से किया जा रहा है।

[4] अर्थात इस प्रकार उन्होंने पशुओं में विभिन्न रूप बना लिये थे। जिन को चाहते अल्लाह के लिये विशेष कर देते और जिसे चाहते अपने देवी देवता के लिये विशेष कर देते। यहाँ इन्हीं अन्ध विश्वासियों का खण्डन किया जा रहा है। दान करो अथवा खाओ परन्तु अपव्यय न करो। क्योंकि यह शैतान का काम है, सब में संतुलन होना चाहिये।

१४२.तथा चौपायों में कुछ सवारी और बोझ लादने योग्य[1] हैं। और कुछ धरती से लगे[2] हुये, तुम उन में से खाओ जो अल्लाह ने तुम्हें जीविका प्रदान की है। और शैतान के पद्चिन्हों पर न चलो। वास्तव में वह तुम्हारा खुला शत्रु[3] है।

१४३.आठ पशु आपस में जोड़े हैं: भेड़ में से दो, तथा बकरी में से दो। आप उन से पूछिये कि क्या अल्लाह ने दोनों के नर हराम (वर्जित) किये हैं, अथवा दोनों की मादा, अथवा दोनों के गर्भ में जो बच्चे हों? मुझे ज्ञान के साथ बताओ, यदि तुम सच्चे हो।

१४४.और ऊँट में से दो, तथा गाय में से दो। आप पूछियें कि क्या अल्लाह ने दोनों के नर हराम (वर्जित) किये हैं, अथवा दोनों की मादा, अथवा दोनों के गर्भ में जो बच्चे हों? क्या तुम उपस्थित थे जब अल्लाह ने तुम्हें इस का आदेश दिया था, तो बताओ? उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो बिना ज्ञान के अल्लाह पर झूठ घड़े? निश्चय अल्लाह अत्याचारियों को संमार्ग नहीं दिखाता।

१४५. (हे नबी!) आप कह दें कि उस में जो मेरी ओर वह्यी (प्रकाशना) की गयी है इन[4] में से खाने वालों पर कोई चीज़ वर्जित नहीं है, सिवाये उस के जो मरा हुआ हो[5] अथवा बहा हुआ रक्त हो या सूअर का मांस हो। क्योंकि वह अशुद्ध है, अथवा अवैध हो जिसे अल्लाह के सिवा दूसरे के नाम पर बध किया गया हो। परन्तु जो विवश हो जाये (तो वह खा सकता है) यदि वह द्रोही तथा सीमा लाँघने वाला न हो। तो वास्तव में आप का पालनहार अति क्षमी दयावान्[6] है।

१४६.तथा हम ने यहूदियों पर नखधारी[7] जीव हराम कर दिये थे और गाय तथा बकरी में से उन पर दोनों की चर्बियाँ हराम (वर्जित) कर दी[1] थी। परन्तु जो दोनों की

---

[1] जैसे ऊँट और बैल आदि।

[2] जैसे बकरी और भेड़ आदि।

[3] अल्लाह ने चौपायों को केवल सवारी और खाने के लिये बनाया है, देवी–देवतावों के नाम चढ़ाने के लिये नहीं। अब यदि कोई ऐसा करता है तो वह शैतान का बन्दा है और शैतान के बनाये मार्ग पर चलता है जिस से यहाँ मना किया जा रहा है।

[4] जो तुम ने वर्जित किया है।

[5] अर्थात धर्म विधान अनुसार बध न किया गया हो।

[6] अर्थात कोई भूक से विवश हो जाये तो अपनी प्राण रक्षा के लिये इन प्रतिबंधों के साथ हराम खा ले तो अल्लाह उसे क्षमा कर देगा।

[7] अर्थात जिन की उँगलियाँ फटी हुई न हों जैसे ऊँट, शुतुरमुर्ग़, तथा बत्तख़ इत्यादि। (इब्ने कसीर)

पीठों या आँतों से लगी हों, अथवा जो किसी हड्डी से मिली हुई हो। यह हम ने उन की अवज्ञा के कारण उन्हें[२] प्रतिकार (बदला) दिया था। तथा निश्चय हम सच्चे हैं।

१४७.फिर (हे नबी!) यदि यह लोग आप को झुठलायें तो कह दें कि तुम्हारा पालनहार विशाल दयाकारी है तथा उस की यातना को अपराधियों से फेरा नहीं जा सकेगा।

१४८.मिश्रणवादी अवश्य कहेंगे: यदि अल्लाह चाहता तो हम तथा हमारे पूर्वज (अल्लाह का) साझी न बनाते, और न कुछ हराम (वर्जित) करते। इसी प्रकार इन से पूर्व के लोगों ने (रसूलों को) झुठलाया था, यहाँ तक कि हमारी यातना का स्वाद चख लिया। (हे नबी!) उन से पूछिये कि कया तुम्हारे पास (इस विषय में) कोई ज्ञान है, जिसे तुम हमारे समक्ष प्रस्तुत कर सको? तुम तो केवल अनुमान पर चलते हो, और केवल आंकलन कर रहे हो।

१४९.(हे नबी!) आप कह दें कि पूर्ण तर्क अल्लाह ही का है। तो यदि वह चाहता तो तुम सब को सुपथ दिखा देता[३]।

१५०.आप कहिये कि अपने साक्षियों (गवाहों) को लाओ[४], जो साक्ष्य दें कि अल्लाह ने इसे हराम (अवैध) कर दिया है। फिर यदि वह साक्ष्य (गवाही) दें तब भी आप उन से साथ होकर इसे न मानें, तथा उन की मनमानी पर न चलें, जिन्होंने हमारी आयतों को झुठला दिया, और परलोक पर ईमान (विश्वास) नहीं रखते, तथा दूसरों को अपने पालनहार के बराबर करते हैं।

१५१.आप उन से कहें कि आओं मैं तुम्हें (आयतें) पढ़कर सुना दूँ कि तुम पर तुम्हारे पालनहार ने क्या हराम (अवैध) किया है? वह यह है कि किसी चीज़ को उस का साझी न बनाओ। और माता–पिता के साथ उपकार करो। और अपनी संतानों को

---

[१] हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: यहूदियों पर अल्लाह की धिक्कार हो! जब चर्बियाँ वर्जित की गईं तो उन्हें पिघला कर उन का मुल्य खा गये। (बुख़ारी – २२३६)

[२] देखिये: सूरह आले इमरान, आय: ९३ तथा सूरह निसा आयत: १६०।

[३] परन्तु उस ने इसे लोगों को समझ बूझ दे कर प्रत्येक दशा का एक परिणाम निर्धारित कर दिया है। और सद्योसत्य दोनों की राहें खोल दी हैं। अब जो व्यक्ति जो राह चाहे अपना ले। और अब यह कहना अज्ञानता की बात है कि यदि अल्लाह चाहता तो हम संमार्ग पर होते।

[४] हदीस में है कि सब से बड़ा पापा: अल्लाह का साझी बनाना तथा माता–पिता के साथ बुरा व्यवहार और झूठी शपथ लेना है।

निर्धनता के भय से बध न करो। हम तुम्हें जीविका देते हैं और उन्हें भी देंगे और निर्लज्ज़ा की बातों के समीप भी न जाओ, खुली हों अथवा छुपी, और जिस प्राण को अल्लाह ने हराम (अवैध) कर दिया है उसे बध न करो परन्तु उचित कारण[1] से। अल्लाह ने तुम्हें इस का आदेश दिया है ताकि इसे समझो।

१५२.और अनाथ के धन के समीप न जाओ परन्तु ऐसे ढंग से जो उचित हो। यहाँ तक कि वह अपनी युवा अवस्था को पहुँच जाये। तथा नाप–तौल न्याय के साथ पूरा करो। हम किसी प्राण पर उस की सकत से अधिक भार नहीं रखते और जब बोलो तो न्याय करो, यद्यपि समीपवर्ती ही क्यों न हो। और अल्लाह का वचन पूरा करो, उस ने तुम्हें इस का आदेश दिया हैं, संभवतः तुम शिक्षा ग्रहण करो।

१५३.तथा (उस ने बताया है कि) यह (इस्लाम ही) अल्लाह की सीधी राह[2] है। अतः इसी पर चलो और दूसरी राहों पर न चलो अन्यथा वह तुम्हें उस की राह से दूर कर के तित्तर बित्तर कर देंगे। यही है जिस का आदेश उस ने तुम्हें दिया है, ताकि तुम उस के आज्ञाकारी रहो।

१५४.फिर हम ने मूसा को पुस्तक (तौरात) प्रदान की थी उस पर पुरस्कार पूरा करने के लिये जो सदाचारी हो, तथा प्रत्येक वस्तु के विवरण के लिये, तथा यह मार्गदर्शन और दया थी, ताकि वह अपने पालनहार से मिलने पर ईमान लायें।

१५५.तथा (उसी प्रकार) यह पुस्तक (कुरआन) हम ने अवतरित की है, यह बड़ा शुभकारी है। अतः इस पर चलो[3] और अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम पर दया की जाये।

---

[1] सहीह हदीस में है कि किसी मुलसमान का खून तीन कारणों के सिवा अवैध है :

१. किसी ने विवाहित होकर व्यभिचार किया हो।

२. किसी मुसलमान को जान बूझकर अवैध मार डाला हो।

३. इस्लाम से फिर गया हो और अल्लाह तथा उस के रसूल से युद्ध करने लगे। (सहीह मुस्लिम)

[2] नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने एक लकीर बनाई, और कहा: यह अल्लाह की राह है। फिर दायें बायें कई लकीरें खींची और कहा: इन पर शैतान है जो इन की ओर बुलाता है और यही आयत पढ़ी। (मुस्नद अह्मद)

[3] अर्थात अब अले किताब सहित पूरे संसार वासियों के लिये प्रलय तक इसी कुरआन का अनुसरण ही अल्लाह की दया का साधन है।

१५६.ताकि (हे अरब वासियों!) तुम यह न कहो कि हम से पूर्व दो समुदाय (यहूद तथा ईसाई) पर पुस्तक उतारी गयी और हम उन के पढ़ने-पढ़ाने से अनजान रह गये।

१५७.या यह न कहो कि यदि हम पर पुस्तक उतारी जाती तो निश्चय हम उन से अधिक सीधी राह पर होते, तो अब तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से एक खुला तर्क आ गया, मार्ग दर्शन तथा दया आ गई। फिर उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह की आयतों को मिथ्या कह दे, और उन से कतरा जाये? और जो लोग हमारी आयतों से कतराते हैं हम उन के कतराने के बदले उन्हें कड़ी यातना देंगे।

१५८.क्या वह लोग इसी बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उन के पास फ़रिश्ते आ जायें, या स्वयं उन का पालनहार आ जाये या आप के पालनहार की कोई आयत (निशानी) आ जाये?[१] जिस दिन आप के पालनहार की कोई निशानी आ जायेगी तो किसी प्राणी को उस का ईमान लाभ नहीं देगा जो पहले ईमान न लाया हो, या अपने ईमान की स्थिति में कोई सत्कर्म न किया हो। आप कह दें कि तुम प्रतीक्षा करो, हम भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

१५९.जिन लोगों ने अपने धर्म में विभेद किया और कई समुदाय हो गये, (हे नबी!) आप का उन से कोई सम्बंध नहीं, उन का निर्णय अल्लाह को करना है, फिर वह उन्हें बतायेगा कि वह क्या कर रहे थे।

१६०.जो (प्रलय के दिन) एक सत्कर्म ले कर (अल्लाह से) मिलेगा, उसे उस के दस गुना प्रतिफल मिलेगा। और जो कुकर्म लायेगा तो उस को उसी के बराबर कुफल दिया जायेगा, तथा उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

---

[१] आयत का भावार्थ यह है कि इन सभी तर्कों के प्रस्तुत किये जाने पर भी यदि यह ईमान नहीं लाते तो क्या उस समय ईमान लायेंगे जब फ़रिश्ते उन के प्राण निकालने आयेंगे? या प्रलय के दिन जब अल्लाह इन का निर्णय करने आयेगा? या जब प्रलय की कुछ निशानियाँ आ जायेंगी? जैसे सूर्य का पश्चिम से निकल आना। सहीह बुख़ारी की हदीस है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा कि प्रलय उस समय तक नहीं आयेगी जब तक कि सूर्य पश्चिम से नहीं निकलेगा। औअर जब निकलेगा तो जो देखेंगे सभी ईमान ले आयेंगे। और यह वह समय होगा कि किसी प्राणी को उस का ईमान लाभ नहीं देगा। फिर आप ने यही आयत पढ़ी। (सहीह बुख़ारी)

१६१.(हे नबी!) आप कह दें कि मेरे पालनहार ने निश्चय मुझे सीधी राह (सुपथ दिखा दी है। वही सीधा धर्म जो एकेश्वरवादी इब्राहीम का धर्म था, और वह मुश्रिकों में से न था।

१६२.आप कह दें कि निश्चय मेरी नमाज़ और मेरी क़ुर्बानी तथा मेरा जीवन–मरण संसार के पालनहार अल्लाह के लिये है।

१६३.जिस का कोई साझी नहीं तथा मुझे इसी का आदेश दिया गया है और मैं प्रथम मुसलमानों में से हूँ।

१६४.आप उन से कह दें कि क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी ओर पालनहार की खोज करूँ? जब कि वह (अल्लाह) प्रत्येक चीज़ का पालनहार है। तथा कोई प्राणी कोई भी कुकर्म करेगा, तो उस का भार उसी पर होगा। और कोई किसी दूसरे का बोझ नहीं उठायेगा। फिर (अन्ततः) तुम्हें अपने पालनहार के पास ही जाना है। तो जिन बातों में तुम विभेद कर रहे हो वह तुम्हें बता देगा।

१६५.वही है जिस ने तुम्हें धरती में अधिकार दिया है और तुम में से कुछ को (धन शक्ति में) दूसरे से कई श्रेणियाँ ऊँचा किया है। ताकि उस में तुम्हारी परीक्षा[१] ले जो तुम्हें दिया हैं। वास्तव में आप का पालनहार शीघ्र ही दण्ड देने वाला[२] है और वास्तव में वह अति क्षमी दयावान् है।

*****

[१] नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: कॉबा के रब्ब की शपथ! वह क्षति में पड़ गया। अबूज़र (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: कौन? अप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: (धनी)। परन्तु जो दान करता रहता है।(सहीह बुख़ारी : ६६३८, सही मुस्लिम : ९९०)

[२] अर्थात अवैज्ञाकारियों को।

सूरह आराफ़ – ७

सूरह आराफ़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में २०६ आयतें हैं।

इस में आराफ़ की चर्चा है इस लिये इस का नाम सूरह आराफ़ है।

- इस में अल्लाह के भेजे हुये नबी का अनुसरण करने पर बल दिया गया है, जिस में डराने तथा सावधान करने की भाषा अपनाई गई है।
- इस में आदम (अलैहिस्सलाम) को शैतान के धोखा देने का वर्णन किया गया है ताकि मनुष्य उस से सावधान रहे।
- इस में यह बताया गया है कि अगले नबियों की जातियाँ नबियों के विरोध का दुष्परिणाम देख चुकी है, फिर अहले किताब को संबोधित किया गया है और एक जगह पूरे संसार वासियों को संबोधित किया गया है।
- इस में बताया गया है कि सभी नबियों ने एक अल्लाह की वंदना की, और उसी की ओर बुलाया और सब का मूल धर्म एक है।
- इस में यह भी बताया गया है कि ईमान लाने के पश्चात् निफ़ाक़ (द्विधा) का क्या दुष्परिणाम होता है और वचन तोड़ने का अन्त क्या होता है।
- सूरह के अन्त में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के साथियों को उपदेश देने के कुछ गुण बताये गये हैं और विरोधियों की बातों को सहन करने तथा उत्तोजित होकर ऐसा कार्य करने से रोका गया है जो इस्लाम के लिये हानिकारक हो।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. अलिफ़, लाम, मीम, साद।

२. यह पुस्तक है, जो आपकी ओर उतारी गई है। अत: (हे नबी!) आप के मन में इस से कोई संकोच न हो, ताकि आप इस के द्वारा सावधान करें[1], और ईमान वालों के लिये उपदेश हैं।

३. (हे लोगों!) जो तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम पर उतारा गया है उस पर चलो, और उस के सिवा दूसरे सहायकों के पीछे न चलो। तुम बहुत थोड़ी शिक्षा लेते हो।

४. तथा बहुत सी बस्तियाँ हैं जिन्हें हम ने ध्वस्त कर दिया है, उन पर हमारा प्रकोप अकस्मात रात्रि में आया या जब वह दोपहर के समय आराम कर रहे थे।

५. और जब उन पर हमारा प्रकोप आ पड़ा तो उन की पुकार यही थी कि वास्तव में हम ही अत्याचारी[2] थे।

६. तो हम उन से अवश्य प्रश्न करेंगे जिन के पास रसूलों को भेजा गया तथा रसूलों से भी अवश्य[3] प्रश्न करेंगे।

७. फिर हम अपने ज्ञान से उन के समक्ष वास्तविक्ता का वर्णन कर देंगे। तथा हम अनुपस्थित नहीं थे।

८. तथा उस (प्रलय के) दिन (कर्मों की) तौल न्याय के साथ होगी। फिर जिस के पलड़े भारी होंगे वही सफल होंगे।

९. और जिन के पलड़े हलके होंगे तो वही स्वयं को क्षति में डाल लिये होंगे। क्यों कि वह हमारी आयतों के साथ अत्याचार करते[4] रहे।

---

[1] अर्थात अल्लाह के इन्कार तथा उस के दुष्परिणाम से।

[2] अर्थात अपनी हठधर्मी को उस समय स्वीकार किया।

[3] अर्तात प्रलय के दिन उन समुदायों से प्रश्न किया जायेगा कि तुम्हारे पास रसूल आये या नहीं? वह उत्तर देंगे: आये थे। परन्तु हम ही अत्याचारी थे। हम ने ुन की एक न सुनी। फिर रसूलों से प्रश्न किया जायेगा कि उन्होंने अल्लाह का संदेश पहुँचाया या नहीं? तो वह कहेंगे: अवश्य हम ने तेरा संदेश पहुँचा दिया।

[4] भावार्थ यह है कि यह अल्लाह का नियम है कि प्रत्येक व्यक्ति तथा समुदाय को उन के कर्मानुसार फल मिलेगा। और कर्मों की तौल के लिये अल्लाह ने नाप निर्धारित कर दी है।

१०. तथा हम ने तुम्हें धरती में अधिकार दिया और उस में तुम्हारे लिये जीवन के संसाधन बनाये। तुम थोड़े ही कृतज्ञ होते हो।

११. और हम ने ही तुम्हें पैदा किया[1] फिर तुम्हारा रूप बनाया, फिर हम ने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सजदा करो तो इब्लीस के सिवा सब ने सज्दा किया। वह सज्दा करने वालों में से न हुआ।

१२. अल्लाह ने उस से कहा: किस बात ने तुझे सज्दा करने से रोक दिया जब कि मैंने तुझे आदेश दिया था? उस ने कहा: मैं उस से उत्तम हूँ। मेरी रचना तू ने अग्नि से की, और उस की मिट्टी से।

१३. तो अल्लाह ने कहा: इस (स्वर्ग) से उतर जा। तेरे लिये यह योग्य नहीं कि इस में घमंड करे। तू निकल जा। वास्तव में तू अपमानितों में है।

१४. उस ने कहा: मुझे उस दिन तक के लिये अवसर दे दो जब लोग फिर जीवित किये जायेंगे।

१५. अल्लाह ने कहा: तुमझे अवसर दिया जा रहा है।

१६. उस ने कहा: तो जिस प्रकार तू ने मुझे कुपथ किया है मैं भी तेरी सीधी राह पर इन की घात में लगा रहूँगा।

१७. फिर उन के पास उन के आगे और पीछे तथा दायें और बायें से आऊँगा।[2] और तू उन में से अधिक्तर को (अपना) कृतज्ञ नहीं पायेगा।[3]

१८. अल्लाह ने कहा: यहाँ से अपमानित धिक्कारा हुआ निकल जा। जो भी उन में से तेरी राह चलेगा। तो मैं तुम सभी से नरक को अवश्य भर दूँगा।

१९. और हे आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी स्वर्ग में रहो और जहाँ से चाहो खाओ। और इस वृक्ष के समीप न जाना अन्यथा अत्याचारियों में हो जाओगे।

२०. तो शैतान ने दोनों को संशय में डाल दिया, ताकि दोनों के लिये उन के गुप्तांगों को खोल दे जो उन से छुपाये गये थे। और कहा: तुम्हारे पालनहार ने तुम दोनों को इस

---

[1] अर्तात मूल पुरुष आदम अस्तित्व दिया।

[2] अर्थात प्रत्येक दिशा से घेरुँगा और कुपथ करुँगा।

[3] शैतान ने अपना विचार सच्च कर दिखाया और अधिक्तर लोग उस के जाल में फंस कर शिर्क जैसे महा पाप में पड़ गये। (देखिये सूरह सबा आयत – २०)

वृक्ष से केवल इसलिये रोक दिया है कि तुम दोनों फ़रिश्ते अथवा सदावासी हो जाओगे।

२१. तथा दोनों के लिये शपथ दी कि वास्तव में मैं तुम दोनों का हितैषी हूँ।

२२. तो उन दोनों को धोखे से रिझा लिया। फिर जब दोनों ने उस वृक्ष का स्वाद लिया तो उन के लिये उन के गुप्तांग खुल गये और वे उन पर स्वर्ग के पत्ते चिपकाने लगे। और उन्हें उन के पालनहार ने आवाज़ दी: क्या मैंने तुम्हें इस वृक्ष से नहीं रोका था। और तुम दोनों से नहीं कहा था कि शैतान तुम्हारा खुला शत्रू हैं?

२३. दोनों ने कहा: हे हमारे पालनहार! हमने अपने ऊपर अत्याचार कर लिया और यदि तू हमें क्षमा तथा हम पर दया नहीं करेगा तो हम अवश्य ही नाश हो[१] जायेंगे।

२४. उस ने कहा: तुम सब उतरो, तुम एक दूसरे के शत्रू हो। और तुम्हारे लिये धरती में रहना और एक निर्धारित समय तक जीवन का साधन है।

२५. तथा कहा: तुम उसी में जीवित रहोगे और उसी में मरोगे और उसी से (फिर) निकाले जाओगे।

२६. हे आदम के पुत्रो! हम ने तुम पर ऐसा वस्त्र उतार दिया है जो तुम्हारे गुप्तांगों को छुपाता, तथा शोभा है। और अल्लाह की आज्ञाकारिता का वस्त्र ही सर्वोत्तम है। यह अल्लाह की आयतों में से एक है, ताकि वह शिक्षा लें।[२]

२७. हे आदम के पुत्रो! ऐसा न हो कि शैतान तुम्हें बहका दे जैसे तुम्हारे माता–पिता को स्वर्ग से निकाल दिया, उन के वस्त्र उतरवा दिये ताकि उन्हें उन के गुप्तांग दिखा दे। वास्तव में वह तथा उस की जाति तुम्हें ऐसे स्थान से देखती है जहाँ से तुम उन्हें नहीं देख सकते। वास्तव में हम ने शैतानों को उन का सहायक बना दिया है जो ईमान नहीं रखते।

२८. तथा जब वह (मुश्रिक) कोई निर्लज्जा का काम करते हैं तो कहते है कि इसी (रीति) पर हम ने अपने पूर्वजों को पाया है। तथा अल्लाह ने हमें इस का आदेश दिया है। (हे नबी!) आप उन से कह दें कि अल्लाह कभी निर्लज्जा का आदेश नहीं देता। क्या तुम अल्लाह पर ऐसी बात का आरोप धरते हो जिसे तुम नहीं जानते?

---

[१] अर्थात आदम तथा हव्वा ने अपने पाप के लिये अल्लाह से क्षमा माँग ली। शैतान के समान अभिमान नहीं किया।

[२] तथा उस के आज्ञाकारी एवं कृतज्ञ बनें।

२९. आप उन से कह दें कि मेरे पालनहार ने न्याय का आदेश दिया है। (और वह यह है कि) प्रत्येक मस्जिद में नमाज़ के समय अपना ध्यान सीधे उसी की ओर करो[१] और उस के लिये धर्म को विशुद्ध कर के उसी को पुकारों। जिस प्रकार उसने तुम्हें पहले पैदा किया है उसी प्रकार (प्रलय में) फिर जीवित कर दिये जाओगे।

३०. एक समुदाय को उस ने सुपथ दिखा दिया और दूसरा समुदाय कुपथ पर स्थिर रह गया। वास्तव में इन लोगों ने अल्लाह के सिवा शैतानों को सहायक बना लिया, फिर भी वह समझते हैं कि वास्तव में वही सुपथ पर हैं।

३१. हे आदम के पुत्रो! प्रत्येक मस्जिद के पास (नमाज़ के समय) अपनी शोभा धारण करो[२] तथा खाओ और पीओ और बेजा ख़र्च न करो। वस्तुत: वह बेजा ख़र्च करने वालों से प्रेम नहीं करता।

३२. (हे नबी!) इस (मिश्रणवादियों) से कहिये कि किस ने अल्लाह की उस शोभा को हराम (वर्जित) किया है[3] जिसे उस ने अपने सेवकों के लिये निकाला है? तथा स्वच्छ जीविकाओं को? आप कह दें: यह संसारिक जीवन में उन के लिये (उचित) हैं, जो ईमान लाये तथा प्रलय के दिन (उन्हीं के लिये) विशेष[४] है। इसी प्रकार हम अपनी आयतों का सविस्तार वर्णन उन के लिये करते हैं जो ज्ञान रखते हों।

३३. (हे नबी!) आप कह दें कि मेरे पालनहार ने तो केवल खुले तथा छुपे कुकर्मों और पाप तथा अवैध विद्रोह को ही हराम (वर्जित) किया है, तथा इस बात को कि तुम उसे अल्लाह का साझी बनाओ जिस का कोई तर्क उस ने नहीं उतारा है तथा अल्लाह पर ऐसी बात बोलो जिसे तुम नहीं जानते।

---

[१] इस आयत में सत्य धर्म के निम्नलिखित तीन मूलय यिम बताये गये हैं:कर्म में संतुलन,वंदना में अल्लाह की ओर ध्यान,तथा धर्म में विशुद्धता तथा एक अल्लाह की वंदना करना।

[२] कुरैश नग्न होकर कॉबा की परिक्रमा करते थे। इसी पर यह आयत उतरी।

[३] इस आयत में सन्यास का खण्डण किया गया है कि जीवयन के सुखों तथा शोभावों से लाभान्वित होना धर्म के विरुद्ध नहीं है। इन सब से लाभान्वित होने में ही अल्लाह की प्रसन्नता है। नग्न रहना तथा संसारिक सुकों से वंचित हो जाना सत्धर्म नहीं है। धर्म की यह शिक्षा है कि अपनी शोभावों से सुसज्जित होकर अल्लाह की वंदना और उपासना करो।

[४] एक बार नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से कहा: क्या तुम प्रसन्न नहीं हो कि संसार काफ़िरों के लिये हो और परलोक हमारे लिये? (बुख़ारी – २४६८, मुस्मिल १४७९)

३४. प्रत्येक समुदाय का[1] एक निर्धारित समय है, फिर जब वह समय आ जायेगा तो क्षण भर देर या सवेर नहीं होगी।

३५. हे आदम के पुत्रो! जब तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल आ जायें जो तुम्हें मेरी आयतें सुना रहे हों तो जो डरेगा और अपना सुधार कर लेगा तो उस के लिये कोई डर नहीं होगा, और न वह[2] उदासीन होंगे।

३६. और जो हमारी आयतें झुठलायेंगे और उनसे घमंड करेंगे वही नारकी होंगे। और वही उसमें सदावासी होंगे।

३७. फिर उस से बड़ा अत्याचारी कौन है जो अल्लाह पर मिथ्या बातें बनाये अथवा उस की आयतों को मिथ्या कहे? उन को उन के भाग्य में लिखा भाग मिल जायेगा। यहाँ तक कि जिस समय हमारे फ़रिश्ते उन का प्राण निकालने के लिये आयेंगे तो उन से कहेंगे कि वह कहाँ हैं जिन को तुम अल्लाह के सिवा पुकारते थे? वह कहेंगे कि वह तो हम से खो गये, तथा अपने ही विरुद्ध साक्षा (गवाह) बन जायेंगे कि वस्तुत: वह काफ़िर थे।

३८. अल्लाह का आदेश होगा कि तुम भी प्रवेश कर जाओ उन समुदायों में जो तुम से पहले के जिन्नों और मनुष्यों में से नरक में हैं। जब भी कोई समुदाय (नरक में) प्रवेश करेगा तो अपने समान दूसरे समुदाय को धिक्कार करेगा, यहाँ तक कि जब उस में सब एकत्र हो जायेंगे तो उन का पिछला अपने पहले के लिये कहेगा: हे हमारे पालनहार इन्होंने ही हमें कुपथ किया है। अत: इन्हें दुगनी यातना दे। वह (अल्लाह) कहेंगा तुम में से प्रत्येक के लिये दुगनी यातना है, परन्तु तुम्हें ज्ञान नहीं।

३९. तथा उन का पहला समुदाय अपने दूसरे समुदाय से कहेगा: (यदि हम दोषी थे) तो हम पर तुम्हारी कोई प्रधानता नहीं[1] हुई, तो तुम अपने कुकर्मों की यातना का स्वाद लो।

---

[1] अर्थात काफ़िर समुदाय की यातना के लिये।

[2] इस आयत में मानव जाति के मार्गदर्शन के लिये समय समय पर रसूलों के आने के बारे में सूचित किया गया है और बताया जा रहा है कि अब इसी नियमानुसार अंतिम रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आ गये हैं। अत: उन की बात मान लो, अन्यथा इस का परिणाम स्वयं तुम्हारे सामने आ जायेगा।

४०. वास्तव में जिन्होंने हमारी आयतो को झुठला दिया और उन से अभिमान किया उन के लिये आकाश के द्वारा नहीं खोले जायेंगे और न वह स्वर्ग में प्रवेश करेंगे, जब तक[२] ऊँट सूई के नाके से पार न हो जाये। और हम इसी प्रकार अपराधियों का बदला देते हैं।

४१. उन्हीं के लिये नरक का बिछौना और उन के ऊपर से ओढ़ना होगा। और इसी प्रकार हम अत्याचारियों को प्रतिकार (बदला)[३] देते हैं।

४२. और जो ईमान लाये और सत्कर्म किये, और हम किसी पर उस की सकत से (अधिक) भार नहीं रखते। वही स्वर्गी हैं और वही उस में सदावासी होंगे।

४३. तथा उन के दिलों में जो द्वेष होगा उसे हम निकाल देंगे।[४] उन (स्वर्गों में) नहरें बहती होंगी तथा वह कहेंगे कि उस अल्लाह की प्रशंसा है जिस ने हमें इस की राह दिखाई और यदि अल्लाह हमें मार्गदर्शन न देता तो हमें मार्गदर्शन न मिलता। हमारे पालनहार के रसूल सत्य लेकर आये, तथा उन्हें पुकारा जायेगा कि इस स्वर्ग के अधिकारी तुम अपने सत्कर्मों के कारण हुये हो।

४४. तथा स्वर्गवासी नरकवासियों को पुकारेंगे कि हम को हमारे पालनहार ने जो वचन दिया था उसे हम ने सच्च पाया, तो क्या तुम्हारे पालनहार ने तुम्हें जो वचन दिया था उसे तुम ने सच्च पाया? वह कहेंगे कि हाँ। फिर उन के बीच एक पुकारने वाला पुकारेगा कि अल्लाह की धिक्कार है उन अत्याचारियों पर।

४५. जो लोगों को अल्लाह की राह (सत्धर्म) से रोकते तथा उसे टेढ़ा करना चाहते थे। और वही परलोक के प्रति अविश्वास नहीं रखते थे।

४६. और दोनों (नरक तथा स्वर्ग) के बीच एक पर्दा होगा और कुछ लोग आराफ़[५] (ऊँचाईयों) पर होंगे। जो प्रत्येक को उन के लक्षणों से पहचानेंगे और स्वर्ग

---

[१] और हम और तुम यातना में बराबर है। आयत में इस तथ्य की ओर संकेत है कि कोई समुदाय कुपथ होता है तो वह स्वयं कुपथ नहीं होता, वह दूसरों को भी अपने कुचरित्र से कुपथ करता है अत: सभी दुगनी यातना के अधिकारी हुये।

[२] अर्थात उन का स्वर्ग में प्रवेश असंभव होगा।

[३] अर्थात उन के कुकर्मों तथा अत्याचारों का।

[4] स्वर्गियों को सब प्रकार के सुख, सुविधा के साथ यह भी बड़ी नेमत मिलेगी कि उन के दिलों का बैर निकाल दिया जायेगा, ताकि स्वर्ग में मित्र बनकर रहें। क्योंकि आपस के बैर से सब सुख किरकिरा हो जाता है।

[५] आराफ़ नरक तथा स्वर्ग के मध्य एक दीवार है जिस पर वह लोग रहेंगे जिन के सुकर्म और कुकर्म बराबर होंगे। और वह अल्लाह की दया से स्वर्ग में प्रवेश की आशा रखते होंगे। (इब्ने कसीर)

वासियों को पुकार कर उन्हें सलाम करेंगे। और उन्होंने उस में प्रवेश नहीं किया होगा, परन्तु उस की आशा रखते होंगे।

४७. और जब उन की आँखे नरक वासियों की ओर फिरेंगी तो कहेंगे: हे हमारे पालनहार! हमें अत्याचारियों मे सम्मिलित न करना।

४८. फिर आराफ़ (ऊँचाईयों) के लोग कुछ लोगों को उन के लक्षणों से पहचान जायेंगे[1], उन से कहेंगे कि तुम्हारे जत्थे और तुम्हारा घमंड तुम्हारे किसी काम नहीं आया।

४९. (और स्वर्गवासियों की ओर संकेत करेंगे कि) क्या यही वह लोग नहीं है जिन के सम्बंध में तुम शपथ लेकर कह रहे थे कि अल्लाह इन्हें अपनी दया में से कुछ नहीं देगा? (आज उन से कहा जा रहा है कि) स्वर्ग में प्रवेश कर जाओ, न तुम पर किसी प्रकार का भय है और न तुम उदासीन होगे।

५०. तथा नरकवासी स्वर्गवासियों को पुकारेंगे कि हम पर तनिक पानी डाल दो, अथवा जो अल्लाह ने तुम्हें प्रदान किया है उस में से कुछ दे दो। वह कहेंगे कि अल्लाह ने यह दोनों (आज) काफ़िरों के लिये हराम (वर्जित) कर दिया है।

५१. (उस का निर्णय है कि) जिन्होंने अपने धर्म को तमाशा और खेल बना लिया था, तथा जिन्हें संसारिक जीवन ने धोखे में डाल रखा था, तो आज हम उन्हें ऐसे ही भुला देंगे जिस प्रकार उन्होंने आज के दिन के आने को भुला दिया था[2] और इस लिये भी कि वह हमारी आयतों का इन्कार करते रहे।

५२. जब कि हम ने उन के लिये एक ऐसी पुस्तक दी जिसे हम ने ज्ञान के आधार पर सविस्तार वर्णित कर दिया हैं जो मार्गदर्शन तथा दया है उन लोगों के लिये जो ईमान (विश्वास) रखते हैं।

५३. (फिर) क्या वह इस की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि इस का परिणाम सामने आ जाये? जिस दिन इस का परिणाम आ जायेगा तो वही जो इस से पहले इसे भूले हुये थे

[1] जिन को संसार में पहचानते थे और याद दिलायेंगे कि जिस पर तुम्हें घमंड था आज तुम्हारे काम नहीं आया।

[2] नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: प्रलय के दिन अल्लाह ऐसे बंदों से कहेगा: क्या मैंने तुम्हें बीवी–बच्चे नहीं दिये, आदर–मान नहीं दिया? क्या ऊँट घोड़े तेरे आधीन नहीं किये, क्या तू मुख्या बनकर चुंगी नहीं लेता था? वह कहेगा: हे अल्लाह सब सहीह है। अल्लाह प्रश्न करेगा: क्या मुझ से मिलने की आशा रखता था? वह कहेगा: नहीं। अल्लाह कहेगा जैसे तू मुझे भूला रहा, आज मैं तुझे भूलजाता हुँ। (सहीह मुस्लिम – २९६८)

कहेंगे कि हमारे पालनहार के रसूल सच्च लेकर आये थे, (परन्तु हम ने नहीं माना) तो क्या हमारे लिये कोई अनुशंसक (सिफ़ारशी) है, जो हमारी अनुशंसा (सिफ़ारशी) करे? अथवा हम संसार में फेर दिये जाये तो जो कर्म हम करते रहे उन के विपरीत कर्म करेंगे! उन्होंने स्वयं को क्षति में डाल दिया, तथा उन से जो मिथ्या बातें बना रहे थे खो गईं।

५४. तुम्हारा पालनहार वही अल्लाह है जिस ने आकाशें तथा धरती को छः दिनों में बनाया[१], फिर अर्श (सिंहासन) पर स्थित हो गया। वह रात्री से दिन को ढक देता है, दिन उस के पीछे दौड़ता हुआ आ जाता है, सूर्य तथा चाँद और तारे उस की आज्ञा के अधीन हैं। सुन लो! वही उत्पत्तिकार है, और वही शासक[२] है। वही अल्लाह अति शुभ, संसार का पालनहार है।

५५. तुम अपने (उसी) पालनहार को रोते हुये तथा धीरे–धीरे पुकारों। निःसंदेह वह सीमा पार करने वालों से प्रेम नहीं करता।

५६. तथा धरती में उस के सुधार के पश्चात्[३] उपद्रव न करो, और उसी से डरते हुये, तथा आशा रखते हुये[४] प्रार्थना करो। वास्तव में अल्लाह की दया सदाचारियों के समीप है।

५७. और वही है जो अपनी दया (वर्षा) से पहले वायुओं को (वर्षा) की शुभ सूचना देने के लिये भेजता है। और जब वह भारी बादलों को लिये उड़ती हैं तो हम उसे किसी निर्जीव धरती को (जीवित) करने के लिये पहुँचा देते हैं, फिर उस से जल वर्षा कर के उस के द्वारा प्रत्येक प्रकार के फल उपजा देते हैं। इसी प्रकार हम मुर्दों को जीवित करते हैं, ताकि तुम शिक्षा ग्रहण कर सको।

---

[१] यह छः दिन शनिवार, रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार और बृहस्पतिवार हैं। पहले दो दिन में धरती को, फिर आकाश को बनाया, फिर आकाश को दो दिन में बरारबर किया, फिर धरती को फैलाया और उस में पर्वत, पानी और उपज की व्यवस्था दो दिन में की। इस प्रकार यह कुल छः दिन हुये। (देखिये : सूरह सज्दाः९–१०)

[२] अर्थात इस विश्व की व्यवसव्था का अधिकार उस के सिवा किसी को नहीं है।

[३] अर्थात सत्धर्म और रसूलों द्वारा सुधार किये जाने के पश्चात्।

[४] अर्थात पापाचार से डरते और उस की दया की आशा रखते हुये।

५८. और स्वच्छ भूमि अपनी उपज अल्लाह की अनुमति से भरपूर देती है। तथा ख़राब भूमि की उपज थोड़ी ही होती है। इसी प्रकार हम अपनी[१] आयतें (निशानियाँ) उन के लिये दुहराते हैं जो शुक्र अदा करते हैं।

५९. हम ने नूह[२] को उस की जाति की ओर (अपना संदेश पहुँचाने के लिये) भेजा था, तो उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! (केवल) अल्लाह की इबादत (वंदना) करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। मैं तुम पर एक बड़े दिन की यातना से डरता हूँ।

६०. उस की जाति के प्रमुखों ने कहा: हमें लगाता है कि तुम खुले कुपथ में पड़ गये हो।

६१. उस ने कहा: हे मेरी जाति! मैं किसी कुपथ में नहीं हूँ। परन्तु मैं विश्व के पालनहार का रसूल हूँ।

६२. तुम्हें अपने पालनहार का संदेश पहुँचा रहा हूँ। और तुम्हारा भला चाहता हूँ, और अल्लाह की ओर से उन चीज़ों का ज्ञान रखता हूँ जिन का ज्ञान तुम्हें नहीं है।

६३. क्या तुम्हें इस पर आश्चर्य हो रहा है कि तुम्हारे पालनहार की शिक्षा तुम्ही में से एक पुरुष द्वारा तुम्हारे पास आ गई है, ताकि वह तुम्हें सावधान करे, और ताकि तुम आज्ञाकारी बनो और अल्लाह की दया के योग्य हो जाओ??

६४. फिर भी उन्होंने उस को झुठला दिया। तो हम ने उसे और जो नौका में उस के साथ थे उन को बचा लिया। और उन्हें डुबो दिया जो हमारी आयतों को झुठला चुके थे। वास्तव में वह (समझ बूझ के) अँधे थे।

---

[१] नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: मुझे अल्लाह ने जिस मार्गदर्शन और ज्ञान के साथ भेजा है वह उस वर्षा के समान है जो किसी भूमि में हुई। तो उस का कुछ भाग अच्छा था जिस ने पानी लिया और उस से बहुत सी घास और चारा उगाया। और कुछ कड़ा था जिस ने पानी रोक लिया तो लोगों को लाभ हुआ और उस से पिया और सींचा। और कुछ चिकना था, जिस ने न पानी रोका न घास उपजाई। तो यही उस की दशा है जिस ने अल्लाह केधर्म को समझा और उसे सीखा तथा सिखाया। और उस की जिस ने उस पर ध्यान ही नहीं दिया और न अल्लाह के मार्गदर्शन को स्वीकार किया जिस के साथ मुझे भेजा गया है। (सहीह बुख़ारी – ७९)

[२] बताया जाता है कि नूह (अलैहिस्सलाम) प्रथम मनु आदम (अलैहिस्सलाम) के दसवें वंश में थे। उन से कुछ पहले तक लोग इस्लाम पर चले आ रहे थे। फिर अपने धर्म से फिर गये और अपने पुनीत पूर्वजों की मूर्तियाँ बना कर पूजने लगे। तब अल्लाह ने नूह को भेजा। किन्तु कुछ के सिवा किसी ने उन की बात नहीं मानी। अन्ततः सब डुबो दिये गये। फिर नूह के तीन पुत्रों से मानव वंश चला इसी लिये उन को दूसरा आदम भी कहा जाता है। (देखिये सूरह नूह, आयत : ७१)

६५. (और इसी प्रकार) आद[1] की ओर उन के भाई हूद को(भेजा)। उस ने कहा: हे मेरी जाति! अल्लाह की इबादत (वंदना करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। तो क्या तुम (उस की अवैज्ञा से) नहीं डरते?

६६. (इस पर) उस की जाति में से उन प्रमुखों ने कहा जो काफ़िर हो गये कि हमें ऐसा लग रहा है कि तुम ना समझ हो गये हो। और वास्तव में हम तुम्हें झुठों मे समझ रहे हैं।

६७. उस ने कहा: हे मेरी जाति! मुझ में कोई ना समझी की बात नहीं है परन्तु मैं तो संसार के पालनहार का रसूल (संदेशवाहक) हूँ।

६८. मैं तुम्हें अपने पालनहार का संदेश पहुँचा रहा हूँ और वास्तव में मैं तुम्हारा भरोसा करने योग्य शिक्षक हूँ।

६९. क्या तुम्हें इस पर आश्चर्य हो रहा है कि तुम्हारे पालनहार की शिक्षा तुम्ही में से एक पुरुष द्वारा तुम्हारे पास आ गई है ताकि वह तुम्हें सावधान करे? तथा याद करो कि अल्लाह ने नूह की जाति के पश्चात् तुम्हें धरती में अधिकार दिया है, और तुम्हें अधिक शारीरिक बल दिया है। अत: अल्लाह के पुरस्कारों को याद[2] करो। संभवत: तुम सफल हो जाओगे।

७०. उन्होंने कहा: क्या तुम हमारे पास इस लिये आये हो कि हम केवल एक ही अल्लाह की इबादत (वंदना) करें और उन्हें छोड़ दें जिन की पूजा हमारे पूर्वज करते आ रहे हैं? तो वह बात हमारे पास ला दो जिस से हमें डरा रहे हो, यदि तुम सच्चे हो?

७१. उसने कहा: तुम पर तुम्हारे पानलहार का प्रकोप और क्रोध आ पड़ा है। क्या तुम मुझ से कुछ (मूर्तियों के) नामों के विषय में विवाद कर रहे हो जिन का तुम ने तथा तुम्हारे पूर्वजों ने (पूज्य) नाम रख दिया है। जिस का कोई तर्क (प्रमाण) अल्लाह ने नहीं उतारा है? तो तुम (प्रकोप की) प्रतीक्षा करो और तुम्हारे साथ मैं भी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

---

[1] नूह की जाति के पश्चात् अरब में आद जाति का उत्थान हुआ। जिस का निवास स्थान अह्क़ाफ़ का क्षेत्र था। जो हिजाज़ तथा यमामा के बीच स्थित है। उन की आबादियाँ उमान से हज़रमौत और ईराफ़ तक फैली हुई थीं।

[2] अर्थात उस के आज्ञाकारी तथा कृतज्ञ बनो।

७२. फिर हम ने उसे और उस के साथियों को बचा लिया। तथा उन की जड़ काट दी जिन्होंने हमारी आयतो (आदेशों) को झुठला दिया था। और वह ईमान लाने वाले नहीं थे।

७३. और (इसी प्रकार) समूद[१] (जाति) के पास उन के भाई सालेह को भेजा। उस ने कहा: हे मेरी जाति! अल्लाह की (वंदना) करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से खुला प्रमाण (चमत्कार) आ गया है। यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिये एक चमत्कार[२] है। अत: इसे अल्लाह की धरती में चरने के लिये छोड़ दो और इसे बुरे विचार से हाथ न लगाना, अन्यथा तुम्हें दु:खदायी यातना घेर लेगी।

७४. तथा याद करो कि अल्लाह ने आद जाति के ध्वस्त किये जाने के पश्चात् तुम्हें धरती में अधिकार दिया है और तुम्हें धरती में बसाया है, तुम उस के मैदानों में भवन बनाते हो और पर्वतों को तराश कर घर बनाते हो। अत: अल्लाह के उपकारों को याद करो और धरती में उपद्रव करते न फिरो।

७५. उस की जाति के घमंडी प्रमुखों ने उन निर्बलों से कहा जो उन में से ईमान लाये थे: क्या तुम विश्वास रखते हो कि सालेह अपने पालनहार का भेजा हुआ है? उन्होंने कहा: निश्चय जिस (संदेश) के साथ वह भेजा गया है हम उस पर ईमान (विश्वास) रखते हैं।

७६. (तो इस पर) घमंडियों[3] ने कहा: हम तो जिस का तुमने विश्वास किया है उसे नहीं मानते।

७७. फिर उन्होंने ऊँटनी को बधकर दिया और अपने पालनहार के आदेश का उल्लंघन किया और कहा: हे सालेह! तू हमें जिस (यातना) की धमकी दे रहा था उसे ला दे, यदि तू वास्तव में रसूलों में से है।

---

[१] समूद जाति अरब के उस क्षेत्र में रहती थी जो हिजाज़ तथा शम के बीच (वादिये–कुर) तक चला गया है। जिस को आज (अल उला) कहते हैं। इसी को दूसरे स्थान पर (अलहिज्र) भी कहा गया है।

[२] समूद जाति ने अपने नबी सालेह अलैहिस्सलाम से यह माँग की थी कि: पर्वत से एक ऊँटनी निकल दें। और सालेह अलैहिस्सलाम की प्रार्थना से अल्लाह ने उन की यह माँग पूरी कर दी। (इब्ने कसीर)

[3] अर्थात अपने संसारिक सुखों के कारण अपने बड़े होने का गर्व था।

७८. तो उन्हें भूकम्प ने पकड़ लिया। फिर जब भोर हुई तो वे अपने घरों में औंधे पड़े हुये थे।

७९. तो सालेह ने उन से मुँह फेर लिया और कहा: हे मेरी जाति! मैंने तुम्हें अपने पालनहार के उपदेश पहुँचा दिये थे और मैंने तुम्हारा भला चाहा। परन्तु तुम उपकारियों से प्रेम नहीं करते।

८०. और हम ने लूत[1] को भेजा। जब उस ने अपनी जाति से कहा: क्या तुम ऐसी निर्लज्जा का काम कर रहे हो जो तुम से पहले संसारवासियों में से किसी ने नहीं किया है?

८१. तुम स्त्रियों को छोड़कर कामवासना की पूर्ति के लिये पुरुषों के पास जाते हो? बल्कि तुम सीमा लांघनेवाली जाति[2] हो।

८२. और उस की जाति का उत्तर बस यह था कि इन को अपनी बस्ती से निकाल दो। यह लोग अपने में बड़े पवित्र बन रहे हैं।

८३. हम ने उसे और उस के परिवार को उस की पत्नी के सिवा बचा लिया, वह पीछे रह जाने वाली थी।

८४. और हम ने उन पर (पत्थरों) की वर्षा कर दी। तो देखो कि अपराधियों का परिणाम कैसा रहा?

८५. तथा मद्यन[3] की ओर हम ने उस के भाई शुऐब को रसूल बना कर भेजा। उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! अल्लाह की इबादत (वंदना) करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं है। तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार का खुला तर्क (प्रमाण) आ गया है। अत: नाप और तौल पुरी करो और लोगों की चीज़ों में कमी न करो।

---

[1] लूत अलैहिस्सलाम इब्राहीम अलैहिस्सलाम के भतीजे थे। और वह जिस जाति के मार्गदर्शन के लिये भेजे गये थे वह उस क्षेत्र में रहती थी जहाँ अब मृत सागर स्थित है। उस का नाम भाष्यकारों ने सदूम बताया है।

[2] लूत अलैहिस्सलाम की जाति ने निर्लज्जा और बालमैथुन की कुरीति बनाई थी जो मनुष्य के स्वभाव के विरुद्ध था। आज रिसर्च से पता चला कि यह विभिन्न प्रकार के रोगों का कारण है जिस में विशेष कर ''एड्स'' के रोगों का वर्णन करते हैं। परन्तु आज पश्चिमी देश दुबारा उस अंधकार युग की और जा रहे है। और इसे व्यक्तिगत स्वतंत्रता का नाम दे रखा है।

[3] मद्यन् एक क़बीले का नाम था। औअर उसी के नाम पर एक नगर बस गया जो हिजाज़ के उत्तर–पश्चिम तथा फ़लस्तीन के दक्षिण में लाल सागर और अक़बा खाड़ी के किनारे पर रहता था। यह लोग व्यापार करते थे प्राचीन व्यापार राजपथ, लाल सागर के किनारे यमन से मक्का तथा यंबुअ होते हुये सीरिया तक जाता था।

तथा धरती में उस के सुधार के पश्चात् उपद्रव न करो। यही तुम्हारे लिये उत्तम है, यदि तुम ईमान वाले हो।

८६. तथा प्रत्येक मार्ग पर लोगों को धमकाने के लिये न बैठो और उन्हें अल्लाह की राह से न रोको जो उस पर ईमान लाये[1] हैं। और उसे टेढ़ा न बनाओ, तथा उस समय को याद करो जब तुम थोड़े थे, तो तुम्हें अल्लाह ने अधिक कर दिया। तथा देखो कि उपद्रवियों का परिणाम क्या हुआ?

८७. और यदि तुम्हारा एक समुदाय उस पर ईमान लाया है जिस के साथ मैं भेजा गया हूँ और दूसरा ईमान नहीं लाया है तो तुम धैर्य रखो, यहाँ तक कि अल्लाह हमारे बीच निर्णय कर दे। और वह उत्तम न्याय करने वाला है।

८८. उस की जाति के प्रमुखों ने जिन्हें घमंड था कहा कि है शुऐब! हम तुम को तथा जो तुम्हारे साथ ईमान लाये हैं अपने नगर से अवश्य निकाल देंगे। अथवा तुम सब को हमारे धर्म में अवश्य वापिस आना होगा । (शुऐब) ने कहा: क्या यदि हम उसे दिल से न मानें तो?

८९. हम ने अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगाया है, यदि तुम्हारे धर्म में इस के पश्चात् वापिस आ गये, जब कि हमें अल्लाह ने उस से मुक्त कर दिया है। और हमारे लिये संभव नहीं कि उस में फिर आ जायें, परन्तु यह कि हमारा पालनहार चाहता हो। हमारा पालनहार प्रत्येक वस्तु को अपने ज्ञान में समोये हुये है, अल्लाह ही पर हमारा भरोसा है। हे हमारे पालनहार! हमारे और हमारी जाति के बीच न्याय के साथ निर्णय कर दें। और तू ही उत्तम निर्णयकारी है।

९०. तथा उस की जाति के काफ़िर प्रमुखों ने कहा कि यदि तुम लोग शुऐब का अनुसरण करोगे तो वस्तुत: तुम लोगों का उस समय नाश हो जायेगा।

९१. तो उन्हें भूकम्प ने पकड़ लिया फिर भोर हुई तो वे अपने घरों में औंधे पड़े हुये थे।

---

[1] जैसे मक्का वाले मक्का के बाहर से आने वालों को कुरआन सुनने से रोका करते थे। और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जादूगर कह कर आप के पास जाने से रोकते थे। परन्तु उन की एक न चली, और कुरआन लोगों के दिलों में उतरता और इस्लाम फैलता गया। इस से पता चलता है कि नबियों की शिक्षाओं के साथ उन की जातियों ने एक जैसा व्यवहार किया।

९२. जिन्होंने शुऐब को झुठलाया (उन की यह दशा हुई कि) मानो कभी उस नगर में बसे ही नहीं थे।

९३. तो शुऐब उन से विमुख हो गया, तथा कहा: हे मेरी जाति! मैं ने तुम्हें अपने पालनहार के संदेश पहुँचा दिये, तथा तुम्हारा हितकारी रहा। तो काफ़िर जाति (के विनाश) पर कैसे शोक करूँ?

९४. तथा हम ने जब किसी नगरी में कोई नबी भेजा, तो उस के निवासियों को आपदा, तथा दु:ख में ग्रस्त कर दिया कि संभवत: वह विन्ती करें।[1]

९५. फिर हम ने आपदा को सु:ख सुविधा से बदल दिया, यहाँ तक कि जब वह सुखी हो गये, और उन्होंने कहा कि हमारे पूर्वजों को भी दु:ख तथा सुख पहुँचता रहा है, तो अकस्मात् हम ने उन्हें पकड़ लिया, और वह समझ नहीं सके।

९६. और यदि इन नगरों के वासी ईमान लाते, और कुकर्मों से बचे रहते, तो हम उन पर आकाशों तथा धरती की सम्पन्नता के द्वार खोल देते। परन्तु उन्होंने झुठला दिया। अत: हम ने उन के कर्तूतों के कारण उन्हें (यातना में) घेर लिया।

९७. तो क्या नगर वासी इस बात से निश्चिन्त हो गये हैं कि उन पर हमारी यातना रातों रात आ जाये, और वह पड़े सो रहे हों?

९८. अथवा नगरवासी निश्चिन्त हो गये हैं कि हमारी यातना उन पर दिन के समय आ पड़े, और वह खेल रहे हों?

९९. तो क्या वह अल्लाह के गुप्त उपाय से निश्चिन्त हो गये हैं? तो (याद रखो!) अल्लाह के गुप्त उपाय से नाथ होने वाली जाति ही निश्चिन्त होती है।

१००.तो क्या उन को शिक्षा नहीं मिली जो धरती के वारिस होते हैं उस के अगले वासियों के पश्चात? कि यदि हम चाहें, तो उन के पापों के बदले उन्हें आपदा में ग्रस्त कर दें, और उन के दिलों पर मुहर लगा दें, फिर वह कोई बात ही न सुन सकें।

---

[1] आयत का भावार्थ यह है कि सभी नबी अपनी जाति में पैदा हुये। सब अकेले धर्म का प्रचार करने के लिये आये। और सब का उपदेश एक था कि अल्लाह की वंदना करो उस के सिवा कोई पूज्य नहीं। सब ने सत्कर्म की प्रेरणा दी, और कुकर्म के दुष्परिणाम से सावधान किया। सब का साथ निर्धनों तथा निर्बलों ने दिया। प्रमुखों और बड़ों ने उन का विरोध किया। नबियों का विरोध भी उन्हें धमकी तथा दु:ख देकर किया गया। और सब का परिणाम भी एक प्रकार हुआ, अर्थात उन को अल्लाह की यातना ने घेर लिया। और यही सदा इस संसार में अल्लाह का नियम रहा है।

१०१.(हे नबी!) यह वह नगर हैं जिन की कथा हम आप को सुना रहे हैं। इन सब के पास उन के रसूल खुले तर्क (प्रमाण) लाये, तो वह ऐसे न थे कि उस (सत्य) पर विश्वास कर लें जिस को वे इस से पूर्व झुठला[1] चुके थे। इसी प्रकार अल्लाह काफ़िरों के दिलों पर मुहर लगाता हैं।

१०२.और हम ने उन में अधिक्तर को वचन पर स्थित नहीं पाया।[2] तथा हम ने उन में अधिक्तर को अवज्ञाकारी पाया।

१०३.फिर हम ने इन रसूलों के पश्चात मूसा को अपनी आयतों (चमत्कारों) के साथ फ़िरऔन[3] और उस के प्रमुखों के पास भेजा, तो उन्होंने भी हमारी आयतों के साथ अन्याय किया, तो देखो कि उपद्रवियों का क्या परिणाम हुआ।

१०४.तथा मूसा ने कहा: हे फ़िरऔन! मैं वास्तव में विश्व के पालनहार का रसूल (संदेश वाहक) हूँ।

१०५.मेरे लिये यही योग्य है कि अल्लाह के विषय में सत्य के अतिरिक्त कोई बात न करूँ मैं तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से खुला प्रमाण लाया हूँ। इस लिये मेरे साथ बनी इस्राईल[4] को जाने दे।

१०६.उस ने कहा: यदि तुम कोई प्रमाण (चमत्कार) लाये हो तो उसे प्रस्तुत करो यदि तुम सच्चे हो।

१०७.फिर मूसा ने अपनी लाठी फेंकी, तो अकस्मात् वह एक अजगर बन गई।

१०८.और अपना हाथ (जैब से) निकाला तो वह देखने वालों के लिये चमक रहा था।

१०९.फ़िरऔन की जाति के प्रमुखों ने कहा: वास्तव में यह बड़ा दक्ष जादूगर है।

---

[1] अर्थात् सत्य का प्रमाण आने से पहले झुठला दिया था उस के पश्चात भी अपनी हठधर्मी से उसी पर अडे रहे।

[2] इस से उस प्रण (वचन) की ओर संकेत है, जो अल्लाह ने सब से आदि काल में लिया था कि कया मैं तुम्हारा पालनहार (पूज्य) नहीं हूँ? तो सब ने इसे स्वीकार किया था। (देखिये: सूरह आराफ़, आयत, १७२)

[3] मिस्र के शासकों की उपाधि फ़िरऔन होती थी। यह ईसा पूर्व डेढ़ हजार वर्ष की बात है। उन का राज्य शाम से लीबिया तथा हब्शा तक तथा। फिरऔन अपने को सब से बड़ा पूज्य मानता था और लोग भी उस की पूजा करते थे। उस की ओर अल्लाह ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को एक अल्लाह की इबादत का संदेश देकर भेजा कि पूज्य तो केवल अल्लाह हैं उस के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं।

[4] बनी इस्राईल यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के युग में मिस्र आये थे। तथा चार सौ वर्ष का युग बड़े आदर के साथ व्यतीत किया। फिर उन के कुकर्मों के कारण फ़िरऔन और उस की जाति ने उन को अपना दास बना लिया। जिस के कारण मूसा (अलैहिस्सलाम) ने बनी इस्राईल को मुक्त करने की माँग की। (इब्ने कसीर)

११०.वह तुम्हें तुम्हारे देश से निकालना चाहता है। तो अब क्या आदेश दे रहे हो?
१११.सब ने कहा: उस को और उस के भाई (हारून) को अभी छोड़ दो, और नगरों में एकत्र करने के लिये हरकारे भेजो।
११२.जो प्रत्येक दक्ष जादूगरों को तुम्हारे पास लायें।
११३.और जादूगर फ़िरऔन के पास आ गये। उन्होंने कहा: हमें निश्चय पुरस्कार मिलेगा, यदि हम ही विजयी हो गये तो ?
११४.फ़िरऔन ने कहा: हाँ। और तुम मेरे समीपवर्तियों में से भी हो जाओगे।
११५.जादूगरों ने कहा: हे मूसा! तुम (पहले) फेंकोगे, या हमें फेंकना होगा?
११६.मूसा ने कहा: तुम्ही फेंको। तो उन्होंने जब (रस्सियाँ) फेंकी, तो लोगों की आँखों पर जादू कर दिया, और उन्हें भयभीत कर दिया। और बहुत बड़ा जादू कर दिखाया।
११७.तो हम ने मूसा को वह्यी की, कि अपनी लाठी फेंको। और वह अकस्मात् झूठे इन्द्रजाल को निगलने लगी।
११८.अत: सत्य सिद्ध हो गया, और उन का बनाया मंत्र–तंत्र व्यर्थ होकर[1] रह गया।
११९.अन्तत: वह पराजित कर दिये गये, और तुच्छ तथा अपमानित होकर रह गये।
१२०.तथा सभी जादूगर (मूसा का सत्य) देखकर सज्दे में गिर गये।
१२१.उन्होंने कहा: हम विश्व के पालनहार पर ईमान लाये।
१२२.जो मूसा तथा हारून का पालनहार है।
१२३.फ़िरऔन ने कहा: इस से पहले कि मैं तुम्हें अनुमति दूँ तुम उस पर ईमान ले आये? वास्तव में यह षड्यंत्र है जिसे तुम ने नगर में रचा है, ताकि उस के निवासियों को उस से निकाल दो! तो शीघ्र ही तुम्हें इस (के परिणाम) का ज्ञान हो जायेगा।
१२४.मैं अवश्य तुम्हारे हाथ तथा पाँव विपरीत दिशाओं से काट दूँगा, फिर तुम सभी को फाँसी पर लटका दूँगा।
१२५.उन्होंने कहा: हमें अपने पालनहार ही की ओर प्रत्येक दशा में जाना है।

---

[1] कुरआन ने अब से तेरह सौ वर्ष पहले यह घोषणा कर दी थी कि जादू तथा मंत्र–तंत्र निर्मूल हैं।

१२६.तू हम से इसी बात का तो बदला ले रहा है कि हमारे पास हमारे पालनहार की आयतें (निशानियाँ) आ गईं? तो हम उन पर ईमान ला चुके हैं। हे हमारे पालनहार! हम पर धैर्य (की धारा) उँडेल दे! और हमें इस दशा में (संसार से) उठा कि तेरे आज्ञाकारी रहें।

१२७.और फ़िरऔन की जाति के प्रमुखों ने (उस से) कहा: क्या तुम मूसा और उस की जाति को छोड़ दोगे कि देश में विद्रोह करें, तथा तुम को और तुम्हारे पूज्यों[1] को छेड़ दें? उस ने कहा: हम उन के पुत्रों को बध कर देंगे, और उन की स्त्रियों को जीवित रहने देंगे, हम उन पर दबाव रखते हैं।

१२८.मूसा ने अपनी जाति से कहा: अल्लाह से सहायता माँगो, और सहन करो, वास्तव में धरती अल्लाह की है, वह अपने भक्तों में से जिसे चाहे उस का वारिस (उत्तराधिकारी) बना देता है। और अन्त उन्हीं के लिये है जो आज्ञाकारी हों।

१२९.उन्होंने कहा: हम तुम्हारे आने से पहले भी सताये गये और तुम्हारे आने के पश्चात् भी (सताये जा रहे हैं)! मूसा ने कहा: समीप है कि तुम्हारा पालनहार तुम्हारे शत्रु का विनाश कर दे, और तुम्हें देश में अधिकारी बना दे। फिर देखे कि तुम्हारे कर्म कैसे होते हैं।

१३०.और हम ने फ़िरऔन की जाति को अकालों तथा उपज की कमी में ग्रस्त कर दिया ताकि वह सावधान हो जायें।

१३१.तो जब उन पर सम्पन्नता आती तो कहते कि हम इस के योग्य हैं। और जब अकाल पड़ता, तो मूसा और उस के साथियों से बुरा सगुन लेते। सुन लो! उन का बुरा सगुन तो अल्लाह के पास[2] था, परन्तु अधिक्तर लोग इस का ज्ञान हीं रखते।

१३२.और उन्होंने कहा: तू हम पर जादू करने के लिये कोई भी आयत (चमत्कार) ले आये तो हम तेरा विश्वास करने वाले नहीं हैं।

---

[1] कुछ भाष्यकारों ने लिखा है कि मिस्री अनेक देवताओं की पूजा करते थे। जिन में सब से बड़ा देवता: सूर्य था। जिसे ''रूअ'' कहते थे। और राजा को उस का अवतार मानते थे, और उस की पूजा, और उस के लिये सज्दा करते थे जिस प्रकार अल्लाह के लिये सज्दा किया जाता है।

[2] अर्थात अल्लाह ने प्रत्येक दशा के लिये एक नियम बना दिया है जिस के अनुसार कर्मों के परिणाम सामने आते हैं चाहे वह अशुभ हों या न हों सब अल्लाह के निर्धारित नियमअनुसार होते हैं।

१३३.अन्ततः हम ने उन पर तूफ़ान (उग्र वर्षा) तथा टिड्डी दल और जुऐं एवं मेंढक और रक्त की वर्षा भेजी। अलग अलग निशानियाँ, फिर भी उन्होंने अभिमान किया, और वह थी ही अपराधी जाति।

१३४.और जब उन पर यातना आ पड़ी तो उन्होंने कहाः हे मूसा! तू अपने पालनहार से उस वचन के कारण जो उस ने तुमझे दिया है, हमारे लिये प्रार्थना कर। यदि तू ने (अपनी प्रार्थना से) हम से यातना दूर कर दी तो हम अवश्य तेरा विश्वास कर लेंगे, और बनी इस्राईल को तेरे साथ जाने की अनुमति दे देंगे।

१३५.फिर जब हम ने एक विशेष समय तक के लिये उन से यातना दूर कर दी जिस तक उन्हें पहुँचना था, तो अकस्मात वह वचन भंग करने लगे।

१३६.अन्ततः हम ने उन से बदला लिया और उन्हें सागर में डुबो दिया इस कारण कि उन्होंने हमारी आयतों (निशानियों) को झुठला दिया और उन से निश्चेत हो गये थे। उन के धैर्य रखने के कारण, तथा हम ने उसे ध्वस्त कर दिया जो फ़िरऔन और उस की जाति कलाकारी कर रही थी, और जो बेलैं छप्परों पर चढ़ा रही थीं।[1]

१३७.और हम ने उस जाति (बनी इस्राईल) को जो निर्बल समझे जा रहे थे धरती (शाम देश) के पशिचमों तथा पूर्वों का जिस में हम ने बरकत दी थी अधिकारी बना दिया। और (इस प्रकार हे नबी!) आप के पालनहार का शुभ वचन बनी इस्राईल के लिये पूरा हो गया, उन के धैर्य रखने के कारण, तथा हम ने उसे ध्वस्त कर दिया जो फ़िरऔन और उस की जाति कलाकारी कर रही थी, और जो बेलैं छप्परों पर चढ़ा रहे थे।

१३८.और बनी इस्राईल को हम ने सागर पार करा दिया, तो वह एक जाति के पास से होकर गये जो अपनी मूर्तियों की पूजा कर रही थी, उन्होंने कहाः हे मूसा! हमारे लिये वैसा ही एक पूज्य बना दीजिये जैसे उन के पूज्य हैं। मूसा ने कहाः वास्तव में तुम अज्ञान जाति हो।

१३९.यह लोग जिस रीति में हैं उसे नाश हो जाना है, और वह जो कुछ कर रहे हैं सर्वथा असत्य है।

[1] अर्थातः उन के ऊँचे ऊँचे भवन, तथा सुन्दर बाग़ बग़ीचे।

१४०.मूसा ने कहा: क्या मैं अल्लाह के सिवा तुम्हारे लिये कोई दूसरा पूज्य निर्धारित करूँ जब कि उसने तुम्हें सारे संसारों के वासियों पर प्रधानता दी है?

१४१.तथा उस समय को याद करो, जब हम ने तुम्हें फ़िरऔन की जाति से बचाया। वह तुम्हें घोर यातना दे रहे थे। तुम्हारे पुत्रों को बध कर रहे थे, और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रख रहे थे। और इस में तुम्हारे पालनहार की ओर से भारी परीक्षा थी।

१४२.और हम ने मूसा को तीस रातों का वचन[१] दिया। और उस की पूर्ति दस रातों से कर दी। तो तेरे पालनहार की निर्धारित अवधि चालीस रात पूरी हो गयी। तथा मूसा ने अपने भाई हारून से कहा: तुम मेरी जाति में मेरा प्रतिनिधि रहना तथा सुधार करते रहना, और उपद्रवकारियों की नीति न अपनाना।

१४३.और जब मूसा हमारे निर्धारित समय पर आ गया, और उसके पालनहार ने उससे बात की, तो उस ने कहा: हे मेरे पालनहार! मेरे लिये अपने आप को दिखा दे ताकि मैं तेरा दर्शन कर लूँ। अल्लाह ने कहा: तू मेरा दर्शन नहीं कर सकेगा। परन्तु इस पर्वत की ओर देख। यदि वह अपने स्थान पर स्थिर रह गया तो तू मेरा दर्शन कर सकेगा। फिर जब उस का पालनहार पर्वत की ओर प्रकाशित हुआ तो उसे चूर–चूर कर दिया। और मूसा निश्चेत होकर गिर गया। और जब चेतना में आया, तो उस ने कहा: तू पवित्र है! मैं तुझ से क्षमा माँगता हूँ। तथा मैं सर्व प्रथम[२] ईमान लाने वालों में से हूँ।

१४४.अल्लाह ने कहा: हे मूसा! मैंने तुझे लोगों पर प्रधानता देकर अपने संदेशों तथा अपने वार्तालाप द्वारा निर्वाचित कर लिया है। अत: जो कुछ तुझे प्रदान किया है उसे ग्रहण कर ले, और कृतज्ञों में हो जा।

१४५.और हमने उस के लिये तख़्तियों पर (धर्म के) प्रत्येक विषय के लिये निर्देश और प्रत्येक बात का विवरण लिख दिया। (तथा कहा कि) इसे दृढ़ता से पकड़ लो,

[१] अर्थात तूर पर्वत पर आकार अल्लाह की इबादत करने और धर्मविधान प्रदान करने के लिये।

[२] इस से प्रत्यक्ष हुआ कि कोई व्यक्ति इस संसार में रहते हुये अल्लाह को नहीं देख सकता और जो ऐसा कहते हैं वह शैतान के बहकावे में हैं। परन्तु सहीह हदीस से सिद्ध होता है कि आख़िरत में ईमान वाले अल्लाह का दर्शन करेंगे।

और अपनी जाति को आदेश दो कि उस के उत्तम निर्देशों का पालन करें। और मैं तुम्हें अवज्ञाकारियों का घर दिखा दूँगा।

१४६.मैं उन्हें[1] अपनी आयतों (निशानियों) से फेर[2] दूँगा जो धरती में अवैध अभिमान करते हैं। और यदि वह प्रत्येक आयत (निशानी) देख लें तब भी उस पर ईमान नहीं लायेंगे। और यदि वह सुपथ देखेंगे तो उसे नहीं अपनायेंगे। और यदि कुपथ देख लें तो उसे अपना लेंगे। यह इस कारण कि उन्होंने हमारी आयतों (निशानियों) को झुठला दिया, और उन से निश्चेत रहे।

१४७.और जिन लोगों ने हमारी आयतों, तथा परलोक (में हम से) मिलने को झुठला दिया, उन्हीं के कर्म व्यर्थ हो गये, और उन्हें उसी का बदला मिलेगा, जो कुकर्म वह कर रहे थे।

१४८.और मूसा की जाति ने उसके (पर्वत पर जाने के) पश्चात् अपने आभूषणों से एक बछड़े की मूर्ति बना ली, जिस से गाय के डकारने के समान ध्वनि निकलती थी। क्या उन्होंने यह नहीं सोचा कि न तो वह उन से बात[3] करता है और न किसी प्रकार का मार्गदर्शन देता है? उन्होंने उसे बना लिया, तथा वे अत्याचारी थे।

१४९.और जब वह (अपने किये पर) लज्जित हुये और समझ गये कि वह कुपथ हो गये हैं, तो कहने लगे: यदि हमारे पालनहार ने हम पर दया नहीं की, और हमें क्षमा नहीं किया, तो हम अवश्य विनाशें मे हो जायेंगे।

१५०.और जब मूसा अपनी जाति की ओर क्रोध तथा दुःख से भरा हुआ वापिस आया तो उस ने कहा: तुम ने मेरे पश्चात् मेरा बहुत बुरा प्रतिनिधित्व किया। क्या तुम अपने पालनहार की आज्ञा से पहले ही जल्दी कर[4] गये। तथा उस ने लेख तख़्तियाँ डाल दीं, तथा अपने भाई (हारून) का सिर पकड़ के अपनी ओर खींचने लगा। उस ने कहा: हे मेरे माँ जाये भाई! लोगों ने मुझे निर्बल समझ लिया

---

[1] अर्थात तुम्हें उन पर विजय दूँगा जो अवैज्ञाकारी हैं, जैसे उस समय की अमालिक़ा इत्यादि जातियों पर।

[2] अर्थात जो जान बूझकर अवैज्ञा करेगा अल्लाह का नियम यही है कि वह तर्कों तथा प्रकाशों से प्रभावित होने की योग्यता खो देगा। इस का यह अर्थ नहीं कि अल्लाह किसी को अकारण कुपथ पर बाध्य कर देता है।

[3] अर्थात उस से एक ही प्रकार की ध्वनि क्यों निकलती है। बाबिल और मिस्र में भी प्राचीन युग में गाय–बैल की पूजा हो रही थी। और यदि बाबिल की सभ्यता को प्राचीन मान लिया जाये तो यह विचार दूसरे देशों में वहीं से फैला होगा।

[4] अर्थात मेरे आने की प्रतीक्षा नहीं की।

तथा समीप था कि वे मुझे मार डालें। अत: तू शत्रुओं को मुझ पर हँसने का अवसर न दे। मुझे अत्याचारियों का साथी न बना।

१५१.मूसा ने कहा:[1] हे मेरे पालनहार! मुझे तथा मेरे भाई को क्षमा कर दे। और हमें अपनी दया में प्रवेश दे। और तू ही सब दयाकारियों से अधिक दयाशील है।

१५२.जिन लोगों ने बछड़े को पूज्य बनाया उन पर उन के पालनहार का प्रकोप आयेगा और वे संसारिक जीवन में अपमानित होंगे। और इसी प्रकार हम झूठ घड़ने वालों को दण्ड देते हैं।

१५३.और जिन लोगों ने दुष्कर्म किया, फिर उस के पश्चात् क्षमा माँग ली, और ईमान लाये, तो वास्तव में तेरा पालनहार अति क्षमाशील दयावान् है।

१५४.फिर जब मूसा का क्रोध शान्त हो गया तो उसने लेख तख़्तियाँ उठा लीं, और उस के लिखे आदेशों में मार्गदर्शन तथा दया थी उन लोगों के लिये जो अपने पालनहार से ही डरते हों।

१५५.और मूसा ने हमारे निर्धारित[2] समय के लिये अपनी जाति के सत्तर व्यक्तियों को चुन लिया। और जब उन्हें भूकम्प ने घेर[3] लिया तो मूसा ने कहा: हे मेरे पालनहार! यदि तू चाहता तो इन सब का इस से पहले ही विनाश कर देता, और मेरा भी। क्या तू हमारा उस कुकर्म के कारण नाश कर देगा जो हम में से कुछ निर्बोध कर गये? यह[4] तेरी ओर से केवल एक परीक्षा थी। तू जिसे चाहे उस के द्वारा कुपथ कर दे, और जिसे चाहे सुपथ दर्शा दे। तू ही हमारा संरक्षक है, अत: हमारे पापों को क्षम कर दे। और हम पर दया कर, तू सर्वोत्तम क्षमावान् है।

१५६.और हमारे लिये इस संसार में भलाई लिख दे तथा परलोक में भी, हम तेरी ओर लौट आये। उस (अल्लाह) ने कहा: मैं अपनी यातना जिसे चाहता हूँ देता हूँ। और

---

[1] अर्थात जब यह सिद्ध हो गया कि मेरा भाई निर्दोष है।

[2] अल्लाह ने मूसा अलैहिस्सलाम को आदेश दिया था कि वह तूर पर्वत के पास बछड़े की पूजा से क्षमा याचना के लिये कुछ लोगों को लायें। (इब्ने कसीर)

[3] जब वह उस स्थान पर पहुँचे तो उन्होंने यह माँग की कि हम को हमारी आँखों से अल्लाह को दिखा दे। अन्यथा हम तेरा विश्वास नहीं करेंगे। उस समय उन पर भूकम्प आया। (इब्ने कसीर)

[4] अर्थात बछड़े की पूजा।

मेरी दया प्रत्येक चीज़ को समोये हुये है। मैं उसे उन लोगों के लिये लिख दूँगा जो अवैज्ञा से बचेंगे, तथा ज़कात देंगे, और जो हमारी आयतों पर ईमान लायेंगे।

१५७.जो उस रसूला का अनुसरण करेंगे जो उम्मी नबी[१] हैं, जिन (के आगमन) का उल्लेख वह अपने पास तौरात तथ इंजील में पाते हैं। जो सदाचार का आदेश देंगे, और दूराचार से रोकेंगे। और उन के लिये स्वच्छ जीजों को हलाल (वैध) तथा मलीन चीजों को हराम (अवैध) करेंगे। और उन से उन के बोझ उतार देंगे, तथा उन बंधनों को खोल देंगे जिन में वे जकड़े हुये होंगे। अत: जो लोग आप पर ईमान लाये और आप का समर्थन किया और आप की सहायता की, तथा उस प्रकाश (कुरआन) का अनुसरण किया जो आप के साथ उतारा गया, तो वही सफल होंगे।

१५८. (हे नबी!) आप लोगों से कह दें कि हे मानव जाति के लोगो! मैं तुम सभी की ओर उस अल्लाह का रसूल हूँ जिस के लिये आकाश तथा धरती का राज्य है। कोई वंदनीय (पूज्य) नहीं है, परन्तु वही, जो जीवन देता तथा मारता है। अत: अल्लाह पर ईमान लाओ, और उस के उस उम्मी नबी पर जो अल्लाह पर और उस की सभी (आदि) पुस्तकों पर ईमान रखते हैं। और उन का अनुसरण करो, ताकि तुम मार्गदर्शन पा जाओ।[२]

---

[१] अर्थात बनी इस्राईल से नहीं। इस से अभिप्राय अन्तिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, जिन के आगमन की भविष्यवाणी तौरात, इंजील तथा दूसरे धर्म शास्त्रों में पाई जाती है। यहाँ पर आप की तीन विशेषताओं की चर्चा की गयी है:

१. आप सदाचार का आदेश देंगे तथा दुराचार से रोकेंगे।

२. स्वच्छ चीज़ों के प्रयोग को उचित तथा मलीन चीज़ों के प्रयोग को अनुचित घोषित करेंगे।

३. अहले किताब जिन कड़े धार्मिक नियमों के बोझ तले दबे हुये थे उन्हें उन से मुक्त करेंगे। और सरल इस्लामी धर्मविधान प्रस्तुत करेंगे, और उन के आगमन के पश्चात् लोक–परलोक की सफलता आप ही के धर्मविधान के अनुसरण में सीमित होगी।)

[२] इस आयत का भावार्थ यह है कि इस्लाम के नबी किसी विशेष जाति तथा देश के नबी नहीं हैं, प्रयल तक के लिये पूरी मानव जाति के नबी हैं। यह सब को एक अल्लाह की वंदना कराने के लिये आये हैं, जिस के सिवा कोई पूज्य नहीं। आप का चिन्ह अल्लाह पर तथा सब प्राचीन पुस्तकों और नवियों पर ईमान है। आप का अनुसरण करने का अर्थ यह है कि अब उसी प्रकार अल्लाह की पूजा–आराधना करो जैसे आप ने की और बताई है। और आप के लाये हुये धर्म विधान का पालन करो।

१५९. और मूसा की जाति में एक गिरोह ऐसा भी है जो सत्य पर स्थित है, और उसी के अनुसार निर्णय (न्याय) करता है।

१६०. और[1] हम ने मूसा की जाति के बारह घरानों को बारह समुदायों में विभक्त कर दिया। और हम ने मूसा की ओर वह्यी भेजी, जब उस की जाति ने उस से जल माँगा कि अपनी लाठी इस पत्थर पर मारो, तो उस से बारह स्रोत उबल पड़े, तथा प्रत्येक समुदाय ने अपने पीने का स्थान जान लिया। और उन पर बादलों की छाँव की, और उन पर मन्न तथा सल्वा उतारा। (हम ने कहा): इस स्वच्छ चीज़ों में से जो हम ने तुम्हें प्रदान की हैं, खाओ। और हम ने उन पर अत्याचार नहीं किया, परन्तु वह स्वयं (अवैज्ञा कर के) अपने प्राणों पर अत्याचार कर रहे थे।

१६१. और जब उन (बनी इस्राईल) से कहा गया कि इस नगर (बैतुल मक़दिस) में बस जाओ, और उस में से जहाँ इच्छा हो खाओ, और कहो कि हमें क्षमा कर दे, तथा द्वार में सज्दा करते हुये प्रवेश करो, हम तुम्हारे लिये तुम्हारे दोषों को क्षमा कर देंगे, और सत्कर्मियों को और अधिक देंगे।

१६२. तो उन में से अत्याचारियों ने उस बात को दूसरी बात से[2] बदल दिया जो उन से कही गयी थी। तो हम ने उन पर आकाश से प्रकोप उतार दिया। क्यों कि वह अत्याचार कर रहे थे।

१६३. तथा (हे नबी!) इन से उस नगरी के सम्बंध में प्रश्न करो जो समुद्र (लाल सागर) के समीप थी, जब उस के निवासी सब्त (शनिवार) के दिन के विषय में आज्ञा का उल्लंघन[3] कर रहे ते, जब उन के पास उन की मछलियाँ उन के सब्त के दिन पानी के ऊपर तैर कर आ जाती थीं और सब्त का दिन न हो तो नहीं आती थीं। इसी प्रकार उन की अवैज्ञा के कारण हम उन की परीक्षा ले रहे थे।

१६४. तथा जब उन में से एक समुदाय ने कहा कि तुम उन्हें क्यों समझा रहे हो जिन्हें अल्लाह (उन की अवज्ञा के कारण) ध्वस्त करने अथवा कड़ा दण्ड देने वाला है?

---

[1] इस से अभिप्राय वह लोग हैं जो मूसा (अलैहिस्सलाम) के लाये हुये धर्म पर कायम थे और आने वाले नबी की प्रतीक्षा कर रहे थे और जब वह आये तो तुरन्त आप पर ईमान लाये, जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम इत्यादि।

[2] और चूतड़ों के बल खिसकते और यह कहते हुये प्रवेश किया कि गेहूँ मिले। (सहीह बुख़ारी – ४६४१)

[3] क्योंकि उन के लिये यह आदेश था कि शनिवार को मछलियों का शिकार नहीं करेंगे। अधिकांश भाष्यकारों ने उस नगरी का नाम ईला (ईलात) बताया है जो कुलजुम सागर के किनारे पर आबाद थी।

उन्होंने कहा: तुम्हारे पालनहार के समक्ष क्षम्य होने के लिये, और इस आशा में कि वह आज्ञाकारी हो जाये ।[1]

१६५.फिर जब उन्होंने जो कुछ उन्हें स्मरण कराया गया, उसे भुला दिया तो हम ने उन लोगों को बचा लिया, जो उन को बुराई से रोक रहे थे, और हम ने अत्याचारियों को कड़ी यातना में उन की अवैज्ञा के कारण घेर लिया।

१६६.फिर जब उन्होंने उस का उल्लंघन किया जिस से वे रोके गये थे, तो हम ने उन से कहा कि तुच्छ बंदर हो जाये।

१६७.और याद करो जब आप के पालनहार ने घोषणा कर दी कि वह प्रलय के दिन तक उन (यहूदियों) पर उन्हें प्रभुत्व देता रहेगा जो उन को घोर यातना देते रहेंगे।[2] निःसंदेह आपका पालनहार शीघ्र दण्ड देने वाला है, और वह अति क्षमाशील दयावान (भी) है।

१६८. और हम ने उन्हें धरती में कई सम्प्रदायों में विभक्त कर दिया, उन में कुछ सदाचारी थे, और कुछ इस के विपरीत थे। हम ने अच्छाइयों तथा बुराईयों दोनों के द्वारा उन की परीक्षा ली, ताकि वह (कुकर्मों से) रूक जायें।

१६९.फिर उन के पीछे कुछ ऐसे लोगों ने उन की जगह ली जो पुस्तक के उत्तराधिकारी होकर भी तुच्छ संसार का लाभ समेटने लगे। और कहने लगे कि हमें क्षमा कर दिया जायेगा। और यदि उसी के समान उन्हें लाभ हाथ आ जाये तो उसे भी ले लेंगे। क्या उन से पुस्तक को दृढ़ वचन नहीं लिया गया है कि अल्लाह पर सच्च ही बोलेंगे, जब कि पुस्तक में जो कुछ है उस का अध्ययन कर चुके हैं? और परलोक का घर (स्वर्ग) उत्तम है उन के लिये जो अल्लाह से डरते हों। तो क्या वह इतना भी नहीं[3] समझते?

---

[1] आयत में यह संकेत है कि बुराई को रोकने से निराश नहीं होना चाहिये, क्योंकि हो सकता है कि किसी के दिल में बात लग ही जाये, और यदि न भी लगे तो अपना कर्तव्य पूरा हो जायेगा।

[2] यह चेतावनी बनी इस्राईल को बहुत पहले से दी जा रही थी। ईसा (अलैहिस्सलाम) से पूर्व आने वाले नबियों ने बनी ईस्राईल को डराया कि अल्लाह की अवैज्ञा से बचो। और स्वयं ईसा ने भी उन को डराया परन्तु वह अपनी अवैज्ञा पर बाक़ी रहे जिस के कारण अल्लाह की यातना ने उन्हें घेर लिया और कई बार बैतुल मक़्दिस को उजाड़ा गया, और तौरात जलाई गई।

[3] इस आयत में यहूदी विद्वानों की दुर्दशा बताई गयी है कि वह तुच्छ संसारिक लाभ के लिये धर्म में परिवर्तन कर देते थे और अवैध को वैध बना लेते थे। फिर भी उन्हें यह गर्व था कि अल्लाह उन्हें अवश्य क्षमा कर देगा।

१७०.और जो लोग पुस्तक को दृढ़ता से पकड़ते, और नमाज़ की स्थापना करते हैं तो वास्तव में हम सत्कर्मियों का प्रतिफल अकारत् नहीं करते।

१७१.और जब हम ने उन के ऊपर पर्वत को इस प्रकार छा दिया जैसे वह कोई छतरी हो, और उन्हें विश्वास हो गया कि वह उन पर गिर पड़ेगा, (तथा यह आदेश दिया कि) जो (पुस्तक) हम ने तुम्हें प्रदान की है उसे दृढ़ता से ताम लो, तथा उस में जो कुछ है उसे याद रखो, ताकि तुम आज्ञाकारी हो जाओ।

१७२.तथा (वह समय याद करो) जब आप के पालनहार ने आदम के पुत्रों की पीठों से उन की संतति को निकाला और उन को स्वयं उन पर साक्षी (गवाह) बनाया: क्या मैं तुम्हारा पालनहार नहीं हूँ? सब ने कहा: क्यों नहीं? हम (इस के) साक्षी[१] हैं। ताकि प्रलय के दिन यह न कहो कि हम तो इस से असूचित थे।

१७३.अथवा यह कहो कि हम से पूर्व हमारे पूर्वजों ने शिर्क (मिश्रण) किया और हम उन के पश्चात् उन की संतान थे। तो क्या तू गुमराहों के कर्म के कारण हमारा विनाश[२] करेगा?

१७४. और इसी प्रकार हम आयतों को खोल खोलकर बयान करते हैं ताकि लोग (सत्य की ओर) लौट जायें।

१७५.और उन्हें उस की दशा पढ़कर सुनायें जिसे हम ने अपनी आयतों (का ज्ञान) दिया, तो वह उस (के खोल से) निकल गया। फिर शैतान उस के पीछे लग गया और वह कुपथों में हो गया।

१७६.और यदि हम चाहते तो उन (आयतों) द्वारा उस का पद ऊँचा कर देते, परन्तु वह माया मोह में पड़ गया, और अपनी मनमानी करने लगा। तो उस की दशा उस कुत्ते के समान हो गयी जिसे हाँको तब भी जीभ निकाले हाँपता रहे और छोड़ दो तब भी जीभ निकाले हाँपता है। यही उपमा है उन लोगों की जो हमारी आयतों को झुठलाते हैं। तो आप यह कथायें उन को सुना दें, संभवत: वह सोच विचार करें।

---

[१] यह उस समय की बात है जब आदम अलैहिस्सलाम की उत्पत्ति के पश्चात् उन की सभी संतान को जो प्रलय तक होगी, उन की आत्माओं से अल्लाह ने अपने पालनहार होने की गवाही ली थी। (इब्ने कसीर)

[२] आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह के अस्तित्व तथा एकेश्वरवाद की आस्था सभी मानव का स्वभाविक धर्म है। कोई यह नहीं कह सकता की मैं अपने पूर्वजों की गुमराही से गुमराह हो गया। यह स्वभाविक आन्तरिक आवाज़ है जो कभी दब नहीं सकती।

१७७. उन की उपमा कितनी बुरी है जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठला दिया! और वे अपने ही ऊपर अत्याचार[१] कर रहे थे।

१७८. जिसे अल्लाह सुपथ कर दे वही सीधी राह पा सकता है। और जिसे कुपथ कर दे[२] तो वही लोग असफल है।

१७९. और बहुत से जिन्न और मानव को हम ने नरक के लिये पैदा किया है। उन के पास दिल हैं जिन से सोच विचार नहीं करते, तथा उन की आँखें हैं जिन से[३] देखते नहीं, और कान हैं जिन से सुनते नहीं। वे पशुओं के समान हैं बल्कि उन से भी अधिक कुपथ हैं, यही लोग अचेतना में पड़े हुये हैं।

१८०. और अल्लाह ही के शुभ नाम हैं, अत: उसे उन्हीं के द्वारा पुकारो। और उन्हें छोड़ दो जो उस के नामों में परिवर्तन[४] करते हैं, उन्हें शीघ्र ही उन के कुकर्मों का कुफल दे दिया जायेगा।

१८१. और उन में से जिन्हें हम ने पैदा किया है, एक समुदाय ऐसा (भी) है, जो सत्य का मार्ग दर्शाता तथा उसी के अनुसार (लोगों के बीच) न्याय करता है।

१८२. और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठला दिया, हम उन्हें क्रमश: (विनाश तक) ऐसे पहुँचायेंगे कि उनहें इस का ज्ञान नहीं होगा।

१८३. और उन्हें अवसर देंगे, निश्चय मेरा उपाय बड़ा सुदृढ़ है।

१८४. और क्या उन्होंने यह नहीं सोचा कि उन का साथी[५] तनिक भी पागल नहीं है? वह तो केवल खुले रूप से सचेत करने वाला है।

---

[१] भाष्यकारों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग और प्राचीन युग के कई ऐके व्यक्तियों का नाम लिया है जिन का यह उदाहरण हो सकता है। परन्तु आयत का भावार्थ बस इतना है कि प्रत्येक व्यक्ति जिस में यह अवगुण पाये जाते हों उस की दशा यही होती है, जिस की जीभ से माया मोह के कारण राल टपकती रहती है, और उस की लोभाग्नि कभी नहीं बुझती।

[२] कुरआन ने बार बार इस तथ्य को दुहराया है कि मार्गदर्शन के लिये सोच विचार की आवश्यक्ता है। और जो लोग अल्लाह की दी हुई विचार शक्ति से काम नहीं लेते वही सीधी राह नहीं पाते। यही अल्लाह के सुपथ और कुपथ करने का अर्थ है।

[३] आयत का भावार्थ यह है कि सत्य को प्राप्त करने के दो ही साधन हैं: ध्यान और ज्ञान। ध्यान यह है कि अल्लाह की दी हुयी विचार शक्ति से काम लिया जाये। और ज्ञान यह है कि इस विश्व की व्यवस्था को देखा जाये और नबियों द्वारा प्रस्तुत किये हुये सत्य को सुना जाये, और जो इन दोनों से वंचित हो वह अन्धा बहरा है।

[४] अर्थात उस के गौणिक नामों से अपनी मूर्तियों को पुकारते हैं। जैसे अज़ीज़ से ''उज़्ज़ा'', और इलाह से ''लात'' इत्यादि।

[५] साथी से अभिप्राय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, जिन को नबी होने से पहले वही लोग ''अमीन'' कहते थे।

१८५.क्या उन्होंने आकाशों तथा धरती के राज्य को और जो कुछ अल्लाह ने पैदा किया है, उसे नहीं देखा?[1] और (यह भी नहीं सोचा कि) हो सकता है कि उन का (निर्धारित) समय समीप आ गया हो? तो फिर इस (कुरआन) के पश्चात् वह किस बात पर ईमान लायेगे?

१८६.जिसे अल्लाह कुपथ कर दे उस का कोई पथदर्शनक नहीं। और उन्हें उन के कुकर्मों में बहकते हुये छोड़ देता है।

१८७.(हे नबी!) वे आप से प्रलय के विषय में प्रश्न करते हैं कि वह कब आयेगी? कह दो कि उस का ज्ञान तो मेरे पालनहार के पास है, उसे उस के समय पर वही प्रकाशित कर देगा। वह आकाशों तथा धरती में भारी होगी, तुम पर अकस्मात आ जायेगी। वह आप से ऐसे प्रश्न कर रहे हैं जैसे कि आप उसी की खोज में लगे हुये हों। आप कह दें कि उस का ज्ञान अल्लाह ही को है। परन्तु[2] अधिकांश लोग इस (तथ्य) को नहीं जानते।

१८८.आप कह दें कि मुझे तो अपने लाभ और हानि का अधिकार नहीं परन्तु जो अल्लाह चाहे (वही होता है)। और यदि मैं ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान रखता तो मैं बहुत सा लाभ प्राप्त कर लेता। मैं तो केवल उन लोगों को सावधान करने तथा शुभसूचना देने वाला हूँ जो ईमान (विश्वास) रखते हैं।

१८९.वही (अल्लाह) है जिस ने तुम्हारी उत्पत्ति एक जीव[3] से की, और उसी से उस का जोड़ा बनाया, ताकि उस से उसे संतोष मिले। फिर जब किसी[4] ने उस (अपनी स्त्री) से सहवास किया तो उस (स्त्री) को हल्का सा गर्भ हो गया। जिस के साथ वह चलती फिरती रही, फिर जब बोझल हो गयी तो दोनों (पति-पत्नी) ने अपने पालनहार से प्रार्थना की: यदि तू हमें एक अच्छा बच्चा प्रदान करेगा तो हम अवश्य तेरे कृतज्ञ (आभारी) होंगे।

---

[1] अर्थात यदि यह विचार करें, तो इस पूरे विश्व की व्यवस्था और उस का एक एक कण अल्लाह के अस्तित्व और उस के गुणों का प्रमाण है। और उसी ने मानव जीवन की व्यवस्था के लिये नबियों को भेजा है।

[2] मक्का के मिश्रणवादी आप से उपहास स्वरूप प्रश्न करते थे, कि यदि प्रलय होना सत्य है, तो बताओ वह कब होगी?

[3] अर्थात आदम अलैहिस्सलाम से।

[4] अर्थात जब मानव जाति के किसी पुरुष ने स्त्री के साथ सहवास किया।

१९०.और जब उन दोनों को (अल्लाह ने) एक स्वस्थ बच्चा प्रदान कर दिया तो अल्लाह ने जो प्रदान किया उस में दूसरों को उस का साझी बनाने लगे। तो अल्लाह इन की शिर्क[1] की बातों से बहुत ऊँचा है।

१९१.क्या वह अल्लाह का साझी उन्हें बनाते हैं जो कुछ पैदा नहीं कर सकते, और वह स्वयं पैदा किये हुये हैं?

१९२.तथा न उन की सहायता कर सकते हैं, और न स्वयं अपनी सहायता कर सकते हैं।?

१९३.और यदि तुम उन्हें सीधी राह की ओर बुलाओ तो तुम्हारे पीछे नहीं चल सकते। तुम्हारे लिये बराबर है चाहे उन्हें पुकारो अथवा तु चुप रहो।

१९४.वास्तव में अल्लाह के सिवा जिन को तुम पुकारते हो वे तुम्हारे जैसे ही (अल्लाह के) दास हैं। अत: तुम उन से प्रार्थना करो फिर वह तुम्हारी प्रार्थना का उत्तर दें, यदि उन के बारे में तुम्हारे विचार सत्य हैं?।

१९५.क्या इन (पत्थर की मूर्तियों) के पाँव हैं जिन से चलती हों? अथवा उन के हाथ हैं जिन से पकड़ती हों? या उन के आँखें हैं जिन से देखती हो? अथवा कान हैं जिन से सुनती हो? आप कह दें कि अपने साझियों को पुकार लो, फिर मेरे विरुद्ध उपाय कर लो, और मुझे कोई अवसर न दो।

१९६.वास्तव में मेरा संरक्षक अल्लाह है। जिस ने यह पुस्तक (कुरआन) उतारी है। और वही सदाचारियों की रक्षा करता है।

१९७. और जिन को अल्लाह के सिवा तुम पुकारते हो वह न तो तुम्हारी सहायता कर सकते हैं, और न स्वयं अपनी ही सहायता कर सकते हैं।

१९८.और यदि तुम उन्हें सीधी राह की ओर बुलाओ तो वह सुन नहीं सकते। और (हे नबी!) आप उन्हें देखेंगे कि वे आप की ओर देख रहे हैं, जब कि वास्तव में वह कुछ नहीं देखते।

---

[1] इस आयतों में यह बताया गया है कि मिश्रणवादी स्वस्थ बच्चे अथवा किसी भी आवश्यक्ता या आपदा निवारण के लिये अल्लाह ही से प्रार्थना करते हैं। और जब स्वस्थ सुन्दर बच्चा पैदा हो जाता है तो देवी देवताओं, और पीरों के नाम चढ़ावे चढ़ाने लगते हैं। और इसे उन्हीं की दया समझते हैं।

१९९.(हे नबी!) आप क्षमा से काम लें, और सदाचार का आदेश दें। तथा अज्ञानियों की ओर ध्यान[1] न दें।

२००.और यदि शैतान आप को उकसाये तो अल्लाह से शरण माँगिये। निःसंदेह वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

२०१.वास्तव में जो आज्ञाकारी होते हैं, यदि शैतान की ओर से उन्हें कोई बुरा विचार आ भी जाये तो तत्काल चौंक पड़ते हैं और फिर अकस्मात् उन को सूझ आ जाती है।

२०२.और जो शैतानों के भाई हैं वे उन को कुपथ में खींचते जाते हैं, फिर (उन्हें कुपथ करने में) तनिक भी कमी (आलस्य) नहीं करते।

२०३.और जब आप इन (मिश्रणवादियों) के पास कोई निशानी न लायेंगे तो कहेंगे कि क्यों (अपनी ओर से) नहीं बना ली? आप कह दें कि मैं केवल उसी का अनुसरण करता हूँ जो मेरे पालनहार के पास से मेरी ओर वह्यी की जाती है। यह सूझ की बातें हैं तुम्हारे पालनहार की ओर से, (प्रमाण) हैं, तथा मार्गदर्शन और दया है, उन लोगों के लिये जो ईमान (विश्वास) रखते हों।

२०४.और जब कुरआन पढ़ा जाये तो उसे ध्यानपूर्वक सुनो, तथा मौन साध लो। शायद कि तुम पर दया[2] की जाये।

२०५.और (हे नबी!) अपने पालनहार का स्मरण विनयपूर्वक तथा डरते हुये और धीमे स्वर में प्रातः तथा संध्या करते रहो। और उन में न हो जाओ जो अचेत रहते हैं।

२०६.वास्तव में जो (फ़रिश्ते) आप के पालनहार के समीप हैं वह उस की इबादत (वंदना) से अभिमान नहीं करते। और उस की पवित्रता वर्णन करते रहेते हैं, और उसी को सजदा[3] करते हैं।

*****

[1] हदीस में है कि अल्लाह ने इसे लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करने के बारे में उतारा हैं। (सहीह बुख़ारी – ४६४३)

[2] यह कुरआन की एक विशेषता है कि जब भी उसे पढ़ा जाये तो मुसलमान पर अनिवार्य है कि वह ध्यान लगाकर अल्लाह का कलाम सुने। हो सकता है कि उस पर अल्लह की दया हो जाये। काफ़िर कहते थे कि जब कुरआन पढ़ा जाये तो सुनो नहीं, बल्कि शोर गुल करो। (देखिये : सूरह हा मीम सज्दा – २६)

[3] इस आयत के पढ़ने तथा सुनने वाले को चाहिये कि सज्दा तिलावत करें।

सूरह अन्फ़ाल – ८

सूरह अन्फ़ाल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में ७५ आयतें हैं।

- यह सूरह सन् २ हिज्री में बद्र के युद्ध के पश्चात् उतरी। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को जब काफ़िरों ने मारने की योजना बनाई और आप मदीना हिजरत कर गये तो उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उबय्य को पत्र लिखा और यह धमकी दी कि आप उन को मदीना से निकाल दें अन्यथा वह मदीना पर आक्रमण कर देंगे। अब मुसलमानों के लिये यही उपाय था कि शाम के व्यापारिक मार्ग से अपने विरोधियों को रोक दिया जाये। सन् २ हिज्री में मक्के का एक बड़ा क़ाफ़िला शाम से मक्का वापिस हो रहा था। जब वह मदीना के पास पहुँचा तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपने साथियों के साथ उस की ताक में निकले। मुसलमानों के भय से क़ाफ़िले का मुख्या अबू सुफ़यान ने एक व्यक्ति को मक्का भेज दिया कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपने साथियों के साथ तुम्हारे क़ाफ़िलें की ताक में हैं। यह सुनते ही एक हज़ार की सेना निकल पड़ी। अबू सुफ़यान दूसरी राह से बच निकला। परन्तु मक्का की सेना ने यह सोचा कि मुसलमानों को सदा के लिये कुचल दिया जाये। और इस प्रकार मुसलमानों से ब्रद के क्षेत्र में सामना हुआ तथा दोनों के बीच यह प्रथम ऐतिहासिक संघर्ष हुआ जिस में मक्का के काफ़िरों के बड़े–बड़े ७० व्यक्ति मारे गये और इतने ही बंदी बना लिये गये।
- यह इस्लाम का प्रथम ऐतिहासिक युद्ध था जिस में सत्य की विजय हुई। इस लिये इस में युद्ध से संबंधित कई नैतिक शिक्षाये दी गई हैं। जैसे यह की जिहाद धर्म की रक्षा के लिये होना चाहिये, धन के लोभ, तथा किसी पर अत्याचार के लिये नहीं।
- विजय होने पर अल्लाह का आभारी होना चाहिये। क्यों कि विजय उसी की सहायता से होती है। अपनी वीरता पर गर्व नहीं होना चाहिये।

- जो ग़ैर मुस्लिम अत्याचार न करें उन पर आक्रमण नहीं करना चाहिये। और जिन से संधि हो उन पर धोखा दे कर नहीं आक्रमण करना चाहिये और न ही उन के विरुद्ध किसी की सहायता करनी चाहिये।
- शत्रु से जो सामान (ग़नीमत) मिले उसे अल्लाह का माल समझना चाहिये और उस के नियमानुसार उस का पाँचवाँ भाग निर्धनों और अनाथों की सहायता के लिये ख़र्च करना चाहिये जो अनिवार्य है।
- इस में युद्ध के बंदियों को भी शिक्षा प्रद शैली में संबोधित किया गया है।
- इस सूरह से इस्लामी जिहाद की वास्तविक्ता की जानकारी होती हैं।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. हे नबी! आप से (आप के साथी) युद्ध में प्राप्त धन के विषय में प्रश्न कर रहे हैं। कह दें कि युद्ध में प्राप्त धन अल्लाह और रसूल के हैं। अतः अल्लाह से डरो और आपस में सुधार रखो, तथा अल्लाह और उस के रसूल के आज्ञाकारी रहो[1] यदि तुम ईमान वाले हो।

२. वास्तव में ईमान वाले वही हैं कि जब अल्लाह का वर्णन किया जाये तो उन के दिल काँप उठते हैं। और जब उन के समक्ष उस की आयतें पढ़ी जायें तो उन का ईमान अधिक हो जाता है। और वह अपने पालनहार पर ही भरोसा रखते हों।

३. जो नमाज़ की स्थापना करते हैं, तथा हम ने उन्हें जो कुछ प्रदान किया है उस में से दान करते हैं।

४. वही (सच्चे) ईमान वाले हैं। उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास श्रेणियाँ तथा क्षमा और उत्तम जीविका है।

५. जिस प्रकार[2] आप को आप के पालनहार ने आप के घर (मदीना) से (मिश्रणवादियों से युद्ध के लिये सत्य के साथ) निकाला। जब कि ईमान वालों का एक समुदाय इस से अप्रसन्न था।

६. वह आप से सच (युद्ध) के बारे में झगड़ रहे थे जब कि वह उजागर हो गया था (कि युद्ध होना है) जैसे वह मौत की ओर हाँके जा रहे हों, और वे उसे देख रहे हों।

७. तथा (वह समय याद करो) जब अल्लाह तुम्हें वचन दे रहा था कि दो गिरोहों में से एक तुम्हारे हाथ आयेगा। और तुम चाहते थे कि निर्बल गिरोह तुम्हारे हाथ लगे।[1]

---

[1] नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तेरह वर्ष तक मक्का के मिश्रणवादियों के अत्याचार सहन किये। फिर मदीना हिजरत कर गये। परन्तु वहाँ भी मक्का वासियों ने आप को चैन नहीं लेने दिया। और निरन्तर आक्रमण आरंभ कर दिये। ऐसी दशा में आप भी अपनी रक्षा के लिये वीरता के साथ अपने ३१३ साथियों को लेकर ब्रद के रणक्षेत्र में पहुँचे। जिस में मिश्रवादियों की पराजय हुई। और कुछ सामान भी मुसलमानों के हाथ आया। जिसे इस्लामी परिभाषा में ''माले गतीमत'' कहा जाता है। और उसी के विषय में प्रश्न का उत्तर इस आयत में दिया गया है। यह प्रथम युद्ध हिज्रत के दूसरे वर्ष हुआ।

[2] अर्थात यह युद्ध के माल का विषय भी उसी प्रकार है, कि अल्लाह ने उसे अपना और अपने रसूल का भाग बना दिया। जिस प्रकार अपने आदेश से आप का युद्ध के लिये निकाला।

परन्तु अल्लाह चाहता था कि अपने वचन द्वारा सत्य को सिद्ध कर दें, और काफ़िरों की जड़ काट दे।

८. इस प्रकार सत्य को सत्य, और असत्य को असत्य कर दे। यद्यपि अपराधियों को बुरा लगे।

९. जब तुम अपने पालनहार को (बद्र के युद्ध के समय) गुहार रहे थे। तो उस ने तुम्हारी प्रार्तना सुन ली। (और कहा:) मैं तुम्हारी सहायता के लिये लगातार एक हज़ार फ़रिश्ते भेज रहा[२] हूँ।

१०. और अल्लाह ने यह इस लिये बता दिया ताकि (तुम्हारे लिये) शुभ सूचना हो और ताकि तुम्हारे दिलों को संतोष हो जाये। अन्यथा सहायता तो अल्लाह ही की ओर से होती है। वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

११. और वह समय याद करो जब अल्लाह अपनी ओर से शान्ति के लिये तुम पर ऊँघ डाल रहा था। और तुम पर आकाश से जल बरसा रहा था, ताकि तुम्हें स्वच्छ कर दे। और तुम से शैतान की मलीनता दूर कर दे। और तुम्हारे दिलों को साहस दे, और (तुम्हारे) पाँव जमा[३] दे।

१२. (हे नबी!) यह वह समय था जब आप का पालनहार फ़रिश्तों को संकेत कर रहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। तुम ईमान वालों को स्थिर रखो, मैं काफ़िरों के दिलों मे भय डाल दूँगा। तो (हे मुसलमानों!) तुम उन की गरदनों पर तथा पोर पोर पर आघात पहुँचाओ।

---

[१] इस में निर्बल गिरोह व्यापारिक क़ाफ़िले को कहा गया है। अर्थात कुरैश मक्का का व्यापारिक क़ाफ़िला जो सीरिया की ओर से आ रहा था, या उन की सेना जो मक्का से आ रही थी।

[२] नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने बद्र के दिन कहा: यह घोड़े की लगाम थामे और हथियार लगाये जिब्रील (अलैहिस्सलाम) आये हुये हैं। (सहीह बुख़ारी – ३९९५) इसी प्रकार एक मुसलमान एक मुश्रिक का पीछा कर रहा था कि अपने ऊपर से घुड़सवार की आवाज़ सुनी: हैज़ुम (घोड़े का नाम) आगे बढ़। फिर देखा कि मुश्रिक उस के सामने चित गिरा हुआ है। उस की नाक और चेहरे पर कोड़े की मार का निशान है। फिर उस ने यह बात नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को बतायी। तो आप ने कहा: सच्च है। यह तीसरे आकाश की सहायता है। (देखिये: सहीह मुस्लिम – १७६३)

[३] बद्र के युद्ध के समय मुसलमानों की संख्या मात्र ३१३ थी। और सिवाये एक व्यक्ति के किसी के पास घोड़ा न था। मुसलमान डरे सहमे थे। जल के स्थान पर पहले ही शत्रु ने अधिकार कर लिया था। भूमि रेतीली थी जिस में पाँव धँस जाते थे। और शत्रु सवार थे। और उन की संख्या भी तीन गुणा थी। ऐसी दशा में अल्लाह ने मुसलमानों पर निद्रा उतार कर उन्हें निश्चन्त कर दिया और वर्षा करके पानी की व्यवस्था कर दी। जिस से भूमि भी कड़ी हो गई। और अपनी असफलता का भय जो शैतानी संशय था वह भी दूर हो गया।

१३. यह इस लिये कि उन्होंने अल्लाह और उस के रसूल का विरोध किया। तथा जो अल्लाह और उस के रसूल का विरोध करेगा तो निश्चय अल्लाह उसे कड़ी यातना देने वाला है।

१४. यह है (तुम्हारी यातना), तो इस का स्वाद चखो। और (जान लो कि) काफ़िरों के लिये नरक की यातना (भी) है।

१५. हे ईमान वालो! जब काफ़िरों की सेना से भिड़ो तो उन्हें पीठ न दिखाओ।

१६. और जो कोई उस दिन अपनी पीठ दिखायेगा, परन्तु फिर कर आक्रमण करने अथवा (अपने) किसी गिरोह से मिलने के लिये, तो वह अल्लाह के प्रकोप में घिरे जायेगा। और उस का स्थान नरक है। और वह बहुत ही बुरा स्थान है।

१७. अत: (रणक्षेत्र में) उन्हें बध तुम ने नहीं किया परन्तु अल्लाह ने उन को बध किया। और हे नबी! आप ने नहीं फेंका जब फेंका, परन्तु अल्लाह ने फेंका। और (यह इस लिये हुआ) ताकि अल्लाह इस के द्वारा ईमान वालों की एक उत्तम परीक्षा ले। वास्तव में अल्लाह सब कुछ सुनने और जानने[१] वाला है।

१८. यह सब तुम्हारे लिये हो गया। और अल्लाह काफ़िरों की चालों को निर्बल करने वाला है।

१९. यदि तुम[२] निर्णय चाहते हो तो तुम्हारे सामने निर्णय आ गया है। और यदि तुम रुक जाओ तो तुम्हारे लिये उत्तम है ।और यदि फिर पहले जैसा करोगे तो हम भी वैसा ही करेंगे। और तुम्हारा जत्था तुम्हारे कुछ काम नहीं आयेगा, यद्यपि अधिक हो। और निश्चय अल्लाह ईमान वालों के साथ है।

२०. हे ईमान वालो! अल्लाह के आज्ञाकारी रहो तथा उस के रसूल के। और उस से मुँह न फेरो जब कि तुम सुन रहे हो।

---

[१] आयत का भावार्थ यह है कि शत्रु पर विजय तुम्हारी शक्ति से नहीं हुई। इसी प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रण क्षेत्र में कंकरियाँ लेकर शत्रु की सेना की ओर फेंकीं जो प्रत्येक शत्रु की आँख में पड़ गई। और वहीं से उन की पराजय का आरंभ हुआ तो उस धूल को शत्रु की आँखों तक अल्लाह ही ने पहुँचाया था। (इब्ने कसीर)

[२] आयत में मक्का के काफ़िरों को संबोधित किया गया है जो कहते थे कि यदि तुम सच्चे हो तो इस का निर्णय कब होगा? (देखिये : सूरह सज्दा, आयत – २८)

२१. तथा उन के समान[१] न हो जाओ जिन्होंने कहा कि हम ने सुन लिया जब कि वास्तव में वह सुनते नहीं थे।

२२. वास्तव में अल्लाह के हाँ सब से बुरे पशु वह (मानव) हैं जो बहरे गूँगे हों, जो कुछ समझते न हों।

२३. और यदि अल्लाह उन में कुछ भी भलाई जानता तो उन्हें सुना देता और यदि उन्हें सुना भी दे तो भी वह मुँह फेर लेंगे। और वह विमुख हैं ही।

२४. हे ईमान वाले! अल्लाह और उस के रसूल की पुकार को सुनो, जब तुम्हें उस की ओर बुलाये जो तुम्हारी[२] (आत्मा) को जीवन प्रदान करे। और जान लो कि अल्लाह मानव और उस के दिल के बीच आड़े[३] आ जाता है। और निःसंदेह तुम उसी के पास (अपने कर्मफल के लिये) एकत्र किये जाओगे।

२५. तथा उस आपदा से डरो जो तुम में से अत्याचारियों पर ही विशेष रूप से नहीं आयेगी। और विश्वास रखो[४] कि अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।

२६. तथा वह समय याद करो, जब तुम (मक्का में) बहुत थोड़े निर्बल समझे जाते थे। तुम डर रहे ते कि लोग तुम्हें उचक न लें। तो अल्लाह ने तुम्हें (मदीना में) शरण दी। और अपनी सहायता द्वारा तुम्हें समर्थन दिया और तुम्हें स्वच्छ जीविका प्रदान की, ताकि तुम कृतज्ञ रहो।

२७. हे ईमान वालो! अल्लाह तथा उस के रसूल के साथ विश्वासघात न करो। और न अपनी अमानतों (कर्तव्य) के साथ विश्वासघात[५] करो, जानते हुये।

२८. तथा जान लो कि तुम्हारा धन और तुम्हारी संतान एक परीक्षा है। तथा यह कि अल्लाह के पास बड़ा प्रतिफल है।

---

[१] इस में संकेत अहले किताब की ओर है।

[२] इस से अभिप्रेत कुरआन तथा इस्लाम है।

[३] अर्थात जो अल्लाह, और उस के रसूल की बात नहीं मानता, तो अल्लाह उसे मार्गदर्शन भी नहीं देता।

[४] इस आयत का भावार्थ यह है कि अपने समाज में बुराईयों को न पनपने दो। अन्यथा जो आपदा आयेगी वह सर्वसाधारण पर आयेगी।

[५] अर्थात अल्लाह तथा उस के रसूल के लिये जो तुम्हारा दायित्व और कर्तव्य है उसे पूरा करो। (इब्ने कसीर)

२९. हे ईमान वालो! यदि तुम अल्लाह से डरोगे तो तुम्हारे लिये विवेक[१] बना देगा। तथा तुम से तुम्हारी बुराईयाँ दूर कर देगा। और तुम्हें क्षमा कर देगा, और अल्लाह बड़ा दयाशील है।

३०. तथा (हे नबी! वह समय याद करो) जब (मक्का में) काफ़िर आप के विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे थे, ताकि आप को क़ैद कर लें। अथवा आप को वध कर दें, अथवा देश निकाला दे दें। तथा वे षड्यंत्र रच रहे थे, और अल्लाह अपनी उपाय कर रहा था। और अल्लाह का उपाय[२] सब से उत्तम है।

३१. और जब उन को हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो कहते हैं : हम ने (इसे) सुन लिया है। यदि हम चाहें तो इसी (कुरआन) जैसी बातें कह दें। यह तो वही प्राचीन लोगों की कथायें हैं।

३२. तथा (याद करो) जब उन्होंने कहा: हे अल्लाह! यदि यह[३] तेरी ओर से सत्य है तो हम पर आकाश से पत्थरों की वर्षा कर दे, अथवा हम पर दु:खदायी यातना ला दे।

३३. और अल्लाह उन्हें यातना नहीं दे सकता था जब तक आप उन के बीच थे, और न उन्हें यातना देने वाला है जब तक कि वह क्षमा याचना कर रहे हों।

३४. और (अब) उन पर क्यों न यातना उतारे जब कि वह सम्मानित मस्जिद (कॉबा) से रोक रहे हैं, जब कि वह उस के संरक्षक नहीं हैं। उस के संरक्षक तो केवल अल्लाह के आज्ञाकारी हैं, परन्तु अधिकांश लोग (इसे) नहीं जानते।

३५. और अल्लाह के घर (कॉबा) के पास इन की नमाज़ इस के सिवा क्या थी कि सीटियाँ और तालियाँ बजायें।? तो अब[४] अपने कुफ़्र (अस्वीकार) के बदले में यातना का स्वाद चखो।

३६. जो काफ़िर हो गये वह अपना धन इस लिये ख़र्च करते हैं कि अल्लाह की राह से रोक दें। तो वे अपना धन ख़र्च करते रहेंगे फिर (वह समय आयेगा कि) वह उन

---

[१] विवेक का अर्थ है: सत्य और असत्य के बीच अन्तर करने की शक्ति। कुछ ने फ़ुर्क़ान का अर्थ निर्णय लिया है अर्थात अल्लाह तुम्हारे और तुम्हारे विरोधियों के बीच निर्णय कर देगा।

[२] अर्थात उन की सभी योजनाओं को असफल कर के आप को सुरक्षित मदीना पहुँचा दिया।

[३] अर्थात कुरआन। यह बात कुरैश के मुख्या अबू जह्ल ने कही थी जिस पर आगे की आयत उतरी।

[४] अर्थात बद्र में पराजय की यातना।

के लिये पछतावे का कारण हो जायेगा। फिर पराजित होंगे। तथा जो काफ़िर हो गये वे नरक की ओर हाँक दिये जायेंगे।

३७. ताकि अल्लाह, मलीन को पवित्र से अलग कर दे। तथा मलीनों को एक दूसरे से मिला दे। फिर सब का ढेर बना दे, और उन्हें नरक में फेंक दें, यही क्षतिग्रस्त हैं।

३८. (हे नबी!) इन काफ़िरों से कह दो: यदि वह रुक[१] गये तो जो कुछ हो गया है वह उन से क्षमा कर दिया जायेगा। और यदि पहले जैसा ही करेंगे तो अगली जातियों की दुर्गत हो चुकी है।

३९. हे ईमान वालो! उन से उस समय तक युद्ध करो कि[२] फित्ना (अत्याचार तथा उपद्रव) समाप्त हो जाये, और धर्म पूरा अल्लाह के लिये हो जाये। तो यदि वह (अत्याचार से) रुक जायें तो अल्लाह उन के कर्मों को देख रहा हैं।

४०. और यदि वह मुँह फेरें तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा रक्षक है। और वह क्या ही अच्छा संरक्षक तथा क्या ही अच्छा सहायक है?

४१. और जान[३] लो कि तुम्हें जो कुछ ग़नीमत में मिला है तो उस का पाँचवाँ भाग अल्लाह तथा रसूल और (आप के) समीपवर्तियों तथा अनाथों और निर्धनों तथा यात्रियों के लिये है। यदि तुम अल्लाह पर तथा उस (सहायता) पर ईमान रखते हो जो हम ने अपने भक्त पर निर्णय[४] के दिन उतारी जिस दिन दो सेनाऐं भिड़ गईं। और अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

---

[१] अर्थात ईमान लाये।

[२] इब्ने उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने कहा: नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मुश्रिकों से उस समय युद्ध कर रहे थे जब मुसलमान कम थे। और उन्हें अपने धर्म के कारण सताया, मारा और बंदी बना लिया जाता था।

[३] इस में ग़नीमत (युद्ध में मिले सामान) के वितरण का नियम बताया गया है: कि उस के पाँच भाग करके चार भाग मुजाहिदों को दिये जायें। पैदल को एक भाग तथा सवार को तीन भाग। फिर पाँचवाँ भाग अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये था जिसे आप अपने परिवार और समीप वर्तियों तथा अनाथों और निर्धनों की सहायता के लिये ख़र्च करते थे। इस प्रकार इस्लाम ने अनाथों तथा निर्धनों की सहायता पर सदा ध्यान दिया है। और ग़नीमत में उन्हें भी भाग दिया है यह इस्लाम की वह विशेषता है जो किसी धर्म में नहीं मिलेगी।

[४] अर्थात मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर। निर्णय के दिन से अभिप्राय बद्र के युद्ध का दिन है जो सत्य और असत्य के बीच निर्णय का दिन था। जिस में काफ़िरों के बड़े बड़े प्रमुख और धवीर मारे गये जिन के शव बद्र के एक कूवें में फेंक दिये गये। फिर आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कुवें के किनारे खड़े हुये और उन्हें उन के नामों से पुकारने लगे कि क्या तुम प्रसन्न होते कि अल्लाह और उस के रसूल को मानते?य हम ने अपने पालनहार का वचन सच्चा पाया तो क्या तुम ने भी सच्चा

४२. तथा उस समय को याद करो जब तुम (रणक्षेत्र में) इधर के किनारे तथा वह (शत्रु) उधर के किनारे पर थे, और क़ाफ़िला तुम से नीचे था। और यदि तुम आपस में (युद्ध का निश्चय करते तो निश्चित समय से अवश्य कतरा जाते। परन्तु अल्लाह ने (दोनों को भिड़ा दिया) ताकि जो होना था उस का निर्णय कर दे। ताकि जो मरे तो वह खुले प्रमाण के पश्चात् मरे। और जो जीवित रहे तो वह खुले प्रमाण के साथ जीवित रहे। और वस्तुत: अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

४३. तथा (हे नबी! वह समय याद करें) जब आप को (अल्लाह) आप के सपने[१] में उन्हें (शत्रु को) थोड़ा दिखा रहा था। और यदि उन्हें आप को अधिक दिखा देता तो तुम साहस खो देते। और इस (युद्ध के) विषय में आपस में झगड़ने लगते। परन्तु अल्लाह ने तुम्हें बचा दिया। वास्तव में वह सीनों (अन्तरात्मा) की बातों से भली भाँती अवगत है।

४४. तथा (याद करो उस समय को) जब अल्लाह उन (शत्रु) को लड़ाई के समय तुम्हारी आँखों में तुम्हारे लिये थोड़ा कर के दिखा रहा था, और उन की आँखों में तुम्हें थोड़ा कर के दिखा रहा था, ताकि जो होना था, अल्लाह उस का निर्णय कर दे। और सभी कर्म अल्लाह ही की ओर फेरे[२] जाते हैं।

४५. हे ईमान वालो! जब (आक्रमण कारियों) के किसी गिरोह से भिड़ो तो जम जाओ। तथा अल्लाह को बहुत याद करो, ताकि तुम सफल रहो।

४६. तथा अल्लाह और उस के रसूल के आज्ञाकारी रहो, और आपस में विवाद न करो, अन्यथा तुम कमज़ोर हो जाओगे, और तुम्हारी हवा उखड़ जायेगी। तथा धैर्य से काम लो, वास्तव में अल्लाह धैर्यवानों के साथ है।

पाया? उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: क्या आप ऐसे शरीरों से बात कर रहे हैं जिन में प्राण नहीं? आप ने कहा: मेरी बात तुम उन से अधिक नहीं सुन रहे हो।

[१] इस में उस स्वप्न की ओर संकेत है जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को युद्ध से पहले दिखाया गया था।

[२] अर्थात सब का निर्णय वही करता हैं।

४७. और उन[1] के समान न हो जाओ जो अपने घरों से इतराते हुये तथा लोगों को दिखाते हुये निकले। और वह अल्लाह की राह (इस्लाम) से लोगों को रोकते हैं। और अल्लाह उन के कर्मों को (अपने ज्ञान के) घेरे में लिये हुये है।

४८. जब शैतान[2] ने उन के लिये उन के कुकर्मों को शोभनीय बना दिया था। और उस (शैतान) ने कहा: आज तुम पर कोई प्रभुत्व नहीं पा सकता, और मैं तुम्हारा सहायक हूँ। फिर जब दोनों सेनायें सम्मुख हो गईं, तो अपनी एड़ियों के बल फिर गया। और कह दिया कि मैं तुम से अलग हूँ। मैं जो देख रहा हूँ तुम नहीं देखते। वास्तव में मैं अल्लाह से डर रहा हूँ। और अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।

४९. तथा (वह समय भी याद करो), जब मुनाफ़िक तथा जिन के दिलों में रोग है, वे कह रहे थे कि इन (मुसलमानों) को इन के धर्म ने धोखा दिया है। तथा जो अल्लाह पर निर्भर करे तो वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

५०. और क्या ही अच्छा होता यदि आप उस दशा को देखते जब फ़रिश्ते (बधित) काफ़िरों के प्राण निकाल रहे थे तो उन के मुखों और उन की पीठों पर मार रहे थे। तथा (कह रहे थे कि) दहन की यातना[3] चखो।

५१. यही तुम्हारे कर्तूतों का प्रतिफल है। और अल्लाह अपने भक्तों पर अत्याचर करने वाला नहीं है।

५२. इन की दशा भी फ़िरऔनियों तथा उन के जैसी हुई जिन्होंने इन से पहले अल्लाह की आयतों को नकार दिया, तो अल्लाह ने उन के पापों के बदले उन्हें पकड़ लिया। वास्तव में अल्लाह बड़ा शक्तिशाली कड़ी यातना देने वाला है।

---

[1] इस से अभिप्राय मक्का की सेना है जिसको अबू जहल लाया था।

[2] बद्र के युद्ध में शैतान भी अपनी सेना के साथ सुराक़ा बिन मालिक के रूप में आया था। परन्तु जब फ़रिश्तों को देखा तो भाग गया। (इब्ने कसीर)

[3] बद्र के युद्ध में काफ़िरों के कई प्रमुख मारे गये। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने युद्ध से पहले बता दिया कि अमुक इस स्थान पर मारा जायेगा तथा अमुक इस स्थान पर। और युद्‌ध समाप्त होने पर उन का शव उन्हीं स्थानों पर मिला तनिक भी इधर–उदर नहीं हुआ। (बुख़ारी – ४४८०)

ऐसे ही आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने युद्ध के समय कहा कि सारे जत्थे पराजित हो जायेंगे और पीठ दिखा देंगे। और उसी समय शत्रु पराजित होने लगे। (बुख़ारी – ४८७५)

५३. अल्लाह का यह नियम है कि वह उस पुरस्कार में परिवर्तन करने वाला नहीं है जो किसी जाति पर किया हो, जब तक वह स्वयं अपनी दश में परिवर्तन न कर लें। और वास्तव में अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

५४. इन की दशा फ़िरऔनियों तथा उन लोगों जैसी हुई जो इन से पहले थे, उन्होंने अल्लाह की आयतों के झुठला दिया, तो हम ने उन्हें उन के पापों के कारण ध्वस्त कर दिया। तथा फ़िरऔनियों को डुबो दिया। और वह सभी अत्याचारी[1] थे।

५५. वास्तव में सब से बुरे जीव अल्लाह के पास वह हैं जो काफ़िर हो गये, और ईमान नहीं लाते।

५६. यह वे[2] लोग हैं जिन से आप ने संधि की। फिर वह प्रत्येक अवसर पर अपना वचन भंग कर देते हैं। और (अल्लाह से) नहीं डरते।

५७. तो यदि ऐसे (वचनभंगी) आप को रणक्षेत्र में मिल जायें तो उन को शिक्षाप्रद दण्ड दें, ताकि जो उन के पीछे हैं वह शिक्षा ग्रहण करें।

५८. और यदि आप को किसी जाति से विश्वासघात (संधि भंग करने) का भय हो तो बराबरी के आधार पर संधि तोड़[3] दें। क्यों कि अल्लाह विश्वासघातियों से प्रेम नहीं करता।

५९. जो काफ़िर हो गये वे कदापि यह न समझें कि हम से आगे हो जायेंगे। निश्चय वह (हमें) विवश नहीं कर सकेंगे।

६०. तथा तुम से जितनी हो सके उन के लिये शक्ति तथा सीमा रक्षा के लिये घोड़े तैयार रखो। जिस से अल्लाह के शत्रुओं तथा अपने शत्रुओं को और इन के सिवा दूसरों को डराओ।[4] जिन को तुम नहीं जानते, उन्हें अल्लाह ही जानता है। और अल्लाह की राह में तुम जो भी व्यय (ख़र्च) करोगे तो तुम्हें पूरा मिलेगा। और तुम पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

---

[1] इस आयत में तथा आयत नं. ५२ में व्यक्तियों तथा जातियों के उत्थान और पतन का विधान बताया गया है कि वह स्वयं अपने कर्मो से अपना जीवन बनाती या अपना विनाश करती है।

[2] इस में मदीना के यहूदियों की ओर संकेत है। जिन से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की संधि थी। फिर भी वे मुसलमानों के विरोध में गतिशील थे और बद्र के तुरन्त बाद ही कुरैश को बदले के लिये भड़काने लगे थे।

[3] अर्तात उन्हें पहले सूचित कर दो कि अब हमारे तुम्हारे बीच संधि नहीं है।

[4] ताकि वह तुम पर आक्रमण करने का साहस न करें, और आक्रमण करें तो अपनी रक्षा करो।

६१. और यदि वह (शत्रु) संधी की ओर झुकें तो आप भी उस के लिये झुक जायें। और अल्लाह पर भरोसा करें। निश्चय वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

६२. और यदि वह (संधि कर के) आप को धोखा देना चाहेंगे तो अल्लाह आप के लिये काफ़ी है। वही है जिस ने अपनी सहायता तथा ईमान वालों के द्वारा आप को समर्थन दिया है।

६३. और उन के दिलों को जोड़ दिया। और यदि आप धरती में जो कुछ है सब व्यय (ख़र्च) कर देते तो भी उन के दिलों को नहीं जोड़ सकते थे। वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ (निपुण) है।

६४. हे नबी! आप के लिये तथा आप के ईमान वाले साथियों के लिये अल्लाह काफ़ी है।

६५. हे नबी! ईमान वालों को युद्ध की प्रेरणा दो।[१] यदि तुम में से बीस धैर्यवान होंगे तो दो सौ पर विजय प्राप्त कर लेंगे। और यदि तुम में से सौ होंगे तो उन काफ़िरों के एक हज़ार पर विजय प्राप्त कर लेंगे। इस लिये कि वह समझ बूझ नहीं रखते।

६६. अब अल्लाह ने तुम्हारा बोझ हल्का कर दिया, और जान लिया कि तुम में कुछ निर्बलता है, तो यदि तुम में से सौ सहनशील हों तो वे दो सौ पर विजय प्राप्त कर लेंगे। और यदि तुम में से एक हज़ार हों तो अल्लाह की अनुमति से दो हज़ार पर प्रभुत्व प्राप्त कर लेंगे। और अल्लाह सहनशीलों के साथ है।[२]

६७. किसी नबी के लिये यह उचित न था कि उस के पास बंदी हों, जब तक कि धरती (रण क्षेत्र) में अच्छी प्रकार रक्तपात न कर दे। तुम संसारिक लाभ चाहते हो, और अल्लाह (तुम्हारे लिये) आख़िरत (परलोक) चाहता है। और अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

६८. यदि इस के बारे में पहले से अल्लाह का लेख (निर्णय) न होता, तो जो (अर्थदण्ड) तुमने लिया[३] है, उस के लेने में तुम्हें बड़ी यातना दी जाती।

---

[१] इस लिये कि काफ़िर मैदान में आ गये हैं और आप से युद्ध करना चाहते है। ऐसी दशा में जिहाद अनिवार्य हो जाता है ताकि शत्रु के आक्रमण से बचा जाये।

[२] अर्थात उन का सहायक है जो दु:ख तथा सुख प्रत्येक दशा में उस के नियमों का पालन करते हैं।

[३] यह आयत बद्र के बंदियों के बारे में उतरी। जब अल्लाह के किसी आदेश के बिना आपस के परामर्श से उन से अर्थदण्ड ले लिया गया। (इब्ने कसीर)

६९. तो उस ग़नीमत में से[1] खाओ, वह हलाल (उचित) स्वच्छ है। तथा अल्लाह के आज्ञाकारी रहो। वास्तव में अल्लाह अति क्षमा करने वाला दयावान् है।

७०. हे नबी! जो तुम्हारे हाथों में बंदी हैं, उन से कह दो कि यदि अल्लाह ने तुम्हारे दिलों में कोई भलाई देखी तो तुम को उस से उत्तम चीज़ (ईमान) प्रदान करेगा जो (अर्थदण्ड) तुम से लिया गया है, और तुम्हें क्षमा कर देगा। और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

७१. और यदि वह आप के साथ विश्वासघात करना चाहेंगे तो इस से पूर्व वे अल्लाह के साथ विश्वासघात कर चुके हैं। इसी लिये अल्लाह ने उन को (आप के) वश में किया है। तथा अल्लाह अति ज्ञानी उपाय जानने वाला है।

७२. निःसंदेह जो ईमान लाये, तथा हिज्रत (प्रस्थान) कर गये, और अल्लाह की राह में अपने धनों और प्राणों से जिहाद किया, तथा जिन लोगों ने उन को शरण दिया तथा सहायता की, वही एक दूसरे के सहायक हैं। और जो ईमान नहीं लाये और न हिज्रत (प्रस्थान) की, उन से तुम्हारी सहायता का कोई संबन्ध नहीं, यहाँ तक कि हिज्रत करके आ जायें। और यदि वह धर्म के बारे में तुम से सहायता माँगें, तो तुम पर उन की सहायता करना आवश्यक है। परन्तु किसी ऐसी जाति के विरुद्ध नहीं जिन के और तुम्हारे बीच संधि हो, तथा तुम जो कुछ कर रहे हो उसे अल्लाह देख रहा है।

७३. और काफ़िर एक दूसरे के समर्थक हैं। और यदि तुम ऐसा न करोगे तो धरती में उपद्रव तथा बड़ा बिगाड़ उत्पन्न हो जायेगा।

७४. तथा जो ईमान लाये, और हिज्रत कर गये, और अल्लाह की राह में संघर्ष किया, और जिन लोगों ने (उनको) शरण दी, और (उन की) सहायता की, वही सच्चे ईमान वाले हैं। उन्हीं के लिये क्षमा तथा उन्हीं के लिये उत्तम जीविका है।

७५. तथा जो लोग इन के पश्चात् ईमान लाये और हिज्रत कर गये, और तुम्हारे साथ मिल कर संघर्ष किया, वही तुम्हारे अपने हैं। और वही परिवारिक समीपवर्ती

[1] आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: मेरी एक विशेषता यह भी है कि मेरे लिये ग़नीमत उचित कर दी गई जो मुझ से पहले किसी नबी के लिये उचित नहीं थी। (बुख़ारी – ३३५, मुस्लिम – ५२१)

अल्लाह के लेख (आदेश) में अधिक समीप[1] हैं। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक चीज़ का अति ज्ञानी हैं।

*****

[1] अर्थात मीरास में उन को प्राथमिकता प्राप्त है।



सूरह तौबा – ९



सूरह तौबा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में १२९ आयतें हैं।

- इस सुरह में तौबा की शुभ सूचना तथा वचन भंगी काफ़िरों से विरक्त होने की घोषणा है। इसलिये इस का नाम सूरह तौबा और बराआ (विरक्ति) दोनों है।
- यह सन् (८–९) हिज्री के बीच मक्का की विजय के पश्चात् नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर समय–समय से उतरी। और सन् ९–हिज्री में जब आप ने अबू बक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) को हज्ज का अमीर बना कर भेजा तो इस की आरंभिक आयतें उतरीं। और यह एलान किया गया कि काफ़िरों से संधि तोड़ दी गई और अहले किताब से संबंधित इस्लामी शासन की नीति बताते हुये उन्हें सावधान किया गया।
- इस में इस्लामी वर्ष और महीने का पालन करने का निर्देश दिया गया।
- तबूक के युद्ध के लिये मुसलमानों को उभारा गया तथा मुनाफ़िक़ों की निन्दा की गई जो जिहाद से जी चुराते थे।
- यह बताया गया कि ज़कात किन को दी जाये। और ईमान वालों को सफल होने की शुभ सूचना दी गई।
- मुनाफ़िक़ों के साथ जिहाद करने का आदेश दिया गया। और उन्हें सुधर जाने और अल्लाह तथा रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की आज्ञा का पालन करने को कहा गया अन्यथा वह अपने ईमान के दावे में झूठे हैं।
- नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सच्चे साथियों को शुभ सूचना देने के साथ ग्रामीण वासियों को उन के निफ़ाक़ पर धमकी दी गई।
- जिहाद से जी चुराने वालों के झूठ को उजागर किया गया और ईमान वालों के दोष क्षमा करने का एलान किया गया।
- मुनाफ़िक़ों के मस्जिद बनाकर षड्यंत्र रचने का भंडा फोड़ने के साथ मुश्रिकों के लिये क्षमा की प्रार्थना करने से रोक दिया गया। और मदीना के आस–पास के

ग्रामीणों को नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये जान दे देने तथा धर्म के समझने के निर्देश दिये गये।

- ईमान वालों को जिहाद का निर्देश और मुनाफ़िक़ों को अन्तिम चेतावनी दी गई।
- अन्त में कहा गया कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तुम्हारी केवल भलाई चाहते हैं। इसलिये यदि तुम उन का आदर करोगे तो तुम्हारा ही भला होगा।

*****

१. अल्लाह तथा उस के रसूल की ओर से संधि मुक्त होने की घोषणा है उन मिश्रणवादियों के लिये जिन से तुम ने संधि (समझौता) किया[1] था।
२. तो (हे काफ़िरो!) तुम धरती में चार महीने (स्वतंत्र होकर) फिरो। तथा जान लो कि तुम अल्लाह को विवश नहीं कर सकोगे। और निश्चय अल्लाह, काफ़िरों को अपमानित करने वाला है।
३. तथा अल्लाह और उस के रसूल की ओर से सार्वजनिक सूचना है, महा हज्ज[2] के दिन कि अल्लाह मिश्रणवादियों से अलग है। तथा उस का रसूल भी। फिर यदि तुम तौबा (क्षमा याचना) कर लो तो वह तुम्हारे लिये उत्तम है। और यदि तुम ने मुँह फेरा तो जान लो कि तुम अल्लाह को विवश करने वाले नहीं हो। और आप उन्हें जो काफ़िर हो गये दु:खदायी यातना का शुभ समाचार सुना दें।
४. सिवाय उन मुश्रिकों के जिन से तुम ने संधि की, फिर उन्होंने तुम्हारे साथ कोई कमी नहीं की, और न तुम्हारे विरुद्ध किसी की सहायता की, तो उन से उन की संधि उन की अवधि तक पूरी करो। निश्चय अल्लाह आज्ञाकारियों से प्रेम करता है।
५. अत: जब सम्मानित महीने बीत जायें तो मिश्रणवादियों का बध करो उन्हें जहाँ पाओ, और उन्हें पकड़ो, और घेरो[3], और उन की घात में रहो। फिर यदि वह तौबा कर लें और नमाज़ की स्थापना करें तथा ज़कात दें तो उन्हें छोड़ दो। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
६. और यदि मुश्रिकों में से कोई तुम से शरण माँगे तो उसे शरण दो यहाँ तक कि अल्लाह की बातें सुन ले। फिर उसे पहुँचा दो उस के शान्ती के स्थान तक। यह इसलिये कि वह ज्ञान हीं रखते।

---

[1] यह सूरह सन् ९ हिज्री में उतरी। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना पहुँचे तो आप ने अनेक जातियों से समझौता किया था। परन्तु सभी ने समय समय से समझौते का उल्लंघन किया। लेकिन आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बराबर उस का पालन करते रहे। और अब यह घोषणा कर दी गई कि मिश्रणवादियों से कोई समझौता नहीं रहेगा।

[2] यह एलान ज़िल हिज्जा सन् (१०) हिज्री को मिना में किया गया। कि अब काफ़िरों से कोई संधि नहीं रहेगी। इस वर्ष के बाद कोई मुश्रिक हज्ज नहीं करेगा और न कोई कॉबा का नंगा तवाफ़ करेगा। (बुख़ारी – ४६५५)

[3] यह आदेश मक्का के मुश्रिकों के बारे में दिया गया है, जो इस्लाम के विरोधी थे और मुसलमानों पर आक्रमण कर रहे थे।

७. इन मुश्रिकों (मिश्रणवादियों) की कोई संधि अल्लाह और उस के रसूल के पास कैसे हो सकती है? उन के सिवाय जिन से तुम ने सम्मानित मस्जिद (कॉबा) के पास संधि की[1] थी। तो जब तक वह तुम्हारे लिये सीधे रहें तो तुम भी उन के लिये सीधे रहो। वास्तव में अल्लाह आज्ञाकारियों से प्रेम करता है।

८. और उन की संधि कैसे रह सकती है जब कि वह यदि तुम पर अधिकार पा जायें तो किसी संधि और किसी वचन का पालन नहीं करेंगे। वे तुम्हें अपने मुखों से प्रसन्न करते है, जब कि उन के दिल इन्कार करते हैं। और उन में अधिकांश वचनभंगी हैं।

९. उन्होंने अल्लाह की आयतों के बदले तनिक मूल्य खरीद लिया[2], और (लोगों को) अल्लाह की राह (इस्लाम) से रोक दिया। वास्तव में वे बड़ा कुकर्म कर रहे हैं।

१०. वह किसी ईमान वाले के बारे में किसी संधि और वचन का पालन नहीं करते। और वही उल्लंघनकारी हैं।

११. तो यदि वह (शिर्क से) तौबा कर लें और नमाज़ की स्थापना करें, और ज़कात दें तो तुम्हारे धर्म–बंधु हैं। और हम उन लोगों के लिये आयतों का वर्णन कर रहे हैं जो ज्ञान रखते हों।

१२. तो यदि वह अपनी शपथें अपना वचन देने के पश्चात् तोड़ दें, और तुम्हारे धर्म की निन्दा करें तो कुफ़्र के प्रमुखों से युद्ध करो। क्योंकि उन की शपथों का कोई विश्वास नहीं, ताकि वह (अत्याचार से) रुक जायें।

१३. तुम उन लोगों से युद्ध क्यों नहीं करते जिन्हों ने अपने वचन भंग कर दिये? तथा रसूल को निकालने का निश्चय किया? और उन्होंने ही युद्ध का आरंभ किया है। क्या तुम उन से डरते हो? तो अल्लाह अधिक योग्य है कि तुम उस से डरो, यदि तुम ईमान[3] वाले हो।

---

[1] इस से अभिप्रेत हुदैबिया की संधि है जो सन् ६ हिजरी में हुई। जिसे काफ़िरों ने तोड़ दिया। और यही सन् ८ हिज्री में मक्का की विजय का कारण बना।

[2] अर्थात संसारिक स्वार्थ के लिये सत्धर्म ईस्लाम को नहीं माना।

[3] आयत नं. ७ से लेकर १३ तक यह बताया गया है कि शत्रु ने निरन्तर संधि को तोड़ा है। और तुम्हें युद्ध के लिये बाध्य कर दिया है। अब उन के अत्याचार और आक्रमण को रोकने का यही उपाय रह गया है कि उन से युद्ध किया जाये।

१४. उन से युद्ध करो, उन्हें अल्लाह तुम्हारे हाथों दण्ड देगा। और उन्हें अपमानित करेगा, और उन के विरुद्ध तुम्हारी सहायता करेगा। और ईमान वालों के दिलों का सब दुःख दूर कर देगा।

१५. और उन के दिलों की जलन दूर कर देगा, और जिस पर चाहेगा दया कर देगा। और अल्लाह अति ज्ञानी नीतिज्ञ है।

१६. क्या तुम ने समझा है कि यूँ ही छोड़ दिये जाओगे, जब कि (परीक्षा लेकर) अल्लाह ने उन्हें नहीं जाना है जिस ने तुम में से जिहाद किया? तथा अल्लाह और उस के रसूल और ईमान वालों के सिवाय किसी को भेदी मित्र नहीं बनाया। और अल्लाह उस से सूचित है जो तुम कर रहे हो।

१७. मुश्रिकों (मिश्रणवादियों) के लिये योग्य नहीं है कि वह अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें, जब कि वह स्वयं अपने विरुद्ध कुफ़्र (अधर्म) के साक्षी हैं। इन्हीं के कर्म व्यर्थ हो गये, और नरक में वही सदावासी होंगे।

१८. वास्तव में अल्लाह की मस्जिदों को वही आबाद करता है जो अल्लाह पर और अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान लाया, तथा नमाज़ की स्थापना की, और ज़कात दी, और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरा। तो आशा है कि वही सीधी राह चलेंगे।

१९. क्या तुम हाजियों को पानी पिलाने और सम्मानित मस्जिद (कॉबा) की सेवा को उस के (ईमान के) बराबर समझते हो जो अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाया, तथा अल्लाह की राह में जिहाद किया? अल्लाह के समीप दोनों बराबर नहीं हैं। तथा अल्लाह अत्याचारियों को सुपथ नहीं दिखाता।

२०. जो लोग ईमान लाये तथा हिज्रत कर गये, और अल्लाह की राह में अपने धनों और प्राणों से जिहाद किया, अल्लाह के यहाँ उन का बहुत बड़ा पद है। और वही सफल होने वाले है।

२१. उन को उन का पालनहार शुभ सूचना देता है अपनी दया और प्रसन्नता की तथा ऐसे स्वर्गों की जिन में स्थायी सुख के साधन हैं।

२२. जिन में वह सदावासी होंगे। वास्तव में अल्लाह के यहाँ (सत्कर्मियों के लिये) बड़ा प्रतिफल है।

२३. हे ईमान वालो! अपने बापों और भाईयों को अपना सहायक न बनाओ, यदि वह ईमान की अपेक्षा कुफ़्र से प्रेम करें। और तुम में से जो उन को सहायक बनायेंगे तो वही अत्याचारी होंगे।

२४. हे नबी! कह दो कि यदि तुम्हारे बाप और तुम्हारे पुत्र तथा तुम्हारे भाई और तुम्हारी पत्नियाँ तथा तुम्हारा परिवार और तुम्हारा धन जो तुम ने कमाया है, और जिस व्यापार के मंद हो जाने का तुम्हें भय है, तथा वह घर जिन से मोह रखते हो, तुम्हें अल्लाह तथा उस के रसूल और अल्लाह की राह में जिहाद करने से अधिक प्रिय हैं तो प्रतिक्षा करो, यहाँ तक कि अल्लाह का निर्णय आ जाये। और अल्लाह उल्लंघनकारियों को सुपथ नहीं दिखाता।

२५. अल्लाह बहुत से स्थानों पर तथो हुनैन[1] के दिन तुम्हारी सहायता कर चुका है, जब तुम को तुम्हारी अधिक्ता पर गर्व था, तो वह तुम्हारे कुछ काम न आई, तथा तुम पर धरती अपने विस्तार के होते संकीर्ण (तंग) हो गई, फिर तुम पीठ दिखा कर भागे।

२६. फिर अल्लाह ने अपने रसूल और ईमान वालों पर शान्ति उतारी। तथा ऐसी सेनायें उतारीं जिन्हें तुम ने नहीं देखा[2], और काफ़िरों को यातना दी। और यही काफ़िरों का प्रतिकार (बदला) है।

२७. फिर अल्लाह इस के पश्चात् जिसे चाहे क्षमा कर दे[3] और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

२८. हे ईमान वालो! मुश्रिक (मिश्रणवादी) मलीन हैं। अत: इस वर्ष[4] के पश्चात् वह सम्मानित मस्जिद (कॉबा) के समीप भी न आयें। और यदि तुम्हें निर्धनता का

---

[1] ''हुनैन'' मक्का तथा ताइफ़ के बीच एक वादी है। वहीं पर यह युद्ध सन् ८ हिज्री में मक्का की विजय के पश्चात् हुआ। आप को मक्का में यह सूचना मिली कि हवाज़िन और सक़ीफ़ क़बीले मक्का पर आक्रमण करने की तय्यारियाँ कर रहे हैं। जिस पर आप बारह हज़ार की सेना लेकर निकलो। जब कि शत्रु की संख्या केवल चार हज़ार थी। फिर भी उन्होंने अपने तीरों से मुसलमानों का मुँह फेर दिया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के कुछ साथी रणक्षेत्र में रह गये, अन्तत: फिर इस्लामी सेना ने व्यवस्थित होकर विजय प्राप्त की। (इब्ने कसीर)

[2] अर्थात फ़रिश्ते भी उतारे गये जो मुसलमानों के साथ मिलकर काफ़िरों से जिहाद कर रहे थे। जिन के कारण मुसलमान विजयी हुये और काफ़िरों को बंदी बना लिया गया जिन को बाद में मुक्त कर दिया गया।

[3] अर्तात उस के सत्धर्म इस्लाम को स्वीकार कर लेने के कारण।

[4] अर्थात सन् ९ हिज्री के पश्चात्।

भय[१] हो तो अल्लाह तुम्हें अपनी दया से धनी कर देगा, यदि वह चाहे। वास्तव में अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ है।

२९. (हे ईमान वालो!) उन से युद्ध करो जो न तो अल्लाह पर (सत्य) ईमान लाते और न अन्तिम दिन (प्रलय) पर। और न जिसे अल्लाह और उस के रसूल ने हराम (वर्जित) किया है उसे हराम (वर्जित) समझते हैं, न सत्धर्म को अपना धर्म बनाते, उन में से जो पुस्तक दिये गये हैं यहाँ तक कि वह अपने हाथ से जिज़्या[२] दें और वह अपमानित होकर रहें।

३०. तथा यहूद ने कहा कि उज़ैर अल्लाह का पुत्र है। और नसरा (ईसाईयों) ने कहा कि मसीह अल्लाह का पुत्र है। यह उन के अपने मुँह की बातें हैं। वह उन के जैसी बातें कर रहे हैं जो इन से पहले काफ़िर हो गये। उन पर अल्लाह की मार! वह कहाँ बहके जा रहे हैं?

३१. उन्होंने अपने विद्वानों और धर्माचारियों (संतों) को अल्लाह के सिवा पूज्य[3] बना लिया। तथा मर्यम के पुत्र मसीह को, जब कि उन्हें जो आदेश दिया गया था, इस के सिवा कुछ न था कि एक अल्लाह की इबादत (वंदना) करें। कोई पूज्य नहीं है परन्तु वही। वह उस से पवित्र है जिसे उस का साझी बना रहे हैं।

३२. वे चाहते हैं कि अल्लाह के प्रकाश को अपनी फूँकों से बुझा[४] दें। और अल्लाह अपने प्रकाश को पूरा किये बिना नहीं रहेगा, यद्यपि काफ़िरों को बुरा लगे।

३३. उसी ने अपने रसूल[५] को मार्गदर्शन तथा सत्धर्म (इस्लाम) के साथ भेजा है ताकी उसे प्रत्येक धर्म पर प्रभुत्व प्रदान कर दे[६], यद्यपि मिश्रणवादियों को बुरा लगे।

---

[१] अर्थात उन से व्यापार न करने के कारण। अपवित्र होने का अर्थ शिर्क के कारण मन की मलीनता है

[२] जिज़्या अर्थात रक्षा कर। जो उस रक्षा का बदला है जो इस्लामी देश में बसे हुये अहले किताब से इसलिये लिया जाता है ताकि वह यह सोचें कि अल्लाह के लिये ज़कात न देने और गुमराही पर अड़े रहने का मूल्य चुकाना कितना बड़ा दुर्भाग्य है जिस में वह फँसे हुये हैं।

[3] हदीस में हैं कि उन के बनाये हुये वैध तथा अवैध को मानना ही उन को पूज्य बनाना है। (तिर्मिज़ी ङ्ख २४७१) यह सहीह हदीस हैं।

[४] आयत का अर्थ यह है कि यहूदी, ईसाई तथा काफ़िर स्वयं तो कुपथ हैं ही वह सत्धर्म इस्लाम से रोकने के लिये भी धोखा–धड़ी से काम लेते हैं जिस में वह कदापि सफल नहीं होंगे।

[५] रसूल से अभिप्रेत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं।

[६] इस का सब से बड़ा प्रमाण यह है कि इस समय पूरे संसार में मुसलमानों की संख्या लगभग दो अरब है। और अब भी इस्लाम पूरी दुनिया में तेज़ी से फैलता जा रहा है।

३४. हे ईमान वालो! बहुत से (अहले किताब के) विद्वान तथा धर्माचारी (संत) लोगों का धन अवैध खाते हैं। और (उन्हें) अल्लाह की राह से रोकते हैं, तथा जो सोना–चाँदी एकत्र कर के रखते हैं और उसे अल्लाह की राह में दान नहीं करते, उन्हें दुःखदायी यातना की शुभसूचना सुना दें।

३५. जिस (प्रलय के) दिन उसे नरक की अग्नि में तपाया जायेगा, फिर उस से उन के माथों तथा पार्श्वों (पहलू) और पीठों को दाग़ा जायेगा (और कहा जायेगा) यही है, जिसे तुम एकत्र कर रहे थे, तो (अब) अपने संचित किये धनों का स्वाद चखो।

३६. वास्तव में महीनों की संख्या बारह महीने है अल्लाह के लेख में जिस दिन से उसने आकाशों तथा धरती की रचना की है। उन में से चार हराम (सम्मानित)[1] महीने हैं। यही सीधा धर्म है। अतः अपने प्राणों पर अत्याचार[2] न करो तथा मिश्रणवादियों से सब मिलकर युद्ध करो। जैसे वह तुम से मिल कर युद्ध करते हैं, और विश्वास रखो कि अल्लाह आज्ञाकारियों के साथ है।

३७. नसी[3] (महीनों को आगे पीछे करना) कुफ़्र (अधर्म) में अधिकता है। इस से काफ़िर कुपथ किये जाते हैं। एक ही महीने को एक वर्ष हलाल (वैध) कर देते हैं, तथा उसी को दूसरे वर्ष हराम (अवैध) कर देते हैं। ताकि अल्लाह ने सम्मानित महीनों की जो गिनती निश्चित कर दी है उसे अपनी गिनती के अनुसार करके अवैध महीनों को वैध कर लें। उन के लिये उन के कुकर्म सुन्दर बना दिये गये हैं। और अल्लाह काफ़िरों को सुपथ नहीं दर्शाता।

३८. हे ईमान वालो! तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुम से कहा जाये कि अल्लाह की राह में निकलो तो धरती के बोझ बन जाते हो, क्या तुम आख़िरत (परलोक) की

---

[1] जिन में युद्ध निषेध है। और वह जुलक़ादा, ज़ुल हिज्जा, मुहर्रम तथा रजब के अर्बी महीने हैं। (बुख़ारी – ४६६२)

[2] अर्थात इन में युद्ध तथा रक्तपात न करो, इन का आदर करो।

[3] इस्लाम से पहले मक्का के मिश्रणवादी अपने स्वार्थ के लिये सम्मानित महीनों साधारणतः मुहर्रम के महीने को सफ़र के महीने से बदल कर युद्ध कर लेते थे। इसी प्रकार प्रत्येक तीन वर्ष पर एक महीना अधिक कर लिया जाता था ताकि चाँद का वर्ष सूर्य के वर्ष के अनुसार रहे। कुरआन ने इस कुरीति का खण्डन किया है, और इसे अधर्म कहा है। (इब्ने कसीर)

अपेक्षा संसारिक जीवन से प्रसन्न हो गये हो? जब कि परलोक की अपेक्षा संसारिक जीवन के लाभ बहुत थोड़े है।[1]

३९. यदि तुम नहीं निकलोगे, तो तुम्हें अल्लाह दुःखदायी यातना देगा, तथा तुम्हारे सिवाय दूसरे लोगों को लायेगा। और तुम उसे कोई हानि नहीं पहुँचा सकोगे। और अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

४०. यदि तुम उस (नबी) की सहायता नहीं करोगे तो अल्लाह ने उस की सहायता उस समय[2] की है जब काफ़िरों ने उसे (मक्का से) निकाल दिया। वह दो में दूसरे थे। जब दोनों गुफा में थे, जब वह अपने साथी से कह रहे थे: उदासीन न हो, निश्चय

---

[1] यह आयतें तबूक के युद्ध से संबन्धित है। तबूक मदीने और शाम के बीच एक स्थान का नाम है। जो मदीने से ६१० कि.मी. दूर है। सन् ९ हिजरी में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह सूचना मिली कि रोम के राजा कैसर ने मदीने पर आक्रमण करने का आदेश दिया है। यह मुसलमानों के लिये अरब से बाहर एक बड़ी शक्ति से युद्ध करने का प्रथम अवसर था। अतः आप ने तय्यारी और कूच का एलान कर दिया। यह बड़ा भीषण समय था, इस लिये मुसलमानों को प्रेरणा दी जा रही है कि इस युद्ध के लिये निकलें।

तबूक का युद्ध मक्का की विजय के पश्चात् ऐसे समाचार मिलने लगे कि रोम का राजा कैसर मुसलमानों पर आक्रमण करने की तय्यारी कर रहा है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब यह सुना तो आप ने भी मुसलमानों को तय्यारी का आदेश दे दिया। उस समय स्थिति बड़ी गंभीर थी। मदीना में अकाल था। कड़ी धूप तथा खजूरों के पकने का समय था। सवारी तथा यात्रा के संसाधन की कमी थी। मदीना के मुनाफ़िक अबू आमिर राहिब के द्वारा गस्सान के ईसाई राजा और क़ैसर से मिले हुये थे। उन्होंने मदीना के पास अपने षड्यंत्र के लिये एक मस्जिद भी बना ली थी। और चाहते थे कि मुसलमान पराजित हो जायें। वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों का उपहास करते थे। और तबूक की यात्रा के बीच आप पर प्राण घातक आक्रमण भी किया। और बहुत से द्विधावादियों ने आप का साथ भी नहीं दिया और झुठे बहाने बना लिये। रजब सन् ९ हिज्री में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तीस हज़ार मुसलमानों के साथ निकले। इन में दस हज़ार सवार थे। तबूक पहुँच कर पता लगा कि कैसर और उस के सहयोगियों ने साहस खो दिया है। क्योंकि इस से पहले मूता के रण में तीन हज़ार मुसलमानों ने एक लाख ईसाईयों का मुक़ाबला किया था। इसलिये क़ैसर तीस हज़ार की सेना से भिड़ने का साहस न कर सका। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तबूक में बीस दिन रह कर रोमियों के आधीन इस क्षेत्र के राज्यों को अपने आधीन बनाया। जिस से इस्लामी राज्य की सीमायें रोमि राज्य की सीमा तक पहुँच गइ। जब आप मदीना पहुँचे तो मुनाफ़िक़ों ने झूठे बहाने बना कर क्षमा माँग ली। तीन मुसलमान जो आप के साथ आलस्यके कारण नहीं जा सके थे और अपना दोष स्वीकार कर लिया था आप ने उन का सामाजिक बहिष्कार कर दिया। किन्तु अलसलाह ने उन तीनों को भी उन के सत्य के कारण क्षमा कर दिया। आप ने उस मस्जिद को भी गिराने का आदेश दिया जिसे मुनाफ़िक़ों ने अपने षड्यंत्र का केंद्र बनाया था।

[2] यह उस अवसर की चर्चा है जब मक्का के मिश्रणवादियों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बधकर देने का निर्णय किया। उसी रात आप मक्का से निकल कर सौर पर्वत नामक गुफा में तीन दिन तक छुपे रहे। फिर मदीना पहुँचे। उस समय गुफा में केवल आदरणीय अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु आप के साथ थे।

अल्लाह हमारे साथ है।[1] तो अल्लाह ने अपनी ओर से शान्ति उतार दी, और आप को ऐसी सेना से समर्थन दिया जिसे तुम ने नहीं देखा। और काफ़िरों की बात नीची कर दी। और अल्लाह की बात ही ऊँची रही। और अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

४१. हलके[2] होकर और बोझल (जैसे हो) निकल पड़ो। और अपने धनों तथा प्राणों से अल्लाह की राह में जिहाद करो। यही तुम्हारे लिये उत्तम है, यदि तुम ज्ञान रखते हो।

४२. (हे नबी!) यदि लाभ समीप और यात्रा सरल होती तो यह (मुनाफ़िक़) अवश्य आप के साथ हो जाते। परन्तु उन को मार्ग दूर लगा, और (अब) अल्लाह की शपथ लेंगे कि यदि हम निकल सकते, तो अवश्य तुम्हारे साथ निकल पड़ते, वह अपना विनाश स्वयं कर रहे हैं। और अल्लाह जानता है कि वे वास्तव में झूठे हैं।

४३. (हे नबी!) अल्लाह आप को क्षमा करे! आप ने उन्हें अनुमति क्यों दे दी? यहाँ तक कि आप के लिये जो सच्चे हैं उजागर हो जाते, और झूठों को जान लेते।

४४. आप से (पीछे रह जाने की) अनुमति वह नहीं माँग रहे हैं जो अल्लाह तथा अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान रखते हों कि अपने धनों तथा प्राणों से जिहाद करेंगे। और अल्लाह आज्ञाकारियों को भली भाँति जानता है।

४५. आप से अनुमति वही माँग रहे हैं जो अल्लाह तथा अन्तिम दिवस (परलोक) पर ईमान नहीं रखते, और अपने संदेह में पड़े हुये हैं।

४६. यदि वे निकलना चाहते तो अवश्य उस के लिये कुछ तय्यारी करते। परन्तु अल्लाह को उन का जाना अप्रिय था, अत: उन्हें आलसी बना दिया। तथा कह दिया गया कि बैठने वालों के साथ बैठे रहो।

४७. और यदि वह तुम में निकलते तो तुम में बिगाड़ ही अधिक करते। और तुम्हारे बीच उपद्रव के लिये दौड़ धूप करते। और तुम में वह भी हैं जो उन की बातों पर ध्यान देते हैं। और अल्लाह अत्याचारियों को भली भाँती जानता है।

---

[1] हदीस में है कि अबू बक्र (ज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा कि मैं गुफा में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ था। और मैं ने मुश्रिकों के पैर देख लिये। और आप से कहा: यदि इन में से कोई अपना पैर उठा दे तो हमें देख लेगा। आप ने कहा: उन दो के बारे में तुम्हारा क्या विचार है जिन का तीसरा अल्लाह है। (बुख़ारी – ४६६३)

[2] संसाधन हो या न हो।

४८. (हे नबी!) वह इस से पहले भी उपद्रव का प्रयास कर चुके हैं, तथा आप के लिये बातों में हेर फेर कर चुके है। यहाँ तक कि सत्य आ गया, और अल्लाह का आदेश प्रभुत्वशाली हो गया, और यह बात उन्हें अप्रिय है।

४९. उन में से कोई ऐसा भी है जो कहता है: आप मुझे अनुमति दे दें। और परीक्षा में न डालें। सुन लो! परीक्षा में तो यह पहले ही से पड़े हुए हैं। और वास्तव में नरक काफ़िरों को घेरी हुयी है।

५०. (हे नबी!) यदि आप का कुछ भला होता है तो उन (द्विधावादियों) को बुरा लगता है। और यदि आप पर कोई आपदा आ पड़े तो कहते हैं: हम ने पहले ही अपनी सावधानी बरत ली थी। और प्रसन्न होकर फिर जाते हैं।

५१. आप कह दें: हमें कदापि कोई आपदा नहीं पहुँचेगी परन्तु वही जो अल्लाह ने हमारे भाग्य में लिख दी है। वही हमारा सहायक है। और अल्लाह ही पर ईमान वालों को निर्भर रहना चाहिये।

५२. आप उन से कह दें कि तुम हमारे बारे में जिस की प्रतीक्षा कर रहे हो वह यही है कि हमें दो[1] भलाईयों में से एक मिल जाये। और हम तुम्हारे बारे में इस की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि अल्लाह तुम्हें अपने पास से यातना देता है या हमारे हाथों से। तो तुम प्रतीक्षा करो। हम भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहे हैं।

५३. आप (मुनाफ़िक़ों से) कह दें कि तुम स्वेच्छा दान करो अथवा अनिच्छा, तुम से कदापि स्वीकार नहीं किया जायेगा। क्यों कि तुम अवज्ञाकारी हो।

५४. और उन के दानों के स्वीकार न किये जाने का कारण इस के सिवाय कुछ नहीं है कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया है। और वह नमाज़ के लिये आलसी होकर आते हैं, तथा दान भी करते हैं तो अनिच्छा करते हैं।

५५. अत: आप को उन के धन तथा उनकी संतान चकित न करे। अल्लाह तो यह चाहता है कि उन्हें इस के द्वारा संसारिक जीवन में यातना दे, और उन के प्राण इस दशा में निकलें कि वह काफ़िर हों।

५६. वह (मुनाफ़िक़) अल्लाह की शपथ लेकर कहते हैं कि वह तुम में से हैं, जब कि वह तुम में से नहीं हैं, परन्तु भयभीत लोग हैं।

[1] दो भलाईयों से अभिप्राय: विजय या अल्लाह की राह में शहीद होना है।

५७. यदि वह कोई शरणगार अथवा गुफा या प्रवेश स्थान पा जायें तो उस की ओर भागते हुये फिर जायेंगे।

५८. (हे नबी!) उन मुनाफ़िक़ों) में से कुछ ज़कात के वितरण में आप पर आक्षेप करते है। फिर यदि उन्हें उस में से कुछ दे दिया जाये तो प्रसन्न हो जाते हैं, और यदि न दिया जाये तो तुरन्त अप्रसन्न हो जाते हैं।

५९. और क्या ही अच्छा होता यदि वह उस से प्रसन्न हो जाते जो उन्हें अल्लाह और उस के रसूल ने दिया है। तथा कहते कि हमारे लिये अल्लाह काफ़ी है। हमें अपने अनुग्रह से (बहुत कुछ) प्रदान करेगा, तथा उस के रसूल भी, हम तो उसी की ओर रुचि रखते हैं।

६०. ज़कात (देय, दान) केवल फ़क़ीरों[१], मिस्कीनों और कार्य–कर्ताओं[२] के लिये, तथा उन के लिये जिन के दिलों को जोड़ा जा रहा है।[३] और दास मुक्ति, तथा ऋणियों (की सहायता) के लिये, और अल्लाह की राह में तथा यात्रियों के लिये है। अल्लाह की ओर से अनिवार्य (देय) है।[४] और अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ है।

---

[१] कुरआन ने यहाँ फ़क़ीर और मिस्कीन के शब्दों का प्रयोग किया है। फ़क़ीर का अर्थ है जिस के पास कुछ न हो। परन्तु मिस्कीन वह है जिस के पास कुछ धन हो मगर उस की आवश्यक्ता की पूर्ति न होती हो।

[२] जो ज़कात के काम में लगे हों।

[३] इस से अभिप्राय वह हैं जो नये नये इस्लाम लाये हों। तो उन के लिये भी ज़कात है। या जो इस्लाम मे रुचि रखते हों, और इस्लाम के सहायक हों।

[४] संसार में कोई धर्म ऐसा नहीं है जिस ने दीन दु:खियों की सहायता और सेवा की प्रेरणा न दी हो। और उसे इबादत (वंदना) का अनिवार्य अंश न कहा हो। परन्तु इस्लाम की यह विशेषता है कि उस ने प्रत्येक धनी मुसलमान पर एक विशेष कर–निर्धारित कर दिया है जो उस पर अपनी पूरी आय का हिसा करके प्रत्येक वर्ष देना अनिवार्य है। फिर उसे इतना महत्त्व दिया है कि कर्मों मे नमाज़ के पश्चात् उसी का स्थान है। और कुरआन में दोनों कर्मों की चर्चा एक साथ करके यह स्पष्ट कर दिया गया है कि किसी समुदाय में इस्लामी जीवन के सब से पहले यही दो लक्षण है। नमाज़ तथा ज़कात, यदि इस्लाम मे ज़कात के नियम का पालन किया जाये तो समाज में कोई गरीब नहीं रह जायेगा। और धनवानों तथा निर्धनों के बीच प्रेम की ऐसी भावना पैदा हो जायेगी कि पुरा समाज सुखी और शान्तिमय बन जायेगा। ब्याज का भी निवारण हो जायेगा। तथा धन कुछ हाथों मे सीमित नहीं रह कर उस का लाभ पूरे समाज को मिलेगा। फिर इस्लाम ने इस का नियम निर्धारित किया है। जिस का पूरा विवरण हदीसों में मिलेगा और यह भी निशिचत कर दिया कि जकात का धन किन को दिया जायेगा, और इस आयत में उन्हीं की चर्चा की गई है, जो यह हैं: १) फ़क़ीर, २) मिस्कीन, ३) ज़कात के कार्यकर्ता, ४) नये मुसलमान, ५) दास–दासी, ६) ऋणी, ७) धर्म के रक्षक, ८) और यात्री। अल्लाह की राह से अभिप्राय वह लोग हैं जो धर्म की रक्षा के लिये काम कर रहे है।

६१. तथा उन(मुनाफ़िक़ों) में से कुछ नबी को दुःख देते हैं, और कहते हैं कि वह बड़े सुनवा[1] हैं। आप कह दें कि वह तुम्हारी भलाई के लिये ऐसे हैं। वह अल्लाह पर ईमान रखते हैं और ईमान वालों की बात का विश्वास करते है, और उन के लिये दया हैं जो तुम में से ईमान लाये हैं। और जो अल्लाह के रसूल को दुःख देते हैं उन के लिये दुःखदायी यातना है।

६२. वह तुम्हारे समक्ष अल्लाह की शपथ लेते हैं, ताकि तुम्हें प्रसन्न कर लें। जब कि अल्लाह और उस के रसूल इस के अधिक योग्य हैं कि उन्हें प्रसन्न करें, यदि वह वास्तव में ईमान वाले है।

६३. क्या वह नहीं जानते कि जो अल्लाह और उस के रसूल का विरोध करता है उस के लिये नरक की अग्नि है? जिस में वह सदावासी होंगे? और यह बहुत बड़ा अपमान है।

६४. मुनाफ़िक़ (द्विधावादी) इस से डरते हैं कि उन[2] पर कोई ऐसी सूरह न उतार दी जाये जो उन्हें इन के दिलों की दशा बता दे। आप कह दें कि हँसी उड़ा लो। निश्चय अल्लाह उसे खोल कर रहेगा जिस से तुम डर रहे हो।

६५. और यदि आप[3] उन से प्रश्न करें तो वे अवश्य कह देंगे कि हम तो यूँ ही बातें तथा उपहास कर रहे थे। आप कहिये कि क्या अल्लाह तथा उस की आयतों और उस के रसूल के ही साथ उपहास कर रहे थे?

६६. तुम बहाने न बनाओ, तुम ने अपने ईमान के पश्चात् कुफ़्र किया है। यदि हम तुम्हारे एक गिरोह को क्षमा कर दें तो भी एक गिरोह को अवश्य यातना देंगे। क्योंकि वही अपराधी हैं।

६७. मुनाफ़िक़ पुरुष तथा स्त्रियाँ सब एक–दूसरे जैसे हैं। वह बुराई का आदेश देते तथा भलाई से रोकते हैं। और अपने हाथ बंद किये रहते[4] हैं। वे अल्लाह को भूल गये, तो अल्लाह ने भी उन्हें भुला[5] दिया। वास्तव में मुनाफ़िक़ ही भ्रष्टाचारी हैं।

---

[1] अर्थात जो कहो मान लेते हैं।

[2] ईमान वालों पर।

[3] तबूक की यात्रा के बीच मुनाफ़िक़ लोग, नबी तथा इस्लाम के विरुद्ध बहुत सी दुःखदायी बात कर रहे थे।

[4] अर्थात दान नहीं करते।

[5] अल्लाह के भुला देने का अर्थ है: उन पर दया न करना।

६८. अल्लाह ने मुनाफ़िक़ पुरुषों तथा स्त्रियों और काफ़िरों को नरक की अग्नि का वचन दिया है। जिस में वे सदावासी होंगे। वही उन को प्रयाप्त है। और अल्लाह ने उन्हें धिक्कार दिया है। और उन्हीं के लिये स्थायी यातना है।

६९. इन की दशा वही हुई जो इन से पहले के लोगों की हुई। वह बल में इन से कड़े और धन तथा संतान में इन से अधिक थे। तो उन्होंने अपने (संसारिक) भाग का आनन्द लिया, अत: तुम भी अपने भाग का आनन्द लो, जैसे तुम से पूर्व के लोगों ने आनन्द लिया। और तुम भी उलझते हो जैसे वह उलक्षते रहे, उन्हीं के कर्म लोक तथा परलोक में व्यर्थ गये, और वही क्षति में हैं।

७०. क्या इन को उन के समाचार नहीं पहुँचे जो इन से पहले थे: नूह की जाति तथा आद और समूद तथा इब्राहीम की जाति के और मद्यन[1] के वासियों के, और उन बस्तियों के जो पलट दी[2] गईं? उन के पास उन के रसूल खुली निशानियाँ लाये, और ऐसा नहीं हो सकता था कि अल्लाह उन पर अत्याचार करता, परन्तु वह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार[3] कर रहे थे।

७१. तथा ईमान वाले पुरुष और स्त्रियाँ एक–दूसरे के सहायक हैं। वे भलाई का आदेश देते तथा बुराई से रोकते हैं, और नमाज़ की स्थापना करते तथा ज़कात देते हैं। और अल्लाह तथा उस के रसूल की आज्ञा का पालन करते हैं। इन्हीं पर अल्लाह दया करेगा, वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ हैं।

७२. अल्लाह ने ईमान वाले पुरुषों तथा ईमान वाली स्त्रियों को ऐसे स्वर्गों का वचन दिया है जिन में नहरें प्रवाहित होंगी। वह उस में सदावासी होंगे, और स्थाई स्वर्गों में पवित्र आवासों का। और अल्लाह की प्रसन्नता इन सब से बड़ा प्रदान होगी, वही बहुत बड़ी सफलता है।

७३. हे नबी! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद करो, और उन पर सख़्ती करो, उन का आवास नरक है। और वह बहुत बुरा स्थान है।

---

[1] मद्यन् के वासी शुऐब अलैहिस्सलाम की जाति थे।

[2] इस से अभिप्राय लूत अलैहिस्सलाम की जाति है। (इब्ने कसीर)

[3] अपने रसूलों को अस्वीकार कर के।

७४. वह अल्लाह की शपथ लेते हैं कि उन्हों ने यह[१] बात नहीं कही। जब कि वास्तव में उन्होंने कुफ़्र की बात कही[२] है। और इस्लाम ले आने के पश्चात काफ़िर हो गये हैं। और उन्होंने ऐसी बात का निश्चय किया था जो वे कर नहीं सके। और उन को यही बात बुरी लगी कि अल्लाह और उस के रसूल ने उन को अपने अनुग्रह से धनी[३] कर दिया। अब यदि वह क्षमायाचना कर लें तो उन के लिये उत्तम है। और यदि विमुख हों तो अल्लाह उन्हें दुःखदायी यातना लोक तथा प्रलोक में देगा। और उन का धरती में कोई संरक्षक और सहायक न होगा।

७५. उनमें से कुछ ने अल्लाह को वचन दिया था कि यदि वह अपनी दया से हमें (धन–धान्य) प्रदान करेगा तो हम अवश्य दान करेंगे, और सुकर्मियों में हो जायेंगे।

७६. फिर जब अल्लाह ने अपनी दया से उन्हें प्रदान कर दिया तो उस से कंजूसी कर गये, और वचन से विमुख होकर फिर गये।

७७. तो इस का परिणाम यह हुआ कि उन के दिलों में द्विधा का रोग उस दिन तक के लिये हो गया कि यह अल्लाह से मिलें। क्योंकि उन्होंने उस वचन को भंग कर दिया जो अल्लाह से किया था, और इस लिये कि वे झूठ बोलते रहे।

७८. क्या उन्हें इस का ज्ञान नहीं हुआ कि अल्लाह उन के भेद की बातें तथा सुनगुन को भी जानता है? और वह सभी भेदों का अति ज्ञानी हैं।

७९. जिन की दशा यह है कि वह ईमान वालों मे से स्वेच्छा दान करने वालों पर दानों के विषय में आक्षेप करते हैं। तथा उन को जो अपने परिश्रम ही से कुछ पाते (और दान करते हैं) यह (मुनाफ़िक़) उन से उपहास करते हैं, अल्लाह उन से उपहास करता[४] है। और उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।

---

[१] अर्तात ऐसी बात जो रसूल और मुसलमानों को बुरी लगे।

[२] यह उन बातों की ओर संकेत है जो द्विधावादियों ने तबूक की मुहिम के समय की थी। उन की ऐसी बातों के विवरण के लिये।(देखियेः सूरह मुनाफ़िकून, आयत : ७–८)

[३] नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मदीना आने से पहले मदीने का कोई महत्त्व न था। आर्थिक दशा भी अच्छी नहीं थी। जो कुछ था यहूदियों के अधिकार में था। वह ब्याज भक्षी थे, शराब का व्यापार करते थे, और अस्त्र–शस्त्र बनाते थे। आप के आगमन के पश्चात आर्थिक दशा सुधर गई, और व्यवसायिक उन्नति हुई।

[४] अर्थात उन के उपहास का कुफल दे रहा है। अबू मस्ऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते है कि जब हमें दान देने का आदेश दिया गया तो हम कमाने के लिये बोझ लादने लगे ताकि हम दान कर सकें। और अबू अक़ील (रज़ियल्लाहु अन्हु) आधा

८०. (हे नबी!) आप उन के लिये क्षमा याचना करें अथवा न करें, यदि आप उन के लिये सत्तर बार भी क्षमायाचना करें तो भी अल्लाह उन्हें क्षमा नहीं करेगा, इस कारण कि उन्होंने अल्लाह और उस के रसूल के साथ कुफ़्र कर दिया। और अल्लाह अवैज्ञाकारियों को मार्गदर्शन नहीं देता।

८१. वे प्रसन्न[1] हुये जो पीछे कर दिये गये, अपने बैठे रहने के कारण अल्लाह के रसूल के पीछे। और उन्हें बुरा लगा कि जिहाद करें अपने धनों तथा प्राणों से अल्लाह की राह में, और उन्होंने कहा कि गर्मी में न निकलो। आप कह दें कि नरक की अग्नि गर्मी में इस से भीषण है, यदि वह समझते (तो ऐसी बात न करते)।

८२. तो उन्हें चाहिये कि हँसें कम, और रोयें अधिक। जो कुछ वे कर रहे हैं उस का बदला यही है।

८३. तो (हे नबी!) यदि आप को अल्लाह इन (द्विधावादियों) के किसी गिरोह के पास (तबूक से) वापस लाये, और वह आप से (किसी दूसरे युद्ध में) निकलने की अनुमति माँगें तो आप कह दें कि तुम मेरे साथ कभी न निकलोगे, और न मेरे साथ किसी शत्रु से युद्ध कर सकोगे। तुम प्रथम बार बैठे रहने पर प्रसन्न थे तो अब भी पीछे रहने वालों के साथ बैठे रहो।

८४. (हे नबी!) आप उन में से कोई मर जाये तो उस के जनाज़े की नमाज़ कभी न पढ़ें, और न उस की समाधि (क़ब्र) पर खड़े हों। क्योंकि उन्होंने अल्लाह और उस के रसूल के साथ कुफ़्र किया है, और अवज्ञाकारी रहते हुये मरे[2] हैं।

८५. आप को उन के धन तथा उन की संतान चकित न करे, अल्लाह तो चाहता है कि इन के द्वारा उन्हें संसार में यातना दे, और उन के प्राण इस दशा मे निकलें कि वह काफ़िर हों।

साअ (सवा किलो) लाये। और एक व्यक्ति उन से अधिक लेकर आया। तो मुनाफ़िक़ों ने कहा: अल्लाह को उस के (थोड़े से) दान की जरूरत नहीं। और यह दिखावे के लिये (अधिक) लाया है। इसी पर यह आयत उतरी। (बुख़ारी – ४६६८)

[1] अर्थात मुनाफ़िक़ जो मदीना में रह गये और तबूक की यात्रा में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नहीं गये।

[2] सहीह हदीस में है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मुनाफ़िक़ों के मुख्या अब्दुल्लाह बिन उबय्य का जनाज़ा पढ़ा तो यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारी – ४६७२)

८६. तथा जब कोई सूरह उतारी गई कि अल्लाह पर ईमान लाओ, तथा उस के रसूल के साथ जिहाद करो तो आप से उन (मुनाफ़िक़ों) में से समाई वालों ने अनुमति ली। और कहा कि आप हमें छोड़ दें। हम बैठने वालों के साथ रहेंगे।

८७. तथा प्रसन्न हो गये कि स्त्रियों के साथ रहें, और उन के दिलों पर मुहर लगा दी गई। अतः वह नहीं समझते।

८८. परन्तु रसूल ने और जो आप के साथ ईमान लाये, अपने धनों और प्राणों से जिहाद किया, और उन्हीं के लिये भलाईयाँ हैं, और वही सफल होने वाले हैं।

८९. अल्लाह ने उन के लिये ऐसे स्वर्ग तय्यार कर दिये हैं जिन में नहरें प्रवाहित हैं। वह उस में सदावासी होंगे, और यही बड़ी सफलता है।

९०. और देहातियों में से कुछ बहाना करने वाले आये, ताकि आप उन्हें अनुमति दें। तथा वह बैठे रह गये जिन्होंने अल्लाह और उस के रसूल से झूठ बोला। तो इन में से काफ़िरों को दुःखदायी यातना पहुँचेगी।

९१. निर्बलों तथा रोगियों और उन पर जो इतना नहीं पाते कि (तय्यारी के लिये) व्यय कर सकें कोई दोष नहीं, जब अल्लाह और उस के रसूल के भक्त हों, तो उन पर (दोषारोपण) की कोई राह नहीं।

९२. और उन पर जो आप के पास जब आयें कि आप उन के लिये सवारी की व्यवस्था कर दें, और आप कहें कि, मेरे पास इतना नहीं कि तुम्हारे लिये सवारी की व्यवस्था करूँ, तो वह इस दशा में वापिस हुये कि शोक के कारण उन की आँखें आँसू बहा रही[1] थीं।

९३. दोष केवल उन पर है जो आप से अनुमति माँगते हैं जब कि वह धनी हैं। और वे इस से प्रसन्न हो गये कि स्त्रियों के साथ रह जायेंगे। और अल्लाह ने उन के दिलों पर मुहर लगा दी, इस लिये वह कुछ नहीं जानते।

९४. वह तुम से बहाने बनायेंगे, जब तुम उन के पास (तबूक से) वापिस आओगे। आप कह दें कि बहाने न बनाओ, हम तुम्हारा विश्वास नहीं करेंगे। अल्लाह ने हमें

[1] यह विभिन्न क़बीलों के लोग थे। जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुये कि आप हमारे लिये सवारी का प्रबंध कर दें। हम भी आप के साथ तबूक के जिहाद में जायेंगे। परन्तु आप सवारी का कोई प्रबंध न कर सके और वह रोते हुये वापिस हो गये। (इब्ने कसीर)

तुम्हारी दशा बता दी है। तथा भविष्य में भी अल्लाह और उस के रसूल तुम्हारा कर्म देखेंगे। फिर तुम परोक्ष और प्रत्यक्ष के ज्ञानी (अल्लाह) की ओर फेरे जाओगे। फिर वह तुम्हें बता देगा कि तुम क्या कर रहे थे।

९५. वह तुम से अल्लाह की शपथ खायेंगे, जब तुम उन की ओर वापिस आओगे ताकि तुम उन से विमुख हो जाओ। तो तुम उन से विमुख हो जाओ। वास्तव में वह मलीन हैं। और उन का आवास नरक है उस के बदले जो वह करते रहे।

९६. वह तुम्हारे लिये शपथ खायेंगे, ताकि तुम उन से प्रसन्न हो जाओ, तो यदि तुम उन से प्रसन्न हो गये, तब भी अल्लाह उल्लंघनकारी लोगों से प्रसन्न नहीं होगा।

९७. देहाती[१] अविश्वास तथा द्विवधा में अधिक कड़े और अधिक योग्य हैं कि: उस (धर्म) की सीमाओं को न जानें, जिसे अल्लाह ने उतारा है। और अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ है।

९८. देहातियों में कुछ ऐसे भी हैं जो अपने दिये हुए दान को अर्थदण्ड समझते हैं और तुम पर काल चक्र की प्रतीक्षा करते हैं। उन्हीं पर काल कुचक्र आ पड़ा है। और अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

९९. और देहातियों में कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान (विश्वास) रखते हैं, और अपने दिये हुये दान को अल्लाह की समीप्ता तथा रसूल के आशीर्वादों का साधन समझते हैं। सुन लो! यह वास्तव में उन के लिये समीप्य का साधन है। शीघ्र ही अल्लाह उन्हें अपनी दया में प्रवेश देगा, वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

१००.तथा प्रथम अग्रसर मुहाजिरीन[२] और अन्सारी, और जिन लोगों ने सुकर्म के साथ उन का अनुसरण किया अल्लाह उन से प्रसन्न हो गया। और वे उस से प्रसन्न हो गये। तथा उस ने उन के लिये ऐसे स्वर्ग तय्यार किये हैं जिन में नहरें प्रवाहित हैं। वह उस में सदावासी होंगे, वही बड़ी सफलता है।

[१] इस से अभिप्राय मदीना के आस पास के क़बीले हैं।

[२] प्रथ अग्रसर मुहाजिरीन उन को कहा गया है जो मक्का से हिज्रत करके हुदैबिया की संधि सन् ६ से पहले मदीना आ गये थे। और प्रथम अग्रसर अन्सार मदीना के वह मुसलमान हैं जो मुहाजिरीन के सहायक बने और हुदैबिया में उपस्थित थे। (इब्ने कसीर)

१०१.और जो तुम्हारे आस पास ग्रामीण हैहं उन में से कुछ मुनाफ़िक़ (द्विधावादी) हैं। और कुछ मदीना में हैं। जो (अपने) निफ़ाक़ में अभ्यस्त (निपुण) हैं। आप उन्हें नहीं जानते, उन्हें हम जानते हैं। हम उन्हें दो बार[१] यातना देंगे। फिर घोर यातना की ओर फेर दिये जायेंगे।

१०२.और कुछ दूसरे भी हैं जिन्होंने अपने पापों को स्वीकार कर लिया है। उन्होंने कुछ सुकर्म और कुछ दूसरे कुकर्म को मिश्रित कर लिया है। आशा है कि: अल्लाह उन्हें क्षमा कर देगा। वास्तव में अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

१०३.हे नबी! आप उन के धनों से दान लें, और उस के द्वारा उन (के धनों) को पवित्र और उन (के मनों) को शुद्ध करें। और उन्हें आशीर्वाद दें। वास्तव में आप का आशीर्वाद उन के लिये संतोष का कारण है। और अल्लाह सब सुनने जानने वाला है।

१०४.क्या वह नहीं जानते कि अल्लाह ही अपने भक्तों की क्षमा स्वीकार करता तथा (उन के) दानों को अंगीकार करता है? और वास्तव में अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

१०५.और (हे नबी!) उन से कहो कि कर्म करते जाओ। अल्लाह तथा उस के रसूल और ईमान वाले तुम्हारा कर्म देखेंगे। (फिर) उस (अल्लाह) की ओर फेरे जाओगे जो परोक्ष तथा प्रत्यक्ष (छुपे तथा खुले) का ज्ञानी है। तो वह तुम्हें बता देगा जो तुम करते रहे।

१०६.और (इन के सिवाय) कुछ दुसरे भी हैं जो अल्लाह के आदेश के लिये विलंबित[२] हैं। वह उन्हें दण्ड दे, अथवा उन को क्षमा कर दे तो अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ है।

१०७.तथा (द्विधावादियों में) वह भी हैं जिन्हों ने एक मस्जिद[3] बनाई, इस लिये कि (इस्लाम को) हानि पहुँचायें, तथा कुफ़्र करें, और ईमान वालों में विभेद उत्पन्न

---

1 संसार में तथा कब्र में फिर परलोक की घोर यातना होगी। (इब्ने कसीर)

२ अर्थात अपने विषय में अल्लाह के निर्णय की प्रतीक्षा कर रहे है। यह तीन व्यक्ति थे, जिन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तबूक से वापिस आने पर यह कहा कि वह अपने आलस्य के कारण आप का साथ नहीं दे सके। आप ने उन से कहा कि अल्लाह के आदेश की प्रतीक्षा करो। और आगामी आयत ११७ में उन के बारे में आदेश आ रहा है।

३ इस्लामी इतिहास में यह ''मस्जिदे ज़िरार'' के नाम से याद की जाती है।

करें, तथा उस का घात–स्थल बनाने के लिये जो इस से पूर्व अल्लाह और उस के रसूल से युद्ध कर[1] चुका है। और वह अवश्य शपथ लेंगे कि हमारा संकल्प भलाई के सिवा और कुछ न था। तथा अल्लाह साक्ष्य देता है कि वह निश्चय मिथ्यावादी हैं।

१०८.(हे नबी!) आप उस में कभी खड़े न हों। वास्तव मेहं वह मस्जिद[2] जिस का शिलान्यास प्रथम दिन से अल्लाह के भय पर किया गया है वह अधिक योग्य है कि आप उस में (नमाज़ के लिये) खड़े हों। उस में ऐसे लोग हैं, जो स्वच्छता से प्रेम[3] करते हैं, और अल्लाह स्वच्छ रहने वालों से प्रेम करता है।

१०९.तो क्या जिस ने अपने निर्माण का शिलान्यास अल्लाह के भय और प्रसन्नता के आधार पर किया हो, वह उत्तम है, अथवा जिस ने उस का शिलान्यास एक खाई के गिरते हुये किनारे पर किया हो, जो उस के साथ नरक की अग्नि में गिर पड़ा? और अल्लाह अत्याचारियों को मार्गदर्शन नहीं देता।

११०.यह निर्माण जो उन्होंने किया बराबर उन के दिलों में एक संदेह बना रहेगा। परन्तु यह कि उन के दिलों को खण्ड खण्ड कर दिया जाये, और अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ है।

१११.निःसन्देह अल्लाह ने ईमान वालों के प्राणों तथा उन के धनों को इस के बदले ख़रीद लिया है कि उन के लिये स्वर्ग है। वह अल्लाह की राह में युद्ध करते हैं, वह मारते तथा मरते हैं। यह अल्लाह पर सत्य वचन है, तौरात तथा इंजील और कुरआन में। और अल्लाह से बढ़कर अपना वचन पूरा करने वाला कौन हो

जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना आये तो आप के आदेश से ''कुबा'' नाम के स्थान में एक मस्जिद बनाई गई। जो इस्लामी युग की प्रथम मस्जिद है। कुछ मुनाफ़िक़ों ने उसी के पास एक नई मस्जिद का निर्माण किया। और जब आप तबूक के लिये निकल रहे ते तो आप से कहा कि आप एक दिन उस में नमाज़ पढ़ा दें। आप ने कहा कि: यात्रा से वापसी पर देखा जायेगा। और जब वापिस मदीना के समीप पहुँचे तो यह आयत उतरी, और आप के आदेश से उसे ध्वस्त कर दिया गया। (इब्ने कसीर)

[1] इस से अभिप्रेत अबू आमिर राहिब है। जिस ने कुछ लोगों से कहा कि एक मस्जिद बनाओ और जितनी शक्ति और अस्त्र–शस्त्र हो सके तय्यार कर लो। मैं रोम के राजा कैसर के पास जा रहा हूँ। रोमियों की सेना लाऊँगा, और मुहम्मद तथा उस के साथियों को मदीना से निकाल दूँगा। (इब्ने कसीर)

[2] इस मस्जिद से अभिप्राय कुबा की मस्जिद है। तथा मस्जिद नबवी शरीफ़ भी इसी में आती है। (इब्ने कसीर)

[3] अर्थात शुद्धता के लिये जल का प्रयोग करते हैं।

सकता है? अत: अपने इस सौदे पर प्रसन्न हो जाओ जो तुम ने किया। और यही बड़ी सफलता है।

११२.जो क्षमा याचना करने, वंदना करने तथा अल्लाह की स्तुति करने वाले, रोज़ा रखने तथा रुकुअ और सज्दा करने वाले भलाई का आदेश देने और बुराई से रोकने वाले, तथा अल्लाह की सीमाओं की रक्षा करने वाले हैं। और (हे नबी!) आप ऐसे ईमान वालों को शुभ सूचना सुना दें।

११३. किसी नबी तथा[1] उन के लिये जो ईमान लाये हों योग्य नहीं है कि मुश्रिकों (मिश्रणवादियों) के लिये क्षमा की प्रार्थना करें। यद्यपि वह उन के समीपवर्ती हों, जब यह उजागर हो गया कि वास्तव में वह नारकी[2] है।

११४.और इब्राहीम का अपने बाप के लिये क्षमा की प्रार्थना करना केवल इस लिये हुआ कि उसने उस को इस का वचन दिया[3] था। और जब उस के लिये उजागर हो गया कि वह अल्लाह का शत्रु है तो उस से विरक्त हो गया। वास्तव में इब्राहीम बड़ा कोमल हृदय सहनशील था।

११५.अल्लाह ऐसा नहीं है कि किसी जाति को मार्गदर्शन देने के पश्चात कुपथ कर दे, जब तक उन के लिये जिस से बचना चाहिये उस उजागर न कर दे। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक वस्तु को भली भाँति जानने वाला है।

११६.वास्तव में अल्लाह ही है, जिस के अधिकार में आकाशों तथा धरती का राज्य है। वही जीवन देता तथा मारता है। और तुम्हारे लिये उस के सिवा कोई संरक्षक और सहायक नहीं है।

११७.अल्लाह ने नबी तथा मुहाजिरीन और अन्सार पर दया की, जिन्होंने तंगी के समय आप का साथ दिया, इस के पश्चात कि उन में से कुछ लोगों के दिल कुटिल होने

[1] हदीस में है कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चाचा अबू तालिब के निधन का समय आया तो आप उस के पास गये। और कहा: चाचा! ''ला इलाहा इल्लल्लाह'' पढ़ लो। मैं अल्लाह के पास तुम्हारे लिये इस को प्रमाण बना लूँगा। उस समय अबू जह्ल और अब्दुल्लाह बिन अबु उमय्या ने कहा: क्या तुम अब्दुल मुत्तलिब के धर्म से फिर जाओगे? (अत: वह काफ़िर ही मरा।) तब आप ने कहा: मैं तुम्हारे लिये क्षमा की प्रार्थना करता रहूँगा, जब तक उस से रोक न दिया जाऊँ। और इसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारी – ४६७५)

[2] देखिये: सूरह माइदा, आयत: ७२, तथा सूरह निसा, आयत: ४८, ११६।

[3] देखिये : सूरह मुम्तहिना, आयत : ४।

लगे थे। फिर उन पर दया की। निश्चय वह उन के लिये अति करुणामय दयावान् है।

११८.तथा उन तीनों[1] पर जिन का मामला विलंबित कर दिया गया था, जब उन पर धरती अपने विस्तार के होते सिकुड़ गई, और उन पर उन के प्राण संकीर्ण[2] हो गये, और उन्हें विश्वास था कि अल्लाह के सिवा उन के लिये कोई शरणागार नहीं परन्तु उस की ओर। फिर उन पर दया की, ताकि तौबा (क्षमा याचना) कर लें। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् हैं।

११९.हे ईमान वालो! अल्लाह से डरो तथा सच्चों के साथ हो जाओ।

१२०.मदीना के वासियों तथा उन के आस पास के देहातियों के लिये उचित नहीं था कि अल्लाह के रसूल से पीछे रह जायें, और अपने प्राणों को आप के प्राण से प्रिय समझें। यह इस लिये कि उन्हें अल्लाह की राह में कोई प्यास और थकान तथा भूक नहीं पहुँचती है, और न वह किसी ऐसे स्थान को रोंदते हैं जो काफ़िरों को अप्रिय हो, या किसी शत्रु से वह कोई सफलता प्राप्त नहीं करते हैं परन्तु उन के लिये एक सत्कर्म लिख दिया जाता है। वास्तव में अल्लाह सत्कर्मियों का फल व्यर्थ नहीं करता।

१२१.और वह (अल्लाह की राह में) थोड़ा या अधिक जो भी व्यय करते हैं, और कोई घाटी पार करते हैं तो उस को उन के लिये लिख दिया जाता है, ताकि वह उन्हें उस से उत्तम प्रतिफल प्रदान करे जो वह कर रहे थे।

१२२.ईमान वालों के लिये उचित नहीं कि सब एक साथ निकल पड़ें। तो क्यों नहीं प्रत्येक समुदाय से एक गिरोह निकलता, ताकि धर्म में बोध ग्रहण करे। और ताकि अपनी जाति को सावधान करे, जब उन की ओर वापिस आये, संभवतः वह (कुकर्मों से) बचें।[3]

---

[1] यह वही तीन हैं जिन की चर्चा आयत नं. १०६ में आ चुकी है। इन के नाम थे १) काब बिन मालिक, २) हिलाल बिन उमय्या, ३) मुरारह बिन रबीअ। (सहीह बुख़ारी – ४६७७)

[2] क्योंकि उन का सामाजिक बहिष्कार कर दिया गया था।

[3] इस आयत में यह संकेत हैं कि धार्मिक शिक्षा की एक साधारण व्यवस्था होनी चाहिये। और यह नहीं हो सकता कि सब धार्मिक शिक्षा ग्रहण करने के लिये निकल पड़ें। इस के लिये प्रत्येक समुदाय से कुछ लोग जाकर धर्म की शिक्षा ग्रहण करें। फिर दूसरों को धर्म की बातें बतायें। कुरआन के इसी संकेत ने मुसलमानों में शिक्षा ग्रहण करने की ऐसी

१२३.हे ईमान वालो! अपने आस–पास के काफ़िरों से युद्ध करो[1], और चाहिये कि वह तुम में कुटिलता पायें, तथा विश्वास रखो कि अल्लाह आज्ञाकारियों के साथ है।

१२४.और जब (कुरआन की) कोई आयत उतारी जाती है तो इन (द्विधावादियों में) से कुछ कहते हैं कि तुम में से किस का ईमान (विश्वास) इस ने अधिक किया?[2] तो वास्तव में जो ईमान रखते हैं उन का विश्वास अवश्य अधिक कर दिया, और वह इस पर प्रसन्न हो रहे हैं।

१२५.परन्तु जिन के दिलों में (द्विधा) का रोग है तो; उस ने उन की गन्दगी और अधिक बढ़ा दी। और वह काफ़िर रहते हुये ही मर गये।

१२६.क्या वह नहीं देखते कि उन की परीक्षा प्रत्येक वर्ष एक बार अथवा दो बार ली जाती[3] है? फिर भी वह तौबा (क्षमा याचना) नहीं करते, और न शिक्षा ग्रहण करते हैं।

१२७.और जब कोई सूरह उतारी जाये, तो वह एक दूसरे की ओर देखते हैं कि तुम्हें कोई देख तो नहीं रहा है? फिर मुहँ फेर कर चल देते हैं। अल्लाह ने उन के दिलों को (ईमान से)[4] फेर दिया है। इस कारण कि वह समझ बूझ नहीं रखते।

१२८.(हे ईमान वालोः!) तुम्हारे पास तुम्हीं में से अल्लाह का एक रसूल आ गया है। उस को वह बात भारी लगती है जिस से तुम्हें दुःख हो। वह तुम्हारी सफलता की लालसा रखते हैं और ईमान वालों के लिये करुणामय दयावान् है।

१२९.(हे नबी!) फिर भी यदि वह आप से मुँह फेरते हों तो उन से कह दो कि मेरे लिये अल्लाह (का सहारा) बस है। उस के अतिरिक्त कोई हक़ीक़ी पूज्य नहीं। और वही महा सिंहासन का मालिक (स्वामी) है।

*****

भावना उत्पन्न कर दी कि एक शताब्दी के भीतर उन्होंने शिक्षा ग्रहण करने की ऐसी व्यवस्था बना दी जिस का उदाहरण संसार के इतिहास में नहीं मिलता।

[1] जो शत्रु इस्लामी केन्द्र के समीप के क्षेत्रों में हों पहले उन से अपनी रक्षा करो।

[2] अर्थात उपहास करत हैं।

[3] अर्थात उन पर आपदा आती है तथा अपमानित किया जाते हैं !

[4] इस से अभिप्राय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है।

सूरह यूनुस – १०

यह सूरह मक्की है, इस में १०९ आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. अलिफ़, लाम, रा। यह तत्वज्ञता से परिपूर्ण पुस्तक (कुरआन) की आयतें हैं।

२. क्या मानव के लिये आश्चर्य की बात है कि हम ने उन्हीं में से एक पुरुष पर[1] प्रकाशना भेजी है कि आप मानवगण को सावधान कर दें। और जो ईमान लायें उन्हें शुभसूचना सुना दें कि उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास सत्य सम्मान है? तो काफ़िरों ने कह दिया कि यह खुला जादूगार है।

३. वास्तव में तुम्हारा पालनहार वही अल्लाह है जिसने आकाशों तथा धरती को छः दिनों में उत्पन्न किया, फिर अर्श (राज सिंहासन) पर स्थिर हो गया। वही विश्व की व्यवस्था कर रहा है। कोई उस के पास अनुशंसा (सिफ़ारिश) नहीं कर सकता, परन्तु उस की अनुमति के पश्चात। वही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है, अतः उसी की इबादत (वंदना)[2] करो क्या तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते?

४. उसी की ओर तुम सब को लौटना है। यह अल्लाह का सत्य वचन है। वही उत्पत्ति का आरंभ करता है। फिर वही पुनः उत्पन्न करेगा ताकि उन्हें न्याय के साथ प्रतिफल प्रदान[3] करे। जो ईमान लाये और सदाचार किये, और जो काफ़िर हो गये उन के लिये खौलता पेय तथा दुःखदायी यातना है। उस अविश्वास के बदले जो कर रहे थे।

५. उसी ने सूर्य को ज्योति तथा चाँद को प्रकाश बनाया है। और उस (चाँद) के गंतव्य स्थान निर्धारित कर दिये, ताकि तुम वर्षों की गिनती तथा हिसाब का ज्ञान कर लो। इन की उत्पत्ति अल्लाह ने नहीं की है परन्तु सत्य के साथ। वह उन लोगों के लिये निशानियों (लक्षणों) का वर्णन कर रहा है, जो ज्ञान रखते हों।

---

[1] सत्य सम्मान से अभिप्रेत स्वर्ग है। अर्थात उन के सत्कर्मों का फल उन्हें अल्लाह की ओर से मिलेगा।

[2] भावार्थ यह है कि जब विश्व की व्यवस्था वही अकेला कर रहा हैं तो पूज्य भी वही अकेला होना चाहिये।

[3] भावार्थ यह है कि यह दूसरा परलोक का जीवन इस लिये आवश्यक है कि कर्मों के फल का नियम यह चाहता है कि जब एक जीवन कर्म के लिये है तो दूसरा कर्मों के प्रतिफल के लिये होना चाहिये।

६. नि:संदेह रात्रि तथा दिवस के एक दूसरे के पीछे आने में, और जो कुछ अल्लाह ने आकाशों तथा धरती में उत्पन्न किया है उन लोगों के लिये निशानियाँ हैं जो अल्लाह से डरते हों।

७. वास्तव में जो लोग (प्रलय के दिन) हम से मिलने की आशा नहीं रखते और संसारिक जीवन से प्रसन्न हैं तथा उसी से संतुष्ट हैं, तथा जो हमारी निशानियों से असावधान हैं।

८. उन्हीं का आवास नरक है, उस के कारण जो वह करते रहे।

९. वास्तव में जो ईमान लाये और सुकर्म किये उन का पालनहार उन के ईमान के कारण उन्हें (स्वर्ग की) राह दर्शा देगा, जिन में नहरें प्रवाहित होंगी। वह सुख के स्वर्गों में होंगे।

१०. उन की पुकार उस (स्वर्ग) में यह होगी : ''हे अल्लाह! तू पवित्र है।'' और एक दूसरे को उस में उन का आशीर्वाद यह होगा: ''तुम पर शान्ति हो।'' और उन की प्रार्थना का अन्त यह होगा: ''सब प्रशंसा अल्लाह के लिये हैं जो सम्पूर्ण विश्व का पालनहार है।''

११. और यदि अल्लाह लोगों को तुरन्त बुराई का (बदला) दे देता, जैसे वह तुरन्त (संसारिक) भलाई चाहते हैं तो उन का समय कभी पूरा हो चुका होता। अत: जो (मरने के पश्चात)हम से मिलने की आशा नहीं रखते हम उन्हें उन के कुकर्मों में बहकते हुये[1] छोड़ देते हैं।

१२. और जब मानव को कोई दु:ख पहुँचता है, तो हमें लेटे या बैठे या खड़े हो कर पुकारता है। फिर जब हम उस का दु:ख दूर कर देते हैं, तो ऐसे चल देता है जैसे कभी हम को किसी दु:ख के समय पुकारा ही न हो। इसी प्रकार उल्लंघनकारियों के लिये उन के कर्तूत शोभित बना दिये गये हैं।

१३. और तुम से पहले हम कई जातियों को ध्वस्त कर चुके हैं, जब उन्होंने अत्याचार किये, और उन के पास उन के रसूल खुले तर्क (प्रमाण) लाये, परन्तु वह ऐसे नहीं थे कि: ईमान लाते, इसी प्रकार हम अपराधियों को बदला देते हैं।

---

[1] आयत का अर्थ यह है कि अल्लाह के दुष्कर्मों का दण्ड देने का नियम यह नहीं है कि तुरन्त संसार ही में उस का कुफल दे दिया जाये। परन्तु दुष्कर्मी को यहाँ अवसर दिया जाता है अन्यथा उन का समय कभी का पूरा हो चुका होता।

१४. फिर हम नेदरती में उन के पश्चात तुम्हें उन का स्थान दिया, ताकि हम देखें कि: तुम्हारे कर्म कैसे होते हैं?

१५. और (हे नबी!) जब हमारी कुली आयतें उन्हें सुनायी जाती हैं तो जो हम से मिलने की आशा नहीं रखते वे कहते हैं कि इस के सिवा कोई दूसरा कुरआन लाओ, या इस में परिवर्तन कर दो। उन से कह दो कि मेरे बस में यह नहीं है कि अपनी ओर से इस में परिर्वतन कर दूँ। मैं तो बस उस प्रकाशना का अनुयायी हूँ जो मेरी ओर की जाती है। मैं यदि अपने पालनहार की अवैज्ञा करूँ तो मैं एक घोर दिन की यातना से डरता हूँ।

१६. आप कह दें: यदि अल्लाह चाहता तो मैं कुरआन तुम्हें सुनाता ही नहीं, और न वह तुम्हें इस से सूचित करता। फिर मैं इस से पहले तुम्हारे बीच एक आयु व्यतीत कर चुका हूँ। तो क्या तुम समझ बूझ नहीं रखते हो?[१]

१७. फिर उस से अधिक अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगाये, अथवा उसकी आयतों को मिथ्या कहे? वास्तव मे ऐसे अपराधी सफल नहीं होते।

१८. और वै अल्लाह के सिवा उस की इबादत (वंदना) करते हैं जो न तो उन्हें कोई हानि पहुँचा सकते हैं और न लाभ। और कहते हैं कि यह अल्लाह के यहाँ हमारे अभिस्तावक (सिफ़ारशी) हैं आप कहिये: क्या तुम अल्लाह को ऐसी बात की सूचना दे रहे हो जिस के होने को न वह आकाशों में जानता है, और न धरती में? वह पवित्र और उच्च है उस शिर्क (मिश्रणवाद) से जो वे कर रहे हैं।

१९. लोग एक ही धर्म (इस्लाम) पर थे, फिर उन्होंने विभेद[२] किया। और यदि आप के पालनहार की ओर से पहले ही से एक बात निश्चित न[३] होती, तो उन के बीच उस का (संसार ही में) निर्णय कर दिया जाता जिस में वह विभेद कर रहे हैं।

---

[१] आयत का भावार्थ यह है कि यदि तुम एक इसी बात पर विचार करो कि मैं तुम्हारे लिये कोई अपरिचित अज्ञात नहीं हूँ। मैं तुम्हीं में से हूँ। यहीं मक्का में पैदा हुआ, और चालीस वर्ष की आयु तुम्हारे बीच व्यवतीत की। मेरा पूरा जीवन चरित्र तुम्हारे सामने है, इस अवधि में तुम ने सत्य और अमानत के विरुद्ध मुझ में कोई बात नहीं देखी तो अब चालीस वर्ष के पश्चात यह कैसे हो सकता है कि अल्लाह पर यह मिथ्या आरोप लगा दूँ कि उस ने यह कुरआन मुझ पर उतारा है? मेरा पवित्र जीवन स्वयं इस बात का प्रमाण है कि यह कुरआन अल्लाह की वाणी है। और मैं उस का नबी हूँ। और उसी की अनुमति से यह कुरआन तुम्हें सुना रहा हूँ।

[२] अत: कुछ शिर्क करने और देवी देवताओं को पूजने लगे। (इब्ने कसीर)

[३] कि संसार में लोगों को कर्म करने का अवसर दिया जाये।

२०. और वह यह भी कहते हैं कि आप पर कोई आयत (चमत्कार) क्यों नहीं उतारा गया?[1] आप कह दें कि परोक्ष की बातें तो अल्लाह के अधिकार में है। अतः तुम प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहा हूँ।[2]

२१. और जब हम, लोगों को दुःख पहुँचने के पश्चात दया (का स्वाद) चखाते हैं तो तुरन्त हमारी आयतों (निशानियों) के बारे में षड़्यंत्र रचने लगते हैं। आप कह दें कि अल्लाह का उपाय अधिक तीव्र है। हमारे फ़रिश्ते तुम्हारी चालें लिख रहे हैं।

२२. वही है जो जल तथा थल में तुम्हें फिराता है। फिर जब तुम नौकाओं में होते हो, और उन को लेकर अनुकूल वायु के कारण चलती हैं, और वह उस से प्रसन्न होते हैं, तो अकस्मात् प्रचन्ड वायु का झोंका आ जाता है, और प्रत्येक स्थान से उन्हें लहरें मारने लगती हैं, और समझते हैं कि उन्हें घेर लिया गया तो अल्लाह से उस के लिये धर्म का विशुद्ध कर के[3] प्रार्थना करते हैं कि यदि तू ने हमें बचा लिया तो हम अवश्य तेरे कृतज्ञ बन कर रहेंगे।

२३. फिर जब उन्हें बचा लेता है तो अकस्मात धरती में अवैध विद्रोह करने लगते हैं। हे लोगो! तुम्हारा विद्रोह तुम्हारे ही विरुद्ध पड़ रहा है। यह संसारिक जीवन के कुछ लाभ[4] हैं। फिर तुम्हें हमारी ओर फिर कर आना है। तब हम तुम्हें बता देंगे कि तुम क्या कर रहे थे?

२४. संसारिक जीवन तो ऐसा ही है जैसे हम ने आकाश से जल बरसाया, जिस से धरती की उपज घनी हो गयी, जिस में से लोग और पशु खाते हैं। फिर जब वह समय आया कि धरती ने अपनी शोभा पूरी कर ली और सुसज्जित हो गयी, और उस के स्वामी ने समझा कि वह उस से लाभांवित होने पर सामर्थ्य रखते हैं, तो अकस्मात् रात या दिन में हमारा आदेश आ गया, और हम ने उसे इस प्रकार

---

[1] जैसे कि सफ़ा पर्वत सोने का हो जाता। अथवा मक्का के पर्वतों के स्थान पर उद्यान हो जाते। (इब्ने कसीर)

[2] अर्थात अल्लाह के आदेश की।

[3] और सब देवी देवताओं को भूल जाते हैं।

[4] भावार्थ यह है कि जब तक संसारिक जीवन के संसाधन का कोई सहारा होता है तो लोग अल्लाह को भूले रहते हैं। और जब यह सहारा नहीं होता तो उन का अन्तर्ज्ञान उभरता है। और वह अल्लाह को पुकारने लगते हैं। और जब दुःख दूर हो जाता है तो फिर वही दशा हो जाती है। इस्लाम यह शिक्षा देता है कि सदा सुख दुःख में उसे याद करते रहो।

काट कर रख दिया, जैसे कि कल वहाँ थी[1] ही नहीं। इसी प्रकार हम आयतों का वर्णन खोल–खोलकर, करते हैं, ताकि लोग मनन चिंतन करें।

२५. और अल्लाह तुम्हें शान्ति के घर (स्वर्ग) की ओर बुला रहा है। और जिसे चाहता है सीधी डगर दर्शा देता है।

२६. जिन लोगों ने भलाई की, उन के लिये भलाई ही होगी, और उस से भी अधिक।[2]

२७. और जिन लोगों ने बुराईयाँ कीं तो बुराई का बदला उसी जैसा होगा। तथा उन पर अपमान छाया होगा। और उन के लिये अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा। उन के मुखों पर ऐसे कालिमा छायी होगी जैसे अंधेरी रात के काले पर्दे उन पर पड़े हुये हों। वही नारकी होंगे। और वही उस में सदावासी होंगे।

२८. जिस दिन हम उन सब को एकत्र करेंगे फिर उन से कहेंगे जिन्होंने साझी बनाया है, कि अपने स्थान पर रुके रहो, और तुम्हारे (बनाये हुये) साझी भी। फिर हम उन के बीच अलगाव कर देंगे। और उन के साझी कहेंगेः तुम तो हमारी वंदना ही नहीं करते थे।

२९. हमारे और तुम्हारे बीच अल्लाह का साक्ष्य बस है, कि तुम्हारी वंदना से हम असूचित थे।

३०. वहीं प्रत्येक व्यक्ति उसे परख लेगा जो पहले किया है। और वह (निर्णय के लिये) अपने सत्य स्वामी की ओर फे दिये जायेंगे। और जो मिथ्या बातें बना रहे थे उन से खो जायेंगी।

३१. (हे नबी!) उन से पूछें कि तुम्हें कौन आकाश तथा धरती[3] से जीविका प्रदान करता है? सुनने तथा देखने की शक्तियाँ किस के; अधिकार में हैं? कौन निर्जीव से जीव को तथा जीव को निर्जीव से निकालता है? वह कौन है जो विश्व की व्यवस्था कर रहा है? वह कह देंगे कि अल्लाह।[4] फिर कहो कि क्या तुम (सत्य के विरोध से) डरते नहीं हो?

---

[1] अर्थात संसारिक आनंद और सुख वर्षा की उपज के समान सामयिक और अस्थायी है।

[2] अधिकांश भाष्यकारों ने ''अधिक'' का भावार्थः ''आख़िरत में अल्लाह का दर्शन'' और ''भलाई'' काः ''स्वर्ग'' किया है। (इब्ने कसीर)

[3] आकाश की वर्षा तथा धरती की उपस से।

[4] जब यह स्वीकार करते हो कि विश्व की व्यवस्था अल्लाह ही कर रहा है तो पूजा अराधना भी उसी की होनी चाहिये।

३२. तो वही अल्लाह तुम्हारा सत्य पालनहार है, फिर सत्य के पश्चात कुपथ (असत्य) के सिवा क्या रह गया? फिर तुम किधर फिराये जा रहे हो?

३३. इस प्रकार आप के पालनहार की बातें अवज्ञाकारियों पर सत्य सिद्ध हो गयीं कि वह ईमान नहीं लायेंगे।

३४. आप उन से कहिये: क्या तुम्हारे साझियों में कोई है, जो उत्पत्ति का आरंभ करता फिर उसे दुहराता हो? आप कह दें अल्लाह उत्पत्ति का आरंभ करता, फिर उसे दुहराता है। फिर तुम कहाँ बहके जा रहे हो?

३५. आप कहिये: क्या तुम्हारे साझियों में कोई संमार्ग दर्शाता है? तो क्या जो संमार्ग दर्शाता हो वह अधिक योग्य है कि उस का अनुपालन किया जाये अथवा वह जो स्वयं संमार्ग पर न हो, परन्तु यह कि उसे संमार्ग दर्शा दिया जाये? तो तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसा निर्णय कर रहे हो?

३६. और उन (मिश्रणवादियों) में अधिकांश अनुमान का अनुसरण करते है। और सत्य को जानने में अनुमान कुछ काम नहीं दे सकता। वास्तवम में अल्लाह जो कुछ वे कर रहे हैं भली भाँति जानता है।

३७. और यह कुरआन ऐसा नहीं है कि अल्लाह के सिवा अपने मन से बना लिया जाये, परन्तु उन की पुष्टि है जो इस से पहले (पुस्तकें) उतरी हैं। और यह पुस्तक (कुरआन) विवरण[१] है। इस में कोइ संदेह नहीं कि यह सम्पूर्ण विश्व के पालनहार की ओर से है।

३८. क्या वह कहते हैं कि इस (कुरआन) को उस (नबी) ने स्वयं बना लिया है? आप कह दें: इसी के समान एक सूरह ला दो। और अल्लाह के सिवा जिसे (अपनी सहायता के लिये) बुला सकते हो बुला लो, यदि तुम सत्यवादी हो।

३९. बल्कि उन्होंने उस (कुरआन) को झुठला दिया जो उन के ज्ञान के घेरे में नहीं[२] आया, और न उस का परिणाम उन के सामने आया। इसी प्रकार उन्होंने भी झुठलाया था, जो इन से पहले थे। तो देखो कि अत्याचारियों का क्या परिणाम हुआ?

---

[१] अर्थात अल्लाह की पुस्तकों में जो शिक्षा दी गयी है उस का कुरआन में सविस्तार वर्णन है।

[२] अर्थात बिना सोचे समझे इसे झुठलाने के लिये तैयार हो गये।

४०. और उन में से कुछ ऐसे हैं जो इस (कुरआन) पर ईमान लाते हैं और कुछ ईमान नहीं लाते। और आप का पालनहार उपद्रवकारियों को अधिक जानता है।

४१. और यदि वे आप को झुठलायें तो आप कह दें: मेरे लिये मेरा कर्म है और तुम्हारे लिये तुम्हारा कर्म। तुम उस से निर्दोष हो जो मैं करता हूँ। तथा मैं उस से निर्दोष हूँ जो तुम करते हो।

४२. इन में से कुछ लोग आप की ओर कान लगाते है। तो क्या आप बहरों[1] को सुना सकते हैं, यद्यपि वह कुछ भी न समझ सकते हों?

४३. और उन में से कुछ ऐसे हैं जो आपकी ओर तकते हैं तो क्या आप अन्धे को राह दिखा देंगे? यद्यपि उन्हें कुछ सूझता न हो?

४४. वास्तव में अल्लाह, लोगों पर अत्याचार नहीं करता, परन्तु लोग स्वयं अपने ऊपर अत्याचार करते हैं।[2]

४५. और जिस दिन अल्लाह उन्हें एकत्र करेगा तो उन्हें लगेगा कि वह (संसार में) दिन के केवल कुछ क्षण रहे। वह आप में परिचित होंगे। वास्तव में वह क्षतिग्रस्त हो गये जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठला दिया, और वह सीधी डगर पाने वाले न हुये।

४६. और यदि हम आप को उस (यातना) में से कुछ दिखा दें जिस का वचन उन्हें दे रहे हैं अथवा (उस से पहले) आप का समय पूरा कर दें तो भी उन्हें हमारे पास ही फिर कर आना है। फिर अल्लाह उस पर साक्षी है जो` कर रहे हैं।

४७. और प्रत्येक समुदाय के लिये एक रसूल है। फिर जब उन का रसूल आ गया तो (हमारा नियम यह है कि) उन के बीच न्याय के साथ निर्णय कर दिया जाता है, और उन पर अत्याचार नहीं किया जाता।

४८. और वह कहते हैं कि हम पर यातना का वचन कब पूरा होगा, यदि तुम सत्यवादी हो?

---

[1] अर्थात जो दिल और अन्तर्ज्ञान के बहरे है।

[2] भावार्थ यह है कि लोग अल्लाह की दी हुयी समझ–बूझ से काम न ले कर सत्य और वास्तविक्ता के ज्ञान की अर्हता खो देते हैं।

४९. आप कह दे कि मैं स्वयं अपने लाभ तथा हानि का अधिकार नहीं रखता। वही होता है जो अल्लाह चाहता है। प्रत्येक समुदाय का एक समय निर्धारित है। तथा जब उन का समय आ जायेगा तो न एक क्षण पीछे रह सकते हैं, और न आगे बढ़ सकते हैं।

५०. (हे नबी!) कह दो कि तुम बताओ यदि अल्लाह की यातना तुम पर रात अथवा दिन में आ जाये (तो तुम क्या कर सकते हो?) ऐसी क्या बात है कि अपराधि उस के लिये जल्दी मचा रहे हैं?

५१. क्या जब वह आ जायेगी उस समय तुम उसे मानोगे? अब जब कि उस के शीघ्र आने की माँग कर रहे थे।

५२. फिर अत्याचारियों से कहा जायेगा सदा की यातना चखो। तुम्हें उसी का प्रतिकार (बदला) दिया जा रहा है जो तुम (संसार में) कमा रहे थे।

५३. और वह आप से पूछते हैं कि क्या यह बात वास्तव में सत्य है? आप कह दें कि मेरे पालनहार की शपथ! यह वास्तव में सत्य है। और तुम अल्लाह को विवश नहीं कर सकते।

५४. और यदि प्रत्येक व्यक्ति के पास जिस ने अत्याचार किया है, जो कुछ धरती में है सब आ जाये, तो वह अवश्य उसे अर्थदण्ड के रूप में देने को तय्यार हो जायेगा। और जब वह उस यातना को देखेंगे तो दिल ही दिल में पछतायेंगे। और उन के बीच न्याय के साथ निर्णय कर दिया जायेगा, और उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

५५. सुनो! अल्लाह ही का है वह जो कुछ आकाशों तथा धरती में है। सुनो! उस का वचन सत्य है। परन्तु अधिक्तर लोग इसे नहीं जानते।

५६. वही जीवन देता तथा वही मारता है। और उसी की ओर तुम सब लौटाये जाओगे।[1]

५७. हे लोगो![1] तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से शिक्षा (कुरआन) आ गयी है, जो अन्तरात्मा के सब रोगों का उपचार (स्वास्थ्य कर) तथा मार्गदर्शन और दया है उन के लिये जो विश्वास रखते हों।

[1] प्रलय के दिन अपने कर्मों का पल भोगने के लिये।

५८. आप कह दें कि यह (कुरआन) अल्लाह का अनुग्रह और उस की दया है। अतः लोगों को इस से प्रसन्न हो जाना चाहिये। और यह उस (धन–धान्य) से उत्तम है जो लोग एकत्र कर रहे हैं।

५९. (हे नबी!) उन से कहो: क्या तुम ने इस पर विचार किया है कि अल्लाह ने तुम्हारे लिये जो जीविका उतारी है, तुम ने उस में से कुछ को हराम (अवैध) बना दिया है, और कुछ को हलाल (वैध)। तो कहो कि क्या अल्लाह ने तुम को इस की अनुमति दी है? अथवा तुम अल्लाह पर आरोप लगा रहे[२] हो?

६०. और जो लोग अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगा रहे हैं उन्होंने प्रलय के दिन को क्या समझ रखा है? वास्तव में अल्लाह लोगों के लिये दयाशील[३] है। परन्तु उन में अधिक्तर कृतज्ञ नहीं होते।

६१. (हे नबी!) आप जिस दशा में हो, और कुरआन में से जो कुछ भी सुनाते हों, तथा तुम लोग भी कोई कर्म नहीं करते हो, परन्तु हम तुम्हें देखते रहते हैं, जब तुम उसे करते हो। और आप के पालनहार से धरती में कण भर भी कोई चीज़ छुपी नहीं रहती और न आकाश में न इस से कोई छोटी न बड़ी, परन्तु वह खुली पुस्तक में अंकित है।

६२. सुनो! जो अल्लाह के मित्र हैं, न उन्हें कोई भय होगा, और न वह उदासीन होंगे।

६३. जो ईमान लाये, तथा अल्लाह से डरते रहे।

६४. उन्हीं के लिये संसारिक जीवन में शुभ सूचना है, तथा परलोक में भी। अल्लाह की बातों में कोई परिवर्तन नहीं, यही बड़ी सफलता है।

६५. तथा (हे नबी!) आप को उन (काफ़िरों) की बात उदासीन न करे। वास्तव में सभी प्रभुत्व अल्लाह ही के लिये है। और वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

---

[१] इस में कुरआन के चार गुणों का वर्णन किया गया है:

१. यह सत्य शिक्षा है। २. द्विधा के सभी रोगों के लिये स्वास्थ्यकर है।

३. संमार्ग दर्शाता है। ४. ईमान वालों के लिये दया का उपदेश है।

[२] आयत का भावार्थ यह है कि किसी चीज़ को वर्जित करने का अधिकार केवल अल्लाह को है। अपने विचार से किसी चीज़ को अवैध करना अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगाना है।

[३] इसी लिये प्रलय तक का अवसर दिया है।

६६. सुनो! वास्तव में अल्लाह ही के अधिकार में है जो आकाशों में तथा दरती में है। और जो अल्लाह के सिवा दुसरे साझियों को पुकारते हैं वह केवल अनुमान के पीछे लगे हुये हैं। और वे केवल आँकलन कर रहे हैं।

६७. वही है जिस ने तुम्हारे लिये रात बनाई है ताकि उस में सुख पाओ। और दिन बनाया, ताकि उस के प्रकाश में देखो। नि:संदेह इस में (अल्लाह के व्यवस्थापक होने की) उन के लिये बड़ी निशानियाँ हैं जो (सत्य को) सुनते हों।

६८. और उन्हों ने कह दिया कि अल्लाह ने कोई पुत्र बना लिया है। वह पवित्र है! वह निस्पृह है। वही स्वामी है उस का जो आकाशों में तथा धरती में है। क्या तुम्हारे पास इस का कोई प्रमाण है? क्या तुम अल्लाह पर ऐसी बात कह रहे हो जिस का तुम ज्ञान नहीं रखते?

६९. (हे नबी!) आप कह दें: जो अल्लाह पर मिथ्या बातें बनाते हैं वह सफल नहीं होंगे।

७०. उन के लिये संसार ही का कुछ आनन्द है, फिर हमारी ओर ही आना है। फिर हम उन्हें उन के कुफ़्र (अविश्वास) करते रहने के कारण घोर यातना चखायेंगे।

७१. आप उन्हें नूह की कथा सुनाये, जब उस ने अपनी जाति से कहा: हे मेरी जाति! यदि मेरा तुम्हारे बीच रहना और तुम्हें अल्लाह की आयतों (निशानियों) द्वारा मेरा शिक्षा देना तुम पर भारी हो तो अल्लाह ही पर मैंने भरोसा किया है। तुम मेरे विरुद्ध जो करना चाहो उसे निश्चित कर लो और अपने साझियों (देवी–देवताओं) को भी बुला लो। फिर तुम्हारी योजना तुम पर तनिक भी छुपी न रह जाये, फिर जो करना हो उसे कर जाओ और मुझे कोई अवसर न दो।

७२. फिर यदि तुम ने मुख फेरा तो मैंने तुम से किसी पारिश्रमिक की माँग नहीं की है। मेरा पारिश्रमिक तो अल्लाह के सिवा किसी के पास नहीं है। और मुझे आदेश दिया गया है कि आज्ञाकारियों में रहूँ।

७३. फिर भी उन्होंने उसे झुठला दिया, तो हम ने उसे और जो नाव में उस के साथ (सवार) थे बचा लिया और उन्हीं को उन का उत्तराधिकारी बना दिया। और उन्हें जलमग्न कर दिया जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठला दिया। अत: देख लो कि उन का परिणाम क्या हुआ जो सचेत किये गये थे।

७४. फिर हम ने उस (नूह) के पश्चात बहुत से रसूलों को उन की जाति के पास भेजा, वह उन के पास खुली निशानियाँ (तर्क) लाये तो वह ऐसे न थे कि जिसे पहले झुठला दिया था उस पर ईमान लाते, इसी प्रकार हम उल्लंघनकारियों के दिलों पर मुहर[1] लगा देते हैं।

७५. फिर हम ने उन के पश्चात मूसा और हारून को फ़िरऔन और उस के प्रमुखों के पास भेजा। तो उन्होंने अभिमान किया। और वह थे ही अपराधीगण।

७६. फिर जब उन के पास हमारी ओर से सत्य आ गया तो उन्होंने कह दिया कि वास्तव में यह तो खुला जादू है।

७७. मूसा ने कहा: क्या तुम सत्य को जब तुम्हारे पास आ गया तो जादू कहने लगे? क्या यह जादू है? जब कि जादूगर (तांत्रिक) सफल नहीं होते।

७८. उन्होंने कहा: क्या तुम इसलिये हमारे पास आये हो ताकि हमें उस (प्रथा) से फेर दो, जिस पर हम ने अपने पूर्वजों को पाया है। और देश (मिस्र) में तुम दोनों की महिमा स्थापित हो जाये? हम तुम दोनों का विश्वास करने वाले नहीं है।

७९. और फ़िरऔन ने कहा: (देश में) जितने दक्ष जादूगर हैं उन्हें मेरे पास लाओ।

८०. फिर जब जादूगर आ गये तो मूसा ने कहा: जो कुछ तुम्हें फेंकना है उसे फेंक दो।

८१. और जब उन्होंने फेंक दिया तो मूसा ने कहा: तुम जो कुछ लाये हो वह जादू है। निश्चय अल्लाह उसे अभिव्यर्थ कर देगा। वास्तव में अल्लाह उपद्रवकारियों के कर्म को नहीं सुधारता।

८२. और अल्लाह सत्य को अपने आदेशों के अनुसार सत्य कर दिखायेगा। यद्यपि अपराधियों को बुरा लगे।

८३. तो मूसा पर उस की जाति के कुछ नवयुवकों के सिवा कोई ईमान नहीं लाया। फ़िरऔन और अपने प्रमुखों के भय से कि उन्हें किसी यातना में न डाल दे। और वास्तव में फ़िरऔन का धरती में बड़ा प्रभुत्व था, और वह वस्तुत: उल्लंघनकारियों में था।

८४. और मूसा ने (अपनी जाति बनी इस्राईल से) कहा: हे मेरी जाति! जब तुम अल्लाह पर ईमान लाये हो तो उसी पर निर्भर रहो, यदि तुम आज्ञाकारी हो।

---

[1] अर्थात् जो बिना सोचे समझे सत्य को नकार देते हैं उन के सत्य को स्वीकार करने की स्वभाविक योग्यता खो जाती है।

८५. तो उन्होंने कहा: हम ने अल्लाह ही पर भरोसा किया है। हे हमारे पालनहार! हमें अत्याचारियों के लिये परीक्षा का साधन न बना।

८६. और अपनी दया से हमें काफ़िरों से बचा ले।

८७. और हम ने मूसा तथा उस के भाई (हारून) की ओर प्रकाशना भेजी, कि अपनी जाति के लिये मिस्र में कुछ घर बनाओ। और अपने घरों को क़िब्ला[1] बना लो। तथा नमाज़ की स्थापना करो। और ईमान वालों को शुभ सूचना दो।

८८. और मूसा ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! तू ने फ़िरऔन और उस के प्रमुखों को संसारिक जीवन में शोभा तथा धन-धान्य प्रादन किया है। तो मेरे पालनहार! क्या इस लिये कि वह तेरी राह से विचलित करते रहें? हे मेरे पालनहार! उन के धनों को निरस्त कर दे, और उन के दिल कड़े कर दे कि वह ईमान न लायें जब तक दु:खदायी यातना न देख लें।

८९. अल्लाह ने कहा: तुम दोनों की प्रार्थना स्वीकार कर ली गयी। तो तुम दोनों अडिग रहो, और उन की राह का अनुसरण न करों जो ज्ञान नहीं रखते।

९०. और हम ने बनी इस्राईल को सागर पार करा दिया तो फ़िरऔन और उस की सेना ने उन का पीछा किया, अत्याचार तथा शत्रुता के ध्येय से। यहाँ तक कि जब वह जलमग्न होने लगा तो बोला: मैं ईमान ले आया, और मान लिया कि उस के सिवा कोई पूज्य नहीं है जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाये हैं, और मैं आज्ञाकारियों में हूँ।

९१. (अल्लाह ने कहा) अब? जब कि इस से पूर्व अवैज्ञा करता रहा, और उपद्रवियों में से था?

९२. तो आज हम तेरे शव को बचा लेंगे ताकि तू उन के लिये जो तेरे पश्चात होंगे, एक (शिक्षाप्रद) निशानी[2] बने। और वास्तव में बहुत से लोग हमारी निशानियों से अचेत रहते हैं।

---

[1] ''क़िबला'' उस दिशा को कहा जाता है जिस की ओर मुख कर के नमाज़ पढ़ी जाती है।

[2] बताया जाता है कि: १८९८ ई. में इस फ़िरऔन का मम्मी किया हुआ शव मिल गया है जो क़ाहिरा के विचित्रालय में रखा हुआ है।

९३. और हम ने बनी इस्राईल को अच्छा निवास स्थान[1] दिया, और स्वच्छ जीविका प्रदान की। फिर उन्होंने परस्पर विभेद उस समय किया जब उन के पास ज्ञान आ गया। निश्चय अल्लाह उन के बीच प्रलय के दिन उस का निर्णय कर देगा जिस में वह विभेद कर रहे थे।

९४. फिर यदि आप को उस में कुछ संदेह[2] हो, जो हम ने आप की ओर उतारा है तो उन से पूछ लें जो आप के पहले से पुस्तक (तौरात) पढ़ते हैं। आप के पास आप के पालनहार की ओर से सत्य आ गया है। अत: आप कदापि संदेह करने वालों में न हों।

९५. और आप कदापि उन में से न हों जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठला दिया, अन्यथा क्षतिग्रस्तों में हो जायेंगे।

९६. (हे नबी!) जिन पर आप के पालनहार का आदेश सिद्ध हो गया है, वह ईमान नहीं लायेंगे।

९७. यद्यपि उन के पास सभी निशानियाँ आ जायें, जब तक दु:खदायी यातना नहीं देख लेंगे।

९८. फिर ऐसा क्यों नहीं हुआ कि कोई बस्ती ईमान[3] लाये फिर उस का ईमान उसे लाभ पहुँचाये, यूनुस की जाति के सिवा, जब वह ईमान लाये तो हम ने उन से संसारिक जीवन में अपमानकारी यातना दूर कर[4] दी, और उन्हें एक निश्चित अवधि तक लाभान्वित होने का अवसर दे दिया।

९९. और यदि आप का पालनहार चाहता तो जो भी धरती में हैं सब ईमान ले आते तो क्या आप लोगों को बाध्य करेंगे यहाँ तक कि ईमान ले आयें?[5]

---

[1] इस से अभिप्राय मिस्र और शाम के नगर हैं।

[2] आयत में संबोधित नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को किया गया है। परन्तु वास्तव में उन को संबोधित किया गया है जिन को कुछ संदेह था। यह अर्बी की एक भाषा शैली है।

[3] अर्थात यातना का लक्षण देखने के पश्चात्।

[4] यूनुस अलैहिस्सलाम का युग ईसा मसीह से आठ सौ वर्ष पहले बताया जाता हैं। भाष्यकारों ने लिखा है कि वह यातना की सूचना देकर अल्लाह की अनुमति के बिना अपने नगर नीनवा से निकल गये। इस लिये जब यातना के लक्षण नागरिकों ने देखे और अल्लाह से क्षमायाचना करने लगे तो उन से यातना दूर कर दी गयी।

[5] इस आयत में यह बताया गया है कि सत्धर्म और ईमान ऐसा विषय है जिस में बल का प्रयोग नहीं किया जा सकता। यह अनहोनी बात है कि किसी को बलपूर्वक मुसलमान मना लिया जाये। (देखिये : सूरह बक़रा:२५६)

१००.किसी प्राणी के लिये यह संभव नहीं है कि अल्लाह की अनुमति[1] के बिना ईमान लाये, और वह मलीनता उन पर डाल देता है, जो बुद्धि का प्रयोग नहीं करते।

१०१.(हे नबी!) उन से कहो कि उसे देखो जो आकाशों तथा धरती में है। और निशानियाँ तथा चेतावनियाँ उन्हें क्या लाभ दे सकती हैं जो ईमान (विश्वास) न रखते हों?

१०२.तो क्या वह इस बात की प्रतीक्षा कर रहे है कि उन पर वैसे ही (बुरे) दिन आये जैसे उन से पहले लोगों पर आ चुके हैं? आप कहिये: फिर तो तुम प्रतीक्षा करो। मैं (भी) तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में हूँ।

१०३.फिर हम अपने रसूलों को और जो ईमान लाये, बचा लेते हैं। इसी प्रकार हम ने अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया है कि ईमान वालों को बचा लेते हैं।

१०४.आप कह दें: हे लोगो! यदि तुम मेरे धर्म के बारे में किसी संदेह में हो तो मैं उस की इबादत (वंदना) कभी नहीं करूँगा जिस की इबादत (वंदना) अल्लाह के सिवा तुम करते हो। परन्तु मैं उस अल्लाह की इबादत (वंदना) करता हूँ जो तुम्हें मौत देता है। और मुझे आदेश दिया गया है कि ईमान वालों में रहूँ।

१०५.और यह कि अपने मुख को धर्म के लिये सीधा रखो एकेश्वरवादी होकर। और कदापि मिश्रणवादियों में न रहो।

१०६.और अल्लाह के सिवा उसे न पुकारो जो आप को न लाभ पहुँचा सकता है आर न हानि पहुँचा सकता है। फिर यदि आप ऐसा करेंगे तो अत्याचारियों में हो जायेंगे।

१०७.और यदि अल्लाह आप को कोई दु:ख पहुँचाना चाहे तो उस के सिवा कोई उसे दूर करने वाला नहीं। और यदि आप को कोई भलाई पहुँचाना चाहे तो कोई उस की भलाई को रोकने वाला नहीं। वह अपनी दया अपने भक्तों में से जिस पर चाहे करता है, तथा वह क्षमाशील दयावान् है।

१०८.(हे नबी!) कह दो कि हे लोगो! तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम्हारे पास सत्य आ गया[2] है। अब जो सीधी डगर अपनाता हो तो उसी के लिये लाभदायक है।

[1] अर्थात उस के स्वभाविक नियम के अनुसार जो सोच–विचार से काम लेता है वही ईमान लाता है।

[2] अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कुरआन लेकर आ गये हैं।

और जो कुपथ हो जाये तो उस का कुपथ उसी के लिये नाशकारी है। और मैं तुम पर अधिकारी नहीं हूँ।[1]

१०९.आप उसी का अनुसरण करें जो आप की ओर प्रकाशना की जा रही है। और धैर्य से काम लें, यहाँ तक कि अल्लाह निर्णय कर दे। और वह सर्वोत्तम निर्णेता है।

*****

[1] अर्थात् मेरा कर्तव्य यही है कि तुम्हें बलपूर्वक सीधी डगर पर कर दूँ।



सूरह हूद – ११



यह सूरह मक्की है, इस में १२३ आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. अलिफ़, लाम, रा। यह पुस्तक है जिस की आयतें सुदृढ़ की गयीं, फिर सविस्तार वर्णित की गयी हैं उस की ओर से जो तत्वज्ञ सर्वसूचित है।

२. कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत (वंदना) न करो। वास्तव में, मैं उस की ओर से तुम को सचेत करने वाला तता शुभसूचना देने वाला हूँ।

३. और यह कि अपने पालनहार से क्षमा याचना करो, फिर उसी की ओर ध्यान मग्न हो जाओ। वह तुम्हें एक निर्धारित अवधि तक अच्छा लाभ पहुँचायेगा। और प्रत्येक श्रेष्ठ को उस की श्रेष्ठता प्रदान करेगा। और यदि तुम मुँह फेरोगे तो मैं तुम पर एक बड़े दिन की यातना से डरता हूँ।

४. अल्लाह ही की ओर तुम सब को पलटना है, और वह जो चाहे कर सकता है।

५. सुनो! यह लोग अपने सीनों को मोड़ते हैं, ताकि उस[1] से छुप जायें सुनो! जिस समय वे अपने कपड़ो से स्वयं को ढ़ाँपते हैं, तब भी वह (अल्लाह) उन के छुपे को जानता है। तथा उन के खुले को भी। वास्तव में वह उसे भी भली भाँति जानने वाला[2] है जो सीनों में (भेद) हैं।

६. और धरती में कोई चलने वाला नहीं है परन्तु उस की जीविका अल्लाह के ऊपर है। तथा वह उस के स्थायी स्थान तथा सौपने के स्थान को जानता है। सब कुछ एक खुली पुस्तक में अंकित है।[3]

७. और वही है, जिस ने आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति छः दिनों में की। उस समय उस का सिंहासन जल पर था, ताकि तुम्हारी परीक्षा ले कि तुम में किस का कर्म सब से उत्तम है। और (हे नबी!) यदि आप उन से कहें कि वास्तव में तुम सभी

---

[1] अर्थात् अल्लाह से।

[2] आयत का भावार्थ यह है कि मिश्रणवादी अपने दिलों में कुफ़्र को यह समझ कर छुपाते हैं कि अल्लाह उसे नहीं जानेगा। जब कि वह उन के खुले छुपे और उन के दिलों के भेदों तक को जानता है।

[3] अर्थात: अल्लाह, प्रत्येक व्यक्ति की जीवन मरण आदि की सब दशाओं से अवगत है।

मरण के पश्चात् पुनः जीवित किये जाओगे तो जो काफ़िर हो गये अवश्य कह देंगे कि यह तो केवल खुला जादू है।

८. और यदि हम उन से यातना में किसी विशेष अवधि तक देर कर दें तो अवश्य कहेंगे कि उसे क्या चीज़ रोक रही है? सुन लो! वह जिस दिन उन पर आ जायेगी तो उन से फिरेगी नहीं। और उन्हें वह (यातना) घेर लेगी जिस की वह हँसी उड़ा रहे थे।

९. और यदि हम मनुष्य को अपनी कुछ दया चखा दें, फिर उस को उस से छीन लें, तो हताश कृतघ्न हो जाता है।

१०. और यदि हम उसे सुख चखा दें, दुःख के पश्चात् जो उसे पहुँचा हो तो अवश्य कहेगा कि मेरा सब दुःख दूर हो गया। वास्तव में वह प्रफुल्ल हो कर अकड़ने लगता है।[1]

११. परन्तु जिन्होंने धैर्य धारण किया और सुकर्म किये, तो उन के लिये क्षमा और बड़ा प्रतिफल है।

१२. तो (हे नबी!) संभवतः आप उस में कुछ को जो आप की ओर प्रकाशना की जा रही है, त्याग देने वाले हैं और इस के कारण आप का दिल सिकुड़ रहा है कि वह कहते हैं कि इस पर कोई कोष क्यों नहीं उतारा गया, या उस के साथ कोई फ़रिश्ता क्यों आया?? आप केवल सचेत करने वाले हैं। और अल्लाह ही प्रत्येक चीज़ पर रक्षक है।

१३. क्या वह कहते हैं कि उस ने इस (कुरआन) को स्वयं बना लिया है? आप कह दें कि इसी के समान दस सूरतें बना लाओ[2], और अल्लाह के सिवा जिसे हो सके बुला लो, यदि तुम लोग सच्चे हो।

१४. फिर यदि वह उत्तर न दें तो विश्वास कर लो कि उसे (कुरआन को) अल्लाह के ज्ञान के साथ ही उतारा गया है। और यह कि कोई वंदनीय (पूज्य) नहीं है, परन्तु वही। तो क्या तुम मुस्लिम होते हो?

---

[1] इस में मनुष्य की स्वभाविक दशा की ओर संकेत है।

[2] अल्लाह का यह चैलन्ज है कि अगर तुम को शंका है कि यह कुरआन मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने स्वयं बना लिया है तो तुम इस जैसी दस सूरतें ही बनाकर दिखा दो। और यह चैलन्ज प्रलय तक के लिये है। और कोई दस तो क्या इस जैसी एक सूरह भी नहीं ला सकता। (देखिये: सूरह यूनुस, आयत : ३८, तथा सूरह बक़रा, आयत : २३

१५. जो व्यक्ति संसारिक जीवन तथा उस की शोभा चाहता हो, हम उन के कर्मों का (फल) उसी में चुका देंगे। और उन के लिये (संसार में) कोई कमी नहीं की जायेगी।

१६. यही वह लोग हैं जिन का परलोक में अग्नि के सिवा कोई भाग नहीं होगा। और उन्होंने जो कुछ किया वह व्यर्थ हो जायेगा, और वे जो कुछ कर रहे है असत्य सिद्ध होने वाला है।

१७. तो क्या जो अपने पालनहार की ओर से स्पष्ट प्रमाण[1] रखता हो, और उस के साथ ही, एक गवाह (साक्षी)[2] भी उस की ओर से आ गया हो, और इस के पहले मूसा की पुस्तक मार्गदर्शक तथा दया बनकर आ चुकी हो, ऐसे लोग तो इस (कुरआन) पर ईमान रखते हैं। और संप्रदायों मे से जो इसे अस्वीकार करेगा तो नरक ही उस का वचन स्थान है। अत: आप इस के बारे में किसी संदेह में न पड़ें। वास्तव में यह आप के पालनहार की ओर से सत्य है। परन्तु अधिक्तर लोग ईमान (विश्वास) नहीं रखते।

१८. और उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर मिथ्यारोपण करे? वही लोग अपने पालनहार के समक्ष लाये जायेंगे, और साक्षी (फ़रिश्ते) कहेंगे कि इन्होंने ही अपने पालनहार पर झूठ बोले। सुनो! अत्याचारियों पर अल्लाह की धिक्कार है।

१९. वही लोग अल्लाह की राह से रोक रहे हैं, और उसे टेढ़ा बनाना चाहते हैं। वही परलोक को न मानने वाले हैं।

२०. वह लोग धरती में विवश करने वाले नहीं थे। और न उन का अल्लाह के सिवा कोई सहायक था। उन के लिये दुगनी यातना होगी। वह न सुन सकते थे, न देख सकते थे।

२१. उन्होंने ही स्वयं अपना विनाश कर लिया, और उन से वह बात खो गयी जो वे बना रहे थे।

---

[1] अर्थात जो अपने अस्तित्व तथा विश्व की रचना और व्यवस्था पर विचार कर के यह जानता था कि इस का स्वामी तथा शासक केवल अल्लाह ही है, उस के अतिरिक्त कोई अन्य नहीं हो सकता।

[2] अर्थात नबी और कुरआन।

२२. यह आवश्यक है कि परलोक में यही सर्वाधिक विनाश में होंगे।
२३. वास्तव में जो ईमान लाये, और सदाचार किये तथा अपने पालनहार की ओर आकर्षित हुये, वही स्वर्गीय हैं। और वह उस में सदैव रहेंगे।
२४. दोनों समुदाय की दशा ऐसी है जैसे एक अन्धा और बहरा हो, और दूसरा देखने और सुनने वाला हो। तो क्या दोनों की दशा समान हो सकती है? क्या तुम (इस अन्तर को) नहीं समझते?[1]
२५. और हम ने नूह को उस की जाति की ओर रसूल बनाकर भेजा। उन्होंने कहा वास्तव में, मैं तुम्हारे लिये खुले रूप से सावधान करने वाला हूँ।
२६. कि इबादत (वंदना) केवल अल्लाह ही की करो। मैं तुम्हारे ऊपर दुःखदायी दिन की यातना से डरता हूँ।
२७. तो उन प्रमुखों ने जो उन की जाति में से काफ़िर हो गये, कहा: हम तो तुझे अपने ही जैसा मानव पुरुष देख रहे हैं। और हम देख रहे हैं कि तुम्हारा अनुसरण केवल वही लोग कर रहे हैं जो हम में नीचे हैं। वह भी बिना सोचे-समझे। और हम अपने ऊपर तुम्हारी कोई प्रधानता भी नहीं देखते, बल्कि हम तुम्हें झूठा समझते हैं।
२८. उस (अथात् नूह) ने कहा: हे मेरी जाति के लोगों! तुम ने इस बात पर विचार किया कि यदि मैं अपने पालनहार की ओर से एक स्पष्ट प्रमाण पर हूँ और मुझे उस ने अपने पास से एक दया[2] प्रदान की हो, फिर वह तुम्हें सुझायी न दे, तो क्या हम उसे तुम से चिपका[3] दें, जब कि तुम उसे नहीं चाहते?
२९. और हे मेरी जाति के लोगों। मैं इस (सत्य के प्रचार) पर तुम से कोई धन नहीं माँगता। मेरा बदला तो अल्लाह के ऊपर है। और मैं उन्हें (अपने यहाँ से) धुतकार नहीं सकता जो ईमान लाये हैं, निश्चय वे अपने पालनहार से मिलने वाले हैं, परन्तु मैं देख रहा हूँ कि तुम जाहिलों जैसी बातें कर रहे हो।

---

[1] कि दोनों का परिणाम एक नहीं हो सकता। एक को नरक में और दूसरे को स्वर्ग में जाना है।(देखिये : सूरह हश्र:२०)

[2] अर्थात नबूवत और मार्गदर्शन।

[3] अर्थात में बलपूर्वक तुम्हें सत्य नहीं मनवा सकता।

३०. और हे मेरी जाति के लोगों! कौन अल्लाह की पकड़ से[1] मुझे बचायेगा, यदि मैं उन को अपने पास से धुतकार दूँ? क्या तुम सोचते नहीं हो?

३१. और मैं तुम से यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के कोषागार (ख़ज़ाने) हैं। और न मैं गुप्त बातों का ज्ञान रखता हूँ। और यह भी नहीं कहता कि मैं फ़रिश्ता हूँ। और यह भी नहीं कहता कि जिन को तुम्हारी आँखे घृणा से देखती हैं अल्लाह उन्हें कोई भलाई नहीं देगा। अल्लाह अधिक जानता है जो कुछ उन के दिलों में है। यदि मैं ऐसा कहूँ तो निश्चय अत्याचारियों में हो जाऊँगा।

३२. उन्होंने कहा: हे नूह! तू ने हम से झगड़ा किया और बहुत झगड़ लिया, अब वह (यातना) ला दो जिस की धमकी हमें देते हो यदि तुम सच्च बोलने वालों में हो।

३३. उसने कहा: उसे तो तुम्हारे पास अल्लाह ही लायेगा, यदि वह चाहेगा। और तुम (उसे) विवश करने वाले नहीं हो।

३४. और मेरी शुभचिन्ता तुम्हें कोई लाभ नहीं पहुँचा सकती यदि मैं तुम्हारा हित चाहूँ जब कि अल्लाह तुम्हें कुपथ करना चाहता हो। और तुम उसी की ओर लोटाये जाओगे।

३५. क्या वह कहते हैं कि उस ने यह बात स्वयं बना ली है? तुम कहो कि यदि मैंने इसे स्वयं बना लिया है, तो मेरा अपराध मुझी पर है, और मैं निर्दोष हूँ उस अपराध से जो तुम कर रहे हो।

३६. और नूह की ओर वह्यी (प्रकाशना) की गयी कि तुम्हारी जाति में से ईमान नहीं लायेंगे, उन के सिवा जो ईमान ला चुके हैं। अत: उस से दु:खी न बनो जो वह कर रहे हैं।

३७. और हमारी आँखों के सामने हमारी वह्यी के अनुसार एक नाव बनाओ, और मुझ से उन के बारे में कुछ[2] न कहना जिन्हों ने अत्याचार किये है। वास्तव में वे डूबने वाले हैं।

---

[1] अर्थात अल्लाह की पकड़ से, जिस के पास ईमान और कर्म की प्रधानता है, धन-धान्य की नहीं।

[2] अर्थात प्रार्थना और सिफ़ारिश न करना।

३८. और वह नाव बनाने लगा, और जब भी उस की जाति के प्रमुख उस के पास से गुज़रते, तो उस की हँसी उड़ाते। नूह ने कहा: यदि तुम हमारी हँसी उड़ाते हो तो हम भी ऐसे ही (एक दिन) तुम्हारी हँसी उड़ायेंगे।

३९. फिर तुम्हें शीघ्र ही ज्ञान हो जायेगा कि किस पर अपमान कारी यातना आयेगी। और स्थाई दु:ख किस पर उतरेगा?

४०. यहाँ तक कि जब हमारा आदेश आ गया, और तन्नूर उबलने लगा तो हम ने (नूह से) कहा: उस में प्रत्येक प्रकार के जीवों के दो जोड़े रख लो। और अपने परिजनों को, उन के सिवा जिन के बारे में पहले बता दिया गया है, और जो ईमान लाये हैं। और उस के साथ थोड़े ही ईमान लाये थे।

४१. और उस (नूह) ने कहा: इस में सवार हो जाओ, अल्लाह के नाम ही से इस का चलना तथा इे रुकना है। वास्तव में मेरा पालनहार बड़ा क्षमाशील दयावान् है।

४२. और वह उन्हें लिये पर्वत जैसी ऊँची लहरों मे चलती रही। और नूह ने अपने पुत्र को पुकारा, जब कि वह उन से अलग था: हे मेरे पुत्र! मेरे साथ सवार हो जा, और काफ़िरों के साथ न रह।

४३. उस ने कहा: मैं किसी पर्वत की ओर शरण ले लूँगा, जो मुझे जल से बचा लेगा। नूह ने कहा: आज अल्लाह के आदेश (यातना) से कोई बचाने वाला नहीं, परन्तु जिस पर वह (अल्लाह) दया कर दे। और दोनों के बीच एक लहर आड़े आ गयी और वह डूबने वालों में हो गया।

४४. और कहा गया: हे धरती! अपना जल निगल जा। और हे आकाश! तू थम जा। और जल उतर गया, और आदेश पूरा कर दिया गया, और नाव ''जूदी''[१] पर ठहर गई। और कहा गया कि अत्याचारियों के लिये (अल्लाह की दया से) दूरी है।

४५. तथा नूह ने अपने पालनहार से प्रार्थना की, और कहा: मेरे पालनहार! मेरा पुत्र मेरे परिजनों मे से है। निश्चय तेरा वचन सत्य है, तथा तू ही सब से अच्छा निर्णय करने वाला है।

---

[१] ''जूदी'' एक पर्वत का नाम है जो कुर्दिस्तान में ''इब्ने उमर'' द्वीप के उत्तर–पूर्व ओर स्थित है। और आज भी जूदी के नाम से ही प्रसिद्ध है।

४६. उस (अल्लाह) ने उत्तर दिया: वह तेरा परिजन नहीं। (क्योंकि) वह कुकर्मी है। अत: मुझ से उस चीज़ का प्रश्न न करो जिस का तुझे कोई ज्ञान नहीं। मैं तुझे बताता हूँ कि अज्ञानों में न हो जा।

४७. नूह ने कहा: मेरे पालनहार! मैं तेरी शरण चाहता हूँ कि मैं तुझ से ऐसी चीज़ की माँग करूँ जिस (की वास्तविक्ता) का मुझे कोई ज्ञान नहीं है।[1] और यदि तू ने मुझे क्षमा नहीं किया और मुझ पर दया न की तो मैं क्षतिग्रस्तों में हो जाऊँगा।

४८. कहा गया कि हे नूह! उतर जा हमारी ओर से रक्षा और सम्पन्नता के साथ अपने ऊपर तथा तेरे साथ के समुदायों के ऊपर। और कुछ समुदाय ऐसे हैं जिन को हम संसारिक जीवन सामग्री प्रदान करेंगे, फिर उन्हें हमारी दु:खदायी यातना पहुँचेगी।

४९. यह ग़ैब की बातें हैं जिन्हें (हे नबी!) हम आप की ओर प्रकाशना (वह्यी) कर रहे हैं। इस से पूर्व न तो आप इन्हें जानते थे और न आप की जाति। अत: आप सहन करें। वास्तव में अच्छा परिणाम आज्ञाकारियों के लिये हैं।

५०. और ''आद'' (जाति) की ओर उन के भाई हूद को भेजा उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगों! अल्लाह की इबादत (वंदना) करो। उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं है। तुम इस के सिवा कुछ नहीं हो कि झूठी बातें घड़ने वाले हो।[2]

५१. हे मेरी जाति के लोगो! मैं तुम से इस पर कोई बदला नहीं चाहता। मेरा पारिश्रमिक बदला उसी (अल्लाह) पर है जिस ने मुझे पैदा किया है। तो क्या तुम (इतनी बात भी) नहीं समझते।[3]

५२. हे मेरी जाति के लोगो! अपने पालनहार से क्षमा माँगो। फिर उस की ओर ध्यानमग्न हो जाओ। वह आकाश से तुम पर धारा प्रवाह वर्षा करेगा। और तुम्हारी शक्ति में अधिक शक्ति प्रदान करेगा। और अपराधी होकर मुँह न फेरो।

---

[1] अर्थात जब नूह (अलैहिस्सलाम) को बता दिया गया कि तुम्हारा पुत्र ईमान वालों में से नहीं है इस लिये वह अल्लाह के अज़ाब से बच नहीं सकता तो नूह तुरन्त अल्लाह से क्षमा माँगने लगा।

[2] अर्थात अल्लाह के सिवा तुम ने जो पूज्य बना रखे हैं वह तुम्हारे मन घड़त पूज्य हैं।

[3] अर्थात यदि तुम समझ रखते तो अवश्य सोचते कि एक व्यक्ति अपने किसी संसारिक स्वार्थ के बिना क्यों हमें रातो दिन उपदेश दे रहा है और सारे दु:ख झेल रहा है। उस के पास कोई ऐसी बात अवश्य होगी जिस के लिये अपनी जान जोखिम में डाल रहा है।

५३. उन्होंने कहा: हे हूद! तुम हमारे पास कोई स्पष्ट (खुला) प्रमाण नहीं लाये। तथा हम तुम्हारी बात के कारण अपने पूज्यों को त्यागने वाले नहीं ह, और न हम तुम्हारा विश्वास करने वाले हैं।

५४. हम तो यही कहेंगे कि तुझे हमारे किसी देवता ने बुराई के साथ पकड़ लिया है। हूद ने कहा: मैं अल्लाह को (गवाह) बनता हूँ, और तुम भी साक्षी रहो कि मैं उस शिर्क (मिश्रणवाद) से विरक्त हूँ जो तुम कर रहे हो।

५५. उस (अल्लाह) के सिवा। तुम सब मिल कर मेरे विरुद्ध षड्यंत्र रच लो, फिर मुझे कुछ भी अवसर न दो।[१]

५६. वास्तव में, मैं ने अल्लाह पर जो मेरा पालनहार और तुम्हारा पालनहार है, भरोसा किया है। कोई चलने वाला जीव ऐसा नहीं जो उस के अधिकार में न हो, वास्तव में मेरा पालनहार सीधी राह[२] पर है।

५७. फिर यदि तुम विमुख रह गये तो मैंने तुम्हें वह उपदेश पहुँचा दिया है जिस के साथ मुझे भेजा गया है। और मेरा पालनहार तुम्हारा स्थान तुम्हारे सिवा किसी[३] और जाति को दे देगा। और तुम उसे कुछ हानि नहीं पहुँचा सकोगे, वास्तव में मेरा पालनहार प्रत्येक चीज़ का रक्षक है।

५८. और जब हमारा आदेश आ पहुँचा तो हम ने हूद को और उन को जो उस के साथ ईमान लाये अपनी दया से बचा लिया, और हम ने उन को घोर यातना से बचा लिया।

५९. वही (जाति) ''आद'' है, जिसने अपने पालनहार की आयतों (निशानियों) का इन्कार किया, और उस के रसूलों की बात नहीं मानी, और प्रत्येक सच्च के विरोधी के पीछे चलते रहे।

---

[१] अर्थात तुम और तुम्हारे सब देवी–देवता मिलकर भी मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकते। क्योंकि मेरा भरोसा जिस अल्लाह पर है पूरा संसार उस के नियंत्रण में है उस के आगे किसी की शक्ति नहीं कि किसी का कुछ बिगाड़ सके।

[२] अर्थात उस की राह अत्याचार की राह नहीं हो सकती कि तुम दुराचारी और कुपथ में रह कर सफल रहो और मैं सदाचारी रह कर हानि में पड़ूँ।

[३] अर्थात तुम्हें ध्वस्त निरस्त कर देगा।

६०. और इस संसार में धिक्कार उन के साथ लगा दी गई। तथा प्रलय के दिन भी लगी रहेगी। सुनो! आद ने अपने पालनहार को अस्वीकार कर दिया। सुनो! हूद की जाति: आद के लिये दूरी[1] हो!

६१. और समूद[2] की ओर उन के भाई सालेह को भेजा। उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! अल्लाह की इबादत (वंदना) करो उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं है। उसी ने तुम को धरती से उत्पन्न किया, और तुम को उस में बसा दिया, अत: उस से क्षमा माँगो और उसी की ओर ध्यानमग्न हो जाओ, वास्तव में मेरा पालनहार समीप है (और दुआयें) स्वीकार करने वाला है।[3]

६२. उन्होंने कहा: हे सालेह! हमारे बीच इस से पहले तुझ से बड़ी आशा थी, क्या तू हमें इस बात से रोक रहा है कि हम उस की पूजा करें जिस की पूजा हमारे बाप दादा करते रहे? तू जिस चीज़ (एकेश्वरवाद) की ओर बुला रहा है, वास्तव में उस के बारे में हमें संदेह है, जिस में हमें द्विधा है।)

६३. उस (सालेह) ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! तुम ने विचार किया कि यदि मैं अपने पालनहार की ओर से एक स्पष्ट खुले प्रमाण पर हूँ, और उस ने मुझे अपनी दया प्रदान की हो, तो कौन है जो अल्लाह के मुक़ाबले में मेरी सहायता करेगा, यदि मैं उस की अवैज्ञा करूँ? तुम मुझे घाटे में डालने के सिवा कुछ नहीं दे सकते।

६४. और हे मेरी जाति के लोगो! यह अल्लाह[4] की ऊँटनी तुम्हारे लिये एक निशानी है तो इसे छोड़ दो, अल्लाह की धरती में चरती फिरे। और उसे कोई दु:ख न पहुँचाओ, अन्यथा तुम्हें तुरन्त यातना पकड़ लेगी।

६५. तो उन्होंने उसे मार डाला। तब सालेह ने कहा: तुम अपने नगर में तीन दिन और आनन्द ले लो। यह वचन झूठा नहीं है।

---

[1] अर्थात अल्लाह की दया से दूरी। इस का प्रयोग धिक्कार और विनाश के अर्थ में होता है।

[2] यह जाति तबूक और मदीना के बीच ''अल–हिज्र'' में आबाद थी।

[3] देखिये : सूरह बक़रा, आयत : १८६।

[4] उसे अल्लाह की ऊँटनी इस लिये कहा गया है कि उसे अल्लाह ने उन के लिये एक पर्वत से निकाला था। क्योंकि उन्होंने इस की माँग की थी कि यदि पर्वत से ऊँटनी निकलेगी तो हम ईमान लायेंगे। (तफ़सीरे कुर्तुबी)

६६. फिर जब हमारा आदेश आ गया तो हम ने सालेह को और जो लोग उस के साथ ईमान लाये अपनी दया से और उस दिन के अपमान से बचा लिया। वास्तव में आप का पालनहार ही शक्तिशाली प्रभुत्वशाली है।

६७. और अत्याचारियों को कड़ी ध्वनि ने पकड़ लिया, और अपने घरों में औंधे पड़े रहे गये।

६८. जैसे वह वहाँ कभी बसे ही नहीं थे। सावधान! समूद ने अपने पालनहार को अस्वीकार कर दिया। सुन लो, समूद के लिये दूरी हो।

६९. और हमारे फ़रिश्ते इब्राहीम के पास शुभसूचना लेकर आये। उन्होंने सलाम किया तो उस ने उत्तर में सलाम किया। फिर देर न हुई कि वह एक भुना हुआ बछड़ा[१] ले आये।

७०. फिर जब देखा कि उन के हाथ उस की ओर नहीं बढ़ते तो उन की ओर से संशय में पड़ गया। और उन से दिल में भय का अनुभव किया। उन्होंने कहा: भय न करो। हम लूत[२] की जाति की ओर भेजे गये हैं।

७१. और उस (इब्राहीम) की पत्नी खड़ी होकर सुन रही थी। तो वह हँस पड़ी[३], तो उसे हम ने इस्हाक (के जन्म) की शुभ सूचना[४] दी। और इस्हाक़ के पश्चात् याकूब की।

७२. वह बोली: हाय मेरा दुर्भाग्य! क्या मेरी संतान होगी, जब कि मैं बुढ़िया हूँ और मेरा यह पति भी बूढ़ा है? वास्तव में यह बड़े आश्चर्य की बात है।

७३. फ़रिश्तों ने कहा: क्या तू अल्लाह के आदेश से आश्चर्य करती है? हे घर वालों! तुम सब पर अल्लाह की दया तथा सम्पन्नता है, नि:संदेह वह अति प्रशंसित श्रेष्ठ है।

७४. फिर जब इब्राहीम से भय दूर हो गया और उसे शुभसूचना मिल गयी तो वह लूत की जाति के बारे में हम से आग्रह करने लगा।[१]

---

[१] अर्थात अतिथि सत्कार के लिये।

[२] लूत अलैहिस्सलाम को भाष्यकारों ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम का भतीजा बताया है, जिन को अल्लाह ने सदूम की ओर नबी बना कर भेजा।

[३] कि भय की कोई बात नहीं है।

[४] फ़रिश्तों द्वारा।

७५. वास्तव में इब्राहीम बड़ा सहनशील, कोमल हृदय तथा अल्लाह की ओर ध्यानमग्न रहनेवाला था।

७६. (फ़रिश्तों ने कहा): हे इब्राहीम! इस बात को छोड़ों, वास्तव में तेरे पालनहार का आदेश[२] आ गया है, तथा उन पर ऐसी यातना आने वाली है जो टलने वाली नहीं है।

७७. और जब हमारे फ़रिश्ते लूत के पास आये तो उन का आना उसे बुरा लगा। और उन के कारण व्याकुल हो गया। और कहा: यह तो बड़ी विपता का[३] दिन है।

७८. और उस की जाति के लोग दौड़ते हुये उस के पास आ गये। और इस से पूर्व वह कुकर्म[४] किया करते थे। लूत ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! यह मेरी[५] पुत्रियाँ हैं, वह तुम्हारे लिये अधिक पवित्र हैं, अत: अल्लाह से डरो, और मेरे अतिथियों के बारे में मुझे अपमानित न करो। क्या तुम में कोई भला मनुष्य नहीं है।

७९. उन लोगों ने कहा: तुम तो जानते ही हो कि हमारा तेरी पुत्रियों में कोई अधिकार नहीं।[६] तथा वास्तव में तुम जानते हो कि हम क्या चाहते हैं।

८०. उस (लूत) ने कहा: काश मेरे पास बल होता! या कोई दृढ़ सहारा होता जिस की शरण लेता!

८१. फ़रिश्तों ने कहा: हे लूत! हम तेरे पालनहार के भेजे हुये (फ़रिश्ते) है। वह कदापि तुझ तक नहीं पहुँच सकेंगे, जब कुछ रात रह जाये तो अपने परिवार के साथ निकल जा, और तुम में से कोई फिर कर न देखे। परन्तु तेरी पत्नी (साथ नहीं जायेगी)। उस पर भी वही बीतने वाला है जो उन पर बीतेगा। उन की यातना का निर्धारित समय प्रात:काल है। क्या प्रात:काल समीप नहीं है?

---

[१] अर्थात प्रार्थना करने लगा कि लूत की जाति को अभी संभलने का और अवसर दिया जाये हो सकता है वह ईमान लाये।

[२] अर्थात यातना का आदेश।

[३] फ़रिश्ते सुन्दर किशोरों के रूप में आये थे। और लूत अलैहिस्सलाम की जाति का आचरण यह था कि वह बालमैथुन में रुचि रखती थी। इसलिये उन्होंने उन को पकड़ने की कोशिश की। इसीलिये इन अतिथियों के आने पर लूत अलैहिस्सलाम व्याकुल हो गये थे।

[४] अर्थात बालमैथुन। (तफ़्सीरे कुर्तुबी)

[५] अर्थात बस्ती की स्त्रियाँ। क्योंकि जाति का नबी उन के पिता के समान होता है। (तफ़्सीरे कुर्तुबी)

[६] अर्थात हमें स्त्रियों में कोई रुचि नहीं है।

८२. फिर जब हमारा आदेश आ गया तो हम ने उस बस्ती को तहस नहस कर दिया। और उन पर पकी हुई कंकरियों की बारिश कर दी।

८३. जो तेरे पालनहार के यहाँ चिन्ह लगायी हुयीं थीं। और वह[1] (बस्ती) अत्याचारियों[2] से कोई दूर नहीं है।

८४. और मद्यन की ओर उन के भाई शुऐब को भेजा। उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! अल्लाह की इबादत (वंदना) करो। उस के सिवा कोई तुम्हारा पूज्य नहीं है। और नाप तौल में कमी न करो।[3] मैं तुम्हें सम्पन्न देख रहा हूँ। इसलिये मुझे डर है कि तुम्हें कहीं यातना न घेर ले।

८५. हे मेरी जाति के लोगो! नाप तौल न्यायपूर्वक पूरा करो, और लोगों को उन की चीज़ें कम न दो, तथा धरती में उपद्रव फैलाते न फिरो।

८६. अल्लाह की दी हुई बचत तुम्हारे लिये अच्छी है, यदि तुम ईमान वाले हो। और मैं तुम पर कोई रक्षक नहीं हूँ।

८७. उन्होंने कहा: हे शुऐब! क्या तेरी नमाज़ (इबादत) तुझे आदेश दे रही है कि हम उसे त्याग दें जिस की पूजा हमारे बाप दादा करते रहे? अथवा अपने धनों में जो चाहें करें? वास्तव में तू बड़ा ही सहनशील तथा भला व्यक्ति है!

८८. शुऐब ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! तुम बताओ यदि मैं अपने पालनहार की ओर से प्रत्यक्ष प्रमाण पर हूँ, और उस ने मुझे अच्छी जीविका प्रदान की हो (तो कैसे तुम्हारा साथ दूँ?) मैं नहीं चाहता कि उस के विरुद्ध करूँ, जिस से तुम्हें रोक रहा हूँ। मैं जहाँ तक हो सके सुधार ही चाहता हूँ। और यह जो कुछ करना चाहता हूँ, अल्लाह के योगदान पर निर्भर करता है। मैंने उसी पर भरोसा किया है, और उसी की ओर ध्यानमग्न रहता हूँ।

८९. हे मेरी जाति के लोगो! तुम्हें मेरा विरोध इस बात पर न उभार दे कि तुम पर वही यातना आ पड़े जो नूह की जाति या हूद की जाति अथवा सालेह की जाति पर आई। और लूत की जाति तुम से कुछ दूर नहीं है।

---

[1] अर्थात सदूम, जो समूद की बस्ती थी।

[2] अर्थात आज भी जो उन की नीति पर चल रहे हैं उन पर ऐसी ही यातना आ सकती है।

[3] शुऐब की जाति में शिर्क (मिश्रणवाद) के सिवा नाप तौल में कमी करने का रोग भी था।

९०. और अपने पालनहार से क्षमा माँगो, फिर उसी की ओर ध्यानमग्न हो जाओ। वास्तव में मेरा पालनहार अति क्षमाशील तथा प्रेम करने वाला है।

९१. उन्होंने कहा: हे शुऐब! तुम्हारी बहुत सी बात हम नहीं समझते। और हम तुम्हें अपने बीच निर्बल देख रहे हैं। और यदि भाई बन्धु न होते तो हम तुम को पथराव कर के मार डालते। और तुम हम पर कोई भारी तो नहीं हो।

९२. शुऐब ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! क्या मेरे भाई बन्धु तुम पर अल्लाह से अधिक भारी हैं? कि तुम ने उसे पीठ पीछे डाल दिया है?[१] निश्चय मेरा पालनहार उसे (अपने ज्ञान के) घेरे में लिये हुये है जो तुम कर रहे हो।

९३. और हे मेरी जाति के लोगो! तुम अपने स्थान पर काम करो, मैं (अपने स्थान पर) काम कर रहा हूँ। तुम्हें शीघ्र ही ज्ञान हो जायेगा कि किस पर ऐसी यातना आयेगी जो उसे अपमानित कर दे। तथा कौन झूठा है? तुम प्रतीक्षा करो, मैं (भी) तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वाला हूँ।

९४. और जब हमारा आदेश आ गया, तो हमने शुऐब को, और जो उसके साथ ईमान लाये थे, अपनी दया से बचा लिया। और अत्याचारियों को कड़ी ध्वनी ने पकड़ लिया। फिर वे अपने घरों में औंधे मुँह पड़े रह गये।

९५. जैसे वह कभी उन में बसे ही न रहे हों। सुन लो! मद्यन वाले भी वैसे ही दूर फेंक दिये गये जैसे समूद दूर फेंक दिये गये।

९६. और हम ने मूसा को अपनी निशानियों (चमत्कार), तथा खुले तर्क के साथ भेजा।

९७. फ़िरऔन और उस के प्रमुखों की ओर। तो उन्होंने फ़िरऔन की आज्ञा का अनुसरण (पालन) किया। जब कि फ़िरऔन की आज्ञा सुधरी हुई न थी।

९८. वह प्रलय के दिन अपनी जाति के आगे चलेगा, और उन को नरक में उतारेगा और वह क्या ही बुरा उतरने का स्थान है?

९९. और वे धिक्कार के पीछे लगा दिये गये इस संसार में भी और प्रलय के दिन भी। कैसा बुरा पुरस्कार है जो उन्हें दिया जायेगा?

[१] अर्थात तु म मेरे भाई बन्धु के भय से मेरे विरुद्ध कुछ करने से रुक गये तो क्या वह तुम्हारे विचार में अल्लाह से अधिक प्रभाव रखते हैं?

१००.हे नबी! यह उन बस्तियों के समाचार हैं जिन का वर्णन हम आप से कर रहे हैं। उन में से कुछ निर्जन खड़ी और कुछ उजड़ चुकी हैं।

१०१.और हम ने उन पर अत्याचार नहीं किया, परन्तु उन्होंने स्वयं अपने ऊपर अत्याचार किया। तो उन के वे पूज्य जिन्हें वह अल्लाह के सिवा पुकार रहे थे, उनके कुछ काम नहीं आये, जब आप के पालनहार का आदेश आ गया, और उन्होंने उन को हानि पहुँचाने के सिवा और कुछ नहीं किया।[1]

१०२.और इसी प्रकार तेरे पालनहार की पकड़ होती है, जब वह किसी अत्याचार करने वालों की, बस्ती को पकड़ता है। निश्चय उस की पकड़ दु:खदायी और कड़ी होती[2] है।

१०३.निश्चय इस में एक निशानी है, उस के लिये जो परलोक की यातना से डरे। वह ऐसा दिन होगा जिस के लिये सभी लोग एकत्रित होंगे, तथा उस दिन सब उपस्थित होंगे।

१०४.और हम उसे केवल एक निर्धारित अवधि के लिये देर कर रहे हैं।

१०५.जब वह दिन आ जायेगा तो अल्लाह की अनुमति बिना कोई प्राणी बात नहीं करेगा, फिर उन में से कुछ आभागे होंगे और कुछ भाग्यवान होंगे।

१०६.फिर जो भाग्यहीन होंगे, वही नरक में होंगे, उन्हीं की उस में चीख और पुकार होगी।

१०७.वे उस में सदावासी होंगे, जब तक आकाश तथा धरती अवस्थित हैं। परन्तु यह कि आप का पालनहार कुछ और चाहे। वास्तव में आप का पालनहार जो चाहे कर देने वाला है।

१०८.और जो भाग्यवान हैं, वह स्वर्ग ही में सदैव रहेंगे, जब तक आकाश तथा धरती स्थित हैं। परन्तु आप का पालनहार कुछ और चाहे, यह प्रदान है अनवरत (निरन्तर)।

---

[1] अर्थात यह जातियाँ अपने देवी–देवता की पूजा इसलिये करती थीं कि वह उन्हें लाभ पहुँचायेंगे। किन्तु उन की पूजा ही उन पर अधिक यातना का कारण बन गई।

[2] नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन है कि अल्लाह अत्याचारी को अवसर देता है, यहाँ तक कि जब उसे पकड़ता है तो उस से बचता नहीं, और आपने फिर यही आयत पढ़ी। (सहीह बुख़ारी, हदीस नं. : ४६८६)

१०९.अत: (हे नबी!) आप उस के बारे में किसी संदेह में किसी संदेह में न हों जिसे वे पूजते हैं। वे उसी प्रकार पूजते हैं जैसे इस से पहले इन के बाप दादा पूजते[1] रहे हैं। वस्तुत: हम उन्हें उन का बिना किसी कमी के पूरा भाग देने वाले हैं।

११०.और हम ने मूसा को पुस्तक (तौरात) प्रदान की। तो उस में विभेद किया गया। और यदि आप के पालनहार ने पहले से एक बात[2] निश्चित न की होती तो उन के बीच निर्णय कर दिया गया होता, और वास्तव में वे[3] उस के बारे में संदेह और शंका में हैं।

१११.और प्रत्येक को आप का पालनहार अवश्य उन के कर्मों का पूरा बदला देगा। क्योंकि वह उन के कर्मों से सूचित है।

११२.अत: (हे नबी!) जैसे आप को आदेश दिया गया है, उस पर सुदृढ़ रहिये। और वह भी जो आप के साथ तौबा (क्षमा याचना) कर के हो लिये हैं। और सीमा का उल्लंघन न[4] करो क्योंकि वह (अल्लाह) तुम्हारे कर्मों को देख रहा है।

११३.और अत्याचारियों की ओर न झुक पड़ो। अन्यथा तुम्हें भी अग्नि स्पर्श कर लेगी। और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई सहायक नहीं, फिर तुम्हारी सहायता नहीं की जायेगी।

११४.तथा आप नमाज़ की स्थापना करें, दिन के सीरों पर और कुछ रात बीतने[5] पर। वास्तव में सदाचार दुराचारों को दूर कर देते[6] हैं। यह एक शिक्षा है, शिक्षा ग्रहण करने वालों के लिये।

११५.तथा आप धैर्य से काम लें, क्योंकि अल्लाह सदाचारियों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करता।

---

[1] अर्थात इन की पूजा निर्मूल और बाप–दादा की परम्परा पर आधारित है, जिस का सत्य से कोई संबन्ध नहीं है।

[2] अर्थात यह कि संसार में प्रत्येक को अपनी इच्छानुसार कर्म करने का अवसर दिया जायेगा।

[3] अर्थात मिश्रणवादी कुरआन के विषय में।

[4] अर्थात धर्मादेश की सीमा का।

[5] नमाज़ के समय के सविस्तार विवरण के लिये देखिये: सूरह बनी इस्राईल:७८, सूरह ताहा:१३०, तथा सूरह रूम:१७–१८।)

[6] हदीस में आता है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: यदि किसी के द्वार पर एक नहर जारी हो जिस में वह पाँच बार स्नान करता हो तो क्या उस के शरीर पर कुछ मैल रह जायेगा? इसी प्रकार पाँचों नमाज़ों से अल्लाह भूल–चूक को दूर (क्षमा) कर देता है। (बुख़ारी : ५२८, मुस्लिम : ६६७) किन्तु बड़े बड़े पाप जैसे शिर्क, हत्या इत्यादि, बिना तौबा के क्षमा नहीं किये जाते।

११६.तो तुम से पहले युगों में ऐस सदाचारी क्यों नहीं हुये जो धरती में उपद्रव करने से रोकते? परन्तु ऐसा बहुत थोड़े युगों में हुआ, जिन्हें हम ने बचा दिया, और अत्याचारी उस स्वाद के पीछे पड़े रहे, जो धन–धान्य दिये गये थे। और वह अपराधि बनकर रहे।

११७.और आप का पालनहार ऐसा नहीं है कि बस्तियों को अत्याचार से ध्वस्त कर दे, जब कि उन के वासी सुधारक हों।

११८. और यदि आप का पालनहार चाहता तो सब लोगों को एक समुदाय बना देता। और वह सदा विचार विरोधी रहेंगे।

११९.परन्तु जिस पर आप का पालनहार दया कर दे, और इसी के लिये उन्हें पैदा किया है।[१] और आप के पालनहार की बात पूरी हो गयी कि मैं नरक को सब जिन्नों तथा मानवों से अवश्य भर दूँगा[२]।

१२०.और (हे नबी!) यह नबियों की सब कथाऐं हम आप को सुना रहे हैं, जिन के द्वारा आप के दिल को सुदृढ़ कर दें, और इस विषय में आप के पास सत्य आ गया। और ईमान वालों के लिये एक शिक्षा और चेतावनी है।

१२१.और (हे नबी!) आप उन से कह दें, जो ईमान नहीं लाते कि तुम अपने स्थान पर काम करते रहो। हम अपने स्थान पर काम करते हैं।

१२२.तथा तुम प्रतीक्षा[3] करो, हम भी प्रतीक्षा करने वाले हैं।

१२३.अल्लाह ही के अधिकार में आकाशें तथा धरती की छिपी हुई चीज़ों का ज्ञान है, और प्रत्येक विषय उसी की ओर लौटाये जाते हैं। अत: आप उस की इबादत (वंदना) करें, और उसी पर निर्भर रहे। आप का पालनहार उस से अचेत नहीं है जो तुम कर रहे हो।

*****

---

[१] अर्थात एक ही सत्धर्म पर सब को कर देता। परन्तु उस ने प्रत्येक को अपने विचार की स्वतंत्रता दी है कि जिस धर्म या विचार को चाहे अपनाये ताकि प्रलय के दिन सत्धर्म को ग्रहण न करने पर उन्हें यातना का स्वाद चखाया जाये।

[२] क्योंकि इस स्वतंत्रता का ग़लत प्रयोग कर के अधिकतर लोग सत्धर्म को छोड़ बैठे।

[3] अर्थात अपने परिणाम की।

सूरह यूसुफ़ – १२

सूरह यूसुफ़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में १११ आयतें है।

- इस में नबी यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) की पूरी कथा का वर्णन किया गया है। इस के द्वारा यह संकेत किया गया है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जिन को मक्का में कुरैश ने जान से मार देने अथवा देश से निकाल देने की योजना बनायी है वह ऐसे ही निष्फल हो जायेंगे जैसे यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के भाइयों की सारी योजना निष्फल हो गई। और एक दिन ऐसा भी आया कि सब भाई उन के आगे हाथ फैलाये खड़े थे। और कुरआन की यह भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई।
- आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मदीना हिज्रत कर गये। फिर सन् ८ हिज्री में आप ने मक्का को विजय किया तो आप के विरोधि कुरैश आप के आगे उसी प्रकार विवश खड़े थे जैसे यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के भाई उन के आगे हाथ फैलाये कह रहे थे की आप हमे दान कीजिये, अल्लाह दानशीलों को अच्छा बदला देता है। और जैसे यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) ने अपने भाईयों को क्षमा कर दिया वैसे ही आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने भी कहा: जाओ, तुम पर कोई दोष नहीं, अल्लाह तुम्हें क्षमा करे वह सर्वोत्तम दयावान् है। आप उन के अत्याचार का बदला ले सकते थे किन्तु जब आप ने उन से पूछा कि तुम्हारा विचार क्या है कि मैं तुम्हारे साथ क्या करूँगा?? तो उन के यह कहने पर कि आप सज्ञन भाई तथा सज्ञन भाई के पुत्र हैं, आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: मैं तुम से वही कहता हूँ जो यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) ने अपने भाईयों से कहा था कि आज तुम पर कोई दोष नहीं, जाओ तुम सभी स्वतंत्र हो।

  हदीस में है कि सज्ञन के सज्ञन पुत्र के सज्ञन पुत्र, यूसुफ़ पुत्र याकूब पुत्र इस्हाक़ पुत्र इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) हैं। (देखिये: सहीह बुख़ारी, हदीस नं. : ३३८२)

  एक दूसरी हदीस में आया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि यदि मैं उतने दिन बंदी रहता जितने दिन यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) बंदी रहे तो जो व्यक्ति उन को बुलाने आया था मैं उस के साथ चला जाता।(देखिये:बुख़ारी :३३७२, मुस्लिम:२३७०)

याद रहे कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के इस कथन से अभिप्राय यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के सहन की सराहना करना है।

– इस सूरह में यह शिक्षा है कि जो अल्लाह चाहे वही होता है। विरोधियों के चाहने से कुछ नहीं होता, इस में नव युवको के लिये अपनी मर्यादा की रक्षा के लिये भी एक शिक्षा है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. अलिफ़, लाम, रा। यह खुली पुस्तक की आयतें हैं।

२. हम ने इस कुरआन को अर्बी में उतारा है, ताकि तुम समझो।[१]

३. (हे नबी!) हम बहुत अच्छी शैली में आप की ओर इस कुरआन की वह्यी द्वारा आप से इस कथा का वर्णन कर रहे हैं। अन्यथा आप (भी) इस से पूर्व (इस से) असूचित थे।

४. जब यूसुफ़ ने अपने पिता से कहा: है मेरे पिता! मैं ने स्वप्न देखा है कि ग्यारह सितारे, सूर्य तथा चाँद मुझे सज्दा कर रहे हैं।

५. उस ने कहा: हे मेरे पुत्र! अपना स्वप्न अपने भाईयों को न बताना[२] अन्यथा वह तेरे विरुद्ध षड्यंत्र रचेंगे। वास्तव में शैतान मानव का खुला शत्रु है।

६. और ऐसा ही होगा, तेरा पालनहार तुझे चुन लेगा, तथा तुझे बातों का अर्थ सिखायेगा और तुझ पर और याकूब के घराने पर अपना पुरस्कार पूरा करेगा।[३] जैसे इस से पहले तेरे पूर्वजों इब्राहीम और इस्हाक़ पर पूरा किया। वास्तव में तेरा पालनहार बड़ा ज्ञानी तथा गुणी है।

७. वास्तव में यूसुफ़ और उस के भाईयों (की कथा) में पूछने वालों के[४] लिये कई निशानियाँ है।

८. जब उन (भाईयों) ने कहा: यूसुफ़ और उस का भाई हमारे पिता को हम से अधिक प्रिय है। जब कि हम एक गिरोह हैं। वास्तव में हमारे पिता खुली गुमराही में हैं।

---

[१] क्यों कि कुरआन के प्रथम सम्बोधित अरब लोग थे फिर उन के द्वारा दूसरे साधारण मनुष्यों को संबोधित किया गया है तो यदि प्रथम संबोधित ही कुरआन नहीं समझ सकते तो दूसरों को कैसे समझा सकते थे?

[२] यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के दूसरी माँओं से दस भाई थे। और एक सगा भाई था। याक़ूब अलैहिस्सलाम यह जानते थे कि सौतीले भाई, यूसुफ़ से ईर्ष्या करते हैं। इसलिये उन को सावधान कर दिया कि अपना स्वप्न उन्हें न बतायें।

[३] यहाँ पुरस्कार से अभिप्राय नबी बनाना है। (तफ़्सीरे कुर्तुबी)

[४] यह प्रश्न यहूदियों ने मक्का वासियों के माध्यम से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किया था, कि वह कौनसे नबी हैं जो शाम में रहते थे, और जब उन का पुत्र मिस्र निकल गया तो उस पर रोते-रोते अन्धे हो गये?? इस पर यह पूरी सूरह उतरी। (तफ़्सीरे कुर्तुबी)

९. यूसुफ़ को बध कर दो, या उसे किसी धरती में फेंक दो। इस से तुम्हारे पिता का ध्यान केवल तुम्हारी तरफ़ हो जायेगा। और इस के पश्चात् पवित्र बन जाओ।
१०. उन में से एक ने कहा: यूसुफ़ को बध न करो, उसे किसी अंधे कुएं में डाल दो, उसे कोई क़ाफ़िला निकाल ले जायेगा, यदि कुछ करने वाले हो।
११. उन्होंने कहा: हे हमारे पिता! क्या बात है कि यूसुफ़ के विषय में आप हम पर भरोसा नहीं करते? जब कि हम उस के शुभचिन्तक हैं।
१२. उसे कल हमारे साथ (वन में) भेज दें। वह खाये पिये और केले कूदे। और हम उस के रक्षक (प्रहरी) हैं।
१३. उस (पिता) ने कहा। मुझे बड़ी चिन्ता इस बात की है कि तुम उसे ले जाओ। और मैं डरता हूँ कि उसे भेड़िया न खा जाये। और तुम उस से असावधान रह जाओ।
१४. सब (भाईयों) ने कहा: यदि उसे भेड़िया खा गया, जब कि हम एक गिरोह हैं, तो वास्तव में हम बड़े विनाश में हैं।
१५. फिर जब वे उसे ले गये, और निश्चय किया कि उसे अंधे कुऐं में डाल दें, और हम ने उस (यूसुफ़) की ओर वह्यी की कि तुम अवश्य इन को उन का कर्म बताओगे, और वह कुछ जानते न होंगे।
१६. और वह संध्या को रोते हुये अपने पिता के पास आये।
१७. सब ने कहा: हे पिता! हम आपस में दौड़ करने लगे। और यूसुफ़ को अपने सामान के पास छोड़ दिया। और उसे भेड़ियो खा गया। और आप तो हमारा विश्वास करने वाले नहीं हैं, यद्यपि हम सच्च ही क्यों न बोल रहे हों।
१८. और वह यूसुफ़ के कुर्ते पर झूठा रक्त[1] लगाकर लाये। उस ने कहा: बल्कि तुम्हारे मन ने तुम्हारे लिये एक सुन्दर बात बना ली है! तो अब धैर्य धारण करना ही उत्तम है। और उस के संबन्ध में जो बात तुम बना रहे हो अल्लाह ही से सहायता माँगनी है।
१९. और एक क़ाफ़िला आया। उस ने अपने पानी भरने वाले को भेजा, उस ने अपना डोल डाला, तो पुकारा: शुभ हो! यह तो एक बालक है। और उसे व्यापारिक

[1] भाष्यकारों ने लिखा है कि वे बकरी के बच्चे का रक्त लगाकर लाये थे।

सामग्री समझकर छुपा लिया। और अल्लाह भली भाँति जानने वाला था जो वे कर रहे थे।

२०. और उसे तनिक मूल्य कुछ गिनती के दिरहमों मे बेच दिया। और वे उस के बारे में कुछ अधिक की इच्छा नहीं रखते थे।

२१. और मिस्र के जिस व्यक्ति ने उसे ख़रीदा, उस ने अपनी पत्नी से कहा: उस को आदर–मान से रखो। संभव है यह हमें लाभ पहुँचाये, अथवा हम उसे अपना पुत्र बना लें। इस प्रकार उस को हम ने स्थान दिया। और ताकि उसे बातों का अर्थ सिखायें। और अल्लाह अपना आदेश पूरा कर के रहता है। परन्तु अधिक्तर लोग जानते नहीं हैं।

२२. और जब वह जवानी को पहुँचा, तो हम ने उसे निर्णय करने की शक्ति तथा ज्ञान प्रदान किया। और इसी प्रकार हम सदाचारियों को प्रतिफल (बदला) देते हैं।

२३. और वह जिस स्त्री[१] के घर में था, उस ने उस के मन को रिझाया, और द्वार बन्द कर लिये, और बोली: ''आ जाओ''। उस ने कहा: अल्लाह की शरण! वह मेरा स्वीमा है। उस ने मुझे अच्छा स्थान दिया है वास्तव में अत्याचारी सफल नहीं होते।

२४. और उस स्त्री ने उस की इच्छा की। और वह (यूसुफ़) भी उस की इच्छा करते, यदि अपने पालनहार का प्रमाण न देख लेते।[२] इस प्रकार हम ने (उसे सावधान) किया ताकि उस से बुराई तथा निर्लज्ज़ा को दूर कर दें। वास्तव में वह हमारे शुद्ध भक्तों में था।

२५. और दोनों द्वार की ओर दोड़े। और उस स्त्री ने उस का कुर्ता पीछे से फाड़ दिया। और दोनों ने उस के पति को द्वार के पास पाया। उस (स्त्री) ने कहा: जिस ने तेरी पत्नी के साथ बुराई का निश्चय किया, उस का दण्ड इस के सिवा क्या है कि उसे बंदी बना दिया जाये अथवा उसे दु:खदायी यातना (दी जाये)?

---

[१] अभिप्रेत मिस्र के राजा (अज़ीज़) की पत्नी है।

[२] यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) कोई फ़रिश्ता नहीं एक मनुष्य थे। इस लिये बुराई का इरादा कर सकते ते किन्तु उसी समय उन के दिल में यह बात आई कि मैं पाप कर के अल्लाह की पकड़ से बच नहीं सकूँगा। इस प्रकार अल्लाह ने उन्हें बुराई से बचा लिया, जो यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) की बहुत बड़ी प्रधानता है।

२६. उस ने कहा: इसी ने मुझे रिझाना चाहा था। और उस स्त्री के घराने से एक साक्षी ने साक्ष्य दिया कि यदि उस का कुर्ता आगे से फाड़ा गया है तो वह सच्ची है, तथा वह झूठा है।

२७. और यदि उस का कुर्ता पीछे से फाड़ा गया है तो वह झूठी और वह (यूसुफ़) सच्चा है।

२८. फिर जब उस (पति) ने देखा कि उस का कुर्ता पीछे से फाड़ा गया है तो कहा: वास्तव में यह तुम स्त्रियों की चालें हैं और तुम्हारी चालें बड़ी घोर होती हैं।

२९. हे यूसुफ़! तुम इस बात को जाने दो। और (हे स्त्री!) तू अपने पाप की क्षमा माँग, वास्तव में तू पापियों में से है।

३०. नगर की कुछ स्त्रियों ने कहा: अज़ीज़ (प्रमुख अधिकारी) की पत्नी अपने दास को रिझा रही है। उसे प्रेम ने मुग्ध कर दिया है। हमारे विचार में वह खुली गुमराही में है।

३१. फिर जब उस ने उन स्त्रियों की मक्कारी की बात सुनी तो उन्हें बुला भेजा। और उन के (आतिथ्य) के लिये गाव तकिये लगवाये और प्रत्येक स्त्री को एक छुरी दे दी।[१] उस ने (यूसुफ़ से) कहा: इन के समक्ष ''निकल आ''। फिर जब उन स्त्रियों ने उसे देखा तो चकित (दंग) हो कर अपने हाथ काट बैठी, तथा पुकार उठीं: अल्लाह पवित्र है! यह मनुष्य नहीं, यह तो कोई सम्मानित फ़रिश्ता है।

३२. उस ने कहा: यही वह है, जिस के बारे में तुम ने मेरी निन्दा की है। वास्तव में मैंने ही उसे रिझाया था। मगर वह बच निकला। और यदि वह मेरी बात न मानेगा तो अवश्य बंदी बना दिया जायेगा, और अपमानितों में हो जायेगा।

३३. यूसुफ़ ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! मुझे कैद उस से अधिक प्रिय है जिस की ओर यह औरतें मुझे बुला रही हैं। और यदि तू ने मुझ से इन के छल को दूर नहीं किया तो मैं उन की ओर झुक पडूँगा। और अज्ञानों में से हो जाऊँगा।

३४. तो उस के पालनहार ने उस की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। और उस की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। और उस से उन के छल को दूर कर दिया। वास्तव में वह बड़ा सुनने जानने वाला है।

---

[१] ताकि अतिथि स्त्रियाँ उस से फलों को काट कर खायें जो उन के लिये रखे गये थे।

३५. फिर उन लोगों[1] ने उचित समझा, इस के पश्चात् कि निशानियाँ देख[2] लीं, कि उस (यूसुफ़) को एक अवधि तक के लिये बंदी बना दें।

३६. और उस के साथ क़ैद में दो युवकों ने प्रवेश किया। उन में से एक ने कहा: मैं ने स्वप्न देखा है कि शराब निचोड़ रहा हूँ। और दूसरे ने कहा: मैं ने स्वप्न देखा है कि अपने सिर के उपर रोटी उठाये हुये हूँ, जिस में से पक्षी खा रहे हैं। हमें इस का अर्थ (स्वप्नफल) बता दो। हम देख रहे हैं। कि तुम सदाचारियों में से हो।

३७. यूसुफ़ ने कहा: तुम्हारे पास तुम्हारा वह भोजन नहीं आयेगा जो तुम दोनों को दिया जाता है परन्तु मैं तुम दोनों को उस का अर्थ (फल) बता दूँगा। यह उन बातों में से है जो मेरे पालनहार ने मुझे सिखायी हैं। मैं ने उस जाति का धर्म जत दिया है जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखती। और वही परलोक को नकारने वाले हैं।

३८. और अपने पूर्वजों इब्राहीम तथा इस्हाक़ और याकूब के धर्म का अनुसरण किया है। हमारे लिये वैध नहीं कि किसी चीज़ को अल्लाह का साझी बनायें। यह अल्लाह की दया है हम पर और लोगों पर। परन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञ नहीं होते।[3]

३९. हे मेरे क़ैद के दोनों साथियो! क्या विभिन्न पूज्य उत्तम हैं, या एक प्रभुत्वशाली अल्लाह?

४०. तुम अल्लाह के सिवा जिस की इबादत (वंदना) करते हो वह केवल नाम हैं, जो तुम ने और तुम्हारे बाप–दादा ने रख लिये है। अल्लाह ने उन का कोई प्रमाण नहीं उतारा है। शासन तो केवल अल्लाह का है। उस ने आदेश दिया है कि उस के सिवा किसी की इबादत (वंदना) न करो। यही सीधा धर्म है। परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते हैं।

४१. हे मेरे क़ैद के दोनों साथियों! रहा तुम में से एक तो वह अपने स्वामी को शराब पिलायेगा। तथा दूसरा, तो उस को फाँसी दी जायेगी, और पक्षी उस के सिर में से खायेंगे। उस का निर्णय कर दिया गया है जिस के संबन्ध में तुम दोनों प्रश्न कर रहे थे।

[1] अर्थात अज़ीज़ (मिस्र देश का शासक) और उस के साथियों ने।

[2] अर्थात यूसुफ़ के निर्दोष होने की निशानियाँ।

[3] अर्थात तौहीद और नबियों के धर्म को नहीं मानते जो अल्लाह का उपकार है।

४२. और उस से कहा जिसे समझा कि वह उन दोनों में से मुक्त होने वाला है: मेरी चर्चा अपने स्वामी के पास कर देना। तो शैतान ने उसे अपने स्वामी के पास उस की चर्चा करने को भुला दिया। अत: वह (यूसुफ़) कई वर्ष क़ैद में रह गया।

४३. और (एक दिन) राजा ने कहा: मैं सात मोटी गायों को सपने में देखता हूँ जिन को सात दुबली गायें खा रही हैं। और सात हरी बालियाँ हैं और दूसरी सात सूखी हैं। हे प्रमुखो! मुझे मेरे स्वप्न के संबंध में बताओ, यदि तुम स्वप्न फल बता सकते हो?

४४. सब ने कहा: यह तो उलझे स्वप्न की बातें हैं। और हम ऐसे स्वप्नों का अर्थ (फल) नहीं जानते।

४५. और उस ने कहा जो दोनों में से मुक्त हुआ था, और उसे एक अवधि के पश्चात् बात याद आयी: मैं तुम्हें इस का फल (अर्थ) बता दूँगा, तुम मुझे भेज[1] दो।

४६. हे यूसुफ़! हे सत्यवादी! हमें सात मोटी गायों के बारे में बताओ, जिन को सात दुबली गायें खा रही हैं। और सात हरी बालियाँ है, और सात सूखी, ताकि लोगों के पास वापिस जाऊँ, और ताकि वह जान[2] लें।

४७. यूसुफ़ ने कहा: तुम सात वर्ष निरन्तर खेती करते रहोगे। तो जो कुछ काटो उसे उस की बाली में छोड़ दो, परन्तु थोड़ा जिसे खाओगे। (उसे बालों से निकाल लो।)

४८. फिर इस के पश्चात् सात कड़े (आकाल के) वर्ष होंगे। जो उसे खा जायेंगे जो तुम ने उन के लिये पहले से रखा है, परन्तु उस में से थोड़ा जिसे तुम सुरक्षित रखोगे।

४९. फिर इस के पश्चात् एक ऐसा वर्ष आयेगा जिस में लोगों पर जल बरसाया जायेगा, तथा उसी में (रस) निचोड़ेंगे।

५०. और राजा ने कहा: उसे मेरे पास लाओ। और जब यूसुफ़ के पास भेजा हुआ आया, तो आप ने उस से कहा कि अपने स्वामी के पास वापिस जाओ[3], और

---

[1] अर्थात क़ैद ख़ाने में यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के पास।

[2] अर्थात आप की प्रतिष्ठा और मान को।

[3] यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) को बंदी बनाये जाने से अधिक उस का कारण जानने की चिन्ता थी। वह चाहते थे कि क़ैद से निकलने से पहले यह सिद्ध होना चाहिये कि मैं निर्दोष था।

उस से पूछो कि उन स्त्रियों की क्या दशा है जिन्हों ने अपने हाथ काट लिये थे? वास्तव में मेरा पालनहार उन स्त्रियों के छल से भलि–भाँति अवगत है।

५१. (राजा) ने उन स्त्रियों से पूछा: तुम्हारा क्या अनुभव है, उस समय का जब तुम ने यूसुफ़ के मन को रिझाया? सब ने कहा: अल्लाह पवित्र है! उस पर हम ने कोई बुराई का प्रभाव नहीं जाना। तब अज़ीज़ की पत्नी बोल उठी: अब सत्य उजागर हो गया, वास्तव में मैं ने ही उस के मन को रिझाया था, और निःसंदेह वह सत्वादियों में है।[1]

५२. यह (यूसुफ़) ने इस लिये किया, ताकि उसे (अज़ीज़ को) विश्वास हो जाये कि मैं ने गुप्त रूप से उस के साथ विश्वास घात नहीं किया। और वस्तुतः अल्लाह विश्वास घातियों से प्रेम नहीं करता।

५३. और मैं अपने मन को निर्दोष नहीं कहता, मन तो बुराई पर उभारता है। परन्तु जिस पर मेरा पालनहार दया कर दे। मेरा पालनहार अति क्षमाशील तथा दयावान् है।

५४. राजा ने कहा: उसे मेरे पास लाओ, उसे मैं अपने लिये विशेष कर लूँ। और जब उस (यूसुफ़) से बात की, तो कहा: वस्तुतः तू आज हमारे पास आदरणीय भरोसा करने योग्य है।

५५. उस (यूसुफ़) ने कहा: मुझे देश का कोषाधिकारी बना दीजिये। वास्तव में मैं रखवाला बड़ा ज्ञानी हूँ।

५६. और इस प्रकार हम ने यूसुफ़ को उस धरती (देश) में अधिकार दिया, वह उस में जहाँ चाहे रहे। हम अपनी दया जिसे चाहें प्रदान करते हैं, और सदाचारियों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करते।

५७. और निश्चय परलोक का प्रतिफल उन लोगों के लिये उत्तम है, जो ईमान लाये, और अल्लाह से डरते रहो।

---

[1] यह कुरआन पाक का बड़ा उपकार है कि उस ने रसूलों तथा नबियों पर लगाये गये बहुत से आरोपों का निवारण (खण्डन) कर दिया है। जिसे अहले किताब (यहूदी तथा ईसाई) ने यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के विषय में बहुत सी निर्मूल बातें घड़ ली थीं जिन को कुरआन ने आकार साफ़ कर दिया।

५८. और यूसुफ़ के भाई आये[१], तथा उस के पास उपस्थित हुये, और उस ने उन्हें पहचान लिया, तथा वह उस से अपरिचित रह गये।

५९. और जब उन का सामान तय्यार कर दिया तो कहा: अपने सौतीले भाई[२] को लाना। क्या तुम नहीं देखते कि मैं पूरा माप देता हूँ, तथा उत्तम अतिथि सत्कार करने वाला हूँ।

६०. फिर यदि तुम उसे मेरे पास नहीं लाये तो मेरे यहाँ तुम्हारे लिये कोई माप नहीं, और न तुम मेरे समीप होगे।

६१. वह बोले: हम उस के पिता को इस की प्रेरणा देंगे, और हम अवश्य ऐसा करने वाले हैं।

६२. और यूसुफ़ ने अपने सेवकों को आदेश दिया: उन का मूलधन[३] उन की बोरियों में रख दो, संभवत: वह उसे पहचान लें जब अपने परिजनों में जायें और संभवत: वापिस आयें।

६३. फिर जब अपने पिता के पास लौट कर गये तो कहा: हमारे पिता! हम से भविष्य में (अन्न) रोक दिया गया है। अत: हमारे साथ हमारे साथ हमारे भाई को भेजें कि हम सब अन्न (गल्ला) लायें, और हम उस के रक्षक हैं।

६४. उस (पिता) ने कहा: क्या मैं उस के लिये तुम पर ऐसे ही विश्वास कर लूँ जैसे इस के पहले उस के भाई (यूसुफ़) के बारे में विश्वास कर चुका हूँ? तो अल्लाह ही उत्तम रक्षक और वही सर्वाधिक दयावान् है।

६५. और जब उन्हों ने अपना सामान खोला तो पाया कि उन का मूलधन उन्हें फेरदिया गया है, उन्होंने कहा: हे हमारे पिता! हमें और क्या चाहिये? यह हमारा धन हमें फेर दिया गया है? हम अपने घराने के लिये गल्ले (अन्न) लायेंगे, और एक ऊँट का बोझ अधिक लायेंगे[४], यह माप (अन्न) बहुत थोड़ा है।

६६. उस (पिता) ने कहा: मैं कदापि उसे तुम्हारे साथ नहीं भेजूँगा, यहाँ तक कि अल्लाह के नाम पर मुझे दृढ़ वचन दो कि उसे मेरे पास अवश्य लाओगे, परन्तु यह

---

[१] अर्थात अकाल के युग में अन्न लेने के लिये फ़िलस्तीन से मिस्र आये थे।

[२] जो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का सगा भाई बिन्यामीन था।

[३] अर्थात जिस धन से अन्न ख़रीदा है।

[४] अर्थात अपने भाई बिन्यामीन का जो उन की दूसरी माँ से था।

कि तुम को घेर लिया[१] जाये। और जब उन्होंने अपना दृढ़ वचन दिया तो कहा, अल्लाह ही तुम्हारी बात (वचन) का निरीक्षक है।

६७. और (जब वह जाने लगे) तो उस (पिता) ने कहा: हे मेरे पुत्रों! तुम एक द्वार से (मिस्र में) प्रवेश न करना, बल्कि विभिन्न द्वारों से प्रवेश करना। और मैं तुम्हें किसी चीज़ से नहीं बचा सकता जो अल्लाह की ओर से हो। और आदेश तो अल्लाह का चलता है, मैं ने उसी पर भरोसा किया, तथा उसी पर भरोसा करने वालों को भरोसा करना चाहिये।

६८. और जब उन्होंने (मिस्र में) प्रवेश किया जैसे उन के पिता ने आदेश दिया था तो ऐसा नहीं हुआ कि वह उन्हें अल्लाह से कुछ बचा सके। परन्तु यह याकूब के दिल में एक विचार उत्पन्न हुआ, जिसे उस ने पूरा कर लिया।[२] और वास्तवम में वह उस का ज्ञानी था जो ज्ञान हम ने उसे दिया था। परन्तु अधिकांश लोग इस (की वास्तविक्ता) का ज्ञान नहीं रखते।

६९. और जब वे यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उस ने अपने भाई को अपनी शरण में ले लिया। (और उस से) कहा: मैं तेरा भाई (यूसुफ़) हूँ। अत: उस से उदासीन न हो जो (दुर्व्यवहार) वह करते आ रहे है।

७०. फिर जब उस (यूसुफ़) ने उन का सामान तैयार करा दिया तो प्याला अपने भाई के सामान में रख दिया। फिर एक पुकारने वाले ने पुकारा: हे क़ाफ़िले वालो! तुम लोग तो चोर हो।

७१. उन्होंने फिर कर कहा: तुम क्या खो रहे हो?

७२. उन (कर्मचारियों) ने कहा: हमें राजा का प्याला नहीं मिल रहा है। और जो उसे ला दे उस के लिये एक ऊँट का बोझ हैं और मैं उस का प्रतिभू[३] हूँ।

७३. उन्हों ने कहा: तुम जानते हो कि हम इस देश में उपद्रव करने नहीं आये हैं, और न हम चोर ही हैं।

७४. उन लोगों ने कहा। तो यदि तुम झूठे निकले तो उस का दण्ड क्या होगा?[४]

---

[१] अर्थात विवश कर दिये जाओ।

[२] अर्थात एक अपना उपाय था।

[३] अर्थात एक ऊँट के बोझ बराबर पुरस्कार देने का भार मुझ पर है।

[४] अर्थात चोर का।

७५. उन्हों ने कहा: उस का दण्ड वही होगा जिस के सामान में पाया जाये, वही उस का दण्ड होगा। इसी प्रकार हम अत्याचारियों को दण्ड देते हैं।[१]

७६. फिर उस ने खोज का आरंभ उस (यूसुफ़) के भाई की बोरी से पहले उन की बोरियों से किया। फिर उस को उस (बिन्यामीन) की बोरी से निकाल लिया। इस प्रकार हम ने यूसुफ़ के लिये उपाय[२] किया। वह राजा के नियमानुसार अपने भाई को नहीं रख सकता था, परन्तु यह कि अल्लाह चाहता। हम जिस का चाहें मान सम्मान ऊँचा कर देते हैं। और वह प्रत्येक ज्ञानी से ऊपर एक बड़ा ज्ञानी[3] है।

७७. उन भाईयों ने कहा: यदि उस ने चोरी की है तो उस का एक भाई भी इस से पहले चोरी कर चुका है। तो यूसुफ़ ने यह बात अपने दिल में छुपा ली। और उसे उन के लिये प्रकट नहीं किया। (यूसुफ़ ने) कहा: सब से बुरा स्थान तुम्हारा है। और अल्लाह उसे अधिक जानता है जो तुम कह रहे हो।

७८. उन्हों ने कहा: हे अज़ीज़![४] उस का पिता बहुत बूढ़ा है। अत: हम में से किसी एक को उस के स्थान पर ले लो। वास्तव में हम आप को परोपकारी देख रहे हैं।

७९. उस (यूसुफ़) ने कहा: अल्लाह की शरण कि हम (किसी अन्य को) पकड़ लें, परन्तु उसी को (पकड़ेंगे) जिस के पास अपना सामान पाया है। (यदि ऐसा न करें) तो हम वास्तव में अत्याचारी होंगे।

८०. फिर जब उस से निराश हो गये तो एकान्त में होकर परामर्श करने लगे। उन के बड़े ने कहा: क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे पिता ने तुम से अल्लाह को साक्षी बना कर दृढ़ वचन लिया था? और इस से पहले जो अपराध तुम ने यूसुफ़ के बारे में किया है? तो मैं इस धरती (मिस्र) से नहीं जाऊँगा जब तक मुझे मेरे पिता अनुमति न दे दें। अथवा अल्लाह मेरे लिये निर्णय न कर दे। और वही सब से अच्छा निर्णय करने वाला है।

---

[१] अर्थात याक़ूब अलैहिस्सलाम के धर्म विधान में चोर को दास बना लेने का नियम था। (तफ़सीरे कुर्तुबी)

[२] अपने भाई बिन्यामीन को रोक लेने की विधि बना दी।

[3] अर्थात अल्लाह से बड़ा कोई ज्ञानी नहीं हो सकता। इसलिये किसी को अपने ज्ञान पर गर्व नहीं होना चाहिये।

[४] यहाँ पर ''अज़ीज़'' का प्रयोग यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के लिये किया गया है। क्योंकि उन्हीं के पास सरकार के अधिकतर अधिकार थे।

८१. तुम अपने पिता की ओर लौट जाओ, और कहो कि हे हमारे पिता! आप के पुत्र ने चोरी की, और हम ने वही साक्ष्य दिया जिसे हम ने[1] जाना, और हम ग़ैब के रखवाले नहीं[2] थे।

८२. आप उस बस्ती वालों से पूछ लें, जिस में हम थे, और उस क़ाफ़िले से जिस में हम आये हैं, और वास्तव में हम सच्चे हैं।

८३. उस (पिता) ने कहा: ऐसा नहीं, बल्कि तुम्हारे दिलों ने एक बात बना ली है। तो इस लिये अब सहन करना ही उत्तम है, संभव है कि अल्लाह उन सब को मेरे पास वापिस ला दे, वास्तव में वही जानने वाला तत्वदर्शी है।

८४. और उन से मुँह फेर लिया, और कहा: हाय यूसुफ़! और उस की दोनों आखें शोक के कारण (रोते–रोते) सफ़ेद हो गयीं, और उस का दिल शोक से भर गया।

८५. उन (पुत्रों) ने कहा: अल्लाह की शपथ! आप बराबर यूसुफ़ को याद करते रहेंगे यहाँ तक कि (शोक से) घुल जायें, या अपना विनाश कर लें।

८६. उस ने कहा: मैं अपनी आपदा तथा शोक की शिकायत अल्लाह के सिवा किसी से नहीं करता। और अल्लाह की ओर से वह बात जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।

८७. हे मेरे पुत्रों! जाओ, और यूसुफ़ और उस के भाई का पता लगाओ। और अल्लाह की दया से निराश होते हैं जो काफ़िर हैं।

८८. फिर जब उस (यूसुफ़) के पास (मिस्र में) गये तो कहा: हे अज़ीज़! हम पर और हमारे घराने पर आपदा (अकाल) आ पड़ी है। और हम थोड़ा धन (मूल्य) लाये हैं, अत: हमें (अन्न का) पूरा माप दें, और हम पर दान करें। वास्तव में अल्लाह दानशीलों को प्रतिफल प्रदान करता है।

८९. उस (यूसुफ़) ने कहा: क्या तुम जानते हो कि तुम ने यूसुफ़ तथा उस के भाई के साथ क्या कुछ किया है, जब तुम अज्ञान थे?

९०. उन्हों ने कहा: क्या आप यूसुफ़ हैं? यूसुफ़ ने कहा: मैं यूसुफ़ हूँ। और यह मेरा भाई है। अल्लाह ने हम पर उपकार किया है। वास्तव में जो (अल्लाह से) डरता तथा सहन करता है तो अल्लाह सदाचारियों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करता।

[1] अर्थात राजा का प्याला उस के सामान से निकलते देखा।

[2] अर्थात आप को उस के वापिस लाने का वचन देते समय यह नहीं जानते थे कि वह चोरी करेगा। (तफ़सीरे कुर्तुबी)

९१. उन्होंने कहा: अल्लाह की शपथ! उस ने आप को हम पर श्रेष्ठता प्रदान की है। वास्तव में हम दोषी थे।

९२. यूसुफ़ ने कहा: आज तुम पर कोई दोष नहीं, अल्लाह तुम्हें क्षमा कर दे! वही सर्वाधिक दयावान् है।

९३. मेरा यह कुर्ता ले जाओ, और मेरे पिता के मुख पर डाल दो, वह देखने लगेंगे। और अपने पूरे घराने को (मिस्र) ले आओ।

९४. और जब क़ाफ़िले ने प्रस्थान किया, तो उन के पिता ने कहा: मुझे यूसुफ़ की सुगन्ध आ रही है, यदि तुम मुझे बहका हुआ बूढ़ा न समझो।

९५. उन लोगों[1] ने कहा: अल्लाह की शपथ! आप तो अपनी पुरानी सनक में पड़े हुये हैं।

९६. फिर जब शुभसूचक आ गया, तो उस ने वह (कुर्ता) उन के मुख पर डाल दिया। और वह तुरंत देखने लगे। याकूब ने कहा: क्यों मैं ने तुम से नहीं कहा था कि वास्तव में अल्लाह की ओर से जो कुछ मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते।

९७. सब (भाईयों) ने कहा: हे हमारे पिता! हमारे लिये हमारे पापों की क्षमा मांगिये, वास्तव में हम ही दोषी थे।

९८. याकूब ने कहा: मैं तुम्हारे लिये अपने पालनहार से क्षमा की प्रार्थना करूँगा, वास्तवम में वह अति क्षमी दयावान् है।

९९. फिर जब वह युसूफ के पास पहुँचे तो उस ने अपने माता–पिता को अपनी शरण में ले लिया। और कहा: नगर (मिस्र) में प्रवेश कर जाओ, यदि अल्लाह ने चाहा तो शान्ति से रहोगे।

१००. तथा अपने माता–पिता को उठा कर सिंहासन पर बिठा लिया। और सब उस के समक्ष सज्दे में गिर गये।[2] और यूसुफ़ ने कहा: हे मेरे पिता! यही मेरे स्वप्न का अर्थ है जो मैं ने पहले देखा था। मेरे पालनहार ने उसे सच कर दिया है, तथा मेरे साथ उपकार किया, जब उस ने मुझे कारावास से निकाला, और आप लोगों को

---

[1] याकूब अलैहिस्सलाम के परिजनों ने जो फ़िलस्तीन में उन के पास थे।

[2] जब यूसुफ़ की यह प्रतिष्ठा देखी तो सब भाई तथा माता–पिता उन के सम्मान के लिये सज्दे में गिर गये। जो अब इस्लाम में निरस्त कर दिया गया है। यही उस स्वप्न का फल था जिस में यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने ग्यारह सितारों, सूर्य तथा चाँद को अपने लिये सज्दा करते देखा था।

गाँवों से मेरे पास(नगर में) ले आया, इस के पश्चात् कि शैतान ने मेरे तथा मेरे भाईयों के बीच विरोध डाल दिया। वास्तव में मेरा पालनहार जिस के लिये चाहे उस के लिये उत्तम उपाय करने वाला है। निश्चय वही अति ज्ञानी तत्वज्ञ है।

१०१.हे मेरे पालनहार! तू ने मुझे राज्य प्रदान किया, तथा मुझे स्वप्नों का अर्थ सिखाया। हे आकाशों तथा धरती के उत्पत्तिकार! तू लोक तथा परलोक में मेरा रक्षक है। तू मेरा अन्त इस्लाम पर कर, और मुझे सदाचारियों में मिला दे।

१०२.(हे नबी!) यह (कथा) परोक्ष के समाचारों में से है, जिस की वह्यी हम आप की ओर कर रहे हैं। और आप उन (भाईयों) के पास नहीं थे, जब वह आपस की सहमति से षड्यंत्र रचते रहे।

१०३.और अधिकांश लोग आप कितनी ही लालसा करें, ईमान लाने वाले नहीं हैं।

१०४.और आप इस (धर्मप्रचार) पर उन से कोई पारिश्रमिक (बदला) नहीं माँगते। यह (कुरआन) तो विश्ववासियों के लिये (केवल) एक शिक्षा है।

१०५.तथा आकाशों और धरती में बहुत सी निशानियाँ (लक्षण)[१] हैं जिन पर से लोग गुज़रते रहते हैं, और उन पर ध्यान नहीं देते।[२]

१०६.और उन में से अधिकतर अल्लाह को मानते हैं परन्तु (साथ ही) मुश्रिक (मिश्रणवादी)[३] भी हैं।

१०७.तो क्या वह निर्भय हो गये हैं कि उन पर अल्लाह की यातना छा जाये, अथवा उन पर प्रलय अकस्मात आ जाये, और वह अचेत रह जायें?

१०८.(हे नबी!) आप कह दें यही मेरी डगर है, मैं अल्लाह की ओर बुला रहा हूँ। मैं पूरे विश्वास और सत्य पर हूँ, और जिस ने मेरा अनुसरण किया। तथा अल्लाह पवित्र है, और मैं मुश्रिकों (मिश्रणवादियों) में से नहीं हूँ।

१०९.और हम ने आप से पहले मानव[१] पुरुषों ही को नबी बनाकर भेजा जिन की ओर प्रकाशन भेजते रहे, नगर वासियों में से, क्या वे धरती में चले फिरे नहीं, ताकि

---

[१] अर्थात सहस्त्रों वर्ष की यह कथा इस विवरण के साथ वह्यी द्वारा ही संभव है, जो आप के अल्लाह के नबी होने तथा कुरआन के अल्लाह की वाणी होने का स्पष्ट प्रमाण है।

[२] अर्थात विश्व की प्रत्येक चीज़ अल्लाह के अस्तित्व और उस की शक्ति और सद्गुणों की परिचायक है, मात्र सोच विचार की आवश्यकता है।

[३] अर्थात अल्लाह के अस्तित्व और गुणों का विश्वास रखते हैं, फिर भी पूजा–अर्चना अन्य की करते हैं।

देखते कि उन का परिणाम क्या हुआ जो इन से पहले थे? और निश्चय आख़िरत (परलोक) कर घर (स्वर्ग) उन के लिये उत्तम है, जो अल्लाह से डरे, तो क्या तुम समझते नहीं हो।

११०. (इस से पहले भी रसूलों के साथ यही हुआ)। यहाँ तक कि जब रसूल निराश हो गये, और लोगों को विश्वास हो गया कि उन से झूठ बोला गया है, तो उन के लिये हमारी सहायता आ गई, फिर हम जिसे चाहते हैं बचा लेते हैं, और हमारी यातना अपराधियों से फेरी नहीं जाती।

१११. इन कथाओं में बुद्धिमानों के लिये बड़ी शिक्षा है, यह (कुरआन) ऐसी बातों का संग्रह नहीं है, जिसे स्वयं बना लिया जाता हो, परन्तु इस से पहले की पुस्तकों की सिद्धि और प्रत्येक वस्तु का विवरण (ब्योरा) है। तथा मार्ग दर्शन और दया है उन लोगों के लिये जो ईमान (विश्वास) रखते हों।)

*****

[१] कुरआन की अनेक आयतों में आप को यह बात मिलेगी कि रसूलों का अस्वीकार उन की जातियों ने दो ही कारण से किया। : एक तो यह कि उन के एकेश्वरवाद की शिक्षा उन के बाप–दादा की परम्परा के विरुद्ध थी, इसलिये सत्य को जानते हुये भी उन्होंने उस का विरोध किया। दूसरा यह कि उन के दिल में यह बात नहीं उतरी कि कोई मानव पुरुष अल्लाह का रसूल कैसे हो सकता है? रसूल तो किसी फ़रिश्ते को होना चाहिये। फिर यदि रसूलों को किसी जाति ने स्वीकार भी किया तो कुछ युगों के पश्चात् उसे ईश्वर अथवा ईश्वर का पुत्र बनाकर एकेश्वरवाद को आघात पहुँचाया और शिर्क (मिश्रणवाद) का द्वार खोल दिया। इसीलिये कुरआन ने इस दोनों कुविचारों का बार बार खण्डन किया है।

सूरह रअद – १३

सूरह रअद के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ४३ आयते हैं।

- ''रअद'' का अर्थ: बादल की गरज है। इस सूरह की आयत नं. १३ में बताया गया है कि वह अल्लाह की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का गान करती है। इसी से इस का नाम रअद रखा गया है।
- इस सूरह में यह बताया गया है कि इस पुस्तक (कुरआन पाक) का अल्लाह की ओर से उतरना सच्च है तथा उन लक्षणों की ओर ध्यान दिलाया गया है जिन से परलोक का विश्वास होता है तथा विरोधियों को चेतावनी दी गई है।
- तौहीद (ऐकेश्वरवाद) के विषय तथा सत्य और असत्य के अलग अलग परिणाम को बताया गया है। और सत्य के अनुयायियों के गुण और परलोक में उन का परिणाम तथा विरोधियों के दुष्परिणाम को प्रस्तुत किया गया है।
- विरोधियों को चेतावनी दी गई, तथा ईमान वालों को शुभसूचना सुनाई गई है।
- और अन्त में रिसालत (दूतत्व) के विरोधियों को सावधान करने साथ आज्ञाकारियों के अच्छे अन्त को प्रस्तुत किया गया है ताकि विरोधियों को अल्लाह से भय की प्रेरणा मिले।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. अलिफ़, लाम, मीम, रा। यह इस पुस्तक (कुरआन) की आयतें हैं। और (हे नबी!) जो आप पर आप के पालनहार की ओर से उतारा गया है सर्वथा सत्य है। परन्तु अधिकतर लोग ईमान (विश्वास) नहीं रखते।

२. अल्लाह वही है जिस ने आकाशों को ऐसे सहारों के बिना ऊँचा किया है जिन्हें तुम देख सको। फिर अर्श (सिंहासन) पर स्थिर हो गया, तथा सूर्य और चाँद को नियम बद्ध किया। सब एक निर्धारित अवधि के लिये चल रहे हैं। वही इस विश्व की व्यवस्था कर रहा है, वह निशानियों का विवरण (ब्योरा) दे रहा है ताकि तुम अपने पालनहार से मिलने का विश्वास करो।

३. तथा वही है जिस ने धरती को फैलाया। और उस में पर्वत तथा नहरें बनायीं, और प्रत्येक फलों के दो प्रकार बनाये। वह रात्रि से दिन को छुपा देता है। वास्तव में इस में बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो सोच विचार करते हैं।

४. और धरती में आपस में मिले हुये कई खण्ड हैं, और उद्यान (बाग़) हैं अँगूरों के तथा खेती और खजूर के वृक्ष हैं। कुछ एकहरे और कुछ दोहरे, सब एक ही जल से सींचे जाते हैं, और हम कुछ को स्वाद में कुछ से अधिक कर देते हैं, वास्तव में इस में बहुत सी निशानियाँ हैं, उन लोगों के लिये जो सूझ–बूझ रखते हैं।

५. तथा यदि आप आश्चर्य करते हैं तो आश्चर्य करने योग्य उन का यह[१] कथन है कि जब हम मिट्टी हो जायेंगे, तो क्या वास्तव में हम नई उत्पत्ति में होंगे? उन्होंने ही अपने पालनहार के साथ कुफ़्र किया है, तथा उन्हीं के गलों में तौक़ पड़े होंगे, और वही नरक वाले हैं, जिस में वह सदा रहेंगे।

६. और वह आप से बुराई (यातना) की जल्दी मचा रह हैं भलाई से पहले। जब कि इन से पहले यातनाऐं आ चुकी है, और वास्तव में आप का पालनहार लोगों को उन के अत्याचार पर क्षमा करने वाला है। तथा निश्चय आप का पालनहार कड़ी यातना देने वाला (भी) है।

---

[१] क्योंकि वह जानते हैं कि बीज धरती में सड़कर मिल जाता है, फिर उस से पौधा उगता है।

७. तथा जो काफ़िर हो गये वह कहते हैं कि आप पर आप के पालनहार की ओर से कोई आयत (चमत्कार) क्यों नहीं उतारा[1] गया। आप केवल सावधान करने वाले तथा प्रत्येक जाति को सीधी राह दिखाने वाले हैं।

८. अल्लाह ही जानता है जो प्रत्येक स्त्री के गर्भ में है, तथा गर्भाशय जो कम और अधिक[2] करते हैं, प्रत्येक चीज़ की उस के यहाँ एक निश्चिन्त मात्रा है।

९. वह सब छुपे और खुले प्रत्यक्ष को जानने वाला बड़ा महान् सर्वोच्च है।

१०. (उस के लिये) बराबर है तुम में से जो बात चुपके बोले, और जो पुकार कर बोले। तथा कोई रात के अन्धेरे में छुपा हो या दिन के उजाले में चल रहा हो।

११. उस (अल्लाह) के रखवाले (फ़रिश्ते) हैं। उस के आगे तथा पीछे, जो अल्लाह के आदेश से उस की रक्षा कर रहे हैं। वास्तव में अल्लाह किसी जाति की दशा नहीं बदलता जब तक वह स्वयं अपनी दशा न बदल ले। तथा जब अल्लाह किसी जाति के साथ बुराई का निश्चय कर ले तो उसे फेरा नहीं जा सकता, और न उन का उस (अल्लाह) के सिवा कोई सहायक है।

१२. वही है जो विद्युत को तुम्हें भय तथा आशा[3] बना कर दिखाता है। और भारी बादलों को पैदा करता है।

१३. और कड़क, अल्लाह की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का वर्णन करती है, और फ़रिश्ते उस के भय से काँपते हैं। वह बिजलियाँ भेजता है, फिर जिस पर चाहता है गिरा देता है। तथा वह अल्लाह के बारे में विवाद करते हैं, जब कि उस का उपाय बड़ा प्रबल है।[4]

१४. उसी (अल्लाह) को पुकारना सत्य है, और जो उस के सिवा दूसरों को पुकारते हैं, वह उन की प्रार्थना कुछ नहीं सुनते। जैसे कोई अपनी दोनों हथेलियाँ जल की

---

[1] जिस से स्पष्ट हो जाता कि आप अल्लाह के रसूल हैं।

[2] इब्ने उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: ग़ैब (परोक्ष) की तालिकायें पाँच हैं। जिन को केवल अल्लाह ही जानता है: कल की बात अल्लाह ही जानता है, और गर्भाशय जो कमी करते हैं उसे अल्लाह ही जानता है। वर्षा कब होगी उसे अल्लाह ही जानता है। और कोई प्राणी नहीं जानता कि वह किस धरती पर मरेगा। और न अल्लाह के सिवा कोई यह जानता है कि प्रलय कब आयेगी। (बुख़ारी:४६९७)

[3] अर्थात वर्षा होने की आशा।

[4] अर्थात जैसे कोई प्यासा पानी की ओर हाथ फैला कर प्रार्थना करे कि मेरे मुँह में आ जा तो न पानी में सुनने की शक्ति है और न वह उन की सहायता करने का सामर्थ्य रखते हैं।

ओर फैलाया हुया हो, ताकि उस के मुँह में पहुँच जाये, जब कि वह उस तक पहुँचने वाला नहीं। और काफ़िरों की पुकार व्यर्थ (निष्फल) ही है।

१५. और अल्लाह ही को सज्दा करता है, चाह या न चाह, वह जो आकाशों तथा धरती में है, और उन की परछाईयाँ[1] भी प्रात: और संध्या।[2]

१६. उन से पुछो: आकाशों तथा धरती का पालनहार कौन है? कह दो: अल्लाह है। कहो कि क्या तुम ने अल्लाह के सिवा उन्हें सहायक बना लिया है जो अपने लिये किसी लाभ का अधिकार नहीं रखते, और न किसी हानि का? उन से कहो: क्या अन्धा और देखने वाला बराबर होता है, या अंधेरे और प्रकाश बराबर होते हैं?[3] अथवा उन्होंने अल्लाह का साझी बना लिया है ऐसों को जिन्होंने अल्लाह के उत्पत्ति करने के समान उत्पत्ति की है, अत: उत्पत्ति का विषय उन पर उलझ गया है? आप कह दें कि अल्लाह ही प्रत्येक चीज़ का उत्पत्ति करने वाला है,[4] और वही अकेला प्रभुत्वशाली है।

१७. उस ने आकाश से जल बरसाया, जिस से वादियाँ (उपत्यकाएँ) अपनी समाई के अनुसार बह पड़ीं। फिर (जल की) धारा के ऊपर झाग आ गया। और जिस चीज़ को वे आभूषण अथवा समान बनाने के लिये अग्नि में तपाते हैं, उस में भी ऐसा ही झाग होता है। इसी प्रकार अल्लाह सत्य तथा असत्य का उदाहरण देता है, फिर जो झाग है वह सूख कर ध्वस्त हो जाता है, और जो चीज़ लोगों को लाभ पहुँचाती है, वह धरती में रह जाती है। इसी प्रकार अल्लाह उदाहरण देता[5] है।

---

[1] अर्थात सब उस के स्वभाविक नियम के आधीन हैं।

[2] यहाँ सज्दा करना चाहिये।

[3] अंधेरे से अभिप्राय कुफ़्र के अंधेरे, तथा प्रकाश से अभिप्राय ईमान का प्रकाश है।

[4] आयत का भावार्थ यह है कि जिस ने इस विश्व की प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति की है। वही वास्तविक पूज्य है। और जो स्वयं उत्पत्ति हो वह पूज्य नहीं हो सकता। इस तथ्य को कुरआन पाक की और भी कई आयतों में प्रस्तुत किया गया है।

[5] इस उदाहरण में सत्य और असत्य के बीच संघर्ष को दिखाया गया है कि वह्यी द्वारा जो सत्य उतारा गया है वह वर्षा के समान है। और जो उस से लाभ प्राप्त करते हैं वह नालों के समान हैं। और सत्य के विरोधी सैलाब के झाग के समान है जो कुछ देर के लिये उभरता है फिर विलय हो जाता है। दूसरे उदाहरण में सत्य को सोने और चाँदी के समान बताया गया है जिसे पिघलाने से मैल उभरता है फिर मैल उड़ता है। इसी प्रकार असत्य विलय हो जाता है। और केवल सत्य रह जाता है।

१८. जिन लोगों ने अपने पालनहार की बात मान ली, उन्हीं के लिये भलाई है। और जिन्हों ने नहीं मानी, तो यदि जो कुछ धरती में है, सब उन का हो जाये, और उस के साथ उस के समान और भी, तो वह उसे (अल्लाह के दण्ड से बचने के लिये) अर्थदण्ड के रूप में दे देंगे। उन्हीं से कड़ा हिसाब लिया जायेगा, तथा उन का स्थान नरक है। और वह बुरा रहने का स्थान है।

१९. तो क्या जो जानता है कि आप के पालनहार की ओर से जो (कुरआन) आप पर उतारा गया है सत्य है, उस के समान है, जो अन्धा है? वास्तव में बुद्धिमान लोग ही शिक्षा ग्रहण करते हैं।

२०. जो अल्लाह से किया वचन[1] पूरा करते हैं, और वचन भंग नहीं करते।

२१. और उन (संबंधों) को जोड़ते हैं, जिन के जोड़ने का अल्लाह ने आदेश दिया है, और अपने पालनहार से डरते हैं, तथा बुरे हिसाब से डरते हैं।

२२. तथा जिन लोगों ने अपने पालनहार की प्रसन्नता के लिये धैर्य से काम लिया, और नमाज़ की स्थापना की, तथा हम ने उन्हें जो कुछ प्रदान किया है उस में से छुपे और खुले तरीक़े से दान करते रहे, तो वही हैं, जिन के लिये परलोक का घर (स्वर्ग) है।

२३. ऐसे स्थायी स्वर्ग जिन में वे और उन के बाप दादा तथा उनकी पत्नियों और संतान में से जो सदाचारी हों प्रवेश करेंगे, तथा फ़रिश्ते उन के पास प्रत्येक द्वार से (स्वागत् के लिये) प्रवेश करेंगे।

२४. (वे कहेंगे): तुम पर शान्ति हो, उस धैर्य के कारण जो तुम ने किया, तो क्या ही अच्छा है, यह परलोक का घर!

२५. और जो लोग अल्लाह से किये वचन को उसे सुदृढ़ करने के पश्चात् भंग कर देते हैं, और अल्लाह ने जिस संबन्ध को जोड़ने का आदेश दिया[2] हैं उसे तोड़ते हैं, और धरती में उपद्रव फैलाते हैं। वही हैं जिन के लिये धिक्कार है, और जिन के लिये बुरा आवास है।

---

[1] भाष्य के लिये देखिये सूरह आराफ़, आयत: १७२।

[2] हदीस में आया है कि जो व्यक्ति यह चाहता हो कि उस की जीविका अधिक, और आयु लम्बी हो तो वह अपने संबंधो के जोड़े। (सहीह बुख़ारी, २०६७, सहीह मुस्लिम, २५५७)

२६. और अल्लाह जिसे चाहे उसे जीविका फैला कर देता है, और जिसे चाहे नाप कर देता है। और वह (काफ़िर) संसारिक जीवन में मगन हैं, तथा संसारिक जीवन परलोक की अपेच्छा तनिक लाभ के सामान के सिवा कुछ भी नहीं है।

२७. और जो काफ़िर हो गये, वह कहते हैं: इस पर इस के पालनहार की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गयी? (हे नबी!) आप कह दें कि वास्तव में अल्लाह जिसे चाहे कुपथ करता है, और अपनी ओर उसी को राह दिखाता है जो उस की ओर ध्यानमग्न हों।

२८. (अर्थात वह) लोग जो ईमान लाये, तथा जिन के दिल अल्लाह के स्मरण से संतुष्ट होते हैं। सुन लो! अल्लाह के स्मरण ही से दिलों को संतोष होता है।

२९. जो लोग ईमान लाये और सदाचार किये, उन के लिये आनन्द[१], और उत्तम ठिकाना है।

३०. इसी प्रकार हम ने आप को एक समुदाय में जिस से पहले बहुत से समुदाय गुज़र चुके हैं, रसूल बना कर भेजा है, ताकि आप उन को वह संदेश सुनायें जो हम ने आप की ओर वह्यी द्वारा भेजा है, और वह अत्यंत कृपाशील को अस्वीकार करते हैं? आप कह दें: वही मेरा पालनहार है, कोई पूज्य नहीं परन्तु वही। मैंने उसी पर भरोसा किया है और उसी की ओर मुझे जाना है।

३१. यदि कोई ऐसा कुरआन होता जिस से पर्वत खिसका[२] दिये जाते, या धरती खण्ड–खण्ड कर दी जाती, या इस के द्वारा मुर्दों से बात की जाती (तो भी वह ईमान नहीं लाते)। बात यह है कि सब अधिकोर अल्लाह ही को हैं, तो क्या जो ईमान लाये हैं, वह निराश नहीं हुये कि यदि अल्लाह चाहता तो सब लोगों को सीधी राह पर कर देता! और काफ़िरों को उन के कर्तूत के कारण बराबर आपदा पहुँचती रहेगी अथवा उन के घर के समीप उतरती रहेगी यहाँ तक कि अल्लाह का वचन[३] आ जाये, और अल्लाह वचन का विरुद्ध नहीं करता।

---

[१] यहाँ ''तूबा'' शब्द प्रयुक्त हुआ है। इस का शाब्दिक अर्थ: सुख और सम्पन्नता है। कुछ भाष्यकारों ने इसे स्वर्ग का एक वृक्ष बताया है जिस का साया बड़ा आनन्ददायक होगा

[२] मक्का के काफ़िर आप से यह माँग करते थे कि यदि आप नबी हैं तो हमारे बाप दादा को जीवित कर दें। ताकि हम उन से बात करें। या मक्का के पर्वतों को खिसका दें। कुछ मुसलमानों के दिलों में भी यह इच्छा हुई कि ऐसा हो जाता है तो संभव है कि वह ईमान ले आयें। उसी पर यह आयत उतरी। (फ़त्हुल बायान, भाष्य सूरह रअद)

[३] वचन से अभिप्राय प्रलय के आने का वचन है।

३२. और आप से पहले भी बहुत से रसूलों का परिहास किया गया है, तो हम ने काफ़िरों को अवसर दिया। फिर उन्हें धर लिया, तो मेरी यातना कैसी रही?

३३. तो क्या जो प्रत्येक प्राणी के कर्तूत से अव्गत है, और उन्हों ने (उस) अल्लाह का साझी बना लिया है, आप कहिये कि उन के नाम बताओ। या तुम उसे उस चीज़ से सूचित कर रहे हो जिसे वह धरती में नहीं जानता, या ओछी बात[१] करते हो? बल्कि काफ़िरों के लिये उन के छल सुशोभित बना दिये गये हैं। और सीधी राह से रोक दिये गये हैं, और जिसे अल्लाह कुपथ कर दे तो उस को कोई राह दिखाने वाला नहीं।

३४. उन्हीं के लिये यातना है संसारिक जीवन में। और निःसंदेह परलोक की यातना अधिक कड़ी है। और उन को अल्लाह से कोई बचाने वाला नहीं।

३५. उस स्वर्ग का उदाहरण जिस का वचन आज्ञाकारियों को दिया गया है उस में नहरें बहती हैं, उस के फल सतत हैं, और उस की छाया। यह उन का परिणाम है जो अल्लाह से डरे, और काफ़िरों का परिणाम नरक है।

३६. (हे नबी!) जिन को हम ने पुस्तक दी है वह उस (कुरआन) से प्रसन्न हो रहे हैं[२] जो आप की ओर उतारा गया है। और सम्प्रदायों में कुछ ऐसे भी हैं, जो नहीं मानते।[३] आप कह दें कि मुझे आदेश दिया गया है कि अल्लाह की इबादत (वंदना) करूँ, और उस का साझी न बनाऊँ। मैं उसी की ओर बुलाता हूँ, और उसी की ओर मुझे जाना है।[४]

३७. और इसी प्रकार हम ने इस को अर्बी आदेश के रूप में उतारा है[५] और यदि आप उन की आकांक्षाओं का अनुसरण करेंगे, इसके पश्चात् कि आप के पास ज्ञान आ गया, तो अल्लाह से आप का कोई सहायक और रक्षक न होगा।

---

[१] अर्थात निर्मूल और निराधार।

[२] अर्थात वह यहूदी, ईसाई और मूर्तिपूजक जो इस्लाम लाये।

[३] अर्थात जो अब तक मुसलमान नहीं हुये।

[४] अर्थात कोई ईमान लाये या न लाये, मैं तो कदापि किसी को उस का साझी नहीं बना सकता।

[५] ताकि वह बहाना न करें कि हम कुरआन को समझ नहीं सके, इसलिये कि सारे नबियों पर जो पुस्तकें उतरीं वह उन्हीं की भाषाओं में थीं।

३८. और हम ने आप से पहले बहुत से रसूलों को भेजा है, और उन की पत्नियाँ तथा बाल–बच्चे[१] बनाये। किसी रसूल के बस में नहीं है कि अल्लाह की अनुमति बिना कोई निशानी ला दे। और हर वचन के लिये एक निर्धारित समय है।[२]

३९. वह जो (आदेश) चाहे मिटा देता है और जो चाहे शेष (साबित) रखता है। उसी के पास मूल[३] पुस्तक है।

४०. और (हे नबी!) यदि हम आप को उस में से कुछ दिखा दें जिस की धमकी हम ने उन (काफ़िरों) को दी है, अथवा आप को (पहले ही) मौत दे दें, तो आप का काम उपदेश पहुँचा देना है। और हिसाब लेना हमारा काम है।

४१. क्या वे नहीं देखते कि हम धरती को उस के किनारों से कम करते[४] जा रहे हैं। और अल्लाह ही आदेश देता है कोई उस के आदेश का प्रत्यालोचन करने वाला नहीं, और वह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

४२. तथा उस से पहले (भी) लोगों ने रसूलों के साथ षड्यंत्र रचा, और षड्यंत्र (को निष्फल करने) का सब अधिकार तो अल्लाह को है, वह जो कुछ प्रत्येक प्राणी करता है, उसे जानता है। और काफ़िरों को शीघ्र ही ज्ञान हो जायेगा कि परलोक का घर किस के लिये है?

४३. (हे नबी!) जो काफ़िर हो गये, वे कहते हैं कि आप अल्लाह के भेजे हुये नहीं हैं। आप कह दें: मेरे तथा तुम्हारे बीच अल्लाह की गवाही तथा उन की गवाही जिन्हें किताब का ज्ञान दिया गया काफ़ी है ।[५]

*****

---

[१] अर्थात वह मनुष्य थे, नूर या फ़रिश्ते नहीं।

[२] अर्थात अल्लाह का वादा अपने समय पर पूरा होकर रहेगा उस में देर–सवेर नहीं होगी।

[३] अर्थात (लौहे मह्फ़ूज़) जिस में सब कुछ अंकित है।

[४] अर्थात मुसलमानों की विजय द्वारा काफ़िरों के देश में कमी करते जा रहे हैं।

[५] अर्थात उन अहले किताब (यहूदी और ईसाई) की जिन को अपनी पुस्तकों से नबी मुहम्मद ((सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) सल्लम) के आने की शुभसूचना का ज्ञान हुआ तो वह इस्लाम ले आये। जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम तथा नजाशी (हब्शा देश का राजा), और तमीम दारी इत्यादि। और आप के रसूल होने की गवाही देते हैं।

सूरह इब्राहीम – १४

सूरह इब्राहीम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ५२ आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत नं. ३५ में इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की दुआ का वर्णन है। इसी लिये इस का यह नाम है।
- इस में रसूल तथा कुरआन के भेजने का कारण बताया गया है। और नबियों के कुछ एतिहास प्रस्तुत किये गये हैं। जिन से रसूलों के विरोधियों के दुष्परिणाम सामने आते हैं। और परलोक में भी उस दण्ड की झलक दिखायी गई है जिस से रोयें खड़े हो जाते हैं।
- इस में बताया गया है कि ईमान वाले कैसे सफल होंगे, तथा काफ़िरों को अल्लाह के उपकार का आभारी न होने पर सावधान करने के साथ ही ईमान वालों को अल्लाह का कृतज्ञ होने की नीति बतायी गयी है।
- इस में इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) कि उस एतिहासिक प्रार्थना का वर्णन है जो उन्हों ने अपनी संतति को शिर्क से सुरक्षित रखने के लिये की थी। किन्तु आज उन की संतान जो कुछ कर रही है वह उन की दुआ के सर्वथा विपरीत हैं।
- और अन्त में प्रलय और उस की यातना का भ्याव चित्रण किया गया है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. अलिफ़, लाम, रा। यह (कुरआन) एक पुस्तक है, जिसे हम ने आप की ओर अव्तरित किया है, ताकि आप लोगों को अंधेरों से निकाल कर प्रकाश की ओर लायें, उनके पालनहार की अनुमति से, उस की राह की ओर जो बड़ा प्रबल सराहा हुआ है।

२. अल्लाह की ओर। जिस के अधिकार में आकाश और धरती का सब कुछ है। तथा काफ़िरों के लिये कड़ी यातना के कारण विनाश है।

३. जो संसारिक जीवन को परलोक पर प्रधानता देते हैं, और अल्लाह की डगर (इस्लाम) से रोकते हैं, और उसे कुटिल बनाना चाहते हैं, वही कुपथ में दूर निकल गये हैं।

४. और हमने किसी (भी) रसूल को उस की जाति की भाषा ही में भेजा, ताकि वह उन के लिये बात उजागर कर दे। फिर अल्लाह जिसे चाहता है कुपथ करता है और जिसे चाहता है सुपथ दर्शा देता है। और वही प्रभुत्वशाली और हिक्मत वाला है।

५. और हमने मूसा को अपनी आयतों (चमत्कारों) के साथ भेजा, ताकि अपनी जाति को अन्धेरों से निकाल कर प्रकाश की ओर लायें। और उन्हें अल्लाह के दिनों (पुरस्कार और यातना) का स्मरण कराओ। वास्तव में इस में कई निशानियाँ हैं, प्रत्येक अति सहनशील कृतज्ञ के लिये।

६. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति से कहा: अपने ऊपर अल्लाह के पुरस्कार को याद करो, जब उसने तुम को फ़िरओनियों से मुक्त किया, जो तुम को घोर यातना दे रहे थे। और तुम्हारे पुत्रों को बध कर रहे थे और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रहने देते[१] थे, और इस में तुम्हारे पालनहार की ओर से एक महान् परीक्षा थी।

[१] ताकि उन के पुरुषों की अधिक संख्या से अपने राज्य के लिये भय न हो। और उन की स्त्रियों का अपमान करें।

७. तथा (याद करो) जब तुम्हारे पालनहार ने घोषणा कर दी कि यदि तुम कृतज्ञ बनोगे तो तुम्हें और अधिक दूँगा। तथा यदि अकृतज्ञ रहोगे तो वास्तव में मेरी यातना बहुत कड़ी है।

८. और मूसा ने कहा: यदि तुम और सभी लोग जो धरती में हैं कुफ़्र करें, तो भी अल्लाह निरीह तथा[1] सराहा हुआ है।

९. क्या तुम्हारे पास उन का समाचार नहीं आया, जो तुम से पहले थे: नूह तथा आद और समूद की जाति का और जो उन के पश्चात् हुये जिन को अल्लाह ही जानता है? उन के पास उन के रसूल प्रत्यक्ष प्रमाण लाये, तो उन्हों ने अपने हाथ अपने मुखों में दे[2] लिये, और कह दिया कि हम उस संदेश को नहीं मानते, जिस के साथ तुम भेजे गये हो। और वास्तव में उस के बारे में संदेह में हैं, जिस की ओर हमें बुला रहे हो (तथा) द्विधा में हैं।

१०. उन के रसूलों ने कहा: क्या उस अल्लाह के बारे में संदेह है, जो आकाशों तथा धरती का रचयिता है। वह तुम्हें बुला[3] रहा है ताकि तुम्हारे पाप क्षमा कर दे, और तुम्हें एक निर्धारित[4] अवधि तक अवसर दे। उन्होंने कहा: तुम तो हमारे ही जैसे एक मानव पुरुष हो, तुम चाहते हो कि हमें उस से रोक दो, जिस की पूजा हमारे बाप–दादा कर रहे थे। तुम हमारे पास कोई प्रत्यक्ष प्रमाण लाओ।

११. उन से उन के रसूलों ने कहा: हम तुम्हारे जैसे मानव–पुरुष ही हैं, परन्तु अल्लाह अपने भक्तों में से जिस पर चाहे उपकार करता है, और हमारे बस में नहीं है कि अल्लाह की अनुमति के बिना कोई प्रमाण ला दें। और अल्लाह ही पर ईमान वालों को भरोसा करना चाहिये।

१२. और क्या कारण है कि हम अल्लाह पर भरोसा न करें, जब कि उस ने हमें हमारी राहें दर्शा दी हैं? और हम अवश्य उस दुःख को सहन करेंगे, जो तुम हमें दोगे, और अल्लाह ही पर भरोसा करने वालों को निर्भर रहना चाहिये।

---

[1] हदीस में आया है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है: हे मेरे बंदो! यदि तुम्हारे अगले–पिछले तथा सब मनुष्य और जिन्न संसार के सब से बुरे मनुष्य के बराबर हो जायें तो भी मेरे राज्य में कोई कमी नहीं आयेगी।(मुस्लिम:२५७७)

[2] यह ऐसी ही भाषा शैली है, जिसे हम अपनी भाषा में बोलते हैं कि कानों पर हाथ रख लिया, और दाँतों से उंगली दबा ली।

[3] अपनी आज्ञा पालन की ओर।

[4] अर्थात मरण तक संसारिक यातना से सुरक्षित रखे। (क़ुर्तुबी)

१३. और काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहा: हम अवश्य तुम्हें अपने देश से निकाल देंगे, अथवा तुम्हें हमारे पंथ में आना होगा। तो उनके पालनहार ने उन की ओर वह्यी की, कि हम अवश्य अत्याचारियों का विनाश कर देंगे।

१४. और तुम्हें उन के पश्चात् धरती में बसा देंगे, यह उस के लिये है, जो मेरे महिमा से खड़े[1] होने से डरा, तथा मेरी चेतावनी से डरा।

१५. और उन (रसूलों) ने विजय की प्रार्थना की, तो सभी उद्दंड विरोधी असफल हो गये।

१६. उस के आगे नरक है और उसे पीप का पानी पिलाया जायेगा।

१७. वह उसे थोड़ा–थोड़ा गले से उतारेगा, मगर उतार नहीं पायेगा। और उस के पास प्रत्येक स्थान से मौत आयेगी जब कि वह मरेगा नहीं। और उस के आगे भीषण यातना होगी।

१८. जिन लोगों ने अपने पालनहार के साथ कुफ़्र किया उन के कर्म उस राख के समान हैं, जिसे आँधी के दिन की प्रचण्ड वायु ने उड़ा दिया हो। यह लोग अपने किये में से कुछ भी नहीं पा सकेंगे, यही (सत्य से) दूर का कुपथ है।

१९. क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह ही ने आकाशों तथा धरती की रचना सत्य के साथ की है, यदि वह चाहे तो तुम्हें ले जाये, और नयी उत्पत्ति ला दे?

२०. और वह अल्लाह पर कठिन नहीं है।

२१. और सब अल्लाह के सामने खुल कर[2] आ जायेंगे, तो निर्बल लोग उन से कहेंगे जो बड़े बन रहे थे कि हम तुम्हारे अनुयायी थे, तो क्या तुम अल्लाह की यातना से बचाने के लिये हमारे कुछ काम आ सकोगे? वे कहेंगे: यदि अल्लाह ने हमें मार्गदर्शन दिया होता, तो हम अवश्य तुम्हें मार्गदर्शन दिखा देते। अब तो समान है, चाहे हम अधीर हों, या धैर्य से काम लें, हमारे बचने का कोई उपाय नहीं है।

२२. और शैतान कहेगा, जब निर्णय कर दिया[3] जायेगा: वास्तव में अल्लाह ने तुम्हें सत्य वचन दिया था, और मैंने तुम्हें वचन दिया तो अपना वचन भंग कर दिया, और

---

[1] अर्थात संसार में मेरी महिमा का विचार कर के सदाचार किया।

[2] अर्थात प्रलय के दिन अपनी समाधियों से निकल कर।

[3] स्वर्ग और नरक के योग्य का निर्णय कर दिया जायेगा।

मेरा तुम पर कोई दबाव नहीं था, परन्तु यह कि मैंने तुम को (अपनी ओर) बुलाया, और तुमने मेरी बात स्वीकार कर ली। अत: मेरी निन्दा न करो, स्वयं अपनी निन्दा करो, न मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हुँ। वास्तव में मैं ने उसे अस्वीकार कर दिया, जो इस से पहले[१] तुम ने मुझे अल्लाह का साझी बनाया था। निस्संदेह अत्याचारियों के लिये दु:ख दायी यातना है।

२३. और जो ईमान लाये, और सदाचार करते रहे, उन्हें ऐसे स्वर्गों में प्रवेश दिया जायेगा जिन में नहरें बहती होंगी। वह अपने पालनहार की अनुमति से उस में सदा रहने वाले होंगे, और उसमें उन का स्वागत् यह होगा: तुम पर शान्ति हो।

२४. (हे नबी!) क्या आप नहीं जानते कि अल्लाह ने कलिमा तय्येबा[२] (पवित्र शब्द) का उदाहरण एक पवित्र वृक्ष से दिया है, जिस की जड़ (भूमि में) सुदृढ़ स्थित है, और उसकी शाखा आकाश में है?

२५. वह अपने पालनहार की अनुमति से प्रत्येक समय फल दे रहा है। और अल्लाह लोगों को उदाहरण दे रहा है, ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें।

२६. और बुरी[३] बात का उदाहरण एक बुरे वृक्ष जैसा है, जिसे धरती के ऊपर से उखाड़ दिया गया हो, जिसके लिये कोई स्थिरता नहीं है।

२७. अल्लाह ईमान वालों को स्थिर[४] कथन के सहारे लोक तथा परलोक में स्थिरता प्रदान करता है, तथा अत्याचारियों को कुपथ कर देता है, और अल्लाह जो चाहता है, करता है।

---

[१] संसार में।

[२] (कलिमा तय्येबा) से अभिप्रत ''ला इलाहा इल्लल्लाह'' है। जो इस्लाम का धर्म सूत्र है। इस का अर्थ यह है कि अल्लाह के सिवा कोइ सच्चा पूज्य नहीं है। और यही एकेश्वरवाद का मूलाधार है। अब्दुल्ला बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) कहते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि व सल्लम के पास थे कि आप ने कहा: मुझे ऐसा वृक्ष बताओ जो मुसलमान के समान होता है। जिस का पत्ता नहीं गिरता, तथा प्रत्येक समय अपना फल दिया करता है? इब्ने उमर ने कहा: मेरे मन में यह बात आयी कि वह खजूर का वृक्ष है। और अबू बक्र तथा उमर को देखा कि बोल नहीं रहे हैं इसलिये मैं ने; भी बोलना अच्छा नहीं समझा। जब वे कुछ नहीं बोले, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: वह कजूर का वृक्ष है। (संक्षिप्त अनुवाद के साथ, बुख़ारी : ४६९८, मुस्लिम : २८११)

[३] अर्थात शिर्क तथा मिश्रणवाद की बात।

[४] स्थित तथा दृढ़ कथन से अभिप्रेत ''ला इलाहा इल्लल्लाह'' है। (कुर्तुबी) बराअ बिन आज़िब रज़िअल्लाहु अन्हु कहते हैं कि आप ने कहा: मुसलमान से जब कब्र में प्रश्न किया जाता है, तो वह ''ला इलाहा इल्लल्लाह, मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' की

२८. क्या आपने उन्हें[1] नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह के अनुग्रह को कुफ़्र से बदल दिया, और अपनी जाति को विनाश के घर में उतार दिया।

२९. (अर्थात) नरक में, जिस में वह झोंके जायेंगे। और वह रहने का बुरा स्थान है।

३०. और उन्हों ने अल्लाह के साझी बना लिये, ताकि उसकी राह (सत्धर्म) से कुपथ कर दें। आप कह दें कि तनिक आनन्द ले लो, फिर तुम्हें नरक की ओर ही जाना है।

३१. (हे नबी!) मेरे उन भक्तों से कह दो, जो ईमान लाये हैं, कि नमाज़ की स्थापना करें और उसमें से जो हम ने प्रदान किया है, छुपे और खुले तरीक़े से दान करें, उस दिन के आने से पहले जिस में न कोई क्रय-विक्रय होगा, और न कोई मैत्री।

३२. और अल्लाह वही है, जिसने तुम्हारे लिये आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति की, और आकाश से जल बरसाया फिर उस से तुम्हारी जीविका के लिये अनेक प्रकार के फल निकाले। और नौका को तुम्हारे वश में किया, ताकि सागर में उस के आदेश से चले, और नदियों को तुम्हारे लिये वशवर्ती किया।

३३. तथा तुम्हारे लिये सूर्य और चाँद को काम में लगाया जो दोनों निरन्तर चल रहे हैं। और तुम्हारे लिये रात्रि और दिवस को वश में[2] कर दिया।

३४. और तुम्हें उस सब में से कुछ दिया, जो तुम ने माँगा।[3] और यदि तुम अल्लाह के पुरस्कारों की गणना करना चाहो, तो भी नहीं कर सकते। वास्तव में मनुष्य बड़ा अत्याचारी कृतघ्न (ना शुकरा) है।

३५. तथा (याद करो) जब इब्राहीम ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! इस नगर (मक्का) को शान्ति का नगर बना दे, और मुझे तथा मेरे पुत्रों को मूर्ति पूजा से बचा ले।

गवाही देता है। अर्थात अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं। इस के बारे में यह आयत है। (सहीह बुख़ारी : ४६९९)

[1] अर्थात: मक्का के मुश्रिक, जिन्हों ने आप का विरोध किया। (देखिये : सहीह बुख़ारी : ४७००)

[2] वश में करने का अर्थ यह है कि अल्लाह ने इन के ऐसे नियम बना दिये हैं, जिन के कारण यह मानव के लिये लाभदायक हो सकें।

[3] अर्थात तुम्हारी प्रत्येक प्राकृतिक माँग पूरी की, और तुम्हारे जीवन की आवश्यकता के सभी संसाधनों की व्यवस्था कर दी।

३६. मेरे पालनहार! इन मूर्तियों ने बहुत से लोगों को कुपथ किया है, अत: जो मेरा अनुयायी हो, वही मेरा है। और जो मेरी अवैज्ञा करे, तो वास्तव में तू अति क्षमाशील दयावान् है।

३७. हमारे पालनहार! मैं ने अपनी कुछ संतान मरुस्थल की एक वादी (उपत्यका) में तेरे सम्मानित घर (काबा) के पास बसा दी है, ताकि वह नमाज़ की स्थापना करे। अत: लोगों के दिलों को उन की ओर आकर्षित कर दे, और उन्हें जीविका प्रदान कर, ताकि वह कृतज्ञ हों।

३८. हमारे पालनहार! तू जानता है, जो हम छुपाते और जो व्यक्त करते हैं। और अल्लाह से कुछ छुपा नहीं रहता, धरती में और न आकाशों में।

३९. सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है, जिस ने मुझे बुढ़ापे में (दो पुत्र) इस्माईल और इस्हाक़ प्रदान किये। वास्तव में मेरा पालनहार प्रार्थना अवश्य सुनने वाला है।

४०. मेरे पालनहार! मुझे नमाज़ की स्थापना करने वाला बना दे, तथा मेरी संतान को। हे मेरे पालनहार! और मेरी प्रार्थना स्वीकार कर।

४१. हे हमारे पालनहार! मुझे क्षमा कर दे, तथा मेरे माता–पिता और ईमान वालों को, जिस दिन हिसाब लिया जायेगा।

४२. और तुम कदापि अल्लाह को उससे अचेत न समझो जो अत्याचारी कर रहे हैं। वह तो उन्हें उस[१] दिन के लिये टाल रहा है, जिस दिन आँखें खुली रह जायेंगी।

४३. वह दौड़ते हुये अपने सिर ऊपर किये हुये होंगे, उन की आँखें उन की ओर नहीं फिरेंगी, और उन के दिल गिरे[२] हुये होंगे।

४४. (हे नबी!) आप लोगों को उस दिन से डरा दें, जब उन पर यातना आ जायेगी। तो अत्याचारी कहेंगे: हमारे पालनहार! हमें कुछ समय तक अवसर दे, हम तेरी बात (आमंत्रण) स्वीकार कर लेंगे, और रसूलों का अनुसरण करेंगे, क्या तुम वही नहीं हो जो इस से पहले शपथ ले रहे थे कि हमारा पतन होना ही नहीं है?

---

[१] अर्थात प्रलय के दिन के लिये।

[२] यहाँ अर्बी भाषा का शब्द ''हवाअ'' प्रयुक्त हुआ है। जिस का एक अर्थ शून्य (क़ाली), अर्थात भय के कारण उसे अपनी सुध न होगी।

४५. जब कि तुम उन्हीं की बस्तियों में बसे हो, जिन्हों ने अपने ऊपर अत्याचार किया, और तुम्हारे लिये उजागर हो गया है कि हमने उन के साथ क्या किया? और हम ने तुम्हें बहुत से उदाहरण भी दिये हैं।

४६. और उन्हों ने अपना षड्यंत्र रच लिया तथा उन का षड्यंत्र अल्लाह के पास[1]। और उन का षड्यंत्र ऐसा नहीं था कि उस से पर्वत टल जाये।

४७. अत: कदापि यह न समझें कि अल्लाह अपने रसूलों से किया वचन भंग करने वाला है, वास्तवम में अल्लाह प्रभुत्वशाली बदला लेने वाला है।

४८. जिस दिन यह धरती दूसरी धरती से, तथा आकाश बदल दिये जायेंगे, और सब अल्लाह के समक्ष[2] उपस्थित होंगे, जो अकेला प्रभुत्वशाली है।

४९. और आप उस दिन अपराधियों को ज़ंजीरों में जकड़े हुये देखेंगे।

५०. उनके वस्त्र तारकोल के होंगे, और उन के मुखों पर अग्नि छायी होगी।

५१. ताकि अल्लाह प्रत्येक प्राणी को उसके किये का बदला दे। नि:संदेह अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

५२. यह मुनष्यों के लिये एक संदेश है, और ताकि इस के द्वारा उन को सावधान किया जाये। और ताकि वे जान लें कि वही एक सत्य पूज्य है और ताकि मतिमान लोग शिक्षा ग्रहण करें।

*****

[1] अर्थात अल्लाह उस के निष्फल करना जानता है।

[2] अर्थात अपनी क़ब्रों (समाधियों) से निकल कर।



सूरह हिज्र – १५



सूरह हिज्र के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ९९ आयतें है।

- इस सूरह की आयत नं. ८०–८७ में हिज्र के वासी: (समूद जाति) के अपने रसूलों के झुठलाने के कारण विनाश की चर्चा की गई है। इसलिये इस का नाम (सूरह हिज्र) है।
- इस की आयत १ में कुरआन की विशेषता का वर्णन है। तथा २–१५ में रिसालत के विरोधियों के संदेहों को दूर किया गया है। फिर आयत १६ से २५ तक में उन निशानियों की ओर संकेत किया गया है जिन पर विचार करने से वह्यी तथा रिसालत और हश्र से संबंधित संदेहों का निवारण हो जाता है।
- आयत २६–४४ में इब्लीस के कुपथ हो जाने का वर्णन है जो मनुष्य को कुपथ करने के लिये वह्यी तथा रिसालत के बारे में संदेह पैदा कर के उसे सत्य से दूर रखना चाहता है जिस का परिणाम नरक है। तथा आयत ४५ से ४८ तक उन के अच्छे परिणाम को बताया गया है जो उस की बात में नहीं आये और अल्लाह से डरते तथा शिर्कऔर उस की अवैज्ञा से बचते रहे।
- आयत ४९–८४ में नबियों के इतिहास से यह बताया गया है कि अल्लाह के सदाचारी भक्तों पर उस की दया होती है और दूराचारियों पर यातना के कोड़े बरसते हैं।
- आयत ८५–९९ में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा सदाचारियों के लिये दिलासा का सामान भी है और यह निर्देश भी है कि जो माया मोह में मगन हैं उन के आर्थिक धन की ओर लालसा से न देखें बल्कि उस बड़े धन का आदर करें जो कुरआन के रूप में उन्हें प्रदान किया गया है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. अलिफ़, लाम, रा। वह इस पुस्तक, तथा खुले कुरआन की आयतें है।

२. (एक समय आयेगा), जब काफ़िर यह कामना करेंगे कि क्या ही अच्छा होता यदि वे मुसलमान[1] होते?

३. (हे नबी!) आप उन्हें छोड़ दें, वह खाते, तथा आनन्द लेते रहें, और उन्हें आशा निश्चेत किये रहे, फिर शीघ्र ही वह जान लेंगे।[2]

४. और हम ने जिस बस्ती को भी ध्वस्त किया उस के लिये एक निश्चित अवधि अंत थी।

५. कोई जाति न अपनी निश्चित् अवधि से आगे जा सकती है, और न पीछे रह सकती।

६. तथा उन (काफ़िरों) ने कहा: हे वह व्यक्ति जिस पर यह शिक्षा (कुरआन) उतारा गया है! वास्तव में तू पागल है।

७. क्यों हमारे पास फ़रिश्तों को नहीं लाता यदि तू सचों में से है?

८. जब कि हम फ़रिश्तों को सत्य (निर्णय) के साथ ही[3] उतारते है, और उन्हें उस समय कोई अवसर नहीं दिया जाता।

९. वास्तव में हम ने ही यह शिक्षा (कुरआन) उतारी है, और हम ही उस के रक्षक[4] हैं।

---

[1] ऐसा उस समय होगा जब फ़रिश्ते उन की आत्मा निकालने आयेंगे, और उन को उन का नरक का स्थान दिखा देंगे। और कयामत के दिन तो ऐसी दूर्दशा होगी कि धूल हो जाने की कामना करेंगे।

[2] अपने दुष्परिणाम का।

[3] अर्थात यातनाओं के निर्णय के साथ।

[4] यह इतिहासिक सत्य है। इस विश्व के धर्म ग्रंथों में कुरआन ही एक ऐसा धर्म ग्रंथ है जिस में उस के अवतरित होने के समय से अब तक एक अक्षर तो क्या एक मात्रा का भी परिवर्तन नहीं हुआ। और न हो सकता है। यह विशेषता इस विश्व के किसी भी धर्म ग्रंथ को प्राप्त नहीं है। तौरात हो अथवा इंजील या इस विश्व के अन्य धर्म शास्त्र हो, सब में इतने परिवर्तन किये गये हैं कि सत्य मूल धर्म की पहचान असम्भव हो गयी है।

इसी प्रकार इस (कुरआन) की व्याख्या जिसे हदीस कहा जाता है वह भी सुरक्षित है। और उस का पालन किये बिना किसी का जीवन इस्लामी नहीं हों सकता। क्योंकि कुरआन का आदेश है कि रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तुम्हें जो दें उस को ले लो। और जिस से रोक दें उस के रुक जाओ। (देखिये : सूरह हश्र आयत नं. : ७)

१०. और हम ने आप से पहले भी प्राचीन (विगत) जातियों में रसूल भेजे।
११. और उन के पास जो भी रसूल आया, परन्तु वह उस के साथ परिहास करते रहे।
१२. इसी प्रकार हम इसे[1] अपराधियों के दिलों में पुरो देते है।
१३. वे उस पर ईमान नहीं लाते, और प्रथम जातियों से यही रीति चली आ रही है।
१४. और यदि हम उन पर आकाश का कोई द्वार खोल देते, फिर वह उस में चढ़ने लगते।
१५. तब भी वह यही कहते कि हमारी आँखे धोखा खा रही हैं, बल्कि हम पर जादू कर दिया गया है।
१६. हम ने आकाश में राशि चक्र बनाये हैं, और उसे देखने वालों के लिये सुसिज्ज्ञत किया है।
१७. और उसे प्रत्येक धिक्कारे हुये शैतान से सुरक्षित किया है।
१८. परन्तु जो (शैतान) चोरी से सुनना चाहे, तो एक खुली ज्वाला उस का पीछा करती[2] है।
१९. और हम ने धरती को फैलाया और उस में पर्वत बना दिये, और उस में हम ने प्रत्येक उचित चीज़े उगायीं।
२०. और हम ने उस में तुम्हारे लिये जीवन के संसाधन बना दिये, तथा उन के लिये जिन के जीविका दाता तुम नहीं हो।
२१. और कोई चीज़ ऐसी नहीं है, जिस के कोष हमारे पास न हों, और हम उसे एक निश्चित मात्रा ही में उतारते हैं।
२२. और हम ने जलभरी वायुओं को भेजा, फिर आकाश से जल बरसाया, और उसे तुम्हें पिलाया, तथा तुम उस के कोषाधिकारी नहीं हो।

कुरआन कहता है कि हे नबी! अल्लाह ने आप पर कुरआन इस लिये उतारा है कि आप लोगों के लिये उस की व्याख्या कर दें। (सूरह नह्ल, आयत नं. : ४४) जिस व्याख्या से नमाज़, व्रत आदि □लामी अनिवार्य कर्तव्यों की विधि का ज्ञान होता है। इसी लिये उस को सुरक्षित किया गया है। और हम हदीस के एक–एक रावी के जन्म और मौत का समय और उस की पूरी दशा को जानते है। और यह भी जानते हैं कि वह विश्वासनीय है या नहीं। इस प्रकार ह मयह कह सकते हैं कि इस संसार में इस्लाम के सिवा कोईधर्म ऐसा नहीं है जिस की मूल पुस्तकें तथा उस के नबी की सारी बातें सुरक्षित हों।

[1] अर्थात् रसूलों के साथ परिहास को, अर्तात उसे इस का दण्ड देंगे।

[2] शैतान चोरी से फ़रिश्तों की बात सुनने का प्रयास करते हैं। तो ज्वलंत उल्का उन्हें मारता है। अधिक विवरण के लिये देखिये: (सूरह मुल्क, आयत नं. : ५)

२३. तथा हम ही जीवन देते, तथा मारते हैं, और हम ही सब के उत्तराधिकारी हैं।
२४. तथा तुम में से विगत लोगों को जानते हैं और भविष्य के लोगों को भी जानते हैं।
२५. और वास्तव मे आप का पालनहार ही उन्हें एकत्र करेगा[1], निश्चय वह सब गुण और सब कुछ जानने वाला है।
२६. और हम ने मनुष्य को सड़े हुये कीचड़ के सूखे गारे से बनाया।
२७. और इस से पहले जिन्नों को हम ने अग्नि की ज्वाला से पैदा किया।
२८. और (याद करो) जब आप के पालनहार ने फ़रिश्तों से कहा: मैं एक मनुष्य उत्पन्न करने वाला हूँ, सड़े हुये कीचड़ के सूखे गारे से।
२९. तो जब मैं उसे पूरा बना दूँ, और उस में अपनी आत्मा फूँक दूँ, तो उस के लिये सज्दे में गिर जाना।[2]
३०. अत: उन सब फ़रिश्तों ने सज्दा किया।
३१. इब्लीस के सिवा। उस ने सज्दा करने वालों का साथ देने से इन्कार कर दिया।
३२. अल्लाह ने पूछा: हे इब्लीस! तुझे क्या हुआ कि सज्दा करने वालों का साथ नहीं दिया?
३३. उस ने कहा: मैं ऐसा नहीं हूँ कि एक मनुष्य को सज्दा करूँ, जिसे तू ने सड़े हुये कीचड़ के सूखे गारे से पैदा किया है।
३४. अल्लाह ने कहा: यहाँ से निकल जा, वास्तव में तू धिक्कारा हुआ है।
३५. और तुझ पर धिक्कार है प्रतिकार (प्रलय) के दिन तक।
३६. (इब्लीस) ने कहा[3]: मेरे पालनहार! तो फिर मुझे उस दिन तक अवसर दे, जब सभी पुन: जीवित किये जायेगे।
३७. अल्लाह ने कहा: तुझे अवसर दे दिया गया है।
३८. विध्दित समय के दिन तक के लिये।

---

[1] अर्थात् पअलय के दिन हिसाब के लिये।

[2] फरिश्तों के लिये आदम का सजदा अल्लाह के आदेश से उन की परीक्षा के लिये था किन्तु इस्लाम में मनुष्य के लिये किसी मनुष्य या वस्तु को सजदा करना शिर्क और अक्षम्य पाप है। (सूरह, हा,मीम, सज्दा: आयत नं. : ३७)

[3] अर्थात फ़रिश्ते परीक्षा में सफल हुये और इब्लीस असफल रहा। क्योंकि उस ने आदेश पा पालन न कर के अपनी मनमानी की। इसी प्रकार वही भी हैं जो अल्लाह की बात न मान कर मनमानी करते है।

३९. वह बोला: मेरे पालनहार! तेरे मुझ को कुपथ कर देने के कारण, मैं अवश्य उन के लिये धरती में (तेरी अवज्ञा को) मनोरम बना दूँगा, और उन सभी को कुपथ कर दूँगा।

४०. उन में से तेरे शुद्ध भक्तों के सिवा।

४१. अल्लाह ने कहा: यही मुझ तक (पहुँचने की) सीधी राह है।

४२. वस्तुत: मेरे भक्तों पर तेरा कोई अधिकार नहीं[1] चलेगा, सिवाये उस के जो कुपथों में से तेरा अनुसरण करे।

४३. और वास्तव में उन सब के लिये नरक का वचन है।

४४. उस (नरक) के सात द्वार हैं, और उन में से प्रत्येक द्वार के लिये एक विभाजित भाग[2] है।

४५. वास्तव में आज्ञाकारी लोग स्वर्गों तथा स्रोतों में होंगे।

४६. (उन से कहा जायेगा) इस में प्रवेश कर जाओ, शान्ति के साथ निर्भय हो कर।

४७. और हम निकाल देंगे उन के दिलों में जो कुछ बैर होगा। वे भाई भाई होकर एक दूसरे के सम्मुख तख़्तों के ऊपर रहेंगे।

४८. न उस में उन्हें कोई थकान होगी और न वहाँ से निकाले जायेंगे।

४९. (हे नबी!) आप मेरे भक्तों को सूचित कर दें कि वास्तव में, मैं बड़ा क्षमाशील दयावान्[3] हूँ।

५०. और मेरी यातना ही दु:खदायी यातना है।

५१. और आप उन्हें इब्राहीम के अतिथियों के बारे में सूचित कर दें।

५२. जब वह इब्राहीम के पास आये तो सलाम किया। उस ने कहा: वास्तव में हम तुम से डर रहे हैं।

५३. उन्होंने कहा: डरो नहीं, हम तुम्हें एक ज्ञानी बालक की शुभसूचना दे रहे है।

---

[1] अर्थात जो बन्दे कुरआन तथा हदीस (नबी का तरीक़ा) का ज्ञान रखेंगे उन पर शैतान का प्रभाव नहीं होगा। और जो इन दोनों के ज्ञान से जाहिल होंगे वही उस के झाँसे में आयेंगे। किन्तु जो तौबा कर लें तो उन को क्षमा कर दिया जायेगा।

[2] अर्थात् इब्लीस के अनुयायी अपने कुकर्मों के अनुसार नरक के द्वार में प्रवेश करेंगे।

[3] हदीस में है कि अल्लाह ने सौ दया पैदा की, निन्नावे अपने पास रख लीं। और एक को पूरे संसार के लिये भेज दिया। तो यदि काफ़िर उस की पूरी दया जान जाये तो स्वर्ग से निराश नहीं होगा। और ईमान वाला उस की पूरी यातना जान जाये तो नरक से निर्भर नहीं होगा। (सहीह बुख़ारी : ६४६९)

५४. उस ने कहा: क्या तुम ने मुझे इस बुढ़ापे में शुभसूचना दी है, तुम मुझे यह शुभसूचना कैसे दे रहे हो?

५५. उन्हों ने कहा: हम ने तुम्हें सत्य शुभ सूचना दी है, अत: तुम निराश न हो।

५६. (इब्राहीम) ने कहा: अपने पालनहार की दया से निराश केवल कुपथ लोग ही हुआ करते है।

५७. उस ने कहा: हे अल्लाह के भेजे हुये फ़रिश्तो! तुम्हारा अभियान क्या है?

५८. उन्हों ने उत्तर दिया कि हम एक अपराधी जाति के पास भेजे गये हैं।

५९. लूत के घराने के सिवा, उन सभी को हम बचाने वाले है।

६०. परन्तु लू की पत्नी के लिये हम ने निर्णय किया है कि वह पीछे रह जाने वालों में होगी।

६१. फिर जब लूत के घर भेजे हुये (फ़रिश्ते) आये।

६२. तो लूत ने कहा: तुम (मेरे लिये) अपरिचित हो।

६३. उन्हों ने कहा: डरो नहीं, बल्कि हम तुम्हारे पास वह (यातना) लाये हैं, जिस के बारे में वह संदेह कर रहे थे।

६४. हम तुम्हारे पास सत्य लाये हैं, और वास्तव में हम सत्यवादी है।

६५. अत: कुछ रात रह जाये तो अपने घराने को लेकर निकल जाओ, और तुम उन के पीछे रहो, और तुम में से कोई फिर कर न देखे। तथा चले जाओ, जहाँ आदेश दिया जा रहा है।

६६. और हम न लूत को निर्णय सुना दिया कि भोर होते ही इन का उन्मूलन कर दिया जायेगा।

६७. और नगरवासी प्रसन्न हो कर आ गये।[१]

६८. लूत ने कहा: यह मेरे अतिथी हैं, अत: मेरा अपमान न करो।

६९. तथा अल्लाह से डरो, और मेरा अनादर न करो।

७०. उन्हों ने कहा: क्या हम ने तुम्हे विश्व वासियों से नहीं रोका[२] था?

---

[१] अर्थात जब फ़रिश्तों को नवयुवकों के रूप में देखा तो लूत अलैहिस्सलाम के यहाँ आ गये ताकि उन के साथ अशलील कर्म करें।

[२] सब के समर्थक न बनो।

७१. लूत ने कहा: यह मेरी पुत्रियाँ हैं यदि तुम कुछ करने वाले[१] हो।
७२. हे नबी! आप की आयु की शपथ![२] वास्तव में वे अपने उन्माद में बहक रहे थे।
७३. अन्ततः सूर्योदय के समय उन्हें एक कड़ी ध्वनि ने पकड़ लिया।
७४. फिर हम ने उस बस्ती के ऊपरी भाग को नीचे कर दिया, और उन पर कंकरीले पत्थर बरसा दिये।
७५. वास्तव में इस में कई निशानियाँ हैं प्रतिभाशालियों[३] के लिये।
७६. और वह (बस्ती) साधारण[४] मार्ग पर स्थित है।
७७. निःसंदेह इस में बड़ी निशानी है, ईमान वालों के लिये।
७८. और वास्तव में (ऐय्का) के[५] वासी अत्याचारी थे।
७९. तो हम ने उन से बदला ले लिया, और वह दोनों[६] ही साधारण मार्ग पर है।
८०. और हिज्र के[७] लोगों ने रसूलों को झुठलाया।
८१. और उन्हें हम ने अपनी आयतें (निशानियाँ) दी, तो वह उन से विमुख ही रहे।
८२. वे शिलाकारी कर के पर्वतों से घर बनाते, और निर्भय होकर रहते थे।
८३. अन्ततः उन्हें कड़ी ध्वनि ने भोर के समय पकड़ लिया।
८४. और उन की कमाई उन के कुछ काम न आयी।
८५. और हम ने आकाशों तथा धरती को और जो कुछ उन दोनों के बीच है, सत्य के आधार पर ही उत्पन्न किया है, और निश्चय प्रलय आनी है। अतः (हे नबी!) आप (उन को) भली भाँति क्षमा कर दें।
८६. वास्तव में आप का पालनहार ही सब का स्रष्ट सर्वज्ञ है।
८७. तथा (हे नबी!) हम ने आप को सात ऐसी आयतें जो बार बार दुहराई जाती है, और महा कुरआन[१] प्रदान किया हैं।

---

[१] अर्तात इन से विवाह कर लो, और अपनी कामवासना पूरी करो, और कुकर्म न करो।

[२] अल्लाह के सिवा किसी मनुष्य के लिये उचित नहीं है कि वह अल्लाह के सिवा किसी और चीज़ की शपथ ले।

[३] अर्थात जो लक्षणों से तथ्य को समझ जाते हैं।

[४] अर्तात जो साधारण मार्ग हिज़ाज (मक्का) से शाम को जाता है। यह शिक्षाप्रद बस्ती उसी मार्ग में आती है, जिस से तुम गुज़रते हुये शाम जाते हो।

[५] इइ से अभिप्रेत शुऐब अलैहिस्सलाम की जाति है, ऐय्का का अर्थ वन तथा झाड़ी है।

[६] अर्थात मद्यन और ऐय्का का क्षेत्र भी हिज़ाज़ से फ़िलस्तीन और सीरिया जाते हुये, राह में पड़ता है।

[७] हिज्र समूद जाति की बस्ती थी जो सालेह (अलैहिस्तलाम) की जाति थी, यह बस्ती मदीना और तबूक के बीच स्थित थी।

८८. और आप उस की ओर न देखें, जो संसारिक लाभ का संसाधन हम ने उन में से विभिन्न प्रकार के लोगों को दे रखा है, और न उन पर शोक करे, और ईमान वालों के लिये सुशील रहे।
८९. और कह दें कि मैं प्रत्यक्ष (खुली) चेतावनी[२] देने वाला हूँ।
९०. जैसे हम ने खण्डन कारियों[३] पर (यातना) उतारी।
९१. जिन्होंने कुरआन को खण्ड–खण्ड कर दिया।[४]
९२. तो शपथ है आप के पालनहार की। हम उन से अवश्य पूछेंगे।
९३. तुम क्या करते रहे?
९४. अतः आप को जो आदेश दिया जा रहा है, उसे खोल कर सुना दें। और मुश्रिकों (मिश्रणवादियों) की चिन्ता न करें।
९५. हम आप के लिये परिहास करने वालों को काफ़ी है।
९६. जो अल्लाह के साथ दूसरे पूज्य बना लेते हैं, तो उन्हें शीघ्र ज्ञान हो जायेगा।
९७. और हम जानते हैं कि उन की बातों से आप का दिल संकुचित हो रहा है।
९८. अतः आप अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का वर्णन करें, तता सज्दा करने वालों में रहे।
९९. और अपने पालनहार की इबादत (वंदना) करते रहे, यहाँ तक कि आप के पास विश्वास आ जाये।[५]



[१] अबु हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथ है कि उम्मुल कुरआन (सूरह फ़ातिहा) ही वह साथ आयतें हैं जो दुहराई जाती है, तथा महा कुरआन है। एक दूसरी हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: ''अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन'' ही वह सात आयतें हैं जो बार बार दुहराई जाती है, और महा कुरआन है, जो मुझे प्रदान किया गया है। यही कारण है कि इस के पढ़े बिना नमाज़ नहीं होती। (देखिये: सहीह बुख़ारी, मुस्लिम)

[२] अर्थात अवैज्ञा पर यातना की

[३] खण्डन कारियों से अभिप्राय: यहूद और ईसाई हैं। जिन्हों ने अपनी पुस्तकों तौरात तथा इंजील को खण्ड खण्ड कर दिया। अर्थात् उन के कुछ भाग पर ईमान लाये और कुछ को नकार दिया। (सहीह बुख़ारी)

[४] इसी प्रकार इन्हों ने भी कुरआन केकुछ भाग को मान लिया और कुछ का अगलों की कहानियाँ बताकर इन्कार कर दिया। तो ऐसे सभी लोगों से प्रलय के दिन पूछ होगी कि मेरी पुस्तकों के साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया?

[५] अर्थात मरने का समय।



सूरह नह्ल – १६



सूरह नह्ल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की हैं, इस में १२८ आयतें है।

– नह्ल का अर्थ मधु मक्खी है। जिस में अल्लाह के पालनहार होने की निशाीन है। इस सूरह की आयत ६८ से यह नाम लिया गया है।
– इस में शिर्क का खण्डन तथा तौहीद के सत्य होने को प्रमाणित किया गया है। और नबी को न मनाने पर दुष्परिणाम की चेतावनी दी गई है।
– विरोधियों के संदेह दूर कर के अल्लाह के उपकारों की चर्चा की गई है और प्रलय के दिन मुश्रिकों तथा काफ़िरों की दुरदशा को बताया गया है।
– बंदों का अधिकार देने तथा बुराईयों से बचने और पवित्र जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी गई है।
– शैतान के संशय से शरण माँगने का निर्देश दिया गया है और मक्का वासियों के लिये एक कृतघ्न बस्ती का उदाहरण देकर उन्हें कृतज्ञ होने का निर्देश दिया गया है।
– यह निर्देश दिया गया है कि शिर्क के कारण अल्लाह की वैध की हुई चीज़ों को वर्जित न करों और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के बारे में बताया गया है कि वह एकेश्वरवादी और कृतज्ञ थे, और मुश्रिक नहीं थे।
– यह बताया गया है कि सब्त (शनिवार) मनाने का आदेश केवल यहूद को उन के विभेद करने के कारण दिया गया था।
– और अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा ईमान वालों को कुछ निर्देश दिये गये है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. अल्लाह का आदेश आ गया है। अत: (हे काफ़िरों!) उस के शीघ्र आने की माँग न करो। वह (अल्लाह) पवित्र तथा उस शिर्क (मिश्रणवाद) से ऊँचा है, जो वह कर रहे है।

२. वह फ़रिश्तों को वह्यी के साथ अपने आदेश से अपने जिस भक्त पर चाहता है उतारता है, कि (लोगों को) सावधान करो, कि मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं है अत: मुझ से ही डरो।

३. उस ने आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति सत्य के साथ की है, वह उन के शिर्क से बहुत ऊँचा है।

४. उस से मनुष्य की उत्पत्ति वीर्य से की फिर वह अकस्मात् खुला झगड़ालू बन गया।

५. तथा चौपायों की उत्पत्ति की, जिन में तुम्हारे लिये गमी[1] और बहुत से लाभ है, और उन में से कुछ को खाते हो।

६. तथा उन में तुम्हारे लिये एक शोभा है, जिस समय संध्या को चरा कर लाते हो और जब प्रात: चराने ले जाते हो।

७. और वह तुम्हारे बोझों को उन नगरों तक लाद कर ले जाते हैं, जिन तक तुम बिना कड़े परिश्रम के नहीं पहुँच सकते। वास्तव में तुम्हारा पालनहार अति करुणामय दयावान् है।

८. तथा घोड़े, और ख़च्चर तथा गधे पैदा किये, ताकि उन पर सवारी करो। और शोभा (बनें)। और ऐसी चीज़ों की उत्पत्ति करेगा, जिन्हें (अभी) तुम नहीं जानते हो।[2]

९. और अल्लाह पर, सीधी राह बताना है, और उन में से कुछ[3] टेढ़े हैं। तथा यदि अल्लाह चाहता तो तुम सभी को सीधी राह दिखा देता।

---

[1] अर्थात् उन की ऊन तथा खाल से गर्म वस्त्र बनाते हो।

[2] अर्थात् सवारी के साधन इत्यादि। और आम हम उन में से बहुत सी चीज़ों को अपनी आँखो से देख रहे हैं जिन की ओर अल्लाह ने आज से चौदह सौ वर्ष पहले इस आयत के अन्दर संकेत किया था। जैसे: कार, रेल और विमान आदि...।

[3] अर्थात जो इस्लाम के विरुद्ध है।

१०. वही है, जिस ने आकाश से जल बरसाया, जिस में से कुछ तुम पीते हो, तथा कुछ से वृक्ष उपजते हैं, जिस में तुम (पशुओं को) चराते हो।

११. और तुम्हारे लिये उस से खेती उपजाता है, और ज़ैतून तथा खजूर और अँगूर और प्रत्येक प्रकार के फल। वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी है, उन लोगों के लिये जो सोच–विचार करते हैं।

१२. और उस ने तुम्हारे लिये रात्रि तथा दिवस को सेवा में लगा रखा है। तथा सूर्य और चाँद को, और सितारे उस के आदेश के आधीन हैं। वास्तव में इस में कई निशानियाँ (लक्षण) हैं, उन लोगों के लिये जो समझ–बूझ रखते हैं।

१३. तथा जो तुम्हारे लिये धरती में विभिन्न रंगों की चीज़ें उत्पन्न की हैं वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी (लक्षण) है उन लोगों के लिये जो शिक्षा ग्रहण करते हैं।

१४. और वही है जिस ने सागर को वश में कर रखा है, ताकि तुम उस से ताज़ा[१] मांस खाओ, और उस से अलंकार[२] निकालों जिसे पहनते हो, तथा तुम नौकाओं को देखते हो कि सागर में (जल को) फाड़ती हुई चलती हैं, और इस लिये ताकि तुम उस (अल्ला) के अनुग्रह[३] की खोज करो, और ताकि कृतज्ञ बनो।

१५. और उस ने धरती में पर्वत गाड़ दिये, ताकि तुम को लेकर डोलने न लगे, तथा नदियाँ और राहें, ताकि तुम राह पाओ।

१६. तथा बहुत से चिन्ह (बना दिये) और वे सितारों से (भी) राह[४] पाते हैं।

१७. तो क्या जो उत्पत्ति करता है, उस के समान है, जो उत्पत्ति नहीं करता? क्या तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते[५]?

१८. और यदि तुम अल्लाह के पुरस्कारों की गणना करना चाहो तो कभी नहीं कर सकते। वास्तव में अल्लाह बड़ा क्षमा तथा दया करने वालो है।

१९. तथा अल्लाह जानता है, जो तुम छुपाते हो, और जो तुम व्यक्त करते हो।

---

[१] अर्तात मछलियाँ।

[२] अलंकार अर्थात् मोती और मूँगा निकालो।

[३] अर्थात सागरों मे व्यापारिक यात्रा कर के अपनी जीविका की खोज करो।

[४] अर्थात रात्रि में।

[५] और उस की उत्पत्ति को उस का साझी और पूज्य बनाते हो।

२०. और जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पुकारते है, वे किसी चीज़ की उत्पत्ति नहीं कर सकते। जब कि वह स्वयं उत्पन्न किये जाते है।

२१. वे निर्जीव प्राणहीन है, और (यह भी) नहीं जानते कि कब पुन: जीवित किया जायेंगे।

२२. तुम्हारा पूज्य बस एक है, फिर जो लोग परलोक पर ईमान नहीं लाते उन के दिल निवर्ती (विरोधी) हैं, और वे अभिमानी हैं।

२३. जो कुछ वे छुपाते तथा व्यक्त करते हैं निश्चय अल्लाह उसे जानता है। वास्तव में वह अभिमानियों से प्रेम नहीं करता।

२४. और जब उन से पूछा जाये कि तुम्हारे पालनहार ने क्या उतारा है?[१] तो कहते हैं कि पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं।

२५. ताकि वे अपने (पापों का) पूरा बोझ प्रलय के दिन उठायें, तथा कुछ उन लोगों का बोझ (भी) जिन्हें बिना ज्ञान के कुपथ कर रहे ते, सावधान! वे कितना बुरा बोझ उठायेंगे।

२६. इन से पहले के लोग भी षड्यंत्र रचते रहे, तो अल्लाह ने उन के षड्यंत्र के भवन का उन्मूलन कर दिया, फिर ऊपर से उन पर छत गिर पड़ी, और उन पर ऐसी दिशा से यातना आ गई, जिसे वे सोच भी नहीं रहे थे।

२७. फिर प्रलय के दिन उन्हें अपमानित करेगा, और कहेगा कि मेरे वह साझी कहाँ हैं, जिन के लिये तुम झगड़ रहे थे? वे कहेंगे: जिन्हें ज्ञान दिया गया है कि वास्तव में आज अपमान तथा बुराई (यातना) काफ़िरों के लिये है।

२८. जिन के प्राण फ़रिश्ते निकालते हैं, इस दशा में कि वे अपने ऊपर अत्याचार करने वाले हैं, तो वह आज्ञाकारी बन जाते हैं, (कहते हैं कि) हम कोई बुराई (शिर्क) नहीं कर रहे थे। क्यों नहीं? वास्तव में अल्लाह तुम्हारे कर्मों से भली भाँति अवगत हैं।

२९. तो नरक के द्वारों में प्रवेश कर जाओ, उस में सदावासी रहोंगे, अत: क्या ही बुरा है अभिमानियों का निवास स्थान!

---

[१] अर्थात मरण के समय अल्लाह को मान लेते है।

३०. और उन से पूछा गया जो अपने पालनहार से डरे कि तुम्हारे पालनहार ने क्या उतारा है? तो उन्होंने कहा: अच्छी चीज़ उतारी है। उन के लिये जिन्होंने इस लोक में सदाचार किये बड़ी भलाई है। और वास्तव में परलोक का घर (स्वर्ग) अति उत्तम है। और आज्ञाकारियों का आवास कितना अच्छा है!

३१. सदा रहने के स्वर्ग जिस में प्रवेश करेंगे, जिन में नहरें बहती होंगी, उन के लिये उस में जो चाहेंगे (मिलेगा)। इसी प्रकार अल्लाह आज्ञाकारियों को प्रतिफल (बदला) देता है।

३२. जिन के प्राण फ़रिश्ते इस दशा में निकालते हैं कि वे स्वच्छ–पवित्र हैं, तो कहते हैं: ''तुम पर शान्ति हो।'' तुम अपने सुकर्मो के बदले स्वर्ग में प्रवेश कर जाओ।

३३. क्या वे इस की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उन के पान फ़रिश्ते[१] आ जायें, अथवा आप के पालनहार का आदेश[२] आ पहुँचे? ऐसे ही उन से पूर्व के लोगो ने किया, और अल्लाह ने उन पर अत्याचार नहीं किया, परन्तु वह स्वयँ अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे।

३४. तो उन के कुकर्मो की बुराईयाँ[३] उन पर आ पड़ीं, और उन्हें उसी (यातना) ने घेर लिया जिस का वे परिहास कर रहे थे।

३५. और कहा जिन लोगों ने शिर्क (मिश्रणवाद) किया: यदि अल्लाह चाहता तो हम उस के सिवा किसी चीज़ की इबादत (वंदना) न करते न हम, और न हमारे बाप–दादा। और न उस के आदेश के बिना किसी चीज़ को हराम (वर्जित) करते। ऐसे ही इन से पूर्व वाले लोगों ने किया। तो रसूलों पर केवल खुले रूप से उपदेश पहुँचा देना है।

३६. और हम ने प्रत्येक समुदाय में एक रसूल भेजा कि अल्लाह की इबादत (वंदना) करो, और तागूत (असुर–अल्लाह के सिवा पूज्यों) से बचो, तो उन में से कुछ को अल्लाह ने सुपथ दिखा दिया और कुछ पर कुपथ सिद्ध हो गया। तो धरती में चलो–फिरो, फिर देखो कि झुठलाने वालों का अन्त कैसा रहा?

---

[१] अर्थात प्राण निकालने के लिये।

[२] अर्थात अल्लाह की यातना या प्रलय।

[३] अर्थात दुष्परिणाम।

३७. (हे नबी!) आप ऐसे लोगों को सुपथ दिखाने पर लोलुप हों, तो भी अल्लाह उसे सुपथ नहीं दिखायेगा जिसे कुपथ कर दे। और न उन का कोई सहायक होगा।

३८. और उन (काफ़िरों) ने अल्लाह की भरपूर शपथ ली कि अल्लाह उसे पुन: जीवित नहीं करेगा जो मर जाता है। क्यों नहीं? यह तो अल्लाह का अपने ऊपर सत्य वचन है, परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।

३९. (ऐसा करना इस लिये आवश्यक है) ताकि अल्लाह उस तथ्य को उजागर कर दे जिस में[१] वे विभेद कर रहे ते, और ताकि काफ़िर जान लें कि वही झूठे थे।

४०. हमारा कथन, जब हम किसी चीज़ को अस्तित्व प्रदान करने का निश्चय करें, तो इस के सिवा कुछ नहीं होता कि उसे आदेश दें कि ''हो जा'', और वह हो जाती है।

४१. तथा जो लोग अल्लाह के लिये हिज्रत (प्रस्थान) कर गये अत्याचार सहने के पश्चात् तो हम उन्हे संसार में अच्छा निवास-स्थान देंगे, और परलोक का प्रतिफल तो बहुत बड़ा है, यदि वह[२] जानते।

४२. जिन लोगों ने धैर्य धारण किया, तथा अपने पालनहार पर ही वे भरोसा करते हैं।

४३. और (हे नबी!) हम ने आप से पहले जो भी रसूल भेजे, वे सभी मानव-पुरुष थे। जिन की ओर हम वह्यी (प्रकाशना) करते रहे। तो तुम ज्ञानियों से पूझ लो, यदि (स्वयं) नहीं[३] जानते।

४४. प्रत्यक्ष (खुले) प्रमाणों तथा पुस्तकों के साथ (उन्हें भेजा) और आप की ओर यह शिक्षा (कुरआन) अवतरित की, ताकि आप उसे सर्वमानव के लिये उजागर कर दें जो कुछ उन की ओर उतारा गया है ताकि वह सोच-विचार करें।

४५. तो क्या वे निर्भय हो गये हैं, जिन्होंने बुरे षड्यंत्र रचे हैं, कि अल्लाह उन्हे धरती में धंसा दे? अथवा उन पर यातना ऐसी दिशा से आ जाये जिसे वह सोचते भी न हों?

---

[१] अर्थात पुनरोज्जिन के समय में।

[२] इन से अभिप्रेत नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वह अनुयायी हैं, जिन को मक्का के मुश्रिकों ने अत्याचार कर के निकाल दिया। और हब्शा और फिर मदीने हिज्रत कर गये।

[३] मक्का के मुश्रिकों ने कहा कि यदि अल्लाह को कोई रसूल भेजना होता तो किसी फ़रिश्ते को भेजता। उसी पर यह आयत उतरी। ज्ञानियों से अभिप्राय वह अपले किताब हैं जिन्हें आकाशीय पुस्तकों का ज्ञान हो।

४६. या उन्हें चलते–फिरते पकड़ ले, तो वह (अल्लाह को) विवश करने वाले नहीं हैं।

४७. अथवा उन्हें भय की दशा में पकड़[1] ले? निश्चय तुम्हारा पालनहार अति करुणामय दयावान् है।

४८. क्या अल्लाह की उत्पन्न की हुयी किसी चीज़ को उन्होंने नहीं देखा? जिस की छाया दायें तथा बायें झुकती है, अल्लाह को सज्दा करते हुये? और वे सर्व विनयशील हैं।

४९. तथा अल्लाह ही को सज्दा करते हैं जो आकाशों में तथा धरतीं में चर (जीव) तथा फ़रिश्ते हैं, और वह अहंकार नहीं करते।

५०. वे[2] अपने पानलहार से डरते हैं जो उन के ऊपर है, और वही करते हैं जो आदेश दिये जाते हैं।

५१. और अल्लाह ने कहा: दो पूज्य न बनाओ, वही अकेला पूज्य है। अत: तुम मुझी से डरो।

५२. और उसी का है, जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, और उसी की वंदना स्थायी है, तो क्या तुम अल्लाह के सिवा दूसरे से डरते हो?

५३. तुम्हें जो भी सुख–सुविधा प्राप्त है वह अल्लाह ही की ओर से है। फिर जब तुम्हें दु:ख पहुँचता है, तो उसी को पुकारते हो।

५४. फिर जब तुम से दु:ख दूर कर देता है तो तुम्हारा एक समुदाय अपने पालनहार का साझी बनाने लगता है।

५५. ताकि हम ने उन्हें जो कुछ प्रदान किया है, उस के प्रति कृतघ्न हों तो आनन्द ले लो, तुम्हें शीघ्र ही ज्ञान हो जायेगा।

५६. और वे जिन को जानते[3] तक नहीं उन का एक भाग उस में से बनाते हैं जो जीविका हम ने उन्हें दी है। तो अल्लाह की शपथ! तुम से अवश्य पूछा जायेगा उस के विषय में जो तुम झूठी बातें बना रहे थे?

---

[1] अर्थात जब कि पहले से उन्हें आपदा का भय हो।

[2] अर्थात फ़रिश्ते।

[3] अर्थात अपने देवी देवताओं की वास्तविकता को नहीं जानते।

५७. और वह अल्लाह के लिये पुत्रियाँ बनाते[१] है, वह पवित्र है! और उन के लिये वह[२] है, जो वे स्वयं चाहते हों?

५८. और जब उन में से किसी को पुत्री (के जन्म) की शुभसूचना दी जाये, तो उस का मुख काला हो जाता है, और वह शोक पूर्ण हो जाता है।

५९. और लोगों से छुपा फिरता है उस बुरी सूचना के कारण जो उसे दी गयी हैं। (सोचता है कि) क्या[३] उसे अपमान के साथ रोक ले, अथवा भूमि में गाड़ दे? देखो! वह कितना बुरा निर्णय करते हैं।

६०. उन्हीं के लिये जो आख़िरत (परलोक) पर ईमान नहीं रखते अवगुण हैं, और अल्लाह के लिये सद्‌गुण हैं। तथा वह प्रभुत्वशाली तत्वदर्शी है।

६१. और यदि अल्लाह, लोगों को उन के अत्याचार[४] पर (तत्क्षण) धरने लगे, तो धरती में किसी जीव को न छोड़े। परन्तु वह एक निर्धारित अवधि तक निलम्बित करता[५] है, और जब उन की अवधि आ जायेगी, तो एक क्षण न पीछे होंगे न पहले।

६२. वह अल्लाह के लिये उसे[६] बनाते हैं, जिसे स्वयं अप्रिय समझते हैं। तथा उन की जुबानें झूठ बोलती हैं कि उन्हीं के लिये भलाई है। निश्चय उन्हीं के लिये नरक है, और वही सब से पहले (नरक में) झोंक जायेंगे।

६३. अल्लाह की शपथ! (हे नबी!) आप से पहले हम ने बहुत से समुदायों की ओर रसूल भेजे। तो उन के लिये शैतान ने उन के कुकर्मो को सुसिज्जत बना दिया। अत: वही आज उन का सहायक है, और उन्हीं के लिये दु:खदायी यातना है।

६४. और हम ने आप पर यह पुस्तक (कुरआन) इसी लिये उतारी है ताकि आप उन के लिये उसे उजागर कर दें जिस में वह विभेद कर रहे हैं, तथा मार्गदर्शन और दया है उन लोगों के लिये जो ईमान (विश्वास) रखते हैं।

---

[१] अरब के मुश्रिकों के पूज्यों में देवताओं से अधिक देवियाँ थीं। जिन के संबन्ध में उन का विचार था कि ये अल्लाह की पुत्रियाँ हैं। इसी प्रकार फ़रिश्तों को भी वे अल्लाह की पुत्रियाँ कहते थे, जिस का यहाँ खण्डन किया गया है।

[२] अर्थात पुत्र।

[३] अर्थात जीवित रहने दे। इस्लाम से पूर्व अरब समाज के कुछ क़बीलों में पुत्रियों के जन्म को लज्ज़ा की चीज़ समझा जाता था। जिस का चित्रण इस आयत में किया गया है।

[४] अर्थात् शिर्क और पापाचारों पर।

[५] अर्थात अवसर देता है।

[६] अर्थात पुत्रियाँ।

६५. और अल्लाह ने ही आकाश से जल बरसाया, फिर उस ने निर्जीव धरती को जीवित कर दिया। निश्चय इस में उन लोगों के लिये एक निशानी है जो सुनते है।

६६. तथा वास्तव में तुम्हारे लिये पशुओं में एक शिक्षा है। हम तुम्हें उस से जो उस के भीतर है गोबर तथा रक्त के बीच से शुद्ध दूध पिलाते हैं। जो पीने वालों के लिये रुचिकर होता है।

६७. तथा खजूरों और अँगूरों के फलों से जिस से तुम मदिरा बना लेते हो तथा उत्तम जीविका भी, वास्तव में इस में एक निशानी (लक्षण) है उन लोगों के लिये जो समझ–बूझ रखते हैं।

६८. और हम ने मधुमक्खी को प्रेरणा दी कि पर्वतों में घर (छत्ते) बना तथा वृक्षों में, और लोगों की बनायी छतों में।

६९. फिर प्रत्येक फलों का रस चूस, और अपने पालनहार की रसल राहों पर चलती रह। उस के भीतर से एक पेय निकलता है, जो विभिन्न रंगों का होता है, जिस में लोगों के लिये आरोग्य है। वास्तव में इस में एक निशानी (लक्षण) है उन लोगों के लिये जो सोच–विचार करते हैं।

७०. और अल्लाह ही ने तुम्हारी उत्पत्ति की है, फिर तुम्हें मौत देता है। और तुम में से कुछ को अबोध आयु तक पहुँचा दिया जाता है, ताकि जानने के पश्चात् कुछ न जाने। वास्तव में अल्लाह सर्वज्ञ सर्व सामर्थ्यवान[1] है।

७१. और अल्लाह ने तुम में से कुछ को कुछ पर जीविका में प्रधानता दी है, तो जिन्हें प्रधानता दी गयी है वे अपनी जीविका अपने दासों की ओर पेरने वाले नहीं कि वह उस में बराबर हो जायें तो क्या वह अल्लाह के उपकारों को नहीं मानते हैं?[2]

७२. और अल्लाह ने तुम्हारे लिये तुम्हीं में से पत्नियाँ बनायीं। और तुम्हारे लिये तुम्हारी पत्नियों से पुत्र तथा पौत्र बनाये। और तुम्हें स्वच्छ चीज़ों से जीविका प्रदान की। तो क्या वे असत्य पर विश्वास रखते हैं, और अल्लाह के पुरस्कारों के प्रति अविश्वास रखते हैं?

---

[1] अर्थात वह पुन: जीवित भी कर सकता है।

[2] आयत का भावार्थ यह है जब वह स्वयं अपने दासों को अपने बराबर करने के लिये तय्यार नहीं हैं तो फिर अल्लाह की उत्पत्ति और उस के दासों को कैसे पूजा–अर्चना में उस के बराबर करते हैं? क्या यह अल्लाह के उपकारों का इन्कार नहीं है?

७३. और अल्लाह के सिवा उन की वंदना करते हैं। जो उन के लिये आकाशों तथा धरती से कुछ भी जीविका देने का अधिकार नहीं रखते, और न इस का सामर्थ्य रखते हैं।

७४. और अल्लाह के लिये उदाहरण न दो। वास्तव में अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते।[१]

७५. अल्लाह ने एक उदाहरण[२] दिया है: एक पराधीन दास है, जो किसी चीज़ का अधिकार नहीं रखता, और दूसरा (स्वाधीन) व्यक्ति है, जिसे हम ने अपनी ओर से उत्तम जीविका प्रदान की है। और वह उस में से छुपे और खुले व्यय करता है। क्या वह दोनों समान हो जायेंगे? सब प्रशंसा अल्लाह[३] के लिये है। बल्कि अधिकतर लोग (यह बात) नहीं जानते।

७६. तथा अल्लाह ने दो व्यक्तियों का उदाहरण दिया है। दोनों में से एक गूँगा है। वह किसी चीज़ का अधिकार नहीं रखता। वह अपने स्वामी पर बोझ है। वह उसे जहाँ भेजता है कोई भलाई नहीं लाता। तो क्या वह, और जो न्याय का आदेश देता हो, और स्वयं सीधी[४] राह पर हो बराबर हो जायेंगे??

७७. और अल्लाह ही को आकाशों तथा धरती के परोक्ष[५] का ज्ञान है। और प्रलय (कयामत) का विषय तो बस पलक झपकने जैसा[६] होगा, अथवा उस से भी अधिक शीघ्र। वास्तव में अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

७८. और अल्लाह ही ने तुम्हें तुम्हारी माताओं के गर्भों से निकाला, इस दशा में कि तुम कुछ नहीं जानते थे। और तुम्हारे कान और आँख तथा दिल बनाये, ताकि तुम(उस का) उपकार मानो।

---

[१] क्यों कि उस के समान कोई नहीं

[२] आयत का भावार्थ यह है कि जैसे पराधीन दास और धनी स्वतंत्र व्यक्ति को तुम बराबर नहीं समझते, ऐसे मुझे और इन मुर्तियों को कैसे बराबर समझ रहे हो जो मक्खी भी पैदा नहीं कर सकतीं। और यदि मक्खी उन का चढ़ावा ले भागे तो वह छीन भी नहीं सकतीं।? इस से बड़ा अत्याचार क्या हो सकता है?

[३] अर्थात अल्लाह के सिवा तुम्हारे पूज्यों में से कोई प्रशंसा के योग्य नहीं।

[४] यह दूसरा उदाहरण है जे मुर्तियों का दिया है। जो गूँगी–बहरी होती हैं।

[५] अर्थात गुप्त तथ्यों का।

[६] अर्थात पलभर में आयेगी।

७९. क्या वे पक्षियों को नहीं देखते कि वह अन्तरिक्ष में कैसे वशीभूत हैं? उन्हें अल्लाह ही थामता[1] है। वास्तव में इस में बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो ईमान लाते हैं।

८०. और अल्लाह ही ने तुम्हारे घरों को निवास स्थान बनाया। और पशुओं की खालों से तुम्हारे लिये ऐसे घर[2] बनाये जिन्हें तुम अपनी यात्रा तथा अपने विराम के दिन हल्का (अल्पभार) पाते हो। और उन की ऊन और रोम तथा बालों से उपक्रण और लाभ के समान जीवन की निश्चित अवधि तक के लिये (बनाये)।

८१. और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिये उस चीज़ में से जो उत्पन्न की है छाया बनायी है। और तुम्हारे लिये पर्वतों में गुफाएं बनायी हैं। और तुम्हारे लिये ऐसे वस्त्र बनाये हैं जो तुम्हें धूप से बचायें। और ऐसे वस्त्र जो तुम्हें तुम्हारे आक्रमण से बचायें।[3] इसी प्रकार वह तुम पर अपने उपकार पूरा करता है ताकि तुम आज्ञाकारी बनो।

८२. फिर यदि वे विमुख हों तो आप पर बस प्रत्यक्ष (खुला) उपदेश पहुँचा देना है।

८३. वे अल्लाह के उपकारों को पहचानते हैं फिर उस का इन्कार करते हैं। और उन मे अधिकतर कृतघ्न हैं।

८४. और जिस[4] दिन हम प्रत्येक समुदाय से एक साक्षी (गवाह) खड़ा[5] करेंगे, फिर काफ़िरों को बात करने की अनुमति नहीं दी जायेगी और न उन से क्षमा याचना की माँग की जायेगी।

८५. और जब अत्याचाी यातना देखेंगे, उन की यातना कुछ कम नहीं की जायेगी, और न उन्हें अवकाश दिया[6] जायेगा।

८६. और जब मुश्रिक अपने (बनाये हुये) साझियों को देखेंगे तो कहेंगे: हे हमारे पालनहार! यही हमारे साझी हैं जिन को हम तुझे चोड़कर पुकार रहे थे। तो वह (पूज्य) बोलेंगे कि निश्चय तुम सब मिथ्यावादी (झुठे) हो।

---

[1] अर्थात पक्षियों को यह क्षमता अल्लाह ही ने दी है।

[2] अर्थात चमड़ों के खेमे।

[3] अर्थात कवच आदि।

[4] अर्थात प्रलय के दिन।

[5] (देखिये : सूरह निसा, आयत : ४१)

[6] अर्थात तौबा करने का।

८७. उस दिन वे अल्लाह के आगे झुक जायेंगे, और उन से खो जायेगी जो मिथ्या बातें वह बनाते थे।

८८. जो लोग काफ़िर हो गये और (दूसरों को भी) अल्लाह की डगर (इस्लाम) से रोक दिय, उन्हें हम यातना पर यातना देंगे, उस उपद्रव के बदले जो वे कर रहे थे।

८९. और जिस दिन हम प्रत्येक समुदाय से एक साक्षी उन के विरुद्ध उन्हीं में से खड़ा कर देंगे। और (हे नबी!) हम आप को उन पर साक्षी (गवाह) बनायेंगे।[1] और हम ने आप पर यह पुस्तक (कुरआन) अवतरित की है जो प्रत्येक विषय का खुला विवरण है। तथा मार्गदर्शन और दया तथा शुभ सूचना है आज्ञाकारियों के लिये।

९०. वस्तुत: अल्लाह तुम्हें न्याय तथा उपकार और समीपवर्तियों को देने का आदेश दे रहा है। और निर्लज्ज़ा तथा बुराई और विद्रोह से रोक रहा है। और तुम्हें सिखा रहा है ताकि तुम शिक्षा ग्रहण करो।

९१. और जब अल्लाग से कोई वचन करो तो उसे पूरा करो। और अपनी शपथों को सुदृढ़ करने के पश्चात् भंग न करो, जब तुम ने अल्लाह को अपने ऊपर गवाह बनाया है। निश्चय अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उसे जानता है।

९२. और तुम्हारी दशा उस स्त्री जैसी न हो जाये जिस ने अपना सूत कातने के पश्चात् उधेड़ दिया। तुम अपनी शपथों को आपस में विश्वासघात का साधन बनाते हो ताकि एक समुदाय दूसरे समुदाय से अधिक लाभ प्राप्त करे। अल्लाह इस[2] (वचन) के द्वारा तुम्हारी परीक्षा ले रहा है। और प्रलय के दिन तुम्हारे लिये अवश्य उसे उजागर कर देगा जिस में तुम विभेद कर रहे थे।

९३. और यदि अल्लाह चाहता तो तुम्हें एक समुदाय बना देता। परन्तु वह जिसे चाहता है कुपथ कर देता है, और जिसे चाहता है सुपथ दर्शा देता है। और तुम से उस के बारे में अवश्य पूछा जायेगा जो तुम कर रहे थे।

---

[1] (देखिये : सूरह बक़रा, आयत : १४३)

[2] अर्थात् किसी समुदाय से समझौता कर के विश्वासघात न किया जाये कि दूसरे समुदाय से अधिक लाभ मिलने पर समझौता तोड़ दिया जाये।

९४. और अपनी शपथों को आपस में विश्वासघात का साधन न बनाओ, ऐसा न हो कि कोई पग अपने स्थिर (दृढ़) होने के पश्चात् (ईमान से) फिसल[1] जाये और तुम उस के बदले बुरा परिणाम चखो कि तुम ने अल्लाह की राह से रोका है। और तुम्हारे लिये बड़ी यातना हो।

९५. और अल्लाह से किये हुये वचन को तनिक मूल्य के बदले न बेचो।[2] वास्तव में जो अल्लाह के पास है वही तुम्हारे लिये उत्तम है, यदि तुम जानो।

९६. जो तुम्हारे पास है वह व्यय (ख़र्च) हो जायेगा। और जो अल्लाह के पास है वह शेष रह जाने वाला है। और हम, जो धैर्य धारण करते हैं उन्हें अवश्य उन का पारिश्रमिक (बदला) उन के उत्तम कर्मों के अनुसार प्रदान करेंगे।

९७. जो भी सदाचार करेगा, वह नर हो अथवा नारी, और ईमान वाला हो तो हम उसे स्वच्छ जीवन व्यतीत करायेंगे। और उन्हें उन का पारिश्रमिक उन के उत्तम कर्मो के अनुसार अवश्य प्रदान करेंगे।

९८. तो (हे नबी!) जब आप कुरआन का अध्ययन करें तो धिक्कारे हुये शैतान से अल्लाह की शरण[3] माँग लिया करें।

९९. वस्तुत: उस का वश उन पर नहीं है जो ईमान लाये हैं, और अपने पालनहार ही पर भरोसा करते हैं।

१००.उस का वश तो केवल उन कर चलता है जो उसे अपना संरक्षक बनाते है। और जो मिश्रणवादी (मुश्रिक) है।

१०१.और जब हम किसी आयत (विधान) के स्थान पर कोई आयत बदल देते हैं, और अल्लाह ही अधिक जानता है उसे जिस को वह उतारता है, तो कहते हैं कि आप तो केवल घड़ लेते हैं, बल्कि उन में अधिकतर जानते ही नहीं।

---

[1] अर्थात ऐसा न हो कि कोई व्यक्ति इस्लाम की सत्यता को स्वीकार करने के पश्चात् केवल तुम्हारे दुराचार को देख कर इस्लाम से फिर जाये। और तुम्हारे समुदाय में सम्मिलित होने से रुक जाये। अन्यथा तुम्हारा व्यवहार भी दूसरों से कुछ भिन्न नहीं है।

[2] अर्थात् संसारिक लाभ के लिये वचन भंग न करो। (देखिये: सूरह, आराफ़, आयत : १७२)

[3] अर्थात (अऊजुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम) पढ़ लिया करें।

१०२.आप कह दें कि इसे (रूहुल कुदुस)[1] ने आप के पालनहार की ओर से सत्य के साथ क्रमश: उतारा है ताकि उन्हें सुदृढ़ कर दे जो ईमान लाये हैं। तथा मार्ग दर्शन और शुभ सूचना है आज्ञाकारियों के लिये।

१०३.तथा हम जानते हैं कि वे (काफ़िर) कहते हैं कि उसे (नबी को) कोई मनुष्य सिखा रहा[2] है। जब कि उस की भाषा जिस की ओर संकेत करते है विदेशी है और यह[3] स्पष्ट अर्बी भाषा है।

१०४.वास्तव में जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते, उन्हें अल्लाह सुपथ नहीं दर्शाता। और उन्हीं के लिये दु:खदायी यातना है।

१०५.झूठ केवल वही घड़ते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते, और वही मिथ्यावादी (झूठे) हैं।

१०६.जिस ने अल्लाह के साथ कुफ़्र किया अपने ईमान लाने के पश्चात्, परन्तु जो बाध्य कर दिया गया हो इस दशा में कि उस का दिल ईमान से संतुष्ट हो, (उस के लिये क्षमा है)। परन्तु जिस ने कुफ़्र के साथ सीना खोल दिया[4] हो, तो उन्हीं पर अल्लाह का प्रकोप है, और उन्हीं के लिये महा यातना है।

१०७.यह इसलिये कि उन्हों ने संसारिक जीवन को परलोक पर प्राथमिकता दी है। और वास्तव में अल्लाह, काफ़िरों को सुपथ नहीं दिखाता।

१०८.वही लोग हैं जिन के दिलों तथा कानों और आँखो पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है। तथा यही लोग अचेत हैं।

१०९.निश्चय वही लोग परलोक में क्षतिग्रस्त होने वाले हैं।

११०.फिर वास्तव में आप का पालनहार उन लोगों[5] के लिये जिन्होंने हिज्रत (प्रस्थान) की, और उस के पश्चात् परीक्षा में डाले गये, फिर जिहाद किया, और

[1] इस का अर्थ: पवित्रात्मा है। जो जिब्रील अलैहिस्सलाम की उपाधि है। यही वह फ़रिश्ता है जो वह्यी लाता था।

[2] इस आयत में मक्का के मिश्रणवादियों के इस आरोप का खण्डन किया गया है कि कुरआन आप को एक विदेशी सिखा रहा है।

[3] अर्थात मक्के वाले जिसे कहते हैं कि वह मुहम्मद को कुरआन सिखाता है उस की भाषा तो अर्बी है ही नहीं तो वह आप को कुरआन कैसे सिखा सकता है जो बहुत उत्तम तथा श्रेष्ठ अर्बी भाषा में है। क्या वे इतना भी नहीं समझते?

[4] अर्थात स्वेच्छा कुफ़्र किया हो।

[5] इन से अभिप्रेत नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अलैहि व सल्लम के वह अनुयायी है जो मक्का से मदीना हिज्रत (प्रस्थान) कर गये।

सहन शील रहे, वास्तव में आप का पालनहार इस (परीक्षा) के पश्चात् बड़ा क्षमाशील दयावान् है।

१११.जिस दिन प्रत्येक प्राणी को अपने बचाव की चिन्ता होगी, और प्रत्येक प्राणी को उस के कर्मों का पूरा बदला दिया जायेगा, और उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

११२.अल्लाह ने एक बस्ती का उदाहरण दिया है, जो शान्त संतुष्ट थी, उस की जीविका प्रत्येक स्थान से प्राचुर्य के साथ पहुँच रही थी, तो उस ने अल्लाह के उपकारों के साथ कुफ़्र किया। तब अल्लाह ने उसे भूख और भय का वस्त्र चखा[१] दिया उस के बदले जो वह[२] कर रहे थे।

११३.और उन के पास एक[३] रसूल उन्हीं में से आया तो उन्होंने उसे झुठला दिया। अत: उन्हें यातना ने पकड़ लिया, और वह अत्याचारी थे।

११४.अत: उस में से खाओ जो अल्लाह ने तुम्हें हलाल (वैध) स्वच्छ जीविका प्रदान की है। और अल्लाह का उपकार मानो यदि तुम उसी की इबादत (वंदना) करते हो।

११५.जो कुछ उसने तुम पर हराम (अवैध) किया है वह मुर्दार तथा रक्त और सूअर का मांस है, और जिस पर अल्लाह के सिवा दूसरे का नाम लिया गया[४] हो, फिर जो भूख से आतुर हो जाये, इस दशा में कि वह नियम न तोड़ रहा[५] हो, और न आवश्यकता से अधिक खाये, तो वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

११६.और मत कहो – उस झूठ के कारण जो तुम्हारी जुबानों पर आ जाये – कि यह हलाल (वैध) है, और यह हराम (अवैध) है ताकि अल्लाह पर मिथ्यारोप[६] करो। वास्तव में जो लोग अल्लाह पर मिथ्यारोप करते है वह (कभी) सफल नहीं होते।

---

[१] अर्थात उन पर भूख और भय की आपदायें छा गईं।

[२] अर्थात उस बस्ती के निवासी। और इस बस्ती से अभिप्रेत मक्का है जिन पर उन के कुफ़्र के कारण अकाल पड़ा।

[३] अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का के क़ुरैशी वंश से ही थे फिर भी उन्हों ने आप की बात को नहीं माना।

[४] अर्थात अल्लाह के सिवा अन्य के नाम से बलि दिया गया पशु। हदीस में है कि जो अल्लाह के सिवा दूसरे के नाम से बलि दे उस पर अल्लाह की धिक्कार है। (सहीह बुख़ारी – १९७८)

[५] (देखिये : सूरह बक़रा, आयत – १७३, सूरह माइदा, आयत – ३, तथा सूरह अन्आम, आयत – १४५)

[६] क्योंकि हलाल और हराम करने का अधिकार केवल अल्लाह को है।

११७.(इस मिथ्यारोपण का) लाभ तो थोड़ा है और उन्हीं के लिये (परलोक में) दु:खदायी यातना है।

११८.और उन पर जो यहूदी हो गये, हम ने उसे हराम (अवैध) कर दिया जिस का वर्णन हम ने इस[१] से पहले आप से कर दिया है। और हम ने उन पर अत्याचार नहीं किया, परन्तु वे स्वयं अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे।

११९.फिर वास्तव में आप का पालनहार उन्हें जो अज्ञानता के कारण बुराई कर बैठे, फिर उस के पश्चात् क्षमायाचना कर ली, और अपना सुधार कर लिया, वास्तव में आप का पालनहार इस के पश्चात् अति क्षमी दयावान् है।

१२०.वास्तव में इब्राहीम एक समुदाय[२] था, अल्लाह का आज्ञाकारी एकेश्वरवादी था। और मिश्रणवादियों (मुश्रिकों) में से नहीं था।

१२१.उस के उपकारों को मानता था, उस ने उसे चुन लिया, और उसे सीधी राह दिखा दी।

१२२.और हम ने उसे संसार में भलाई दी, और वास्तव में वह परलोक मेंसदाचारियों में से होगा।

१२३.फिर हम ने (हे नबी!) आप की ओर वह्यी की, कि एकेश्वरवादी इब्राहीम के धर्म का अनुसरण करो, और वह मिश्रणवादियों मे से नहीं था।

१२४.सब्त[३] (शनिवार का दिन) तो उन्हीं पर निर्धारित किया गया जिन्हों ने उस में विभेद किया। और वस्तुत: आप का पालनहार उन के बीच उस में निर्णय कर देगा जिस में वे विभेद कर रहे थे।

१२५.(हे नबी!) आप उन्हें अपने पालनहार की राह (इस्लाम) की ओर तत्वदर्शिता तथा सदुपदेश के साथ बुलाये। और उन से ऐसे अन्दाज़ में शास्त्रार्थ करें जो

---

[१] इस से संकेत सूरह अन्आम, आयत – २६ की ओर है।

[२] अर्थात वह अकेला सम्पूर्ण समुदाय था। क्योंकि उस के वंश से दो बड़ी उम्मतें बनीं; एक बनी इस्राईल, और दूसरी बनी इस्माईल जो बाद में अरब कहलाये। इस का एक दूसरा अर्थ मुख्या भी होता है।

[३] अर्थात सब्त का सम्मान जैसे इस्लाम में नहीं है इसी प्रकार इब्राहील अलैहिस्सलाम के धर्म में भी नहीं है। यह तो केवल उन के लिये निर्धारित किया गया जिन्हों ने विभेद कर के जुमुआ के दिन की जगह सब्त का दिन निर्धारित कर लिया। तो अल्लाह ने उन के लिये उसी का सम्मान अनिवार्य कर दिया कि इस में शिकार न करो। (देखिये : सूरह आराफ़, आयत : १६३)

उत्तम हो। वास्तव में अल्लाह उसे अधिक जानता है, जो उस की राह से विचलित हो गया, और वही सुपथों को भी अधिक जानता है।

१२६.और यदि तुम लोग बदला लो, तो उतना ही लो, जितना तुम्हें सताया गया हो। और यदि सहन कर जाओ तो सहनशीलों के लिये यही उत्तम है।

१२७.और (हे नबी!) आप सहन करें, और आप का सहन करना अल्लाह ही की सहायता से है। और उन के (दुर्व्यवहार) पर शोक न करें, और न उन के षड्यंत्र से तनिक भी संकुचित हों।

१२८.वास्तव में अल्लाह उन लोगों के साथ है, जो सदाचारी है, और जो उपकार करने वाले हैं।

*****

सूरह बनी इस्राईल – १७

सूरह बनी इस्राईल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में १११ आयतें है।

- इस की आयत (२–३) में बनी इस्राईल से संबंधित कुछ शिक्षाप्रद बातें सुनाकर सावधान किया गया है। इसलिये इस का नाम सूरह (बनी इस्राईल) रखा गया है। और इस की प्रथम आयत में इस्राअ (मेअराज) का वर्णन हुआ है इसलिये इस का दूसरा नाम सूरह (इस्राअ) भी है।
- आयत ९ से २२ तक कुरआन का आमंत्रण प्रस्तुत किया गया है। और आयत ३९ तक उन शिक्षाओं का वर्णन है जो मनुष्य के कर्मो को सजाती है और अल्लाह से उन का संबंध दृढ़ करती है। और आयत ४० से ६० तक विरोधियों के संदेहों को दूर किया गया है।
- आयत ६१ से ६५ तक में शैतान इब्लीस के आदम (अलैहिस्सलाम) के सज्दे से इन्कार, और मनुष्य से बैर और उस के कुपथ करने के प्रयास का वर्णन किया गया है, जो आज भी लोगों को कुरआन से रोक रहा है। और उस से सावधान किया गया है।
- आयत ६६ ते ७२ तक तौहीद (एकेश्ववर्वाद) तथा परलोक पर विश्वास की बातें प्रस्तुत करते हुये आयत ७७ तक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विरोध की आँधियों में सत्य पर स्थित रहने के निर्देश दिये गये हैं।
- आयत ७८ से ८२ तक में नमाज़ की ताकीद, हिज्रत की ओर संकेत, तथा सत्य के प्रभुत्व की सूचना और अत्याचारयिों के लिये चेतावनी है।
- आयत ८३ से १०० तक में मनुष्य के कुकर्म पर पकड़ की गई है। तथा विरोधियों की आपत्तियों के उत्तर दिये गये है। फिर आयत १०४ तक मूसा (अलैहिस्सलाम) के चमत्कारों की चर्चा और उस पर ईमान न लाने के कारण फ़िरऔन पर यातना के आ जाने का वर्णन है।

– आयत १०५ से १११ तक यह निर्देश दिये गये हैं कि अल्लाह को कैसे पुकारा जाये,तथा उस की महिमा का वर्णन कैसे किया जाये।

मेअ्राज की घटना :

– यह अन्तिम नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की विशेषता है कि हिज्रत से एक वर्ष पहले अल्लाह ने एक रात आप को मस्जिदे हराम (काबा) से मस्जिदे अक़्सा तक, और फिर वहाँ से सातवें आकाश तक अपनी कुछ निशानियाँ दिखाने के लिये यात्रा कराई। फ़रिश्ते जिब्रील (अलैहिस्सलाम) ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को ''बुराक़'' (एक जानवर का नाम, जिस पर बैठकर आप ने यह यात्रा की थी) पर सवार किया और पहले मस्जिदे अक़्सा (फ़िलस्तीन) ले गये वहाँ आप ने सब नबियों को नमाज़ पढ़ाई। फिर आकाश पर ले गये आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) प्रत्येक आकाश पर नबियों से मिलते हुये सातवें आकाश पर पहुँचे। स्वर्ग और नरक को देखा। इस के पश्चात् आप को (सिद्रतुल मुन्तहा) ले जाया गया। फिर (बैतुल मामूर) आप के सामने किया गया। उस के पश्चात् अल्लाह के समीप पहुँचाया गया। और अल्लाह ने आप को कुछ उपदेश दिये, और दिन–रात में पाँच समय की नमाज़ अनिवार्य की। (सहीह बुख़ारी – ३२०७, मुस्लिम : १६४) (और देखिये : सूरह नज्म)

– जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने सवेरे अपनी जाति को इस यात्रा की सूचना दी तो उन्होंने आप का उपहास किया और आप से कहा कि बैतुल मक़्दिस की स्थिति बताओ। इस पर अल्लाह ने उसे आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सामने कर दिया, और आप ने आँखों से देखकर उन को उस की सब निशानियाँ बता दीं। (देखिये : सहीह बुख़ारी – ३४३७, मुस्लिम : १७२)

– आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने जाते और आते हुये राह मे उन के एक क़ाफ़िले से मिलने की भी चर्चा की और उस के मक्का आने का समय और उस ऊँट का चिन्ह भी बता दिया जो सब से आगे था और यह सब वैसे ही हुआ जैसे आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने बताया था। (सीरत इब्ने हिशाम : १/४०२–४०३)

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. पवित्र है वह जिस ने रात्रि के कुछ क्षण में अपने भक्त[१] को मस्जिदे हराम (मक्का से मस्जिदे अक़्सा तक यात्रा कराई। जिस के चतुर्दिग हम ने सम्पन्नता रखी है, ताकि उसे अपनी कुछ निशानियों का दर्शन करायें। वास्तव में वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

२. और हम ने मूसा को पुस्तक प्रदान की और उसे बनी इस्राईल के लिये मार्गदर्शन का साधन बनाया कि मेरे सिवा किसी को कार्यसाधक[२] न बनाओ।

३. हे उन की संतति जिन को हम ने नूह के साथ (नौका में) सवार किया। वास्तव में वह अति कृतज्ञ[३] भक्त था।

४. और हम ने बनी इस्राईल को उन की पुस्तक में सूचित कर दिया था कि तुम इस[४] धरती में दो बार उपद्रव करोगे, और बड़ा अत्याचार करोगे।

५. तो जब प्रथम उपद्रव का समय आया तो हम ने तुम पर अपने प्रबल योद्धा भक्तों को भेज दिया, जो नगरों मे घुस गये, और इस वचन को पूरा होना[५] ही था।

६. फिर हम ने उन पर तुम्हें पुनः प्रभुत्व दिया, तथा धनों और पुत्रों द्वारा तुम्हारी सहायता की, और तुम्हारी संख्या बहुत अधिक कर दी।

७. यदि तुम भला करोगे तो अपने लिये, और यदि बुरा करोगे तो अपने लिये। फिर जब दूसरे उपद्रव का समय आया ताकि (शत्रु) तुम्हारे चेहरे बिगाड़ दें, और

---

[१] अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को। इस आयत में उस सुप्रसिद्ध सत्य की चर्चा की गई है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से संबन्धित है। जिसे परिभाषिक रूप से ''इस्राअ'' कहा जाता है जिस का अर्थ है: रात की यात्रा। इस का सविस्तार विवरण हदीसों में किया गया है।

भाष्यकारों के अनुसार हिज्रत के कुछ पहले अल्लाह ने आप को रात्रि के कुछ भाग में मक्का से मस्जिदे अक़्सा तक जो फ़िलस्तीन में है यात्रा कराई। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है कि जब मक्का के मिश्रणवादियों ने मुझे झुठलाया, तो मैं हिज्र में (जो काॅबा का एक भाग है।) खड़ा हो गया। और अल्लाह ने बैतुम मक़दिस को मेरे लिये खोल दिया। और मैं उन्हें उस की निशानियाँ देख कर बताने लगा। (सहीह बुख़ारी,:४७१०)

[२] जिस पर निर्भर रहा जाये।

[३] अत: हे सर्वमानव तुम भी अल्लाह के उपकार के आभारी बनो।

[४] अर्थात् बैतुल मक़्दिस में।

[५] इस से अभिप्रेत बाबिल के राजा बुख़्तनस्सर का आक्रमण है जो लग भग छ: सौ वर्ष पूर्व मसीह हुआ। इस्राईलियों को बंदी बनाकर ईराक़ ले गया और बैतुल मुक़द्दस को तहस नहस कर दिया।

मस्जिद (अक़्सा) में वैसे ही प्रवेश कर जायें जैसे प्रथम बार प्रवेश कर गये, और ताकि जो भी उन के हाथ आये उसे पूर्णत: नाश[1] कर दें।

८. संभव है कि तुम्हारा पालनहार तुम पर दया करे। और यदि तुम प्रथम स्थिति पर आ गये, तो हम भी फिर[2] आयेंगे, और हम ने नरक को काफ़िरों के लिये कारावास बना दिया है।

९. वास्तव में यह कुरआन वह डगर दिखाता है जो सब से सीधी है, और उन ईमान वालों को शुभसूचना देता है जो सदाचार करते है, कि उन्हीं के लिये बहुत बड़ा प्रतिफल है।

१०. और जो आख़िरत (परलोक) पर ईमान नहीं लाते, हम ने उन के लिये दु:खदायी यातना तय्यार कर रखी है।

११. और मुनष्य (क्षुब्ध हो कर) अभिशाप करने लगता[3] है, जैसे भलाई के लिये प्रार्थना करता है। और मनुष्य बड़ा ही उतावला है।

१२. और हम ने रात्रि तथा दिवस को दो प्रतीक बनाया, फिर रात्रि के प्रतीक को हम ने अंधकार बनाया तथा दिवस के प्रतीक को प्रकाशयुक्त, ताकि तुम अपने पालनहार के अनुग्रह (जीविका) की खोज करोह। और वर्षों तथा हिसाब की गिनती जानो, तथा हम ने प्रत्येक चीज़ का सविस्तार वर्णन कर दिया।

१३. और प्रत्येक मनुष्य के कर्म पत्र को हम ने उस के गले का हार बना दिया है। और हम उस के लिये प्रलय के दिन एक कर्मलेख निकालेंगे जिसे वह खुला हुआ पायेगा।

१४. अपनाकर्मलेख पढ़ा लो, आज तू स्वयं अपना हिसाब लेने के लिये पर्याप्त है।

१५. जिस ने सीधी राह अपनायी, उस ने अपने ही लिये सीधी राह अपनायी। और जो सीधी राह से विचलित हो गया उस का (दुष्परिणाम) उसी पर है। और कोई दूसरे

---

[1] जब बनी इस्राईल पुन: पापाचारी बन गये, तो रोम के राजा कैसर ने लग भग सन् ७० ई. में बैतुल मक़्दिस पर आक्रमण कर के उन की दुर्गत बना दी। और उन की पुस्तक तौरात का नाश कर दिया और एक बड़ी संख्या को बंदी बना लिया। यह सब उन के कुकर्म के कारण हुआ।

[2] अर्थात् संसारिक दण्ड देने के लिये।

[3] अर्थात् स्वयं को और अपने घराने को शापने लगता है।

का बोझ (अपने ऊपर) नहीं लादेगा।[1] और हम यातना देने वाले नहीं हैं जब तक कि कोई रसूल न भेजें।[2]

१६. और जब हम किसी बस्ती का विनाश करना चाहते हैं तो उस के सम्पन्न लोगों को आदेश देते[3] हैं, फिर वह उस में उपद्रव करने लगते[4] हैं तो उस पर यातना की बात सिद्ध हो जाती है, और हम उस का पूर्णत: उन्मूलन कर देते हैं।

१७. और हम ने बहुत सी जातियों का नूह के पश्चात् विनाश किया है। और आप का पालनहार अपने दासों के पापों से सूचित होने–देखने को बहुत हैं।

१८. जो संसार ही चाहता हो हम उसे यहीं दे देते हैं, जो हम चाहते हैं, जिस के लिये चाहते हैं। फिर हम उस का परिणाम (परलोक मे) नरक बना देते हैं, जिस में वह निन्दित–तिरस्कृत हो कर प्रवेश करेगा।

१९. तथा जो परलोक चाहता हो और उस के लिये प्रयास करता हो, और वह एकेश्वरवादी हो, तो वही हैं जिन के प्रयास का आदर सम्मान किया जायेगा।

२०. हम प्रत्येक की सहायता करते हैं, इन की भी और उन की भी, और आप के पालनहार का प्रदान (किसी से) निषेधित (रोका हुआ)[5] नहीं है।

२१. आप विचार करें कि कैसे हम ने (संसार में) उन में से कुछ को कुछ पर प्रधानता दी है औ निश्चय परलोक के पद और प्रधानता और भी अधिक होगी।

२२. (हे मानव!) अल्लाह के साथ कोई दूसरा पूज्य न बना, अन्यथा बुरा और असहाय हो कर रह जायेगा।

२३. और (हे मनुष्य!) तेरे पालनहार ने आदेश दिया है कि उस के सिवा किसी की इबादत (वंदना) न करो, तथा माता–पिता के साथ उपकार करो, यदि तेरे पास

---

[1] आयत का भावार्थ यह है कि जो सदाचार करता है, वह किसी पर उपकार नहीं करता। बल्कि उस का लाभ उसी को मिलना है। और जो दुराचार करता है, उस का दण्ड भी उसी को भोगना है।

[2] ताकि वे यह बहाना न कर सकें कि हम ने सीधी राह को जाना ही नहीं था।

[3] अर्थात् आज्ञापालन का।

[4] अर्थात् हमारी आज्ञा का। आयत का भावार्थ यह है कि समाज के सम्पन्न लोगों का दुष्कर्म, अत्याचार और अवैज्ञा पूरी बस्ती के विनाश का कारण बन जाती है।

[5] अर्थात् अल्लाह संसार मे सभी को जीविका प्रदान करता है।

दोनों में से एक वृद्धावस्था को पहुँच जाये अथवा दोनों, तो उन्हें उफ़ तक न कहो, और न झिड़को। और उन से सादर बात बोलो।

२४. और उन के लिये विनम्रता का बाजू दया से झुका[१] दो, और प्रार्थना करो: हे मेरे पालनहार! उन दोनों पर दया कर, जैसे उन दोनों ने बाल्यावस्था में मेरा लालन–पालन किया है।

२५. तुम्हारा पालनहार अधिक जानता है जो कुछ तुम्हारी अन्तरात्माओं (मन) में है। यदि तुम सदाचारी रहे, तो वह अपनी ओर ध्यानमग्न रहने वालों के लिये अति क्षमावान् है।

२६. और समीपवर्तियों को उन का स्वत्व (हिस्सा) दो, तथा दरिद्र और यात्री को, और अपव्यय[२] न करो।

२७. वास्तव में अपव्ययी शैतान के भाई हैं और शैतान अपने पालनहार का अति कृतघ्न है।

२८. और यदि आप उन से विमुख हों अपने पालनहार की दया की खोज के लिये जिस की आशा रखते हों तो उन से सरल[३] बात बोलें।

२९. और अपना हाथ अपनी गरदन से न बाँध[४] लो, और न उसे पूरा खोल दो कि निन्दित विवश हो कर रह जाओ।

३०. वास्तव में आप का पालनहार ही विस्तृत कर देता है जीविका को जिस के लिये चाहता है, तथा संकीर्ण कर देता है। वास्तव में वही अपने दासों (बंदों) से अति सूचित[५] देखने वाला है।[६]

३१. और अपनी संतान को निर्धन हो जाने के भय से बध न करो, हम उन्हें तथा तुम्हें जीविका प्रदान करेंगे, वास्तव में उन्हें बध करना महा पाप हैं।

---

[१] अर्थात् उन के साथ विनम्रता और दया का व्यवहार करो।

[२] अर्थात् अपरिमित और दुष्कर्म में ख़र्च न करो।

[३] अर्थात् उन्हें सरलता से समझा दें कि अभी कुछ नहीं है। जैसे ही कुछ आया तुम्हें अवश्य दूँगा।

[४] हाथ बाँधने और खोलने का अर्थ है, कृपण तथा अपव्यय करना। इस में व्यय और दान में संतुलन रखने की शिक्षा दी गयी है।

[५] अर्थात वह सब की दशा और कौन किस के योग्य है देखता और जानता है।

[६] हदीस में है कि शिर्क के बाद सब से बड़ा पाप अपनी संतान को खिलाने के भय से मार डालना है। (बुख़ारी)

३२. और व्यभिचार के समीप भी न जाओ, वास्तव में वह निर्लज्ज़ा तथा बुरी रीति है।

३३. और किसी प्राण को जिसे अल्लाह ने हराम (अवैध) किया है, बध न करो, परन्तु धर्म विधान[१] के अनुसार। और जोअत्याचार से बध (निहत) किया गया हो हम ने उस के उत्तराधिकारी को अधिकार[२] प्रदान किया है। अत: वह बध करने में अतिक्रमण[३] न करे, वास्तव में उसे सहायता दी गयी है।

३४. और अनाथ के धन के समीप भी न जाओ, परन्तु ऐसी रीति से जो उत्तम हो, यहाँ तक कि वह अपनी युवा अवस्था को पहुँच जाये, और वचन पूरा करो, वास्तव में वचन के विषय में प्रश्न किया जायेगा।

३५. और पूरा नाप कर दो, जब नापो, और सही तराजू से तौलो। यह अधिक अच्छा और इस का परिणाम उत्तम है।

३६. और ऐसी बात के पीछे न पड़ो, जिस का तुम्हें कोई ज्ञान न हो, निश्चय कान तथा आँख और दिल इन सब के बारे में (प्रलय के दिन) प्रश्न किया जायेगा।[४]

३७. और धरती में अकड़कर न चलो, वास्तव में न तुम धरती को फाड़ सकोगे, और न लम्बाई में पर्वतों तक पहुँच सकोगे।

३८. यह सब बातें हैं। इन में बुरी बात आप के पालनहार को अप्रिय है।

३९. यह तत्वदर्शिता की वह बातें हैं, जिन की वह्यी (प्रकाशना) आप की ओर आप के पालनहार ने की है, और अल्लाह के साथ कोई दूसरा पूज्य न बना लेना,अन्यथा नरक में निन्दित तिरस्कृत कर के फेंक दिये जाओगे।

४०. क्या तुम्हारे पालनहार ने तुम्हें पुत्र प्रदान करने के लिये विशेष कर लिया है, और सव्यं ने फ़रिश्तों को पुत्रियाँ बना लिया है? वास्तव में तुम बहुत बड़ी बात कह रहे हो।[१]

---

[१] अर्थात प्रतिहत्या में अथवा विवाहित होते हुये व्यभिचार के कारण, अतवा इस्लाम से फिर जाने के कारण।

[२] अधिकार का अर्थ यह है कि वह इस के आदार पर हत्–दण्ड की मांग कर सकता है, अथवा बध या अर्थ–दण्ड लेने या क्षमा कर देने का अधिकारी है।

[३] अर्थात एक के बदले दो को या दूसरे की हत्या न करे।

[४] अल्लाह, प्रलय के दिन इन को बोलने की शक्ति देगा। और वह उस के विरुद्ध साक्ष्य देंगे। (देखिये : सूरह हा, मीम सज्दा, आयत : २०–२१)

४१. और हम ने विविध प्रकार से इस क़ुरआन में (तथ्यों का) वर्णन कर दिया है, ताकि लोग शिक्षा ग्रहण करें। परन्तु उस ने उन की घृणा को और अधिक कर दिया।

४२. आप कह दें कि यदि अल्लाह के साथ दूसरे पूज्य होते, जैसा कि वह (मिश्रणवादी) कहते हैं, तो वह अर्श (सिंहासन) के स्वामी (अल्लाह) की ओर अवश्य कोई राह[२] खोजते।

४३. वह पवित्र और बहुत उच्च है, उन बातों से जिन को वे बनाते है।

४४. उस की पवित्रता का वर्णन कर रहे हैं सातों आकाश तथा धरती और जो कुछ उन में है। और नहीं है कोई चीज़ परन्तु वह उस की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का वर्णन कर रही है, किन्तु तुम उन के पवित्रता गान को समझते नहीं हो। वास्तव में वह अति सहिष्णु क्षमाशील है।

४५. और जब आप क़ुरआन पढ़ते हैं, तो हम आप के बीच और उन के बीच जो आख़िरत (परलोक) पर ईमान नहीं लाते, एक छुपा हुआ आवरण (पर्दा) बना[३] देते हैं।

४६. तथा उन के दिलों पर ऐसे खोल चढ़ा देते हैं कि उस (क़ुरआन) को न समझें, और उन के कानों मे बोझ। और जब आप अपने अकेले पालनहार की चर्चा क़ुरआन में करते हैं तो वह घृणा से मुँह फेर लेते हैं।

४७. और हम उन के विचारों से भली भाँति अवगत है, जब वे कान लगाकर आप की बात सुनते हैं, और जब वे आपस में कानाफूसी करते हैं। जब वे अत्याचारी कहते हैं कि तुम लोग तो बस एक जादू किये हुये व्यक्ति का अनुसरण[४] करते हो।

---

[१] इस आयत में उन अर्बों का खण्डन किया गया है जो फ़रिश्तों को अल्लाह की पुत्रियाँ कहते थे। जब कि स्वयं पुत्रियों के जन्म से उदास हो जाते थे। और कभी ऐसा भी हुआ कि उन्हें जीवित गाड़ दिया जाता था। तो बताओ यह कहाँ का न्याय है कि अपने लिये पुत्रियों को अप्रिय समझते हो और अल्लाह के लिये पुत्रियाँ बना रखीं हो?

[२] ताकि उस से संघर्ष कर के अपना प्रभुत्व स्थापित कर लें।

[३] अर्थात् परलोक पर ईमान न लाने का यही स्वभाविक परिणाम है कि क़ुरआन को समझने की योग्यता खो जाती है।

[४] मक्का के काफ़िर छुप–छुप कर क़ुरआन सुनते। फिर आपस में परामर्श करते कि इस का तोड़ क्या हो? और जब किसी पर संदेह हो जाता कि वह क़ुरआन से प्रभावित हो गया है। तो उसे समझाते कि इस के चक्कर में क्या पड़े हो, इस पर किसी ने जादू कर दिया है इस लिये बहकी–बहकी बातें कर रहा है।

४८. सोचिये कि वह आप के लिये कैसे उदाहरण दे रहे हैं? अतः वे कुपथ हो गये, वह सीधी राह नहीं पा सकेंगे।

४९. और उन्होंने कहा: क्या हम जब अस्थियाँ और चूर्ण विचूर्ण हो जायेंगे तो क्या हम वास्तव में नई उत्पत्ति में पुन: जीवित कर दिये[१] जायेंगे?

५०. आप कह दे कि पत्थर बन जाओ, या लोहा।

५१. अथवा कोई उत्पत्ति जो तुम्हारे मन में इस से बड़ी हो। फिर वे पूछते है कि कौन हमें पुन: जीवित करेगा? आप कह दें: वही जिस ने प्रथम चरण में तुम्हारी उत्पत्ति की है। फिर वह आप के आगे सिर हिलायेंगे[२], और कहेंगे, ऐसा कब होगा? आप कह दें कि संभवत: वह समीप ही है।

५२. जिस दिन वे तुम्हें पुकारेगा, तो तुम उस की प्रशंसा करते हुये स्वीकार कर लोगे[३] और यह सोचोगे कि तुम (संसार में) थोड़े ही समय रहे हो।

५३. और आप मेरे भक्तों से कह दें कि वह बात बोलें जो उत्तम हो, वास्तव में शैतान उन के बीच बिगाड़ उत्पन्न करना चाहता[४] है। निश्चय शैतान मनुष्य का खुला शत्रु है।

५४. तुम्हारा पालनहार तुम से भली भाँति अवगत है, यदि चाहे तो तुम पर दया करे, अथवा यदि चाहे तो तुम्हें यातना दे और हम ने आप को उन पर निरीक्षक बना कर नहीं भेजा[५] हैं।

५५. (हे नबी!) आप का पालनहार भली भाँति अवगत है उस से जो आकाशों तथा धरती में है। और हम ने प्रधानता दी है कुछ नबियों को कुछ पर, और हम ने दावूद को ज़बूर (पुस्तक) प्रदान की।

५६. आप कह दें कि उन को पुकारो, जिन को उस (अल्लाह) के सिवा (पूज्य) समझते हो। न वे तुम से दुःख दूर कर सकते, और न (तुम्हारी दशा) बदल सकते हैं।

---

[१] ऐसी बात वह परिहास अथवा इन्कार के कारण कहते थे।

[२] अर्थात् परिहास करते हुये आश्चर्य से सिर हिलायेंगे।

[३] अर्थात अपनी क़ब्रों से प्रलय के दिन जीवित होकर उपस्थित हो जाओगे।

[४] अर्थात् कटु शब्दों द्वारा।

[५] अर्थात् आप का दायित्व केवल उपदेश पहुँचा देना है, वह तो स्वयं अल्लाह के समीप होने की आशा लगाये हुये हैं, कि कैसे उस तक पहुँचा जाये तो भला वे पूज्य कैसे हो सकते हैं।

५७. वास्तव में जिन को यह लोग[1] पुकारते हैं वह स्वयं अपने पालनहार का सामिप्य प्राप्त करने का साधन[2] खोजते हैं, कि कौन अधिक समीप है? और उस की दया की आशा रखते हैं। और उस की यातना से डरते हैं। वास्तव में आप के पालनहार की यातना डरने योग्य है।

५८. और कोइ (अत्याचारी) बस्ती नहीं है, परन्तु हम उसे प्रलय के दिन से पहले ध्वस्त करने वाले या कड़ी यातना देने वाले हैं, यह (अल्लाह के) लेख में अंकित हैं।

५९. और हमें नहीं रोका इस से कि हम निशानियाँ भेजें किन्तु इस बात ने कि विगत लोगों ने उन्हें झुठला[3] दिया और हम ने समूद को ऊँटनी का खुला चमत्कार दिया, तो उन्हों ने उस पर अत्याचार किया। और हम चमत्कार डराने के लिये ही भेजते है।

६०. और (हे नबी!) याद करो जब हम ने आप से कह दिया था कि आप के पालनहार ने लोगों को अपने नियंत्रण में ले रखा है, और यह जो कुछ हम ने आप को दिखाया[4] उस को और उस वृक्ष को जिस पर कुरआन में धिक्कार की गयी है, हम ने लोगों के लिये एक परीक्षा बना दिया[5] है, और हम उन्हें चेतावनी पर चेतावनी दे दे रहे हैं, फिर भी वह उन की अवैज्ञा को ही अधिक करती जा रही है।

६१. और (याद करो), जब हम ने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो इब्लीस के सिवा सब ने सज्दा किया। उस ने कहा: क्या मैं उसे सज्दा करूँ जिसे तू ने गारे से उत्पन्न किया है?

---

[1] अर्थात् मुश्रिक जिन नबियों, महापुरुषों और फ़रिश्तों को पुकारते हैं।

[2] साधन से अभिप्रेत सत्कर्म और सदाचार है।

[3] अर्थात् चमत्कार की माँग करने पर चमत्कार इस लिये नहीं भेजा जाता कि उस के पश्चात् न मानने पर यातना का आना अनिवार्य हो जाता है, जैसा कि भाष्यकारों ने लिखा है

[4] इस से संकते ''मेअराज'' की ओर है। और यहाँ ''रु. या'' शब्द का अर्थ स्वप्न नहीं बल्कि आँखों से देखना है। और धिक्कारे हुये वृक्ष से अभिप्राय ज़क़्क़ूम (थोहड़) का वृक्ष है। (सहीह बुख़ारी, हदीस ४७१६)

[5] अर्थात काफ़िरों के लिये जिन्होंने कहा कि यह कैसे हो सकता है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) एक ही रात में बेतुल मुक़द्दस पहुँच जायें फिर वहाँ से आकश की सैर कर के वापिस मक्का भी आ जायें।

६२. (तथा) उस ने कहा: तू बता, क्या यही है जिसे तूने मुझ पर प्रधानता दी है? यदि तू ने मुझे प्रलय के दिन तक अवसर दिया तो मैं उस की संतति को अपने नियंत्रण में कर लूँगा[1] कुछ के सिवा।

६३. अल्लाह ने कहा: ''चले जाओ'', जो उन में से तेरा अनुसरण करेगा तो निश्चय नरक तुम सब का प्रतिकार (बदला) है,भरपूर बदला।

६४. तू उन में से जिस को हो सके अपनी ध्वनि[2] से बहका ले ।और उन पर अपनी सवार और पैदल (सेना) चढ़ा[3] ले। और उन का (उन के) धनों और संतान में साझी बन[4] जा। तथा उन्हें (मिथ्या) वचन दे। और शैतान उन्हें धोखे के सिवा (कोई) वचन हीं देता

६५. वास्तव में जो मेरे भक्त हैं उन पर तेरा कोई वश नहीं चल सकता। और आप के पालनहार का सहायक होना यह बहुत है।

६६. तुम्हारा पालनहार तो वह है जो तुम्हारे लिये सागर में नौका चलाता है, ताकि तुम उस की जीविका की खोज करो, वास्तव में वह तुम्हारे लिये अति दयावान् है।

६७. और जब सागर में तुम पर कोई आपदा आ पड़ती है, तो अल्लाह के सिवा जिन को तुम पुकारते हो खो जाते (भूल जाते) हो।[5] और जब तुम्हें बचा कर थल तक पहुँचा देता हैं तो मुख फेर लेते हो। और मनुष्य है ही अति कृतघ्न।

६८. क्या तुम निर्भय हो गये हो कि अल्लाह तुम्हें थल (धरती) ही में धंसा दे? अथवा तुम पर पथरीली आँधी भेज दे? फिर तुम अपना कोई रक्षक न पाओ

६९. या तुम निर्भय हो गये हो कि फिर उस (सागर) में तुम को दूसरी बार ले जाये, फिर तुम पर वायु का प्रचण्ड झोंका भेज दें,फिर तुम को डूबो दे, उस कुफ़्र के

---

[1] अर्थात् कुपथ कर दूँगा

[2] अर्थात गाने और बाजे द्वारा।

[3] अर्थात अपने जिन्न और मनुष्य सहायकों द्वारा उन्हें बहकाने का उपाय कर ले।

[4] अर्तात अवैध धन अर्जित करने और व्यभिचार की प्रेरणा दे।

[5] अर्थात ऐसी दशा में केवल अल्लाह याद आता है और उसी से सहायता माँगते हो किन्तु जब सागर से निकल जाते हो तो फिर उन्हीं देवी देवताओं की वंदना करने लगते हो।

बदले जो तुम ने किया है। फिर तुम अपने लिये उसे नहीं पाओगे जो हम पर इस का दोष[1] धरे।

७०. और हम ने बनी आदम (मानव) को प्रधानता दी, और उन्हें थल और जल में सवार[2] किया, और उन्हें स्वच्छ चीज़ो से जीविका प्रदान की, और हम ने उन्हें बहुत सी उन चीज़ों पर प्रधानता दी जिन की हम ने उत्पत्ति की है।

७१. जिस दिन हम सब लोगों को उन के अग्रणी के साथ बुलायेंगे तो जिन का कर्मलेख उन के सीधे हाथ में दिया जायेगा तो वही अपना कर्मलेख पढ़ेंगे, और उन पर धागे बराबर भी अत्याचार नहीं किया जायेगा।

७२. और जो इस (संसार) में अन्धा[3] रह गया तो वह आख़िरत (परलोक) में भी अन्धा और अधिक कुपथ होगा।

७३. और (हे नबी!) वह (काफ़िर) समीप था कि आप को उस वह्यी से फेर दें जो हम ने आप की ओर भेजी है, ताकि आप हमारे ऊपर अपनी ओर से कोई दूसरी बात घड़ लें, और उस समय वह आप को अवश्य अपना मित्र बना लेते।

७४. और यदि हम आप को सुदृढ़ न रखते, तो आप उन की ओर कुछ न कुछ झुक जाते।

७५. तब हम आप को जीवन की दुगुनी तथा मरण की दोहरी यातना चखाते। फिर आप अपने लिये हमारे ऊपर कोई सहायक न पाते।

७६. और समीप है कि वह आप को इस धरती (मक्का) से विचला दें, ताकि आप को उस से निकाल दें, तब वह आप के पश्चात् कुछ ही दिन रह सकेंगे।

७७. यह[4] उस के लिये नियम रहा है जिसे हम ने आप से पहले अपने रसूलों में से भेजा है। और आप हमारे नियम में कोई परिवर्तन नहीं पायेंगे।

७८. आप नमाज़ की स्थापना करें सूर्यास्त से रात के अन्धेरे[1] तक, तथा प्रात: (फ़ज्र के समय) कुरआन पढ़िये। वास्तव में प्रात: कुरआन पढ़ना उपस्थिती का समय[2] है।

---

[1] और हम से बदले की माँग कर सके।

[2] अर्थात् सवारी के साधन दिये।

[3] अर्थात् सत्य से अन्धा।

[4] अर्थात् रसूल को निकालने पर यातना देने का हमारा नियम रहा है।

७९. तथा आप रात के कुछ समय जागिये फिर ''तहज्जुद''[३] पढ़िये। यह आप के लिये अधिक (नफ़्ल) है। संभव है आप का पालनहार आप को (मक़ामे महमूद)[४] प्रदान कर दे।

८०. और प्रार्थना करें कि मेरे पालनहार! मुझे प्रवेश[५] दे सत्य के साथ, और निकाल सत्य के साथ। तथा मेरे लिये अपनी ओर से सहायक प्रभुत्व बना दे।

८१. तथा कहिये कि सत्य आ गया, और असत्य ध्वस्त–निरस्त हो गया, वास्तव में असत्य को ध्वस्त–निरस्त होना ही है।[६]

८२. और हम कुरआन में वह चीज़ उतार रहे हैं, जो आरोग्य तथा दया है ईमान वालों के लिये। और वह अत्याचारियों की क्षति को ही अधिक करता है।

८३. और जब हम मानव पर उपकार करते हैं, तो मुक फेर लेते है और दूर हो जाता[७] है। तथा जब उसे दुःख पहुँचता है, तो निराश हो जाता है।

८४. आप कह दें कि प्रत्येक अपनी आस्था के अनुसार कर्म कर रहा है, तो आप का पालनहार ही भली भाँति जान रहा है कि कौन अधिक सीधी डगर पर है।

८५. (हे नबी!) लोग आप से रूह[८] के विषय में पूछते हैं, आप कह दें: रूह मेरे पालनहार के आदेश से है। और तुम्हें जो ज्ञान दिया गया वह बहुत थोड़ा है।

८६. और यदि हम चाहें तो वह सब कुछ ले जायें जो आप की ओर हम ने वह्यी किया है, फिर आप हम पर अपना कोई सहायक नहीं पायेंगे।

---

[१] अर्थात् जुहर, अस्र और मग़्रिब तथा इशा की नमाज़।

[२] अर्थात् फ़ज्र की नमाज़ के समय रात और दिन के फ़रिश्ते एकत्र तथा उपस्थित रहते हैं। (बुख़ारी,मुस्लिम)

[३] तहज्जुद का अर्थ है: रात के अन्तिम भाग में नमाज़ पढ़ना।

[४] (मक़ामे महमूद) का अर्थ है प्रशंसा योग्य स्थान । और इस से अभिप्राय वह स्थान है जहाँ से आप प्रलय के दिन शफ़ाअत (सिफ़ारिश) करेंगे।)

[५] अर्थात् मदीना में, मक्का से निकाल कर।

[६] अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का (की विजय के दिन) उस में प्रवेश किया तो काॅबा के आस पास तीन सौ साठ मुर्तियाँ थीं। और आप के हाथ में एक छड़ी थी, जिस से उन को मार रहे थे। और आप यही आयत पढ़ते जा रहे थे। (सहीह बुख़ारी ४७२०, मुस्लिम १७८१)

[७] अर्थात् अल्लाह की आज्ञा का पालन करने से।

[८] ''रूह'' का अर्थ : आत्मा है जो हर प्राणी के जीवन का मूल है। किन्तु उस की वास्तविकता क्या है? यह कोई नहीं जानता। क्योंकि मनुष्य के पास जो ज्ञान है वह बहुत कम है।

८७. किन्तु आप के पालनहार की दया के कारण (यह आप को प्राप्त है)। वास्तव में उस का प्रदान आप पर बहुत बड़ा है।

८८. आप कह दें: यदि सब मनुष्य तथा जिन्न इस पर एकत्र हो जायें कि इस कुरआन के समान ला देंगे, तो इस के समान नहीं ला सकेंगे, चाहे वह एक दूसरे के समर्थक ही क्यों न हो जायें।

८९. और हम ने लोगों के लिये इस कुरआन में प्रत्येक उदाहरण विविध शैली में वर्णित किया है, फिर भी अधिकतर लोगों ने कुफ़्र के सिवा अस्वीकार ही किया है।

९०. और उन्हों ने कहा: हम आप पर कदापि ईमान हीं लायेंगे, यहाँ तक कि आप हमारे लिये धरती से एक चश्मा प्रवाहित कर दें।

९१. अथवा आप के लिये खजूर अथवा अँगूर का कोई बाग़ हो, फिर उस के बीच आप नहरें प्रवाहित कर दें।

९२. अथवा हम पर आकाश को जैसा आप का विचार है, खण्ड–खण्ड कर के गिरा दें, या अल्लाह और फ़रिश्तों को साक्षात हमारे सामने ला दें।

९३. अथवा आप के लिये सोने का एक घर हो जाये, अथवा आकाश में चढ़ जाये, और हम आप के चढ़ने का भी कदापि विश्वास नहीं करेंगे, यहाँ तक की हम पर एक पुस्तक उतार लाये जिसे हम पढ़ें। आप कह दें कि मेरा पालनहार पवित्र हैं, मैं तो बस एक रसूल (संदेशवाहक) मनुष्य[१] हूँ।

९४. और नहीं रोका लोगों को कि वह ईमना लायें, जब उन के पास मार्गदर्शन[२] आ गया, गया, परन्तु इस ने कि उन्होंने कहा: क्या अल्लाह ने एक मनुष्य को रसूल बना कर भेजा है?

९५. (हे नबी!) आप कह दें कि यदि धरती में फ़रिश्ते निश्चिन्त हो कर चलते –फिरते होते, तो हम अवश्य उन पर आकाश से कोई फ़रिश्ता रसूल बना कर उतारते।

---

[१] अर्थात् मैं अपने पालनहार की वह्यी का अनुसरण करता हूँ । और यह सब चीज़ें अल्लाह के बस में हैं। यदि वह चाहे तो एक क्षण मे सब कुछ कर सकता है किन्तु मैं तो तुम्हारेजैसा एक मनुष्य हूँ मुझे केवल रसूल बना कर भेजा गया है ताकि तुम्हें अल्लाह का संदेश सुनाऊँ। रहा चमत्कार तो वह अल्लाह के हाथ में है। जिसे चाहे दिखा सकता है। फिर क्या तुम चमत्कार देख कर ईमान लाओगे? यदि ऐसा होता तो तुम कभी के ईमान ला चुके होते क्योंकि कुरआन से बड़ा क्या चमत्कार हो सकता है।

[२] अर्थात् रसूल तथा पुस्तकें संमार्ग दर्शाने के लिये।

९६. आप कह दें कि मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह का साक्ष्य[1] बहुत है। वास्तव में वह अपने दासों (बंदों) से सूचित, सब को देखने वाला है।

९७. जिसे अल्लाह सुपथ दिखा दे, वही सुपथगामी है। और जिसे कुपथ कर दे तो आप कदापि नहीं पायेंगे उन के लिये उस के सिवा कोई सहायक। और हम उन्हें एकत्र करेंगे प्रलय के दिन उन के मुखों के बल अंधे तथा गूँगे और बहरे बना कर । और उन का स्थान नरक है, जब भी वह बुझने लगेगी तो हम उसे और भड़का देंगे।

९८. यही उन का प्रतिकार (बदला) है, इस लिये कि उन्हों ने हमारी आयतों के साथ कुफ़्र किया, और कहा: क्या जब हम अस्थियाँ और चूर–चूर हो जायेंगे तो नई उत्पत्ति में पुन: जीवित किये जायेंगे?[2]

९९. क्या वह विचार नहीं करते कि जिस अल्लाह ने आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति की है, वह समर्थ है इस बात पर कि उन के जैसी उत्पत्ति कर दे?[3] तथा उस ने उन के लिये एक निर्धारित अवधि बनायी है, जिस में कोई संदेह नहीं है। फिर भी अत्याचारियों ने कुफ़्र के सिवा अस्वीकार ही किया।

१००.आप कह दें कि यदि तुम ही स्वामी होते अपने पालनहार की दया के कोशों के, तब तो तुम ख़र्च हो जाने के भय से (अपने ही पास) रोक रखते, और मनुष्य बड़ा ही कंजूस है।

१०१.और हम ने मूसा को नौ खुली निशानियाँ दीं[4], अत: बनी इस्राईल से आप पूछ लें, जब वह (मूसा) उन के पास आया, तो फ़िरऔन ने उस से कहा: हे मूसा! मैं समझता हूँ कि तुम पर जादू कर दिया गया है।

१०२.उस (मूसा) ने उत्तर दिया: तुझे विश्वास है कि इन को आकाशों तथा धरती के पालनहार ही ने सोच–विचार करने के लिये उतारा है, और हे फ़िरऔन! मैं तुम्हें निश्चय ध्वस्त समझता हूँ।

---

[1] अर्थात् मेरे रसूल होने का साक्षी अल्लाह है।

[2] अर्थात् ऐसा होना संभव नहीं है कि जब हमारी हड्डियाँ सड़ गल जायें तो हम फिर उठाये जायें।

[3] अर्थात् जिस ने आकाश तथा धरती की उत्पत्ति की उस के लिये मनुषय को दोबारा उठाना अधिक सरल है, किन्तु वह समझते नहीं है।

[4] वह नौ निशानियाँ निम्नलिखित थीं : हाथ की चमक, लाठी, आकाल, तुफ़ान, टिड्डी, जूयें,मेंढक, खून और सागर का दो भाग हो जाना।

१०३.अन्ततः उस ने निश्चय किया कि उन[1] को धरती से[2] उखाड़ फेंके, तो हम ने उसे और उस के सब साथियों को डुबो दिया।

१०४.और हम ने उस के पश्चात् बनी इस्राईल से कहा: तुम इस धरती में बस जाओ। और जब आख़िरत के वचन का समय आयेगा, तो हम तुम्हें एकत्र कर लायेंगे।

१०५.और हम ने सत्य के साथ ही (कुरआन) को उतारा है, तथा वह सत्य के साथ ही उतरा है। और हम ने आप को बस शुभसूचना देने तथा सावधान करने वाला बनाकर भेजा है।

१०६.और इस कुरआन को हम ने थोड़ा थोड़ा कर के उतारा है, ताकि आप लोगों को इसे रुक रुक कर सुनाये, और हम ने इसे क्रमशः[3] उतारा है।

१०७.आप कह दें कि तुम इस पर ईमान लाओ अथवा ईमान न लाओ, वास्तव में जिन को इस से पहले ज्ञान दिया[4] गया है, जब उन्हें यह सुनाया जाता है, तो वह मुँह के बल सज्दे में गिर जाते हैं।

१०८.और कहते हैं : पवित्र है हमारा पालनहार! निश्चय हमारे पालनहार का वचन पूरा हो के रहा।

१०९.और वह मुँह के बल रोते हुये गिर जाते है। और वह उन की विनय को अधिक कर देता है।

११०.हे नबी! आप कह दें कि (अल्लाह) कह कर पुकारो, अथवा (रहमान) कह कर पुकारो, जिस नाम से भी पुकारो, उस के सभी नाम शुभ[5] है। और (हे नबी!) समाज़ में स्वर न तो ऊँचा करो, और न उसे नीचा करो, और इन दोनों के बीच की राह[6] अपनाओ।

---

[1] अर्थात् बनी इस्राईल को।

[2] अर्थात् मिस्र से।

[3] अर्थात् तेईस वर्ष की अवधि में।

[4] अर्थात् वह विद्वान जिन को कुरआन से पहले की पुस्तकों का ज्ञान है।

[5] अरब में ''अल्लाह'' शब्द प्रचलित था, मगर ''रहमान'' प्रचलित न था। इस लिये, वह इस नाम पर आपत्ति करते थे। यह आयत इसी का उत्तर है।

[6] हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (आरंभिक युग में) मक्का में छुप कर रहते थे। और जब अपने साथियों को ऊँचे स्वर में समाज़ पढ़ाते थे तो मुश्रिक उसे सुन कर कुरआन को तथा जिस ने कुआन उतारा है, और जो

१११.तथा कहो कि सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है जिस का कोई संतान हीं, और न राज्य में उस का कोई साझी है। और न अपमान से बचाने के लिये उस का कोई समर्थक है। और आप उस की महिमा का वर्णन करें।

*****

उसे लाया है, सब को गालियाँ देते थे। अत: अल्लाह ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह आदेश दिया। (सहीह बुख़ारी, हदीस नं. : ४७२२)

सूरह कह्फ़ – १८

सूरह कह्फ़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ११० आयतें है।

- इस में कह्फ़ (गुफ़ा) वालों की कथा का वर्णन है, जिस से दूसरे जीवन का विश्वास दिलाया गया है।
- इस में नसारा (ईसाईयों) को चेतावनी दी गयी है जिन्हों नें अल्लाहं का पुत्र होने की बात घड़ ली। और शिर्क में उलझ गये, जिस से ताहीद पर आस्था का कोई अर्थ नहीं रह गया।
- इस में दो व्यक्तियों की दशा का वर्णन किया गया है जिन में एक संसारिक सुख में मग्न था और सूदरा परलोक पर विश्वास रखता था। फिर जो संसारिक सुख में मग्न था, उस का दुष्परिणाम दिखाया गया है और संसारिक जीवन का एक उदाहरण दे कर बताया गया है कि परलोक में सदाचार ही काम आयेगा।
- इस में मूसा (अलैहिस्सलाम) की यात्रा का वर्णन करते हुये अल्लाह के ज्ञान के कुछ भेद उजागर किये गये है, ताकि मनुष्य यह समझे की संसार में जो कुछ होता है उस में कुछ भेद अवश्य होता है जिसे वह नहीं जान सकता।
- इस में (जुल क़रनैन) की कथा का वर्णन कर के यह दिखाया गया है उस ने कैसे अल्लाह से डरते हुये और परलोक की जवाब देही (उत्तरदायित्व) का ध्यान रखते हुये अपने अधिकार का प्रयोग किया।
- अन्त में शिर्क और परलोक के इन्कार पर चेतावनी है। हदीस में है कि जो सूरह कह्फ़ के आरंभ की दस आयतें याद कर ले तो वह दज्ञाल के उपद्रव से बचा लिया जायेगा। (सहीह मुस्लिम ८०९)। दूसरी हदीस में है कि एक व्यक्ति रात में सूरह कह्फ़ पढ़ रहा था और उस का घोड़ा उस के पास ही बंधा हुआ था कि एक बादल छा गया और समीप आता गया और घोड़ा बिदकने लगा। जब सवेरा हुआ तो उस ने यह बात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बतायी। आप ने कहा: यह शान्ति थी जो कुरआन के कारण उतरी थी। (बुख़ारी : ५०११, मुस्लिम : ७९५)

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. सब प्रशंसा अल्लाह के लिये हैं जिस ने अपने भक्त पर यह पुस्तक उतारी। और उस में कोई टेढ़ी बात नहीं रखी।

२. अति सीधी (पुस्तक), ताकि वह अपने पास की कड़ी यातना से सावधान कर दे, और ईमना वालों को जो सदाचार करते हो, शुभ सूचना सुना दे कि उन्हीं के लिये अच्छा बदला है।

३. जिस में वे नित्य सदावासी होंगे।

४. और उन को सावधान करे जिन्हों ने कहा कि अल्लाह ने अपने लिये कोई संतान बना ली है।

५. उन्हें इस का कुछ ज्ञान है, और न उन के पूर्वजों को। बहुत बड़ी बात है जो उन के मुखों से निकल रही है, वह सरासर झूठ ही बोल रहे हैं।

६. तो संभवत: आप इन के पीछे अपना प्राण खो देंगे संताप के कारण, यदि वह इस हदीस (कुरआन) पर ईमान न लायें।

७. वास्तव में जो कुछ धरती के ऊपर है, उसे हम ने उस के लिये शोभा बनाया है, ताकि उन की परीक्षा लें कि उन में कौन कर्म में सब से अच्छा है?

८. और निश्चय हम कर देने[१] वाले हैं, जो उस (धरती) के ऊपर है उसे (बंजर) धूल।

९. (हे नबी!) क्या आप ने समझा है कि गुफ़ा तथा शिला लेख वाले[२] हमारे अद्भुत लक्षणों (निशानियों) में से थे?[३]

१०. जब नवयुवकों ने गुफा की ओर शरण ली[४], और प्रार्थना की: हे हमारे पालनहार! हमें अपनी विशेष दया प्रदान कर, और हमारे लिये प्रबंध कर दे हमारे विषय सुधार का।

---

[१] अर्थात् प्रलय के दिन।

[२] कुछ भाष्यकारों ने लिखा है कि (रक़ीम) शब्द जिस का अर्थ: शिला लेख किया गया है, एक बस्ती का नाम है।

[३] अर्थात् आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति हमारी शक्ति का इस से भी बड़ा लक्षण है।

[४] अर्थात् नव युवकों ने अपने ईमान की रक्षा के लिये गुफा में शरण ली। जिस गुफा के उपर आगे चल कर उन के नामों का स्मारक शिला लेख लगा दिया गया था। उल्लेखों से यह विद्वित होता है कि नवयुवक ईसा अलैहिस्सलाम के अनुयायियों में से थे। और रोम के मुश्रिक राजा की प्रजा थे। जो एकेश्वर वादियों का शत्रु था। और उन्हें मुर्ति पूजा के लिये बाध्य

११. तो हमने उन्हें गुफ़ा में सुला दिया कई वर्षों तक।
१२. फिर हम ने उन्हें जगा दिया ताकि हम यह जान लें कि दो समुदायों में से किस ने उन के ठहरे रहने की अवधि को अधिक याद रखा है?
१३. हम आप को उन की सत्य कथा सुना रहे है। वास्तव में वे कुछ नवयुवक थे, जो अपने पालनहार पर ईमान लाये, और हम ने उन्हे मार्गदर्शन में अधिक कर दिया।
१४. और हम ने उन के दिलों को सुदृढ़ कर दिया जब वे खड़े हुये, फिर कहा: हमारा पालनहार वही है जो आकाशों तथा धरती का पालनहार है। हम उस के सिवा कदापि किसी पूज्य को नहीं पुकारेंगे। (यदि हम ने ऐसा किया) तो (सत्य से) दूर की बात होगी।
१५. यह हमारी जाति है, जिस ने अल्लाह के सिवा बहुत से पूज्य बना लिये। क्यों वे उन पर कोई खुला प्रमाण प्रस्तुत नहीं करते? उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर मिथ्या बात बनाये?
१६. और जब तुम उन से विलग हो गये तथा अल्लाह के अतिरिक्त उन के पूज्यों से, तो अब अमुक गुफ़ा की ओर शरण लो, अल्लाह तुम्हारे लिये अपनी दया फैला देगा, तथा तुम्हारे लिये तुम्हारे विषय में जीवन के साधनों का प्रबंध करेगा।
१७. और तुम सूर्य को देखोगे, कि जब निकलता है, तो उन की गुफ़ा से दायें झुक जाता है, और जब डूबता है, तो उन से बायें कतरा जाता ह। और वह उस (गुफ़ा) के एक विस्तृत स्थान में है। यह अल्लाह की निशानियों में से है, और जिसे अल्लाह मार्ग दिखा दे वही सुपथ पाने वाला है। और जिसे कुपथ कर दे तो तुम कदापि उस के लिये कोई सहायक मार्गदर्शक नहीं पाओगे।
१८. और तुम[1] उन्हें समझोगे कि जाग रहे हैं जब कि वह सोये हुये हैं और हम उन्हें दायें तथा बायें पार्शव पर फिराते रहते हैं, और उन का कुत्ता गुफ़ा के द्वार पर

करता था। इस लिये वे अपने ईमान की रक्षा के लिये जार्डन की गुफ़ा में चले गये जो नये शोध के अनुसार जार्डन की राजधानी से ८ कि.मी. दूर (रजीब) में विशेषज्ञों को मिली है। जिस गुफ़ा के ऊपर सात स्तंभों की मस्जिद के खंडर, और गुफ़ा के भीतर आठ समाधियाँ तथा उत्तरी दीवार पर पुरानी युनानी लिपी में एक शिला लेख मिला है और उस पर किसी जीव का चित्र भी है। जो कुत्ते का चित्र बताया जाता है और यह (रजीब) ही (रक़ीम) का बदला हुआ रूप है। (देखिये : भाष्य दावतुल कुरआन : २/९८३)

[1] इस में किसी को भी संबोधित माना जा सकता है, जो उन्हें उस दशा में देख सके।

अपनी दोनों बाँहें फैलाये पड़ा है। यदि तुम झाँक कर देख लेते तो पीठ फेर कर भाग जाते, और उन से भय पूर्ण हो जाते।

१९. और इसी प्रकार हम ने उन्हें जगा दिया ताकि वे आपस में प्रश्न करें। तो एक ने उन में से कहा: तुम कितने (समय) रहे हो? सब ने कहा: हम एक दिन रहे हैं अथवा एक दिन के कुछ (समय)। (फिर) सब ने कहा: अल्लाह अधिक जानता है कि तुम कितने (समय) रहे हो, तुम अपने में से किसी को अपना यह सिक्का देकर नगर में भेजो, फिर देखे कि किस के पास अधिक स्वच्छ (पवित्र) भोजन है, और उस में से कुछ जीविका (भोजन) लाये, और चाहिये कि सावधानी बरते। ऐसा न हो कि तुम्हारा किसी को अनुभव हो जाये।

२०. क्योंकि यदि वे तुम्हें जान जायेंगे तो तुम्हें पथराव कर के मार डालेंगे, या तुम्हें अपने धर्म में लौटा लेंगे, और तब तुम कदापि सफल नहीं हो सकोगे।

२१. इसी प्रकार हम ने उन से अवगत करा दिया, ताकि उन (नागरिकों) को ज्ञान हो जाये कि अल्लाह का वचन सत्य है, और यह कि प्रलय (होने) में कोई संदेह[१] नहीं। जब वे[२] आपस में विवाद करने लगे, तो कुछ ने कहा: उन पर कोई निर्माण करा दो, अल्लाह ही उन की दशा को भली भाँति जानता है। परन्तु उन्हों ने कहा जो अपना प्रभुत्व रखते थे, हम अवश्य उन (की गुफ़ा के स्थान) पर एक मस्जिद बनायेंगे।

२२. कुछ[३] कहेंगे कि वह तीन हैं, और चौथा उन का कुत्ता है। और कुछ कहेंगे कि पाँच हैं, और छठा उन का कुत्ता है। यह अन्धेरे में तीर चलाते हैं। और कहेंगे कि सात हैं, और आठवाँ उन का कुत्ता है। (हे नबी!) आप कह दें, कि मेरा पानलहार ही उन की संख्या भली भाँति जानता है, जिसे कुछ लोगों के सिवा कोई नहीं

---

[१] जिस के आने पर सब को उन के कर्मो का फल दिया जायेगा।

[२] अर्थात् जब पुराने सिक्के और भाषा के कारण उन का भेद खुल गया और वहाँ के लोगों को उन की कथा का ज्ञान हो गया तो फिर वे अपनी गुफा ही में मर गये। और उन के विषय में यह विवाद उत्पन्न हो गया।

यहाँ यह ज्ञातव्य है कि इस्लाम में समाधियों पर मस्जिद बनाना, और उस में नमाज़ पढ़ना तथा उस पर कोई निर्माण करना अवैध है। जिस का पूरा विवरण हदीसों में मिलेगा। (सहीह बुख़ारी , ४३५, मुस्लिम ५३१, ३२)

[३] इन से मुराद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग के अहले किताब हैं।

जानता।[१], अत: आप उन के संबंन्ध मे कोई विवाद न करें सिवाये सरसरी बात के, और न उन के विषय में किसी से कुछ पूछें।[२]

२३. और कदापि किसी विषय में न कहें कि मैं इसे कल करने वाला हूँ।

२४. परन्तु यह कि अल्लाह[३] चाहे, तथा अपने पालनहार को याद करे, जब भूल जायें। और कहें: संभव है मेरा पालनहार मुझे इस से अधिक समीप सुधार का मार्ग दर्शा दे।

२५. और वे गुफ़ा में तीन सौ वर्ष रहे। और नौ वर्ष अधिक[४] और।

२६. आप कह दें कि अल्लाह उन के रहने की अवधि से सर्वाधिक अवगत है। आकाशों तथा धरती का परोक्ष वही जानता है। क्या ही खूब है वह देखने वाला और सुनने वाला। नहीं है उन का उस के सिवा कोइ सहायक, और न वह अपने शासन में किसी को साझी बनाता है।

२७. और आप उसे सुना दें, जो आप की ओर वह्यी (प्रकाशना) की गयी है आप के पालनहार की पुस्तक में से, उस की बातों को कोई बदलने वाला नहीं है, और आप कदापि नहीं पायेंगे उस के सिवा कोई शरण स्थान।

२८. और आप उन के साथ रहें जो अपने पालनहार की प्रात:– संध्या बंदगी करते हैं। वे उस की प्रसन्नता चाहते है और आप की आँखे संसारिक जीवन की शोभा के लिये[५] उन से न फिरने पायें और उस की बात न मानें जिस के दिल को हम ने अपनी याद से निश्चेत कर दिया, और उस ने मनमानी की, और जिस का काम ही उल्लंघन (अवैज्ञा करना) है।

---

[१] भावार्थ यह है कि उन की संख्या का सहीह ज्ञान तो अल्लाह ही को है किन्तु वास्तव मे ध्यान देने की बात यह है कि इस से हमें क्या शिक्षा मिल रही है।

[२] क्योंकि आप को उन के बारे में अल्लाह के बताने के कारण उन लोगों से अधिक ज्ञान है।। और उन के पास कोई ज्ञान नहीं। इस लिये किसी से पूछने की आवश्यकता भी नहीं।

[३] अर्थात् भविष्य में कुछ करने का निश्चय करें, तो ''इन शा अल्लाह'' कहें। अर्थात: यदि अल्लाह ने चाहा तो।

[४] अर्थात् सूर्य के वर्ष से तीन सौ वर्ष, और चाँद के वर्ष से नौ वर्ष अधिक गुफ़ा में सोयें रहे।

[५] भाष्यकारों ने लिखा है कि यह आयत उस समय उतरी जब मुश्रिक कुरैश के कुछ प्रमुखों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह माँग की, कि आप अपने निर्धन अनुयायियों के साथ न रहें। तो हम आप के पास आ कर आप की बातें सुनेंगे। इस लिये अल्लाह ने आप को आदेश दिया कि इस का आदर किया जाये, ऐसा नहीं होना चाहिये कि इन की उपेक्षा कर के उन धनवानों की बात मानी जाये जो अल्लाह की याद से निश्चेत है।

२९. आप कह दें कि यह सत्य है, तुम्हारे पालनहार की ओर से तो जो चाहे ईमान लाये, और जो चाहे कुफ़्र करे, निश्चय हम ने अत्याचारियों के लिये ऐसी अग्नि तय्यार कर रखी है जिस की प्राचीर[1] ने उन को घेर लिया है, और यदि वह (जल के लिये) गुहार करेंगे तो उन्हें तेल की तलछट के समान जल दिया जायेगा तो मुखों को भून देगा, वह क्या ही बुरा पेय है। और वह क्या ही बुरा विश्राम स्थान है।

३०. निश्चय जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये, तो हम उन का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करेंगे जो सदाचारी है।

३१. यही है जिन के लिये स्थायी स्वर्ग हैं, जिन में नहरें प्रवाहित हैं, उस में उन्हें सोने के कंगन पहनाये जायेंगा।[2] तथा महीन और गाढ़े रेशम के हरे वस्त्र पहनेंगे, उस में सिंहासनों के ऊपर आसीन होंगे। यह क्या अच्छा प्रतिफल और क्या ही अच्छा विश्राम स्थान है।

३२. और (हे नबी!) आप उन्हें एक उदाहरण दो व्यक्तियों का दें, हम ने जिन में से एक को दो बाग़ दिये अँगूरों के, और घेर दिया दोनों को खजूरों से, और दोनों के बीच खेती बना दी।

३३. दोनों बाग़ों ने अपने पूरे फल दिये, और उस में कुछ कमी नहीं की, और हम ने जारी कर दी दोनों के बीच एक नहर।

३४. और उसे लाभ प्राप्त हुआ, तो एक दिन उस ने अपने साथी से कहा: और वह उस से बात कर रहा था, मैं तुझ से अधिक धनी हूँ, तथा स्वजनों में भी अधिक[3] हूँ।

३५. और उस ने अपने बाग़ में प्रवेश किया अपने ऊपर अत्याचार करते हुये, उस ने कहा: मैं नहीं समझता कि इस का विनाश हो जायेगा कभी।

[1] कुरआन में ''सुरादिक़'' शब्द प्रयुक्त हुआ है। जिस का अर्थ प्राचीर, अर्थात् वह दीवार हे जो नरक के चारों और बनाई गई है।

[2] यह स्वर्ग वासियों का स्वर्ण कंग किन्तु संसार में इस्लाम की शिक्षानुसार पुरुषों के लिये सोने का कंगन पहनना हराम है।

[3] अर्थात यदि किसी का धन संतान तथा बाग़ इत्यादि अच्छा लगे तो (माशा अल्लाह ला कूव्वता इल्ला बिल्ला) कहना चाहिये। ऐसा कहने से नज़र नहीं लगती। यह इस्लाम धर्म की शिक्षा है, जिस से आपस में द्वेष नहीं होता।

३६. और न यह समझता हूँ कि प्रलय होगी। और यदि मुझे अपने पालनहार की ओर पुन: ले जाया गया, तो मैं अवश्य ही इस से उत्तम स्थान पाऊँगा।
३७. उस से उस के साथी ने कहा, और वह उस से बात कर रहा था: क्या तू ने उस के साथ कुफ़्र कर दिया, जिस ने तुमझे मिट्टी से उत्पन्न किया, फिर वीर्य से, फिर तुझे बना दिया एक पूरा पुरुष?
३८. रहा मैं तो वही अल्लाह मेरा पालनहार है, और मैं साझी नहीं बनाऊँगा अपने पालनहार का किसी को।
३९. और क्यों नहीं जब तुम ने अपने बाग़ मे प्रवेश किया, तो कहा कि ''जो अल्लाह चाहे, अल्लाह की शक्ति के बिना कुछ नहीं हो सकता।'' यदि तू मुझे देखता है कि मैं तुझ से कम हूँ धन तथा संतान में[१]।
४०. तो आशा है कि मेरा पालनहार मुझे प्रदान कर दे तेरे बाग़ से अच्छा, और इस बाग़ पर आकाश से कोई आपदा भेज दें, और वह चिकनी भूमि बन जाये।
४१. अथवा उस का जल भीतर उतर जाये, फिर तू उसे पा न सके।
४२. (अन्तत:) उस के फलों को घेर[२] लिया गया, फिर वह अपने दोनों हाथ मलता रह गया उस पर जो उस में ख़र्च किया था ।और वह अपने छप्परों सहित गिरा हुआ था, और कहने लगा: क्या ही अच्छा होता कि मैं किसी को अपने पालनहार का साझी न बनाता।
४३. और नहीं रह गया उस के लिये कोई जत्था जो उस की सहायता करता और न स्वयं अपनी सहायता कर सका।
४४. यहीं सिद्ध हो गया कि सब अधिकार सत्य अल्लाह को है, वही अच्छा है प्रतिफल प्रदान करने में, तथा अच्छा है परिणाम लाने में।
४५. और (हे नबी!) आप उन्हें संसारिक जीवन का उदाहरण दें उस जल से जिसे हम ने आकाश से बरसाया। फिर उस के कारण मिल गई धरती की उपज, फिर चूर

[१] अर्थात् मरे सेवक और सहायक भी तुझ से अधिक है।
[२] अर्थात् आपदा ने घेर लिया।

हो गई जिसे वायु उड़ाये फिरती[1] है। और अल्लाह प्रत्येक चीज़ पर सामर्थ्य रखने वाला है।

४६. धन और पुत्र संसारिक जीवन की शोभा है। और शेष रह जाने वाले सत्कर्म ही अच्छे हैं आप के पालनहार के यहाँ प्रतिफल में तथा अच्छे हैं आशा रखने के लिये।

४७. तथा जिस दिन हम पर्वतों को चलायेंगे, तथा तुम धरती को खुला चटेल[2] देखोगे। और हम उन्हे एकत्र कर देंगे, फिर उन में से किसी को नहीं छोड़ेंगे।

४८. और सभी आप के पालनहार के समक्ष पंक्तियों में प्रस्तुत किये जायेंगे, तुम हमारे पास आ गये जैसे हम ने तुम्हारी उत्पत्ति प्रथम बार की थी, बल्कि तुम ने समझा था कि हम तुम्हारे लिये कोई वचन का समय निर्धारित ही नहीं करेंगे।

४९. और कर्म लेख (सामने) रख दिये जायेंगे, तो आप अपराधियों को देखेंगे कि उस से डर रहे हैं जो कुछ उस में (अंकित) है, तथा कहेंगे कि हाय हमारा विनाश। यह कैसी पुस्तक है जिस ने किसी छोटे और बड़े कर्म को नहीं छोड़ा है, परन्तु उसे अंकित कर रखा है? और जो कर्म उन्हों ने किये है उन्हें वह सामने पायेंगे, और आप का पालनहार किसी पर अत्याचार नहीं करेगा।

५०. तथा (याद करो) जब आप के पालनहार ने फ़रिश्तों से कहा: आदम को सज्दा करो, तो सब ने सज्दा किया इब्लीस के सिवा। वह जिन्नों में से था, अत: उस ने उल्लंघन किया अपने पालनहार की आज्ञा का तो क्या तुम उस को और उस कि संतति को सहायक मित्र मनाते हो मुझे छोड़ कर जब कि वह तुम्हारे शत्रु है? अत्याचारियों के लिये बुरा बदला है।

५१. मैं ने उन को उपस्थित नहीं किया आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति के समय और न स्वयं उन की उत्पत्ति के समय, और न मैं कुपथों को सहायक[3] बनाने वाला हूँ।

---

[1] अर्थात् संसारिक जीवन और उस का सुख–सुविधा सब साम्यिक है।

[2] अर्थात् न उसे में कोई चिन्ह होगा तथा न छुपने का स्थान।

[3] भावार्थ यह है कि विश्व की उत्पत्ति के समय इन का अस्तित्व न था। यह तो बाद में उत्पन्न किये गये है। उन की उत्पत्ति में भी उन से कोई सहायता नहीं ली गई, तो फिर यह अल्लाह के बराबर कसे हो गये?

५२. जिस दिन वह (अल्लाह) कहेगा कि मेरे साझियों को पुकारो जिन्हें समझ रहे थे। वह उन्हें पुकारेंगे, तो वह उन का कोई उत्तर नहीं देंगे, और हम बना देंगे उन के बीच एक विनाशकारी खाई।

५३. और अपराधी नरक को देखेंगे तो उन्हे विश्वास हो जायेगा कि वे उस में गिरने वाले हैं। और उस से फिरने का कोई स्थान नहीं पायेंगे।

५४. और हम ने इस कुरआन में प्रत्येक उदाहरण से लोगों को समझाया है। और मनुष्य बड़ा ही झगड़ालू है।

५५. और नहीं रोका लोगों को कि ईमान लायें जब उन के पास मार्गदर्शन आ गया और अपने पालनहार से क्षमा याचना करें, किन्तु इसी ने कि पिछली जातियों की दशा उन की भी हो जाये, अथवा उन के समक्ष यातना आ जाये।

५६. तथा हम रसूलों को नहीं भेजते परन्तु शुभसूचना देने वाले और सावधान करने वाले बनाकर। और जो काफ़िर हैं असत्य (अनृत) के सहारे विवाद करते हैं, ताकि उस के द्वारा वह सत्य को नीचा[१] दिखाये। और उन्हों ने बना लिया हमारी आयतों को तथा जिस बात की उन्हें चेतावनी दी गई, परिहास।

५७. और उस से बड़ा अत्याचारी कौन है जिसे उस के पालनहार की आयते सुनाई जायें फिर (भी) उन से मुँह फेर लें और अपने पहले किया हुये कर्तूत भूल जायें? वास्तव में हम ने उन के दिलों पर ऐसे आवरण (पर्दे) बना दिये है कि उसे[२] समझ न पायें और उन के कानों में बोझ। और यदि आप उन्हें सीधी राह की ओर बुलायें तब (भी) कभी सीधी राह नहीं पा सकेंगे।

५८. और आप का पालनहार अति क्षमी दयावान् है। यदि वह उन को उन के कर्तूतों पर पकड़ता तो तुरन्त यातना दे देता। बल्कि उन के लिये एक निशिच समय का वचन है। और वे उस के सिवा कोई बचाव का स्थान नहीं पायेंगे।

५९. तथा यह बस्तियाँ है। हम ने उन (के निवासियों) का विनाथ कर दिया जब उन्होंने अत्याचार किया। और हम ने उन के विनाश के लिये एक निर्धारित समय बना दिया था।

---

[१] अर्थात् सत्य को दबा दें।

[२] अर्थात कुरआन को।

६०. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपने सेवक से कहा: मैं बराबर चलता रहूँगा, यहाँ तक कि दोनों सागरों के संगम पर पहुँच जाऊँ, अथवा वर्षों चलता[१] रहूँ।
६१. तो जब दोनों उन के संगम पर पहुँचे तो दोनों अपनी मछली भूल गये। और उस ने सागर में अपनी राह बना ली सुरंग के समान।
६२. फिर जब दोनों आगे चले गये तो उस (मूसा) ने अपने सेवक से कहा कि हमारा दिन का भोजन लाओ। हम अपनी इस यात्रा से थक गये हैं।
६३. उस ने कहा: क्या आप ने देखा? जब हम ने उस शिला खण्ड के पास शरण ली थी तो मैं मछली भूल गया। और मुझे उसे शैतान ही ने भुला दिया कि मैं उस की चर्चा करूँ, और उस से अपनी राह सागर में अनोखे तरीक़े से बना ली।
६४. मूसा ने कहा: वही है जो हम चाहते थे। फिर दोनों अपने पद्चिन्हों को देखते हुये वापिस हुये।
६५. और दोनों ने पाया, हमारे भक्तों में से एक भक्त[२] को, जिसे हम ने अपनी विशेष दया प्रदान की थी। और उसे अपने पास से कुछ विशेष ज्ञान दिया था।
६६. मूसा ने उस से कहा: क्या मैं आप का अनुसरण करूँ, ताकि मुझे भी उस भलाई में से कुछ सिखा दें, जो आप को सिखायी गई है?
६७. उस ने कहा: तुम मेरे साथ धैर्य नहीं कर सकोगे।
६८. और कैसे धैर्य करोगे उस बात पर जिस का तुम्हें पूरा ज्ञान नहीं?
६९. उस ने कहा: यदि अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे सहनशील पायेंगे। और मैं आप की किसी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करूँगा।
७०. उस ने कहा: यदि तुम्हें मेरा अनुसरण करना है तो मुझ से किसी चीज़ के संबन्ध में प्रश्न न करना जब तक मैं स्वयं तुम से उस की चर्चा न करूँ।

---

[१] मूसा अलैहिस्सलाम की यात्रा का कारण यह बना था कि वह एक बार भाषण दे रहे थे। तो किसी ने पूछा कि इस संसार में सर्वाधिक ज्ञानी कौन है? मूसा ने कहा: मैं हूँ। यह बात अल्लाह को अप्रिय लगी। और मूसा से फ़रमाया कि दो सागरों के संगम के पास मेरा एक भक्त है जो तुम से अधिक ज्ञानी है। मूसा ने कहा: मैं उस से कैसे मिल सकता हूँ? अल्लाह ने फरमाया: एक मछली रख लो, और जिस स्थान पर वह खो जाये, तो वही वह मिलेगा। और वह अपने सेवक यूशअ बिन नून को लेकर निकल पड़े। (संक्षिप्त अनुवाद सहीह बुख़ारी : ४७२५)

[२] इस से अभिप्रेत: आदरणीय ख़िज़्र अलैहिस्सलाम है।

७१. फिर दोनों चले, यहाँ तक कि जब दोनों नौका में सवार हुये तो उस (ख़िज़्र) ने उस में छेद कर दिया। मूसा ने कहा: क्या आप ने इस में छेद कर दिया ताकि उस के सवारों को डूबा दें, आप ने अनुचित काम कर दिया।

७२. उस ने कहा: क्या मैं ने तुम से नहीं कहा कि तुम मेरे साथ सहन नहीं कर सकोगे?

७३. कहा: मुझे आप मेरी भूल पर न पकड़े, और मेरी बात के कारण मुझे असुविधा में न डालें।

७४. फिर दोनों चले, यहाँ तक कि एक बालक से मिले तो उस (ख़िज़्र) ने उसे बध कर दिया। मूसा ने कहा: क्या आप ने एक निर्दोष प्राण ले लिया, वह भी किसी प्राण के बदले[1] नहीं? आप ने बहुत ही बुरा काम किया।

७५. उस ने कहा: क्या मैं ने तुम से नहीं कहा कि वास्तव में तुम मेरे साथ धैर्य नहीं कर सकोगे?

७६. मूसा ने कहा: यदि मैं आप से प्रश्न करूँ, किसी विषय में इस के पश्चात्, तो मुझे अपने साथ न रखें। निश्चय आप मेरी ओर से याचना को पहुँच[2] चुके।

७७. फिर दोनों चले, यहाँ तक कि जब एक गाँव के वासियों के पास आये तो उन से भोजन माँगा। उन्होंने उन का अतिथि सत्कार करने से इन्कार कर दिया। वहाँ उन्होंने एक दीवार पायी जो गिरा चाहती थी। उस ने उसे सीधी कर दिया। कहा: यदि आप चाहते तो इस पर पारिश्रमिक ले लेते।

७८. उस ने कहा: यह मेरे तथा तुम्हारे बीच वियोग है। मैं तुम्हें उस की वास्तविक्ता बताऊँगा, जिस को तुम सहन नहीं कर सके।

७९. रही नाव तो वह कुछ निर्धनों की थी, जो सागर में काम करते थे। तो मैं ने चाहा कि उसे छिद्रित[3] कर दूँ, और उन के आगे एक राजा था जो प्रत्येक (अच्छी), नाव का अपहरण कर लेता था।

---

[1] अर्थात उस ने किसी प्राणी को नहीं मारा कि उस के बदले में उसे मारा जाये।

[2] अर्थात् अब कोई प्रश्न करूँ तो आप के पास मुझे अपने साथ न रखने का उचित कारण होगा।

[3] अर्थात् उस में छेद कर दूँ।

८०. और रहा बालक तो उस के माता–पिता ईमान वाले थे, अतः हम डरे कि उन्हें अपनी अवैज्ञा और अधर्म से दुःख न पहुँचाये।

८१. इसलिये हम ने चाहा कि उन दोनों को ुन का पालनहार, इस के बदले उस से अधिक पवित्र और अधिक प्रेमी प्रदान करे।

८२. और रही दीवार तो वह दो अनाथ बालकों की थी। और उस के भीतर उन का कोष था । और उन के माता–पिता पुनीत थे तो तेरे पालनहार ने चाहा कि वह दोनों अपनी युवा अवस्था को पहुँचे और अपना कोष निकालें, तेरे पालनहार की दया से। और मैं ने यह अपने विचार तथा अधिकार से नहीं किया[1] यह उस की वास्तविक्ता है जिसे तुम सहन नहीं कर सके।

८३. और (हे नबी!) वे आप से जुलक़र्नैन[2] के विषय में प्रश्न करते हैं। आप कह दें कि मैं उन की कुछ दशा तुम्हें पढ़ कर सुना देते हूँ।

८४. हम ने उसे धरती में प्रभुत्व प्रदान किया, तथा उसे प्रत्येक प्रकार का साधन दिया।

८५. तो वह एक राह के पीछे लगा।

८६. यहाँ तक कि जब सूर्यास्त के स्थान तक[3] पहुँचा, तो उस ने पाया कि वह एक काली कीचड़ के स्रोत में डूब रहा है। और वहाँ एक जाति को पाया। हम ने कहाः हे जुलक़र्नैन! तू उन्हें यातना दे अथवा उन में अच्छा व्यवहार बना।

८७. उस ने कहाः जो अत्याचार करेगा, हम उसे दण्ड देंगे। फिर वह अपने पालनहार की ओर फेरा[1] जायेगा, तो वह उसे कड़ी यातना देगा।

---

[1] यह सभी कार्य विशेष रूप से निर्दोष बालक का बध धार्मिक नियम से उचित न था। इस लिये मूसा (अलैहिस्सलाम) इस को सहन न कर सके। किन्तु ((ख़िज़्र)) को विशेष ज्ञान दिया गया था जो मूसा (अलैहिस्सलाम) के पास नहीं था। इस प्रकार अल्लाह ने जता दिया कि हर ज्ञानी के ऊपर भी कोई ज्ञानी है।

[2] यह तीसरे प्रश्न का उत्तर है जिसे यहूदियों ने मक्का के मिश्रणवादियों द्वारा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कराया था। जुलक़र्नैन के आगामी आयतों में जो गुण–कर्म बताये गये हैं उन से विद्वित होता है कि वह एक सदाचारी विजेता राजा था। मौलाना अबुल कलाम आज़ाद के शोध के अनुसार यह वही राजा है जिसे यूनानी साईरस, हिब्रु भाषा में खोरिस तथा अरब में खुसरू के नाम से पुकारा जाता है। जिस का शासन काल ५५९ ई. पूर्व है। वह लिखते हैं कि १८३८ ई. में साईरस की एक पत्थर की मुर्ति अस्तक़र के खण्डरों में मिली है। जिस में बाज़ पक्षी के भाँति उस के दो पँख तथा उस के सिर पर भेड़ के समान दो सींग है। इस में मीडिया और पारस के दो राज्यों की उपमा दो सींगों से दी गयी है। (देखिये : तर्जमानुल क़ुरआन, भाग ३ पृष्ठ – ४३६–४३८)

[3] अर्थात् पश्चिम की अन्तिम सीमा तक।

८८. परन्तु जो ईमान लाये, तथा सदाचार करे तो उसी के लिये अच्छा प्रतिफल (बदला) है। और हम उसे अपना सरल आदेश देंगे।

८९. फिर वह एक (अन्य) राह की ओर लगा।

९०. यहाँ तक कि सूर्योदय के स्थान तक पहुँचा। उसे पाया कि ऐसी जाति पर उदय हो रहा है जिस से हम ने उन के लिये कोई आड़ नहीं बनायी है।

९१. उन की दशा ऐसी ही थी, और उस (जुलक़र्नैन) के पास जो कुछ था हम उस से पूर्णतः सूचित हैं।

९२. फिर वह एक दूसरी राह की ओर लगा।

९३. यहाँ तक कि जब दो पर्वतों के बीच पहुँचा तो उन दोनों के उस ओर एक जाति को पाया, जो नहीं समीप थी कि किसी बात को समझे।[२]

९४. उन्हों ने कहाः हे जुल क़र्नैन! वास्तव में याजूज तथा माजूज उपद्रवी है इस देश में। तो क्या हम निर्धारित कर दें आप के लिये कुछ धन। इसलिये कि आप हमारे और उन के बीच कोई रोक (बंध) बना दें।

९५. उस ने कहाः जो कुछ मुझे मेरे पालनहार ने प्रदान किया है वह उत्तम है। तो तुम मेरी सहायता बल और शक्ति से करो, मैं बना दूँगा तुम्हारे और उन के मध्य एक दृढ़ भीत।

९६. मुझे लोहे की चादरें ला दो। और जब दोनों पर्वतों के बीच दीवार तय्यार कर दी, तो कहा कि आग दहकाओ, यहाँ तक कि जब उस दीवार को आग (के समान लाल) कर दिया, तो कहाः मेरे पास लाओ इस पर पिघला हुआ ताँबा उँडेल दूँ।

९७. फिर वह उस पर चढ़ नहीं सकते थे और न उस में कोई सेंध लगा सकते थे।

९८. उस (जुलक़र्नैन) ने कहाः यह मेरे पालनहार की दया है। फिर जब मेरे पालनहार का वचन[३] आयेगा तो वह इसे खण्ड–खण्ड कर देगा। और मेरे पालनहार का वचन सत्य है।

---

[१] अर्थात् निधन के पश्चात् प्रलय के दिन।

[२] अर्थात् अपनी भाषा के सिवा कोई भाषा नहीं समझती थी।

[३] वचन से अभिप्राय प्रलय के आने का समय है। जैसा कि सहीह बुख़ारी हदीस नं. ३३४६ आदि मे आता है कि कयामत आने के समीप याजूज–माजूज वह दीवार तोड़ कर निकलेंगे, और धरती में उपद्रव मचा देंगे।

९९. और हम छोड़ देंगे उस[1] दिन लोगों को एक दूसरे में लहरें लेते हुये। तथा नरसिंघा में फूँक दिया जायेगा, और हम सब को एकत्रित कर देंगे।

१००.और हम सामने कर देंगे उस दिन नरक को काफ़िरों के समक्ष।

१०१.जिन की आँखे मेरी याद से पर्दे में थीं, और कोई बात सुन नहीं सकते थे।

१०२.तो क्या उन्होंने सोचा है जो काफ़िर हो गये कि वह बना लेंगे मेरे दासों को मेरे सिवा सहायक? वास्तव में हम ने काफ़िरों के आतिथ्य के लिये नरक तैयार कर दी है।

१०३.आप कह दें कि क्या हम तुम्हें बता दें कि कौन अपने कर्मों में सब से अधिक क्षतिग्रस्त है?

१०४.वह हैं, जिन के संसारिक जीवन के सभी प्रयास व्यर्थ हो गये, तथा वह समझते रहे कि वे अच्छे कर्म कर रहे हैं।

१०५.यही वह लोग हैं, जिन्हों ने नहीं माना अपने पालनहार की आयतों तथा उस से मिलने को, अत: हम प्रलय के दिन उन का कोई भार निर्धारित नहीं करेंगे।[2]

१०६.उन्हीं का बदला नरक है, इस कारण कि उन्हों ने कुफ़्र किया, और मेरी आयतों और मेरे रसूलों का उपहास किया।

१०७.निश्चय जो ईमान लाये और सदाचार किये, उन्हीं के आतिथ्य के लिये फ़िर्दौस[3] के बाग़ होंगे।

१०८.उस में वे सदावासी होंगे, उसे छोड़ कर जाना नहीं चाहेंगे।

१०९.(हे नबी!) आप कह दें कि यदि सागर मेरे पालनहार की बातें लिखने के लिये स्याही बन जायें, तो सागर समाप्त हो जायें, इस से पहले कि मेरे पालनहार की बातें समाप्त हों, यद्यपि उतनी ही स्यायी और ले आयें।

११०.आप कह दें मैं तो तुम जैसा एक मनुष्य पुरुष हूँ, मेरी ओर प्रकाशना (वह्यी) की जाती है कि तुम्हारा पूज्य बस एक ही पूज्य है। अत: जो अपने पालनहार से

---

[1] इस आयत में उस प्रलय के आने के समय की दशा का चित्रण किया गया है जिसे जुलक़र्नैन ने सत्य वचन कहा है।

[2] अर्थात् उन का हमारे यहाँ कोई भार न होगा। हदीस में आया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: कयामत के दिन एक भारी भरकम व्यक्ति आयेगा। मगर अल्लाह के सदन में उस का भार मच्छर के पँख के बराबर भी नहीं होगा। फिर आप ने इसी आयत को पढ़ा। (सहीह बुख़ारी, हदीस नं. ४७२९)

[3] फ़िर्दौस: स्वर्ग के सर्वोच्च स्थान का नाम है। (सहीह बुख़ारी : ७४२३)

मिलने की आशा रखता हो उसे चाहिये कि सदाचार करे। और साझी न बनाये अपने पालनहार की इबादत (वंदना) में किसी को।

*****

सूरह मर्यम – १९

सूरह मर्यम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ९८ आयतें है।

- इस सूरह में ईसा (अलैहिस्सलाम) की माँ मर्यम (अलैहस्सलाम) और ईसा (अलैहिस्सलाम) के जन्म की कथा का वर्णन किया गया है। इसी से इस का नाम मर्यम है। इस में सर्वप्रथम यह्या (अलैहिस्सलाम) के जन्म की चर्चा है, उस के पश्चात् ईसा (अलैहिस्सलाम) के जन्म का वर्णन है। और ईसाईयों को उन के विभेद पर सावधान किया गया है।
- इस में इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के तौहीद के प्रचार और उन के हिजरत करने और मूसा (अलैहिस्सलाम) तथा अन्य नबियों की चर्चा की गई है, और उन की शिक्षाओं के विरोधियों के विनाथ से सावधान किया गया है। और उन को मानने पर सफलता की शुभ सूचना दी गई है। तथा नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सहन करने और सुदृढ़ रहने का निर्देश दिया गया है। परलोक के इन्कारियों के संदेहों को दूर करते हुये ईमान और विश्वास के लिये कुछ स्थितियों का वर्णन किया गया है।
- जब मक्का से कुछ मुसलमान नबूवत के पाँचवें वर्ष हिजरत कर के हब्शा पहुँचे और मक्का के काफ़िरों ने कुछ व्यक्तियों को वापिस लाने के लिये भेजा जिन्हों ने उन्हें धर्म बदल लेने का दोषी बताया तो वहाँ के ईसाई राजा नजाशी को जअफ़र (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने इसी सूरह की आरंभिक आयतें सुनाईं जिसे सुन कर वह रोने लगा, और कहा: यह और जो ईसा (अलैहिस्सलाम) लाये थे एक ही नूर (प्रकाश) की दो किरणें हैं। और भूमी से एक तिनका ले कर कहा: ईसा (अलैहिस्सलाम) इस से कुछ भी अधिक नहीं थे। फिर काफ़िरों के प्रतिनिधियों को निष्फल वापिस कर दिया। (सीरत इब्ने हिशाम – १/३३४, ३३८)

  हदीस में हैं कि पुरुषों में बहुत से पूर्ण हुये और स्त्रियों में मर्यम बिन्त इमरान और फ़िरऔन की पत्नी आसिया ही पूर्ण हुयीं। (सहीह बुख़ारी: ३४११, मुस्लिम, २४३१)

दूसरी हदीस में है कि प्रत्येक शिशु जब जन्म लेता है तो शैतान उस के बाजू में अपनी दो उंगलियों से कचोके लगाता है, (तो वह चीख़ कर रोता है), ईसा (अलैहिस्सलाम) के सिवा। शैतान जब उन्हें कचोके लगाने लगा तो पर्दे ही में कचोका लगा दिया।(सहीह बुख़ारी, ३२८६, मुस्लिम, २४३१)

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. काफ़, हा, या, ऐन, साद।

२. यह आप के पालनहार की दया की चर्चा है, अपने भक्त ज़करिय्या पर।

३. जब कि उस ने अपने पालनहार से विनय की, गुप्त विनय।

४. उस ने कहा: मेरे पालनहार। मेरी अस्थियाँ निर्बल हो गयीं और सिर बुढ़ापे से सफ़ेद[1] हो गया है, तथा मेरे पालनहार! कभी ऐसा नहीं हुआ कि तुझ से प्रार्थना कर के निष्फल हुआ हूँ।

५. और मुझे अपने भाई बंदों से भय[2] है, अपने (मरण) के पश्चात्, तथा मेरी पत्नी बाँझ है, अत: मुझे अपनी ओर से एक उत्तराधिकारी प्रदान कर दे।

६. वह मेरा उत्तराधिकारी हो, तथा याकूब के वंश का उत्तराधिकारी[3] हो और हे पालनहार! उसे प्रिय बना दे।

७. हे ज़करिय्या! हम तुझे एक बालक की शुभ सूचना दे रहे हैं, जिस का नाम यह्या होगा। हम ने नहीं बनाया है इस से पहले उस का कोई सम्नाम।

८. उस ने (आश्चर्य से) कहा: मेरे पालनहार! कहाँ से मेरे यहाँ कोई बालक होगा, जब कि मेरी पत्नी बाँझ है, और मैं बुढ़ापे की चरम सीमा को जा पहुँचा हूँ।

९. उस ने कहा: ऐसा ही होगा, तेरे पालनहार ने कहा है, यह मेरे लिये सरल है, इस से पहले मैं ने तेरी उत्पत्ति की है, जब कि तू कुछ नहीं था।

१०. उस (ज़करिय्या) ने कहा: मेरे पालनहार! मेरे लिये कोई लक्षण (चिन्ह) बना दे। उस ने कहाा: तेरे लक्षण यह है कि तू बोल नहीं सकेगा, लोगों से निरंतर तीन रातें।[4]

---

[1] अर्थात् पूरे बाल सफ़ेद हो गये।

[2] अर्थात् दुराचार और बुरे व्यवहार का।

[3] अर्थात् नबी हो। आदरणीय ज़करिय्या (अलैहिस्सलाम) याकूब (अलैहिस्सलाम) के वंश में थे।

[4] रात से अभिप्राय दिन तथा रात दोनों ही हैं। अर्थात जब बिना किसी रोग के लोगों से बात न कर सकोंगे तो यह शुभसूचना का लक्षण होगा।

११. फिर वह मेह्राब (चाप) से निकल कर अपनी जाति के पास आया। और उन्हें संकेत द्वारा आदेश दिया कि उस (अल्लाह) की पवित्रता का वर्णन करो, प्रात: तथा संध्या।

१२. हे यह्या![1] इस पुस्तक (तौरात) को थाम ले, और हम ने उसे बचपन ही में ज्ञान (प्रबोध) प्रदान किया।

१३. तथा अपनी ओर से प्रेम भाव तथा पवित्रता, और वह बड़ा संयमी (सदाचारी) था।

१४. तथा अपनी माता–पिता के साथ सुशील था, वह क्रूर तथा अवज्ञाकारी नहीं था।

१५. उस पर शान्ति है, जिस दिन उस ने जन्म लिया और जिस दिनमरेगा और जिस दिन पुन: जीवित किया जायेगा।

१६. तथा आप इस पुस्तक (कुरआन) में मर्यम[2] की चर्चा करें, जब वह अपने परिजनों से अलग हो कर एक पूर्वी स्थान की ओर आयी।

१७. फिर उन की ओर से पर्दा कर लिया, तो हम ने उस की ओर अपनी रूह (आत्मा)[3] को भेजा, तो उस ने उस के लिये एक पूरे मनुष्य का रूप धारण कर लिया।

१८. उस ने कहा: मैं शरण माँगती हूँ अत्यंत कृपाशील की तुझ से, यदि तुझे अल्लाह का कुछ भी भय हो।

१९. उस ने कहा: मैं तेरे पालनहार का भेजा हुआ हूँ, ताकि तुझे एक पुनीत बालक प्रदान कर दूँ।

२०. वह बोली: यह कैसे हो सकता है कि मेरे बालक हो, जब कि किसी पुरुष ने मुझे स्पर्श भी नहीं किया है, और न मैं व्यभिचारिणी हूँ?

२१. फ़रिश्ते ने कहा: ऐसा ही होगा, तेरे पालनहार का वचन है कि वह मेरे लिये अति सरल है, और ताकि हम उसे लोगों के लिये एक लक्षण (निशानी)[4] बनायें तथा अपनी विशेष दया से, और यह एक निश्चित बात है।

---

[1] अर्थात् जब यह्या का जन्म हो गया और कुछ बड़ा हुओ तो अल्लाह ने उसे तौरात का ज्ञान दिया।

[2] मर्यम अदरणीय इम्रान की पुत्री दावूद अलैहिस्सलाम के वंश से थी। उन के जन्म के विषय में सूरह आले इमरान देखिये।

[3] इस से अभिप्रेत फ़रिश्ते जिब्रील (अलैहिस्सलाम) हैं।

[4] अर्थात् अपने सामर्थ्य की निशानी कि हम नर–नारी के योग के बिना भी स्त्री के गर्भ से शिशु की उत्पत्ति कर सकते हैं।

२२. फिर वह गर्भवती हो गई, तथा उस (गर्भ को ले कर) दूर स्थान पर चली गई।
२३. फिर प्रसव पीड़ा उसे एक खजूर के तने तक लायी, कहने लगी: क्या ही अच्छा होता, मैं इस से पहले ही मर जाती, और भूली बिसरी हो जाती।
२४. तो उस के नीचे से पुकारा[१] कि उदासीन न हो, तेरी पालनहार ने तेरे नीचे[२] एक स्रोत बहा दिया है।
२५. और हिला दे अपनी ओर खजूर के तने को तुझ पर गिरायेगा वह ताजी पकी खजूरें।[३]
२६. अत: खा और पी तथा आँख ठण्डी कर। फिर यदि किसी पुरुष को देखे, तो कह दें: वास्तव में, मैं ने मनौती मान रखी है अत्यंत कृपाशील के लिये व्रत की। अत: मैं आज किसी मनुष्य से बात नहीं करुँगी।
२७. फिर उस (शिशु ईसा) को ले कर अपनी जाति में आयी, सब ने कहा: हे मर्यम! तू ने बहुत बुरा किया।
२८. हे हारून की बहन![४] तेरा पिता कोई बुरा व्यक्ति न था। और न तेरी माँ व्यभिचारिणी थी।
२९. मर्यम ने उस (शिशु) की ओर संकेत किया। लोगों ने कहा: हम कैसे उस से बात करें जो गोद में पड़ा हुआ एक शिशु है?
३०. वह (शिशु) बोल पड़ा: मैं अल्लाह का भक्त हूँ। उस ने मुझे पुस्तक (इंजील) प्रदान की है, तथा मुझे नबी बनाया है।[५]
३१. तथा मुझे शुभ बनाया है जहाँ रहूँ और मुझे आदेश दिया है, नमाज़ तथा ज़कात का जब तक जीवित रहूँ।
३२. तथा अपनी माँ का सेवक, और उस ने मुझे क्रूर तथा अभागा[६] नहीं बनाया है।

---

[१] अर्थात् जिब्रील फ़रिश्ते ने घाटी के नीचे से आवाज़ दी।

[२] अर्थात् मर्यम के चरणों के नीचे।

[३] अल्लाह ने अस्वभाविक रूप से आदरणीय मर्यम के लिये, खाने–पीने की व्यवस्था कर दी।

[४] अर्थात् हारून अलैहिस्सलाम के वंशज की पुत्री। अरबों के यहाँ किसी कबीले का भाई होने का अर्थ उस कबीले और वंशज का व्यक्ति लिया जाता था।

[५] अर्थात् मुझे पुस्तक प्रदान करने और नबी बनाने का निर्णय कर दिया है।

[६] इस में यह संकेत है कि माता–पिता के साथ दुर्व्यवहार करना क्रूरता तथा दुर्भाग्य है।

३३. तथा शान्ति है मुझ पर, जिस दिन मैं ने जन्म लिया तथा जिस दिन मरूँगा और जिन दिन पुन: जीवित किया जाऊँगा।

३४. यह है ईसा मर्यम का सुत, यही सत्य बात है, जिस के विषय में लोग संदेह कर रहे हैं।

३५. अल्लाह का यह काम नहीं कि अपने लिये कोई संतान बनाये, वह पवित्र है! जब वह किसी कार्य का निर्णय करता है, तो उस के सिवा कुछ नहीं होता कि उसे आदेश दे कि: ''हो जा'' और वह हो जाता है।

३६. और (ईसा ने कहा): वास्तव में अल्लाह मेरा पालनहार तथा तुम्हारा पालनहार है, अत: उसी की इबादत (वंदना) करो, यही सुपथ (सीधी राह) हैं।

३७. फिर सम्प्रदायो[1] ने आपस में विभेद किया, तो विनाश है उन के लिये जो काफ़िर हो गये एक बड़े दिन के आ जाने के कारण।

३८. वे भली भाँति सुनेंगे और देखोगे जिस दिन हमारे पास आयेंगे, परन्तु अत्याचारी आज खुले कुपथ में है।

३९. और (हे नबी!) आप उन्हें संताप के दिन से सावधान कर दें, जब निर्णय[2] कर दिया जायेगा जब कि वे अचेत हैं तथा ईमान नहीं ला रहे हैं।

४०. निश्चय हम ही उत्तराधिकारी होंगे धरती के तथा जो उस के ऊपर है और हमारी ही ओर सब प्रत्यागत किये जायेंगे।

४१. तथा आप चर्चा कर दें इस पुस्तक (कुरआन) में इब्राहीम की। वास्तव में वह एक सत्यावादी नबी था।

४२. जब उस ने कहा अपने पिता से: हे मेरे प्रिय पिता! क्यों आप उसे पूजते हैं, जो न सुनता है और न देखता है, और न आप के कुछ काम आता?

---

[1] अर्थात् अहले किताब के सम्प्रदायों ने ईसा अलैहिस्सलाम की वास्तविकता जानने के पश्चात उन के विषय में विभेद किया। यहूदियों ने उसे जादूगर तथा वर्णसंकर कहा। और ईसाइयों के एक सम्प्रदाय ने कहा कि वह स्वयं अल्लाह है। दूसरे ने कहा: वह अल्लाह का पुत्र है। और उन के तीसरे कैथुलिक सम्प्रदाय ने कहा कि वह तीन में का तीसरा है। बड़े दिन से अभिप्राय प्रलय का दिन है।

[2] अर्थात् प्रत्येक के कर्मानुसार उस के लिये नरक अथवा स्वर्ग का निर्णय कर दिया जायेगा। फिर मौत को एक भेड़ के रूप में बध कर दिया जायेगा। तथा घोषणा कर दी जायेगी कि हे स्वर्गीयो! तुम्हें सदा रहना है, और अब मौत नहीं है। और हे नारकियों! तुम्हें सदा नरक में रहना है,अब मौत नहीं है। (सहीह बुख़ारी: ४७३०)

४३. हे मेरे पिता! मेरे पास वह ज्ञान आ गया है जो आप के पास नहीं आया, अतः आप मेरा अनुसरण करें, मैं आप को सीधी राह दिख दूँगा।

४४. हे मेरे प्रिय पिता! शैतान की पूजा न करें, वास्तव में शैतान अत्यंत कृपाशील (अल्लाह) का अवैज्ञाकारी है।

४५. हे मेरे पिता! वास्तव में मुझे भय हो रहा है कि आप को अत्यंत कृपाशील की कोई यातना आ लगे तो आप शैतान के मित्र हो जायेंगे।[1]

४६. उस ने कहाः क्या तू हमारे पूज्यों से विमुख हो रहा है? है इब्राहीम! यदि तू (इस से) नहीं रुका तो मैं तुझे पत्थरों से मार दूँगा। और तू मुझ से विलग हो जा सदा के लिये।

४७. (इब्राहीम) ने कहाः सलाम[2] है आप को। मैं क्षमा की प्रार्थना करता रहूँगा आप के लिये अपने पालनहार से, मेरा पालनहार मेरे प्रति बड़ा करुणामय है।

४८. तथा मैं तुम सभी को छोड़ता हूँ और जिसे तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा। और प्रार्थना करता रहूँगा अपने पालनहार से। मुझे विश्वास है कि मैं अपने पालनहार से प्रार्थना कर के असफल नहीं हूँगा।

४९. फिर जब उन्हें छोड़ दिया तथा जिसे वह अल्लाह के सिवा पुकार रहे थे, तो हम ने उसे प्रदान कर दिया इस्हाक तथा याकूब, और हम ने प्रत्येक को नबी बना दिया।

५०. तथा हम ने प्रदान की उन सब को अपनी दया में से, और हम ने बना दी उन की शुभ चर्चा सर्वोच्च।

५१. और आप इस पुस्तक में मूसा की चर्चा करें। वास्तव में वह चुना हुआ तथा रसूल एवं नबी था।

५२. और हम ने उसे पुकारा तूर पर्वत के दायें किनारे से, तथा उसे समीप कर लिया रहस्य की बात करते हुये।

५३. और हम ने प्रदान किया उसे अपनी दया में से, उस के भाई हारून को नबी बना कर।

---

[1] अर्थात् अब मैं आप को संबोधित नहीं करूँगा।

[2] इस्हाक, इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पुत्र तथा याकूब के पिता थे इन्हीं के वंश को बनी इस्राईल कहते है।

५४. तथा इस पुस्तक में इस्माईल[1] की चर्चा करो, वास्तव में वह वचन का पक्का, तथा रसूल – नबी था।

५५. और आदेश देता था अपने परिवार को नमाज़ तथा ज़कात का और अपने पालनहार के यहाँ प्रिय था।

५६. तथा इस पुस्तक में इद्रीस की चर्चा करो, वास्तव में वह सत्यवादी नबी था।

५७. तथा हम ने उसे उठाया उच्च स्थान पर।

५८. यही वह लोग हैं, जिन पर अल्लाह ने पुरस्कार किया नबियों में से आदम की संतति में से तथा उन में से जिन्हें हम ने (नाव पर) सवार किया नूह के साथ तथा इब्राहीम और इस्राईल के संतति में से, तथा उन में से जिन्हें हम ने मार्गदर्शन दिया और चुन लिया, जब इन के समक्ष पढ़ी जाती थीं अत्यंत कृपाशील की आयतें तो वे गिर जाया करते थे सज्दा करते हुये तथा रोते हुये।

५९. फिर इस के पश्चात् ऐसे कपूत पैदा हुये, जिन्हों ने गँवा दिया नमाज़ को तथा अनुसरण किया मनोकांक्षावों का, तो वह शीघ्र ही कुपथ (के परिणाम) का सामना करेंगे।

६०. परन्तु जिन्होंने क्षमा माँग ली, तथा ईमान लाये और सदाचार किये तो वही स्वर्ग में प्रवेश पायेंगे। और उन पर तनिक अत्याचार नहीं किया जायेगा।

६१. स्थायी बिन देखे स्वर्ग, जिन का परोक्षत: वचन अत्यंत कृपाशील ने अपने भक्तों को दिया है, वास्तव में उस का वचन पूरा हो कर रहेगा।

६२. वे नहीं सुनेंगे, उस में कोई बकवास, सलाम के सिवा, तथा उन के लिये उस में जीविका होगी प्रात: और संध्या।

६३. यही वह स्वर्ग है, जिस का हम उत्तराधिकारी बना देंगे, अपने भक्तों में से उसे जो आज्ञाकारी हो।

६४. और हम[1] नहीं उतरते परन्तु आप के पालनहार के आदेश से, उसी का है जो हमारे आगे तथा पीछे है और जो इस के बीच है, और आप का पालनहार भूलने वाला नहीं है।

---

[1] आप इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बड़ेपुत्र थे, इन्हीं से अरबों को वंश चला और आप ही के वंश से अन्तिम नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) नबी बना कर भेजे गये है।

६५. आकाशों तथा धरती का पालनहार तथा जो उन दोनों के बीच है। अत: उसी की इबादत (वंदना) करें, तथा उस की इबादत पर स्थित रहें। क्या आप उस के समकक्ष किसी को जानते हैं?

६६. तथा मनुष्य कहता है कि क्या जब मैं मर जाऊँगा तो फिर निकाला जाऊँगा जीवित हो कर?

६७. क्या मनुष्य याद नहीं रखता कि हम ही ने उसे इस से पूर्व उत्पन्न किया है जब कि वह कुछ (भी) न था?

६८. तो आप के पालनहार की शपथ! हम उन्हें अवश्य एकत्र कर देंगे और शैतानों को, फिर उन्हें अवश्य उपस्थित कर देंगे, नरक के किनारे मुँह के बल गिरे हुये।

६९. फिर हम अलग कर लेंगे प्रत्येक समुदाय से उन में से जो अत्यंत कृपाशील का अधिक अवैज्ञाकारी था।

७०. फिर हम ही भली–भाँति जानते है कि कौन अधिक योग्य है उस में झोंक दिये जाने के।

७१. और नहीं है तुम में से कोई परन्तु वहाँ गुज़रने वाला[2] है, यह आप के पालनहार पर अनिवार्य है जो पूरा हो कर रहेगा।

७२. फिर हम उन्हें बचा लेंगे जो डरते रहे, तथा उस में छोड़ देंगे अत्याचारियों को मुँह के बल गिरे हुये।

७३. तथा जब उन के समक्ष हमारी खुली आयतें पढ़ी जाती हैं तो काफ़िर ईमान वालों से कहते हैं कि (बताओ) दोनों सम्प्रदायों में किस की दशा अच्छी है, और किस की मज्लिस (सभा) अधिक भव्य है?

७४. जब कि हम ध्वस्त कर चुके हैं इन से पहले बहुत सी जातियों को जो इन में उत्तम थीं संसाधन तथा मान सम्मान में।

७५. (हे नबी!) आप कह दें कि जो कुपथ में ग्रस्त होता है, अत्यंत कृपाशील उसे अधिक अवसर देता है। यहाँ तक कि जब उसे देख लें जिस का वचन दिये जाते

---

[1] हदीस के अनुसार एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (फ़रिश्ते) जिब्रील से कहा कि क्या चीज़ आप को रोक रही है कि आप मुझ से और अधिक मिला करें, इसी पर यह आयत अवतरित हुई। (सहीह बुख़ारी)

[2] अर्थात् नरक से जिस पर एक पुल बनाया जायेगा। उस पर से सभी ईमान वालों और काफ़िरों को अवश्य गुज़रना होगा। यह और बात है कि ईमान वालों को इस से कोई हानि न पहुँचे। इस की व्याख्या सहीह हदीसों में वर्णित है।

हैं, या तो यातना को अथवा प्रलय को, उस समय उन्हें ज्ञान हो जायेगा कि किस की दशा बुरी और किस का जत्था अधिक निर्बल है।

७६. और अल्लाह उन्हें जो सुपथ हों मार्गदर्शन में अधिक कर देता है। और शेष रह जाने वाले सदाचार ही उत्तम हैं आप के पालनहार के समीप कर्म–फल में, तथा उत्तम है परिणाम के फलस्वरूप।

७७. (हे नबी!) क्या आप ने उसे देखा जिस ने हमारी आयतों के साथ कुफ़्र (अविश्वास) किया तथा कहा: मैं अवश्य धन तथा संतान दिया जाऊँगा?

७८. क्या वह अवगत हो गया है परोक्ष से अथवा उस से अत्यंत दयाशील से कोई वचन ले रखा है?

७९. कदापि नहीं, हम लिख लेंगे जो वह कहता है, और हम अधिक करते जायेंगे उस की यातना को अत्यधिक।

८०. और हम ले लेंगे जिस की वह बात कर रहा है, और वह हमारे पास अकेला[१] आयेगा।

८१. तथा उन्हों ने बना लिये हैं अल्लाह के सिवा बहुत से पूज्य, ताकि वह उन के सहायक हों।

८२. ऐसा कदापि नहीं होगा, वे सब इन की पूजा (उपासना) का अस्वीकार कर[२] देंगे और उन के विरोधी हो जायेंगे।

८३. क्या आप ने नहीं देखा कि हम ने भेज दिया है शैतानों को काफ़िरों पर जो उन्हें बराबर उकसाते रहते हैं?

८४. अत: शीघ्रता न करें उन पर[३], हम तो केवल उन के दिन गिन रहे हैं।

---

[१] इन आयतों के अवतरित होने का कारण यह बताया गया है कि खब्बाब बिन अरत्त का आस बिन वायल (काफ़िर) पर कुछ श्रृण था। जिसे माँगने के लिये गये तो उस ने कहा: मैं तुझे उस समय तक नहीं दूँगा जब तक मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ कुफ़्र नहीं करेगा। उन्हों ने कहा कि यह काम तो तू मर कर पुन: जीवित हो जाये, तब भी नहीं करूँगा। उस ने कहा: क्या मैं मरने के पश्चात् पुन: जीवित कर दिया जाऊँगा? खब्बाब ने कहा: हाँ। आस ने कहा: वहाँ मुझे धन और संतान मिलेगी तो तुम्हारा श्रृण चुका दूँगा।(सहीह बुख़ारी, हदीस नं. : ४७३२)

[२] अर्थात् प्रलय के दिन

[३] अर्थात् यातना के आने का। और इस के लिये केवल उन की आयु पूरी होने की देर हैं।

८५. जिस दिन हम एकत्रित कर देंगे आज्ञाकारियों को अत्यंत कृपाशील की ओर अतिथि बना कर।
८६. तथा हाँक देंगे पापियों को नरक की ओर प्यासे पशुओं के समान।
८७. वह (काफ़िर) अभिस्तावना का अधिकार नहीं रखेंगे, परन्तु जिस ने बना लिया हो अत्यंत कृपाशील के पास कोई वचन।[१]
८८. तथा उन्हों ने कहा कि बना लिया है अत्यंत कृपाशील ने अपने लिये एक पुत्र।[२]
८९. वास्तव में तुम एक भारी बात घड़ लाये हो।
९०. समीप है कि इस कथन के कारण आकाश फट पड़ें तथा धरती चिर जाये, और गिर जायें पर्वत कण–कण हो कर।
९१. कि वह सिद्ध करने लगे अत्यंत कृपाशील के लिये संतान।
९२. तथा नहीं योग्य है अत्यंत कृपाशील के लिये कि वह कोई संतान बनाये।
९३. प्रत्येक जो आकाशों तथा धरती में हैं आने वाले हैं अत्यंत कृपाशील की सेवा में दास बन कर।
९४. उस ने उन को नियंत्रण में ले रखा है, तथा उन को पूर्णत: गिन रखा है।
९५. और प्रत्येक उस के समक्ष आने वाला है प्रलय के दिन अकेला।[३]
९६. निश्चय जो ईमान लाये हैं तथा सदाचार किये हैं, शीघ्र बना देगा उन के लिये अत्यंत कृपाशील (दिलों में)[४] प्रेम।
९७. अत: (हे नबी!) हम ने सरल बना दिया है, इस (कुरआन) को आप की भाषा में ताकि आप इस के द्वारा शुभ सूचना दें संयमियों (आज्ञाकारियों) को, तथा सतर्क कर दें विरोधियों को।
९८. तथा हम ने ध्वस्त कर दिया है, इन से पहले बहुत सी जातियों को, तो क्या आप देखते हैं, उन में से किसी को? अथवा सुनते हैं, उन की कोई ध्वनि?

---

[१] अर्थात् अल्लाह की अनुमति से वही सिफ़ारिश करेगा जो ईमान लाया है।

[२] अर्थात् ईसाइयों ने – जैसा कि इस सूरह के आरंभ में आया है – ईसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह का पुत्र बना लिया। और इस भ्रम में पड़ गये कि उन्होंने मनुष्य के पापों का प्रायश्चित चुका दिया। इस आयत में इसी कुपथ का खण्डन किया जा रहा है।

[३] अर्थात् उस दिन कोई किसी का सहायक न होगा। और न ही किसी को उस का धन–संतान लाभ देगा।

[४] अर्थात् उन के ईमान और सदाचार के कारण, लोग उस से प्रेम करने लगेंगे।

*****

सूरह ता–हा – २०

सूरह ता–हा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में १३५ आयतें है।

- इस सूरह के आरंभ में यह दोनों अक्षर आये हैं इस लिये इस का यह नाम रखा गया है।
- इस में वह्यी और रिसलात का उद्देश्य बताया गया है। और जो नहीं मानते उन्हें चेतावनी दी गई है, और मूसा (अलैहिस्सलाम) को रिसालत देने और उन के विरोधियों को दुष्परिणाम बताया गया है। साथ ही प्रलय की दशा का भी वर्णन किया गया है ताकि नबूवत के विरोधी सावधान हों।
- इस में आदम (अलैहिस्सलाम) की कथा का वर्णन करते हुये यह बताया गया है कि जब मनुष्य इस धरती पर आया तभी यह बात उजागर कर दी गई थी कि मनुष्य को सीधी राह दिखाने के लिये वह्यी तथा रिसालत का क्रम भी जारी किया जायेगा फिर जो सीधी राह अपनायेगा वही शैतान के कुपथ से सुरक्षित रहेगा।
- इस में अल्लाह की आयतों से विमुख होने का बुरा अन्त बताया गया है। तथा नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और आप के माध्यम से ईमान वालों को सहन और दृढ़ रहने के निर्देश दिये गये हैं। और दिलासा दी गई है कि अन्तिम तथा अच्छा परिणाम उन्हीं के लिये है।
- और अन्त में विरोधियों की आपत्तियों का उत्तर दिया गया है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. ता, हा।

२. हम ने नहीं अवतरित किया है आप पर क़ुरआन इस लिये कि आप दुःखी हों।[१]

३. परन्तु यह उस की शिक्षा के लिये है जो डरता[२] हो।

४. उतारा जाना उस की ओर से है, जिस ने उत्पत्ति की है धरती तथा उच्च आकाशों की।

५. जो अत्यंत कृपाशील अर्श पर स्थिर है।

६. उसी का[३] है, जो आकाशों तथा जो धरती में और जो दोनों के बीच तथा जो भूमि के नीचे है।

७. यदि तुम उच्च स्वर में बात करो, तो वास्तव में वह जानता है भेद को तथा अत्यधिक छुपे भेद को।

८. वही अल्लाह है, नहीं है कोई वंदनीय (पूज्य) परन्तु वही। उसी के उत्तम नाम है।

९. और (हे नबी!) क्या आप को मूसा की बात पहुँची?

१०. जब उस ने देखी एक अग्नि देखी है, सम्भव है कि मैं तुम्हारे पास उस का कोई अंगार लाऊँ, अथवा पा जाऊँ आग पर मार्ग की कोई सूचना।[४]

११. फिर जब वहाँ पहुँचा, तो पुकारा गया: हे मूसा।

१२. वास्तव में मैं ही तेरा पालनहार हूँ, तू उतार दे अपने दोनों जूते, क्योंकि तू पवित्रवादी (उपत्यका) ''तुवा'' में है।

१३. और मैं ने तुझ को चुन[५] लिया है। अत: ध्यान से सुन, जो वह्यी की जा रही है।

१४. नि:सन्देह मैं ही अल्लाह हूँ मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं, तो मेरी ही इबादत (वंदना) कर तथा मेरे स्मरण (याद) के लिये नमाज़ की स्थापना[६] कर।

---

[१] अर्थात् विरोधियों के ईमान न लाने पर।

[२] अर्थात ईमान न लाने तथा कुकर्मों के दुष्परिणाम से।

[३] अर्थात् उसी के स्वामीत्व में तथा उस के आधीन है।

[४] यह उस समय की बात है, जब मूसा अपने परिवार के साथ मद्यन नगर से मिस्र आ रहे थे और मार्ग भूल गये थे।

[५] अर्थात् नबी बना दिया।

[६] इबादत में नमाज़ सम्मिलित है, फिर भी उस का महत्व दिखाने के लिये उस का विशेष आदेश दिया गया है।

१५. निश्चय प्रलय आने वाली है, मैं उसे गुप्त रखना चाहता हूँ, ताकि प्रतिकार (बदला) दिया जाये, प्रत्येक प्राणी को उस के प्रयास के अनुसार।

१६. अतः तुम को न रोक दे, उस (के विश्वास) से, जो उस पर र्समान (विश्वास) नहीं रखता, और जिस ने अनुसरण किया हो अपनी इच्छा का। अन्यथा तेरा नाश हो जायेगा।

१७. और हे मूसा! यह तेरे दाहिने हाथ में क्या है?

१८. उत्तर दियाः यह मेरी लाठी है, मैं इस पर सहारा लेता हूँ तथा इस से अपनी बकरियों के लिये पत्ते झाड़ता हूँ तथा मेरी इस में दूसरी आवश्यकतायें (भी) हैं।

१९. कहाः उसे फेंकिये, हे मूसा!

२०. तो उस ने उसे फेंक दिया, और सहसा वह एक सर्प था, जो दौड़ रहा था।

२१. कहाः पकड़ ले इस को, और डर नहीं, हम उसे फेर देंगे उस की प्रथम स्थिति की ओर।

२२. और अपना हाथ लगा दे अपनी काँख (बग़ल) की ओर, वह निकालेगा चमकता हुआ बिना किसी रोग के, यह दूसरा चमत्कार है।

२३. ताकि हम तुझे दिखायें, अपनी बड़ी निशानियाँ।

२४. तुम फ़िरऔन के पास जाओ, वह विद्रोही हो गया है।

२५. मूसा ने प्रार्थना कीः हे मेरे पालनहार! खोल दे, मेरे लिये मेरा सीना।

२६. तथा रसल कर दे, मेरे लिये मेरा काम।

२७. और कोल दे, मेरी जुबान की गाँठ।

२८. ताकि लोग मेरी बात समझें।

२९. तथा बना दे, मेरा एक सहायक मेरे परिवार में से।

३०. मेरे भाई हारून को।

३१. उस के द्वारा दृढ़ कर दे मेरी शक्ति को।

३२. और साझी बना दे, उसे मेरे काम में।

३३. ताकि हम दोनों तेरी पवित्रता का गान अधिक करें।

३४. तथा तुझे अधिक स्मरण (याद) करें।

३५. निःसन्देह तू हमें भली प्रकार देखने भालने वाला है।

३६. अल्लाह ने कहा: हे मूसा! तेरी सब माँग पूरी कर दी गयी।

३७. और हम उपकार कर चुके हैं तुम पर एक बार और[१] (भी)।

३८. जब हम ने उतार दिया तेरी माँ के दिल में जिस की वह्यी (प्रकाशना) की जा रही है।

३९. कि इसे रख दे ताबूत (सन्दूक) में, फिर उसे नदी में डाल दे, फिर नदी उसे किनारे लगा देगी, जिसे उठा लेगा मेरा शत्रु तथा उस का शत्रु[२] और मैं ने डाल दिया तुझ पर अपनी ओर से विशेष[३] प्रेम ताकि तेरा पालन–पोषण मेरी रक्षा में हो।

४०. जब चल रही थी तेरी बहन[४], फिर कह रही थी: क्या मैं तुम्हें उसे बता दूँ, जो इस इस का लालन–पालन करे? फिर हम ने पुन: तुम्हें पहुँचा दिया तुम्हारी माँ के पास, ताकि उस की आँख ठण्डीं हो, और उदासीन न हो। तथा हे मूसा! तू ने मार दिया एक व्यक्ति को, तो हम ने तुझे मुक्त करदिया चिन्ता[५] से। और हम ने तेरी भली–भाँति करीक्षा ली। फिर तू रह गया वर्षों मद्‌यन के लोगों में, फिर तू (मद्‌यन से) अपने निश्चित समय पर आ गया।

४१. और मैं ने बना लिया है तुझे विशेष अपने लिये।

४२. जा तू और तेरा भाई मेरा निशानियाँ ले कर, और दोनों आलस्य न करना मेरे स्मरण (याद) में।

४३. तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ, वास्तव में वह उल्लंघन कर गया है।

४४. फिर उस से कोमल बोल बोलो, कदाचित वह शिक्षा ग्रहण करे अथवा डरे।

४५. दोनों ने कहा: हे हमारे पालनहार! हमें भय है कि वह हम पर अत्याचार अथवा अतिक्रमण कर दे।

४६. उस (अल्लाह) ने कहा: तुम भय न करो, मैं तुम दोनों के साथ हूँ, सुनता तथा देखता हूँ।

---

[१] यह उस समय की बात है जब मूसा का जन्म हुआ। उस समय फ़िरऔन का आदेश था कि बनी इस्राईल में जो भी शिशु जन्म ले, उसे बध कर दिया जाये।

[२] इस से तात्पर्य मिस्र का राजा फ़िरऔन है।

[३] अर्थात् तुम्हें सब का प्रिय अथवा फ़िरऔन का भी प्रिय बना दिया।

[४] अर्थातथ सन्दूक़ के पीछे नदी के किनारे।

[५] अर्थात् एक फ़िरऔनी को मारा और वह मर गया, तो तुम मद्‌यन चले गये, इस का वर्णन सूरह क़सस में आयेगा।

४७. तुम उस के पास जाओ, और कहो कि हम तेरे पालनहार के रसूल हैं। अत: हमारे साथ बनी इस्राईल को जाने दे, और उन्हें यातना न दे, हम तेरे पास तेरे पालनहार की निशानी लाये हैं, और शान्ति उस के लिये है, जो मार्गदर्शन का अनुसरण करे।

४८. वास्तव में हमारी ओर वह्यी (प्रकाशन) की गई है कि यातना उसी के लिये है, जो झुठलाये और मुख फेरे।

४९. उस ने कहा: हे मूसा! कौन है तुम दोनों का पालनहार?

५०. मूसा ने कहा: हमारा पालनहार वह है जिस ने प्रत्येक वस्तु को उस का विशेष रूप प्रदान किया है, फिर मार्गदर्शन[१] दिया।

५१. उस ने कहा: फिर उन की दशा क्या होनी है जो पूर्व के लोग हैं?

५२. मूसा ने कहा: उस का ज्ञान मेरे पालनहार के पास एक लेख्य में सुरक्षित है, मेरा पालनहार न तो चूकता है और न[२] भूलता है।

५३. जिस ने तुम्हारे लिये धरती को बिस्तर बनाया है और तुम्हारे चलने के लिये उस में मार्ग बनाये हैं, और तुम्हारे लिये आकाश से जल बरसाया, फिर उस के द्वारा विभिन्न प्रकार की उपज निकाली।

५४. तुम स्वयं खाओ तथा अपने पशुओं को चराओ, वस्तुत: इस में बहुत सी निशानियाँ हैं बुद्धिमानों के लिये।

५५. इसी (धरती) से हम ने तुम्हारी उत्पत्ति की है, और उसी में तुम्हें वापिस ले जायेंगे, और उसी से तुम सब को पुन:[३] निकालेंगे।

५६. और हम ने उसे दिखा दी अपनी सभी निशानियाँ, फिर भी उस ने झुठला दिया और नहीं माना।

५७. उस ने कहा: क्या तू हमारे पास इस लिये आया है कि हमें हमारी धरती (देश) से अपने जादू (के बल) से निकाल दे, हे मूसा?

---

[१] आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह ने प्रत्येक जीव जन्तु के योग्य उस का रूप बनाया है। और उस के जीवन की आवश्यकता के अनुसार उसे खाने पीने तथा निवास की विधि समझा दी है।

[२] अर्थात् उन्हों ने जैसा किया होगा, उनके आगे उन का परिणाम आयेगा।

[३] अर्थात् प्रलय के दिन पुन: जीवित निकालेंगे।

५८. फिर तो हम तेरे पास अवश्य इसी के समान जादू लायेंगे, अत: हमारे और अपने बीच एक समय निर्धारित कर ले, जिस के विरुद्ध न हम करेंगे और न तुम, एक खुले मैदान में।

५९. मूसा ने कहा: तुम्हारा निर्धारित समय शोभा (उत्सव) का दिन[१] है, तथा यह कि लोग दिन चढ़े एकत्रित हो जायें।

६०. फिर फ़िरऔन लोट गया[२], और अपने हथकण्डे एकत्र किये, और फिर आया।

६१. मूसा ने उन (जादूगरों) से कहा: तुम्हारा विनाश हो! अल्लाह पर मिथ्या आरोप न लगाओ कि वह तुम्हारा किसी यातना द्वारा सर्वनाश कर दे, और वह निष्फल ही रहा है जिस ने मिथ्यारोपण किया।

६२. फिर[३] उन के बीच विवाद हो गया, और वे चुपक–चुपके गुप्त मंत्रणा करने लगे।

६३. कुछ ने कहा: यह दोनों वास्तव में जादूगर हैं, दोनों चाहते हैं कि तुम्हें तुम्हारी धरती से अपने जादू द्वारा निकाल दें, और तुम्हारी आदर्श प्रणाली का अन्त कर दें।

६४. अत: अपने सब उपाय एकत्र कर लो, फिर एक पंक्ति में हो कर आ जाओ, और आज वही सफल हो गया जो ऊपर रहा।

६५. उन्हों ने कहा: हे मूसा! तू फेंकता हैं या पहले हम फेंके?

६६. मूसा ने कहा: बल्कि तुम्हीं फेंको। फिर उन की रस्सियाँ तथा लाठियाँ उसे लग रही थीं कि उन के जादू (के बल) से दौड़ रही हैं।

६७. इस से मूसा अपने मन में डर गया।[४]

६८. हम ने कहा: मत डर, तू ही ऊपर रहेगा।

६९. और फेंक दे जो तेरे दायें हाथ में है, वह निगल जायेगा जो कुछ उन्हों ने बनाया है। वह केवल जादू का स्वाँग बना कर लाये हैं। तथा जादूगर सफल नहीं होता जहाँ से आये।

---

[१] इस से अभिप्राय उन का कोई वार्षिक उत्सव (मेले) का दिन था।

[२] मूसा के सत्य को न मान कर, मुक़ाबले की तैयारी में व्यस्त हो गया।

[३] अर्थात् मूसा (अलैहिस्सलाम) की बात सुन कर उन में मतभेद हो गया। कुछ ने कहा कि यह नबी की बात लग रही है। और कुछ ने कहा कि यह जादूगर है।

[४] मूसा अलैहिस्सलाम को यह भय हुआ कि लोग जादूगरों के धोखे में न आ जायें।

७०. अन्ततः जादूगर सज्दे में गिर गये, उन्हों ने कहा कि हम ईमान लाये हारून तथा मूसा के पालनहार पर।

७१. फ़िरऔन बोलाः क्या तुम ने उस का विश्वास कर लिया इस से पूर्व कि मैं तुम्हें आज्ञा दूँ? वास्तव में वह तुम्हारा बड़ा(गुरू) है जिस ने तुम्हें जादू सिखाया है। तो मैं अवश्य कटवा दूँगा तुम्हारे हाथों तथा पावों को विपरीत दिशा[1] से, और तुम्हें सूली दे दूँगा खजूर के तनों पर, तथा तुम्हें अवश्य ज्ञान हो जायेगा कि हम मैं से किस की यातना अधिक कड़ी तथा स्थायी है।

७२. उन्हों ने कहाः हम तुझे कभी उन खुली निशानियों (तर्कों) पर प्रधानता नहीं देंगे जो हमारे पास आ गयी हैं, और न उस (अल्लाह) पर जिस ने हमें पैदा किया हैं, तू जो करना चाहे कर ले, तू बस इसी संसारिक जीवन में आदेश दे सकता है।

७३. हम तो अपने पालनहार पर ईमान लाये हैं, ताकि वह क्षमा कर दे हमारे लिये हमारे पापों को तथा जिस जादू पर तू ने हमें बाध्य किया, और अल्लाह सर्वोत्तम तथा अनन्त[2] है।

७४. वास्तव में जो जायेगा अपने पालनहार के पास पापी बन कर तो उसी के लिये नरक हैं, जिस में न वह मरेगा और न जीवित रहेगा।[3]

७५. तथा जो उस के पास ईमान ले कर आयेगा, तो उन्हीं के लिये उच्च श्रेणियाँ होंगी।

७६. स्थायी स्वर्ग जिन में नहरें बती होंगी, जिस में सदावासी होंगे, और यही उस का प्रतिफल है जो पवित्र हो गया।

७७. और हम ने मूसा की ओर वह्यी की, कि रातों–रात चल पड़ मेरे भक्तों को ले कर, और उन के लिये सागर में सूखा मार्ग बना ले, तुझे पा लिये जाने का कोई भय नहीं होगा और न डरेगा।

७८. फिर उन का पीछा किया फ़िरऔन ने अपनी सेना के साथ, तो उन पर सागर छा गया जैसा कुछ छा गया।

---

[1] अर्थात् दाहिना हाथ और बायाँ पैर अथवा बायाँ हात और दाहिना पैर।

[2] और तेरा राज्य तथा जीवन तो साम्यिक है।

[3] अर्थात् उसे जीवन का कोई सुख नहीं मिलेगा।

७९. और कुपथ कर दिया फ़िरऔन ने अपनी जाति को और सुपथ नहीं दिखाया।
८०. हे इस्राईल के पुत्रों! हम ने तुम्हें मुक्त कर दिया तुम्हारे शत्रु से, और वचन दिया तुम्हें तूर पर्वत से दाहिनी[१] ओर का, तथा तुम पर उतारा ''मन्न'' तथा ''सल्वा''।
८१. खाओ उन स्वच्छ चीज़ों में से जो जीविका हम ने तुम्हें दी है, तथा उल्लंघन न करो उस में, अन्यथा उतर जायेगा तुम पर मेरा प्रकोप। तथा जिस पर उतर जायेगा मेरा प्रकोप, तो निःसंदेह वह गिर गया।
८२. और मैं निश्चय बड़ा क्षमाशील हूँ उस के लिये जिस ने क्षमा याचना की, तथा ईमान लाया और सदाचार किया फिर सुपथ पर रहा।
८३. और हे मूसा! क्या चीज़ तुम्हें ले आई अपनी जाति से पहले?[२]
८४. उस ने कहा: वे मेरे पीछे आ ही रहे हैं, और मैं तेरी सेवा में शीघ्र आ गया, हे मेरे पालनहार! ताकि तू प्रसन्न हो जाये।
८५. अल्लाह ने कहा: हम ने परीक्षा में डाल दिया तेरी जाति को तेरे (आने के) पश्चात् और कुपथ कर दिया है उन को सामरी[३] ने।
८६. तो मूसा वापिस आया अपनी जाति की ओर अति क्रुद्ध–शोकातुर हो कर। उस ने कहा: हे मेरी जाति को लोगो! क्या तुम्हें वचन नहीं दिया था तुम्हारे पालनहार ने एक अच्छा वचन?[४] तो क्या तुम्हें बहुत दिन लग[५] गये? अथवा तुम ने चाहा कि उत जाये तुम पर कोई प्रकोप तुम्हारे पालनहार की ओर से? अतः तुम ने मेरे वचन[६] को भंग कर दिया।

[१] अर्थात् तुम पर तौरात उतारने के लिये।
[२] अर्थात् तुम पर्वत की दाहिनी ओर अपनी जाति से पहले क्यों आ गये और उन्हें पीछे क्यों छोड़ दिया?
[३] सामरी बनी इस्राईल के एक व्यक्ति का नाम है।
[४] अर्थात् धर्म–पुस्तक तौरात देने का वचन।
[५] अर्थात् वचन की अवधि दीर्घ प्रतीत होने लगी।
[६] अर्थात् मेरे वापिस आने तक, अल्लाह की इबादत पर स्थिर रहने की जो प्रतिज्ञा की ती।

८७. उन्हों ने उत्तर दिया कि हम ने नहीं भंग किया है तेरा वचन अपनी इच्छा से, परन्तु हम पर लाद दिया गया था जाति[१] के आभूषणों का बोझ, तो हम ने उसे फेंक[२] दिया, और ऐसे ही पेंक[३] दिया सामरी ने।

८८. फिर वह[४] निकाल लाया उन के लिये एक बछड़े की मूर्ति जिस की गाय जैसी ध्वनि (आवाज़) थी, तो सब ने कहा: यह है तुम्हारा पूज्य तथा मूसा का पूज्य, (परन्तु) मूसा इसे भूल गया है।

८९. तो क्या वे नहीं देखते कि वह न उन की किसी बात का उत्तर देता है, और न अधिकार रखता है उन के लिये किसी हानि का न किसी लाभ का?[५]

९०. और कह दिया था हारून ने इस से पहले ही कि हे मेरी जाति के लोगो! तुम्हारी परीक्षा की गई है इस के द्वारा, और वास्तव में तुम्हारा पालनहार अत्यंत कृपाशील है। अत: मेरा अनुसरण करो तथा मेरे आदेश का पालन करो।

९१. उन्हों ने कहा: हम सब उसी के पुजारी रहेंगे जब तक (तूर से) हमारे पास मूसा वापिस न आ जाये।

९२. मूसा ने कहा: हे हारून! किस बात ने तुझे रोक दिया जब तू ने उन्हें देखा कि कुपथ हो गये?

९३. कि मेरा अनुसरण न करे? क्या तू ने अवैज्ञा कर दी मेरे आदेश की?

९४. उस ने कहा: मेरे माँ जाये भाई! मेरी दाढ़ी न पकड़ और न मेरा सिर। वास्तव में मुझे भय हुओ कि आप कहेंगे कि तू ने विभेद उत्पन्न कर दिया बनी इस्राईल में, और प्रतीक्षा नहीं की मेरी बात (आदेश) की।

९५. (मूसा ने) पूछा: तेरा समाचार क्या है, हे सामरी?

९६. उस ने कहा: मैं ने वह चीज़ देखी जिसे उन्हों ने नहीं देखा, तो मैं ने ले ली एक मुट्ठी रसूल के पद्चिन्ह से, फिर उसे फेंक दिया, और इसी प्रकार सुझा दिया मुझे[१] मेरे मन मन ने।

---

[१] जाति से अभिप्रेत फ़िरऔन की जाति है, जिन के आभूषण उन्हों ने उदार ले रखे थे।

[२] अर्थात् अपने पास रखना नहीं चाहा, और एक अग्नि कुण्ड में फेंक दिया।

[३] अर्थात् जो कुछ उस के पास था

[४] अर्थात् सामरी ने आभुषणों को पिघला कर बछड़ा बना लिया।

[५] फिर वह पूज्य कैसे हो सकता है?

९७. मूसा ने कहा: जा तेरे लिये जीवन में यह होना है कि तू कहता रहे: मुझे स्पर्श न करना।[२] तता तेरे लिये एक और[३] वचन है जिस के विरुद्ध कदापि न होगा, और अपने पूज्य को देख जिस का पुजारी बना रहा, हम अवश्य उसे जला देंगे, फिर उसे उड़ा देंगे नदी में चूर–चूर कर के।

९८. नि:संदेह तुम सभी का पूज्य बस अल्लाह है, कोई पूज्य नहीं है उस के सिवा। वह समोये हुये हैं प्रत्येक वस्तु को (अपने) ज्ञान में।

९९. इसी प्रकार (हे नबी!) हम आप के समक्ष विगत समाचारों में से कुछ का वर्णन कर रहे हैं, और हम ने आप को प्रदान कर दी है अपने पास से एक शिक्षा (कुरआन)।

१००. जो उस से मुँह फेरेगा तो वह निश्चय प्रलय के दिन लादे हुये होगा भारी[४] बोझ।

१०१. वे सदा रहने वाले होंगे उस में, और प्रलय के दिन उन के लिये बुरा बोझ होगा।

१०२. जिस दिन फूंक दिया जायेगा सूर[५] (नरसिंघा) में, और हम एकत्र कर देंगे पापियों को उस दिन इस दशा में कि उन की आँखें (भय से) नीली होंगी।

१०३. वे आपस में चुपके–चुपके कहेंगे कि तुम (संसार में) बस दस दिन रहे हो।

१०४. हम भली–भाँति जानते हैं, जो कुछ वह कहेंगे, जिस समय कहेगा उन में से सब से चतुर कि तुम केवल एक ही दिन रहे[६] हो।

१०५. वे आप से प्रश्न कर रहे हैं पर्वतों के संबन्ध में? आप कह दें कि उड़ा देगा उन्हें मेरा पालनहार चूर–चूर कर के।

---

[१] अधिकांश भाष्यकारां ने रसूल से अभिप्राय जिब्रील (फ़रिश्ता) लिया है। और अर्थ यह है कि सामरी ने यह बात बनाई कि जब उस ने फ़िरऔन और उस की सेना के डूबने के समय जिब्रील (अलैहिस्सलाम) को घोड़ें पर सवार वहाँ देखा तो उन के घोड़े के पद्चिन्ह की मिट्टी रख ली। और जब सोने का बछड़ा बना कर उस धूल को उस पर फेंक दिया तो उस के प्रभाव से उस में से एक प्रकार की आवाज़ निकलने लगी जो उन के कुपथ होने का कारण बनी।

[२] अर्थात् मेरे समीप न आना और न मुझे छूना, मैं अछूत हूँ।

[३] अर्थात् परलोक की यातना का

[४] अर्थात् पापों का बोझ।

[५] ''सूर'' का अर्थ नरसिंघा है, जिस में अल्लाह के आदेश से एक फ़रिश्ता इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम फूकेगा, और प्रलय आ जायेगी। (मुस्नद अहमद: २१९१) और पुन: फूकेगा तो सब जीवित हो कर हश्र के मैदान में आ जायेंगे।

[६] अर्थात् उन्हें संसारिक जीवन क्षण दो क्षण प्रतीत होगा।

१०६. फिर धरती को छोड़ देगा सम्तल मैदान बना कर।

१०७. तुम नहीं देखोगे उस में कोई टेढ़ापन और न नीच–ऊँच।

१०८. उस दिन लोग पीछे चलेंगे पुकारने वाले के, कोई उस से कतरायेगा नहीं, और धीमी हो जायेंगी आवाजें अत्यंत कृपाशील के लिये, फिर तुम नहीं सुनोंगे कानाफूँसी की आवाज़ के सिवा।

१०९. उस दिन लाभ नहीं देगी सिफ़ारिश परन्तु जिसे आज्ञा दे अत्यंत कृपाशील और प्रसन्न हो उस के[१] लिये बात करने से।

११०. वह जानता है जो कुछ उन के आगे तथा पीछे है, और वे उस का पूरा ज्ञान नहीं रखते।

१११. तथा सभी के सिर झुक जायेंगे जीवित नित्य स्थायी (अल्लाह) के लिये। और निश्चय वह निष्फल हो गया जिस ने अत्याचार लाद[२] लिया।

११२. तथा जो सदाचार करेगा और वह ईमान वाला भी हो, तो वह नहीं डरेगा अत्याचार से न अधिकार हनन से।

११३. और इसी प्रकार हम ने इस अर्बी कुरआन को अवतरित किया है तथा विभिन्न प्रकार से वर्णन कर दिया है उस में चेतावनी का, ताकि लोग आज्ञाकारी हो जायें अथवा वह उन के लिये उत्पन्न कर दे एक शिक्षा।

११४. अत: उच्च है अल्लाह वास्तविक स्वामी। और (हे नबी!) आप शीघ्रता[३] न करें कुरआन के साथ इस से पूर्व कि पूरी कर दी जाये आप की ओर इस की वह्यी (प्रकाशना)। तथा प्रार्थना करें कि हे मेरे पालनहार! मुझे अधिक ज्ञान प्रदान कर।

११५. और हम ने आदेश दिया आदम को इस से पहले, तो वह भूल गया, और हम ने नहीं पाया उस में कोई दृढ़ संकल्प।[४]

---

[१] अर्थात् जिस के लिये सिफ़ारिश कर रहा है।

[२] संसार में किसी पर अत्याचार, तथा अल्लाह के साथ शिर्क किया हो।

[३] जब जिब्रील अलैहिस्सलाम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास वह्यी (प्रकाशना) लाते, तो आप इस भय से कि कुछ भूल न जाये, उन के साथ साथ ही पढ़ने लगते। अल्लाह ने आप को ऐसा करने से रोक दिया। इस का वर्णन सूरह क़ियामा, आयत: ७५ में आ रहा है।

[४] अर्थात् वह भूल से शैतान की बात में आ गया, उस ने जानबूझ कर हमारे आदेश का उल्लंघन नहीं किया।

११६. तथा जब हम ने कहा फ़रिश्तों से कि सज्दा करो आदम को, तो सब ने सज्दा किया इब्लीस के सिवा, उस ने इन्कार कर दिया।
११७. तब हम ने कहा: हे आदम! वास्तव में यह शत्रु है तेरा तथा तेरी पत्नी का, तो ऐसा न हो कि तुम दोनों को निकलवा दे स्वर्ग से और तू आपदा में पड़ जाये।
११८. यहाँ तुझे यह सुविधा है कि न भूखा रहता है और न नग्न रहता है।
११९. और न प्यासा होता है और न तुझे धूप सताती है।
१२०. तो फुसलाया उसे शैतान ने, कहा: हे आदम! क्या मैं तुझे न बताऊँ शाश्वत जीवन का वृक्ष तथा ऐसा राज्य जो पतनशील न हो?
१२१. तो दोनों ने उस (वृक्ष) से का लिया, फिर उन के गुप्तांग उन दोनों के लिये खुले गये। और दोनों चिपकाने लगे अपने ऊपर स्वर्ग के पत्ते। और आदम अवज्ञा कर गया अपने पालनहार की और कुपथ हो गया।
१२२. फिर उस (अल्लाह) ने उसे चुन लिया और उसे क्षमा कर दिया और सुपथ दिखा दिया।
१२३. कहा: तुम दोनों (आदम तथा शैतान) यहाँ से उतर जाओ, तुम एक दूसरे के शत्रु हो। अब यदि आये तुम्हारे पास मेरी ओर से मार्गदर्शन तो जो अनुपालन करेगा मेरे मार्गदर्शन का, वह कुपथ नहीं होगा और न दुर्भाग्य ग्रस्त होगा।
१२४. तथा जो मुख फेर लेगा मेरे स्मरण से, तो उसी का संसारिक जीवन संकीर्ण (तंग)[1] होगा, तथा हम उसे उठायेंगे प्रलय के दिन अन्धा कर के।
१२५. वह कहेगा: मेरे पालनहार! मुझे अन्धा क्यों उठाया, मैं तो (संसार में) आँखों वाला था?
१२६. अल्लाह कहेगा : इसी प्रकार तेरे पास हमारी आयतें आयीं तो तू ने उन्हें भुला दिया। अत: इसी प्रकार आज तू भुला दिया जायेगा।
१२७. तथा इसी प्रकार हम बदला देते हैं उसे जो सीमा का उल्लंघन करे, और ईमान न लाये अपने पालनहार की आयतों पर। और निश्चय आख़िरत की यातना अति कड़ी तथा अधिक स्थायी है।

[1] अर्थात् वह संसार में धनी हो तब भी उसे संतोष नहीं होगा। और सदा चिन्तित और व्याकुल रहेगा।

१२८. तो क्या उन्हें मार्गदर्शन नहीं दिया इस बात ने कि हम ने ध्वस्त कर दिया इन से पहले बहुत सी जातियों को, जो चल फिर–रही थीं अपनी बस्तियों में, नि:संदेह इस में निशानियाँ हैं बुद्धिमानों के लिये।

१२९. और यदि एक बात पहले से निश्चित न होती आप के पालनहार की ओर से, तो यातना आ चुकी होती, और एक निर्धारित समय न होता।[१]

१३०. अत: आप सहन करें उन की बातों को तथा अपने पालनहार की पवित्रता का वर्णन उस की प्रशंसा के साथ करते रहें सूर्योदय से पहले[२] तथा सूर्यास्त से[३] पहले, तथा रात्रि के क्षणशषं[४] में और दिन के किनारों[५] में, ताकि आप प्रसन्न हो जायें।

१३१. और कदापि न देखिये आप उस आनन्द की ओर जो हम ने उन[६] में से विभिन्न प्रकार के लोगों को दे रखा है, वह संसारिक जीवन की शोभा है, ताकि हम उन की परीक्षा लें, और आप के पालनहार का प्रदान[७] ही उत्तम तथा अति स्थायी है।

१३२. और आप अपने परिवार को नमाज़ का आदेश दें, और स्वयं भी उस पर स्थित रहें, हम आप से कोई जीविका नहीं माँगते, हम ही आप को जीविका प्रदान करते हैं। और अच्छा परिणाम आज्ञाकारियों के लिये है।

१३३. तथा उन्होंने कहा: क्यों वह हमारे पास कोई निशानी अपने पालनहार की ओर से नहीं लाता? क्या उन के पास उस का प्रत्यक्ष प्रमाण (कुरआन) नहीं आ गया जिस में अगली पुस्तकों की (शिक्षायें) हैं?

---

[१] आयत का भावार्थ यह है कि अल्ला का यह निर्णय है कि वह किसी जाती का उसके विरुद्ध तर्क तथा उसकी निश्चित अवधि पूरी होने पर ही विनाश करता है, यदि यह बात न होती तो मक्का के मुश्रिकों पर यातना आ चुकी होती।

[२] अर्थात् फ़ज्र की नमाज़ में।

[३] अर्थात् अस्र की नमाज़ में।

[४] अर्थात् इशा की नमाज़ में।

[५] अर्थात् जुहर तथा मग़्रीब की नमाज़ में।

[६] अर्थात् मिश्रणवादियों में से।

[७] अर्थात् परलोक का प्रतिफल।

१३४. और यदि हम ध्वस्त कर देते उन्हें किसी यातना से इस से[1] पहले, तो वे अवश्य कहते कि हे हमारे पालनहार! तू ने हमारी ओर कोई रसूल क्यों नहीं भेजा कि हम तेरी आयतों का अनुपालन करते इस से पहले कि हम अपमानित और हीन होते।

१३५. आप कह दें कि प्रत्येक, (परिणाम की) प्रतीक्षा में है। अतः तुम भी प्रतीक्षा करो, शीघ्र ही तुम्हें ज्ञान हो जायेगा कि कौन सीधी राह वाले हैं, और किस ने सीधी राह पाई है।

*****

[1] अर्थात् नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और कुरआन के आने से पहले।

सूरह अम्बिया – २१

सूरह अम्बिया के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ११२ आयतें है।

इस सूरह में अनेक नबियों की चर्चा के कारण इस का नाम ''अम्बिया'' है।

- इस में बताया गया है कि सभी नबियों ने अपनी जातियों को बराबर यह शिक्षा दी कि उन्हें अल्लाह के लिये अपने कर्मो का उत्तर देना है फिर भी वह संभलने के बजाये विरोध ही करते रहे और अल्लाह की सहायता सदा नबियों के साथ रही।
- यह भी बताया गया है कि अल्लाह ने संसार को खेल के लिये नहीं बनाया है बल्कि सत्य और असत्य के बीच संघर्ष के लिये बनाया है।
- इस में तौहीद का वर्णन है जो सभी नबियों का संदेश था। और रिसालत से संबंधित संदेहों का जवाब किया गया है तथा रसूलों का उपहास करे वालों को चेतावनी दी गई है।
- नबियों की शिक्षाओं और उन पर अल्लाह के अनुग्रह और दया को दिखाया गया है।
- अन्त में विरोधियों को यातना की धमकी तथा ईमान वालों को शुभसूचना दी गई है। और यह बताया गया है कि नबियों को भेजना संसार वासियों के लिये सर्वथा दया है, और उन का अपमान करना स्वयं अपने ही लिये हानिकारक है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. समीप आ गया है लोगों के हिसाब[१] का समय, जब कि वे अचेतना में मुँह फेरे हुये हैं।

२. नहीं आती उन के पास उन के पालनहार की ओर से कोई नई शिक्षा[२], परन्तु उसे सुनते हैं और खेलते रह जाते हैं।

३. निश्चेत हैं उन के दिल, और उन्हों ने चुपके–चुपके आपस में बातें कीं जो अत्याचारी हो गये: यह (नबी) तो बस एक पुरुष हैं तुम्हारे समान, तो क्या तुम जादू के पास जाते हो जब कि तुम देखते हो?[३]

४. आप कह दें कि मेरा पालनहार जानता है प्रत्येक बात को जो आकाश तथा धरती में है। और वह सब सुनने जानने वाला है।

५. बल्कि उन्हों ने कह दिया कि यह[४] बिखरे स्वप्न हैं। बल्कि उस (नबी) ने इसे स्वयं बना लिया है, बल्कि उस (नबी) ने इसे स्वयं बना लिया है, बल्कि वह कवि है। अन्यथा उसे चाहिये कि हमारे पास कोई निशानी ला दे जैसे पूर्व के रसूल (निशानियों के साथ) भेजे गये।

६. नहीं ईमान[५] लायी इन से पहले कोई बस्ती जिस का हम ने विनाश किया, तो क्या यह ईमान लायेंगे?

७. और (हे नबी!) हम ने आप से पहले मनुष्य पुरुषों को ही रसूल बना कर भेजा, जिन की ओर वह्यी भेजते रहे। फिर तुम ज्ञानियों[६] से पूछ लो, यदि तुम (स्वयं) नहीं[७] जानते हो।

८. तथा नहीं बनाये हम ने उन के ऐसे शरीर[८] जो भोजन न करते हों। तथा न वे सदावासी थे।

---

[१] अर्थात प्रलय का समय, फिर भी लोग उस से अचेत माया मोह में लिप्त हैं।

[२] अर्थात कुरआन की कोई आयत अवतरित होती है तो उस में चिन्तन और विचार नहीं करते।

[३] अर्थात् यह कि वह तुम्हारे जैसा मनुष्य है, अत: इस का जो भी प्रभाव है वह जादू के कारण है।

[४] अर्थात् कुरआन की आयतें।

[५] अर्थात् निशानियाँ देख कर भी ईमान नहीं लायी।

[६] अर्थात् आदि आकाशीय पुस्तकों के ज्ञानियों से।

[७] देखिये: सूरह नह्ल, आयत: ४३।

[८] अर्थात् उन में मनुष्य की ही सब विशेषताऐं थीं।

९. फिर हम ने पूरे कर दिये उन से किये हुये वचन, और हम ने बचा लिया उन्हें, और जिसे हम ने चाहा। और विनाश कर दिया उल्लंघनकारियों का।

१०. नि:संदेह हम ने उतार दी है तुम्हारी ओर एक पुस्तक (कुरआन) जिस में तुम्हारे लिये शिक्षा है। तो क्या तुम समझते नहीं हो?

११. और हम ने तोड़ कर रख दिया बहुत सी बस्तियों को जो अत्याचारी थीं, और हम ने पैदा कर दिया उन के पश्चात् दूसरी जाति को।

१२. फिर जब उन्हें संवेदन हो गया हमारे प्रकोप का, तो अकस्मात् वहाँ से भागने लगे।

१३. (कहा गया) भागो नहीं। तथा तुम वापिस जाओ जिस सुख–सुविधा में थे, तथा अपने घरों की ओर, ताकि तुम से पूछा[1] जाये।

१४. उन्हों ने कहा: हाय हमारा विनाश! वास्तव में हम अत्याचारी थे।

१५. और फिर बराबर यही उन की पुकार रही यहाँ तक कि हम ने बना दिया उन्हें कटी खेती के समान बुझे हुये।

१६. और हम ने नहीं पैदा किया है आकाश और धरती को तथा जो कुछ दोनों के बीच है खेल के लिये।

१७. यदि हम कोई केल बनाना चाहते तो उसे अपने पास ही से बना[2] लेते, यदि हमें यह करना होता।

१८. बल्कि हम मारते हैं सत्य से असत्य पर, तो वह उस का सिर कुचल देता है, और वह अकस्मात समाप्त हो जाता है, और तुम्हारे लिये विनाश है उन बातों के कारण जो तुम बनाते हो।

१९. और उसी को है जो आकाशों तथा धरती में है, और जो फ़रिश्ते उस के पास हैं वे उस की इबादत (वंदना) से अभिमान नहीं करते, और न थकते हैं।

२०. वे रात और दिन उस की पवित्रता का गान करते हैं, तथा आलस्य नहीं करते।

---

[1] अर्थात् यह कि यातना आने पर तुम्हारी क्या दशा हुयी?

[2] अर्थात् इस विशाल विश्व के बनाने की आवश्यकता न थी। इस आयत में यह बताया जा रहा है कि इस विश्व को खेल नहीं बनाया गया है। यहाँ एक साधारण नियम काम कर रहा है। और वह सत्य और असत्य के बीच संघर्ष का नियम है। अर्थात् यहाँ जो कुछ होता है वह सत्य की विचय और असत्य की पराजय के लिये होता है। और सत्य के आगे असत्य समाप्त हो कर रह जाता है।

२१. क्या इस के बनाये हुये पार्थिव पूज्य ऐसे हैं जो (निर्जीव) को जीवित कर देते है?
२२. यदि होते उन दोनों[१] में अन्य पूज्य अल्लाह के सिवा तो निश्चय दोनों की व्यवस्था बिगड़[२] जाती। अत: पवित्र है अल्लाह अर्श (सिंहासन) का स्वामी उन बातों से जो वे बता रहे हैं।
२३. वह उत्तर दायी नहीं है अपने कार्य का और सभी (उस के समक्ष) उत्तर दायी हैं।
२४. क्या उन्होंने बना लिये हैं उस के सिवा अनेक पूज्य? (हे नबी!) आप कहें कि अपना प्रमाण लाओ। यह (क़ुरआन) उन के लिये शिक्षा है जो मेरे साथ हैं और यह मुझ से पूर्व के लोगों की शिक्षा[३] है, बल्कि उन में से अधिकतर सत्य का ज्ञान नहीं रखते। इसी कारण वह विमुख हैं।
२५. और नहीं भेजा हम ने आप से पहले कोई भी रसूल परन्तु उस की ओर यही वह्यी (प्रकाशना) करते रहे कि मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं है। अत: मेरी ही इबादत (वंदना) करो।
२६. और उन (मुश्रिकों) ने कहा कि बना लिया है अत्यंत कृपाशील ने संतति। वह पवित्र है! बल्कि वे (फ़रिश्ते)[४] आदरणीय भक्त हैं।
२७. वे उस के समक्ष बढ़ कर नहीं बोलते और उस के आदेशानुसार काम करते हैं।
२८. वह जानता है जो उन के सामने हैं और जो उन से ओझल है। वह किसी की सिफ़ारिश नहीं करेंगे उस के सिवा जिस से वह (अल्लाह) प्रसन्न[५] हो, तथा वह उस के भय से समहे रहते हैं।
२९. और जो कह दे उन में से कि मैं पूज्य हूँ अल्लाह के सिवा तो वही है जिसे हम दण्ड देंगे नरक का, इसी प्रकार हम दण्ड दिया करते हैं अत्याचारियों को।

---

[१] आकाश तथा धरती में।

[२] क्योंकि दोनों अपनी अपनी शक्ति का प्रयोग करते और उन के आपस के संघर्ष के कारण इस विश्व की व्यवस्था छिन्न–भिन्न हो जाती। अत: इस विश्व की व्यवस्था स्वयं बता रही है कि इस का स्वामी एक ही है। और वही अकेला पूज्य है।

[३] आयत का भावार्थ यह है कि यह क़ुरआन है और यह तौरात तथा इंजील हैं। इस में कोई प्रमाण दिखा दो कि अल्लाह के अन्य साझी और पूज्य हैं। बल्कि यह मिश्रणवादी निर्मूल बातें कर रहें हैं।

[४] अर्थात् अरब के मिश्रणवादी जिन फ़रिश्तों को अल्लाह की पुत्रियाँ कहते हैं, वास्तव में वह उस के भक्त तथा दास हैं।

[५] अर्थात् जो एकेश्वरवादी होंगे।

३०. और क्या उन्हों ने विचार नहीं किया जो काफ़िर हो गये कि आकाश तथा धरती दोनों मिले हुये[1] थे, तो हम ने दोनों को अलग–अलग किया। तथा हम ने बनाया पानी से प्रत्येक जीवित चीज़ को? फिर क्या वह (इस बात पर) विश्वास नहीं करते?

३१. और हम ने बना दिये धरती में पर्वत ताकि झुक न[2] जाये उन के साथ, और बना दिये उन (पर्वतों) में चोड़े रास्ते ताकि लोग राह पायें।

३२. और हम ने बना दिया आकाश को सुरक्षित छत, फिर भी वह उस के प्रतीकों (निशानियों) से मुँह फेरे हुये हैं।

३३. तथा वही है जिस ने उत्पत्ति की है रात्रि तथा दिवस की और सूर्य तथा चाँद की, प्रत्येक एक मण्डल में तैर रहे[3] है।

३४. और (हे नबी!) हम ने नहीं बनायी है किसी मनुष्य के लिये आप से पहले नित्यता। तो यदि आप मर[4] जायें, तो क्या वह नित्य जीवी हैं?

३५. प्रत्येक जीव को मरण का स्वाद चखना है, और हम तुम्हारी परीक्षा कर रहे हैं अच्छी तथा बुरी परिस्थितियों से, तथा तुम्हें हमारी ही ओर फिर आना है।

३६. तथा जब देखते हैं आप को जो काफ़िर हो गये तो बना लेते हैं आप को उपहास, (वे कहते हैं) क्या यही है जो तुम्हारे पूज्यों की चर्चा किया करता है? जब कि वे स्वयं रहमान (अत्यंत कृपाशील) के स्मरण के निवर्ती है।

३७. मनुष्य जन्मजात व्यग्र (अधीर) है, मैं शीघ्र तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखा दूँगा। अत: तुम जल्दी न करो।

३८. तथा वह कहते हैं कि कब पूरी होगी यह[5] धमकी, यदि तुम लोग सच्चे हो?

---

[1] अर्थात् अपनी उत्पत्ति के आरंभ में।

[2] अर्थात् यह पर्वत न होते तो धरती सदा हिलती रहती।

[3] कुरआन अपनी शिक्षा में विश्व की व्यवस्था से एक के पूज्य होने का प्रमाण प्रस्तुत करता है। यहाँ भी आयत: ३० से ३३ तक एक अल्लाह के पूज्य होने का प्रमाण प्रस्तुत किया गया है।

[4] जब मनुष्य किसी का विरोधी बन जाता है तो उस के मरण की कामना करता है। यही दश मक्का के काफ़िरों की भी थी। वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मरण की कामना कर रहे थे। फिर यह कहा गया है कि संसार के प्रत्येक जीव को मरना है। यह कोई बड़ी बात नहीं, बड़ी बात तो यह है कि अल्लाह इस संसार में सब के कर्मो की परीक्षा कर रहा है। और फिर सब को अपने कर्मों का फल भी परलोक में मिलना है तो कौन इस परीक्षा में सफल होता है?

[5] अर्थात् हमारे न मानने पर यातना आने की धकमी।

३९. यदि जान लें जो काफ़िर हो गये हैं उस समय को जब वह नहीं बचा सकेंगे अपने मुखों को अग्नि से और न अपनी पीठों को, और न उन की कोई सहायता की जायेगी (तो ऐसी बातें नहीं करेंगे)।

४०. बल्कि वह समय उन पर आ जायेगा अचानक, और उन्हें आश्चर्य चकित कर देगा, जिसे वह फेर नहीं सकेंगे और न उन्हें समय दिया जायेगा।

४१. और उपहास किया गया बहुत से रसूलों का आप से पहले, तो घेर लिया उन को जिन्हों ने उपहास किया उन में से उस चीज़ ने जिस[१] का उपहास कर रहे थे।

४२. आप पूछिये कि कौन तुम्हारी रक्षा करेगा रात तथा दिन में अत्यंत कृपाशील[२] से? बल्कि वह अपने पालनहार की शिक्षा (कुरआन) से विमुख हैं।

४३. क्या उन के पूज्य हैं जो उन्हें बचायेंगे हम से? वह स्वयं अपनी सहायता नहीं कर सकेंगे और न हमारी ओर से उन का साथ दिया जायेगा।

४४. बल्कि हम ने जीवन का लाभ पहुँचाया है उन को तथा उन के पूर्वजों को यहाँ तक कि (सुखों में) उन की बड़ी आयु गुज़र[३] गई, तो क्या वह नहीं देखते कि हम धरती को कम करते आ रहे हैं उस के किनारों से, फिर क्या वह विजयी हो रहे हैं?

४५. (हे नबी!) आप कह दें कि मैं तो वह्यी ही के आधार पर तुम्हें सावधान कर रहा हूँ। (परन्तु) बहरे पुकार नहीं सुनते जब उन्हें सावधान किया जाता है।

४६. और यदि छू जाये उन को आप के पालनहार की तनिक भी यातना, तो अवश्य पुकारेंगे कि हाये, हमारा विनाश! निश्चय ही ह अत्याचारी[४] थे।

४७. और हम रख देंगे न्याय का तराजू[१] प्रलय के दिन, फिर नहीं अत्याचार किया जायेगा किसी पर कुछ भी, तथा यदि होगा राई के दाने के बराबर (किसी का कर्म) तो हम उसे सामने ला देंगे, और हम बस (काफ़ी) हैं हिसाब लेने वाले।

---

[१] अर्थात् यातना ने।

[२] अर्थात् उस की यातना से।

[३] अर्थ यह है कि वह मक्का के काफ़िर सुख–सुविधा मंद रहने के कारण अल्लाह से विमुख हो गये हैं, और सोचते हैं कि उन पर यातना नहीं आयेगी और वही विजयी होंगे। जब कि दशा यह है कि उन के अधिकार का क्षेत्र कम होता जा रहा है और इस्लाम बराबर फैलता जा रहा है। फिर भी वे इस भ्रम में हैं कि वे प्रभुत्व प्राप्त कर लेंगे।

[४] अर्थात् अपने पापों को स्वीकार कर लेंगे।

४८. और हम दे चुके हैं मूसातथा हारून को विवेक तथा प्रकाशऔर शिक्षाप्रद पुस्तक आज्ञाकारियों के लिये।

४९. जो डरते हों अपने पालनहार से बिन देखे, और वे प्रलय से भयभीत हों।

५०. और यह (कुरआन) एक शुभ शिक्षा है जिसे हम ने उतारा है, तो क्या तुम इस के इन्कारी हो?

५१. और हम ने प्रदान की थी इब्राहीम को उस की चेतना इस से पहले, और हम उसे भली भाँति अवगत थे।

५२. जब उस ने अपने बाप तथा अपनीजाति से कहा: यह प्रतिमायें (मुर्तियाँ) कैसी हैं जिन की पूजा में तुम लगे हुये हो?

५३. उन्हों ने कहा: हम ने पाया है अपने पूर्वजों को इन की पूजा करते हुये।

५४. उस (इब्राहीम) ने कहा: निश्चय तुम और तुम्हारे पूर्वज खुले कुपथ में हो।

५५. उन्हों ने कहा: क्या तुम लाये हो हमारे पास सत्य या तुम उपहास कर रहे हो?

५६. उस ने कहा: बल्कि तुम्हारा पालनहार आकाशों तथा धरती का पालनहार है जिस ने उन्हें पैदा किया है, और मैं तो इसी का साक्षी हूँ।

५७. तथा अल्लाह की शपथ! मैं अवश्य चाल चलूँगा तुम्हारी मुर्तियों के साथ, इस के पश्चात् कि तुम चले जाओ।

५८. फिर उस ने कर दिया उन्हें खण्ड–खण्ड, उन के बड़े के सिवा, ताकि वह उस की ओर फिरें।

५९. उन्हों ने कहा: किस ने यह दशा कर दी है हमारे पूज्यों (देवताओं) की? वास्तव में वह कोई अत्याचारी होगा!

६०. लोगों ने कहा: हम ने सुना: हम ने सुना है एक नवयुवक को उन की चर्चा करते जिसे इब्राहीम कहा जाता है।

६१. लोगों ने कहा: उसे लाओ लोगों के सामने ताकि लोग देखें।

६२. उन्हों ने पूछा: क्या तू ने ही यह किया है हमारे पूज्यों के साथ, हे इब्राहीम?

---

[1] अर्थात् कर्मों को तौलने और हिसाब करने के लिये, ताकि प्रत्येक व्यक्ति को उस के कर्मानुसार बदला दिया जाये।

६३. उस ने कहा: बल्कि इसे इन के इस बड़े ने किया[१] है, तो उन्हीं से पूछ लो यदि वह बोलते हों?

६४. फिर अपने मन में वे सोच में पड़ गये। और (अपने मन में) कहा: वास्तव में तुम्ही अत्याचारी हो।

६५. फिर वह ओंधे कर दिये गये अपने सिरों के बल[२] (और बोले) : तू जानता है कि यह बोलते नहीं हैं।

६६. इब्राहीम ने कहा: तो क्या तुम इबादत (वंदना) अल्लाह के सिवा उस की करते हो जो न तुम्हें कुछ लाभ पहुँचा सकते हैं और न तुम्हें हानि पहुँचा सकते हैं?

६७. तुफ़ (थू) है तुम पर और उस पर जिस की तुम इबादत (वंदना) करते हो अल्लाह को छोड़ कर। तो क्या तुम समझ नहीं रखते हो?

६८. उन्हों ने कहा: इस को जला दो तथा सहायता करो अपने पूज्यों की, यदि तुम्हें कुछ करना है।

६९. हम ने कहा: हे अग्नि! तू शीतल तथा शान्ति बन जा इब्राहीम पर।

७०. और उन्हों ने उस के साथ बुराई चाही, तो हम ने उन्हीं को क्षतिग्रस्त कर दिया।

७१. और हम उस (इब्राहीम) को बचा कर ले गये तता लूत[३] को उस भूमि[४] की ओर जिस में हम ने सम्पन्नता रखी है विश्व वासियों के लिये।

७२. और हम ने उसे प्रदान किया (पुत्र) इस्हाक़ और (पौत्र) याकूब उस पर अधिक, और प्रत्येक को हम ने सत्कर्मी बनाया।

७३. और हम ने उन्हें अग्रणी (प्रमुख) बना दिया जो हमारे आदेशानुसार (लोगों को) सुपथ दर्शाते है। तथा हम ने वह्यी (प्रकाशना) की उन की ओरसत्कर्मो के करने तथा नमाज़ की स्थापना करने और ज़कात देने की, तथा वे हमारे ही उपासक थे।

---

[१] यह बात इब्राहील अलैहिस्सलाम ने उन्हें उन के पूज्यों की विवशता दिखाने के लिये कही।

[२] अर्थात् सत्य को स्वीकार कर के उस से फिर गये।

[३] लूत अलैहिस्सलाम इब्राहीम अलैहिस्सलाम के भतीजे थे।

[४] इस से अभिप्राय सीरिया देश है। और अर्थ यह है कि अल्लाह ने इब्राहीम अलैस्सिलाम की अग्नि से रक्षा करने के पश्चात् उन्हें सीरिया देश की ओर प्रस्थान कर जाने का आदेश दिया। और वह सीरिया चले गये।

७४. तथा लूत को हम ने निर्णय शक्ति और ज्ञान दिया, और बचा लिया उस बस्ती से जो दुष्कर्म कर रही थी, वास्तव में वे बुरे अवैज्ञाकारी लोग थे।

७५. और हम ने प्रवेश दिया उसे अपनी दया में, वास्तव में वह सदाचारियों में से था।

७६. तथा नूह को (याद करो) जब उस ने पुकारा इन (नबियों) से पहले। तो हम ने उस की पुकार सुन ली, फिर उसे और उस के घराने को मुक्ति दी महा पीड़ा से।

७७. और उस की सहायता की उस जाति के मुक़ाबले में जिन्हों ने हमारी आयतों (निशानियों) को झुठला दिया, वास्तव में वे बुरे लोग थे अत: हम ने डुबो दिया उन सभी को।

७८. तथा दावूद और सुलैमान को (याद करो) जब वह दोनों निर्णय कर रहे थे खेत के विषय में जब रात्रि मं चर गईं उसे दूसरों की बकरियाँ, और हम उन का निर्णय देख रहे थे।

७९. तो हम ने उस का उचित निर्णय समझा दिया सुलैमान[१] को, और प्रत्येक को हम ने प्रदान किया था निर्णय शक्ति तथा ज्ञान, और हम ने आधीन कर दिया था दावूद के साथ पर्वतों को जो (अल्लाह की पवित्रता का) वर्णन करते थे तथा पक्षियों को, और हम ही इस कार्य के करने वाले थे।

८०. तथा हम ने उस (दावूद) को सिखाया तुम्हारे लिये कवच बनाना ताकि तुम्हें बचाये तुम्हारे आकमण से, तो क्या तुम कृतज्ञ हो?

८१. और सुलैमान के आधीन कर दिया उग्र वायु को, जो चल रही थी उस के आदेश से[२] उस धरती की ओर जिस में हम ने सम्पन्नता (विभूतियाँ) रखी हैं, और हम ही सर्वज्ञ हैं।

[१] हदीस में वर्णित है कि दोनारियों के साथ शिशु थे। भेड़िया आया और एक को ले गया तो एक ने दूसरी से कहा कि तुम्हारे शिशु को ले गया है और निर्णय के लिये दावूद के पास गयीं। उन्हों ने बड़ी के लिये निर्णय कर दिया। फिर वह सुलैमान अलैहिस्सलाम के पास आयीं, उन्हों ने कहा, छुरी लाओ मैं तुम दोनों के लिये दो भाग कर दूँ। तो छोयी ने कहा: ऐसा न करें अल्लाह आप पर दया करे, यह उस का शिशु है। यह सुन कर उन्हों ने छोटी के पक्ष में निर्णय कर दिया। (बुख़ारी ३४२७, मुस्लिम १७२०)

[२] अर्थात् वायु उन के सिंहासन को ुन के राज्य में जहाँ चाहते क्षणों में पहुँचा देती थी।

८२. तथा शैतानों में से उन्हें (उस के आधीन कर दिया) जो उस के लिये डुबकी लगाते[१] तथा इस के सिवा दूसरे कार्य करते थे, और हम ही उन के निरीक्षक[२] थे।

८३. तथा अय्यूब (की उस स्थिति) को (याद करो) जब उस ने पुकारा अपने पालनहार को कि मुझे रोग लगा गया है। और तू सब से अधिक दयावान् है।

८४. तो हम ने उस की गुहार सुन ली[३] और दूर कर दिया जो दुःख उसे था, और प्रदान कर दिया उसे उस का परिवार तथा उतने ही और उन के साथ, अपनी विशेष दया से तथा शिक्षा के लिये उपासकों की।

८५. तथा इस्माईल और इद्रीस तथा जुल क़िफ़्ल को (याद करो), सभी सहनशीलों में से थे।

८६. और हम ने प्रवेश दिया उन को अपनी दया में, वास्तव में वे सदाचारी थे।

८७. तथा जुन्नून[४] को जब वह चला[५] गया क्रोधित हो कर और सोचा कि हम उसे पकड़ेंगे नहीं, अन्ततः उस ने पुकारा अधेरों में कि नहीं है कोई पूज्य तेरे सिवा, तू पवित्र है, वास्तव में मैं ही दोषी[६] हूँ।

८८. तब हम ने उस की पुकार सुन ली, तथा उसे मुक्त कर दिया शोक से, और इसी प्रकार हम बचा लिया करते हैं ईमान वालों को।

८९. तथा ज़करिय्या को (याद करो) जब पुकारा उस ने अपने पालनहार[१] को, हे मेरे पालनहार! मुझे मत छोड़ दे अकेला, और तू सब से अच्छा उत्तराधिकारी है।

---

[१] अर्थात् मोतियाँ तथा जवाहिरात निकालने के लिये।

[२] ताकि शैतान उन को कोई हानि न पहुँचाये।

[३] आदरणीय अय्यूब अलैहिस्सलाम की अल्लाह ने उन के धन–धान्य तथा परिवार में परीक्षा ली। वह स्वयं रोगग्रस्त हो गये। परन्तु उन के धैर्य के कारण अल्लाह ने उन को फिर स्वस्थ कर दिया और धन–धान्य के साथ ही पहले से दोन गुने पुत्र प्रदान किये।

[४] जुन्नून से अभिप्रेत सूनुस अलैहिस्सलाम हैं। नून का अर्थ अर्बी भाषा में मछली है। उन को ''साहिबुल हूत'' भी कहा गया है। अर्थात् मछली वाला। क्यों कि उन को अल्लाह के आदेश से एक मछली ने निगल लिया था। इस का कुछ वर्णन सूरह यूनुस में आ चुका है। और कुछ सूरह साफ़्फ़ात में आ रहा है।

[५] अर्थात् अपनी जाति से क्रोधित हो कर अल्लाह के आदेश के बिना अपनी बस्ती से चले गये। इसी पर उन्हें पकड़ लिया गया।

[६] सहीह हदीस में आता है कि जो भी मुसलमान इस शब्द के साथ किसी विषय में दुओ करेगा तो अल्लाह उस की दुओ को स्वीकार करेगा। (तिर्मिज़ी – ३५०५)

९०. तो हम ने सुन ली उस की पुकार तथा प्रदान कर दिया उसे यह्या, और सुधार दिया उस के लिये उस की पत्नी को। वास्तव में वह सभी दौड़–धूप करते थे सत्कर्मो में और हम से प्रार्थना करते थे रुचि तथा भय के साथ, और हमारे आगे झुके हुये ते।

९१. तथा जिस ने रक्षा की अपने सतीत्व[२] की, तो फूंक दी हम ने उस के भीतर अपनी आत्मा से, और उसे तथा उस के पुत्र को बना दिया एक निशानी संसार वासियों के लिये।

९२. वास्तव में तुम्हारा धर्म एक ही धर्म[३] है, और मैं ही तुम सब का पालनहार (पूज्य) हूँ। अत: मेरी ही इबादत (वंदना) करो।

९३. और खण्ड–खण्ड कर दिया लोगों ने अपने धर्म को (विभेद कर के) आपस में, सब को हमारी ओर ही फिर आना है।

९४. फिर जो सदाचार करेगा और वह एकेश्वरवादी हो, तो उस के प्रयास की उपेक्षा नहीं की जायेगी, और हम उसे लिख रहे हैं।

९५. और असंभव है किसी भी बस्ती पर जिस का हम ने विनाश कर[४] दिया हैं कि वह फिर (संसार में) आ जाये।

९६. यहाँ तक कि जब खोल दिये जायेंगे याजूज तथा माजूज[५] और वे प्रत्येक ऊँचाई से उतर रहे होंगे।

९७. और समीप आ जायेगा सत्य[६] वचन, तो अकस्मात् खुली रह जायेगी काफ़िरों की आँखे, (वे कहेंगे) : ''हाय हमारा विनाश''! हम असावधान रह गये इस से, बल्कि हम अत्याचारी थे।

---

[१] आदरणीय ज़करिय्या ने एक पुत्र के लिये प्रार्थना की, जिस का वर्णन सूरह आले इमरान तथा सूरह ता–हा में आ चुका है।

[२] इस से संकेत मर्यम तथा उस के पुत्र ईसा (अलैहिस्सलाम) की ओर है।

[३] अर्थात सब नबियों का मूल धर्म एक है। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: मैं मर्यम के पुत्र ईसा से अधिक संबंध रखता हूँ। क्योंकि सब नबी भाई भाई हैं उन की मायें अलग अलग हैं, सब का धर्म एक है। और दूसरी हदीस में यह अधिक है कि: मेरे और उस के बीच कोई और नबीनहीं है। (सहीह बुख़ारी : ३४४२)

[४] अर्थात् उस के वासियों के दुराचार के कारण।

[५] याजूज तथा माजूज के विषय में देखिये सूरह कह्फ़, आयत: ९३ से १०० तक का अनुवाद।

[६] सत्य वचन से अभिप्राय प्रलय का वचन है।

९८. निश्चय तुम सब तथा तुम जिन (मुर्तियों) को पूज रहे हो अल्लाह के अतिरिक्त नरक के ईंधन हैं, तुम सब वहाँ पहुँचने वाले हो।

९९. यदि वे वास्तव में पूज्य होते, तो नरक में प्रवेश नहीं करते, और प्रत्येक उस में सदावासी होंगे।

१००. उन की उस में चीखें होंगी तथा वे उस में (कुछ) सुन नहीं सकेंगे।

१०१. (परन्तु) जिन के लिये पहले ही से हमारी ओर से भलाई का निर्णय हो चुका है, वही उस से दूर रखे जायेंगे।

१०२. वे उस (नरक) की सरसर भी नहीं सुनेंगे, और अपनी मन चाही चीज़ों में सदा (मग्न) रहेंगे।

१०३. उन्हें उदासीन नहीं करेगी (प्रलय के दिन की) बड़ी व्यग्रता, तथा फ़रिश्ते उन्हें हाथों–हाथ ले लेंगे (तथा कहेंगे): यही तुम्हारा वह दिन है जिस का तुम्हें वचन दिया जा रहा था।

१०४. जिस दिन हम लपेट[1] देंगे आकाश को पंजिका के पन्नों को लपेट देने के समान, जैसे हम ने आरंभ किया था प्रथम उत्पत्ति का उसी प्रकार उसे[2] दुहरायेंगे, इस (वचन को पूरा करना हम पर है, और हम पूरा कर के रहेंगे।

१०५. तथा हम ने लिख दिया है ज़बूर[3] में शिक्षा के पश्चात् कि धरती के उत्तराधिकारी मेरे सदाचारी भक्त होंगे।

१०६. वस्तुतः इस (बात) में एक बड़ा उपदेश है उपासकों के लिये।

१०७. और (हे नबी!) हम ने आप को नहीं भेजा है किन्तु समस्त संसार के लिये दया बना[4] कर।

१०८. आप कह दें कि मेरी ओर तो बस यही वह्यी की जा रही है कि तुम सब का पूज्य बस एक ही पूज्य है, फिर क्या तुम उस के आज्ञाकारी[5] हो?

---

[1] (देखिये : सूरह जुमर, आयत : ६७)

[2] नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भाषण दिया कि लोग अल्लाह के पास बिना जूते के, नग्न, तथा बिना ख़तने के एकत्र किये जायेंगे। फिर इब्राहीम अलैहिस्सलाम को सर्व प्रथम वस्त्र पहनाये जायेंगे। (सहीह बुख़ारी, ३३४९)

[3] ज़बूर वह पुस्तक है जो दावूद अलैहिस्सलाम को प्रदान की गयी।

[4] अर्थात् जो आप पर ईमान लायेगा, वही लोक–परलोक में अल्लाह की दया का अधिकारी होगा।

[5] अर्थात दया एकेश्वरवाद में है, मिश्रणवाद में नहीं।

१०९. फिर यदि वे विमुख हो, तो आप कह दें कि मैं ने तुम्हें समान रूप से सावधान कर दिया[1], और मैं नहीं जानता कि समीप है अथवा दूर जिस का वचन तुम्हें दिया जा रहा है।

११०. वास्तव में वही जानता है खुली बात को तथा जानता है जो कुछ तुम उपाते हो।

१११. तथा मुझे यह ज्ञान (भी) नहीं, संभव है यह[2] तुम्हारे लिये कोई परीक्षा हो तता लाभ हो एक निर्धारित समय तक?

११२. उस (नबी) ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! सत्य के साथ निर्णय कर दे। और हमारा पालनहार अत्यंत कृपाशील है जिस से सहायता माँगी जाये उन बातों पर जो तु लोगो बना रहे हो।

*****

[1] अर्थात् ईमान न लाने और मिश्रणवाद के दुष्परिणाम से।

[2] अर्थात् यातना में विलम्ब।

सूरह हज्ज – २२

सूरह हज्ज के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में ७८ आयतें है।

- इस सूरह में हज्ज की साधारण घोषणा की चर्चा है इस लिये इस का नाम सूरह हज्ज है।
- आरंभिक आयतों में प्रलय के कड़े भूकम्प पर सावधान करते हुये इस बात से सूचित किया गया है कि शैतान के उकसाने से कितने ही लोग अल्लाह के बारे में निर्मूल बातों में उलझे रहते हैं जिस के कारण वह नरक की आगमें जा गिरेंगे।
- दूसरे जीवन के प्रमाण औरगुमराही की बातों के परिणाम बताये गये हैं।
- अल्लाह की असुद्ध वंदना को व्यर्थ बताते हुये शिर्क का खण्डन किया गया है।
- यह बताया गया है कि कॉबा एक अल्लाह की वंदना के लिये बनाया गया है। तथा हज्ज के कर्मों को बताया गया है। और मुसलमानों को अनुमति दी गर्स है कि जिहाद कर के कॉबा को मुक्त करायें।
- यातना की जल्दी मचाने पर अत्याचारी जातियों के विनाश की ओर ध्यान दिलाया गया है।
- अल्लाह की राह में हिज्रत करने पर शूभसूचना सुनाई गई है।
- अल्लाह के उपकारों का वर्णन तथा विरोधियों के संदेहों को दूर करते हुये शिर्क को निर्मूल बताया गया है।
- अन्त में मुसलमानों को अपने कर्तव्य का पालन करने और अल्लाह की राह में प्रयास करने और लोगों के सामने उस के धर्म की गवाही देने पर बल दिया गया है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. हे मनुष्यों! अपने पालनहार से डरो, वास्तव में कयामत (प्रलय) का भूकम्प बड़ा ही घोर विषय है।

२. जिस दिन तुम उसे देखोगे, सुध न होगी प्रत्येक दूध पिलाने वाली को अपने दूध पीते शिशु की, और गिरा देगी प्रत्येक गर्भवती अपना गर्भ, तथा तु देखोगे लोगों को मतवाले जब कि वे मतवाले नहीं होंगे, परन्तु अल्लाह की यातना बहुत कड़ी[1] होगी।

३. और कुछ लोग विवाद करते हैं अल्लाह के विषय में बिना किसी ज्ञान के, तथा अनुसरण करते हैं प्रत्येक उद्धत शैतान का।

४. जिस के भाग्य में लिख दिया गया है कि जो उसे मित्र बनायेगा वह उसे कुपथ कर देगा और उसे राह दिखायेगा नरक की यातना की ओर।

५. हे लोगो! यदि तुम किसी संदेह में हो पुनः जीवित होने के विषय में, तो (सोचो कि) हम ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य से, फिर रक्त के थक्के से, पिर मांस के खण्ड से जो चित्रित तथा चीत्रविहीन होता है[2], ताकि हम उजागर कर[3] दें

---

[1] नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह प्रलय के दिन कहेगाः हे आदम! वह कहेंगेः मैं उपसिथत हूँ। फिर पुकारा जायेगा कि अल्लाह आदेश देता है कि अपनी संतान में से नरक में भेजने के लिये निकालो। वह कहेंगे कितने? वह कहेगाः हज़ार में से नौ सौ निन्नानवे। तो उसी समय गर्भवती अपना गर्भ गिरा देगी और शिशु के बाल सफेद हो जायेंगे। और तुम लोगों को मतवाले समझोगे। जब कि वे मतवाले नहीं होंगे किन्तु अल्लाह की यातना कड़ी होगी। यह बात लोगों को भारी लगी और उनके चेहरे बदल गये। तब आप ने कहाः याजूज और माजूज में से नो सौ निन्नानवे होंगे और तुम में से एक। (संक्षिप्त हदीस, बुख़ारी : ४७४१)

[2] अर्थातः यह वीर्य चालीस दिन के बाद गाढ़ी रक्त बन जाता है। फिर गोश्त का लोथड़ा बन जाता है। फिर उस से सहीह सलामत बच्चा बन जाता है। और ऐसे बच्चे में जान फूँक दी जाती है। और अपने समय पर उस की पैदाईश हो जाती है। और – अल्लाह की इच्छा से–कभी कुछ कारणों फलस्वरूप ऐसा भी होता है कि खून का वह लोथड़ा अपना सहीह रूप नहीं धार पाता। और उस में रूह भी नहीं फूँकी जाती। और वह अपने पैदाइश के समय से पहले ही गिर जाता है। सहीह हदीसों में भी माँ के पेट में बच्चे की पैदाइश की इन अवस्थाओं की चर्च मिलती है। उदाहरण स्वरूप, एक हदीस में है कि वीर्य चालीस दिन के बाद गाढ़ी खून बन जाता है। फिर चालीस दिन के बाद लोथड़ा अथवा गोश्त की बोटी बन जाता है। फिर अल्लाह की ओर से एक फ़रिश्ता चार शब्द ले कर आता हैः वह संसार में क्या काम करेगा, उस की आयु कितनी होगी, उस को क्या और कितनी जीविका मिलेगी,और वह शुभ होगा अथवा अशुभ। फिर वह उस में जान डालता है। (देखियेः सहीह बुख़ारी, ३३३२) अर्थातः चार महीने के बाद उस में जान डाली जाती है। और बच्चा एक सहीह रूप धारण कर लेता है। इस प्रकार आज जिस को वैज्ञानिकों ने बहुत दौंड़ धूप के बाद सिद्ध किया है उस को कुरआन ने चौदह सौ साल पूर्व ही बता दिया था। यह इस बात का प्रमाण है कि यह किताब (कुरआन) किसी मानव की बनाई हुई नहीं है, बल्कि अल्लाह की ओर से है।

[3] अर्थात् अपनी शक्ति तथा सामर्थ्य को।

तुम्हारे लिये, और स्थिर रखते हैं गर्भाशयों में जब तक चाहें एक निर्धारित अवधि तक, फिर तुम्हें निकालते हैं शिशु बना कर, फिर ताकि तुम पहुँचो अपन यौवन को, औरतुम में से कुछ (पहले ही) मर जाते हैं और तुम में से कुछ जीर्ण आयु की ओर फेर दिये जाते हैं ताकि उसे कुछ ज्ञान न रह जाये ज्ञान के पश्चात्, तथा तुम देखते हो धरती को सूखी, फिर जब हम उस पर जल–वर्षा करते हैं, तो सह्सा लहलहाने और उभरने लगी, तथा उगा देती है प्रत्येक प्रकार की सुदृश्य वनस्पतियाँ।

६. यह इस लिये है कि अल्लाह ही सत्य है तथा वह जीवित करता है मुर्दो को तथा वास्तव में वह जो चाहे कर सकता है।

७. यह इस कारण है कि कयामत (प्रलय) अवश्य आनी है जिस में कोई संदेह नहीं, और अल्लाह ही उन्हें पुन: जीवित करेगा जो समाधियों (कब्रों) में हैं।

८. तथा लोगों में वह (भी) है जो विवाद करता है अल्लाह के विषय में बिना किसी ज्ञान और मार्गदर्शन एवं बिना किसी ज्योतिमय पुस्तक के।

९. अपना पहलू फेर कर ताकि अल्लाह की राह[1] से कुपथ कर दे। उसी के लिये संसार में अपमान है और हम उसे प्रलय के दिन दहन की यातना चखायेंगे।

१०. यह उन कर्मों का परिणाम है जिस तेरे हाथों ने आगे भेजा है, और अल्लाह अत्याचारी नहीं है (अपने) भक्तों के लिये।

११. तथा लोगों में वह (भी) है जो इबादत (वंदना) करता है अल्लाह की एक किनारे पर हो कर[2] , फिर यदि उसे कोई लाभ पहुँचता है तो वह संतोष हो जाता है। और यदि उसे कोई परीक्षा आ लगे तो मुँह के बल फिर जाता है। वह क्षति में पड़ गया लोक तथा परलोक की, और यही खुली क्षति है।

१२. वह पुकारता है अल्लाह के अतिरिक्त उसे जो न हानि पहुँचा सके उसे और न लाभ, यही दू[3] का कुपथ हैं।

[1] अर्थात अभिमान करते हुये।

[2] अर्थात् संदिग्ध हो कर।

[3] अर्थात् कोई दु:ख होने पर अल्लाह के सिवा दूसरों को पुकारना।

१३. वह उसे पुकारता है जिस की हानि अधिक समीप है उस के लाभ से, वास्तव में वह बुरा संरक्षक तथा बुरा साथी है।

१४. निश्चय अल्लाह उन्हें प्रवेश देगा जो ईमान लाये तता सत्कर्म किये ऐसे स्वर्गों में जिन में नहरें प्रवाहित हैं। वास्तव में अल्लाह करता है जो चाहता है।

१५. जो सोचता है कि उस[१] की सहायता नहीं करेगा अल्लाह लोक तथा परलोक में, तो उसे चाहिये कि तान ले कोई रस्सी आकाश की ओर फिर फाँसी दे कर मर जाये। फिर देखे कि क्या दूर कर देती है उस का उपाय उस के रोष (क्रोध)[२] को?

१६. तथा इसी प्रकार हम ने इस (कुरआन) को खुली आयतों मे अवतरित किया है। और अल्लाह सुपथ दर्श देता है जिसे चाहता है।

१७. जो ईमान लाये तता जो यहूदी हुये, और जो साबई तथा ईसाई हैं और जो मजूसी हैं तथा जिन्हों ने शिर्क किया है, अल्लाह निर्णय[३] कर देगा उन के बीच प्रलय के दिन। निश्चय अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर साक्षी हैं।

१८. (हे नबी!) क्या आप नहीं जानते कि अल्लाह ही को सज्दा[४] करते हैं जो आकाशों तथा धरती में हैं तथा सूर्य और चाँद तथा तारे और पर्वत एवं वृक्ष और पशु तथा बहुत से मनुष्य, और बहुत से वह भी हैं जिन पर यातना सिद्ध हो चुकी है। और जिसे अल्लाह अपमानित कर दे उसे कोई सम्मान देने वाला नहीं हैं। नि:संदेह अल्लाह करता है जो चाहता है।

१९. यह दो पक्ष हैं जिन्होंने विभेद किया[५] अपने पालनहार के विषय में, तो इन में से काफ़िरों के लिये ब्योंत दिये गये हैं अग्नि के वस्त्र, उन के सिरों पर धारा बहायी जायेगी खौलते हुये पानी की।

---

[१] अर्थात अपने रसूल की।

[२] अर्थ यह है कि अल्लाह अपने नबी की सहायता अवश्य करेगा।

[३] अर्थात् प्रत्येक को अपने कर्म की वास्तविकता का ज्ञान हो जायेगा।

[४] इस आयत में यह बताया जा रहा है कि अल्लाह ही अकेला पूज्य हैं उस का कोई साझी नहीं। क्योंकि इस विश्व की सभी उत्पत्ति उसी के आगे झुक रही है और बहुत से मनुष्य भी उस के आज्ञाकारी हो कर उसी को सज्दा कर रहे हैं। अत: तुम भी उस के आज्ञाकारी हो कर उसी के आगे झुको। क्यों कि उस की अवैज्ञा यातना को अनिवार्य कर देती है। और ऐसे व्यक्ति को अपमान के सिवा कुछ हाथ न आयेगा।

[५] अर्थात् संसार में कितने ही धर्म क्यों न हों वास्तव में दो ही पक्ष हैं: एक सत्धर्म का विरोधी और दूसरा सत्धर्म का अनुयायी, अर्थात् काफ़िर और मोमिन और प्रत्येक का परिणाम बताया जा रहा है।

२०. जिस से गला दी जायेंगी उन के पेटों के भीतर की वस्तुयें और उन की खालें।
२१. और उन्हीं के लिये लोहे के आँकुश हैं।
२२. जब भी उस (अग्नि) से निकलना चाहेंगे व्याकुल हो कर, तो उसी में फेर दिये जायेंगे, तथा (कहा जायेगा कि) दहन की यातना चखो।
२३. निश्चय अल्लाह प्रवेश देगा उन्हें जो ईमान लाये तथा सत्कर्म किये ऐसे स्वर्गों में जिन में नहरें प्रवाहित होंगी, उन में उन्हें सोने के कंगन पहनाये जायेंगे तथा मोती, और उन का वस्त्र उस में रेशम का होगा।
२४. तथा उन्हें मार्ग दर्शा दिया गया पवित्र बात[१] का, और उन्हें दर्शा दिया गया प्रशंसित (अल्लाह) का[२] मार्ग।
२५. जो काफ़िर हो गये[३] और रोकते हैं अल्लाह की राह से और उस मस्जिदे हराम से जिसे सब के लिये हम ने एक जैसा बना दिया है: उस के वासी हों अथवा प्रवासी। तथा जो उस मेंअतत्याचार से अधर्म का विचार करेगा, हम उसे दु:खदायी यातना चखायेंगे।[४]
२६. तथा वह समय याद करो जब हम ने निश्चित कर दिया इब्राहीम के लिये इस घर (काबा) का स्थान[५] (इस प्रतिबंध के साथ) कि साझी न बनाना मेरा किसी चीज़ को, तथा पवित्र रखना मेरे घर को परिक्रमा करने, खड़े होने, रुकूअ (झुकना) और सज्दा करने वालों के लिये।
२७. और गोषणा कर दो लोगों में हज्ज की, वे आयेंगे तेरे पास पैदल तथा प्रत्येक दुबली पतली स्वारियों पर, जो प्रत्येक दूरस्थ मार्ग से आयेंगी।

---

[१] अर्थात् स्वर्ग का, जहाँ पवित्र बातें ही होंगी, वहाँ व्यर्थ पाप की बातें नहीं होंगी।

[२] अर्थात् संसार में इस्लाम तथा कुरआन का मार्ग।

[३] इस आयत में मक्का के काफ़िरों को चेतावनी दी गई है, जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और इस्लाम के विरेधी थे। और उन्होंने आप को तथा मुसलमानों को ''हुदैबिया'' के वर्ष मस्जिदे हराम से रोक दिया था।

[४] यह मक्का की मुख्य विशेषताओं में से है कि वहाँ रहने वाला अगर कुफ्र और शिर्क या किसी बिदअत का विचार भी दिल में लाये तो उस के लिये घोर यातना है।

[५] अर्थात् उस का निर्माण करने के लिये। क्यों कि नूह (अलैहिस्सलाम) के तूफ़ान के कारण सब बह गया था इस लिये अल्लाह ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के लिये बैतुल्लाह का वास्तविक स्थान निर्धारित कर दिया। और उन्हों ने अपने पुत्र इस्माईल (अलैहिस्सलाम) के साथ उसे दोबारा स्थापित किया।

२८. ताकि वह उपस्थित हों अपने लाभ प्राप्त करने के लिये, और ताकि अल्लाह का नाम[१] लें निश्चित[२] दिनों में उस पर जो उन्हें प्रदान किया है पालतू चौपायों में से। फिर उस में से स्वयं खाओ तथा भूखे निर्धन को खिलाओ।

२९. फिर अपना मैल कुचैल दूर[३] करें तथाअपनी मनौतियाँ पूरी करें, और परिक्रमा करें प्राचीन घर[४] की।

३०. यह है (आदेश), और जो अल्लाह के निर्धारित किये प्रतिबंधों का आदर करे, तो यह उस के लिये अच्छा है उस के पालनहार के पास। और हलाल (वैध) कर दिये गये तुम्हारे लिये चौपाये उन के सिवा जिन का वर्णन तुम्हारे समक्ष कर दिया[५] दिया[५] गया है, अतः मुर्तियों की गन्दगी से बचो, तथा झूठ बोलने से बचो।

३१. अल्लाह के लिये एकेश्वरवादी होते हुये उस का साझी न बनाते हुये। और जो साझी बनाता हो अल्लाह को तो मानो वह आकाश से गिर गया फिर उसे पक्षी उचक ले जाये अथवा वायु का झोंका किसी दूर स्थान पर पेंक[६] दे।

३२. यह (अल्लाह का आदेश है), और जो आदर करे अल्लाह के प्रतीकों (निशानों)[७] का, तो यह निःसन्देह दिलों के आज्ञाकारी होने की बात है।

३३. तुम्हारे लिये उन में बहुत से लाभ[८] हैं एक निर्धारित समय तक, फिर उन के वध करने का स्थान प्राचीन घर के पास है।

३४. तथा प्रत्येक समुदाय के लिये हम ने बलि की विधि निर्धारित की है, ताकि वह अल्लाह का नाम लें उस पर जो प्रदान किये हैं उन को पालतू चौपायों में से। अतः

---

[१] अर्थात् उसे वध करते समय अल्लाह का नाम लें।

[२] निश्चित दिनों से अभिप्राय १०, ११, १२ तथा १३ ज़िल हिज्जा के दिन हैं।

[३] अर्थात् १० ज़िल हिज्जा को बड़े (जमरे) जिस को लोग शैतान कहते हैं कंकरियाँ मारने के पश्चात् एहराम उतार दें। और बाल नाखुन साफ़ कर के स्नान करें।

[४] अर्थात् कॉबा का।

[५] (देखिये सूरह माइदा, आयतः ३)

[६] यह शिर्क के परिणाम का उदाहरण है कि मनुष्य शिर्क के कारण स्वाभाविक ऊँचाई से गिर जाता है। फिर उसे शैतान पक्षियों के समान उचक ले जाते हैं, और वह नीच बन जाता है। फिर उस में कभी ऊँचा विचार उत्पन्न नहीं होता, और वह मांसिक तथा नैतिक पतन की ओर ही झुका रहता है।

[७] अर्थात् भक्ति के लिये ुस के निश्चित किये हुये प्रतीकों की।

[८] अर्थात् कुर्बानी के पशु पर सवारी तथा उन के दूध और ऊन से लाभ प्राप्त कररना उचित है।

तुम्हारा पूज्य एक ही पूज्य है, उसी के आमाकारी रहो। और (हे नबी!) आप शुभसूचना सुना दे विनीतों को।

३५. जिन की दशा यह है कि जब अल्लाह की चर्चा की जाये तो उन के दिल डर जाते हैं तथा धैर्य रखते हैं उस विपदा पर जो उन्हें पहुँचे, और नमाज़ की स्थापना करने वाले हैं, तथा उस में से जो हम ने उन्हें दिया है दान करते हैं।

३६. और ऊँटों को हम ने बनाया है तुम्हारे लिये अल्लाह की निशानियों में, तुम्हारे लिये उन में भलाई है। अत: अल्लाह का नाम लो उन पर (बध करते समय) खड़े कर के। और जब धरती से लग जायें।[1] उन के पहलू तो स्वयं खाओ उन में से और खिलाओर उस में से संतोषी तथा भिक्षु को, इसी प्रकार हम ने उसे वश में कर दिया है तुम्हारे, ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

३७. नहीं पहुँचते अल्लाह को उन के माँस न उन के रक्त, परन्तु उस को पहुँचता है तुम्हारा आमा पालन। इसी प्रकार उस (अल्लाह) ने उन (पशुओं) को तुम्हारे वश में कर दिया है, ताकि तुम अल्लाह की महिमा का वर्णन करो[2] उस मार्गदर्शन पर जो तुम्हें दिया है। और आप सत्कर्मियों को शुभसूचना सुना दें।

३८. निश्चय ही अल्लाह प्रतिरक्षार करता है उन की ओर से जो ईमान लाये हैं, वास्तव में अल्लाह किसी विश्वासघाती कृतघ्न से प्रेम नहीं करता।

३९. उन्हें अनुमति दे दी गई जिन से युद्ध किया जा रहा है क्यों कि उन पर अत्याचार किया गया है, और निश्चय अल्लाह उन की सहायता पर पूर्णत:सामर्थ्यवान है।[3]

४०. जिन को इन के गरों से अकारण निकाल दिया गया केवल इस बात पर कि वह कहते थे कि हमारा पालनहार अल्लाह है, और यदि अल्लाह प्रतिरक्षा न कराता कुछ लोगों की कुछ लोगों द्वारो तो ध्वस्त कर दिये जाते आश्रम तथा गिरजे औरयहूदियों के धर्म स्थल तथा मस्जिदें जिन में अल्लाह का नाम अधिक लिया

---

[1] अर्थात उस का प्राण पूरी तरह निकल जाये।

[2] बध करते समय (बिस्मिल्लाह अल्लाहु अक्बर) कहो।

[3] यह प्रथम आयत है जिस में जिहाद की अनुमति दी गयीहै। और कारण यह बताया गया है कि मुसलमान शत्रु के अत्याचार से अपनी रक्षा करें। फिर आगे चल कर सूरह बक़रा, आयत: १९० से १९३ और २१६ तथा २२६ में युद्ध का आदेश दिया गया है। जो (बद्र) के युद्ध से कुछ पहले दिया गया।

जाता है। और अल्लाह अवश्य उस की सहायता करेगा जो उस (के सत्य) की सहायता करेगा, वास्तव में अल्लाह अति शक्तिशाली प्रभुत्वशाली है।

४१. यह[1] वह लोग हैं कि यदि हम इन्हें धरती में अधिपत्य प्रदान कर दें, तो नमाज़ की स्थापना करेंगे और ज़कात देंगे, तथा भलाई का आदेश देंगे, और बुराई से रोकेंगे, और अल्लाह के अधिकार में है सब कर्मों का परिणाम।

४२. और (हे नबी!) यदि वह आप को झुठलायें तो इन से पूर्व झुठला चुकी है नूह की जाति और (आद) तथा (समूद)।

४३. तथा इब्राहीम की जाति और लूत की (जाति)।

४४. तथा मद्यन वाले[2], और मूसा (भी) झुठलाये गये, तो मैं ने अवसर दिया काफ़िरों को, फिर उन्हें पकड़ लिया, तो मेरा दण्ड कैसा रहा?

४५. तो कितनी ही बस्तियाँ है जिन्हें हम ने ध्वस्त कर दिया, जो अत्याचारी थीं, वह अपनी छतों के समेत गिरी हुई हैं और बेकार कुऐं तथा पक्के ऊँचे भवन।

४६. तो क्या वह धरती में फिरे नहीं? तो उन के ऐसे दिल होते जिन से समझते, अथवा ऐसे कान होते जिन से सुनते, वास्तव में आँखें अन्धी नहीं हो जातीं, परन्तु वह दिल अन्धे हो जाते हैं जो सीनों में[3] हैं।

४७. तथा वे आप से शीघ्र यातना की माँग कर रहे हैं, और अल्लाह कदापि अपने वचन को भंग नहीं करेगा। और निश्चय आप के पालनहार के यहाँ एक दिन तुम्हारी गणना से हज़ार वर्ष के बराबर[4] है।

४८. और बहुत सी बस्तियाँ हैं जिन्हें हम ने अवसर दिया जब कि वह अत्याचारी थीं, फिर मैं ने उन्हे पकड़ लिया। और मेरी ही ओर (सब को) वापिस आना है।

४९. (हे नबी!) आप कह दें कि हे लोगो! मैं तो बस तुम्हें खुला सावधान करेन वाला हूँ।

---

[1] अर्तात् उत्पीड़ित मुसलमान।

[2] अर्थात् शुऐब अलैहिस्सलाम की जाति।

[3] आयत का भावर्थ यह है क लि की सूझ–बूझ चली जाती है तो आँखें भी अन्धी हो जाती है और देखते हुये भी सत्य को नहीं देख सकती।

[4] अर्थात् वह शीघ्र यातना नहीं देता, पहले अवसर देता है जैसा कि इस के पश्चात् की आयत में बताया जा रहा है।

५०. तो जो ईमान लाये तथा सदाचार किये, उन्हीं के लिये क्षमा और सम्मानित जीविका है।

५१. और जिन्होंने प्रयास किया हमारी आयतों में विवश करने का, तो वही नारकी हैं।

५२. और (हे नबी!) हम ने नहीं भेजा आप से पूर्व किसी रसूल और न किसी नबी को किन्तु जब उस ने (पुस्तक) पढ़ी तो संशय डाल दिया शैतान ने उस के पढ़ने में। फिर निरस्त कर देता है अल्लाह शैतान के संशय को, फिर सुदृढ़ कर देता है अल्लाह अपनी आयतों को और अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ[1] है।

५३. यह इस लिये ताकि अल्लाह शैतानी संशय को उन के लिये परीक्षा बना दे जिन के दिलों में रोग (द्विधा) है और जिन के दिल कड़े हैं। और वास्तव में अत्याचारी विरोध में बहुत दूर चले गये हैं।

५४. और इस लिये (भी) ताकि विश्वास हो जाये उन्हें जो ज्ञान दिये गये हैं कि यह (कुरआन) सत्य है आप के पालनहार की ओर से, और इस पर ईमान लायें और इस के लिये झुक जायें उन के दिल, और निःसंदेह अल्लाह ही पथ प्रदर्शक है उन का जो ईमान लायें सुपथ की ओर।

५५. तथा जो काफ़िर हो गये तो वह सदा संदेह में रहेंगे इस (कुरआन) से, यहाँ तक कि उन के पास सहसा प्रलय आ जाये, अथवा उनके पास बाँझ[2] दिन की यातना आ जाये।

५६. राज्य उस दिन अल्लाह ही का होगा, वही उन के बीच निर्णय करेगा, तो जो ईमान लाये और सदाचार किये तो वह सुख के स्वर्गों में होंगे।

५७. और जो काफ़िर हो गये, और हमारी आयतों को झूठलाया, उन्हीं के लिये अपमानकारी यातना है।

५८. तथा जिन लोगों ने हिजरत (प्रस्थान) की अल्लाह की राह में, फिर मारे गये अथवा मर गये तो उन्हें अल्लाह अवश्य उत्तम जीविका प्रदान करेगा। और वास्तव में अल्लाह ही सर्वोत्तम जीविका प्रदान करने वाला है।

---

[1] आयत का अर्थ यह है कि जब नबी धर्मपुस्तक की आयतें सुनाते हैं तो शैतान, लोगों को उस के अनुपालन से रोकने के लिये संशय उत्पन्न करता है।

[2] बांझ दिन से अभिप्राय प्रलय का दिन है क्यों कि उस की रात नहीं होगी।

५९. वह उन्हें प्रवेश देगा ऐसे स्थान में जिस से वह प्रसन्न हो जायेंगे, और वास्तव में अल्लाह सर्वज्ञ सहनशील है।

६०. यह वास्तविकता है, और जिस ने बदला लिया वैसा ही जो उस के साथ किया गया फिर उस के साथ अत्याचार किया जाये, तो अल्लाह उस की अवश्य सहायता करेगा, वास्तव में अल्लाह अति क्षान्त क्षमाशील है।

६१. यह इस लिये कि अल्लाह प्रवेश देता है रात्रि को दिन में, और प्रवेश देता है दिन को रात्रि में। और अल्लाह सब कुछ सुनने देखने वाला[१] है।

६२. यह इस लिये कि अल्लाह ही सत्य है, और जिसे वह अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वही असत्य है, और अल्लाह ही सर्वोच्च महान् है।

६३. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह आकाश से जल बरसाता है तो भूमि हरी हो जाती है, वास्तव में अल्लाह सूक्ष्मदर्शी सर्वसूचित है।

६४. उसी का है जो आकाशों में तथा जो धरती में है। और वास्तव में अल्लाह ही निस्पृह प्रशंसित है।

६५. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह ने वश में कर दिया[२] है तुम्हारे, जो कुछ धरती में है, तथा नाव को (जो) चलती है सागर में उस के आदेश से, और रोकता है आकाश को धरती पर गिरने से परन्तु उस की अनुमति से? वास्तव में अल्लाह लोगों के लिये अति करुणामय दयावान् है।

६६. तथा वही है जिस ने तुम्हें जीवित किया, फिर तुम्हें मारेगा, फिर तुम्हें जीवित करेगा, वास्तव में मनुष्य बड़ा ही कृतघ्न है।

६७. (हे नबी!) हम ने प्रत्येक समुदाय के लिये (इबादत की) विधि निर्धारित कर दी थी, जिस का वह पालन करते रहे, अत: उन्हें आप से इस (इस्लाम के नियम) के संबंध में विवाद नहीं करना चाहिये। और आप अपने पालनहार की ओर लोगों को बुलायें, वास्तव में आप सीधी राह पर हैं।[३]

---

[१] अर्थात् उस का नियम अन्धा नहीं है कि जिस के साथ अत्याचार किया जाये उस की सहायता न की जाये। रात्रि तथा दिन का परिवर्तन बता रहा है कि एक ही स्थिति सदा नहीं रहती।

[२] अर्थात् तुम उन से लाभान्वित हो रहे हो।

[३] अर्थात् जिस प्रकार प्रत्येक युग में लोगों के लिये धार्मिक नियम निर्धारित किया गये उसी प्रकार अब कुरआन धर्म विधान तथा जीवन विधान है। इस लिये अब प्राचीन धर्मों के अनुयायियों को चाहिये कि इस पर ईमान लाये, न कि इस विषय में

६८. और यदि वह आप से विवाद करें, तो कह दें कि अल्लाह तुम्हारे कर्मो से भली भाँति अवगत है।

६९. अल्लाह ही तुम्हारे बीच निर्णय करेगा कयामत (प्रलय)के दिन जिस में तुम विभेद कर रहे हो।

७०. (हे नबी!) क्या आप नहीं जानते कि अल्लाह जानता है जो आकाश तथा धरती में है, यह सब एक किताब में (अंकित) है। वास्तव में यह अल्लाह के लिये अति सरल है।

७१. और वह इबादत (वंदना) अल्लाह के अतिरिक्त उस की कर रहे हैं जिस का उस ने कोई प्रमाण नहीं उतारा है, और न उन्हें उस का कोई ज्ञान है। और अत्याचारियों का कोई सहायक नहीं होगा।

७२. और जब उन को सुनायी जाती है हमारी खुली आयतेहं तो आप पहचान लेते हैं उन के चेहरों में जो काफ़िर हो गये बिग़ाड को। और लगता है कि वह आक्रमण कर देंगे उन पर जो उन्हें हमारी आयतें सुनाते हैं। आप कह दें: क्या मैं तुम्हें इस से बुरी चीज़ बता दूँ? वह अग्नि है जिस का वचन अल्लाह ने काफ़िरों को दिया है, और वह बहुत ही बुरा आवास है।

७३. हे लोगो! एक उदाहरण दिया गया है इे ध्यान से सुनो, जिन्हें तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो, वह सब एक मक्खी नहीं पैदा कर सकते यद्यपि सबइस के लिये मिल जायें। और यदि उन से मक्खी कुछ छीन ले तो उस से वापिस नहीं ले सकते। माँगने वाले निर्बल, और जिन से माँगा जाये वह दोनों ही निर्बल हैं।

७४. उन्हों ने अल्लाह का आदर किया ही नहीं जैसे उस का आदर करना चाहिये! वास्तव में अल्लाह अति शक्तिशाली प्रभुत्वशाली है।

७५. अल्लाह ही निर्वाचित करता है फ़रिश्तों में से तथा मनुष्यों में से रसूलों को। वास्तव में वह सुनने तथा देखने[१] वाला है।

आप से विवाद करें। और आप निशिचन्त हो कर लोगों को इस्लाम की ओर बुलायें क्यों कि आप सत्धर्म पर हैं। और अब आप के बाद सारे पुराने धर्म निरस्त कर दिये गये हैं।

[१] अर्थात् वही जानता है कि रसूल (संदेशवाहक) बनाये जाने के योग्य कौन है।

७६. वह जानता है जो उन के सामने है और जो कुछ उन से ओझल है, और उस की ओर सब काम फेरे जाते हैं।

७७. हे ईमान वालो! रुकूअ करो तथा सज्दा करो, और अपने पालनहार की इबादत (वंदना) करो, और भलाई करो ताकि तुम सफल हो जाओ।

७८. तथा अल्लाह के लिये जिहाद करो जैसे जिहाद करना[१] चाहिये। उसी ने तुम्हें निर्वाचित किया है और नहीं बनाई तुम पर धर्म में कोई सकीर्णता (तंगी)। यहं तुम्हारे पिता इब्राहीम का धर्म है, उसी ने तुम्हारा नाम मुस्लिम रखा है इस (कुरआन) से पहले तथा इस में भी। ताकि रसूल गवाह हों तुम पर और तुम गवाह[२] बनो सब लोगों पर । अत: नमाज़ की स्थापना करो तथा ज़कात दो, और अल्लाह को सुदृढ़ पकड़[३] लो। वही तुम्हारा संरक्षक है। तो वह क्या ही अच्छा संरक्षक तथा क्या ही अच्छा सहायक है।

******

[१] एक व्यक्ति ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रश्न किया कि कोई धन के लिये लड़ता है, कोई नाम के लिये और कोई वीरता दिखाने के लिये। तो कौन अल्लाह के लिये लड़ता है? आप ने फ़रमाया: जो अल्लाह का शब्द ऊँचा करने के लिये लड़ता है। (सहीह बुख़ारी : १२३, २०१८)

[२] व्याख्या के लिये देखिये सूरह बक़रा, आयत : १४३।

[३] अर्थात् उस की आज्ञा और धर्म विधान का पालन करो।

सूरह मुमिनून – २३

सूरह मुमिनून के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ११८ आयते है।

- इस सूरह में ईमान वालों की सफलता तता उ न के गुणों को बताया गया है।
- और जिस आस्था पर सफलता निर्भर है उस के सत्य होने के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं। और संदेहों को दूर किया गया है।
- यह बताया गया है कि सब नबियों को धर्म एक था, लोगों ने विभेद कर के अनेक धर्म बना लिये।
- जो लोग अचेत हैं उन्हें सावधान करने के साथ साथ मौत तथा प्रलय के दिन उनकी दुर्दशा को बताया गया है।
- नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के माध्यम से मुसलमानों को अल्लाह की क्षमा तथा दया के लिये प्रार्थना की शिक्षा दी गयी है।
- हदीस में है कि जिस में तीन बातें हों उसे ईमान की मिठास मिल जाती है: जिस को अल्लाह और उस के रसूल सब से अधिक प्रिय हों। और जो किसी से मात्र अल्लाह के लिये प्रेम करे। और जिसे यह अप्रिय हो कि इस के पश्चात् कुफ़्र में वापिस जाये जब कि अल्लाह ने उसे उस से निकाल दिया। जैसे की उसे यह अप्रिय हो कि उसे नरक में फेंक दिया जाये। (सहीह बुख़ारी, २१, मुस्लिम ४३)

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. सफल हो गये ईमान वाले।

२. जो अपनी नमाज़ों में विनीत रहने वाले है।

३. और जो व्यर्थ[1] से विमुख रहने वाले हैं।

४. तथा जो ज़कात देने वाले हैं।

५. और जो अपने गुप्तांगों की रक्षा करने वाले हैं।

६. परन्तु अपनी पत्नियों तथा अपने स्वामित्व में आयी दासियों से, तो वही निन्दित नहीं हैं।

७. फिर जो इस के अतिरिक्त चाहें, तो वही उल्लंघनकारी हैं।

८. और जो अपनी धरोहरों तथा वचन का पालन करने वाले हैं।

९. तथा जो अपनी नमाज़ों की रक्षा करने वाले है।

१०. यही उत्तराधिकारी हैं।

११. जो उत्तराधिकारी होंगे फ़िर्दौस[2] के, जिस में वे सदावासी होंगे।

१२. और हम ने उत्पन्न किया हैं मनुष्य को मिट्टी के सार[3] से।

१३. फिर हम ने उसे वीर्य बना कर रख दिया एक सुरक्षित स्थान[4] में।

१४. फिर बदल दिया वीर्य को जमे हुये रक्त में, फिर हम ने उसे मांस का लोथड़ा बना दिया, फिर हम ने लोथड़े में हड्डियाँ बनायीं, फिर हम ने पहना दिया हड्डियों को मांस, फिर उसे एक अन्य रूप में उत्पन्न कर दिया। तो शुभ है अल्लाह जो सब से अच्छी उत्पत्ति करने वाला है।

१५. फिर तुम सब इस के पश्चात् अवश्य मरने वाले हो।

१६. फिर निश्चय तुम सब (प्रलय) के दिन जीवित किया जाओगे।

१७. और हम ने बना दिये तुम्हारे ऊपर सात आकाश, और हम उत्पत्ति से अचेत नहीं[1] हैं।

---

[1] अर्थात् प्रत्येक व्यर्थ कार्य तथा कथन से। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जो अल्लाह और प्रलय के दिन पर ईमान रखता हो वह अच्छी बात बोले अन्यथा चुप रहे। (सहीह बुख़ारी, ६०१९, मुस्लिम ४८)

[2] फ़िर्दौस : स्वर्ग का सर्वोच्च स्थान।

[3] अर्थात् वीर्य से।

[4] अर्थात् गर्भाशय में।

१८. और हम ने आकाश से उचित मात्रा में पानी बरसाया, और उसे धरती में रोक दिया तथा हम उसे विलुप्त कर देने पर निश्चय सामर्थ्यवान हैं।

१९. फिर हम ने उपजा दिये तुम्हारे लिये उस (पानी) के द्वारा खजूरों तथा अंगूरों के बाग़, तुम्हारे लिये उस में बहुत से फल हैं, और उसी में से तुम खाते हो।

२०. तथा वृक्ष जो निकलता है सैना पर्वत से जो तेल लिये उगता है। तथा सालन है खाने वालों के लिये।

२१. और वास्तव में तुम्हारे लिये पशुओं में एक शिक्षा है, हम तुम्हें पिलाते हैं उस में से जो उन के पेटों में[२] है। तथा तुम्हारे लिये उन में अन्य बहुत से लाभ हैं, और उन में से कुछ को तुम खाते हो।

२२. तथा उन पर और नावों पर तुम सवार किये जाते हो।

२३. तथा हम ने भेजा नूह[३] को उस की जाति की ओर, उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! इबादत (वंदना) अल्लाह की करो, तुम्हारा कोई पूज्य नहीं है उस के सिवा, तो क्या तुम डरते नहीं हो?

२४. तो उन प्रमुखों ने कहा जो काफ़िर हो गये उस की जाति में से, यह तो एक मनुष्य है, तुम्हारे जैसा, यह तुम पर प्रधानता चाहता है। और यदि अल्लाह चाहता तो किसी फ़रिश्ते को उतारता, हम ने तो इसे[४] सुना ही नहीं अपने पूर्वजों में।

२५. यह बस एक ऐसा पुरुष है जो पागल हो गया है, तो तुम उस की प्रतीक्षा करो कुछ समय तक।

२६. नू ने कहा: हे मेरे पालनहार! मेरी सहायता कर उन के मुझे झुठलाने पर।

२७. तो हम ने उस की ओर वह्यी की, कि नाव बना हमारी रक्षा में हमारी वह्यी के अनुसार, और जब हमारा आदेश आ जाये तथा तन्नूर उबल पड़े, तो रख ले प्रत्येक (जीव) के एक-एक जोड़े तथा अपने परिवयार को, उस के सिवा जिस

---

[१] अर्थात् उत्पत्ति की आवश्यकता तथा जीवन के संसाधन की व्यवस्था भी कर रहे है।

[२] अर्थात् दूध।

[३] यहाँ यह बताया जा रहा है कि अल्लाह ने जिस प्रकार तुम्हारे आर्थिक जीवन के साधन बनाये उसी प्रकार तुम्हारे आत्मिक मार्गदर्शन की व्यवस्था की और रसूलों को भेजा जिन में नूह अलैहिस्सलाम प्रथम रसूल थे।

[४] अर्थात् एकेश्वरवाद की बात अपने पूर्वजों के समय में सुनी ही नहीं।

पर पहले निर्णय हो चुका है उन में से, और मुझे संबोधित न करना उन के विषय में जिन्होंने अत्याचार किये हैं, निश्चय वे डुबो दिये जायेंगे।

२८. और जब स्थिर हो जाये तू और जो तेरे साथी हैं नाव पर, तो कह: सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है जिस ने हमें मुक्त किया अत्याचारी लोगों से।

२९. तथा कह: हे मेरे पालनहार! मुझे शुभ स्थान में उतार, और तू उत्तम स्थान देने वाला है।

३०. निश्चय इस में कई निशानियाँ हैं, तथा नि:संदेह हम परीक्षा लेने[1] वाले हैं।

३१. फिर हम ने पैदा किया उन के पश्चात् दूसरे समुदाय को।

३२. फिर हम ने भेजा उन में रसूल उन्हीं में से कि तुम इबादत (वंदना) करो अल्लाह की, तुम्हारा कोई (सच्चा) पूज्य नहीं है उस के सिवा, तो क्या तुम डरते नहीं हो?

३३. और उस की जाति के प्रमुखों ने कहा जो काफ़िर हो गये तता आख़िरत (परलोक) का सामना करने को झुठला दिया, तथा हम ने उन्हे सम्पन्न किया था संसारिक जीवन में: यह तो बस एक मनुष्य है तुम्हारे जैसा, खाता है जो तुम खाते हो और पीता है जो तुम पीते हो।

३४. और यदि तुम ने मान लिया अपने जैसे एक मनुज को तो निश्चय तुम क्षतिग्रस्त हो।

३५. क्या वह तुम को वचन देता है कि जब तुम मर जाओगे और धूल तथा हड्डियाँ हो जाओगे तो तुम फिर जीवित निकाले जाओगे?

३६. बहुत दूर की बात है जिस का तुम्हे वचन दिया जा रहा है।

३७. जीवन तो बस संसारिक जीवन है, हम मरते–जीते हैं, और हम फिर जीवित नहीं किये जायेंगे।

३८. यह तो बस एक व्यक्ति है जिस ने अल्लाह पर एक झूठ घड़ लिया है। और हम उस का विश्वास करने वाले नहीं हैं।

३९. नबी ने प्रार्थना की : मेरे पालनहार ! मेरी सहायता कर उन के झुठलाने पर मुझे।

४०. (अल्लाह ने) कहा: शीघ्र ही वह (अपने किये पर) पछतायेंगे।

---

[1] अर्थात् रसूलों के द्वारा परीक्षा लेते रहे है।

४१. अन्ततः पकड़ लिया उन्हें कोलाहल ने सत्यानुसार, और हम ने उन्हें कचरा बना दिया, तो दूरी हो अत्याचारियों के लिये।
४२. फिर हम ने पैदा किया उन के पश्चात् दूसरे युग के लोगों को।
४३. नहीं आगे होती है कोई जाति अपने समय से और न पीछे।[1]
४४. फिर हम ने भेजा अपने रसूलों को निरन्तर, जब जब किसी समुदाय के पास उस का रूसल आया, उन्हों ने उस को झुठला दिया, तो हम ने पीछे लगा[2] दिया उन के एक को दूसरे के और उन्हें कहानी बना दिया। तो दूरी है उन के लिये जो ईमान नहीं लाते।
४५. फिर हम ने भेजा मूसा तथा उस के भाई हारून को अपनी निशानियों तथा खुले तर्क के साथ।
४६. फ़िरऔन और उस के प्रमुखों की ओर तो उन्हों ने गर्व किया, तथा वे थे ही अभिमानी लोग।
४७. उन्हों ने कहा: क्या हम ईमान लाये अपने जैसे दो व्यक्तियों पर, जब कि उन दोनों की जाति हमारे आधीर है?
४८. तो उन्हों ने दोनों को झुठला दिया, तथा हो गये विनाशों में।
४९. और हम ने प्रदान की मूसा को पुस्तक[3], ताकि वह मार्ग दर्शन पा जायें।
५०. और हम ने बना दिया मर्‌यम के पुत्र तथा उस की माँ को एक निशानी, तथा दोनों को शरण दी एक उच्च बसने योग्य तथा प्रवाहित स्रोत के स्थान की ओर।[4]
५१. हे रसूलो! खाओ स्वच्छ[5] चीज़ों में से तथा अच्छे कर्म करो, वास्तव में, मैं उस से जो तुम कर रहे हो भली भाँति अवगत हूँ।
५२. और वास्तव में यह तुम्हारा धर्म एक ही धर्म है और मैं ही तुम सब का पालनहार हूँ, अतः मुझी से डरो।

---

[1] अर्थात् किसी जाति के विनाश का समय आ जाता है तो एक क्षण की भी देर–सवेर नहीं होती।
[2] अर्थात् विनाश में।
[3] अर्थात् तौरात।
[4] इस से अभिप्राय बैतुल मक़दिस है।
[5] नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: अल्लाह स्वच्छ है और स्वच्छ ही को स्वीकार करता है। और ईमान वालों को वही आदेश दिया है जो रसूलों को दिया है। फिर आप ने यही आयत पढ़ी। (मुस्लिम)

५३. तो उन्हों ने खण्ड कर लिया अपने धर्म का आपस में कई खण्ड, प्रत्येक सम्प्रदाय उसी में जो उन के पास[1] हैं मग्न हैं।
५४. अत: (हे नबी!) आप उन्हें छोड़ दें उन की अचेतना में कुछ समय तक।
५५. क्या वे समझते हैं कि हम जो सहायता कर रहे हैं उन की धन तथा संतान से।
५६. शीघ्रता कर रहे हैं उन के लिये भलाईयों में? बल्कि वह समझते नहीं हैं।[2]
५७. वास्तव में जो अपने पालनहार के भय से डरने वाले है।
५८. और जो अपने पालनहार की आयतों पर ईमान रखते हैं।
५९. और जो अपने पालनहार का साझी नहीं बनाते हैं।
६०. और जो करते हैं जो कुछ भी करें, और उन के दिल काँपते रहते हैं कि वे अपने पालनहार की ओर फिर कर जाने वाले हैं।
६१. वही शीघ्रता कर रहे हैं भलाईयों में, तथा वही उन के लिये अग्रसर हैं।
६२. और हम बोझ नहीं रखते किसी प्राणी पर परन्तु उस के सामर्थ्य के अनुसार। तथा हमारे पास एक पुस्तक है जो सत्य बोलती है, और उन पर अत्याचार नहीं किया[3] जायेगा।
६३. बल्कि उन के दिल अचेत हैं इस से, तथा उन के बहुत से कर्म हैं इस के सिवा जिसे वे करने वाले हैं।
६४. यहाँ तक कि जब हम पकड़ लेंगे उन के सुखियों को यातना में, तो वे विलाप करने लगेंगे।
६५. आज विलाप न करो, नि:संदेह तुम हमारी ओर से सहायता नहीं दिये जाओगे।
६६. मेरी आयतें तुम्हें सुनायी जाती रहीं तो तुम अपनी एड़ियों के बल फिरते रहे।
६७. अभिमान करते हुये, उसे कथा बना कर बकवास करते रहे।
६८. क्या उन्हों ने इस कथन (कुरआन) पर विचार नहीं किया, अथवा इन के पास वह[1] आ गया जो उन के पूर्वजों के पास नहीं आया?

---

[1] इस आयतों में कहा गया है कि सब रसूलों ने यही शिक्षा दी है कि स्वच्छ पवित्र चीज़ें खाओ और सदाचार करो। तुम्हारा पालनहार एक है और तुम सभी का धर्म एक है। परन्तु लोगों ने धर्म में विभेद कर के बहुत से सम्प्रदाय बना लिये, और अब प्रत्येक सम्प्रदाय अपने विश्वास तथा कर्म में मग्न है भले ही वह सत्य से दूर हो।

[2] अर्थात् यह कि हम उन्हें अवसर दे रहे है।

[3] अर्थात् प्रत्येक का कर्म लेख है जिस के अनुसार ही उसे बदला दिया जायेगा।

६९. अथवा वह अपने रसूल से परिचित नहीं हुये, इस लिये वह उस का इन्कार कर रहे[२] हैं?

७०. अथवा वे कहते हैं कि वह पागलपन है? बल्कि वह तो उन के पास सत्य लाये हैं, और उन में से अधिकतर को सत्य अप्रिय हैं।

७१. और यदि अनुसरण करने लगे सत्य उन की मनमानी का, तो अस्त–व्यस्त हो जाये आकाश तथा दरती और जो उन के बीच है, बल्कि हम ने दे दी है उन को उन की शिक्षा, फिर (भी) वे अपनी शिक्षा से विमुख हो रहे हैं।

७२. (हे नबी!) क्या आप उन से कुछ (धन) माँग रहे हैं? आप के लिये तो आप के पालनहार का दिया हुआ ही उत्तम है। और वह सर्वोत्तम जीविका देने वाला है।

७३. निश्चय आप तो उन्हें सुपथ की ओर बुला रहे हैं।

७४. और जो आख़िरत (परलोक) पर ईमान नहीं रखते वे सुपथ से कतराने वाले हैं।

७५. और यदि हम उन पर दया कर दें और दूर कर दें जो दुःख उन के साथ है।[३] तो वह अपने कुकर्मों में और अधिक बहकते जायेंगे।

७६. और हम ने उन्हें यातना में ग्रस्त (भी) किया, तो अपने पालनहार के समक्ष नहीं झुके और न विनय करते हैं।

७७. यहाँ तक कि जब हम उन पर खोल देंगे कड़ी यातना के[४] द्वार, तो सहसा वह उस समय निराश हो जायेंगे।[५]

७८. वही है जिस ने बनाये हैं तुम्हारे लिये कान तथा आँखें और दिल[६], (फिर भी) तुम बहुत कम कृतज्ञ होते हो।

७९. और उसी ने तुम्हें धरती में फैलाया है, और उसी की ओर एकत्र किया जाओगे।

---

[१] अर्थात् कुरआन तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आ गये। इस पर तो इन्हें अल्लाह का कृतज्ञ होना और इसे स्वीकार करना चाहिये।

[२] इस में चेतावनी है कि वह अपने रसूल की सत्यता,अमानत तथा उनके चरित्र और वंश से भली भाँति अवगत हैं।

[३] **इससे अभिप्राय वो आकाल है जो मक्का वालों पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अवज्ञा के कारण आ पड़ा था।** (देखिये बुख़ारी:४८२३)

[४] कड़ी यातना से अभिप्राय परलोक की यातना है।

[५] अर्थात् प्रत्येक भलाई से।

[६] सत्य को सुनने–देखने और उस पर विचार कर के उसे स्वीकार करने के लिये।

८०. तथा वही है जो जीवन देता और मारता है, और उसी के अधिकार में है रात्रि तथा दिन का फेर बदल, तो क्या तुम समझ नहीं रखते?
८१. बल्कि उन्हों ने वही बात कही जो अगलों ने कही।
८२. उन्हों ने कहा: क्या जब हम मर जायेंगे और मिट्टी तथा हड्डियाँ हो जायेंगे, तो क्या हम फिर अवश्य जीवित किये जायेंगे?
८३. हम को तता हमारे पूर्वजों को इस से पहले यही वचन दिया जा चुका है, यह तो बस अगलों की कल्पित कथायें हैं।
८४. (हे नबी!) उन सेकहो: किस की है धरती और जो उस में है, यदि तुम जानते हो?
८५. वे कहेंगे कि अल्लाह की। आप कहिये: फिर तुम क्यों शिक्षा ग्रहण नहीं करते?
८६. आप पूछिये कि कौन है सातों आकाशों का स्वामी तथा महा सिंहासन का स्वामी?
८७. वे कहेंगे: अल्लाह है। आप कहिये: फिर तुम उस से डरते क्यों नहीं हो?
८८. आप उन से कहिये कि किस के हाथ में है प्रत्येक वस्तु का अधिकार? और वह शरण देता है और उसे कोई शरण नहीं दे सकता, यदि तुम ज्ञान रखते हो?
८९. वे अवश्य कहेंगे कि (यह सब गुण) अल्लाह ही के हैं। आप कहिये: फिर तुम पर कहाँ से जादू[१] हो जाता है?
९०. बल्कि हम ने उन्हें सत्य पहुँचा दिया है, और निश्चय यही मिथ्यावादी हैं।
९१. अल्लाह ने नहीं बनायी है अपनी कोई संतान, और न उस के साथ कोई अन्य पूज्य है। यदि ऐसा होता तो प्रत्येक पूज्य अलग हो जाता अपनी उत्पत्ति को ले कर. और एक–दूसरे पर चढ़ दौड़ता। पवित्र है अल्लाह उन बातों से जो यह लोग बनाते हैं।
९२. वह परोक्ष (छुपे) तथा प्रत्यक्ष (खुले) का ज्ञानी है, तथा उच्च है उस शिर्क से जो वे करते हैं।
९३. (हे नबी!) आप प्रार्थना करें कि हे मेरे पालनहार! यदि तू मुझे वह दिखाये जिस की उन्हें धमकी दी जा रही है।
९४. तो मेरे पालनहार! मुझे इन अत्याचारियों में सम्मिलित न करना।

---

[१] अर्थात् जब यह मानते हो कि सब अधिकार अल्लाह के हाथ में है और शरण भी वही देता है तो पिर उस के साझी कहाँ से आ गये। और उन्हें कहाँ से अधिकार मिल गया?

९५. तथा वास्तव में हम आप को उसे दिखाने पर जिस की उन्हें धमकी दे रहे हैं अवश्य सामर्थ्यवान हैं।

९६. (हे नबी!) आप दूर करें उस (व्यवहार) से जो उत्तम हो बुराई को। हम भली भाँति अवगत हैं उन बातों से जो वे बनाते हैं।

९७. तथा आप प्रार्थना करें कि हे मेरे पालनहार! मैं तेरी शरण माँगता हूँ, शैतानों की शंकाओं से।

९८. तथा मैं तेरी शरण माँगता हूँ, मेरे पालनहार! कि वह मेरे पास आयें।

९९. यहाँ तक कि जब उन में किसी की मौत आने लगे तो कहता है: मेरे पालनहार! मुझे (संसार में) वापिस कर दे।[1]

१००. संभवत: मैं अच्छा कर्म करूँगा, उस (संसार में) जिसे छोड़ आया हूँ। कदापि ऐसा नहीं होगा। वह केवल एक कथन है जिसे वह कह रहा[2] है। और उन के पीछे एक आड़[3] है उन के पुन: जीवित किये जाने के दिन तक।

१०१. तो जब नरसिंघा मेंफूँक दिया जायेगा, तो कोई संबंध नहीं होगा उन के बीच उस[4] दिन और न वे एक दूसरे को पूछेंगे।

१०२. फिर जिस के पलड़े भारी होंगे, वही सफल होने वाले हैं।

१०३. और जिस के पलड़े हल्के होंगे, तो उन्हों ने ही स्वयं को क्षतिग्रस्त कर लिया, जो नरक में सदावासी होंगे।

१०४. झुलस देगी उन के चेहरों को अग्नि तथा उस में उन के जबड़े (झुलस कर) बाहर निकले होंगे।

१०५. (उन से कहा जायेगा) : क्या जब मेरी आयतें तुम्हें सुनायी जाती थीं तो तुम उन को झुठलाते नहीं थे?

१०६. वे कहेंगे: हमारे पालनहार! हमारा दुर्भाग्य हम पर छा गया[5], और वास्तव में हम कुपथ थे।

---

[1] यहाँ मरण के समय काफ़िर की दशा को बताया जा रहा है। (इब्ने कसीर)

[2] अर्थात उस के कथन का कोई प्रभाव नहीं होगा।

[3] आड़ जिसके लिये बर्ज़ख शब्द आया है मृत्यु तथा प्रलय के बीच की अवधि को कहते हैं।

[4] अर्थात् प्रलय के दिन उस दिन भय के कारण सब को अपनी चिन्ता होगी।

[5] अर्थात् अपने दुर्भाग्य के कारण हम ने तेरी आयतों को अस्वीकार कर दिया।

१०७. हमारे पालनहार! हमें इस से निकाल दे, यदि अब हम ऐसा करे तो निश्चय हम अत्याचारी होंगे।

१०८. वह (अल्लाह) कहेगा: इसी में अपमानित हो कर पड़े रहो, और मुझ से बात न करो।

१०९. मेरे भक्तों में एक समुदाय था जो कहता था कि हमारे पालनहार! हम ईमान लाये। तू हमें क्षमा कर दे और हम पर दया कर, और तू सब दयावानों से उत्तम है।

११०. तो तुम ने उन का उपहास किया, यहाँ तक कि तुम को मेरी याद भुला दी, और तुम उन पर हँसते रहे।

१११. मैं ने उन को आज बदला (प्रतिफल) दे दिया है उन के धैर्य का, वास्तव में वही सफल हैं।

११२. (अल्लाह) उन से कहेगा: तुम धरती में कितने वर्ष रहे?

११३. वे कहेंगे: हम एक दिन या दिन के कुछ भाग रहे। तो गणना करने वालों से पूछ लें।

११४. वह कहेगा: तुम नहीं रहे परन्तु बहुत कम। क्या ही अच्छा होता कि तुम ने (पहले ही) जान लिया[१] होता।

११५. क्या तुम ने समझ रखा है कि हम ने तुम्हें व्यर्थ पैदा किया है और तुम हमारी ओर फिर नहीं लाये[२] जाओगे?

११६. तो सर्वोच्च है अल्लाह वास्तविक अधिपति। नहीं है कोई सच्चा पूज्य परन्तु वही महिमावान अर्श (सिंहासन) का स्वामी।

११७. और जो (भी) पुकारेगा अल्लाह के साथ किसी अन्य पूज्य को जिस के लिये उस के पास कोई प्रमाण नहीं, तो उस का हिसाब केवल उस के पालनहार के पास है, वास्तव में काफ़िर सफल नहीं[३] होंगे।

---

[१] आयत का भावार्थ है कि यदि तुम यह जानते कि परलोम का जीवन स्थायी है तथा संसार का आस्थायी तो आज तुम भी ईमान वालों के समान अल्लाह की आज्ञा का पालन कर के सफल हो जाते, और अवज्ञा तथा दूराचार न करते।

[२] अर्थात् परलोक में।

[३] अर्थात् परलोक में उन्हें सफलता प्राप्त नहीं होगी, और न मुक्ति ही मिलेगी।

११८. तथा आप प्रार्थना करें कि मेरे पालनहार! तू क्षमा कर तथा दया कर, और तू ही सब दयावानों से उत्तम (दयावान्) है।

*****

सूरह नूर – २४

सूरह नूर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में ६४ आयतें है।

– इस सूरह में व्यभिचार और उस का कलंक लगाने का दण्ड बताया गया है।
– मुनाफ़िक़ों को झूठे कलंक घड़ कर समाज में फैलाने पर चेतावनी दी गयी है।
– मान मर्यादा की रक्षा पर बल दिया गया है।
– अल्लाह की राह मे चलने और उस के इन्कार पर लाभ और हानि का वर्णन किया गया है।
– ईमान वालों को अधिकार प्रदान करने की शुभ सूचना दी गयी है।
– घरेलू आदाब बताये गये हैं।
– और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आदर करने पर बल दिया गया है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. यह एक सूरह है जिसे हम ने उतारा तथा अनिवार्य किया है। और उतारी हैं इस में बहुत सी खुली आयतें (निशानियाँ), ताकि तुम शिक्षा ग्रहण करो।

२. व्यभिचारिणी तथा[1] व्यभिचारी दोनों में से प्रत्येक को सौ कोड़े मारो, और तुम्हें उन दोनों पर कोई तरस न आये अल्लाह के धर्म के विषय[2] में, यदि तुम अल्लाह तथा अन्तिम दिन पर ईमान (विश्वास) रखते हो। और चाहिये कि उन के दण्ड के समय उपस्थित रहे र्समान वालों का एक[3] गिरोह।

३. व्यभिचारी[4] नहीं विवाह करता परन्तु व्यभिचारिणी अथवा मिश्रणवादिनी से, और व्यभिचारिणी नहीं विवाह करती परन्तु व्यभिचारी अथवा मिश्रणवादी से और इसे हराम (अवैध) कर दिया गया है ईमान वालों पर।

४. तथा जो आरोप[1] लगायें व्यभिचार का सतवंती स्त्रियों को, फिर न लायें चार साक्षी तो उन्हें अस्सी कोड़े मारो, और न स्वीकार करो उन का साक्ष्य कभी भी, और वह स्वयं अवैज्ञाकारी हैं।

---

[1] व्यभिचार से संबंधित आरंभिक आदेश सूरह निसा, आयत १५ में आ चुका है। अब यहाँ निश्चित रूप से उस का दण्ड नियत कर दिया गया है। आयत में वर्णित सौ कोड़े दण्ड अविवाहित व्यभिचारी तता व्यभिचारिणी के लिये हैं। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अविवाहित व्यभिचारी को सौ कोड़े मारने का और एक वर्ष देश से निकाल देने का आदेश देते थे। (सहीह बुख़ारी ६८३१) किन्तु यदि दोनों में से कोई विवाहित है तो उस के लिये रज्म (पत्थरों से मार डालने) का दण्ड है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: मुझ से (शिक्षा) ले लो, मुझ से (शिक्षा) ले लो। अल्लाह ने उन के लिये राह बना दी। अविवाहित के लिये सौ कोड़े और विवाहित के लिये रज्म है। (सहीह मुस्लिम, अबूदाऊद) इत्यादि।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपने युग में रज्म का दण्ड दिया जिस के सहीह हदीसों में कई उदाहरण है। और खुलफ़ाये राशिदीन के युग में भी यही दण्ड दिया गया। और इस पर मुसिलम समुदाय का इज्मा (मतैक्य) है। व्यभिचार ऐसा घोर पाप है जिस से परिवारिक व्यवस्था अस्त–व्यस्त हो जाती है। पति–पत्नी को एक दूसरे पर विश्वास नहीं रह जाता। और यदि कोई शिशु जन्म ले तो उस के पालन पोषण की भीषण समस्या सामने आती है। इसी लिये इस्लाम ने इस का घोर दण्ड रखा है ताकि समाज और समाज वालों को शान्त और सुरक्षित रखा जाये।

[2] अर्थात् दया भाव के कारण दण्ड देने से न रुक जाओ।

[3] ताकि लोग दण्ड से शिक्षा लें।

[4] आयत का अर्थ यह है कि साधारणत: कुकर्मी विवाह के लिये अपने ही जैसों की ओर आकर्षित होते हैं। अत: व्यभिचारिणी व्यभिचारी से ही विवाह करने में रुच रखती हैं। इस में ईमान वालों को सतर्क; किया गया है कि जिस प्रकार व्यभिचार महा पाप है उसी प्रकार व्यभिचारियों के साध विवाह संबन्ध स्थापित करना भी निषेध है। कुछ भाष्यकारों ने यहाँ विवाह का अर्थ व्यभिचार लिया है।

५. परन्तु जिन्होंने क्षमा माँग ली इस के पश्चात्, तथा अपना सुधार कर लिया, तो नि:संदेह अल्लाह अति क्षमी दयावान्[२] है।

६. और जो व्यभिचार का आरोप लगाये अपनी पत्नियों पर, और उन के साक्षी न हों[३] परन्तु वह स्वयं, तो चार साक्ष्य अल्लाह की शपथ लेकर देना है कि वास्तव में वह सच्चा है।[४]

७. और पाँचवी बार यह कि उस पर अल्लाह की धिक्कार है यदि वह झूठा हो।

८. और स्त्री से दण्ड[५] इस प्रकार दूर होगा कि वह चार बार साक्ष्य दे अल्लाह की शपथ ले कर कि नि:संदेह वह (पति) मिथ्यावादियों में से है।

९. और पाँचवी बार यह कि उस पर अल्लाह की धिक्कार हो यदि वह सच्चा[६] हो।

१०. और यदि तुम पर अल्लाह का अनुग्रह और दया न होती, और यह कि अल्लाह अति क्षमी तत्वज्ञ है (तो समस्या बढ़ जाती)।

११. वास्तव[७] में जो कलंक घड़ लाये हैं तुम्हारे ही भीतर का एक गिरोह है, तुम उसे बुरा न समझो, बल्कि वह तुम्हारे लिये अच्छा[१] है। उन में से प्रत्येक के लिये

---

[१] इस में किसी पवित्र पुरुष या स्त्री पर व्यभिचार का कलंक लगाने का दण्ड बताया गया है। कि जो पुरुष अथवा स्त्री किसी पर कलंक लगाये, तो वह चार ऐसे साक्षी लाये जिन्होंने उन को व्यभिचार करते अपनी आँखों से देखा हो। और यदि वह प्रमाण स्वरूप चार साक्षी न लायें तो उस के तीन आदेश है :

क) उसे अस्सी कोड़े लगाये जायें।

ख) उस का साक्ष्य कभी स्वीकार न किया जाये।

ग) वह अल्लाह तथा लोगों के समक्ष दूराचारी है।)

[२] सभी विद्वानों का मतैक्य है कि क्षमा याचना से उसे दण्ड (अस्सी कोड़े) से क्षमा नहीं मिलेगी। बल्कि क्षमा के पश्चात् वह भी अवैज्ञाकारी नहीं रह जायेगा, तथा उस का साक्ष्य स्वीकार किया जायेगा। अधिकतर विद्वानों का यही विचार है।

[३] अर्थात् चार साक्षी।

[४] अर्थात आरोप लगाने में।

[५] अर्थात व्यभिचार का दण्ड।

[६] शरीअत की परिभाषा में इसे ''लिआन'' कहा जाता है। यह लिआन न्यायालय में अथवा न्यायालय के अधिकारी के समक्ष होना चाहिये। लिआन की माँग पुरुष की ओर से भी हो सकती है और स्त्री की ओर से भी। लिआन के पश्चात् दोनों सदा के लिये अलग हो जायेंगे। लआन का अर्थ होता है: धिक्कार। और इस में पति और पत्नी दोनों अपने को मिथ्यावादी होने की अवस्था में धिक्कार का पात्र स्वीकार करते है। यदि पति अपनी पत्नी के गर्भ का इन्कार करे तब भी लिआन होता है। (बुख़ारी : ४७४६, ४७४७, ४७४८)

[७] यहाँ से आयत २६ तक उस मिथ्यारोपण का वर्णन किया गया है जो मुनाफ़िकों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पत्नी आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) पर बनी मुस्तलिक़ के युद्ध से वापसी के समय लगाया था। इस युद्ध से वापसी के

जितना भाग लिया उतना पाप है और जिसने भार लिया उस के बड़े भाग[2] का तो उस के लिये बड़ी यातना है।

१२. क्यों जब उसे ईमान वाले पुरुषों तथा स्त्रियों ने सुना तो अपने आप में अच्छा विचार नहीं किया तथा कहा कि यह खुला आरोप है?

१३. वे क्यों नहीं लाये इस पर चार साक्षी? (जब साक्षी नहीं लाये) तो नि:संदेह अल्लाह के समीप वही झूठ हैं।

१४. और यदि तुम पर अल्लाह का अनुग्रह और दया न होती लोक तथा परलोक में, तो जिन बातों में तुम पड़ गये उन के बदले तुम पर कड़ी यातना आ जाती।

१५. जब कि (बिना सोचे) तुम अपनी जुबानों से इसे लेने लगे, और अपने मुखों से वह बात कहेने लगे जिस का तुम्हें कोई ज्ञान न था, तथा तुम इसे सरल समझ रहे ते, जब कि अल्लाह के समीप वह बहुत बड़ी बात थी।

१६. और क्यों नहीं जब तुम ने इसे सुना, तो कह दिया कि हमारे लिये योग्य नहीं कि यह बात बोलें? हे अल्लाह! तू पवित्र है। यह तो बहुत बड़ा आरोप है।

१७. अल्लाह तुम्हें शिक्षा देते है कि पुन: कभी इस जैसी बात न कहना। यदि तुम ईमान वाले हो।

१८. और अल्लाह उजजागर कर रहा है तुम्हारे लिये आयतों (आदेशों) को। तथा अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ है।

समय नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक स्थान पर पड़ाव किया। अभी कुछ रात रह गयी थी कि यात्रा की तय्यारी होने लगी। उस समय आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) उस स्थान से दूर शौच के लिये गईं, और उन का हार टूट कर गिर गया। वह उस की खोज में रह गयीं। सेवकों ने उन की पालकी को सवारी पर यह समझ कर लाद दिया कि वह उस में होंगी। वह आईं तो वहीं लेट गयीं कि कोई अवश्य खोजने आयेगा। थोड़ी देर में सफ़वान पुत्र मोअत्तल (रज़ियल्लाहु अन्हु) जो यात्रियों के पीछे उन की गिरी–पड़ी चीज़ों को संभालने का काम करते थे वहाँ आ गये। और इन्ना लिल्लाह पढ़ी, जिस से आप जाग गयीं। और उन को पहचान लिया। क्योंकि उन्होंने पर्दे का आदेश आने से पहले उन्हें देखा था। उन्होंने आप को अपने ऊँट पर सवार किया और स्वयं पैदल चल कर यात्रियों से जा मिले। द्विधावादियों ने इस अवसर को उचित जाना,और उन के मुखिया अब्दुल्लाह बिन उबय्य ने कहा कि यह एकांत अकारण नहीं था। और आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) को सफ़वान के साथ कलंकित कर दिया। और उस के षड्यंत्र में कुछ सच्चे मुसलमान भी आ गये। इस का पूरा विवरण हदीस में मिलेगा। (देखिये: सहीह बुख़ारी ४७५०)

[1] अर्थ यह है कि इस दु:ख पर तुम्हें प्रतिफल मिलेगा।

[2] इस से तात्पर्य अब्दुल्लाह बि उबय्य द्विधावादियों का मुखिया हैं

१९. जो लोग चाहते हैं कि उन में अशलीलता[1] फैले जो ईमान लाये हैं, तो उन के लिये दु:खदायी यातना है लोक तथा परलोक में, तथा अल्लाह जानता[2] है और तुम नहीं जानते।

२०. और यदि तुम पर अल्लाह का अनुग्रह तथा उस की दया न होती (तो तुम पर यातना आ जाती)। और वास्तव में अल्लाह अति करुणामय दयावान् है।

२१. हे ईमान वालो! शैतान के पद्चिन्हों पर न चलो, और जो उस के पद्चिन्हों पर चलेगा, तो वह अशलील कार्य तथा बुराई का ही आदेश देगा और यदि तुम पर अल्लाह का अनुग्रह और उस की दया न होती, तो तुम में से कोई पवित्र कभी नहीं होता। परन्तु अल्लाह पवित्र करता है जिसे चाहे, और अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

२२. और न शपथ लें[3] तुम में से धनी और सुखी कि नहीं होंगे समीपवर्तियों तथा निर्धनों को और जो हिज्रत कर गये अल्लाह की राह में, और चाहिये कि क्षमा कर दें तथा जाने दें, क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें क्षमा कर दे, और अल्लाह अति क्षमी सहनशील हैं।

२३. जो लोग आरोप लगाते हैं सतवन्ती भोली–भाली ईमना वाली स्त्रियों को, वह धिक्कार दिये गये लोक तथा परलोक में और उन्हीं के लिये बड़ी यातना है।

२४. जिस दिन साक्ष्य (गवाही) देंगी उन की जीभें तथा उन के हाथ और उन के पैर उन के कर्मो की।

२५. उस दिन अल्लाह उन कों उन का पूरा न्यायपूर्वक बदला देगा, तथा वह जान लेंगे कि अल्लाह ही सत्य है, (सच्च को) उजागर करने वाला।

---

[1] अशलीलता, व्याभिचार और व्याभिचार के निर्मूल आरोप की चर्चा दोनों को कहा गया है।

[2] उन के मिथ्यारोपण को।

[3] आदरणीय मिस्तह पुत्र उसासा (रज़ियल्लाहु अन्हु) निर्धन, और आदरणीय अबूबक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) के समीपवर्ती थे। और वह उन की सहायता किया करते थे। वह भी आदरणीय आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) के विरुद्ध आक्षेप में लिप्त हो गये थे । अत: आदरणीय आइशा के निर्दोष होने के बारे में आयते उतरने के पश्चात् आदरणीय अबूबक्र ने शपथ ली कि अब वह मिस्तह की कोई सहायता नहीं करेंगे। उसी पर यह आयत उतरी। और उन्हों ने कहा: निश्चय मैं चाहता हूँ कि अल्लाह मुझे क्षमा कर दे। और पुन: उन की सहायता करने लगे।(बुख़ारी)

२६. अपवित्र स्त्रीयाँ अपवित्र पुरुषों के लिये हैं, तथा अपवित्र पुरुष अपवित्र स्त्रियों के लिये, और पवित्र स्त्रियाँ पवित्र पुरुषों के लिये है तथा पवित्र पुरुष पवित्र स्त्रियों के[१] लिये। वही निर्दोष हैं उन बातों से जो वह कहते हैं। उन्हीं के लिये क्षमा तथा सम्मानित जीविका है।

२७. हे ईमान वालो![२] मत प्रवेश करो किसी घर में अपने घरों के सिवा यहाँ तक कि अनुमति ले लो, और उन के वासियों को सलाम कर[३] लो, यह तुम्हारे लिये उत्तम है, ताकि तुम याद रखो।

२८. और यदि उन में किसी को न पाओ तो उन में प्रवेश न करो, यहाँ तक कि तुम्हें अनुमति दे दी जाये, और यदि तुम से कहा जाये कि वापिस हो जाओ तो वापिस हो जाओ, यह तुम्हारे लिये अधिक पवित्र है, तथा अल्लाह जो कुछ तुम करते हो भली–भाँति जानने वाला है।

२९. तुम पर कोई दोष नहीं है कि प्रवेश करो निर्जन घरों में जिन में तुम्हारा सामान हो, और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम बोलते हो और जो मन में रखते हो।

३०. (हे नबी!) आप ईमान वालों से कहें कि अपनी आँखें नीची रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें। यह उन के लिये अधिक पवित्र है, वास्तव में अल्लाह सूचित है उस से जो कुछ वह कर रहे है।

३१. और ईमान वालियों से कहें कि अपनी आँखें नीची रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें। और अपनी शोभाा[४] का प्रदर्शन न करें सिवाय उस के जो प्रकट हो जाये। तथा अपनी ओढ़नियाँ अपने वक्षस्थलों (सीनों) पर डाली रहें। और अपनी शोभा का प्रदर्शन न करें, परन्तु अपने पतियों के लिये अथवा अपने पिताओं अथवा अपने ससुरों के लिये अथवा अपना पुत्रों[५] अथवा अपने पति के पुत्रों के लिये तवा

---

[१] इस में यह संकेत है कि जिन पुरुषों तथा स्त्रियों ने आदरणीय आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) पर आरोप लगाया वह मन के मलीन तथा अपवित्र है।

[२] सूरह के आरंभ में यह आदेश दिये गये थे कि समाज में कोई बुराई हो जाये तो उस का निवारण कैसे किया जाये? अब वह आदेश दिये जा रहे हैं जिन से समाज में बुराईयों को जन्म लेने ही से रोक दिया जाये।

[३] हदीस में इस का नियम यह बताया गया है कि (द्वार पर दायें या बायें खड़े हो कर) सलाम करो। फिर कहो कि क्या भीतर आ जाऊँ? ऐसे तीन बार करो, और अनुमति न मिलने पर वापिस हो जाओ। (बुख़ारी,मुस्लिम)

[४] शोभा से तात्पर्य वस्त्र तथा आभूषण हैं।

[५] पुत्रों में पौत्र तथा नाती परनाती सब सम्मिलित हैं, इस में सगे सौतीले का कोई अन्तर नहीं।

अपने भाईयों[1] अथवा भतीजों अथवा अपने भाँजों के[2] लिये अथवा अपनी स्त्रियों[3] अथवा अपने दास–दासियों अथवा ऐसे आधीन[4] पुरुषों के लिये जो किसी और प्रकार का प्रयोजन न रखते हों, अथवा उन बच्चों के लिये जो स्त्रियों की गुप्त बातें न जानते हों और अपने पैर (धरती पर) मारती हुयी न चलें कि उस का ज्ञान हो जाये जो शोभा उन्हों ने छुपा रखी है। और तुम सब मिल कर अल्लाह से क्षमा माँगो, हे ईमान वालो! ताकि तुम सफल हो जाओ।

३२. तथा तुम विवाह कर दो[5] अपनों में से अविवाहित पुरुषों तथा स्त्रियों का, और अपने सदाचारी दासों और अपनी दासियों का, यदि वह निर्धन होंगे तो अल्लाह उन्हें धनी बना देगा अपने अनुग्रह से, और अल्लाह उदार सर्वज्ञ है।

३३. और उन को पवित्र रहना चाहिये जो विवाह करने का सामर्थ्य नहीं रखते, यहाँ तक कि उन को धनी कर दे अल्लाह अपने अनुग्रह से। तथा जो स्वाधीनता लेख की माँग करें तुम्हारे दास–दासियों में से, तो तुम उन को लिख दो, यदि तुम उन में कुछ भलाई जानो[6], और उन्हें अल्लाह के उस माल में से दो जो उस ने तुम्हें प्रदान किया है, तथा बाध्य न करो अपनी दासियों को व्यभिचार पर जब वे पवित्र रहना चाहती है[7] ताकि तुम संसारिक जीवन का लाभ प्राप्त करो। और जो उन्हें

[1] भाइयों में सगे और सौतीले तथा माँ जाये सब भाई आते हैं।

[2] भतीजों और भांजों में उन के पुत्र तथा पौत्र और नाती सभी आते हैं

[3] अपनी स्त्रियों से अभिप्रेत मुस्लिम स्त्रियाँ है।

[4] अर्थात् जो आधीन होने के कारण घर की महिलाओं के साथ कोई अनुचित इच्छा का साहस न कर सकेंगे। कुछ ने इस का अर्थ नपुंसक लिया है।(इब्ने कसीर) इस में घर के भीतर उन पर शोभा के प्रदर्शन से रोका गया है जिन से विवाह हो सकता है।

[5] विवाह के विषय में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन है: ''जो मेरी सुन्नत से विमुख होगा'' वह मुझ से नहीं है। (बुख़ारी ५०६३ तथा मुस्लिम, १०२०)

[6] इस्लाम ने दास–दासियों की स्वाधीनता के जो साधन बनाये हैं उन में यह भी है कि वह कुछ धनराशि देकर स्वाधीनता लेख की माँग करें, तो यदि उन में इस धनराशि को चुकाने की योग्यता हो तो आयत में बल दिया गया है कि उन को स्वाधीनता–लेख दे दो।

[7] अज्ञानकाल में स्वामी, धन अर्जित करने के लिये अपनी दासियों को व्यभिचार के लिये बाध्य करते थे। इस्लाम ने इस व्यवसाय को वर्जित कर दिया। हदीस में आया है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुत्ते के मूल्य तथा वैश्या और ज्योतिषी की कमाई से रोक दिया। (बुख़ारी २२३७, मुस्लिम १५६७)

बाध्य करेगा, तो अल्लाह उन के बाध्य किये जाने के पश्चात्[1] अति क्षमी दयावान् है।

३४. तथा हम ने तुम्हारी ओर कुली आयतें उतारी हैं और उन का उदाहरण जो तुम से पहले गुज़र गये तथा आज्ञाकारियों के लिये शिक्षा।

३५. अल्लाह आकाशों तथा धरती का[2] प्रकाश है, उस के प्रकाश की उपमा ऐसी है जैसे एक ताखा हो जिस में दीप हो, दीप काँच के झाड़ में हो, झाड़ मोती जैसे चमकते तारे के समान हो, वह ऐसे शुभ ज़ैतून के वृक्ष के तेल से जलाया जाता हो जो न पूर्वी हो और न पश्चिमी, उस का तेल समीप (संभव) है कि स्वयं प्रकाश देने लगे, यद्यपि उसे आग न लगे। प्रकाश पर प्रकाश है, अल्लाह अपने प्रकाश का मार्ग दिखा देता है जिसे चाहे। और अल्लाह लोगों को उदाहरण दे रहा है और अल्लाह प्रत्येक वस्तु से भली–भाँति अवगत है।

३६. (यह प्रकाश) उन घरों[3] में है अल्लाह ने जिन्हें ऊँचा करने और उन में अपने नाम की चर्चा करने का ओदश दिया है, उस की महिमा का गान करते हैं जिन में प्रात: तथा संध्या।

३७. एषसे लोग जिन्हें अचेत नहीं करता व्यापार तथा सौदा अल्लाह के स्मरण तथा नमाज़ की स्थापना करने और ज़कात देने से। वह उस दिन[4] से डरते है जिस में में दिल तथा आँखें उलट जायेंगी।

३८. ताकि अल्लाह उन्हें बदला दे उन के सर्वोत्तम कर्मो का और उन्हें अधिक प्रदान करें अपने अनुग्रह से। और अल्लाह जिसे चाहे अनगिनत जीविका देता है।

३९. तथा जो काफ़िर[1] हो गये उन के कर्म उस चमकते सुराब[2] के समान हैं जो किसी किसी मैदान में हो, जिसे प्यासा पानी समझता हो। परन्तु जब उस के पास आये

---

[1] अर्थात् दासी से बल पूर्वक व्यभिचार कराने का पाप स्वामी पर होगा, दासी पर नहीं।

[2] अर्थात् आकाशों तथा धरती की व्यवस्था करता और उन के वासियों को संमार्ग दर्शाता है। और अल्लाह की पुस्तक और उस का मार्गदर्शन उस का प्रकाश है। यदि उस का प्रकाश न होता तो यह विश्व अन्धेरा होता। फिर कहा कि उस की ज्योति ईमान वालों के दिलों में ऐसेहै जैसे किसी ताखा में अति प्रकाशमान दीप रखा हो, जो आगामी वर्णित गुणों से युक्त हो। पूर्वी तथा पश्चिमी न होने का अर्थ यह है कि उस पर पूरे दिन धूप पड़ती हो जिस के कारण उस का तेल अति शुद्ध तथा साफ हो।

[3] इस से तात्पर्य मस्जिदें हैं।

[4] अर्थात् प्रलय के दिन।

तो कुछ न पाये, और वहाँ अल्लाह को पाये जो उसका पूरा हिसाब चुका दे, अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

४०. अथवा उन अन्धकारों के समान है जो किसी गहरे सागर में हो और जिस पर तरंग, उस के ऊपर बादल हो, अन्धकार पर अन्धकार हो, जब अपना हाथ निकाले तो उसे भी न देख सके। और अल्लाह जिसे प्रकाश न दे उस के लिये कोई प्रकाश[3] नहीं।

४१. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह ही की पवित्रता का गान कर रहे हैं जो आकाशों तथा धरती में है तथा पँख फैलाये हुये पक्षी? प्रत्येक ने अपनी बंदगी तथा पवित्रता गान को जान लिया[4] है, और अल्लाह भली–भाँति जानने वाला है जो वे कर रहे हैं।

४२. अल्लाह ही के लियहे है आकाशों तथा धरती का राज्य। और अल्लाह ही की ओर फिर कर[5] जाना है।

४३. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह बादलों को चलाता है फिर उसे परस्पर मिला देता है, फिर उसे घंघोर मेघ बना देता है, फिर आप देखते हैं बूंद को उस के मध्य से निकलती हुयी, और वही पर्वतों जैसे बादल से ओले बरसाता है, फिर जिस पर चाहे आपदा उतारता है और जिस से चाहे फेर देता है। उस की बिजली की चमक संभव होता है कि आँखों को उचक ले।

४४. अल्लाह ही रात और दिन को बदलता[6] है। बेशक इस में बड़ी शिक्षा है समझ–बूझ वालों के लिये।

---

[1] आयत का अर्थ यह है कि काफ़िरों के कर्म, अल्लाह पर ईमान न होने के कारण अल्लाह के समक्ष व्यर्थ हो जायेंगे।

[2] कड़ी गर्मी के समय रेगिस्तान में जो चमकती हुई रेत पानी जैसी लगती है उसे सुराब कहते हैं।

[3] अर्तात् काफ़िर, अविश्वास और कुकर्मों के अन्धकार में घिरा रहता है। और यह अन्धकार उसे मार्ग दर्शन की ओर नहीं आने देते।

[4] अर्थात् तुम भी उस की पवित्रता का गान गाओ। और उस की आज्ञा का पालन करो।

[5] अर्तात प्रलय के दिन अपने कर्मो का पल भोगने के लिये।

[6] अर्थात् रात के पश्चात् दिन और दिन के पश्चात रात होती है। इसी प्रकार कभी दिन बड़ा रात छोटी, और कभी राज बड़ी दिन छोटा होता है

४५. अल्लाह ही ने प्रत्येक जीव धारी को पानी से पैदा किया है। तो उन में से कुछ अपने पेट के बल चलते हैं। और कुछ दो पैर पर, तथा कुछ चार पैर पर चलते हैं। अल्लाह जो चाहे पैदा करता है, वास्तव में वह जो चाहे कर सकता है।

४६. हम ने खुली आयतें (कुरआन) अवतरित कर दी है। और अल्लाह जिसे चाहता है सुपथ दिखा देता है।

४७. और[1] वे कहते हैं कि हम अल्लाह तथा रसूल पर ईमान लाये, और हम आज्ञाकाररी हो गये, फिर मुँह फेर लेता है उन में से एक गिरोह इस के पश्चात्। वास्तव में वे ईमान वाले हैं ही नहीं।

४८. और जब बुलाये जाते है अल्लाह तथा उस के रसूल की ओर, ताकि (रसूल) निर्णय कर दें उन के बीच (विवाद का), तो अकस्मात उन में से एक गिरोह मुँह फेर लेता हैं।

४९. और यदि उन्हीं को अधिकार पहुँचता हो, तो आप के पास सिर झुकाये चले आते हैं।

५०. क्या उन के दिलों में रोग है अथवा द्विधा में पड़े हुये हैं, अथवा डर रहे है कि अल्लाह अत्याचार कर देगा उन पर और उस के रसूल? बल्कि वही अत्याचारी हैं।

५१. ईमान वालों का कथन तो यह है कि जब अल्लाह और उस के रसूल की ओर बुलाये जायें ताकि आप उन के बीच निर्णय कर दें, तो कहें कि हम ने सुन लिया तथा मान लिया, और वही सफल होने वाले हैं।

५२. तथा जो अल्लाह और उस के रसूल की आज्ञा का पालन करें और अल्लाह का भय रखें, और उस की (यातना से) डरें, तो वही सफल होने वाले हैं।

५३. और इन (द्विधावादियों) ने बल पूर्वक शपथ ली कि यदि आप उन्हें आदेश दें तो अवश्य वह (घरों से) निकल पड़ेंगे। उन से कह दें: शपथ न लो। तुम्हारे आज्ञापालन की दशा जानी पहचानी है। वास्तव में अल्लाह तुम्हारे कर्मों से सूचित है।

---

[1] यहाँ से मुनाफ़िकों (द्विधावादियों) की दशा का वर्णन किया जा रहा है, तथा यह बताया जा रहा है कि ईमान के लिये अल्लाह के सभी आदेशों तथा नियमों का पालन आवश्यक है। और कुरआन तथा सुन्नत के निर्णय का पालन करना ही ईमान हैं।

५४. (हे नबी!) आप कह दें कि अल्लाह की आज्ञा का पालन करो तथा रसूल की आज्ञा का पालन करो, और यदि वह विमुख हों, तो आप का कर्तव्य केवल वही है जिस का भार आप पर रखा गया है, और तुम्हारा वह है जिस का भार तुम पर रखा गया है। और रसूल का दायित्व केवल खुला आदेश पहुँचा देना है।

५५. अल्लाह ने वचन[१] दिया है उन्हें जो तुम में से ईमान लाये तथा सुकर्म करें कि उन्हें अवश्य धरती में अधिकार प्रदान करेगा जैसे उन्हें अधिकार प्रदान किया जो इन से पहले थे, तथा अवश्य सुदृढ़ कर देगा उन के उस धर्म को जिसे उन के लिये पसंद किया है, तथा उन (की दशा) को उन के भय के पश्चात् शान्ति में बदल देगा, वह मेरी इबादत (वंदना) करते रहें और किसी चीज़ को मेरा साझी न बनायें। और जो कुफ़्र करें इस के पश्चात् तो वही उल्लंघनकारी है।

५६. तथा नमाज़ की स्थापना करो और ज़कात दो, तथा रसूल की आज्ञा का पालन करो, ताकि तुम पर दया की जाये।

५७. और (हे नबी!) कदापि आप न समझें कि जो काफ़िर हो गये, वे (अल्लाह को) धरती में विवश कर देने वाले हैं। और उन का स्थान नरक है और वह बुरा निवास स्थान है।

५८. हे ईमान वालो! तुम[२] से अनुमति लेना आवश्यक है तुम्हारे स्वामित्व के दान–दासियों को और जो तुम में से (अभी) युवा अवस्था को न पहुँचे हों तीन समय: फ़ज्र (भोर) की नमाज़ से हपले, और जिस समय तुम अपने वस्त्र उतारते हो दोपहर में, तथा इसा (रात्रि) की नमाज़ के पश्चात्। यह तीन (एकान्त) पर्दे के समय हैं तुम्हारे लिये। (फिर) तुम पर और उन पर कोई दोष नहीं है इन के पश्चात्, तुम अधिकतर आने–जाने वाले हो एक दूसरे के पास। अल्लाह तुम्हारे लिये आदेशों का वर्णन कर रहा है। और अल्लाह सर्वज्ञ निपुण हैं।

---

[१] इस आयत में अल्लाह ने जो वचन दिया है, वह उस समय पूरा हो गया जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के अनुयायियों को जो काफ़िरों से डर रहे थे उन की धरती पर अधिकार दे दिया। और इस्लाम पूरे अरब का धर्म बन गया और यह वचन अब भी है, जो ईमान तथा सत्कर्म के साथ प्रतिबंधित है।

[२] आयत: २७ में आदेश दिया गया है कि जब किसी दूसरे के यहाँ जाओ तो अनुमति ले कर घर में प्रवेश करो। और यहाँ पर आदेश दिया जा रहा है कि स्वयं अपने घर में एक–दूसरे के पास जाने के लिये भी अनुमति लेता तीन समय में आवश्यक है।

५९. और जब तुम में से बच्चे युवा अवस्था को पहुँचें, तो वह भी वैसे ही अनुमति लें जैसे उन से पूर्व के (बड़े) अनुमति माँगते हैं, इसी प्रकार अल्लाह उजागर करता है तुम्हारे लिये अपनी आयतों को, तथा अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ हैं।

६०. तथा जो बूढ़ी स्त्रियाँ विवाह की आशा न रखती हों, तो उन पर कोई दोष नहीं कि अपनी (पर्दे की) चादरें उतार कर रख दें, प्रतिबंध यह है कि अपनी शोभा का प्रदर्शन करने वाली न हों, और यदि सुरक्षित रहें[१] तो उन के लिये अच्छा है।

६१. अन्धे पर कोई दोष नहीं है और न लंगड़े पर कोई दोष[२] है, और न रोगी पर कोई दोष है और न स्वयं तुम पर कि खाओ अपने घरों[३] से अथवा अपने बापों के घरों से अथवा अपनी माँओं के घरों से अथवा अपनी माँओं के घरों से अथवा अपने भाईयों के घरों से अथवा अपी बहनों के घरों से अथवा अपने चचाओं के घरों से अथवा अपनी फूफियों के घरों से अथवा अपने मामाओं के घरों से अथवा अपनी मौसियों के घरों से अथवा जिस की चाबियों के तुम स्वामी[४] हो, अथवा अपने मित्रों के घरों से, तुम पर कोई दोष नहीं एक साथ खाओ या अलग अलग, फिर जब तुम प्रवेश करो घरों में[५] तो अपनों को सलाम किया करो, एक आशीर्वाद है अल्लाह की ओ से निर्धारित किया हुआ जो शुभ पवित्र है। इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये आयतों का वर्णन करता हैं ताकि तुम समझ लो।

६२. वास्तव में ईमान वाले वह हैं जो अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाये और जब आप के साथ किसी सामुहिक कार्य पर होते हैं तो जाते नहीं जब तक आप से अनुमति न लें, वास्तव में जो आप से अनुमति लेते हैं वही अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान रखते हैं, तो जब वह आप से अपनेकिसी कार्य के लिये अनुमति माँगें, तो आप उन में से जिसे चाहें अनुमति दें। और उन के लिये अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करें। वास्तव में अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

---

[१] अर्थात् पर्दे की चादर न उतारें।

[२] इस्लाम से पहले विक्लांगों के साथ खाने पीने को दोष समझा जाता था जिस का निवारण इस आयत में किया गया है।

[३] अपने घरों से अभिप्राय अपने पुत्रों के घर हैं जो अपने ही होते हैं।

[४] अर्थात् जो अपनी अनुपस्थिति में तुम्हें रक्षा के लिये अपने घरों की चाबियाँ दे जायें।

[५] अर्थात वह साधारण भोजन जो सब के लिये पकाया गया हो। इस में वह भोजन सम्मिलित नहीं जो किसी विशेष व्यक्ति के लिये तैयार किया गया हो।

६३. और तुम मत बनाओ रसूल के पुकारने को परस्पर एक–दूसरे को पुकारने जैसा[१], अल्लाह तुम में से उन को जानता है जो सरक जाते हैं एक–दूसरे की आड़ ले कर। तो उन्हें सावधान रहना चाहिये जो आप के आदेश का विरोध करते हैं कि उन पर कोई आपदा आ पड़े अथवा उन पर कोई दुःखदायी यातना आ जाये।

६४. सावधान! अल्लाह ही का है जो आकाशों तथा धरती में है, वह जानता है जिस (दशा) पर तुम हो, और जिस दिन वे उस की ओर फेरे जायेंगे तो उन्हें बता[२] देगा जो उन्हों ने किया है। और अल्लाह प्रत्येक चीज़ का अति ज्ञानी है।

*****

[१] अर्थात् : ''हे मुहम्मद!'' कहो। बल्कि आप को हे अल्लाह के नबी! हे अल्लाह के रसूल! कह कर पुकारो। इस का यह अर्थ भी किया गया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्रार्थना को अपनी प्रार्थना के समान न समझो, क्यों कि आप की प्रार्थना स्वीकार कर ली जाती है।

[२] अर्थात् प्रलय के दिन तुम्हें तुम्हारे कर्मों का फल देगा।

सूरह फ़ुर्क़ान – २५

सूरह फ़ुर्क़ान के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ७७ आयतें है।

- इस सूरह में उस का परिचय कराते हुए जिस ने फ़ुर्क़ान उतारा है शिर्क का खण्डन तथा वह्यी और रिसालत से सम्बन्धित संदेहों को चेतावनी की शैली में दूर किया गया है।
- अल्लाह के एक होने की निशानियों की ओर ध्यान आकर्षित कराया गया है।
- अल्लाह के भक्तों के गुण और मानव पर क़ुरआन की शिक्षा का प्रभाव बताया गया है।
- अन्त में उन्हें चेतावनी दी गयी है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा क़ुरआन के सावधान करने पर भी सत्य को नहीं मानते।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. शुभ है वह (अल्लाह) जिस ने फ़ुर्क़ान[1] अवतरित किया अपने भक्त[2] पर, ताकि पूरे संसार वासियों को सावधान करने वाला हो।

२. जिस के लिये आकाशों तथा धरती का राज्य है तथा उस ने अपने लिये कोई संतान नहीं बनायी। और न उस का कोई साझी है राज्य में, तथा उस ने प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति की फिर उस को एक निर्धारित रूप दिया।

३. और उन्हों ने उस के अतिरिक्त अनेक पूज्य बना लिये हैं जो किसी चीज़ की उत्पत्ति नहीं कर सकते, और वह स्वयं उत्पन्न किये जाते है, और न वह अधिकार रखते हैं अपने लिये किसी हानि का और न अधिकार रखते हैं किसी लाभ का, तथा न अधिकार रखते हैं मरण और न जीवन और न पुन:[3] जीवित करने का।

४. तथा काफ़िरों ने कहा: यह[4] तो बस एक मन घड़त बात है जिसे इस[5] ने स्वयं घड़ लिया है, और इस पर अन्य लोगों ने उस की सहायता की है। तो वास्तव में वह (काफ़िर) बड़ा अत्याचार और झूठ बना लाये हैं।

५. और कहा कि यह तो पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं जिसे उस ने स्वयं लिख लिया है, और वह पढ़ी जाती हैं उस के समक्ष प्रात: और संध्या।

६. आप कह दें कि इसे उस ने अवतरित किया है जो आकाशों तथा दरती का भेद जानता है। वास्तव में वह[6] अति क्षमाशील दयावान् है।

७. तथा उन्हों ने कहा: यह कैसा रसूल है जो भोजन करता है तथा बाज़ारों में चलता है? क्यों नहीं उतार दिया गया उस की ओर कोई फ़रिश्ता, तो वह उस के साथ सावधान करने वाला होता?

---

[1] फ़ुर्क़ान का अर्थ वह पुस्तक है जिस के द्वारा सच्च और झूठ में विवेक किया जाये और इस से अभिप्राय क़ुरआन है।

[2] भक्त से अभिप्राय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, जो पूरे मानव संसार के लिये नबी बना कर भेजे गये हैं। हदीस में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुझ से पहले नबी अपनी विशेष जाति के लिये भेजे जाते थे, और मुझे सर्व साधारण लोगों की ओर नबी बना कर भेजा गया है। (बुख़ारी ३३५, मुस्लिम)

[3] अर्थात् प्रलय के पश्चात्।

[4] अर्थात् क़ुरआन।

[5] अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने।

[6] इसी लिये क्षमा याचना का अवसर देता है।

८. अथवा उस की ओर कोई कोष उतार दिया जाता अथवा उस का कोई बाग़ होता जिस में से वह खाता? तथा अत्याचारियों ने कहा: तुम तो बस एक जादू किये हुये व्यक्ति का अनुसरण कर रहे हो।
९. देखो! आप के संबंध में यह कैसी कैसी बातें कर रहे है? अत: वह कुपथ हो गये हैं, वह सुपथ पा ही नहीं सकते।
१०. शुभकारी है वह (अल्लाह) जो यदि चाहे तो बना दे आप के लिये इस[1] से उत्तम बहुत से बाग़ जिन में नहरें प्रवाहित हों, और बना दे आप के लिये बहुत से भवन।
११. वास्तविक बात यह है कि उन्हों ने झुठला दिया है कयामत (प्रलय) को, और हम ने तय्यार किया है उस के लिये जो प्रलय को झुठलाये भड़कती हुई अग्नि।
१२. जब वह उन्हें दूर स्थान से देखेगी, तो सुन लेंगे उस के क्रोध तथा आवेग की ध्वनि को।
१३. और जब वह फेंक दिये जायेंगे उस के किसी संकीर्ण स्थान में बंधे हुये, (तो) वहाँ विनाश को पुकारेंगे।
१४. (उन से कहा जायेगा) : आज एक विनाश को मत पुकारो, बहुत से विनाश को पुकारो।[2]
१५. (हे नबी!) आप उन से कहिये कि क्या यह अच्छा है या स्थायी स्वर्ग जिस का वचन आज्ञाकारियों को दिया गया है, जो उन का प्रतिफल तथा आवास है?
१६. उन्हीं को उस में जो इच्छा वे करेंगे मिलेगा। वे सदावासी होंगे, आप के पालनहार पर (यह) वचन (पूरा करना) अनिवार्य है।
१७. तथा जिस दिन वह एकत्र करेगा उन को और जिस की वह इबादत (वंदना) करते थे अल्लाह के सिवाय, तो वह (अल्लाह) कहेगा: क्या तुम्ही ने मेरे इन भक्तों को कुपथ किया है अथवा वे स्वयं कुपथ हो गये?
१८. वे कहेंगे: तू पवित्र है! हमारे लिये यह योग्य नहीं था कि तेरे सिवा कोई संरक्षक[1] बनायें, परन्तु तू ने सुखी बना दिया उन को तथा उन के पूर्वजों को यहाँ तक कि वह शिक्षा को भूल गये, और वह थे ही विनाश के योग्य।

---

[1] अर्थात् उन के विचार से उत्तम।

[2] अर्थात् आज तुम्हारे लिये विनाश ही विनाश है।

१९. उन्हों[२] ने तो तुम्हें झुठला दिया तुम्हारी बातों में, तो तुम न यातना को फेर सकोगे और न अपनी सहायता कर सकोगे। और जो भी अत्याचार[३] करेगा तु में से हम उसे घोर यातना चखायेंगे।

२०. और नहीं भेजा हम ने आप से पूर्व किसी रसूल को, परन्तु वे भोजन करते और बाज़ारों में (भी) चलते[४] फिरते थे। तथा हम ने बिना दिया तु में से एक को दूसरे के लिये परीक्षा का साधन, तो क्या तुम धैर्य रखोगे? तथा आप का पानलनहार सब कुछ देखने[५] वाला है।

२१. तथा उन्हों ने कहा जो हम से मिलने की आशा नहीं रखते: हम पर फ़रिश्ते क्यों नहीं उतारे गये या हम अपने पालनहार को देख लेते? उन्हों ने अपने में बड़ी अवैज्ञा[६] की है।

२२. जिस दिन[७] वे फ़रिश्तों को देख लेंगे उस दिन कोई शुभ सूचना नहीं होगी अपराधियों के लिये। तथा वह कहेंगे:[८] वंचित वंचित हैं।

२३. और उनके कर्मों[९] को हम ले कर धूल के समान उड़ा देंगे।

२४. स्वर्ग के अधिकारी उस दिन अच्छे स्थान तथा सुखद शयनकक्ष में होंगे।

२५. जिस दिन चिर जायेगा आकाश बादल के साथ[१०] और फ़रिश्तें निरन्तर उतार दिये जायेंगे।

---

[१] अर्थात् जब हम स्वयं दूसरे को अपना संरक्षक नहीं समझे, तो फिर अपने विषय में यह कैसे कह सकते है कि हमें अपना रक्षक बना लो?

[२] यह अल्लाह का कथन है, जिसे वह मिश्रणवादियों से कहेगा कि तुम्हारे पूज्यों ने स्वयं अपने पूज्य होने को नकार दिया।

[३] अत्याचार से तात्पर्य शिर्क (मिश्रणवाद) है। (सूरह लुक़्मान, आयत : १३)

[४] अर्थात् वे मानव पुरुष थे।

[५] आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह चाहता तो पूरा ससार रसूलों का साथ देता। परन्तु वह लोगों की रसूलों द्वारा परीणा लेना चाहता है कि लोग ईमान लाते हैं या नहीं और रसूल धैर्य रखते हैं या नहीं।

[६] अर्थात ईमान लाने के लिये अपने समक्ष फ़रिश्तों के उतरने तथा अल्लाह को देखने की माँग कर के।

[७] अर्थात मरने के समय। (देखिये: अन्फ़ाल – १३) अथवा प्रलय के दिन।

[८] अर्थात वह कहेंगे कि मारे लिये सफलता तथा स्वर्ग निषेधित है।

[९] अर्तात ईमान न होने के कारण उनके पुण्य के कार्य व्यर्थ कर दिये जायेंगे।

[१०] अर्थात् आकाश चीरता हुआ बादल छा जायेगा और अल्लाह अपने फ़रिश्तों के साथ लोगों का हिसाब करने के लिये हश्र के मैदान में आ जायेगा। (देखिये सूरह, बक़रा, आयत : २१०)

२६. उस दिन वास्तविक राज्य अति दयावान् का होगा, और काफ़िरों पर एक कड़ा दिन होगा।

२७. उस दिन अत्याचारी अपने दोनों हात चबायेगा, वह कहेगा: क्या ही अच्छा होता कि मैं ने रसूल का साथ दिया होता।

२८. हाय मेरा दुर्भाग्य! काश मैं ने अमुक को मित्र न बनाया होता।

२९. उस ने मुझे कुपथ कर दिया शिक्षा (कुरआन) से इस के पश्चात् कि मेरे पास आयी, और शैतान मनुष्य को (समय) पर) धोखा देने वाला है।

३०. तथा रसूल[1] कहेगा: हे मेरे पालनहार! मेरी जाति ने इस कुरआन को त्याग[2] दिया। दिया।

३१. और इसी प्रकार हम ने बना दिया प्रत्येक का शत्रु कुछ अपराधियों को। और आप का पालनहार मार्गदर्शन देने तथा सहायता कर ने को बहुत है।

३२. तथा काफ़िरों ने कहा: क्यों नहीं उतार दिया गया आप पर कुरआन पूरा एक ही बार?[3] इसी प्रकार (इस लिये किया गया) ताकि हम आप के दिल को दृढ़ता प्रदान करें, और हम ने इस का क्रमश: प्रस्तुत किया है।

३३. (और इस लिये भी कि) वह आप के पास कोई उदाहरण लायें तो हम आप के पास सत्य ला दें और उत्तम व्याख्या।

३४. जो अपने मुखों के बल नरक की ओर एकत्र किये जायेंगे, उन्हीं का सब से बुरा स्थान है तथा सब से अधिक कुपथ है।

३५. तथा हम ने ही मूसा को पुस्तक (तौरात) प्रदान की और उस के साथ उस के भाई हारून को सहायक बनाया।

३६. फिर हम ने कहा: तुम दोनों उस जाति की ओर जाओ जिस ने हमारी आयतों (निशानियों) को झुठला दिया। अन्तत: हम ने उन को ध्वस्त निरस्त कर दिया।

---

[1] अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम। (इब्ने कसीर)

[2] अर्थात इसे मिश्रणवादियों ने नहीं सुना और न माना।

[3] अर्थात तौरात तथा संजील के समान एक ही बार क्यों नहीं उतारा गया, अगामी आयतों में उस का कारण बताया जा रहा रहा है कि कुरआन २३ वर्ष में क्रमश: आवश्यकतानुसार क्यों उतारा गया।

३७. और नूह की जाति ने जब रसूलों को झुठलाया तो हम ने उन को डुबो दिया और लोगों के लिये उन को शिक्षप्रद प्रतीक बना दिया तथा हम ने[१] तय्यार की है अत्याचारियों के लिये दुःखदायी यातना।

३८. तथा आद और समूद एवं कूवें वालों तथा बहुत से समुदायों को इस के बीच।

३९. और प्रत्येक को हम ने उदाहरण दिये, तथा प्रत्येक को पूर्णतः नाश कर[२] दिया।

४०. तता यह[३] लोग उस बस्ती[४] पर आये गये हैं जिन पर बुरी वर्षा की गई, तो क्या उन्हों ने उसे नहीं देखा? बल्कि यह लोग पुनः जीवित होने का विश्वास नहीं रखते।

४१. और (हे नबी!) जब वह आप को देखते हैं, तो आप को उपहास बना लेते हैं कि क्या यही है जिसे अल्लाह ने रसूल बनाकर भेजा है?

४२. इस ने तो हमें अपने पूज्यों से कुपथ कर दिया होता यदि हम उन पर अडिग न रहते। और वे शीघ्र ही जान लेंगे जिस समय यातना देखेंगे कि कौन अधिक कुपथ है?

४३. क्या आप ने उसे देखा जिस ने अपना पूज्य अपनी अभिलाषा को बना लिया है,तो क्या आप उस के संरक्षक[५] हो सकते हैं?

४४. क्या आप समझते हैं कि उन में से अधिकतर सुनते औहर समझते हैं? वे पशुओं के समान है बल्कि उन से भी अधिक कुपथ हैं।

४५. क्या आपने नहीं देखा कि आप के पालनहार ने कैसे छाया को फैला दिया और यदि वह चाहता तो उसे स्थिर[६] बना देता फिर हम ने सूर्य को उस पर प्रमाण[७] बना दिया।

४६. फिर हम उस (छाया को) समेट लेते हैं अपनी ओर धीरे-धीरे।

---

[१] अर्थात परलोक में नरक की यातना।

[२] सत्य को स्वीकार न करने पर।

[३] अर्थात मक्का के मुश्रिक।

[४] अर्थात लूत जाति की बस्ती पर जिस का नाम ''सदूम'' था जिस पर पत्थरों की वर्षा हुई। फिर भी शिक्षा ग्रहण नहीं की।

[५] अर्थात उसे सुपथ दर्शा सकते हैं?

[६] अर्थात सदाछाया ही रहती।

[७] अर्थात छाया सूर्य के साथ पैलनी तथा सिमटती है। और यह अल्लाह के सामर्थ्य सथा उस के एकमात्र पूज्य होने का प्रमाण है।

४७. और वही है जिस ने रात्रि को तुम्हारे लिये वस्त्र[१] बनाया, तथा निद्रा को शान्ति, तथा दिन को जागने का समय।

४८. तथा वही है जिस ने भेजा वायुओं को शुभसूचना बनाकर अपनी दया (वर्षा) से पूर्व, तथा हम ने आकाश से स्वच्छ जल बरसाया।

४९. ताकि जीवित कर दे उस के द्वारा निर्जीव नगर को तथा उसे पिलाये उन में से जिन्हें पैदा किया है बहुत से पशुओं तथा मानव को।

५०. तथा हम ने विभिन्न प्रकार से इसे वर्णन कर दिया है, ताकि वे शिक्षाग्रहण करें। परन्तु अधिकतर लोगों ने अस्वीकार करते हुये कुफ़्र ग्रहण कर लिया।

५१. और यदि हम चाहते तो भेज देते प्रत्येक बस्ती में एक सचेत करने[२] वाला।

५२. अतः आप काफ़िरों की बात न माने और इस (कुरआन के) द्वारा उन से भारी जिहाद (संघर्ष)[३] करें।

५३. वही है जिस ने मिला दिया दो सागरों को, यह मीठा रुचिकार है, और वह नमकीन खारा, और उस ने बना दिया दोनों के बीच एक पर्दा[४] एवं रोक।

५४. तथा वही है जिस ने पानी (वीर्य) से मनुष्य को उत्पन्न किया, फिर उस के वंश तथा ससुराल के संबन्ध बना दिये, आप का पालनहार अति सामर्थ्यवान है।

५५. और वे लोग इबादत (वंदना) करते हैं अल्लाह के सिवा उन की जो न उन को लाभ पहुँचा सकते और न हानि पहुँचा सकते हैं, और काफ़िर अपने पालनहार का विरोधी बन गया है।

५६. और हम ने आप को बस शुभसूचना देने, सावधान करने वाला बनाकर भेजा है।

५७. आप कह दें: मैं इस[५] पर तुम से कोई बदला नहीं माँगता, परन्तु यह कि जो चाहे अपने पालनहार की ओर मार्ग बना ले।

---

[१] अर्थात रात्रि का अंधेरा वस्त्र के समान सब को छुपा लेता है।

[२] अर्तात रसूल। इस में यह संकेत है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पूरे मनुष्य विश्व के लिये एक अन्तिम रसूल हैं।

[३] अर्थात कुरआन के प्रचार–प्रसार के लिये भरपूर प्रयास करें।

[४] ताकि एक का पानी और स्वाद दूसरे में न मिले।

[५] अर्थात कुरआन पहुँचाने पर।

५८. तथा आप भरोसा कीजिये उस नित्य जीवी पर जो मरेगा नहीं, और उस की पवित्रता का गान कीजिये उसकी प्रशंसा के साथ, और आप का पालनहार पर्याप्त है अपने भक्तों के पापों से सूचित होने को।

५९. जिस ने उत्पन्न कर दिया आकाशों तथा धरती को और जो कुछ उनके बीच है छः दिनों में, फिर (सिंहासन) पर स्थिर हो गया अति दयावान्, उसकी महिमा किसी ज्ञानी से पूछो।

६०. और जब उन से कहा जाता है कि रहमान (अति दयावान्) को सज्दा करो, तो कहते हैं कि रहमान क्या है? क्या हम सज्दा करने लगें जिस आप आदेश दें? और इस (आमंत्रण) ने उन को और अधिक भड़का दिया।

६१. शुभ है वह जिसने आकाश में राशि चक्र बनाये तथा उस में सूर्य और प्रकाशित चाँद को बनाया।

६२. वही है जिस ने रात्रि तथा दिन को एक दूसरे के पीछे आत–जाते बनाया उस के लिये जो शिक्षा ग्रहण करना चाहे या कृतज्ञ होना चाहे।

६३. और अति दयावान् के भक्त वह है जो धरती पर नम्रता से चलते[१] है और अशिक्षित (अक्खड़) लोग उन से बात करते हैं तो सलाम करके अलग[२] हो जाते हैं।

६४. और जो रात्रि व्यतीत करते हैं अपने पालनहार के लिये सज्दा करते हुये तथा खड़े[३] हो कर।

६५. तथा जो प्रार्थना करते हैं कि हे हमारे पालनहार! फेर दे हम से नरक की यातना को, वास्तव में उस की यातना चिपक जाने वाली है।

६६. वास्तव में वह बुरा आवास और स्थान है।

६७. तथा जो व्यय (ख़र्च) करते समय अपव्यय नहीं करते और न कृपण (कंजूसी) करते हैं और वह इस के बीच संतुलित रहता है।

---

[१] अर्थात घमंड से अकड़ कर नहीं चलते।

[२] अर्थात उन से उलझते नहीं।

[३] अर्थात अल्लाह की इबादत करते हुये।

६८. और जो नहीं पुकारते है अल्लाह के साथ किसी दूसरे[1] पूज्य को और न बध करते हैं, उस प्राण को जिसे अल्लाह ने वर्जित किया है परन्तु उचित कारण से, और न व्यभिचार करते है। और जो ऐसा करेगा वह पाप का सामना करेगा।

६९. दुगनी की जायेगी उस के लिये यातना प्रलय के दिन, तथा सदा उस में अपमानित[2] हो कर रहेगा।

७०. उस के सिवा जिस ने क्षमा याचना कर ली, और ईमान लालया तथा कर्म किया अच्छा कर्म, तो वही है बदल देगा अल्लाह जिन के पापों को पुण्य से। तथा अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

७१. और जिस ने क्षमा याचना कर ली और सदाचार किये तो वास्तव में वही अल्लाह की ओर झुक जाता है।

७२. तथा जो मिथ्या साक्ष्य नहीं देते, और जब व्यर्थ के पास से गुज़रते हैं तो सज्ज्न बन कर गुज़र जाते हैं।

७३. और जब उन्हें शिक्षा दी जाये उनके पालनहार की आयतों द्वारा उन पर नहीं गिरते अन्धे तथा बहरे हो[3] कर।

७४. तथा जो प्रार्थना करते हैं कि हे हमारे पालनहार! हमें हमारी पत्नियों तथा संतानों से आँखों की ठण्डक प्रदान कर और हमें आज्ञाकारियों का अग्रणी बना दे।

७५. यही लोग उच्च भवन अपने धैर्य के बदले में पायेंगे, और स्वागत किये जायेंगे उस में आशीर्वाद तथा सलाम के साथ।

७६. वे उस में सदावासी होंगे, वह अच्छा निवास तथा स्थान है।

---

[1] अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद कहते है कि मैं ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रश्न कि कौन सा पाप सब से बड़ा है? फ़रमाया: यह कि तुम अल्लाह का साझी बनाओ जब कि उस ने तुम को पैदा किया है। मैं ने कहा: फिर कौन सा? फ़रमाया: अपनी संतान को इस भय से मार दो कि वह तुम्हारे साथ खायेगी। मैं ने कहा: फिर कौन सा? फ़रमाया: अपने पड़ोसी की पत्नी से व्यभिचार करना। यह आयत इसी पर उतरी। (देखिये बुख़ारी)

[2] इब्ने अब्बास ने कहा: जब यह आयत उतरी तो मक्का वासियों ने कहा: हम ने अल्लाह का साझी बनाया है और अवैध जान भी मारी है तथा व्यभिचार भी किया है। तो अल्लाह ने यह आयत उतारी। (सहीह बुख़ारी ४७६५)

[3] अर्थात आयतों में सोच–विचार करते हैं।

७७. (हे नबी!) आप कह दें कि यदि तुम्हारा उसे पुकारना न[1] हो तो मेरा पालनहार तुम्हारी क्या परवाह करेगा? तुम ने तो झुठला दिया है, तो शीघ्र ही (उसका दण्ड) चिपक जाने वाला होगा।

[1] अर्थात उस से प्रार्थना तथा उस की इबादत न करो।

सूरह शुअरा – २६

सूरह शुअरा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में २२७ आयतें है

- इस में मक्का के मुर्ति पूजकों के आरोप का खण्ड किया गया है जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शायर (कवि) कहते थे। और कवि ओ नबी के बीच अन्तर बताया गया है।
- इस में धर्म प्रचार के लिये नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चिन्ता और विरोधियों के आप के साथ उपहास की चर्चा है।
- इस में मूसा अलैहिस्सलाम तथा इब्राहीम अलैहिस्सलाम के एकेश्वरवाद के उपदेश को प्रस्तुत किया गया है जो उन्होंने अपनी जाति को दिया था।
- इस में कई नबियों के धर्म प्रचार और उन के विरोधियों के दुष्परिणाम को बताया गया है।
- अनेक युग में नबियों के आने और उन के उपदेश में समानता का भी वर्णन है।
- कुरआन तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से संबंधित संदेहों का निवारण किया गया है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. ता, सीन, मीम।

२. यह प्रकाशमय पुस्तक की आयतें हैं।

३. संभवत: आप अपना प्राण[१] खो देने वाले हैं कि वे ईमान लाने वाले नहीं हैं?

४. यदि हम चाहें तो उतार दें उन पर आकाश से ऐसी निशानी कि उन की गर्दनें उस के आगे झुकी कि झुकी रह जायें।[२]

५. और नहीं आती है उन के पालनहार अति दयावान् की ओर से कोई नई शिक्षा परन्तु वे उस से मुख फेरने वाले बन जाते हैं।

६. तो उन्हों ने झुठला दिया, अब उनके पास शीघ्र ही उस की सूचनायें आ जायेंगी जिस का उपहास वे कर रहे थे।

७. और क्या उन्हों ने धरती की ओर नहीं देखा कि हम ने उस में उगाई हैं बहुत सी प्रत्येक प्रकार की अच्छी वनस्पतियाँ?

८. निश्चय ही इस में बड़ी निशानी (लक्षण)[३] है। फिर उन में अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं है।

९. तथा वास्तव में आप का पालनहार ही प्रभुत्वशाली अति दयावान् है।

१०. (उन्हें उस समय की कथा सुनाओ) जब पुकारा आप के पालनहार ने मूसा को, कि जाओ अत्याचारी जाति[४] के पास।

११. फ़िरऔन की जाति के पास, क्या वे डरते नहीं?

१२. उस ने कहा: मेरे पालनहार वास्तव में मुझे भय है कि वह मुझे झुठला देंगे।

१३. और संकुचित हो रहा है मेरा सीना, और नहीं चल रही है मेरी जुबान, अत: वह्यी भेज दे हारून की ओर (भी)।

१४. और उन का मुझ परएक अपराध भी है। अत: मैं डरता हूँ कि वह मुझे मार डालेंगे।

---

[१] अर्थात उन के ईमान न लाने के शोक में।

[२] परन्तु ऐसा नहीं किया, क्यों कि दबाव का ईमान स्वीकार्य तथा मान्य नहीं होता।

[३] अर्थात अल्लाह के सामर्थ्य की।

[४] यह उस समय की बात है जब मूसा (अलैहिस्सलाम) दस वर्ष मदयन में रह कर मिस्र वापस आ रहे थे।

१५. अल्लाह ने कहा: कदापि ऐसा नहीं होगा। तुम दोनों हमारी निशानियाँ ले कर जाओ, हम तुम्हारे साथ सुनने[1] वाले हैं।

१६. तो तुम दोनों जाओ, और कहो कि हम विश्व के पालनहार के भेजे हुये (रसूल) हैं।

१७. कि तू हमारे साथ बनी इस्राईल को जाने दे।

१८. (फ़िरऔन ने) कहा: क्या हम ने तेरा पालन नहीं किया है अपने यहाँ बाल्यवस्था में, और तू रहा है हम में अपनी आयु के कई वर्ष?

१९. और तू कर गया वह कार्य[2] जो किया, और तू कृतघ्नों में से है।

२०. (मूसा ने) कहा: मैं ने ऐसा उस समय कर दिया, जब कि मैं अनजान था।

२१. फिर मैं तुम से भाग गया जब तुम से भय हुआ। फिर प्रदान कर दिया मुझे मेरे पालनहार ने तत्वदर्शिता और मुझे बना दिया रसूलों में से।

२२. और यह कोई उपकार है जो तू मुझे जता रहा है कि तू ने दास बना लिया है इस्राईल के पुत्रों को।

२३. फ़िरऔन ने कहा: विश्व का पालनहार क्या है?

२४. (मूसा ने) कहा: आकाशों तथा धरती और उसका पालनहार जो कुछ दोनों के बीच है, यदि तुम विश्वास रखने वाले हो।

२५. उस ने उन से कहा जो उस के आस पास थे: क्या तुम सुन नहीं रहे हो?

२६. (मूसा ने) कहा: तुम्हारा पालनहार तथा तुम्हारे पूर्वजों का पालनहार है।

२७. (फ़िरऔन ने) कहा: वास्तव में तुम्हारा रसूल जो तुम्हारी ओर भेजा गया है पागल है।

२८. (मूसा ने) कहा: वह, पूर्व तथा पश्चिम, तथा दोनों के मध्य जो कुछ है सब का पालनहार है।

२९. (फ़िरऔन ने) कहा। यदि तू ने कोई पूज्य बना लिया मेरे अतिरिक्त तो तुझे बंदियों में कर दूँगा।

३०. (मूसा ने) कहा: क्या यद्यपि मैं ला दूँ तेरे पास एक खुली चीज़?

---

[1] अर्थात तुम दोनों की सहायता करते रहेंगे।

[2] यह उस हत्या काण्ड की ओर संकेत है जो मूसा (अलैहिस्सलाम) से नबी होने से पहले हो गया था।

३१. उसने कहा: तू उसे ला दे यदि सच्चा है।
३२. फिर उस ने अपनी लाठी को फेंक दिया, तो अकस्मात् वह एक प्रत्यक्ष अजगर बन गयी।
३३. तथा अपना हाथ निकाला तो अकस्मात् वह उज्जवल था देखने वालों के लिये।
३४. उस ने अपने प्रमुखों से कहा जो उस के पास थे: वास्तव में यह तो बड़ा दक्ष जादूगर है।
३५. वह चाहता है कि तुम्हें तुम्हारी दरती से निकाल[1] दे अपने जादू के बल से, तो अब तुम क्या आदेश देते हो?
३६. सब ने कहा: अवसर (समय) दो मूसा और उसके भाई (के विषय) को, और भेज दो नगरों में एकत्र करने वालों को।
३७. वह तुम्हारे पास प्रत्येक बड़े दक्ष जादूगर को लाये।
३८. तो एकत्र कर लिये गये जादूगर एक निश्चित दिन के समय के लिये।
३९. तथा लोगों से कहा गया कि क्या तुम एकत्र होने वाले[2] हो?
४०. ताकि हम पीछे चलें जादूगरों के यदि वही प्रभुत्वशाली (विजयी) हो जायें।
४१. और जब जादूगार आये, तो फ़िरऔन से कहा: क्या हमें कुछ पुरस्कार मिलेगा यदि हम ही प्रभुत्वशाली होंगे?
४२. उसने कहा: हाँ, और तुम उस समय (मेरे) समीपवर्तियों में हो जाओगे।
४३. मूसा ने उन से कहा: फेंको जो कुछ तुम फेंकने वाले हो।
४४. तो उन्हों ने फेंक दी अपनी रस्सियाँ तथा अपनी लाठियाँ, तथा कहा: फ़िरऔन के प्रभुत्व की शपथ! हम ही अवश्य प्रभुत्वशाली (विजयी) होगें।
४५. अब मूसा ने फेंक दी अपनी लाठी, तो तत्क्षण वह निगलने लगी जो झूठ वह बना रहे थे।
४६. तो गिर गये सभी जादूगर[3] सज्दा करते हुये।
४७. और सब ने कह दिया: हम विश्व के पालनहार पर ईमान लाये।

---

[1] अर्थात यह उग्रवाद कर के हमारे देश पर अधिकार कर ले।

[2] अर्थात लोगों को प्रेरणा दी जा रही है कि इस प्रतियोगिता में अवश्य उपस्थित हों।

[3] क्यों कि उन्हें विश्वास हो गया कि मूसा (अलैहिस्सलाम) जादूगर नहीं, बल्कि वह सत्य के उपदेशक हैं।

४८. मूसा तथा हारून के पालनहार पर।
४९. (फ़िरऔन ने) कहार: तुम उस का विश्वास कर बैठे इस से पहले कि मैं तुम्हें आमा दूँ? वास्तव में वह तुम्हारा बड़ा (गुरू) है जिस ने तुम्हें जादू सिखाया है, तो तुम्हें शीघ्र ज्ञान हो जायेगा, मैं अवश्य तुम्हारे हाथों तथा पैरों को विपरीत दिशा[1] से काट दूँगा तथा तुम सभी को फाँसी दे दूँगा।
५०. सब ने कहा: कोई चिन्ता नहीं, हम तो अपने पालनहार ही की ओर फिर कर जाने वाले हैं।
५१. हम आशा रखते हैं कि क्षमा कर देगा हमारे लिये हमारा पालन–हार हमारे पापों को क्यों कि हम सब से पहले ईमान लाने वाले हैं।
५२. और हम ने मूसा की ओर वह्यी की, कि रातों–रात निकल जा मेरे भक्तों को ले कर, तुम सब का पीछा किया जायेगा।
५३. तो फ़िरऔन ने भेज दिया नगरों में (सेना) एकत्र करने[2] वालों को।
५४. और (इस पर भी) वह हमें अति क्रोधित कर रहे हैं।
५५. और वास्तव में हम एक गिरोह हैं सावधान रहने वाले।
५६. और वास्तव में हम एक गिरोह हैं सावधान रहने वाले।
५६. अन्ततः हमे ने निकाल दिया उन को बाग़ों तथा स्रोतों से।
५८. तथा कोषों और उत्तम निवासस्थानों से।
५९. इसी प्रकार हुआ, और हम ने उन का उत्तराधिकारी बना दिया इस्राईल की संतान को।
६०. तो उन्हों ने उनका पीछा किया प्रातः होते ही।
६१. और जब दोनों गिरोहों ने एक दूसरे को देख लिया तो मूसा के साथियों ने कहा: हम नो निश्चय ही पकड़ लिये[3] गये।
६२. (मूसा ने) कहा: पदापि नहीं, निश्चय मेरे साथ मेरा पालनहार है।

---

[1] अर्थात दायाँ हाथ औा बायाँ पैर या बायाँ हाथ और दायाँ पैर।

[2] जब मूसा (अलैहिस्सलाम) अल्लाह के आदेशानुसार अपने साथ्यिों को ले कर निकल गये तो फ़िरऔन न उन का पीछा करने के लिये नगरों मे हरकारे भेजे।

[3] क्यों कि अब सामने सागर और पीछे फ़िरऔन की सेना थी।

६३. तो हम ने मूसा को वह्यी की, कि मार अपनी लाठी से सागर को,अकस्मात् सागर फट गया, तथा प्रत्येक भाग भारी पर्वत के समान[1] हो गया।
६४. तथा हमने समीप कर दिया उस स्थान के दूसरे गिरोह को।
६५. और मुक्ति प्रदान कर दी मूसा और उसके सब साथियों को।
६६. फिर हमने डुबो दिया दूसरों को।
६७. वास्तव में इस में बड़ी शिक्षा है, और उन में से अधिकतर लोग ईमान वाले नहीं थे।
६८. तथा वास्तव में आप का पालनहार निश्चय अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।
६९. तथा आप उन्हें सुना दें इब्राहीम का समाचार (भी)।
७०. जब उस ने कहा: अपने बाप तथा अपनी जाति से कि तुम क्या पूज रहे हो?
७१. उन्हों ने कहा: हम मुर्तियों की पूजा कर रहे हैं और उन्ही की सेवा में लगे रहते हैं।
७२. उसने काह: क्या वे तुम्हारी सुनती है जब पुकारते हो?
७३. या तुम्हें लाभ पहुँचाती या हानि पहुँचाती है?
७४. उन्हों ने कहा: बल्कि हम ने अपने पूर्वजों को इसी प्रकार करते हुये पाया है।
७५. उस ने कहा: क्या तुम ने कभी (आँख खोल कर) उसे देखा जिसे तुम पूज रहे हो।
७६. तुम तथा तुम्हारे पहले पूर्वज?
७७. क्यों कि यह सब मेरे शत्रु हैं पूरे विश्व के पालनहार के सिवा।
७८. जिस ने मुझे पैदा किया, फिर वही मुझे मार्ग दर्शा रहा है।
७९. और जो मुझे खिलाता और पिलाता है।
८०. और जब रोगी होता हूँ तो वही मुझे स्वस्थ करता है।
८१. तथा वही मुझे मारेगा फिर[2] मुझे जीवित करेगा।
८२. तथा मैं आशा रखता हूँ कि क्षम कर देगा मेरे लिये मेरे पाप प्रतिकार (प्रलय) के दिन।

[1] अर्थात बीच से मार्ग बन गया और दोनों और पानी पर्वत के समान खड़ा हो गया।
[2] अर्थात प्रलय के दिन अपने कर्मों का फल भोगने के लिये।

८३. हे मेरे पालनहार! प्रदान कर दे मुझे तत्वदर्शिता और मुझे सम्मिलित कर सदाचारियों में।
८४. और मुझे सच्ची ख्याति प्रदान कर आगामी लोगों में।
८५. और बना दे मुझ को सुख के स्वर्ग का उत्तराधिकारी।
८६. तथा मेरे बाप को क्षमा कर दें[१] वास्तव में वह कुपथों में है।
८७. तथा मुझे निरादर न कर जिस दिन सब जीवित किये[२] जायेंगे।
८८. जिस दिन लाभ नहीं देगा कोई धन और न संतान।
८९. परन्तु जो अल्लाह के पास स्वच्छ दिल ले कर आयेगा।
९०. और समीप कर दी जायेगी स्वर्ग आज्ञाकारियों के लिये।
९१. तथा खोल दी जायेगी नरक कुपथों के लिये।
९२. तथा कहा जायेगा: कहाँ हैं वह जिन्हें तुम पूज रहे थे?
९३. अल्लाह के सिवा, क्या वह तुम्हारी सहायता करेंगे अथवा स्वयं अपनी सहायता कर सकते है?
९४. फिर उस में औंधे झोंक दिये जायेगे वह और सभी कुपथ।
९५. और इब्लीस की सेना सभी।
९६. और वह उस में आपस में झगड़ते हुये कहेंगे:
९७. अल्लाह की कसम! वास्तव में हम खुले कुपथ में थे।
९८. जब हम तुम्हें बराबर समझ रहे ते विश्व के पालनहार के।
९९. और हेमं कुपथ नहीं किया परन्तु अपराधियों ने।
१००. तो हमारा कोई अभिस्तावक (सिफ़ारशी) नहीं रह गया।
१०१. तथा न कोई प्रेमी मित्र।
१०२. तो यदि हमें पुन: संसार में जाना होता[३] तो हम ईमान वालों में हो जाते।

---

[१] (देखिये : सूरह तौबा : आयत: ११४)

[२] हदीस में वर्णित है कि प्रलय के दिन इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपने बाप से मिलेंगे। और कहेंगे: हे मेरे पालनहार! तू ने मुझे वचन दिया था कि मुझे पुन: जीवित होने के दिन अपमानित नहीं करेगा। तो अल्लाह कहेगा मैं ने स्वर्ग को काफ़िरों के लिये अवध कर दिया है। (सहीह बुख़ारी ४७६९)

[३] इस आयत में संकेत है कि संसार में एक ही जीवन कर्म के लिये मिलता है। और दूसरा जीवन प्रलोक में कर्मो के फल के लिये मिलेगा।

१०३. नि:संदेह इस में बड़ी निशानी है। और उन में से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं है।
१०४. और वास्तव में आप का पालनहार ही अति प्रभुत्वशाली[१] दयावान् है।
१०५. नूह की जाति ने भी रसूलों को झुठलाया।
१०६. जब उन से उन के भाई नूह ने कहा: क्या तुम (अल्लाह से) डरते नहीं हो?
१०७. वास्तव में मैं तुम्हारे लिये एक[२] रसूल हूँ।
१०८. अत: अल्लाह से डरो तथा मेरी बात मानो।
१०९. मैं नहीं माँगता इस पर तुम से कोई पारिश्रमिक (बदला) मेरा बदला तो बस सर्वलोक के पालनहार पर है।
११०. अत: तुम अल्लाह से डरो और मेरी आज्ञा का पालन करो।
१११. उन्हों ने कहा: क्या हम तुझे मान लें, जब कि तेरा अनुसरण पतित (नीच) लोग[३] कर रहे हैं।
११२. (नूह ने) कहा: मुझे क्या ज्ञान कि वे क्या कर्म करते रहे हैं?
११३. उन का हिसाब तो बस मेरे पालनहार के ऊपर है यदि तुम समझो।
११४. और मैं धुतकारने वाला[४] नहीं हूँ ईमान वालों को।
११५. मैं तो बस खुला सावधान करने वाला हूँ।
११६. उन्हों ने कहा: यदि रुका नहीं, हे नूह! तो तू अवश्य पथराव कर के मारे हुये में होगा।
११७. उस ने कहा: मेरे पालनहार! मेरी जाति ने मुझे झुठला दिया।
११८. अत: तू निर्णय कर दे मेरे और उनके बीच, और मुक्त कर दे मुझ को तथा जो मेरे साथ हैं ईमान वालों कर्मे से।
११९. तो हम ने उसे मुक्त कर दिया तथा जो उसके साथ भरी नाव में थे।
१२०. फिर हम ने डुबो दिया उस के पश्चात् शेष लोगों को।

---

[१] परन्तु लोग स्वयं अत्याचार कर के नरक के भागी बन रहे हैं।
[२] अल्लाह का संदेश बिना कमी और अधिकता के तुम्हें पहुँचा रहा हूँ।
[३] अर्थात धनी नहीं, निर्धन लोग कर रहे हैं।
[४] अर्थात मैं हीन वर्ग के लोगों को जो र्समान लाये हैं अपने से दूर नही कर सकता जैसा कि तुम चाहते हो।

१२१. वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी (शिक्षा) है, तथा उन में से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं।

१२२. और निश्चय आप का पालनहार ही अति प्रभुत्वशाली दयावान् है।

१२३. झुठला दिया आद (जाति) ने (भी) रसूलों को।

१२४. जब कहा उन से उनके भाई हूद[१] ने: क्या तुम डरते नहीं हो?

१२५. वस्तुत: मैं तुम्हारे लिये एक न्यासिक (अमानतदार) रसूल हूँ।

१२६. अत: अल्लाह से डरो और मेरा अनुपालन करो।

१२७. और मैं तुम से कोई पारिश्रमिक (बदला) नहीं माँगता, मेरा बदला तो बस सर्वलोक के पालनहार पर है।

१२८. क्यों तुम बना लेते हो हर ऊँचे स्थान पर एक यादगार भवन व्यर्थ में।

१२९. तथा बनाते हो बड़े–बड़े भवन जैसे कि तुम सदा रहोगे।

१३०. और जब किसी को पकड़ते हो तो पकड़ते हो महा अत्याचारी बन कर।

१३१. तो अल्लाह से डरो और मेरी आज्ञा का पालन करो।

१३२. तथा उस से भय रखो जिस ने तुम्हारी सहायता की है उस से जो तुम जानते हो।

१३३. उस ने सहायता की है तुम्हारी चौपायों तथा संतान से।

१३४. तथा बागों (उद्यानों) तथा जल स्रोतों से।

१३५. मैं तुम पर डरत हूँ भीषण दिन की यातना से।

१३६. उन्हों ने कहा: नसीहत करो या न करो, हम पर सब समान है।

१३७. यह बात तो बस प्राचीन लोगों की नीति[२] है।

१३८. और हम उन में से नहीं है जिन को यातना दी जायेगी।

१३९. अन्तत: उन्हों ने हमें झुठला दिया तो हम ने उन्हें ध्वस्त कर दिया। निश्चय इस में एक बड़ी निशानी (शिक्षा) है। और लोगों में अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं है।

१४०. और वास्तव में आप का पालनहार ही अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।

---

[१] आद जाति के नबी हूद (अलैहिस्सलाम) को उन का भाई कहा गया है क्यों कि वह भी उन्हीं के समुदाय में से थे।

[२] अर्तात प्राचीन युग से होती चली आ रही है।

१४१. झुठला दिया समूद ने भी[1] रसूलों को।

१४२. जब कहा, उन से उनके भाई सालेह ने: क्या तुम डरते नहीं हो?

१४३. वास्तव में, मैं तुम्हारा विश्वासनीय रसूल हूँ।

१४४. तो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो।

१४५. तथा मैं नहीं माँगता इस पर तुम से कोई परिश्रमिक, मेरा पारिश्रमिक तो बस सर्वलोक के पालनहार पर है।

१४६. क्या तुम छोड़ दिया जाओगे उस मे जो यहाँ है निशिचन्त रह कर?

१४७. बाग़ों तथा स्रोतों में।

१४८. तथा खेतों और खजूरों में जिन के गुच्छे रस भरे हैं।

१४९. तथा तुम पर्वतों को तराश करघर बनाते हो गर्व करते हुये।

१५०. अत: अल्लाह से डरो तथा मेरा अनुपालन करो।

१५१. और पालन न करो उल्लंघनकारियों के आदेश का।

१५२. जो उपद्रव करते है धरती में और सुधार नहीं करते।

१५३. उन्हों ने कहा: वास्तव में तू उन में से है जिन पर जादू कर दिया गया है।

१५४. तू तो बस हमारे समान एक मानव है। तो कोई चमत्कार ला दे, यदि तू सच्चा है।

१५५. कहा: यह ऊँटनी है[2] इस के लिये पानी पीने का एक दिन है और तुम्हारे लिये पानी लेने का निश्चित दिन है।

१५६. तथा उसे हाथ न लगाना बुराई से अन्यथा तुम्हें पकड़ लेगी एक भीषण दिन की यातना।

१५७. तो उन्हों ने बध कर दिया उसे, अन्तत: पछताने वाले हो गये।

१५८. और पकड़ लिया उन्हें यातना ने। वस्तुत: इस में बड़ी निशानी है, और नहीं थे उन में से अधिकतर ईमान लाने वाले।

१५९. और निश्चय आप का पालनहार ही अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।

[1] यहाँ यह बात याद रखने की है कि एक रसूल का इन्कार सभी रसूलों का इन्कार है क्यों कि सब का उपदेश एक ही था।

[2] अर्थात यह ऊँटनी चमत्कार है जो उन की माँग पर पत्थर से निकली थी।

१६०. झुठला दिया लूत की जाति ने (भी) रसूलों को।

१६१. जब कहा उन से उन के भाई लूत ने: क्या तुम डरते नहीं हो?

१६२. वास्तव में, मैं तुम्हारे लिये एक अमानतदार रसूल हूँ।

१६३. अत: अल्लाह से डरो तथा मेरा अनुपालन करो।

१६४. और मैं तुम से प्रश्न नहीं करता इस पर किसी पारिश्रमिक (बदले) का। मेरा बदला तो बस सर्वलोक के पालनहार पर है।

१६५. क्या तुम जाते[१] हो पुरुषों के पास संसार वासियों में से?

१६६. तथा छोड़ देते हो जिसे पैदा किया है तुम्हारे पालनहार ने अर्थात अपनी पत्नियों को, बल्कि तुम एक जाति हो सीमा का उल्लंघन करने वाली।

१६७. उन्हों ने कहा: यदि तू नहीं रुका, हे लूत! तो अवश्य तेरा बहिष्कार कर दिया जायेगा।

१६८. उस ने कहा: वास्तव में मैं तुम्हारे कर्तूत से बहुत अप्रसन्न हूँ।

१६९. मेरे पालनहार! मुझे बचा ले तता मेरे परिवार को उस से जो वह कर रहे हैं।

१७०. तो हम ने उसे बचा लिया तता उस के सभी परिवार को।

१७१. परन्तु एक बुढ़िया[२] को जो पीछे रह जाने वालों में थी।

१७२. फिर हम ने विनाश कर दिया दूसरों का।

१७३. और वर्षा की उन पर एक घोर[३] वर्षा। तो बुरी हो गर्स डराये हुये लोगों की वर्षा।

१७४. वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी (शिक्षा) है। और उन में अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं थे।

१७५. और निश्चय आप का पालनहार ही अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।

१७६. झुठला दिया ऐय्का[४] वालों ने रसूलों को।

---

[१] इस कुकर्म का आरंभ संसार में लूत (अलैहिस्सलाम) की जाति से हुआ। और अब यह कुकर्म पूरे विश्व में विशेष रूप से सूयरोपीय सभ्य देशों में व्यापक है। और समलैंगिक विवाह को यूरोप के बहुत से देशों में वैध मान लिया गया है। जिस के कारण कभी भी उन पर अल्लाह की यातना आ सकती है।

[२] इस से अभिप्रेत लूत (अलैहिस्सलाम) की काफ़िर पत्नी है।

[३] अर्तात पत्थरों की वर्षा। (देखिये: सूरह हूद, आयत : ८२ – ८३)

[४] ऐय्का का अर्थ झाड़ी है। यह मद्‌य का क्षेत्र है जिस में शुऐब (अलैहिस्सलाम) को भाजा गया था।

१७७. जब कहा, उन से शुऐब ने: क्या तुम डरते नहीं हो?

१७८. मैं तुम्हारे लिये एक विश्वसनीय रसूल हूँ।

१७९. अत: अल्लाह से डरो तथा मेरी आज्ञा का पालन करो।

१८०. और मैं नहीं माँगता तुम से इस पर कोई पारिश्रमिक, मेरा पारिश्रमिक तो बस समस्त विश्व के पालनहार पर है।

१८१. तुम नाप–तौल पूरा करो, और न बनो कम देने वालों में।

१८२. और तौलो सीधे तराजू से।

१८३. और मत कम दो लोगों को उन की चीज़ें और मत फिरो धरती में उपद्रव फैलाते।

१८४. और डरो उस से जिस ने पैदा किया है तुम्हें तथा अगले लोगों को।

१८५. उन्हों ने कहा: वास्तव में तू उन में से है जिन पर जादू कर दिया गया है।

१८६. और तू तो बस एक पुरुष[१] है हमारे समान। और हम तो तुझे झूठों में समझते हैं।

१८७. तो हम पर गिरा दे कोई खण्ड आकाश का यदि तू सच्चा है।

१८८. उस ने कहा: मेरा पालनहार भली प्रकार जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो।

१८९. तो उन्हों ने उसे झुठला दिया। अन्तत: पकड़ लिया उन्हें छाया के[२] दिन की यातना ने। वस्तुत: वह एक भीषण दिन की यातना थी।

१९०. निश्चय इस में एक बड़ी निशानी (शिक्षा) है। और नहीं थे उन में अधिकतर ईमान लाने वाले।

---

[१] यहाँ यह बात विचारणीय है कि सभी विगत जातियों ने अपने रसूलों को उन के मानव होने के कारण नकार दिया। और जिस ने स्वीकार भी किया तो उस ने कुछ युग व्यतीत होने के पश्चात अति कर के अपने रसूों को प्रभु अथवा प्रभु का अंश बनाकर उन्हीं को पूज्य बना लिया। तथा एकेश्वरवाद को कड़ा आघात पहुँचा कर मिश्रणवाद का द्वार खोल लिया और कुपथ हो गये। वर्तमान युग में भी इसी का प्रचलन है और इस का आधार अपने पूवतों की रीतियों को बनाया जाता है। इस्लाम इस कुपथ का निवारण कर के एकेश्वरवाद की स्थापना के लिये आया है और वास्तव में यही सत्धर्म है।

हदसी में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: मुझे वैसे न बढ़ा चढ़ाना जैसे ईसाईयों ने मर्यम के पुत्र (ईसा) को बढ़ा चढ़ा दिया। वास्तव में मैं उस का दास हूँ अत: मुझे अल्लाह का दास और उस का रसूल कहो। (देखिये : सहीह बुख़ारी ३४४५)

[२] अर्थातत उनकी यातना के दिन उन पर बादल छा गया। फिर आग बरसने लगी और धरती कंपित हो गई। फिर एक कड़ी ध्वनी ने उन की जाने ले ली। (इब्ने कसीर)

१९१. और वास्तवम में आप का पालनहार ही अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।
१९२. तथा नि:संदेह यत (कुरआन) पूरे विश्व के पालनहार का उतारा हुआ है।
१९३. इस ले कर रूहुल अमीन[१] उतरा।
१९४. आप के दिल पर ताति आप हो जायें सावधान करने वालों में।
१९५. खुली अर्बी भाषा में।
१९६. तथा इस की चर्चा[२] अगले रसूलों की पुस्तको में (भी) है।
१९७. क्या और उन के लिये यह निशानी नहीं है कि इस्राईलियों के विद्वान[३] इसे जानते है।
१९८. और यदि हम इस उतार देते किी अजमी[४] पर।
१९९. और वह इसे उन के समक्ष पढ़ता तो वह उस पर ईमान लाने वाले न होते[५]।
२००. इस प्रकार हम ने घुसा दिया है इस (कुरआन के इन्कार) को पापियों के दिलों में।
२०१. वह नहीं ईमान लायेंगे उस पर जब तक देख न लेंगे दु:ख दायी यातना।
२०२. फिर उ न पर सहसा आ जायेगी और वह समझ भी नहीं पायेंगे।
२०३. तो कहेंगे: क्या हमें अवसर दिया जायेगा?
२०४. तो क्या वह हमारी यातना की जल्दी मचा रहे हैं?
२०५. (हे नबी!) तो क्या आप ने विचार किया कि यदि हम लाभ पहुँचाये इन्हें वर्षों।
२०६. फिर आ जाये उन पर जिस की उन्हें धमकी दी जा रही थी।

---

[१] रूहुल अमीन से अभिप्राय आदरणीय फ़रिश्ता जिब्रील (अलैहिस्सलाम) है। जो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर अल्लाह की ओर से वह्यी लेकर उतरते थे जिस के कारण आप रसूलों की और उन की जातियों की दशा से अवगत हुये। अत: यह आप के सत्य रसूल होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

[२] अर्थात सभी आकाशीय ग्रन्थों में अन्तिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन तथा आप पर पुस्तक कुरआन के अवतरित होने की भविष्यवाणी की गई है। और सब नबियों ने इस की शुभसूचना दी है।

[३] बनी इस्राईल के विद्वान अब्दुलाह बिन सलाम आदि जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और कुरआन पर ईमान लाये वह इस के सत्य होने का खुला प्रमाण है।

[४] अर्थात ऐसे व्यक्ति पर जो अरब देश और जाति के अतिरिक्त किसी अन्य जाति को हो।

[५] अर्थात अर्बी भाषा में न होता तो कहते कि यह हमारी समझ में नहीं आता। (देखिये : सूरह हा,मीम,सज्दा : ४४)

२०७. तो क्या काम आयेगा उनके जो उन्हें लाभ पहुँचाया जाता रहा?

२०८. और हम ने किसी बस्ती का विनाश नहीं किया परन्तु उस के लिये सावधान करने वाले थे।

२०९. शिक्षा देने के लिये, और हम अत्याचारी नहीं हैं।

२१०. तथा नहीं उतरे हैं। (इस कुरआनन) को ले कर शैतान।

२११. और न योग्य है उन के लिये और न वह इस की शक्ति रखते हैं।

२१२. वास्तव में वह तो (इस के) सुनने से भी दूर[1] कर दिये गये हैं।

२१३. अत: औप न पुकारें अल्लाह के साथ किसी अन्य पूज्य को अन्यथा आप दण्डितों में हो जायेंगे।

२१४. और आप सावधान कर दें अपने समीपवर्ती[2] सम्बन्धियों को।

२१५. और झुका दें अपना बाहु[3] उसके लिये जो आप का अनुयायी हो ईमान वालों में से।

२१६. और यदि वह आप की अवज्ञा करें तो आप कह दें कि मैं निर्दोष हूँ उस से जो तुम कर रहे हो।

२१७. तथा आप भरोसा करें अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् पर।

२१८. जो देखता है आप को जिस समय (नमाज़ में) खड़े होते हैं।

२१९. और आप के फिरने को सजदा करने[4] वालों में।

२२०. नि:संदेह वही सब कुछ सुनने–जानने वाला है।

२२१. क्या मैं तुम सब को बताऊँ कि किस पर शैतान उतरते हैं?

२२२. वे उतरते हैं प्रत्येक झूठे पापी[1] पर।

---

[1] अर्थात इस के अवतरित होने के समय शैतान आकाश की ओर जाते हैं तो उल्का उन्हें भस्म कर देते हैं।

[2] आदरणीय इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) कहते हैं कि जब यह आयत उतरी तो आप सफ़ा पर्वत पर चढ़े। और कुरैश के परिवारों को पुकारा। और जब सब एकत्र हो गये, और जो स्वयं नहीं आ सका तो उस ने किसी प्रतिनीधि को भेज दिया। और अबू लहब तथा कुरैश आ गये तो आप ने फ़रमाया: यदि मैं तुम से कहूँ कि उस वादी में एक सेना है जो तुम पर आक्रमण करने वाली है, तो क्या तुम मुझे सचा मानोंगे? सब ने कहा: हाँ। हम ने आप को सदा ही सच्चा पाया है। आप ने कहा: मैं तुम्हें आगामी कड़ी यातना से सावधान कर रहा हूँ। इस पर अबू लहब ने कहा: तेरे पूरे दिन नाश हो! क्या हमें इसी के लिये एकत्र किया है? और इसी पर सूरह लहब उतरी। (सहीह बुख़ारी ४७७०)

[3] अर्थात उस के साथ विनम्रता का व्यवहार करें।

[4] अर्थात प्रत्येक समय अकेले हों या लोगों के बीच हो।

२२३. वह पहुँचा देते हैं सुनी–सुनाई बातों को और उन में अधिकतर झूठे हैं।

२२४. और कवियों का अनुसरण बहके हुये लोग करते हैं।

२२५. क्या आप नहीं देखते कि वह प्रत्येक वादी में फिरते[२] हैं।

२२६. और ऐसी बात कहते हैं जो करते नहीं।

२२७. परन्तु वह (कवि) जो[३] ईमान लाये तथा सदाचार किये और अल्लाह का बहुत स्मरण किया, तथा बदला लिया इस के पश्चात् कि उन के ऊपर अत्याचार किया गया। तथा शीघ्र ही जान लेंगे जिन्होंने अत्याचार किया है कि वह किस दुष्परिणाम की ओर फिरते हैं।

✲✲✲✲✲

[१] हदीस में है कि फ़रिश्ते बादल में उतरते हैं, और आकाश के निर्णय की बात करते हैं, जिसे शैतान चोरी से सुन लेते हैं। और ज्योतिषियों को पहुँचा देते हैं। फिर वह उस में सौ झूठ मिलाते हैं। (सहीह बुख़ारी ३२१०)

[२] अर्थात कल्पना की उड़ान में रहते हैं।

[३] इन से अभिप्रेत हस्सान बिन साबित आदि कवि हैं जो क़ुरैश के कवियों की भर्त्सना किया करते थे। (देखिये : सहीह बुख़ारी ४१२४)



सूरह नम्ल – २७



सूरह नम्ल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ९३ आयतें हैं।

- इस सूरह में बताया गया है कि कुरआन को अल्लाह की किताब न मानने और शिर्क से न रुकने का सब से बड़ा कारण सत्य को नकारना है। जो मायामोह में मग्न रहते हैं उन पर कुरआन की शिक्षा का कोई प्रभाव नहीं होता और वे नबियों के इतिहास से कोई शिषीा नहीं लेते।
- इस में मूसा (अलैहिस्सलाम) को फ़िरऔन तथा उस की जाति की ओर भेजने और उन के साथ जो दुर्व्यवहार किया गया उस का दुष्परिणाम बताया गया है।
- दावूद तथा सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के विशाल राज्य की चर्चा कर के बताया गया है कि वह कैसे अल्लाह के आभारी भक्त बने रहे जिस के कारण (सबा की रानी बिल्क़ीस इस्लाम लायी।
- इस में लूत तथा सालेह (अलैहिस्सलाम) की जाति के उपद्रव का दुष्परिणाम बताया गया है तथा एकेश्वरवाद के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं।
- यह घोषणा भी की गई है कि कुरआन ने मार्गदर्शन की राह खोल दी है और भविष्य में भी इस के सत्य होने के लक्षण उजागर होते रहेंगे।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. ता, सीन, मीम। यह कुरआन तथा प्रत्यक्ष पुस्तक की आयतें हैं।

२. मार्गदर्शन तथा शुभसूचना है उन ईमान लाने वालों के लिये।

३. जो नमाज़ की स्थापना करते तथा जकात देते हैं और वही हैं जो अन्तिम दिन (परलोक) पर विश्वास रखते हैं।

४. वास्तव में जो विश्वास नहीं करते परलोक पर हम ने शोभनीय बना दिया है उन के कर्मों को, इस लिये वह बहके जा रहे हैं।

५. यही हैं जिन के लिये बुरी यातना है तथा परलोक में वही सर्वाधिक क्षति ग्रस्त रहने वाले हैं।

६. और (हे नबी!) वास्तव में आप को दिया जा रहा है कुरआन एक तत्वज्ञ सर्वज्ञ की ओर से।

७. (याद करो) जब कहा,[१] मूसा ने अपने परिजनो मैं ने आग देखी है, मैं तुम्हारे पान कोई सूचना लाऊँगा या लाऊँगा आग का कोई अँगार, ताकि तुम तापो।

८. फिर जब आया वहाँ, तो पुकारा गया: शुभ है वह जो अग्नि में है और जो उस के आस–पास है, और पवित्र है अल्लाह सर्वलोक का पालनहार।

९. हे मूसा यह मैं हूँ अल्लाह अति प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ।

१०. और पेंक दे अपनी लाठी, फिर जब उसे देखा की रेंग रही है जैसे वह कोई सर्प हो तो पीठ फेर कर भागा और पीछे फिर कर देखा भी नहीं। (हम ने कहा): हे मूसा भय न कर, वास्तव में नहीं भय करते मेरे पास रसूल।

११. उस के सिवा जिस ने अत्याचार किया हो, फिर जिस ने बदल लिया अपना कर्म भलाई से बुराई के पश्चात्, तो निश्चय मैं अति क्षम दयावान् हूँ।

१२. और डाल दे अपना हाथ अपनी जेब में वह निकलेगा उज्जवल हो कर बिना किसी रोग के, नौ निशानियों में से है, फ़िरऔन तथा उस की जाति की ओर (ले जाने के लिये) वास्तव में वे उल्लंघनकारियों में हैं।

---

[१] यह उस समय की बात है जब मूसा (अलैहिस्सलाम) मद्यन से आ रहे थे। रात्री के समय वह मार्ग भूल गये। और शीत से बचाव के लिये आग की अवश्यकता थी।

१३. फिर जब आयीं उन के पास हमारी निशानियाँ आँख खोलने वाली, तो कह दिया कि यह तो कुला जादू है।
१४. तथा उन्होंने नकार दिया उन्हें, अत्याचार तथा अभिमान के कारण, जब कि उन के दिलों ने उन का विश्वास कर लिया, तो देखो कि कैसा रहा उपद्रवियों का परिणाम?
१५. और हम ने प्रदान किया दावूद तथा सुलैमान को ज्ञान[1], और दोनों ने कहा: प्रशंसा है उस अल्लाह के लिये जिस ने हमें प्रधानता दी अपने बहुत से ईमान वाले भक्तों पर।
१६. और उत्तराधिकारी हुआ सुलैमान दावूद का, तथा उस ने कहा: हे लागो! हमें सिखाई गई है पक्षियों की बोली, तथा हमें प्रदान की गई है सब चीज़ से कुछ। वास्तव में यह प्रत्यक्ष अनुग्रह है।
१७. तथा एकत्र कर दी गयीं सुलैमान के लिये उस की सेनायें जिन्नों तथा मानवों और पक्षी की, और वह व्यवस्थित रखे जाते थे।
१८. यहाँ तक कि वे (एक बार) जब पहुँचे च्युंटिों की घायी पर, तो एक च्यूंटी ने कहा: हे च्यूंटियो! पअवेश कर जाओ अपने घरों में ऐसा न हो कि तुम्हें कुचल दे सुलैमान तथा उस की सेनायें, और उन्हें ज्ञान न हो।
१९. तो वह (सुलैमान) मुस्करा कर हँस पड़ा उस की बात पर, और कहा: हे मेरे पालनहार! मुझे क्षमता प्रदान कर कि मैं कृतज्ञ रहूँ तेरे उस पुरस्कार का जो पुरस्कार तू ने मुझ पर तथा मेरे माता-पिता पर किया है। तथा यह कि मैं सदाचार करता रहूँ जिस से तू प्रसन्न रहे और मुझे प्रवेश दे अपनी दया से अपने सदाचारी भक्तों में।
२०. और उस ने निरीक्षण किया पक्षियों का तो कहा: क्या बात है कि मैं नहीं देख रहा हूँ हुदहुद को, या वह अनुपस्थितों में है?
२१. मैं उसे कड़ी यातना दूँगा या उसे बध कर दूँगा, या मेरे पास कोई खुला प्रमाण लाये।

[1] अर्थात विशेष ज्ञान जो नबूवत का ज्ञान है जैसे मूसा अलैहिस्सलाम को प्रदान किया और इसी प्रकार अन्तिम रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस कुरआन द्वारा प्रदान किया है।

२२. तो कुछ अधिक समय नहीं बीता कि उस ने (आकार) कहा: मैं ने ऐसी बात का ज्ञान प्राप्त किया है जो आप के ज्ञान में नहीं आयी है, और मैं लाया हूँ आप के पास ''सबा''[१] से एक विश्वासनीय सूचना।

२३. मैं ने एक स्त्री को पाया जो उन पर राज्य कर रही है, और उसे प्रदान किया गया है कुछ न कुछ प्रत्येक वस्तु से तथा उस के पास एक बड़ा भव्य सिंहासन है।

२४. मैं ने उसे तथा उस की जाति को पाया कि सज्दा करते हैं सूर्य को अल्लाह के सिवा, और शोभनीय बना दिया है उन के लिये शैतान ने उन के कर्मों को और उन्हें रोक दिया है सुपथ से, अत: वह सुपथ पर नहीं आते।

२५. (शैतान ने शोभनीय बना दिया है उन के लिये) कि उस अल्लाह को सज्दा न करें जो निकालता है गुप्त वस्तु को[२] आकाशों तथा धरती में, तथा जानता वह सब कुछ जिसे तुम छुपाते हो तथा जिसे व्यक्त करते हो।

२६. अल्लाह जिस के अतिरिक्त कोई वंदनीय नहीं, जो महा सिंहासन का स्वामी है।

२७. (सुलैमान ने) कहा: हम देखेंगे कि तू सत्यवादी है अथवा मिथ्यावादियों में से है।

२८. जाओ यह मेरा पत्र लेकर, और उसे डाल दो उन को ओर, फिर वापिस आ जाओ उन के पास से, फिर देखो कि वह क्या उत्तर देते हैं?

२९. उस ने कहा: हे प्रमुखो! मेरी ओर एक महत्त्वपूर्ण पत्र डाला गया है।

३०. वह सुलैमान की ओर से है, और वह अल्लाह अत्यंत कृपाशील दयावान् के नाम से (आरंभ) है।

३१. कि तुम मुझ पर अभिमान न करो तथा आ जाओ मेरे पास आज्ञाकारी हो कर।

३२. उस ने कहा: हे प्रमुखो! मुझे परामर्श दो मेरे विषय में, मैं कोई निर्णय करने वाली नहीं हूँ जब तक तुम उपस्थित न रहो।

३३. सब ने उत्तर दिया कि हम शक्ति शाली तथा बड़े योद्धा हैं, आप स्वयं देख लें कि आप को क्या आदेश देना है।

३४. उस ने कहा: राजा जब प्रवेश करते हैं किसी बस्ती में तो उसे उज़ाड़ देते है और उस के आदरणीय वासियों को अपमानित बना देते हैं और वे ऐसा ही करेंगे।

---

[१] सबा यमन का एक नगर है।

[२] अर्थात वर्षा तथा पौधों को।

३५. और मैं भेजने वाली हूँ उन की ओर एक उपहार फिर देखती हूँ कि कया लेकर आते हैं दूत?

३६. तो जब वह (दूत) आया सुलैमान के पास, तो कहा: क्या तुम मेरी सहायता धन से करते हो? मुझे अल्लाह ने जो दिया है उस से उत्तम है जो तुम्हें दिया है, बल्कि तुम्ही अपने उपहार से प्रसन्न हो रहे हो।

३७. वापिस हो जाओ उन की ओर, हम लायेंगे उनके पास ऐसी सेनायें जिन का वह सामना नहीं कर सकेंगे, और हम अवश्य उन्हें उस (बस्ती) से निकाल देंगे अपमानित कर के और वह तुच्छ (हीन) हो कर रहेंगे।

३८. सुलैमान ने कहा: हे प्रमुखो! तुम में से कौन लायेगा[१] उस का सिंहासन इस से पहले कि वह आ जायें। आज्ञाकारी हो कर।

३९. कहा एक अतिकाय ने जिन्नों में से: मैं ला दूँगा आप के पास उसे इस से पूर्व कि आप खड़े हों अपने स्थान से, और इस पर मुझे शक्ति है मैं विश्वासनीय हुँ।

४०. कहा उस ने जिस के पास पुस्तक का ज्ञान था: मैं ला दूँगा उसे आप की पलक झपके, और जब देखा उसे अपने पास रखा हुआ, तो कहा: यह मेरा पालनहार का अनुग्रह है, ताकि मेरी परीक्षा ले कि मैं कृतज्ञता दिखाता हूँ या कृतघ्नता। और जो कृतज्ञ होता है वह अपने लाभ के लिये होता है तथाजो कृतघ्न हो तो निश्चय मेरा पालनहार निस्पृह महा् है।

४१. कहा: परिवर्तन कर दो उस के लिये उसके सिंहासन में, हम देखेंगे कि वह उसे पहचान जाती हैं या उन में से हो जाती है जो पहचानते न हों।

४२. तो जब वह आई, तो कहा गया: क्या ऐसा ही तेरा सिंहासन है? उस ने कहा: वह तो मानो वही है। और हम तो जान गये थे इस से पहले ही और आज्ञाकारी हो गये थे।

४३. और रोक रखा था उसे (ईमान से) उन (पूज्यों ने) जिस की वह इबादत (वंदना) कर रही थी अल्लाह के सिवा। निश्चय वह काफ़िरों की जाति में से थी।

---

[१] जब सुलैमान ने उपहार वापिस कर दिया और धमकी दी तो रानी ने स्वयं सुलैमान (अलैहिस्सलाम) की सेवा में उपस्थित होना उचित समझा। और अपने सेवकों के साथ फ़लस्तीन के लिये प्रस्थान किया, उस समय उन्हों ने राज्यसदस्यों से यह बात कही।

४४. उस से कहा गया कि भवन में प्रवेश कर। तो जब उसे देखा तो उसे कोई जलाशय (हौड़) समझी और खोल दी[१] अपनी दोनों पिंडलियाँ, (सुलैमान ने) कहा: यह शीशे से निर्मित भवन है। उस ने कहा: मेरे पालनहार! मैं ने अत्याचार किया अपने प्राण[२] पर और (अब) मैं इस्लाम लाई सुलैमान के साथ अल्लाह सर्वलोक के पालनहार के लिये।

४५. और हम ने भेजा समूद की ओर उनके भाई सालेह को, कि तुम सब इबादत (वंदना) करो अल्लाह की, तो अकस्मात् वे दो गिरोह होकर लड़ने लगे।

४६. उस ने कहा: हे मेरी जाति! क्यों तुम शीघ्र चाहते हो बुराई[३] को भलाई से पहले? क्यों तुम क्षमा नहीं माँगते अल्लाह से, ताकि तुम पर दया की जाये?

४७. उन्हों ने कहा: हम ने अपशकुन लिया है तुम से तथा उन से जो तेरे साथ है। (सालेह ने) कहा: तुम्हारा अपशकुन अल्लाह के पास[४] है, बल्कि तुम लोगों की परीक्षा हो रही है।

४८. और उस नगर में नौ व्यक्तियों का एक गिरोह था जो उपद्रव करते थे धरती में, और सुधार नहीं करते थे।

४९. उन्हों ने कहा: आपस में शपथ लो अल्लाह की कि हम अवश्य रात्री में छापा मार देंगे सालेह तथा उसके परिवार पर, फिर कहेंगे उस (सालेह) के उत्तराधिकारी से, हम उपस्थित नहीं थे उस के परिवार के विनाथ के समय, और निःसंदेह हम सत्यवादी (सच्चे) है।

५०. और उन्हों ने एक षड्यंत्र रचा, और हम ने भी एक उपाय किया, और वे समझ नहीं रहे थे।

५१. तो देखो कैसा रहा उन के षड्यंत्र का परिणाम? हम ने विनाश कर दिया उन का तथा उन की पूरी जाति का।

---

[१] पानी से बचाव के लिये कपड़े पाईंचे ऊपर कर लिये।

[२] अर्थात अन्य की पूजा–उपासना कर के।

[३] अर्थात ईमान लाने के बजाये इन्कार क्यों कर रहे हो?

[४] अर्थात तुम पर जो अकाल पड़ा है वह अल्लाह की ओर से है जिसे तुम्हारे कुकर्मो के कारण अल्लाह ने तुम्हारे भाग्य में लिख दिया है। और यह अशुभ मेरे कारण नहीं बल्कि तुम्हारे कुफ़्र के कारण है। (फ़त्हुल क़दीर)

५२. तो यह उन के घर हैं उजाड़ पड़े हुये उन के अत्याचार के कारण, निश्चय इस में एक बड़ी निशानी है उन लोगों के लिये जो ज्ञान रखते हैं।
५३. तथा हम ने बचा लिया उन्हें जो ईमान लाये, और (अल्लाह से) डर रहे थे।
५४. तथा लूत को (भेजा), जब उस ने अपनी जाति से कहा: क्या तुम कुकर्म कर रहे हो जब कि तुम[1] आँखें रखते हो?
५५. क्या तुम पुरुषों के पास जाते हो काम वासना की पूर्ति के लिये? तुम लोग बड़े ना समझ हो।
५६. तो उस की जाति का उत्तर बस यह था कि उन्हों ने कहा: लूत के परिजनों को निकाल दो अपने नगर से, वास्तव में यह लोग बड़े पवित्र बन रहे है।
५७. तो हम ने बचा लिया उसे तथा उस के परिवार को, उस की पत्नी के सिवा, जिसे हम ने नियत कर दिया पीछे रह जाने वालों में।
५८. और हम ने उन पर बहुत अधिक वर्षा कर दी। तो बुरी हो गई सावधान किये हुये लोगों की वर्षा।
५९. आप कह दें: सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है, और सलाम है उस के उन भक्तों पर जिन को उस ने चुन लिया। क्या अल्लाह उत्तम है या जिसे वह साझी बनाते है?
६०. या वह है जिस ने उत्पत्ति की है आकाशों तथा धरती की ओर उतारा है तुम्हारे लिये आकाश से जल, फिर हम ने उगा दिया उस के द्वारा भव्य बाग़, तुम्हारे बस में न था कि उगा देते उस के वृक्ष, तो क्या कोई पूज्य है अल्लाह के साथ? बल्कि यही लोग (सत्य से) कतरा रहे हैं।
६१. या वह है जिस ने धरती को रहने योग्य बनाया तथा उस के बीच नहरें बनायी, और उस के लिये पर्वत बनाये, और बना दी दो सागरों के बीच एक रोक। तो क्या कोई पूज्य है अल्लाह के साथ? बल्कि उन में से अधिकतर ज्ञान नहीं रखते।
६२. या वह है जो व्याकुल की प्रार्थना सुनता है जब उसे पुकारे और दूर करता है दुःख को, तथा तुम्हें बनाता है धरती का अधिकारी, क्या कोई पूज्य है अल्लाह के साथ? तुम बहुत कम ही शिक्षा ग्रहण करते हो।

[1] (देखिये : सूरह आराफ़ ८४, और सूरह हूद ८२, ८३)। इसलाम में स्त्री से भी अस्वाभिवक संभोग वर्जित हैं। (सुनन नसाई, हदीस नं. ८९८५ और सुनन इब्ने माजा, हदीस नं. १९२४)

६३. या वह है जो तुम्हें राह दिखाता है सूखे तथा सागर के अँधेरों में, तथा भेजता है वायुओं को शुभसूचना देने के लिये अपनी दया (वर्षा) से पहले, क्या कोई और पूज्य है अल्लाह के साथ? उच्च है अल्लाह उस शिर्क से जो वे कर रहे हैं।

६४. या वह है जो आरंभ करता है उत्पत्ति को, फिर उसे दुहरायेगा तथा जो तुम्हें जीविका देता हैं आकाश तथा धरती से, क्या कोई पुज्य है अल्लाह के साथ? आप कह दें कि अपना प्रमाण लाओ यदि तुम सच्चे[१] हो।

६५. आप कह दे कि नहीं जानता है जो आकाशों तथा धरती में है परोक्ष को अल्लाह के सिवा, और वे नहीं जानते कि कब फिर जीवित किये जायेंगे।

६६. बल्कि समाप्त हो गया है उन का ज्ञान आख़िरत (परलोक) के विषय में, बल्कि वे द्विधा में हैं, बल्कि वे उस से अंधे हैं।

६७. और कहा काफ़िरों ने: क्या जब हम हो जायेंगे मिट्टी तथा हमारे पूर्वज तो क्या हम अवश्य निकाले[२] जायेंगे।

६८. हमें इस का वचन दिया जा चुका है तथा हमारे पूर्वजों को इस से पहले, यह तो बस अगलों की बनायी हुई कथायें हैं।

६९. (हे नबी!) आप कह दें कि चलो–फिरो धरती में फिर देखो कि कैसा हुआ अपराधियों का परिणाम।

७०. और आप शोक न करें उन पर और न किसी संकीर्णता में रहें उस से जो चालें वह चल रहें हैं।

७१. तथा वह कहते हैं: कब यह धमकी पूरी होगी यदि तुम सच्चे हो?

७२. आप कह दें: संभव है कि तुम्हारे समीप हो उस में से कुछ जिसे तुम शीघ्र चाहते हो।

७३. तथा निःसंदेह आप का पालनहार बड़ा दयालु है लोगों[३] पर, परन्तु उन में से अधिक्तर कृतज्ञ नहीं होते।

---

[१] आयत नं. ६० से यहाँ तक का सारांश यह है कि जब अल्लाह ने ही पूरे विश्व की उत्पत्ति की है और सब की व्यवस्था वही कर रहा है, और उस का कोई साक्षी नहीं तो फिर यह मिथ्या पूज्य अल्लाह के साथ कहाँ से आ गये? यह तो ज्ञान और समझ में आने की बात नहीं और न इस का कोई प्रमाण है।

[२] अर्थात प्रलय के दिन अपनी समाधियों से जीवित निकाले जायेंगे।

[३] अर्थात लोगों को अपना अनुग्रह से अवसर देता रहता है

७४. और वास्तव में आप का पालनहार जानता है जो छुपाते हैं उन के दिल तथा जो व्यक्त करते है।

७५. और कोई छुपी चीज़ नहीं है आकाश तथा धरती में परन्तु वह खुली पुस्तक में[१] है।

७६. नि:संदेह यह कुरआन वर्णन कर रहा है इस्राईल के संतान की समक्ष उन अधिक्तर बातों को जिस में वह विभेद कर रहे हैं।

७७. और वास्तव में वह मार्ग दर्शन तथा दया है ईमान वालों के लिये।

७८. नि:संदेह आप का पालनहार[२] निर्णय कर देगा उन के बीच अपने आदेश से, तथा वही प्रबल सब कुछ जानने वाला है।

७९. अत: आप भरोसा करें अल्लाह पर, वस्तुत: आप खुले सत्य पर है।

८०. वास्तव में आप नहीं सुना सकेंगे मुर्दों को। और न सुना सकेंगे बहरों को अपनी पुकार, जब वह भागे जा रहे हों पीठ फेर[३] कर।

८१. तथा आप अँधे को मार्गदर्शन नहीं दे सकते उन के कुपथ से, आप तो बस उसी को सुना सकते है जो ईमान रखता हो हमारी आयतों पर फिर वह आज्ञाकारी हो।

८२. और जब आ जायेगा बात पूरी होने का समय उन के ऊपर[४] , तो हम निकालेंगे उन के लिये एक पशु धरती से जो बात करेगा उन[५] से कि लोग हमारी आयतों पर विश्वास नहीं करते थे।

---

[१] इस से तात्पर्य (लौहे महफ़ूज़) सुरक्षित पुस्तक है जिस में सब कुछ अंकित है।

[२] अर्थात प्रलय के दिन। और सत्य तथा असत्य को अलग कर के उस का बदला देगा।

[३] अर्थात जिन की अंतरात्म मर चुकी हो, और जिन की दुराग्रह ने सत्य और असत्य का अन्तर समझने की क्षमता खो दी हो।

[४] अर्तात प्रलय होने का समय।

[५] यह पशु वही है जो प्रलय के समीप होने का एक लक्षण है जैसा कि हदीस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन है कि प्रलय उस समय तक नहीं होंगी जब तक तुम दस लक्षण न देख लो, उन में से एक पशु का निकालना है। (देखिये : सहीह मुस्लिम हदीस नं. : २९०१)

आप का दूसरा कथन यह है कि सर्व प्रथम जो लक्षण होगा वह सूर्य का पश्चिम से निकलना होगा तथा पूर्वान्ह से पहले पशु का निकलना इस में से जो भी पहले होगा शीघ्र ही दूसरा उस के पश्चात् होगा।(देखिये : सहीह मुस्लिम हदीस नं. : २९४१) और यह पशु मानव–भाषा में बात करेगा जो अल्लाह के सामर्थ्य का एक चिन्ह होगा।

८३. तथा जिस दिन हम घेर लायेंगे प्रत्येक समुदाय से एक गिरोह उन का जो झुठलाते रहे हमारी आयतों को फिर वह सब (एकत्र किये जाने के लिये) रोक दिये जायेंगे।

८४. यहाँ तक कि जब सब आ जायेंगे तो अल्लाह उन से कहेगाः क्या तुम ने मेरी आयतों को झुठला दिया जब कि तुम ने उन का पूरा ज्ञान नहीं किया, अन्यथा तुम और क्या कर रहे थे?

८५. और सिद्ध हो जायेगा यातना का वचन उन के ऊपर उन के अत्याचार के कारण। तब वह बात नहीं कर सकेंगे।

८६. क्या उन्हों ने नहीं देखा कि हम ने रात बनाई ताकि वह शान्त रहें उस में, तथा दिन को दिखाने वाला।[१] वास्तव में इस में बड़ी निशानियाँ (लक्षण) हैं उन लोगों के लिये जो ईमान लाते हैं।

८७. और जिस दिन फूँका जायेगा सूर[२] (नरसिंघा) में,तो घबरा जायेंगे जो आकाशों तथा धरती में हैं। परन्तु वह जिसे अल्लाह चाहे, तथा सब उस (अल्लाह) के समक्ष आ जायेंगे विवश हो कर।

८८. और तुम देखते हो पर्वतों को तो उन्हें समझते हो स्थिर (अचल) हैं, जब कि वह(उस दिन) उड़ेंगे बादल के समान, यह अल्लाह की रचना है जिस ने सुदृढ़ किया है प्रत्येक चीज़ को, निश्चय वह भली–भाँति सूचित है उस से जो तुम कर रहे हो।

८९. जो भलाई[3] लायेगा, तो उस के लिये उस से उत्तम (प्रतिफल) है और वह उस दिन की व्यग्रता से निर्भय रहने वाले होंगे।

९०. और जो बुराई लायेगा, तो वही झोंक दिये जायेंगे औंधे मुँह नरक में (तथा कहा जायेगा) : तुम्हें वही बदला दिया जा रहा है जो तुम करते रहे हो।

९१. मुझे तो बस यही आदेश दिया गया है कि इस नगर (मक्का) के पालनहार कीइबादत (वंदना) करूँ जिस ने उसे आदरणीय बनाया है, तथा उसी केअधिकार में है प्रत्येक चीज़ और मुझे आदेश दिया गया है कि आज्ञाकारियों में से रहूँ।

---

[१] जिस के प्रकाश में वह देखें और अपनी जीविका के लिये प्रयास करें।

[२] अर्थात प्रलय के दिन।

[३] अर्थात एक अल्लाह के प्रति आस्था तथा तदानुसार कर्म ले कर प्रलय के दिन आयेगा।

९२. तथा कुरआन पढ़ता रहूँ, तो जिस ने सुपथ अपनाया तो वह अपने ही लाभ के लिये सुपथ अपनायेगा। और जो कुपथ हो जाये तो आप कह दें कि वास्तव में मैं तो बस सावधान करने वालों में से हूँ।

९३. तथा आप कह दें कि सब प्रशंसा अल्लाह के लिये हैं, वह शीघ्र तुम्हें दिखा देगा अपनी निशानियाँ जिन्हें तुम पहचान[१] लोगे और तुम्हारा पालनहार उस से अचेत नहीं है जो कुछ तुम कर रहे हो।

*****

[१] देखिये सूरह हा, मीम सजदा, आयत – ५३

सूरह कसस – २८

सूरह काम के संक्षिप्त विषय
य सूरह मक्की है, इस में ८८ आयतें हैं।

- इस सूरह का नाम इस की आयत नं. २५ में आये हुये शब्द कसस से लिया गया है। जिस का अर्थः वाक्य क्रम का वर्णन करना है। इस सूरह में मूसा (अलैहिस्सलाम) के जन्म, उन का अपने शत्रु के भवन में पालन–पोषण, फिर उन के मद्यन जाने और दस वर्ष के पश्चात् अपने परिजनों के साथ अपने देश वापिस आने और राह में नबूवत और चमत्कार मिलने और फिरऔन तथा उस कही जाति के ईमान न लाने के कारण अपनी सेना के साथ डुबो दिये जाने का पुरा विवरण है। जिस से यह बताया गया है कि अल्लाह जो कुछ करना चाहता है उस के संसाधन इस प्रकार बना देता है कि किसी को उस का ज्ञान भी नहीं होता। इसी प्रकार किसी को नबी बनाने के लिये आकाश और धरती में कोई एलान नहीं किया जाता। अतः यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि मुहम्मद (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) कैसे और कब नबी हो गये।
- इस में यह बताया गया है कि अल्लाह जिस से काम लेना चाहता है उसे किसी राज्य और सेना की सहायता आवश्यकता नहीं होती और अन्ततः वही सफल होता है।
- इस मे यह संकेत भी है कि सत्य के विरोधी चमत्कार की माँग तो करते है किन्तू वह चमत्कार देख कर भी ईमान नहीं लाते जैसा कि मूसा (अलैहिस्सलाम) की जाति ने किया और स्वयं अपना विनाश कर लिया।
- यह पुरी सूरह नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सत्य नबी होने का प्रमाण भी है क्यों कि हजारो वर्ष पुरानी मूसा (अलैहिस्सलाम) की पूरी स्थिती का विवरण इस प्रकार वही दे सकता है जिसे अल्लाह ने वह्यी द्वारा यह सब कुछ बताया हो। अन्यथा आप स्वयं निरक्षर थे और अरब में आप के पास ऐसे साधन भी नहीं थे जिस से आप यह सब कुछ जान सकें।

- इस में मक्का के काफिरों को कुछ ईसाईयों के कुरआन पाक सुन कर ईमान लाने पर लज्जित किया गया है कि तुम ने अपने घर की बात नहीं मानी।
- और इस के अन्त में नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) को दिलासा देते हुये सत्य पर स्थित रहने का निर्देश दिया गया है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. ता, सीन, मीम।

२. यह इस खुली पुस्तक की आयते है।

३. हम आप के समक्ष सुना रहें हैं मूसा तथा फिरऔन के कुछ समाचार सत्य के साथ उन लोगों के लिये जो ईमान रखते है।

४. वास्त मे फिरऔन ने उपद्रव किया धरती में और कर दिया उस के निवासियों को कई गिरोह। वह निर्बल बना रहा था एक गिरोह के उन में से, बध कर रहा था उन के पुत्रों को और जीवित रहने देता था उन की स्त्रियों को। निश्चित वह उपद्रवियों में से था।

५. तथा हम चाहते थे कि उन पर दया करें जो निर्बल बना दिये गये धरती में तथा बना दे उन्हीं को प्रमुख और बना दें उन्ही को[१] उत्तराधिकारी।

६. तथा उन्हें शक्ति प्रदान कर दें धरती में और दिखा दें फिरऔन तथा हामान और उन की सेनाओं को उन की ओर से वह जिस से वह डर रहे[२] थे।

७. और हम ने वह्यी[३] की मूसा की माता की ओर कि उसे दूध पिलाती रह और जब तुझे उस पर भय हो तो उसे सागर में डाल दे, और भय न कर और न चिन्ता कर, निःसंदेह हम वापस लायेंगे उसे तेरी ओर, और बना देंगे उसे रसूलों में से।

८. तो ले लिया उसे फिरऔन के कर्मचारियों ने[४] ताकि वह बने उन के लिये शत्रु तथा दुःख का कारण। वास्त में फिरऔन तथा हामान और उन की सेनायें दोषी थी।

९. और फिरऔन की पत्नी ने कहाः यह मेरी तथा आप की आँखों की ठण्डक है। इसे बध न करो, संभव है हमें लाभ पहुँचाये या उसे हम पुत्र बना लें। और वह समझ नहीं रहें थे।

---

[१] अर्थात मिस्र देश को राज्य उन्हीं को प्रदान कर दें।

[२] अर्थात बनी इस्राईल के हाथों अपने राज्य के पतन से।

[३] जब मूसा का जन्म हुआ तो अल्लाह ने उन के माता के मन में यह बातें डाल दी।

[४] अर्थात उसे एक संदूक में रख कर सागर में डाल दिया जिसे फिरऔन की पत्नी ने निकाल कर उसे (मूसा को) अपना पुत्र बना लिया।

१०. और हो गया मूसा की माँ का दिल व्याकुल, समीप था कि वह उस का भेद खोल देती यदि हम आश्वासन न देते इस के दिल को, ताकि वह हो जाये विश्वास करने वालों में।

११. तथा (मूसा की माँ ने) कहाः उस की बहन से कि तू इस के पीछे–पीछे जा। तो उस ने उसे दूर ही दूर से देखा और उन्हें इस का आभास तक न हुआ।

१२. और हम ने अवैध (निषेध) कर दिया । उस (मूसा) पर दाईयों को इस से[1] पूर्व। तो उस (कि बहन) ने कहाः क्या मैं तुम्हें न बताऊँ ऐसा घराना जो पालनपोषण करे इस का तुम्हारे लिये तथा वह उस के शुभचिन्तक हों?

१३. तो हम ने फेर दिया उसे उस की माँ की ओर ताकि ठण्डी हो उस की आँख और चिन्ता न करे, और ताकि उसे विश्वास हो जाये कि अल्लाह का वचन सच्च है, परन्तु अधिक्तर लोग विश्वास नहीं रखते।

१४. और जब वह अपनी युवावस्था को पहुँचा और उस का विकास पूरा हो गया तो हम ने उसे प्रबोध तथा ज्ञान दिया। और इसी प्रकार हम बदला देता हैं सदाचारियों को।

१५. और उस ने प्रवेश किया नगर में उस के वासियों की अचेतना के समय, और उस में दो व्यक्तियों को लडते हुये पाया, यह उस के गिरोह से था और दुसरा उस के शत्रु में[2] से। तो उसे पुकारा उस ने जो उस के गिरोह से था उस के विरुद्ध जो उस के शत्रु में से था। जिस पर मूसा ने उसे घूँसा मारा और वह मर गया। मूसा ने कहाः यह शैतानी कर्म है। वास्तव में वह शत्रु है खुला कुपथ करने वाला।

१६. उस ने कहाः हे मेरे पालनहार! मैं ने अपने ऊपर अत्याचार करत लिया, तू मुझे क्षमा कर दे। फिर अल्लाह ने उसे क्षमा कर दिया। वास्तव में वह क्षमाशील अति दयावान् है।

१७. उस ने कहाः उस के कारण जो तू ने मुझ पर पुरस्कार किया है अब मैं कदापि अपराधियों का सहायक नहीं बनूँगा।

---

[1] अर्थात उस की माता के पास आने पूर्व।

[2] अर्था एक इस्राईली तथा दूसरा किब्ती फिरऔन की जाति से था।

१८. फिर प्रातः वह नगर में डरता हुआ समाचार लेने गया तो सहसा वही जिस ने उस के कल सहायता माँगी थी, उसे पुकार रहा है। मूसा ने उस से कहाः वास्तव में तू ही खुला कुपथ है।

१९. फिर जब पकडना चाहा उसे जो उन दोनों का शत्रु था, तो उस ने कहाः हे मूसा! क्या तू मुझे मार देना चाहता है जैसे मान दिया एक व्यक्ति को कल? तू तो चाहता है कि बडा उपद्रवी बन कर रहे इस धरती में और तू नहीं चाहता कि सुधार करनेवालों में से हो।

२०. और आया एक पुरष नगर के किनारे से दौडता हुआ, उस ने कहाः हे मूसा! (राज्य के) प्रमुख परामर्श कर रहे हैं में तेरे विषय में कि तुझे बध कर दें, अतः तू निकल जा। वास्तव में मैं तेरे शुभचिन्तकों मे से हू।

२१. तो वह निकल गया उस (नगर) से डरा सहमा हुआ। उस ने प्रार्थना कीः हे मेरे पालनहार! मुझे बचा ले अत्याचारी जाति से।

२२. और जब वह जाने लगा मद्यन की ओर, तो उस ने कहाः मुझे आशा है कि मेरा पालनहार मुझे दिखायेगा सीधा मार्ग।

२३. और जब उतरा मद्यन के पानी पर तो पाया उस पर लोगों को एक समूह जो (अपने पशुओं को) पानी पिला रहा था। तथा पाया उस के पीछे दो स्त्रियों को (अपने पशुओं को) रोकती हुईं। उस ने कहाः तुम्हारी समस्या क्या है? दोनों ने कहाः हम पानी नहीं पिलाती जब तक चरवाहे चले न जायें, और हमारे पिता बहुत बूढे है।

२४. तो उस ने पिला दिया दोनों के लिये। फिर चल दिया छाया की ओर, और कहने लगाः हे मेरे पालनहार! तू जो भी भलाई मुझ पर उतार दे मैं उस का आकांक्षी हूँ।

२५. तो आई उस के पास दोनों में से एक स्त्री चलती हुयी लज्जा के साथ, उस ने कहाः मेरे पिता[१] आप को बुला रहे हैं। ताकि आप को उस का परिश्रमिक दें जो आप ने पानी पिलाया है हमारे लिये। फिर जब (मूसा) उस के पास पहूँचा और

[१] व्याख्या कारों ने लिखा है कि वह आदरणीय शुऐब (अलैहिस्सलाम) थे जो मद्यन के नबी थे। (इब्ने कसीर)

पूरी कथा उसे सुनाई तो उस ने कहाः भय न कर। तू मुक्त हो गया अत्याचारी[1] जाति से।

२६. कहा उन दोनों में से एक नेः हे पिता! आप इन को सेवक रख लें, सब से उत्तम जिसे आप सेवक बनायें वही हो सकता है जो प्रबल विश्वासनीय हो।

२७. उस ने कहाः मैं चाहता हूँ कि विवाह दूँ तुम्हें अपनी इन दो पुत्रियों में से एक से, इस पर कि मेरी सेवा करोगे आठ वर्ष, फिर यदि तुम पूरा कर दो दस (वर्ष) तो यह तुम्हारी इच्छा है। मैं नहीं चाहता कि तुम पर बोझ डालूँ, और तुम मुझे पाओगे यदि अल्लाह ने चाहा तो सदाचारियों में से।

२८. मूसा ने कहाः यह मेरे और आप के बीच (निश्चित) है। मैं दो में से जो भी अवधि पूरी कर दूँ, मुझ पर कोई अत्याचार न हो। और अल्लाह उस पर जो हम कह रहे हैं निरीक्षक है।

२९. फिर जब पूरी कर ली मूसा ने अवधि और चला अपने परिवार के साथ तो उस ने देखी तूर (पर्वत) की ओर एक अग्नि। उस ने अपले परिवार से कहाः रुको मैं ने देखी है एक अग्नि, संभव है तुमहारे पास लाऊँ वहाँ से कोई समाचार अथवा कोई अंगार अग्नि का ताकि तुम ताप लो।

३०. फिर जब वह वहाँ आया तो पुकारा गया वादी के दायें किनारे से, शुभ क्षेत्र में वृक्ष सेः हे मूसा! निःसंदेह मैं ही अल्लाह हूँ सर्वलोक का पालनहार।

३१. और फेंक दो आपनी लाठी, फिर जब उसे देखा कि रेंग रही मानो वह कोई सर्प हो तो भागने लगा पीठ फेर कर और पीछे फिर कर नहीं देखा। हे मूसा! आगे आ तथा भय न कर, वास्तव में तू सुरक्षितों में से है।

३२. डाल अपना हाथ अपनी जेब में वह निकलेगा उज्जवल हो कर बिना किसी रोग के। और चिमटा ले अपनी ओर अपनी भुजा, भय दूर करने के लिये तो यह दो खुली निशानियाँ हैं तेरे पालनहार की ओर से फिरऔन तथा उस के प्रमुखों के लिये, वास्तव में वह उल्लंघनकारी जाति हैं।

३३. उस ने कहाः मेरे पालनहार! मैं ने बध किया है उन के एक व्यक्ति को। अतः मैं डरता हूँ कि वह मुझे मार देंगे।

---

[1] अर्थात फिरऔनियों से।

३४. और मेरा भाई हारून मुझ से अधिक सुभाषी है, तू उसे भी भेज दे मेरे साथ सहायक बना कर ताकि वह मेरा समर्थन करे, मैं डरता हूँ कि वह मुझे झुठला देगें।

३५. उस ने कहाः हम तुझे बाहुबल प्रदान करेंगे तेरे भाई द्वारा, और बनायेंगे तुम दोनों के लिये ऐसा प्रभाव कि वह तुम दोनों तक नहीं पहुँच सकेंगे अपनी निशानियों द्वारा, तुम दोनों तथा तुम्हारे अनुयायी ही ऊपर रहेंगे।

३६. फिर जब मूसा उन के पास हमारी खुली निशानियाँ लाया, तो उन्हों ने कह दिया कि यह तो केवल घडा हुआ जादू है और हम ने कभी नहीं सुनी यह बात अपने पूर्वजों के युग में।

३७. तथा मूसा ने कहाः मेरा पालनहार अधिक जानता है उसे जो मार्गदर्शन लाया है उस के पास से और किस का अन्त अच्छा होन है? वास्तव में अत्याचारी सफल नहीं होगें।

३८. तथा फिरऔन ने कहाः हे प्रमुखो! मैं नहीं जानता तुम्हारा कोई पूज्य अपने सिवा। तो हे हामान! ईंटें पकवा कर मेरे लिये एक उँचा भवन बना दे। संभव है मैं झाँक कर देख लूँ मूसा के पूज्य को, और निश्चय मैं उसे समझता हूँ झूठों में से।

३९. तथा घमंड किया उस ने तथा उस की सेनाओं ने धरती में अवैध, और उन्हों ने समझा कि वह हमारी ओर वापिस नहीं लाये जायेंगे।

४०. तो हम ने पकड़ लिया उसे और उस की सेनाओं को, फिर फेंक दिया हम ने उन्हें सागर में, तो देखो कि कैसा रहा अत्याचारियों का अन्त (परिणाम)।

४१. और हम ने उन्हें बना दिया ऐसा अगुवा जो बुलाते हों नरक की ओर तथा प्रलय के दिन उन की सहायता नहीं की जागेगी।

४२. और हम ने पीछे लगा दिया उन के संसार में धिक्कार को और प्रलय के दिन वह बड़ी दुर्दशा में होंगे।

४३. और हम ने मूसा को पुस्तक प्रदान की इस के पश्चात् कि हम ने विनाश कर दिया प्रथम समुदायों का, ज्ञान का साधन बना कर लोगों के लिये तथा मार्गदर्शन और दया ताकि वे शिक्षा लें।

४४. और (हे नबी!) आप नहीं थे पश्चिमी दिशा में[१] जब हम ने पहुँचाया मूसा की ओर यह आदेश और आप नहीं थे उपस्थितों[२] में।
४५. परन्तु (आप के समय तक) हम ने बहुत से समुदायों को पैदा किया फिर उन पर लम्बी अवधि बीत गई तथा आप उपस्थित न थे मद्यन के वासियों में कि सुनाते उन्हें हमारी आयतें और परन्तु हम की रसूलों को भेजने[३] वाले है।
४६. तथा नहीं थे आप तूर के अंचल में जब हम ने उसे पुकारा, परन्तु आप के पालनहार की दया है, ताकि आप सतर्क करें जिन के पास नहीं आया कोई सचेत करने वाला आप से पूर्व, ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें।
४७. तथा यदि यह बात न होती कि उन पर कोई आपदा आ जाती उन के कर्तूतों के कारण, तो कहते कि हमारे पालनहार तू ने क्यों नहीं भेजा हमारी ओर कोई रसूल कि हम पालन करते तेरी आयतों का, और हो जाते ईमान वालों में से।[४]
४८. फिर जब आ गया उन के पास सत्य हमारे पास से तो कह दिया कि क्यों नहीं दिया गया उसे वही जो मूसा को (चमत्कार) दिया गया, तो क्या उन्हों ने कुफ्र (इन्कार) नहीं किया उस का जो मूसा दिये गये इस से पूर्व? उन्हों ने कहाः दो[५] जादूगर हैं दोनों एक–दुसरे के सहायक हैं। और कहाः हम किसी को नहीं मानते।
४९. (हे नबी!) आप ह देंः तब तुम्हीं ला दो कोई पुस्तक अल्लाह की ओर से जो अधिक मार्ग दर्शक हो इन दोनों[६] से, मैं चलूँगा उस पर यदि तुम सच्चे हो।
५०. फिर भी यदि वे पूरी न करें आप की माँग, तो आप जान लें कि वे अपनी मनमानी कर रहे हैं, और उस से अधिक कुपथ कौन है जो मनमानी करे अपनी अल्लाह की

---

[१] पश्चिमी दिशा से अभिप्राय तूर पर्वत का पश्चिमी भाग है जहाँ मूसा (अलैहिस्सलाम) को तौरात प्रदान की गई।

[२] इन से अभिप्राय वह बनी ईस्राईल हैं जिन से धर्मबिधान प्रदान करते समय उस का पालन करने का वचन लिया गया था।

[३] भावार्थ यह है कि आप (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) हजारो वर्ष पहले के जो समाचार इस समय सुना रहे हैं जैसे आँखो से देखे हों वह अल्लाह की ओर से वह्यी के कारण ही सुना रहे हैं जो आप के सच्चे नबी होने का प्रमाण है।

[४] अर्थात आप को उन की ओर रसूल बना कर इय लिये भेजा है ताकि प्रलय के दिन उन को यह कहने का अवसर न मिले कि हमारे पास कोई रसूल नहीं आया ताकि हम ईमान लाते।

[५] अर्था मूसा (अलैहिस्सलाम) तथा उन के भाई हारून (अलैहिस्सलाम)। और भावार्थ यह है कि चमत्कारों की माँग, न मानने का एक बहाना है।

[६] अर्थात कुरआन और तौरात से।

ओर से बिना किसी मार्गदर्शन के? वास्तव में अल्लाह सुपथ नहीं दिखाता है अत्याचारी लोगों को।

५१. और (हे नबी!) हम ने निरन्तर पहुँचा दिया है उन को अपनी बात, (कुरआन) ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें।

५२. जिन को हम ने प्रदान की है पुस्तक[१] इस (कुरआन) से पहले वह[२] इस पर ईमान लाते हैं।

५३. तथा जब उन्हें सुनाया जाता है तो कहते हैः हम इस (कुरआन) पर ईमान लाये, वास्तव में वह सत्य है हमारे पालनहार की ओर से, हम तो इसके (उतारने के) पहले ही के मुस्लिम हैं।[३]

५४. यही दिये जायेंगे अपना बदला दुहरा[४] अपने धैर्य के कारण, और वह दूर करते हैं अच्छाई के द्वारा बुराई को। और उस में से जो हम ने उन्हें दिया है दान करते हैं।

५५. और जब वह सुनते हैं व्यर्थ बात तो विमुख हो जाते हैं उस से। तथा कहते हैंः हमारे लिये हमारे कर्म हैं और तुम्हारे लिये तुम्हारे कर्म। सलाम है तुम पर हम (उलझना) नहीं चाहते आज्ञानों से।

५६. (हे नबी!) आप सुपथ नहीं दर्शा सकते जिसे चाहें,[५] परन्तु अल्लाह सुपथ दर्शाता है है जिसे चाहे, और वह भली–भाँति जानता है सुपथ प्राप्त करने वालों को।

५७. तथा उन्हों ने कहाः यदि हम अनुसरण करें मार्ग दर्शन का आप के साथ, तो अपनी धरती से उचक[६] लिये जायेंगे। क्या हम ने निवासस्थान नहीं गनाया है उन के लिये भयरहित (हरम)[७] को उन के लिये, खिंचे चले आ रहे है जिस की ओर प्रत्येक

---

[१] अर्थात तौरात तथा इंजील।

[२] अर्थात उन में से जिन्हों ने अपनी मूल पुस्तक में परिवर्तन नहीं किया है।

[३] अर्थात आज्ञाकारी तथा एकेश्वरवादी हैं।

[४] अपनी पुस्तक तथा कुरआन दोनों पर ईमान लाने के कारण। (देखियेः सहीह बुखारी–९७, मुस्लिम–१५४)

[५] हदीस में वर्णित है कि जब नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) के (काफिर) चाचा अबू तालिब के निधन का समय हुआ, तो आप उन के पास गये। उस समय उन के पास अबू जह्ल तथा अब्दुल्लाह बिन अबि उमय्या उपस्थित थे। आप ने कहाः चाचा (ला इलाहा इल्लल्लाह) कह दें ताकि मैं क्यामत के दिन अल्लाह से आप की क्षमा के लिये सिफारिश कर सकूँ। परन्तु दोनों के कहने पर उन्हों ने अस्विकार कर दिया औन का अन्त कुफ्र पर हुआ। इसी विषय में यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी हदीस नं. ४७७२)

[६] अर्थात हमारे विरोधी हम पर आक्रमण कर देंगे।

[७] अर्थात मक्का नगर को।

प्रकार के फल जीविका स्वरुप हमारे पास से? और परन्तु उन में से अधिक्तर लोग नहीं जानते।

५८. और हम ने विनाश कर दिया बहुत सी बस्तियों का इतराने लगी जिन की जिवीका। तो यह हैं उन के घर जो आबाद नहीं किये गये उन के पश्चात् परन्तु बहुत थोडे और हम ही उत्तराधिकारी रह गये।

५९. और नहीं है आप का पालनहार विनाश करने वाला बस्तियों को जब तक उन के केन्द्र में कोई रसूल नहीं भेजता जो पढ़ कर सुनाये उन के समक्ष हमारी आयतें, और हम बस्तियों का विनाश करने वाले नहीं परन्तु जब उस के निवासी अत्याचारी हों।

६०. तथा जो कुछ तुम दिये गये हो वह संसारिक जीवन का सामान तथा उस की शोभा है। और जो अल्लाह के पास है उत्तम तथा स्थायी है, तो क्या तुम समझते नहीं हो?

६१. तो क्या जिसे हम ने वचन दिया है एक अच्छा वचन के जैसा हो सकता है जिसे हम ने दे रखा है संसारिक जीवन का सामान फिर वह प्रलय के दिन उपस्थित किये लोगों में से होगा?[१]

६२. और जिस दिन वह[२] उन्हें पुकारेगा, तो कहेगाः कहाँ है मेरे साझी जिन्हें तुम समझ रहे थे?

६३. कहेंगे वह जिन पर सिद्ध हो चुकी है यह बातः[३] हे हमारे पालनहार! यही हैं जिन्हें हम ने बहका दिया, और हम ने इन को बहकाया जैसे हम बहके, हम उन से अलग हो रहे हैं तेरे समक्ष यह हमारी पूजा[४] नहीं कर रहे थे।

६४. तथा कहा जायेगाः पुकारो अपने साझियों को। तो वे पुकारेंगे, और वह उन्हें उत्तर तक नहीं देंगे, तथा वह यातना देख लेंगे तो कामना करेंगे कि उन्होंने सुपथ अपनाया होता!

---

[१] अर्थात दण्ड और यातना का अधिकारी होगा।

[२] अर्थात अल्लाह प्रलय के दिन पुकारेगा।

[३] अर्थात दण्ड और यातना के अधिकारी होने की।

[४] यह हमारे नहीं बल्कि अपने मन के पूजारी थे।

६५. और वह (अल्लाह) उस दिन उन को पुकारेगा, फिर कहेगाः तुम ने क्या उत्तर दिया रसूलों को?

६६. तो नहीं सूझेगा उन्हें कोई उत्तर उस दिन और न वह एक–दुसरे से प्रश्न कर सकेंगे।

६७. फिर जिस ने क्षमा माँग ली[१] तथा ईमान लाया और सदाचार किया, तो आशा कर सकता है कि वह सफल होने वालों में से होगा।

६८. और आप का पालनहार उत्पन्न करता है जो चाहे, तथा निर्वाचित करता है। नहीं है उन के लिये कोई अधिकार, पवित्र है अल्लाह तथा उच्च है उन के साझी बनाने से।

६९. और आप का पालनहार ही जानता है जो छुपाते है उन के दिल तथा जो व्यक्त करते है।

७०. तथा वही अल्लाह[२] है कोई वन्दनीय (सत्य पूज्य) नहीं है उस के सिवा, उसी के लिये सब प्रशंसा है लोक तथा परलोक में तथा उसी के लिये शासन है और तुम उसी की ओर फेरे[३] जाओगे।

७१. (हे नबी!) आप कहियेः तुम बताओ कि यदि बना दे तुम पर रात्रि को निरन्तर क्यामत के दिन तक, तो कौन पूज्य है अल्लाह के सिवा जो ला दे तुम्हारे पास प्रकाश? तो क्या तुम सुनते नहीं हो?

७२. आप कहियेः तुम बताओ, यदि अल्लाह कर दे तुम पर दिन को निरन्तर क्यामत के दिन तक, तो कौन पुज्य है अल्लाह के सिवा जो ला दे तुम्हारे पास रात्रि जिस में तुम शान्ति प्राप्त करो, तो क्या तुम देखते नहीं[४] हो?

७३. तथा अपनी दया ही से उस ने बनाये हैं तुम्हारे लिये रात्रि तथा दिन ताकि तुम शान्ति प्राप्त करो उस में और ताकि तुम खोज करो उस के अनुग्रह (जिवीका) की, और ताकि तुम उस के कृतज्ञ बनो।

---

[१] अर्थात संसार में से।

[२] अर्थात जो उत्पति करता तथा सब अधिकार और ज्ञान रखता है।

[३] अर्थात हिसाब और प्रतिफल के लिये।

[४] अर्थात रात्रि तथा दिन के परिवर्तन को।

७४. और अल्लाह जिस दिन उन्हें पुकारेगा, तो कहेगाः कहाँ हैं वे जिन को तुम मेरा साझी समझ रहे थे?

७५. और हम निकाल लायेंगे प्रत्येक समुदाय से एक गवाह, फिर कहेंगेः लाओ अपने[१] तर्क? तो उन्हें ज्ञान हो जायेगा कि सत्य अल्लाह ही की ओर है, और उन से खो जायेंगी जो बातें वे घड रह थे।

७६. कारून[२] था मूसा की जाति में से। फिर उस ने अत्याचार किया उन पर, और हम ने उसे प्रदान किया इतने कोष कि उस की कुंजियाँ भारी थी एक शक्तिशाली समुदाय पर। जब कहा उस से उस की जाति नेः मत इतरा, वास्तव में अल्लाह प्रेम नहीं करता है इतराने वालों से।

७७. तथा खोज कर उस से जो दिया है अल्लाह ने तुझे आखिरत (परलोक) का घर, और मत भूल अपना संसारिक भाग और उपकार कर जैसे अल्लाह ने तुझ पर उपकार किया है। तथा मत खोज कर धरती में उपद्रव की, निश्चय अल्लाह प्रेम नहीं करता है उपद्रवियों से।

७८. उस ने कहाः मैं तो उसे दिया गया हूँ बस अपने ज्ञान के कारण। क्या उसे यह ज्ञान नहीं हुआ कि अल्लाह ने विनाश किया है उस से पहले बहुत से समुदायों को जो उस से अधिक थे धन तथा समूह में, और प्रश्न नहीं किया जाता[३] अपने पापों के सम्बंध में अपराधियों से।

७९. एक दिन वह निकला अपनी जाति पर अपनी शोभा में, तो कहा उन लोगों ने जो चाहते थे संसारिक जीवनः क्या ही अच्छा होता कि हमारे लिये (भी) उसी के समान (धन–धान्य) होता जो दिया गया है कारून को! वास्तव में वह बडा शौभाग्यशाली है।

८०. तथा उन्हों ने कहा जिन को ज्ञान दिया गयाः तुम्हारा बुरा हो! अल्लाह का प्रतिकार उस के लिये उत्तम है जो ईमान लाये तथा सदाचार करे, और यह सोच धैर्यवानों ही को मिलती है।

---

[१] अर्थात शिर्क के प्रमाण।

[२] यहाँ से धन के गर्व तथा उस के दुष्परिणाम का एक उदाहरनण दिया जा रहा है कि कारून, मूसा (अलैहिस्सलाम) के युग का एक धनी व्यक्ति था।

[३] अर्थात विनाश के समय।

८१. अन्ततः हम ने धंसा दिया उस के तथा उस के घर सहित धरती को, तो नहीं रह गया उस का कोई समुदाय जो सहायता करे उस की अल्लाह के आगे, और न वह स्वयं आपनी सहायता कर सका।

८२. और जो कामना कर रहे थे उस के स्थान की कल, कहने लगेः क्या तुम देखते नहीं कि अल्लाह अधिक कर देता है जीविका जिस के लिये चाहता हो अपने दासों में से और नाप कर देता है (जिसे चाहता है)। यदि हम पर उपकार न होता अल्लाह का, तो हमें भी धंसा देता। क्या तुम देखते नहीं कि काफिर (कृतघ्न) सफल नहीं होते।

८३. यह परलोक का घर (स्वर्ग) है हम उसे विशेष कर देंगे उन के लिये जो नहीं चाहते बडाई करना धरती में और न उपद्रव करना, और अच्छा परिणाम आज्ञा-कारियों[1] के लिये है।

८४. जो भलाई लायेगा उस के लिये उस से उत्तम (भलाई) है। और जो बुराई लायेगा तो नहीं बदला दिया जायेगा उन को जिन्होंने बुराईयाँ की हैं परन्तू वही जो वे करते रहे।

८५. और (हे नबी!) जिस ने आप पर कुरआन उतारा है वह आप को लौटाने वाला है आप के नगर (मक्का) की[2] ओर। आप कह दें कि मेरा पालनहार भली-भाँति जानने वाला है कि कौन मार्गदर्शन लाया है, और कौन खुले कुपथ में है।

८६. और आप आशा नहीं रखते थे कि अवतरित की जायेगी आप की ओर यह पुस्तक[3], परन्तु यह दया है आप के पालनहार की ओर से अतः आप कदापि न हों सहायक काफिरों के।

८७. और वह आप को न रोकें अल्लाह की आयतों से इस के पश्चात् जब उतार दी गईं आप की ओर, और बुलाते रहें अपने पालनहार की ओर। और कदापि आप न हों मुश्रिकों में से।

---

[1] इस में संकेत है कि धरती में गर्व तथा उपद्रव का मूलाधार अल्लाह की अवैज्ञा है।

[2] अर्थात आप जिस शहर मक्का से निकाले गये हैं उसे विजय कर लेंगे। और यह भविष्य वाणी सन् ८ हिज्री में पूरी हुई (सहीह बुखारी : ४७७३)

[3] अर्थात कुरआन पाक।

८८. और आप न पुकारें किसी अन्य पूज्य को अल्लाह के साथ, नहीं है कोई वंदनीय (सत्य पूज्य) उस (अल्लाह) के सिवा। प्रत्येक वस्तु नाशवान है सिवाय उस के स्वरुप के। उसी का शासन है और उसी की ओर तुम सब फेरे[१] जाओगे।

*****

[१] अर्थात प्रलय के दिन हिसाब तथा अपने कर्मों का फल पाने के लिये।

सूरह अन्कबूत–२९

सूरह अन्कबूत के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मककी है, इस में ६९ आयतें है।

– इस सूरह का यह नाम इस की आयत नं. ४१ में आये हुये शब्द अन्कबूत से लिया गया है। जिस का अर्थ मकडी है। इस सूरह में, जो अल्लाह के सिवा दूसरों को अपना संरक्षक बनाते हैं उन की उपमा मकडी से दी गई है। जिस का घर सब से अधिक निर्बल होता है। इसी प्रकार मुश्रिकों का भी कोई सहारा नहीं होगा।

– इस में उन लोगों को निर्देश दिये गये हैं जो ईमान लाने के कारण सताये जाते हैं और अनेक प्रकार की परीक्षाओं से जूझते हैं। और कई नबियों के उदाहरण दिये गये हैं जिन्हों ने अपनी जातियों के अत्याचार का सामना किया। और धैर्य के साथ सत्य तथा तौहीद पर स्थित रहे औ अन्ततः सफल हुये।

– इस में मुश्रिकों के लिये सोच–विचार का आमंत्रण तथा विरोधियों के संदेहों का निवारण किया गया है। और तौहिद तथा परलोक की वास्तविक्ता की ओर ध्यान दिलाया गया है और उस के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं।

– अन्तिम आयत में अल्लाह की राह में प्रयास करने पर उस की सहायता और उस के वचन के पुरा होने की ओर संकेत किया गया हैं।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान है।

१. अलिफ, लाम, मीम।

२. क्या लोगों ने समझ रखा है कि वह छोड दिये जायेंगे कि वह कहते है, हम ईमान लाये और उन की परीक्षा नहीं ली जायेगी?

३. और हम ने परीक्षा ली है उन से पूर्व के लोगों की, तो अल्लाह अवश्य जानेगा[१] उन को जो सच्चे हैं, तथा अवश्य जानेगा झूठों को।

४. क्या समझ रखा है उन लोगों ने जो कुकर्म कर रहे हैं कि हम से अग्रसर[२] हो जायेंगे? क्या ही बुरा निर्णय कर रहे हैं!

५. जो आशा रखता हो अल्लाह से मिलने[३] की, तो अल्लाह की ओर से निर्धारित किया हुआ समय[४] अवश्य आने वाला है। और वह सब कुछ सुनने जानने[५] वाला है।

६. और जो प्रयास करता है तो वह प्रयास करता है अपने ही भले के लिये, निश्चय अल्लाह निस्पृह है संसार वासियों से।

७. तथा जो लोग ईमान लाये और सदाचार किये, हम अवश्व दूर कर देंगे उन से उन की बुराईयाँ, तथा उन्हे प्रतिफल देंगे उन के उत्तम कर्मों का।

८. और हम ने निर्देश दिया मनुष्य को अपने माता–पिता के साथ उपकार करने का[६], और यदि दोनों दबाव डालें तुम पर कि तुम साझी बनाओ मेरे साथ उस चीज को जिस का तुम को ज्ञान नहीं, तो उन दोनों की बात न मानो[७] मेरी ओर ही तुम्हें फिर कर आना है, फिर मैं तुम्हें सूचित कर दूँगा। उस कर्म से जो तुम करते रहे हो।

---

[१] अर्थात आपदाओं द्वारा परीक्षा ले कर जैसा कि उस का नियम है उन में विवेक कर देगा। (इब्ने कसीर)

[२] अर्थात हमें विवश कर देंगे और हमारे नियंत्रण में नहीं आयेंगे।

[३] अर्थात प्रलय के दिन।

[४] अर्थात प्रलय का दि।

[५] अर्थात प्रत्येक के कथन और कर्म को उस का प्रतिकार देने के लिये।

[६] हदीस में है कि जब साद बिन अबी वक्कास इस्लाम लाये तो उन की माँ ने दबाव डाला और शपथ ली कि जब तक इस्लाम न छोड दें वह न उन से बात करेगी और खायेगी न पियेगी, इसी पर यह आयत उतरी।(मुस्लिम)

[७] इस्लाम का यह नियम है जैसा कि नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन है कि (किसी के आदेश का पालन अल्लाह की अवैज्ञा मैं नहीं है।) (मुस्नद अहमद–१।६६, सिलसिला सहीहा–अल्बानी : १७९)

९. और जो ईमान लाये तथा सदाचार किये हम उन्हें अवश्य सम्मिलित कर देंगे सदाचारियों में।

१०. और लोगों में वे (भी) है जो कहते है कि हम ईमान लाये अल्लाह पर। फिर जब सताये गये अल्लाह के बारे में तो समझ लिया लोगों क परीक्षा को अल्लाह की यातना के समान। और यदि आ जाये कोई सहायता आप के पालनहार की ओर से, तो अवश्य कहेंगे कि हम तुम्हारे साथ थे। तो क्या अल्लाह भली–भाँति अवगत नहीं है उस से जो संसारवासियों के दिलों में हैं?

११. और अल्लाह अवश्य जान लेगा उन को जो ईमान लाये हैं, तथा अवश्य जान लेगा द्विधावादियों[1] को।

१२. और कहा काफिरों ने उन से जो ईमान लाये हैंः अनुसरण करो हमारे पथ का, और हम भार ले लेंगे तुम्हारे पापों का, जब की वह भार लेने वाले नहीं है उन के पापों का कुछ भी, वास्तव में वह झूठे हैं।

१३. और वह अवश्य प्रभारी होंगे अपने बोझों के और कुछ[2] बोझों के अपने बोझों के साथ, और उन से अपश्य प्रश्न किया जायेगा प्रलय के दिन उस झूठ के बारे में जो घडते रहे।

१४. तथा हम[3] ने भेजा नूह को उस की जाति की ओर, तो वह रहा उन में हजार वर्ष किन्तु पचास[4] वर्ष, फिर उन्हे पकड लिया तूफान ने, तथा वे अत्याचारी थे।

१५. तो हम ने बचा लिया उस को और नाव वालों को, और बना दिया उसे एक निशानी (शिक्षा) विश्व वासियों के लिये।

१६. तथा इब्राहीम को जब उस ने अपनी जाति से कहाः इबादत (वंदना) करो अल्लाह की तथा उस से डरो, यह तुम्हारे लिये उत्तम है यदि तुम जानो।

१७. तुम तो अल्लाह के सिवा बस उन की वंदना कर रहे हो जो मूर्तियाँ हैं, तथा तुम झूठ घड रहे हो, वास्तव में जिन को तुम पूज रहे हो अल्लाह के सिवा वे नहीं अधिकार रखते हैं तुम्हारे लिये जीविका देने का। अतः खोज करो अल्लाह के पास जीविका की

[1] अर्थात जो लोगों के भय के कारण दिल से ईमान नहीं लाते।

[2] अर्थात दुसरों को कुपथ करने के पापों का।

[3] यहाँ से कुठ नबियों की चर्चा की जा रही है जिन्हों ने धैर्य से काम लिया।

[4] अर्थात नूह (अलैहिस्सलाम) ९५० वर्ष तक अपनी जाति में धर्म का प्रचार करते रहे।

तथा इबादत (वंदना) करो उस की और कृतज्ञ बनो उस के, उसी की ओर तुम फेरे जाओगे।

१८. और यदि तुम झुठलाओ तो झुठलाया है बहुत से समुदायों ने तुम से पहले, और नहीं है रसूल[1] का दायित्व परन्तु खुला उपदेश पहुँचा देना।

१९. क्या उन्हों ने नहीं देखा कि अल्लाह ही उत्पत्ति का आरंभ करता है फिर उसे दुहरायेगा[2], निश्चय यह अल्लाह पर अति सरल है।

२०. (हे नबी!) कह दें कि चलो–फिरो धरती में फिरो देखो कि उस ने कैसे उत्पत्ति का आरंभ किया है, फिर अल्लाह दूसरी बार भी उत्पन्न[3] करेगा, वास्तव में अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

२१. वह यातना देगा जिसे चाहेगा तथा दया करेगा जिस पर चाहेगा, और उसी की ओर तुम फेरे जाओगे।

२२. तुम उसे विवश करने वाले नहीं हो, न धरती में न आकाश में, तथा नहीं है तुम्हारा उस के सिवा कोई संरक्षक और न सहायक।

२३. तथा जिन लोगों ने इन्कार किया अल्लाह की आयतों और उस से मिलने का, वही निराश हो गये हैं मेरी दया से और उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।

२४. तो उस (इब्राहीम) की जाति का उत्तर बस यही था कि उन्हों ने कहाः इसे बध कर दो या इसे जला दो, तो अल्लाह ने उसे बचा लिया अग्नि से। वास्तव में इस में बडी निशानियाँ हैं उन के लिये जो ईमान रखते हैं।

२५. और कहाः तुम ने तो अल्लाह को छोड़ कर मुर्तियों को प्रेम का साधन बना लिया है अपने बीच संसारिक जीवन में, फिर प्रलय के दिन तुम एक–दुसरे का इन्कार करोगे तथा धिक्कारोगे एक–दुसरे को, और तुम्हारा आवास नरक होगा, और नहीं होगा तुम्हारा कोई सहायक।

२६. तो मान लिया उस को लूत[4] ने, और इब्राहीम ने कहाः मैं हिज्रत कर रहा हूँ अपने पालनहार[1] की ओर। निश्चय वही प्रबल तथा गुणी है।

[1] अर्थात अल्लाह का उपदेश मनवा देना रसूल का कर्तव्य नहीं है।

[2] इस आयत में अखिरत (परलोक) के विषय का वर्णन किया जा रहा है।

[3] अर्थात प्रलय के दिन कर्मों का प्रतिफल देने के लिये।

[4] लूत (अलैहिस्सलाम) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के भतीजे थे। जो उन पर ईमान लाये।

२७. और हम ने प्रदान किया उसे इस्हाक तथा याकूब तथा हम ने रख दी उस की संतान में नबूवत तथा पुस्तक, और हम ने प्रदान किया उसे उस का प्रतिफल संसार में, और निश्चय वह परलोक में सदाचारियों में से होगा।

२८. तथा लूत को (भेजा)। जब उस ने अपनी जाति से कहाः तुम तो वह निर्लज्जा कर रहे हो जो तुम से पहले नहीं किया है किसी ने संसार वासियों में से।

२९. क्या तुम पुरषों के पास जाते हो, और डकैती करते हो तथा अपनी सभाओं में निर्लज्जा के कार्य करते हो? तो नहीं था उस की जाति का उत्तर इस के अतिरिक्त कि उन्हों ने कहाः तू ला दे हमारे पास अल्लाह की यातना, यदि तू सच्चों में से है।

३०. लूत ने कहाः मेरे पालनहार! मेरी सहायता कर उपद्रवी जाति पर।

३१. और जब आये हमारे भेजे हुये (फरिश्ते) इब्राहीम के पास शुभ सूचना ले कर, तो उन्हों ने कहाः हम विनाश करने वाले हैं इस बस्ती के वासियों का। वस्तुतः इस के वासी अत्याचारी हैं।

३२. इब्राहीम ने कहाः उस में तो लूज है। उन्हों ने कहाः हम भली–भाँति जानने वाले हैं जो उस में है। हम अवश्य बचा लेंगे उसे और उस के परिवार को उस की पत्नी के सिवा, वह पीठे रह जाने वालों में थी।

३३. और जब आ गये हमारे भेजे हुये लूत के पास तो उसे बुला लगा और वह उदासीन हो गया[2] उन के आने पर। और उन्हों ने कहाः भय न कर और न उदासीन हो, हम तुझे बचा लेने वाले हैं तथा तेरे परिवार को, परन्तु तेरी पत्नी को, वह पीठे रह जाने वालों में है।

३४. वास्तव में हम उतारने वाले हैं इस बस्ती के वासियों पर आकाश से यातना इस कारण कि वह उल्लंघन कर रहे हैं।

३५. तथा हम ने छोड दी है उस में एक खुली निशानी उन लोगों के लिये जो समझ–बुझ रखते हैं।

---

[1] अर्थात अल्लाह के आदेशानुसार शाम जा रहा हूँ।

[2] क्योंकि लूत (अलैहिस्सलाम) को अपनी जाति की निर्लज्जा का ज्ञान था।

३६. तथा मद्यन की ओर उन के भाई शुऐब को (भेजा) तो उस ने कहाः हे मेरी जाति के लोगो! इबादत (वंदना) करो अल्लाह की, तथा आशा रखो प्रलय के दिन[१] की और मत फिरो धरती में उपद्रव करते हुये।

३७. किन्तु उन्हों ने उसे झुठला दिया तो पकड लिया उन्हें भुकम्प ने और वह अपने घरों में औंधे पडे रह गये।

३८. तथा आद और समूद का (विनाश किया)। और उजागर हैं तुम्हारे लिये उन के घरों के कुछ अवशेष, और शोभनीय बना दिया शैतान ने उन के कर्मों को और रोक दिया उन्हें सुपथ से. जब कि वह समझ–बुझ रखते थे।

३९. और कारून तथा फिरऔन और हामान का, और लाये उन के पास मूसा खुली निशानियाँ, तो उन्हों ने अभिमान किया और वह हम से आगे[२] होने वाले न थे।

४०. तो प्रत्येक को हम ने पकड लिया उस के पाप के कारण, तो इन में से कुछ पर पत्थर बरसाये[३] और उन में से कुछ को पकड़ा[४] कड़ी ध्वनि ने तथा कुछ को धंसा दिया धरती में, और कुछ को डुबो[५] दिया। तथा नहीं था अल्लाह कि उन पर अत्याचार करता परन्तु वह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे।

४१. उन का उदाहरण जिन्होंने बना लिये अल्लाह को छोड कर संरक्षक, मकडी जैसा है जिस ने एक घर बनाया, और वास्तव में घरों में सब से अधिक निर्बल घर[६] मकडी का है यदि वह जानते।

४२. वास्तव में अल्लाह जानता है कि वे जिसे पुकारते हैं अल्लाह को छोड कर वह कुछ नहीं हैं। और वही प्रबल गुणी (प्रवीण) है।

४३. और यह उदाहरण हम लोगों के लिये दे रहे हैं और इसे नहीं समझेंगे परन्तु ज्ञानी लोग (ही)।

---

[१] अर्थात संसारिक जीवन ही को सब कुछ न समझो, परलोक के अच्छे परिणाम की भी आशा रखो और सदाचार करो।

[२] अर्थात हमारी पकड से नहीं बच सकते थे।

[३] अर्थात लूत की जाति पर।

[४] अर्थात सालेह औ शुऐब (अलैहिमस्सलाम) की जाति को।

[५] जैसे कारून को।

[६] अर्थात नूह तथा मूसा (अलैहिमस्सलाम) की जातियों को।

४४. उत्पत्ति की है अल्लाह ने आकाशों तथा धरती की सत्य के साथ। वास्तव में इस में एक बडी निशानी (लक्षण) है ईमान लाने वालों के[१] लिये।

४५. आप उस पुस्तक को पढें जो वह्यी (प्रकाशना) की गई है आप की ओर, तथा स्थापना करें नमाज की। वास्तव में नमाज रोकती निर्लज्जा तथा दुराचार से और अल्लाह का स्मरण ही सर्व महान है। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते[२] हो।

४६. और तुम वाद–विवाद न करो अहले किताब से परन्तु ऐसी विधि से जो सर्वोत्तम हो, उन के सिवा जिन्हों ने अत्याचार किया है उन में से। तथा तुम कहो कि हम ईमान लाये उस पर जो हमारी ओर उतारा गया और उतारा गया तुम्हारी ओर, तथा हमारा पूज्य और तुम्हारा पूज्य एक ही [३] है। और हम उसी के आज्ञाकारी हैं।[४]

४७. और इसी प्रकार हम ने उतारी है आप की ओर यह पुस्तक, तो जिन को हम ने पुस्तक प्रदान की है वह इस (कुरआन) पर ईमान लाते[५] हैं और इन में से (भी) कुछ[६] इस (कुरआन) पर ईमान ला रहे हैं। और हमारी आयतों को काफिर ही नहीं नहीं मानते हैं।

४८. और आप इस से पूर्व न कोई पुस्तक पढ सकते थे और न अपने हाथ से लिख सकते थे। यदि ऐसा होता तो झूठे लोग संदेह[७] में पड सकते थे।

४९. बल्कि यह खुली आयतें है जो उन के दिलों में सुरक्षित हैं जिन को ज्ञान दिया गया है। तथा हमारी आयतों (कुरआन) का इन्कार[८] अत्याचारी ही करते हैं।

---

[१] अर्थात इस विश्व की उत्पत्ति तथा व्यवस्था ही इस का प्रमाण है कि अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है।

[२] अर्था जो भला–बुरा करते हो उस का प्रतिफल तुम्हें देगा।

[३] अर्थात उस का कोई साझी नहीं।

[४] अतः तुम भी उस की आज्ञा के आधीन हो जाओ और सभी आकाशीय पुस्तकों कुरआन सहित स्वीकार करो।

[५] अर्थात अहले किताब में से जो अपनी पुस्तकों के सत्य अनुयायी हैं।

[६] अर्थात मकका वासियों में से।

[७] अर्थात यह संदेह करते कि आप (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यह बातें आदि ग्रन्थों से सीख लीं या लिख ली हैं। आप तो निरक्षर थे लिखना–पढना जानते ही नहीं थे तो फिर आप के नबी होने और कुरआन के अल्लाह की ओर से अवतरित किये जाने में क्या संदेह हो सकता है।

[८] अर्थात जो सत्य से अज्ञान है।

५०. तथा (अत्याचारियों) ने कहाः क्यों नहीं उतारी गयीं आप पर निशानियाँ आप के पालनहार की ओर से? आप कह दें कि निशानियाँ तो अल्लाह के पास[१] हैं। और मैं तो खुला सावधान करने वाला हूँ।

५१. क्या उन्हे पर्याप्त नहीं कि हम ने उतारी है आप पर यह पुस्तक (कुरआन) जो पढी जा रही है उन पर। वास्तव में इस में दया और शिक्षा है उन लोगों के लिये जो ईमान लाते हैं।

५२. आप कह दें: पर्याप्त है अल्लाह मेरे तथा तुम्हारे बीच साक्षी।[२] वह जानता है जो आकाशों तथा धरती में है। और जिन लोगों ने मान लिया है असत्य को और अल्लाह से कुफ्र किया है वही विनाश होने वाले हैं।

५३. औ वे[3] आप से शीघ्र माँग कर रहे हैं यातना की। और यदि एक निर्धारित समय न न होता तो आजाती उन के पास यातना, और अवश्य आयेगी उन के पास अचानक और उन्हें ज्ञान (भी) न होगा।

५४. वे शीघ्र माँग[४] कर रहे हैं आप से यातना की। और निश्चिय नरक घेरने वाली है काफिरों[५] को।

५५. जिस दिन छा जायेगी उन पर यातना उन के ऊपर से तथा उन के पैरों के नीचे से। और अल्लाह कहेगाः चखो जो कुछ तुम कर रहे थे।

५६. हे मेरे भक्तों जो ईमान लाये हो! वास्तव में मेरी धरती विशाल है, अतः तुम मेरी ही इबादत (वंदना)[६] करो।

५७. प्रत्येक प्राणी मौत का स्वाद चखने वाला है फिर तुम हमारी ही ओर फरे[७] जाओगे। जाओगे।

---

[१] अर्था उसे उतारना–न उतारना मेरे अधिकार में नहीं, मैं तो अपने कर्तव्य का पालन कर रहा हूँ।

[२] अर्थात मेरे नबी होने पर।

[३] अर्थात मकका के काफिर।

[४] अर्थात संसार ही में उपहास स्वरुप यातना की माँग कर रहे हैं।

[५] अर्थात परलोक में।

[६] अर्थात किसी धरती में अल्लाह की इबादत न कर सको तो वहाँ से निकल जाओ जैसा कि आरंभिक युग मे मकका के काफिरों ने अल्लाह की इबादत से रोक दिया तो मुसलमान हब्शा और फिरा मदीना चले गये।

[७] अर्थात अपने कर्मों का फल भोगने के लिये।

५८. तथा जो ईमान लाये, और सदा चार किये तो हम अवश्य उन्हें स्थान देंगे स्वर्ग के उच्च भवनों में, प्रवाहित होंगी जिन में नहरें, वह सदावासी होंगे उन में, तो क्या ही उत्तम है कर्म करने वालों का प्रतिफल।

५९. जिन लोगों ने सहन किया तथा वह अपने पालनहार ही पर भरोसा करते है।

६०. कितने ही जीव हैं जो नहीं लादे फिरते[१] अपनी जीविका, अल्लाह ही उन्हें जीविका प्रदान करता है तथा तुम को, और वह सब कुछ सुनने–जानने वाला है।

६१. और यदि आप उन से प्रश्न करें कि किस ने उत्पत्ति की है आकाशों तथा धरती की, और (किस ने) वश में कर रखा है सूर्य तथा चाँद को? तो वह अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने। तो फिर वह कहाँ बहके जा रहे हैं?

६२. अल्लाह ही फैलाता है जीविका को जिस के लिये चाहता है अपने भक्तों में से और नाप कर देता है उस के लिये। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक वस्तु का अति ज्ञानी है।

६३. और यदि आप उन से प्रश्न करें कि किस ने उतारा है आकाश से जल, फिर उस के द्वारा जीवित किया है धरती उस के मरण के पश्चात्? तो वह अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने। आप कह दें कि सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है। किन्तु उन में से अधिक्तर लोग समझते नहीं।[२]

६४. और नहीं है यह संसारिक[३] जीवन किन्तु मनोरंजन और खेल और परलोक का घर ही वास्तविक जीवन है। क्या ही अच्छा होता यदि वह जानते।

६५. और जब वह नाव पर सवार होते हैं, तो अल्लाह के लिए धर्म को शुद्ध कर के उसे पुकारते हैं। फिर जब वह बचा लाता है उन्हें थल तक, तो फिर शिर्क करने लगते हैं।

---

[१] हदीस में है कि यदि तुम अल्लाह पर पूरा पूरा भरोसा करो तो तुम्हें पक्षी के समान जीविका देगा जो सेवेर भूखा जाते हैं और शाम को अघा कर आते है। (तिर्मिजी–२३४४) यह हदीस हसन सहीह है।

[२] अर्थात जब उन्हे यह स्वीकार है कि रचयिता अल्लाह है और जीवन के साधन की व्यवस्था भी वही करता है तो फिर इबादत (पूजा) भी उसी की करनी चाहिये और उस की वंदना तथा उस के शुभगुणों में किसी को उस का साझी नही बनाना चाहिये। यह तो मूर्खता की बात है कि रचयिता तथा जीवन के साधनों की व्यवस्था अल्लाह करे और उस की वंदना में अन्य को साझी बनाया जाये।

[३] अर्थात जिस संसारिक जीवन का संबंध अल्लाह से न हो तो उस का सुख साम्यिक है। वास्तविक तथा स्थायी जीवन तो परलोक का है अतः उस के लिये प्रयास करना चाहिये।

६६. ताकि वह कुफ्र करें? उस के साथ जो हम ने उन्हें प्रदान किया है, और ताकि आनन्द लेते रहें, तो शीघ्र ही इन्हे ज्ञान हो जायेगा।

६७. क्या उन्हों ने नहीं देखा कि हम ने बना दिया है हरम (मक्का) को शान्ति स्थल, जब कि उचक लिये जाते हैं लोग उनके आस-पास से? तो क्या वह असत्य ही को मानते हैं और अल्लाह के पुरस्कार को नहीं मानते?

६८. तथा कौन अधिक अत्याचारी होगा उस से जो अल्लाह पर झूठ घडे या झूठ कहे सच्च को जब उस के पास आ जाये, तो क्या नहीं होगा नरक में आवास काफिरों का?

६९. तथा जिन्हों ने हमारी राह में प्रयास किया तो हम अपश्य दिखा[१] देंगे उन को अपनी राह। और निश्चिय अल्लाह सदाचारियों के साथ है।

*****

[१] अर्थात अपनी राह पर चलने की अधिक क्षमता प्रदान करेंगे।



सूरह रूम–३०



सूरह रूम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ६० आयतें है।

- इस सूरह में रुमियों के बारे में एक भविष्यवाणी की गई है इसी लिये इस को यह नाम दिया गया है।
- इस में आखिरत का विश्वास दिलाया गया है जो संसार की वास्तविकता पर विचार करने से पैदा होता है तथा इस से कि अल्लाह का प्रत्येक वचन पूरा होता है।
- इस में रुमियों की विजय की भविष्यवाणी की गई है और इस से विश्व के स्वामी तथा आखिरत की ओर ध्यान दिलाया गया है।
- अल्लाह की निशानियों में सोच–विचार का आमंत्रण दिया गया है जो आकाशों तथा धरती में फैली हुई हैं और परलोक का विश्वास दिलाती हैं।
- तौहीद के सत्य तथा शिर्क के असत्य होने के प्रमाण प्रस्तुत किये गये है और यह बताया गया है कि तौहीद स्वाभाविक धर्म है। अल्लाह की आज्ञा के पालन तथा पाप से बचने के निर्देश दिये गये हैं और इस पर उत्तम परिणाम की शुभ सूचना दी गई है।
- अन्त में फिर बात प्रलय तथा परलोक की ओर फिर गई है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. अलिफ लाम मीम।

२. पराजित हो गये रुमी।

३. समीप की धरती में, और वह अपने पराजित होने के पश्चात् जल्द ही विजयी हो जायेंगे।

४. कुछ वर्षों में, अल्लाह ही का अधिकार है पहले (भी) और बाद में (भी)। और उस दिन प्रशन्न होंगे ईमान वाले।

५. अल्लाह की सहायता से, तथा वही अति प्रभुत्वशाली दयावान् है।

६. यह अल्लाह का वचन है, नहीं विरुद्ध करेगा अल्लाह अपने वचन[१] के, और परन्तु अधिक्तर लोग ज्ञान नहीं रखते।

७. वह तो जानते हैं बस ऊपरी संसारिक जीवन को। तथा[२] वह परलोक से अचेत हैं।

८. क्या और उन्हों ने अपने में सोच–विचार नहीं किया कि नहीं उत्पन्न किया है अल्लाह ने आकाशों तथा धरती को और जो कुछ उन[३] दोनों के बीच है परन्तु सत्यानुसार और एक निश्चित अवधि के लिये? और बहुत से लोग अपने पालनहार से मिलने का इन्कार करने वाले है।

९. क्या वह चले–फिरे नहीं धरती में, फिर देखते कि कैसा रहा उन का परिणाम जो इन से पहले थे? वह इन से अधिक थे शक्ति में। उन्हो ने जोता–बोया धरती को और उसे आबाद किया, उस से अधिक जितना इन्हों ने आबाद किया, और आये उन के पास उन के रसूल खुली निशानियाँ (प्रमाण) ले कर। तो नहीं था अल्लाह

---

[१] इन आयतों के अन्दर दो भविष्य वाणियाँ की गई हैं। जो कुरआन शरीफ तथा स्वंय नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि सल्लम) के सत्य होने का ऐतिहासिक प्रमाण है। यह वह युग था जब नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि सल्लम) और मकका के कुरैश के बीच युद्ध आरंभ हो गया था। रुम के राजा कैसर को उस समय, ईरान के राजा (किस्रा) ने पराजित कर दिया था। जिस से मक्कावासी प्रसन्न थे। क्यों कि वह अग्नि के पुजारी थे। और रुमी ईसाई आकाशीय धर्म के अनुयायी थे। और कह रहे थे कि हम मिश्रणवादी भी इसी प्रेकार मुसलमानों को पराजित कर देंगे जिस प्रकार रुमियों को ईरानियों ने पराजय किया। इसी पर यह दो भविष्य वाणी इस के साथ पुरी होगी कि मुसलमान भी उसी समय विजयी हो कर प्रसन्न हो रहे होंगे। और ऐसा ही हुआ कि ९ वर्ष के भीतर रुमियों ने ईरानियों को पराजित कर दिया।

[२] अर्थात सुख–सुविधा और आनन्द को। और इस से अचेत है कि एक और जीवन भी है जिस में कर्मों के परिणाम सामने आयेंगे। बल्कि यही देखा जाता है कि कभी एक जाति उन्नति कर लेने के पश्चात् असफल हो जाती है।

[३] विश्व की व्यवस्था बता रही है कि यह अकारण नहीं, बल्कि इस का कुछ अभिप्राय है।

कि उन पर अत्याचार करता, और परन्तु वह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे।

१०. फिर हो गया उन का बुरा अन्त जिन्हों ने बुराई की, इस लिये कि उन्हों ने झूठ कहा अल्लाह की आयतों को, और वह उन का उपहास कर रहे थे।

११. अल्लाह ही उत्पत्ति का आरंभकरता है फिर उसे दुहरायेगा, तथा उसी की ओर तुम फेरे[1] जाओगे।

१२. और जब स्थापित होगी प्रलय, तो निराश[2] हो जायेंगे अपराधी।

१३. और नहीं होगा उन के साझियों में उन का अभिस्तावक (सिफारशी) और वह अपने साझियों का इन्कार करने वाले[3] होंगे।

१४. और जिस दिन स्थापित होगी प्रलय, तो उस दिन सब अलग अलग हो जायेंगे।

१५. तो जो ईमान लाये तथा सदाचार किये वही स्वर्ग में प्रसन्न किये जायेंगे।

१६. और जिन्होंने कुफ्र किया और झुठलाया हमारी आयतों को और परलोक के मिलने को, तो वही यातना में उपस्थित किये हुये होंगे।

१७. अतः तुम अल्लाह की पवित्रता का वर्णन संध्या तथा सवेरे किया करो।

१८. तथा उसी की प्रशंसा है आकाशों तथा धरती में तीसरे प्रहर तथा जब दोपहर हो।

१९. वह निकालता है[4] जीवित से निर्जीव को, तथा निकालता है निर्जीव से जीव को, और जीवित कर देता है धरती को उस के मरण (सूखने) के पश्चात और इसी प्रकार तुम (भी) निकाले जाओगे।

२०. और उस की (शक्ती) के लझणों में से यह (भी) है कि तुम्हें उत्पन्न किया मिट्टी से, फिर अब तुम मनुष्य हो (कि धरती में) फैलते जा रहे हो।

२१. तथा उस की निशानियों (लझणों) में से यह (भी) है कि उतपन किया तुम्हारे लिये तुम्ही में से जोडे, ताकि तुम शान्ति प्राप्त करो उन के पास तथा उतपन कर

---

[1] अर्थात प्रलय के दिन अपने संसारिक अच्छे बुरे कर्मों का प्रतिकार पाने के लिये।

[2] अर्थात अपनी मुक्ति से और चकित हो कर रह जायेंगे।

[3] क्यों कि यह देख लेंगे कि उन्हें सिफारिश करने का कोई अधिकार नहीं होगा। (देखिये सूरह, अन्आम आयतः२३)

[4] यहाँ से यह बताया जा रहा है कि प्रलय होकर परलोक में सब को पुनः जीवित किया जाना संभव है और उस का प्रमाण दिया जा रहा है। इसी के साथ यह भी बताया जा रहा है कि इस विश्व का स्वामी और व्यवस्थापक अल्लाह की है, अतः पूज्य भी केवल वही है।

दिया तुम्हारे बीच प्रेम तथा दया, वास्तव में इस में कई निशानियशाँ हैं उन लोगो के लिये जो सोच–विचार करते है।

२२. तथा उस की निशानियों मे से है आकाशों और धरती को पैदा करना, तथा तुम्हारी बोलियों और रंगों का विभिन्न होना। निश्चय इस में कई निशानियाँ है ज्ञानियों[1] के लिये।

२३. तथा उस की निशानियों मे से है तुम्हारा सोना रात्री में तथा दिन में, और तुम्हारा खोज करना उस के अनुग्रह (जीविका) का। वास्तव में इस में कई निशानिशाँ हैं उन लोगों के लिये जो सुनते हैं।

२४. और उस की निशानियों में से (यह भी) है कि वह दिखाता है तुम्हें बिजली को भय तथा आशा बना कर और उतारता है आकाश से जल, फिर जीवित करता है उस के द्वारा धरती को उस के मरण के पश्चात्, वस्तुतः इस में कई निशानियाँ है उन लोगों के लिये जो सोचते है।

२५. और उस की निशानियाँ में से है कि स्थापित है आकाश तथा धरती उस के आदेश से। फिर जब तुम्हें पुकारेगा एक बार धरती से तो सहसा तुम निकल पडोगे।

२६. और उसी का है जो आकाशों तथा धरती में है, सब उसी के आधीन है।

२७. तथा वही है जो आरंभ करता है उत्पत्ति को, फिर वह उसे दुहरायेगा। और वह अति सरल है उास पर। और उसी का सर्वोच्च गुण है आकाशों तथा धरती में, और वही प्रभुत्व शाली तत्वज्ञ है।

२८. उस ने एक उदाहरण दिया है स्वयं तुम्हाराः क्या तूमहारे[2] दासो में से तुम्हारा कोई साझी है उस में जो जीविका प्रदान की है हम ने तुम को, तो तुम उस में उस

---

[1] कुरआन ने यह कह कर कि भाषाओं और वर्ण–वर्ण का भेद अल्लाह की रचना की निशानियाँ है, उस भेद–भाव को सदा के लिये समाप्त कर दिया जो पक्षताप, आपसी बैर और गर्व का आधार बनते हैं। और संसार की शान्ति का भेद करने का कारण होते हैं। (देखिये : सूरह हुजुरात, आयत : १३) यहि आज भी इस्लाम की इस शिक्षा को अपना लिया जाये तो संसार शान्ति का गहवारा बन सकता है।

[2] परलोक और एकेश्वरवाद के तर्कों का वर्णन करने के पश्चात इस आयत में शुद्ध एकेश्वरवाद के प्रमाण प्रस्तुत किये जा रहे है कि जब तुम स्वयं अपने दासो को अपनी जीविका में साझी नही बना सकते तो जिस अल्लाह ने सब को बनाया है उस ही वंदना उपासना में दूसरों को कैसे साझी बनाते हो?

के बराबर हो, उन से डरते हो जैसे अपनों से डरते हो? इसी प्रकार हम वर्णन करते हैं आयतों का उन लोगों के लिय जो समझ रखते हैं।

२९. बल्कि चले है अत्याचार अपनी मनमानी पर बिना समझे, तो कौन राह दिखाये उसे जिस को अल्लाह ने कुपथ कर दिया हो? और नहीं है उन का कोई सहायक।

३०. तो (हे नबी!) आप सीधा रखें अपना मुख इस धर्म की दिशा में एक ओर हो कर उस स्वभाव पर पैदा किया है अल्लाह ने मनुष्यों को जिस[1] पर। बदलना नहीं है अल्लाह के धर्म को, यही स्वभाविक धर्म है किन्तु अधिक्तर लोग नहीं[2] जानते।

३१. ध्यान कर के अल्लाह की ओर, और डरो उस से तथा स्थापना करो नमाज की, और न हो जाओ मुश्रिकों में से।

३२. उन में से जिन्हों ने अलग बना लिया अपना धर्म। और हो गये कई गिरोह, प्रत्येक गिरोह उसी में[3] जो उस के पास है मग्न है।

३३. और जब पहुँचता है मनुष्यों को कोई दुख तो वह पुकारते हैं अपने पालनहार को ध्यान लगा कर उस की ओर। फिर जब वह चखाता है उन को अपनी ओर से कोई दया, तो सहसा एक गिरोह उन में से अपने पालनहार के साथ शिर्क करने लगता है।

३४. ताकि वह उस के कृतघ्न हो जायें जो हम ने प्रदान किया है उन को। तो तुम आनन्द ले लो, तुम को शीघ्र ही ज्ञान हो जायेगा।

३५. क्या हम ने उतारा है उन पर कोई प्रमाण जो वर्णन करता है उस का जिसे वह अल्लाह का साझी बना[4] रहे है।

---

[1] एक हदीस में कुछ इस प्रकार आया है कि प्रत्येक शिशु प्राकृति (नेचर, अर्थात इस्लाम) पर जन्म लेता है। परन्तु उस के माँ–बाप उसे यहुदी या ईसाई या मजूसी बना देते हैं। (देखिये : सहीह मुस्लिम : २६५६) और यदि उस के माता–पिता हिन्दु अथवा बुद्ध या और कुछ हैं तो वे अपने शिशु को अपने धर्म के रंग में रंग देते है।

आयत का भावार्थ यह है कि स्वाभाविक धर्म इस्लाम और तौहिद को न बदलो बल्कि सहीह पालन पोषण द्वारा अपने शिशु को इसी स्वाभाविक धर्म इस्लाम की शिक्षा दो।

[2] इसी लिये वह इस्लाम और तौहीद को नहीं पहचानते।

[3] वह समझता है कि मैं ही सत्य पर हूँ और उन्हें तथ्य की कोई चिन्ता नही।

[4] यह प्रश्न नकारात्मक है अर्थात उन के पास इस का कोई प्रमाण नहीं है।

३६. और जब हम चखाते है लोगों को कुछ दया तो वह उस पर इतराने लगते हैं। और यदि पहुँचता है उन को कोई दुःख उन के करतूतों के कारण तो वह सहसा निराश हो जाते हैं।

३७. क्या उन्हों ने नहीं देखा कि अल्लाह फैला देता है जीविका जिस के लिये चाहता है और नाप कर देता है? निश्चय इस में बहुत सी परेशानियाँ है उन लोगों के लिये जो ईमान लाते हैं।

३८. तो दो समीपवर्तीयों को उस का अधिकार तथा निर्धनों और यात्रियों को। यह उत्तम है उन लोगों के लिये जो चाहते हों अल्लाह की प्रसन्नता, और वही सफल होने वाले हैं।

३९. और जो तुम ब्याज देते हो ताकि अधिक हो जाये लोगों के धनों[1] में मिलकर तो वह अधिक नहीं होता अल्लाक के यहाँ। तथा तुम तो जकात देते हो चाहते हुये अल्लाह की प्रसन्नता तो वही लोग सफल होने वाले हैं।

४०. अल्लाह ही है जिस ने उत्पन्न किया है तुम को, फिर तुम्हें जीविका प्रदान की फिर तुम्हें मारेगा, फिर[2] जीवित करेगा, तो क्या तुम्हारे साझियों में से कोई है जो इस में से कुछ कर सके? वह पवित्र है और उच्च है उन के साझी बनाने से।

४१. फैल गया उपद्रव जल तथा[3] थल में लोगों के करतूतों के कारण, ताकि वह चखाये उन को उन का कुछ कर्म, संभवतः वह रुक जायें।

४२. आप कह दें चलो–फिरो धरती में फिर देखो कि कैसा रहा उन का अन्त जो इन से पहले थे। उन में अधिक्तर मुश्रिक थे।

---

[1] इस आयत में सामाजिक अधिकारों की ओर ध्यान दिलाया गया है कि जब सब कुछ अल्लाह ही का दिया हुआ है तो तुम्हें अल्लाह की प्रसन्नता के लिये सब का अधिकार देना चाहिये। हदीस में है कि जो ब्याज खाता–खिलाता है और उसे लिखता तथा उस पर गवाही देता है उस पर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने धिक्कार किया है।

[2] इस में फिर एकेश्वरवाद का वर्णन तथा शिर्क का खण्डन किया है।

[3] आयत में बताया गया है कि इस विश्व में जो उपद्रव तथा अत्याचार हो रहा है यह सब शिर्क के कारण हो रहा है। जब लोगों ने एकेश्वरवाद को छोड कर शिर्क अपना लिया तो अत्याचार और उपद्रव होने लगा। क्यों कि न एक अल्लाह का भय रह गया और न उस के नियमों का पालन।

४३. अतः आप सीधा रखें अपना मुख सत्धर्म की दिशा में इस से पहले कि आ जाये वह दिन जिसे फिरना नहीं है अल्लाह की ओर से, उस दिन लोग अलग–अलग हो[1] जायेंगे।

४४. जिस ने कुफ्र किया तो उसी पर उस का कुफ्र है और जिस ने सदाचार किया तो वे अपने ही लिये (सफलता का मार्ग) बना रहे हैं।

४५. ताकि अल्लाह बदला दे उन को जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये अपने अनुग्रह से। निश्चय वह प्रेम नहीं करता काफिरों से।

४६. और उस की निशानियों में से है कि भेजता है वायु को शुभसूचना देने के लिये और ताकि चखाये तुम्हें अपनी दया (वर्षा) में से, और ताकि नाव चलें उस के आदेश से, और ताकि तुम खोजो उस जीविका और ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

४७. और हम ने भेजा आप से पहले रसूलों को उन की जातियों की ओर। तो वहलाये उन के पास खुली निशानियाँ, अन्ततः हम ने बदला ले लिया उन से जिन्हों ने अपराध किया। और अनिवार्य था हम पर ईमान वालों की सहायता[2] करना।

४८. अल्लाह ही है जो वायुओं को भेजनता है, फिर वह उसे फैलाता है आकाश में जैसे चाहता है, और उसे घंघोर बना देता है। तो तुम देखते हो बूंदों को निकालते उस के बीच से, फिर जब उसे पहुँचाता है जिस के लिये चाहता है अपने भक्तों में से तो सहसा वह प्रफुल्ल होत जाते हैं।

४९. यद्यपि वह थे इस से पहले कि उन पर उतारी जाये, अति निराश।

५०. तो देखो अल्लाह की दया के लक्षणों को, वह कैसे जीवित करता है धरती को उस के मरण के पश्चात्, निश्चय वही जीवित करने वाला है मुर्दो को तथा वह सब कुछ कर सकता है।

५१. और यदि हम भेज दें उग्र वायु फिर वह देख लें उस (खेती) को पीली तो इस के पश्चात कुफ्र करने लगते हैं।

५२. तो (हे नबी!) आप नहीं सुना सकेंगे मुर्दों[1] को और नहीं सुना सकेंगे बहरों को पुकार जब वह भाग रहे हों पीठ फेर कर।

[1] अर्थात ईमान वाले और काफिर।

[2] आयत मे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम) तथा आप के अनुयायियों को सांत्वना दी जा रही है।

५३. तथा नहीं है आप मार्ग दर्शाने वाले अँधों को उन के कुपथ से, आप सुना सकेंगे उन्ही को जो ईमान लाते हैं हमारी आयतों पर फिर वही मुस्लिम हैं।

५४. अल्लाह ही है जिस ने उत्पन्न किया तुम्हें निर्बल दशा से फिर प्रदान किया निर्बलता के पश्चात् बल फिर कर दिया बल के पश्चात् निर्बल तथा बुढा[२], वह उत्पन्न करता है जो चाहता है और वही सर्वज्ञ सब सामर्थ्य रखने वाला है।

५५. और जिस दिन व्याप्त होगी प्रलय तो शपथ लेंगे अपराधी कि वह नहीं रहे क्षणभर[३] के सिवा। और इसी प्रकार वह बहकते रहे।

५६. तथा कहेंगे जो ज्ञान दिये गये तथा ईमान, कि तुम रहे हो अल्लाह के लेख में प्रलय के दिन तक, तो अब यह प्रलय का दिन है। और परन्तु तुम विश्वास नहीं रखते थे।

५७. तो उस दिन नहीं काम देगा अत्याचारियों को उन का तर्क और उन से क्षमायाचना कराई जायेगी।

५८. और हम ने वर्णन कर दिया है लोगों के लिये इस कुरआन में प्रत्येक उदाहरण का, और यदि आप ला दें उन के पास कोई निशानी तब भी अवश्य कह देंगे जो काफिर हो गये कि तुम तो केवल झूठ बनाते हो।

५९. इसी प्रकार मुहर लगा देता है अल्लाह उन के दिलों पर जो समझ नहीं रखते।

६०. तो आप सनह करें, वास्तव में अल्लाह का वचन सत्य है, और कदापि वह आप[४] को हलका न समझें जो विश्वास नहीं रखते।

*****

---

[१] अर्थात जिन की अन्तरात्मा मर चुकी हो और सत्य सुनने के लिये तय्यार न हों।

[२] अर्थात एक व्यक्ति जन्म से मरण तक अल्लाह के सामर्थ्य के आधीन रहता है फिर उस की वंदना में उस के आधीन होने और उस के पुनः पैदा कर देने के सामर्थ्य को अस्वीकार क्यों करता है?

[३] अर्थात संसार में।

[४] अन्तिम आयत में आप (सल्लाल्लाहु अलैहि सल्लम) को धैर्य तथा साहस रखने का आदेश दिया गया है। और अल्लाह ने जो विजय देने तथा सहायता करने का वचन दिया है उस के पूरा होने और निराश होने के लिये कहा जा रहा है

सूरह लुक़मान – ३१

सूरह लुक़मान के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ३४ आयतें है।

- इस सूरह में लुक़मान को ज्ञान देने की बात है इस लिये इस का नाम सूरह लुक़मान है।
- इस में धर्म के विषय में विचार करने तथा अंध विश्वास से बचने तथा उन निशानियों से शिक्षा लेने के निर्देश दिये गये हैं जिन से जीवन सुधरता है।
- अल्लाह तथा धर्म के बारे में बिना ज्ञान के बात करने पर सावधान किया गया है और कर्म सुधारने पर उत्तम परिणाम की शुभसूचना दी गई है।
- लुक़मान की उत्तम बातों का वर्णन किया गया है जो कुर्आन पाक की शिक्षाओं के अनुसार हैं।
- उन निशानियों को बताया गया है जिन से तौहीद तथा आख़िरत की राह खुलती है।
- अन्तिम आयतों में अल्लाह के सामने उपस्थित होने के दिन से डराया गया है और बताया गया है कि वह सब कुछ जानता है ताकि उस की आख़िरत के बारे में सूचना का विश्वास हो जाये।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. अलिफ़ लाम मीम।

२. यह आयतें हैं ज्ञानपूर्ण पुस्तक की।

३. मार्ग दर्शन तथा दया है सदाचारियों के लिये।

४. जो नमाज़ की स्थापना करते हैं तथा ज़कात देते है और परलोक पर (पूरा) विश्वास रखते हैं।

५. वही लोग अपने पालनहार के शुपथों पर हैं। तथा वही लोग सफल होने वाले हैं।

६. तथा लोगों में वह (भी) है जो ख़रीदता है खेल की[1] बात ताकि कुपथ करे अल्लाह की राह (इस्लाम) से बिना किसी ज्ञान के और उसे उपहास बनाये। यही है जिन के लिये अपमानकारी यातना है।

७. और जब पढ़ी जायें उस के समक्ष हमारी आयतें तो वह मुख फेर लेता है घमंड करते हुये। जैसे उस के दोनों कान बहरे हों, तो आप उसे शुभसूचना सुना दें दुःखदायी यातना की।

८. वस्तुतः जो ईमान लाये तथा सदाचार किये तो उन्हीं के लिये सुख के बाग़ हैं।

९. वह सदावासी होंगे उन में, अल्लाह का सत्य वचन है, और वही प्रभुत्वशाली सर्व ज्ञानी है।

१०. उस ने उत्पन्न किया है आकाशों को बिना किसी स्तम्भ के जिन्हें तुम देख रहे हो,और बना दिये धरती में पर्वत ताकि डोल न जाये तुम्हें लेकर, और फैला दिये उन में हर प्रकार के जीव, तथा हम ने उतारा आकाश से जल, फिर हम ने उगाये उस में प्रत्येक प्रकार के सुन्दर जोड़े।

११. यह अल्लाह की उत्पत्ति है, तो तुम दिखाओ, क्या उत्पन्न किया है उन्होंने जो उस के अतिरिक्त हैं? बल्कि अत्याचारी खुले कुपथ में हैं?

[1] इस से अभिप्राय गाना–बजाना तथा संगीत और प्रत्येक वह साधन है जो सदाचार से अचेत कर दें। इस में किस्से, कहानियाँ, काम संबंधी साहित्य सब सम्मिलित हैं।

१२. और हमने लुक़मान को प्रबोध प्रदान किया कि कृतज्ञ बनो अल्लाह के, तथा जो (अल्लाह का) आभारी हो वह आभारी है अपने ही (लाभ) के लिये। और जो आभारी न हो तो अल्लाह नि:स्वार्थ सराहनीय है।

१३. तथा (याद करो) जब लुक़मान ने कहा अनपे पुत्र से जब वह समझा रहा था उसे: हे मेरे पुत्र! साझी मत बना अल्लाह का, वास्तव में शिर्क (मिश्रण वाद) बड़ा घोर अत्याचार[१] है।

१४. और हम ने आदेश दिया है मनुष्यों को अपने माता–पिता के संबन्ध में, अपने गर्भ में रखा उसे उस की माता नें दु:ख पर दु:ख झेल कर, और उस का दूध छुड़ााया दो वर्ष में कि तुम कृतज्ञ रहो मेरे और अपनी माता–पिता के, और मेरी ही ओर (तुम्हें) फिर आना है।

१५. और यदि वह दोनों दबाव डालें तुम पर कि तुम साझी बनाओ मेरा उसे जिस का तुम को कोई ज्ञान नहीं, तो न[२] मानो उन दोनों की बात। और उन के साथ रहो संसार[३] में सुचारू रूप से, तथा राह चलो उस की जो ध्यान मग्न हो मेरी ओर, फिर मेरी ही ओर तुम्हें फिर कर आना है तो मैं तुम्हें सूचित कर दूँगा उस से जो तुम कर रहे थे।

१६. हे मेरे पुत्र! यदि हो (कोई कर्म) राई के दाने के बराबर, फिर वह यदि हो किसी पत्थर के भीतर या आकाशों में या धरती में, तो उसे भी उपस्थित करेगा[४] अल्लाह। वास्तव में वह सब महीन बातों से सूचित है।

१७. हे मेरे पुत्र! स्थापना कर नमाज़ की और आदेश दे भलाई का तथा रोक बुराई से और सहन कर उस (दु:ख) पर जो तुझे पहुँचे, वास्तव में यह बड़े साहस की बात है।

१८. और मत बल दे अपने माथे पर[१] लोगों के लिये तथा मत चल धरती में अकड़ कर। नि;संदेह अल्लाह प्रेम नहीं करता[२] किसी अहंकारी गर्व करनेवाले से।

---

[१] हदीस में है कि घोर पापों में से: अल्लाह के साथ शिर्क करना, माँ–बाप के साथ बुरा व्यवहार, जान मारना तथा जूठी शपथ लेना है। (सहीह बुख़ारी: हदीस नं.:६६७५)

[२] हदीस में है कि पाप में किसी की बात नहीं माननी है पुण्य में माननी है। (सहीह बुख़ारी: ७२५७)

[३] अर्थात माता–पिता यदि मिश्रणवादी और काफ़िर हों तब भी उन की संसार में सहायता करो।

[४] प्रलय के दिन उस का प्रतिफल देने के लिये।

१९. और संतुलन रख अपनी चाल[3] में तथा धीमी रख अपनी आवाज़ वास्तव में सब से बुरी आवाज़ गधे आवाज़ है।

२०. क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह ने वश में कर दिया[4] है तुम्हारे लिये जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, तथा पूर्ण कर दिया है तुम पर अपना पुरस्कार खुला तथा छुपा? और कुछ लोग विवाद करते हैं अल्लाह के विषय[5] में बिना किसी ज्ञान तथा बिना किसी मार्गदर्शन और बिना किसी दिव्य (रोशन) पुस्तक के।

२१. और जब कहा जाता है उन से कि पालन करो उस (कुरआन) का जिसे उतारा है अल्लाह ने, तो कहते हैं: बल्कि हम तो उसी का पालन करेंगे जिस पर अपने पूर्वजों को पाया है। क्या यद्यपि शैतान उन्हें बुला रहा हो नरक की यातना की[6] ओर?

२२. और समर्पित कर देगा स्वयं को अल्लाह के तथा वह एकेश्वर वादी हो तो उस ने पकड़ लिया सुदृढ़ कड़ा तथा अल्लाह ही की ओर कर्मों का परिणाम है।

२३. तथा जो काफ़िर हो गया तो आप को उदासीन न करे उस का कुफ़्र। हमारी ओर ही उन्हें लौटना है, फिर हम सूचित कर देंगे उन को उन के कर्मों से। नि:संदेह अल्लाह अति ज्ञानी है दिलों के भेदों का।

२४. हम उन्हें लाभ पहुँचायेंगे बहुत[7] थोड़ा फिर हम विवश कर देंगे उन्हें घोर यातना की ओर।

२५. और यदि आप उन से प्रश्न करें कि किस ने उत्पन्न किया है आकाशों तथा धरती को, तो अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने, आप कह दें कि सब प्रशंसा अल्लाह के लिये[8] है, बल्कि उन में अधिक्तर ज्ञान नहीं रखते।

---

[1] अर्थात गर्व से।

[2] सहीह हदीस में कहा गया है कि, वह स्वर्ग में नहीं जायेगा जिस के दिल में राई के दाने के बराबर भी अहंकार हो। (मुस्नद अह्मद:१/४१२)

[3] देखिये: सूरह फ़ुर्क़ान, आयत नं.:६३

[4] अर्थात तुम्हारी सेवा में लगा रखा है।

[5] अर्थात उस के अस्तित्व और उस के अकेले पूज्य होने के विषय में।

[6] अर्थात क्या वह सत्य और असत्य में अन्तर किये बिना असत्य ही का पालन करेंगे, और न समझ से काम लेंगे, न धर्म पुस्तक को मानेंगे?

[7] अर्थात संसारिक जीवन का लाभ।

[8] कि उन्हों ने सत्य को स्वीकार कर लिया।

२६. अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, वास्तव में अल्लाह निस्पृह सराहनीय है।

२७. और यदि जो भी धरती में वृत्त हैं सब लेखनियाँ बन जायें तथा उस के पश्चात् सागर स्याही हो जायें सात सागरों तक, तो भी समाप्त नहीं होंगे अल्लाह (कि प्रशंसा) के शब्द, वास्तव में अल्लाह प्रभावशाली गुण है।

२८. आर तुम्हें उत्पन्न करना और पुन:: जीवित करना केवल एक प्राण के समान[1] है। नि;संदेह अल्लाह सब कुछ सुनने जाननेवाला है।

२९. क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह मिला[2] देता है रात्री को दिन में और मिला देता है दिन को[3] रात्री में, तथा वश में कर रखा है सूर्य तथा चाँद को, प्रत्येक चल रहा रहा है एक निर्धारित समय तक, और अल्लाह उस से जो तुम कर रहे हो भली भाँती अवगत है।

३०. यह सब इस कारण है कि अल्लाह ही सत्य है और जिसे वह पुकारते हैं अल्लाह के सिवा असत्य है, तथा अल्लाह ही सब से ऊँचा, सब से बड़ा है।

३१. क्या तुम ने नहीं देखा कि नाव चलती है सागर में अल्लाह के अनुग्रह के साथ, ताकि वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाये। वास्तव में इस में कई निशानियाँ है प्रत्येक सहनशील कृतज्ञ के लिये।

३२. और जब छा जाती है उन पर लहर छत्रों के समान, तो पुकारने लगते हैं अल्लाह को उस के लिये शुद्ध कर के धर्म को, और जब उन्हें सुरक्षित पहुँचा देता है थल तक तो उन में से कुछ संतुलित रहनेवाले होते हैं। और हमारी निशानियों को प्रत्येक वचनभंगी अति कृतघ्न ही नकारते हैं।

३३. हे लोगों! डरो अपने पालनहार से तथा भय करो उस दिन का जिस दिन नहीं काम आयेगा कोई पिता अपनी संतान के और न कोई पुत्र काम आनेवाला होगा अपने

---

[1] अर्थात प्रलय के दिन अपनी शक्ति तथा सामर्थ्य से सब को एक प्राणी के पैदा करने तथा जीवित करने के समान पुन: जीवित कर देगा।

[2] क़ुर्आन ने एकेश्वरवाद का आमंत्रण देने तथा मिश्रणवाद का खण्डन करने के लिये फिर इस का वर्णन किया है कि जब विश्व का रचयिता तथा विधाता अल्लाह ही है तो पूज्य भी वही है, फिर भी यह विश्वव्यापी कुपथ है कि लोग अलाह के सिवा अन्य कि पूजा करते तथा सूर्य और चाँद को सज्दा करते है, निर्धारित समय से अभिप्राय प्रलय है।

[3] तो कभी दिन बड़ा होता है तो कभी रात्री।

पिता के कुछ[१] भी। निश्चय अल्लाह का वचन सत्य है। अत: तुम्हें कदापि धोखे में न रखे संसारिक जीवन और न धोखे में रखे अल्लाह से प्रवंचक (शैतान)।

३४. नि:संदेह अल्लाह ही के पास है प्रलय[२] का ज्ञान, और वही उतारता हे वर्षा, और जानता है जो कुछ गर्भाशयों में है, और नहीं जानता कोई प्राणी कि वह क्या कमायेगा कल, और नहीं जानता कोई प्राणी कि किस धरती में मरेगा, वास्तव में अल्लाह ही सब कुछ जाननेवाला सब से सूचित है।

*****

[१] अर्थात परलोक की यातना संसारिक दण्ड के समान नहीं होगी कि कोई किसी की सहायता से दण्ड मुक्त हो जाये।

[२] अबू हुरैरह (रज़ियल्लाहु अन्हु) फ़रमाते है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक दिन लोगों के बीच बैठे हुये थे कि एक व्यक्ति आया, और प्रश्न किया कि अल्लाह के रसूल! ईमान क्या है? आप ने कहा: ईमान यह है कि तुम अल्लाह पर तथा उस के फरिश्तों, उस के सब रसूलों और उस से मिलने और फिर दौबारा जीवित किये जाने पर ईमान लाओ।

उस ने कहा: इस्लाम क्या है? आप ने कहा: इस्लाम यह है कि केवल अल्लाह की इबादत करो और किसी वस्तु को उस का साझी न बनाओ, तथा नमाज़ की स्थापना करो और ज़कात दो, तथा रमज़ान के रोज़े रखो।

उस ने कहा: इह्सान क्या है? आप ने कहा: इह्सान यह है कि अल्लाह की इबादत ऐसे करो जैसे कि तुम उसे देख रहे हो। यदि यह न हो सके तो यह ख़्याल रखो कि वह तुम्हें देख रहा है।

उस ने कहा: प्रलय कब होगी? आप ने कहा: मैं प्रश्नकर्ता से अधिक नहीं जानता: परन्तु मैं तुम्हें उस की कुछ निशानियाँ बताऊँगा: जब स्त्री अपने स्वामिनी को जन्म देगी और जब नंगे नि:वस्त्रलोग मुखिया हो जायेंगे। पाँच बातों में जिन को अल्लाह ही जानता है। और आप ने यही आयत पढ़ी। फिर वह व्यक्ति चला गया। आप ने कहा: उसे बुलाओ, तो वह नहीं मिला। आप ने फ़रमाया: वह जिब्रील थे, तुम्हें तुम्हारा धर्म सिखाने आये थे।(सहीह बुख़ारी ४७७७)

सूरह सज्दा – ३२

सूरह सज्दा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ३० आयतें हैं।

– इस सूरह की आयत नं. १५ में ईमानवालों का यह गुण बताया गया है कि उन्हें अल्लाह की आयतों द्वारा शिक्षा दी जाती है तो वह सज्दे में गिर पड़ते है। इसी लिये इस का यह नाम है।

– इस में तौहीद तथा आख़िरत की बातों को ऐसे वर्णन किया गया है कि संदेह दूर हो कर दिल को विश्वास हो जाये। और बताया गया है कि यह पुस्तक (कुरआन) लोगों को सावधान करने के लिये उतारी गई है। तौहीद के साथ ही मनुष्य की उत्पत्ति की चर्चा भी की गई है।

– इस में आख़िरत का विषय तथा ईमानवालों की कुछ विशेषतायें तथा उन का शुभ परिणाम बताया गया है और झुठलानेवालों का दुष्परिणाम भी दिखाया गया है।

– यह बताया गया है कि नबी का आना कोई अनोखी बात नहीं है। इस से पहले भी मूसा (अलैहिस्सलाम) तथता दूसरे नबी आते रहे। और विनाशित जातियों के परिणाम पर विचार करने को कहा गया है।

– अन्त में विरोधियों की आपत्तियों का जवाब देते हुये उन्हें सावधान किया गया है। हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) इस सूरह को जुमुआ के दिन फ़ज्र की नमाज़ में पढ़ते थे। (सहीह बुख़ारी: ८९१)

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. अलिफ़ लाम मीम।

२. इस पुस्तक का उतारना जिस में कोई संदेह नहीं पूरे संसार के पालनहार की ओर से है।

३. क्या वे कहते हैं कि इसे इस ने घड़ लिया है? बल्कि यह सत्य है आप के पालनहार कि ओर से ताकि आप सावधान करें उन लोगों को जिन[1] के पास नहीं आया है कोई सावधान करनेवाला आप से पहले। संभव है वह सीधी राह पर आ जायें।

४. अल्लाह वही है जिस ने पैदा किया आकाशों तथा धरती को और जो दोनों के मध्य है छः दिनों में। फिर स्थित हो गया अर्श पर। नहीं है उस के सिवा तुम्हारा कोई संरक्षक और न कोई अभिस्तावक (सिफ़ारशी) तो क्या तुम शिक्षा नहीं लेते?

५. वह उपाय करता है प्रत्येक कार्य की आकाश से धरती तक, फिर प्रत्येक कार्य ऊपर उस के पास जाता है एक दिन में जिस का माप एक हज़ार वर्ष है तुम्हारी गणना से।

६. वही है ज्ञानी छुपे तथा खुले का अति प्रभुत्वशाली दयावान्।

७. जिस ने सुन्दर बनाई प्रत्येक चीज़ जो उत्पन्न की, और आरंभ की मनुष्य की उत्पत्ति मिट्टी से।

८. फिर बनाया उस का वंश एक तुच्छजल के निचोड़ (वीर्य) से।

९. फिर बराबर किया उस को और फूंक दिया उस में अपनी आत्मा (प्राण)। तथा बनाये तुम्हारे लिये कान और आँख तथा दिल। तुम कम ही कृतज्ञ होते हो।

१०. तथा उन्होंने कहा: क्या जब हम खो जायेंगे धरती में तो क्या हम नई उत्पत्ति में होंगे? बल्कि वह अपने पालनहार से मिलने का इन्कार करनेवाले हैं।

[1] इस से अभिप्राय मक्का वासी हैं।

११. आप कह दें कि तुम्हारा प्राण निकाल लेगा मौत का फ़रिश्ता जो तुम पर नियुक्त किया गया है फिर अपने पालनहार की ओर पेर दिये जाओगे।[1]

१२. और यदि आप देखते जब अपराधी अपने सिर झुकाये होंगे अपने पालनहार के समक्ष (वह कह रहे होंगे): हे हमारे पालनहार! हम ने देख लिया और सुन लिया, अतः हमें फेर दे (संसार में) हम सदाचार करेंगे। हमें पुरा विश्वास हो गया।

१३. और यदि हम चाहते तो प्रदान कर देते प्रत्येक प्राणी को उस का मार्गदर्शन। परन्तु मेरी यह बात सत्य हो कर रही कि मैं अवश्य भरूँगा नरक को जिन्नों तथा मानव से।

१४. तो चखो अपने भूल जाने के कारण अपने इस दिन के मिलने को, हम ने (भी) तुम्हें भुला दिया[2] है। चखो सदा की यातना उस के बदले जो तुम कर रहे थे।

१५. हमारी आयतों पर बस वही ईमान लाते हैं जिन को जब समझाया जाये उन से तो गिर जाते हैं सज्दा करते हुये और पवित्रता का गान करते है अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ और अभिमान नहीं करते।[3]

१६. अलग रहते हैं उन के पार्शव (पहलू) बिस्तरों से, वह प्रार्थना करते रहते हैं अपने पालनहार से भय तथा आशा रखते हुये, तथा उस में से जो हम ने उन्हें प्रदान किया है दान करते रहते हैं।

१७. तो नहीं जानता कोई प्राणी उसे जो छुपा रखा है हम ने उन के लिये आँखों की ठडक[4] उस के प्रतिफल में जो वह कर रहे थे।

१८. फिर क्या जो ईमानवाला हो उस के समान है जो अवज्ञाकारी हो? वह सब समान नहीं हो सकेंगे।

---

[1] अर्थात नई उत्पत्ति पर आश्चर्य करने से पहले इस पर विचार करो कि मरण तो आत्मा के शरीर से विलग हो जाने का नाम है जो दूसरे स्थान पर चली जाती है। और परलोक में उसे नया जन्म दे दिया जायेगा फिर उसे अपने कर्म के अनुसार स्वर्ग अथवा नरक में पहुँचा दिया जायेगा।

[2] अर्थात आज तुम पर मेरी कोई दया नहीं होगी।

[3] यहाँ सज्दा तिलावत करना चाहिये।

[4] हदीस में है कि अल्लाह ने कहा है कि मैंने अपने सदाचारी भक्तों के लिये ऐसी चीज़ें तैयार की हैं जिन्हें न किसी आँख ने देखा है और न किसी कान ने सुना और न किसी मनुष्य के दिल में उन का विचार आया। फिर आप ने यही आयत पढ़ी। (सहीह बुख़ारी : ४७८०)

१९. जो ईमान लाये तथा सदाचार किये तो उन्हीं के लिये स्थायी स्वर्ग हैं, अतिथि सत्कार के लिये उस के बदले जो वह करते रहे।

२०. और जो अवज्ञा कर गये, उन का आवास नरक है। जब जब वह निकलना चाहेंगे उस में से तो फेर दिये जायोंगे उस में, तथा कहा जायेगा उन से कि चखो उस अग्नि की यातना जिसे तुम झुठला रहे थे।

२१. और हम अवश्य चखायेंगे उन को संसारिक यातना, बड़ी यातना से पूर्व ताकि वह फिर[1] आयें।

२२. और उस से अधिक अत्याचारी कौन है जिसे शिक्षा दी जाये उस के पालनहार की आयतों द्वारा, फिर विमुख हो जाये उन से? वास्तव में हम अपराधियों से बदला लेनेवाले हैं।

२३. तथा हम ने मूसा को प्रदान की (तौरात) तो आप न हों किसी संदेह में उससे[2] मिलने में। तथा बनाया हम ने उसे (तौरात को) मार्गदर्शन इस्राईल की संतान के लिये।

२४. तथा हम ने उन में से अग्रणी बनाये जो मार्गदर्शन देते रहे हमारे आदेश द्वारा जब उन्होंने सहन किया तथा हमारी आयतों पर विश्वास[3] करते रहे।

२५. वस्तुतः आप का पालनहार ही निर्णय करेगा उन के बीच प्रलय के दिन जिस में वह विभेद करते रहे।

२६. तो क्या मार्गदर्शन नहीं कराया उन्हें कि हम ने ध्वस्त कर दिया इस से पूर्व बहुत से युग के लोगों को जो चल-फिर रहे थे अपने घरों में। वास्तव में इस मे बहुत सी निशानियाँ (शिक्षायें) हैं, तो क्या वह सुनते नहीं हैं?

२७. क्या उन्होंने नहीं देखा कि हम बहा ले जाते हैं जल को सूखी भूमि की ओर फिर उपजाते हैं उस के द्वारा खेतियाँ, खाते हैं जिस में से उन के चौपाये तथा वह स्वयं। तो क्या वह ग़ौर नहीं करते?

---

[1] अर्थात ईमान लाये और अपने कुकर्म से क्षमा याचना कर लें।

[2] इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मेराज की रात्रि में मूसा (अलैहिस्सलाम) से मिलने की ओर संकेत है। जिस में मूसा (अलैहिस्सलाम) ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अल्लाह से पचास नमाज़ों को पाँच कराने का प्रामर्श दिया। (सहीह बुख़ारीः ३२०७, मुस्मिम : १६४)

[3] अर्थ यह है कि आप भी धैर्य तथा पूरे विश्वास के वसाथ लेगों को सुपथ दर्शायें।

२८. तथा कहते हैं कि कब होगा वह निर्णय यदि तुम सच्चे हो?

२९. आप कह दें: निर्णय के दिन लाभ नहीं देगा काफ़िरों को उन का ईमान लाना[१] और न उन्हें अवसर दिया जायेगा।

३०. अत: आप विमुख हो जायें उन से तथा प्रतीक्षा करें, यह भी प्रतीक्षा करनेवाले हैं।

*****

[१] इन आयतों में मक्का के काफ़िरों को सावधान किया गया है कि इतिहास से शिक्षा ग्रहण करो, जिस जाति ने भी अल्लाह के रसूलों का विरोध किया उस को संसार से निरस्त कर दिया गया। तुम निर्णय की मांग करते हो तो जब निर्णय का दिन आ जायेगा तो तुम्हारे संभाले नहीं संभलेगी और उस समय का ईमान कोई लाभ नहीं देगा।

सूरह अहज़ाब – ३३

सूरह अहज़ाब के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में ७३ आयतें हैं।

- इस सूरह में अहज़ाब (जत्था या सेनाओं) की चर्चा के कारण इसे यह नाम दिया गया है।
- इस मे काफ़िरों और मुनाफ़िकों के धोखे में न आने तथा केवल अल्लाह पर भरोसा करने पर बल दिया गया है। फिर जाहिलिय्यत के मुंह बोले पुत्र की परम्परा का सुधार करने के साथ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पत्नियों का पद बताया गया है।
- अहज़ाब के युद्ध में अल्लाह की सहायता तथा मुनाफ़िक़ों की दुर्गत बताई गई है।
- इस में मुँह बोले पुत्र की परम्परा को तोड़ने के लिये नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ ज़ैनब (रज़ियल्लाहु अन्हा) के विवाह का वर्णन किया गया है।
- ईमानवालों को, अल्लाह को याद करने का निर्देश देते हुये उस पर दया तथा बड़े प्रतिफल की शुभ सूचना दी गई है। और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मान–मर्यादा को उजागर किया गया है।
- तलाक़ और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पत्नियों के विषय में कुछ विशेष आदेश दिये गये हैं।
- पर्दे का आदेश दिया गया है, तथा प्रलय की चर्चा की गई है।
- अन्त में मुसलमानों का दायित्व याद दिलाते हुये मुनाफ़िक़ों को चेतावनी दी गई है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. हे नबी! अल्लाह से डरो और काफ़िरों तथा मुनाफ़िक़ों की आज्ञापालन न करो। वास्तव में अल्लाह हिक्मत वाला सब कुछ जानने[१] वाला है।

२. तथा पालन करो उस का जो वह्यी (प्रकाशना) की जा रही है आप की ओर आप के पालनहार की ओर से। निश्चय अल्लाह जो तुम कर रहे हो उसे से सूचित है।

३. और आप भरोसा करें अल्लाह पर, तथा अल्लाह पर्याप्त है रक्षा करनेवाला।

४. और नहीं रखे हैं अल्लाह ने किसी को दो दिल उसे के भीतर और नहीं बनाया है तुम्हारी पत्नियों को जिन से तुम ज़िहार[२] करते हो उन में से तुम्हारी मातायें तथा नहीं बनाया है तुम्हारे मुँह बोले पुत्रों को तुम्हारा पुत्र। यह तुम्हारी मौखिक बातें हैं। और अल्लाह सच्च कहता है तथा वही सुपथ दिखाता है।

५. उन्हें पुकारो उन के बापों से संबन्धित कर के, यह अधिक न्याय की बात है अल्लाह के समीप। और यदि तुम नहीं जानते उन के बापों को तो वह तुम्हारे धर्म बन्धु तथा मित्र हैं। और तुम्हारे ऊपर कोई दोष नहीं है उस में जो तुम से चूक हुई है, परन्तु (उस में है) जिस का निश्चय तुम्हारे दिल करें। तथा अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

६. नबी[३] अधिक समीप (प्रिय) है ईमान वालों से उन के प्राणों से, और आप की पत्नियाँ[४] उन की मातायें हैं। और समीपवर्ती संबन्धी एक दूसरे से अधिक समीय[५] हैं, अल्लाह के लेख में ईमानवालों और मुहाजिरों से। परन्तु यह कि करते रहो अपने मित्रो के साथ भलाई, और यह पुस्तक में लिखा हुआ है।

---

[१] अत: उसी की आज्ञा तथा प्रकाशना का अनुसरण और पालन करो।

[२] इस आयत का भावार्थ यह है कि जिस प्रकार एक व्यक्ति के दो दिल नहीं होते वैसे ही उस की पत्नी ज़िहार कर लेने से उस की माता तथा उस का मुंह बोला पुत्र उस का पुत्र नहीं हो जाता।

नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने नबी होने से पहले अपने मुक्त किये हुये दास ज़ैद बिन हारिसा को अपना पुत्र बनाया था और उन को हारिसा पुत्र मुहम्मद कहा जाता था जिस पर यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारी)

[३] हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: मैं मुसलमानों का अधिक समीपवर्ति हूँ। यह आयत पढ़ो, तो जो माल छोड़ जाये तो मैं उस का रक्षक हूँ। (सहीह बुख़ारी : ४७८१)

[४] अर्थात उन का सम्मान मातोओं के बराबर है और आप के पश्चात् उन से विवाह निषेधित है।

[५] अर्थात धर्म विधानानुसार उत्तराधिकार समीपवर्ती संबंधियों का है, इस्लाम के आरंभिक युग में हिज्रत तथा ईमान के आधार पर एक दूसरे के उत्तराधिकारी होते थे जिसे मीरास की आयत द्वारा निरस्त कर दिया गया।

७. तथा (याद करो) जब हम ने नबियों से उन का वचन[1] लिया तथा आप से और नूह तथा इब्राहीम और मूसा तथा मर्यम के पुत्र ईसा से, और हम ने लिया उन से दृढ़ वचन।

८. ताकि वह प्रश्न[2] करे सच्चों से उन के सच्च के संबंध में तथा तय्यार की है काफ़िरों के लिये दुःखदायी यातना।

९. हे ईमान वालो! याद करो अल्लाह के पुरस्कार को अपने ऊपर जब आ गईं तुम्हारे पास जत्थे, तो भेजी हम ने उन पर आँधी और ऐसी सेनायें जिन को तुम ने नहीं देखा, और अल्लाह जो तुम कर रहे थे उसे देख रहा था।

१०. जब वह तुम्हारे पास आ गये तुम्हारे ऊपर से तथा तुम्हारे नीचे से और जब पत्थरा गईं आँखे, तथा आने लगे दिल मुँह[3] को तथा तुम विचारने लगे अल्लाह के संबंध में विभिन्न विचार।

११. यही परीक्षा ली गई ईमान वालों की और वह झंझोड़ दिये गये पूर्ण रूप से।

१२. और जब कहने लगे मुश्रिक और जिन के दिलों में कुछ रोग था कि अल्लाह तथा उस के रसूल ने नहीं वचन दिया हमें परन्तु धोखे का।

१३. और जब कहा उन के एक गिरोह ने: हे यस्रिब[4] वालो! कोई स्थान नहीं है तुम्हारे लिये, अतः लौट[5] चलो। तथा अनुमति माँगने लगा उन में से एक गिरोह नबी से, कहने लगा: हमारे घर ख़ाली हैं, जब कि वह ख़ाली न थे। वह तो बस निश्चय कर रहे थे भाग जाने का।

---

[1] अर्थात अपना उपदेश पहुँचाने का।

[2] अर्थात प्रलय के दिन (देखियेः सूरह आराफ़, आयत : ६)

[3] इन आयतों में अहज़ाब के युद्ध की चर्चा की गई है। जिस का दूसरा नाम (ख़न्दक़ का युद्ध) भी है। क्यों कि इस में ख़न्दक़ (खाई) खोद कर मदीना की रक्षा की गई। सन् ५ हिज्री में मक्का के काफ़िरों ने अपने पूरे सहयोगी क़बीलों के साथ एक भारी सेना लेकर मदीना को घेर लिया और नीचे वादी और ऊपर पर्वतों से आक्रमण कर दिया। उस समय अल्लाह ने ईमानवालों की रक्षा आँधी तथा फ़रिश्तों की सेना भज कर की। और शत्रु पराजित हो कर भागे। और फिर कभी मदीना पर आक्रमण करने का साहस न कर सकें।

[4] यह मदीने का प्राचीन नाम है।

[5] अर्थात रणक्षेत्र से अपने घरों को।

१४. और यदि प्रवेश कर जातीं उन पर मदीने के चारों ओर से (सेनायें) फिर उन से माँग की जाती उपद्रव[1] की तो अवश्य उपद्रव कर देते। और उस में तनिक भी देर नहीं करते।

१५. जब कि उन्हों ने वचन दिया था अल्लाह को इस से पूर्व कि पीछा नहीं दिखायेंगे और अल्लाह के वचन का प्रश्न अवश्य किया जायेगा।

१६. आप कह दें: कदापि लाभ नहीं पहुँचायेगा तुम्हें भागना यदि तुम भाग जाओ मरण से या मारे जाने से। और तब तुम थोड़ा ही[2] लाभ प्राप्त कर सकोगे।

१७. आप पूछिये कि वह कौन है जो तुम्हें बचा सके अल्लाह से यदि वह तुम्हारे साथ बुराई चाहे अथवा तुम्हारे साथ भलाई चाहे? और वह अपने लिये नहीं पायेंगे अल्लाह के सिवा कोई संरक्षक और न कोई सहायक।

१८. जानता है अल्लाह जो रोकने वाले है तुम में से तथा कहने वाले है अपने भाईयों से कि हमारे पास चले आओ, तथा नहीं आते है युद्ध में परन्तु कभी कभी।

१९. वह बड़े कंजूस हैं तुम पर। फिर जब आजाये भय का[3] समय, तो आप उन्हें देखेंगे देखेंगे कि आप की ओर तक रहे हैं फिर रही हैं उन की आँखें, उस के समान जो मरणासन्न दशा में हो, और जब दूर हो जाये भय तो वह मिलेंगे तुम से तेज़ जुबानों[4] से बड़े लोभी हो कर धन के। वह ईमान नहीं लाये हैं। अत: व्यर्थ कर दिये अल्लाह ने उन के सभी कर्म, तथा यह अल्लाह पर अति सरल है।

२०. वह समझते हैं कि जत्थे नहीं[5] गये और यदि आ जाये सेनायें तो वह चाहेंगे कि वह गाँव में हों, गाँव वालों के बीच तथा पूछते रहें तुम्हारे समाचार, और यदि तुम में होते भी तो वह युद्ध में कम ही भाग लेते।

२१. तुम्हारे लिये अल्लाह के रसूल में उत्तम[6] आदर्श है, उस के लिये जो आशा रखता हो अल्लाह और अंतिम दिन (प्रलय) की, तथा याद करे अल्लाह को अत्याधिक।

---

[1] अर्थात इस्लाम से फिर जाने तथा शिर्क करने की।

[2] अर्थात अपनी सीमित आयु तक जो परलोक की अपेक्षा बहुत थोड़ी है।

[3] अर्थात युद्ध का समय।

[4] अर्थात मर्म भेदी बातें करेंगे, और विजय में प्राप्त धन के लोभ मे बातें बनायेंगे।

[5] अर्थात ये मुनाफिक इतने कायर हैं कि अब भी उन्हें सेनाओं का भय है।

[6] अर्थात आप के सहन, साहस तथा वीरता में।

२२. और जब ईमानवालों ने सेनायें देखी तो कहा: यही है जिस का वचन दिया था हमें अल्लाह और उस के रसूल ने। और सच्च कहा अल्लाह तथा उस के रसूल ने और इस ने नहीं अधिक किया परन्तु (उन के) ईमान तथा स्वीकार को।

२३. ईमानवालों में कुछ वह भी हैं जिन्होंने सच्च कर दिखाया अल्लाह से किये हुये अपने वचन को । तो उन में कुछ ने अपना वचन[१] पूरा कर दिया, और उन में से कुछ प्रतीक्षा कर रहे हैं। और उन्होंने तनिक भी परिर्वतन नहीं किया।

२४. ताकि अल्लाह प्रतिफल प्रदान करे सच्चों को उन के सच्च का। तथा यातना दे मुनाफ़िक़ों को अथवा उनको क्षमा कर दे। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील और दयावान् है।

२५. तथा फेर दिया अल्लाह ने काफ़िरों को (मदीना से) उन के क्रोध के साथ। वह नहीं प्राप्त कर सके कोई भलाई। और पर्याप्त तो गया अल्लाह ईमान वालों के लिये युद्ध में। और अल्लाह अति शक्तिशाली तथा प्रभुत्वशाली है।

२६. और उतार दिया अल्लाह ने उन अहले किताब को जिन्होंने सहायता की उन (सेनाओं) की उन के दुर्गों से। तथा डाल दिला उन के दिलों में भय।[२] उनके एक गिरोह को तुम बध कर रहे थे तथा बंदी बना रहे थे एक दूसरे गिरोह को।

२७. और तुम्हारे अधिकार में दे दी उन की भूमी, तथा उन के घरों और धनों को, और ऐसी धरती को जिस पर तुम न पग नहीं रखे थे। तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

२८. हे नबी! आप अपनी पत्नियों से कह दें कि यदि तुम चाहती हो संसारिक जीवन तथा उस की शोभा तो आओ मैं तुम्हें कुछ दे दूँ तथा विदा कर दूँ अच्छाई के साथ।

---

[१] अर्थात युद्ध में शहीद कर दिये गये।

[२] इस आयत में बनी कुरैज़ा के युद्ध की ओर संकेत है। इस यहुदी क़बीले की नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ संधि थी। फिर भी उन्होंने संधि भँग कर के ख़न्दक़ के युद्ध में कुरैशे मक्का का साथ दिया। अत: युद्ध समाप्त होते ही आप ने उन से युद्ध की घोषणा कर दी। और उनकी घेरा बंदी कर ली गई। पच्चीस दिन के बाद उन्होंने सअद बिन मुआज़ को अपना मध्यस्थ मान लिया। और उन के निर्णय के अनुसार उन के लड़ाकुओ को बध कर दिया गया। और बच्चों, बूढ़ों तथा स्त्रियों को बन्दी बनला लिया गया। इस प्रकार मदीना से इस आतंकवादी क़बीले को सदैव के लिये समाप्त कर दिया गया।

२९. और यदि तुम चाहती हो अल्लाह और उस के रसूल तथा आख़िरत के घर को तो अल्लाह ने तय्यार कर रखा है तुम में से सदाचारिणियों के लिये भारी प्रतिफल[१]
३०. हे नबी की पत्नियो! जो तुम में से खुला दुराचार करेगी उस के लिये दुगनी कर दी जायेगी यातना और यह अल्लाह पर अति सरल है।
३१. तथा जो मानेंगे तुम में से अल्लाह तथा उस के रसूल की बात और सदाचार करेंगी हम उन्हें प्रदान करेंगे उन का प्रतिफल दोहरा। और हम ने तय्यार की है उन के लिये उत्तम जीविका।[२]
३२. हे नबी की पत्नियो! तुम नहीं हो अन्य स्त्रियों के समान। यदि तुम अल्लाह से डरती हो तो कोमल भाव से बात न करो, कि लोभ करने लगे वह जिस के दिल में रोग हो और सभ्य बात बोलो।
३३. और रहो अपने घरों में, और सौन्दर्य का प्रदर्शन न करो प्रथम अज्ञान युग के प्रदर्शन के समान। तथा नमाज़ की स्थापना करो और ज़कात दो तथा आज्ञा पालन करो अल्लाह और उस के रसूल की। अल्लाह चाहता है कि मलिनता को दूर कर दे तुम से, हे नबी के घर वालियो! तथा तुम्हें पवित्र कर दे अति पवित्र।
३४. तथा याद रखो उसे जो पढ़ी जाती है तुम्हारे घरों में अल्लाह की आयतें तथा हिक्मत।[३] वास्तव में अल्लाह सूक्ष्मदर्शी सर्व सूचित है।

---

[१] इस आयत में अल्लाह ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को ये आदेश दिया है कि आप की पत्नियाँ जो आप से अपने ख़र्च अधिक करने की माँग कर रहीं हैं, तो आप उन्हें अपने साथ रहने या न रहने का अकिार दें। और जब आपने उन्हें अधिकार दिया तो सब ने आप के साथ रहने का निर्णय किया। इस को इस्लामी विधान में (तख़्यीर) कहा जाता है। अर्थात पत्नि को तलाक़ लेने का अधिकार दे देना।

हदीस में है कि जब यह आयत उतरी तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपनी पत्नी आईशा से पहले कहा कि मैं तुम्हें एक बात बता रहा हूँ। तुम अपने माता-पिता से परामर्श किये बिना जल्दी न करना। फिर आप ने यह आयत सुनाई। तो आईशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने कहा: मैं इस के बारे में भी अपने माता-पिता से परामर्श करूँगी? मैं अल्लाह तथा उस के रसूल और आख़िरत के घर को चाहती हूँ। और फिर आप की दूसरी पत्नियों ने भी ऐसा ही किया। (दखिये : सहीह बुख़ारी : ४७८६)

[२] स्वर्ग में।

[३] यहाँ हिक्मत से अभिप्राय हदीस है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन, कर्म तथा वह काम है जो आप के सामने किया गया हो और आप ने उसे स्वीकार किया हो। वैसे तो अल्लाह की आयत भी हिक्मत हैं किन्तु जब दोनों का वर्णन एक साथ हो तो आयत का अर्थ अल्लाह की पुस्तक और हिक्मत का अर्थ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की हदीस होता है।

३५. निःसंदेह मुसलमान पुरुष और मुसलमान स्त्रियाँ तथा ईमान वाली स्त्रियाँ तथा आज्ञाकारी पुरुष और आज्ञाकारिणी स्त्रियाँ तथा सच्चे पुरुष और सच्ची स्त्रियाँ तथा सहनशील पुरुष और सहनशील स्त्रियाँ तथा विनीत पुरुष और विनीत स्त्रियाँ तथा दानशील पुरुष और दानशील स्त्रियाँ तथा रोज़ा रखनेवाले पुरुष और रोज़ा रखनेवाली स्त्रियाँ तथा अपने गुप्तांगों की रक्षा करनेवाले पुरुष तथा रक्षा करनेवाली स्त्रियाँ, तथा अल्लाह को अत्यधिक याद करनेवाले पुरुष और याद करनेवाली स्त्रियाँ, तय्यार कर रखा है अल्लाह ने इन्हीं के लिये क्षमा तथा महान् प्रतिफल।[१]

३६. तथा किसी ईमानवाले पुरुष और किसी ईमान वाली स्त्री के लिये योग्य नहीं है कि जब निर्णय कर दे अल्लाह तथा उस के रसूल किसी बात का तो उन के लिये अधिकार रह जाये अपने विषय में। और जो अवैज्ञ करेगा अल्लाह एवं उस के रसूल की तो वह खुले कुपथ में[२] पड़ गया।

३७. तथा (हे नबी!) आप वह समय याद करें जब आप उस से कह रहे थे उपकार किया अल्लाह ने जिस पर तथा आप ने उपकार किया जिस पर, रोक ले अपनी पत्नी को तथा अल्लाह से डर, और आप छुपा रहे थे अपने मन में जिसे अल्लाह उजागर करनेवाला[३] था, तथा डर रहे थे तुम लोगों से, जब कि अल्लाह अधिक योग्य था कि उस से डरते, तो जब ज़ैद ने पूरी कर ली उस (स्त्री) से अपनी अवश्यक्ता तो हम ने विवाह दिया उस को आप से, ताकि ईमान वालों पर कोई

---

[१] इस आयत में मुसलमान पुरुष तथा स्त्री को समान अधिकार दिये गये हैं। विशेष रूप से अल्लाह की वंदना में तथा दोनों का प्रतिफल भी एक बताया गया है जो इस्लाम धर्म की विशेषताओं में से एक है।

[२] हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: मेरी पूरी उम्मत स्वर्ग में जायेगी किन्तु जो इन्कार करे। कहा गया कि कोन इन्कार करेगा, हे अल्लाह के रसूल? आप ने कहा: जिस ने मेरी बात मानी वह स्वर्ग में जायेगा और जिस ने नहीं मानी तो उस ने इन्कार किया। (सहीह बुख़ारी : २७८०)

[३] हदीस में है कि यह आयत ज़ैनब बिन्ते जहश तथा (उस के पति) ज़ैद बिन हारिसा के बारे में उतरी। (बुख़ारी)
. जैद बिन हारिसा नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के दास थे। आप ने उन्हे मुक्त कर के अपना पुत्र बना लिया। और ज़ैनब से विवाह दिया। परन्तु दोनों में निभाव न हो सका। और ज़ैद ने अपनी पत्नी को तलाक़ दे दी। और जब मुँह बोले पुत्र की परम्परा को तोड़ दिया गया तो इसे पूर्णतः खण्डित करने के लिये आप को ज़ैनब से आकाशीय आदेश द्वारा विवाह दिया गया। इस आयत में उस की ओर संकेत है। (इब्ने कसीर)

दोष न रहे अपने मुँह बोले पुत्रों की पत्नियों के विषय[१] में जब वह पूरी कर लें उन से अपनी आवश्यक्ता। तथा अल्लाह का आदेश पूरा हो कर रहा।

३८. नहीं है नबी पर कोई तंगी उस में जिस का आदेश दिया है अल्लाह ने उन के लिये।[२] अल्लाह का यही नियम रहा है उन नबियों में जो हुये हैं आप से पहले। तथा अल्लाह का निश्चित किया आदेश पूरा होना ही है।

३९. जो पहुँचाते हैं अल्लाह के आदेश तथा उस से डरते हैं, वह नहीं डरते हैं किसी से उस के सिवा। और पर्याप्त है अल्लाह हिसाब लेने के लिये।

४०. मुहम्मद तुम्हारे पुरुषों में से किसी के पिता नहीं हैं। किन्तु वह[३] अल्लाह के रसूल और सब नबियों में अन्तिम[४] है। और अल्लाह प्रत्येक वस्तु का अति ज्ञानी है।

४१. हे ईमानवालो! याद करते रहो अल्लाह को अत्यधिक।[५]

४२. तथा पवित्रता बयान करते रहो उस की प्रात: तथा संध्या।

४३. वही है जो दया कर रहा है तुम पर तथा प्रार्थना कर रहे हैं (तुम्हारे लिये) उस के फ़रिश्ते। ताकि वह निकाल दे तुम को अंधेरों से प्रकाश[६] की ओर। तथा ईमानवालों पर अत्यंत दयावान् है।

४४. उन का स्वागत् जिस दिन उस से मिलेंगे सलाम से होगा। और उस ने तय्यार कर रखा है उन के लिये सम्मानित प्रतिफल।

---

[१] अर्थात उन से विवाह करने में जब वह उन्हें तलाक़ दे दें। क्योंकि जाहिली समय में मुँह बोले पुत्र की पत्नी से विवाह वैसे ही निषेध था जैसे सगे पुत्र की पत्नी से। अल्लाह ने इस नियम को तोड़ने के लिये नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का विवाह अपने मुँह बोले पुत्र की पत्नी से कराया। ताकि मुसलमानों को इस से शिक्षा मिले कि ऐसा करने में कोई दोष नहीं है।

[२] अर्थात अपने मुँह बोले पुत्र की पत्नी से उस के तलाक़ देने के पश्चात् विवाह करने में।

[३] अर्थात आप ज़ैद के पिता नहीं हैं। उस के वास्विक पिता हारिसा हैं।

[४] अर्थात अब आप के पश्चात् प्रलय तक कोई नबी नहीं आयेगा। आप ही संसार के अन्तिम रसूल हैं। हदीस में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: मेरी मिसाल तथा नबियों का उदाहरण ऐसा है जैसे किसी ने एक सुन्दर भवन बनाया। और एक ईंट की जगह छोड़ दी। तो उसे देख कर लोग आश्चर्य करने लगे कि इस में एक ईंट की जगह के सिवा कोई कमी नहीं थी। तो मैं वह ईंट हूँ। मैंने उस ईंट की जगह भर दी। और भवन पूरा हो गया। और मेरे द्वारा नबियों की कड़ी का अन्त कर दिया गया। (सहीह बुख़ारी)

[५] अपने मुखों, कर्मों तथा दिलों से नमाज़ो के पश्चात् तथा अन्य समय में। हदीस में है कि जो अल्लाह को याद करता हो और जो याद न करता हो दोनों में वही अन्तर है जो जीवित तथा मरे हुये में है। (बुख़ारी, मुस्लिम)

[६] अर्थात अज्ञानता तथा कुपथ से, इस्लाम के प्रकाश की ओर।

४५. हे नबी! हम ने भेजा है आप को साक्षी[१] तथा शुभसूचक[२] और सचेत कर्ता[३] बना कर।

४६. तथा बुलाने वाला बना कर अल्लाह की ओर उस की अनुमति से, तथा प्रकाशित प्रदीप बना कर।[४]

४७. तथा आप शुभसूचना सुना दें ईमान वालों को कि उन के लिये अल्लाह की ओर से बड़ा अनुग्रह है।

४८. तथा न बात मानें काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की, तथा न चिन्ता करें उन के दुःख पहुँचाने की और भरोसा करें अल्लाह पर। तथा पर्याप्त है अल्लाह काम बनाने के लिये।

४९. हे ईमानवालो! जब तुम विवाह करो ईमान वालियों से फिर तलाक़ दो उन्हें इस से पूर्व कि हात लगाओ उन को तो नहीं है तुम्हारे लिये उन पर कोई इद्दत[५] जिस की तुम गणना करो। तो तुम उन्हें कुछ लाभ पहुँचाओ, और उन्हें विदा करो भलाई के साथ।

५०. हे नबी! हम ने हलाल (वैध) कर दिया है आप के लिये आप की पत्नियों को जिन्हें चुका दिया हो आप ने उन का महर (विवाह उपहार), तथा जो आप के स्वामित्व में हों उस में से जो प्रदान किया है अल्लाह ने आप[६] को, तथा आप के चाचा की पुत्रियों और आप की फूफी की पुत्रियों तथा आप के मामा की पुत्रियों तथा मौसी की पुत्रियों को, जिन्होंने हिजरत की है आप के साथ, तथा किसी भी ईमानवाली नारी को यदि वह स्वयं को दान कर दे नबी के लिये, यदि नबी चाहें कि उस से विवाह कर लें। यह विशेष है आप के लिये अन्य ईमानवालों को छोड़

---

[१] अर्थात लोगों को अल्लाह का उपदेश पहुँचाने का साक्षी। (देखिये: सूरह बक़रा : १४३, तथा सूरह निसा : ४१)

[२] अल्लाह की दया तथा स्वर्ग का, आज्ञाकारियों के लिये।

[३] अल्लाह की यातना तथा नरक से, अवैज्ञाकारियों के लिये।

[४] इस आयत में यह संकेत है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) दिव्य प्रदीप के समान पूरे मानव विश्व को सत्य के प्रकाश से जो एकेश्वरवाद तथा एक अल्लाह की इबादत (वंदना) है प्रकाशित करने के लिये आये हैं। और यही आप की विशेषता है कि आप किसी जाति या देश अथवा वर्ण–वर्ग के लिये नहीं आयें हैं। और अब प्रलय तक सत्य का प्रकाश आप ही के अनुसरण से प्राप्त हो सकता है।

[५] अर्थात तलाक़ के पश्चात् की निर्धारित अवधि जिसके भीतर दूसरे से विवाह करने की अनुमति नहीं है।

[६] अर्थात वह दासियाँ जो युद्ध में आप के हाथ आई हों।

कर। हमें ज्ञान है उस का जो हम ने अनिवार्य किया है उन पर उन की पत्नियों तथा उन के स्वामित्व में आयी दासियों के संबंध[१] में। ताकि तुम पर कोई संकीर्णता (तंगी) न हो। और अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

५१. (आप को अधिकार है कि) जिसे आप चाहें अलग रखे अपनी पत्नियों में से, और अपने साथ रखें जिसे चाहें। और जिसे आप चाहें बुला लें उन में से जिसे अलग किया है। आप पर कोई दोष नहीं है। इस प्रकार अधिक आशा है कि उन की आँखें शीतल हों, और वह उदासीन न हों तथा प्रसन्न रहें उस से जो आप उन सब को दें, और अल्लाह जानता है जो तुम्हारे दिलों[२] में है। और अल्लाह अति ज्ञानी सहनशील[३] है।

५२. (हे नबी!) नहीं हलाल (वैध) हैं आप के लिये पत्नियाँ इस के पश्चात्, और न यह कि आप बदलें उन को दूसरी पत्नियों[४] से यद्यपि आप को भाये उन का सौन्दर्य। परन्तु जो दासी आप के स्वामित्व में आ जाये। तथा अल्लाह प्रत्येक वस्तु का (पूर्ण) रक्षक है।

५३. हे ईमानवालो! मत प्रवेश करो नबी के घरों में परन्तु यह कि अनुमति दी जाये तुम को भोज के लिये। परन्तु भोजन पकने की प्रतिक्षा न करते रहो। किन्तु जब तुम बुलाये जाओ तो प्रवेश करो, फिर जब भोजन कर लो ता निकल जाओ। लीन न रहो बातों में। वास्तव में इस से नबी को दुःख होता है, अतः वह तुम से लजाते हैं। और अल्लाह नहीं लजाता है सत्य[५] से तथा जब तुम नबी की पत्नियों से कुछ माँगो तो पर्दे के पीछे से माँगो, यह अधिक पवित्रता का कारण है तुम्हारे दिलों तथा उन के दिलों के लिये। और तुम्हारे लिये उचित नहीं है कि नबी को दुःख

---

[१] अर्थात यह कि चार पत्नियों से अधिक न रखो तथा महर (विवाह उपहार) और विवाह के समय दो साक्षी बनाना और दासियों के लिये चार का प्रतिबंध न होना एवं सब का भरण–पोषण और सब के साथ अच्छा व्यवहार करना इत्यादि।

[२] अर्थात किसी एक पत्नी में रुची।

[३] इसीलिये तुरंत यातना नहीं देता।

[४] अर्थात उन में से किसी को छोड़ कर उस के स्थान परकिसी दूसरी स्त्री से विवाह करें।

[५] इस आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ सभ्य व्यवहार करने की शिक्षा दी जा रही है। हुआ यह कि जब आप ने ज़ैनब से विवाह किया तो भोजन बनवाया और कुछ लेगों को आमंत्रित किया। कुछ लेग भोजन कर के वहीं बातें करने लगे जिस से आप को दुःख पहुँचा। इसी पर यह आयत उतरी। फिर पर्दे का आदेश दे दिया गया। (सहीह बुख़ारी नं. : ४७९२)

दो,न यह कि विवाह करो उन की पत्नियों से आप के पश्चात् कभी भी। वास्तव में य अल्लाह के समीप महा (पाप) है।

५४. यदि तुम कुछ बोलो अथवा उसे मन में रखो तो अल्लाह प्रत्येक वस्तु का अत्यंत ज्ञानी है।

५५. कोई दोष नहीं है उन (स्त्रियों) पर अपने पिताओं, न अपने पुत्रों एवं भाईयों और न भतीजों तथा न अपनी (मेल–जोल की) स्त्रियों और न अपने स्वामित्व (दासी तथा दास) के सामने होने में, यदि वह अल्लाह से डरती रहें। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर साक्षी है।

५६. अल्लाह तथा उस के फ़रिश्ते दरूद[१] भेजते हैं नबी पर। हे ईमानवालो! उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

५७. जो लोग दुःख देते हैं अल्लाह तथा उस के रसूल को तो अल्लाह ने उन्हें धिक्कार दिया है लोक तथा परलोक में। और तय्यार की हैं उन के लिये अपमानकारी यातना।

५८. और जो दुःख देते हैं ईमानवालों तथा ईमानवालियों को बिना किसी दोष के जो उन्हों ने किया हो, तो उन्होंने लाद लिया आरोप तथा खुले पाप को।

५९. हे नबी! कह दो अपनी पत्नियों से तथा अपनी पुत्रियों एवं ईमान वालों की स्त्रियों से कि डाल लिया करें अपने ऊपर अपनी चादरें। यह अधिक समीप है कि वह

---

[१] अल्लाह के दरूद भेजने का अर्थ यह है कि फ़रिश्तों के समक्ष आप की प्रशंसा करता है। तथा आप पर अपनी दया भेजता है।

और फ़रिश्तों के दरूद भेजने का अर्थ यह है कि वह आप के लिये अल्लाह से दया की प्रार्थना करते हैं। हदीस में आता है कि आप से प्रश्न किया गया कि हम सलाम तो जानते हैं पर आप पर दरूद कैसे भेजें? तो आप ने फ़रमाया: यह कहो: (अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मद व अला आलि मुहम्मद, कमा सल्लैता अला आलि इब्राहीम, इन्नका हमीदुम मजीद। अल्लाहुम्मा बारिक अला मुहम्मद व अला आलि मुहम्मद कमा बारक्ता अला आलि इब्राहीम इन्नका हमीदुम मजीद।) (सहीह बुख़ारी : ४७९७)

दूसरी हदीस में है कि: जो मुझ पर एक बार दरूद भेजेगा अल्लाह उस पर दस बार दया भेजता है।

पहचान ली जायें। फिर उन्हें दुःख न दिया[1] जाये। और अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

६०. यदि न रुके मुनाफ़िक़[2] तथा जिन के दिलों में रोग है और मदीना में अफ़वाह फैलानेवाले तो हम आप को भड़का देंगे उन पर। फिर वह आप के साथ नहीं रह सकेंगे उस में परन्तु कुछ ही दिन।

६१. धिक्कारे हुये। वे जहाँ पाये जायें पकड़ लिये जायेंगे तथा जान से मार दिये जायेंगे।

६२. यही अल्लाह का नियम रहा है उन में जो इन से पूर्व रहे। तथा आप कदापि नहीं पायेंगे अल्लाह के नियम में कोई परिवर्तन।

६३. प्रश्न करते हैं आप से लोग[3] प्रलय के विषय में। तो आप कह दें कि उस का ज्ञान तो अल्लाह ही को है। संभव है कि प्रलय समीप हो।

६४. अल्लाह ने धिक्कार दिया है काफ़िरों को। और तय्यार कर रखी है उन के लिये दहकती अग्नि।

६५. वे सदावासी होंगे उस में। नहीं पायेंगे कोई रक्षक और न कोई सहायक।

६६. जिस दिन उलट पलट किये जायेंगे उन के मुख अग्नि में, वे कहेंगे: हमारे लिये क्या ही अच्छा होता की हम कहा मानते अल्लाह का तथा कहा मानते रसूल का!

६७. तथा कहेंगे: हमारे पालनकार! हम ने कहा माना अपने प्रमुखों एवं बड़ों का। तो उन्होंने हमें कुपथ कर दिया सुपथ से।

६८. हमारे पालनहार! उन्हें दुगुनी यातना दे। तथा उन्हें धिक्कार दे बड़ी धिक्कार।

६९. हे ईमान वालो! न हो जाओ उन के समान जिन्होंने ने मूसा को दुःख दिया, तो अल्लाह ने निर्दोष कर दिया[1] उसे उन की बनाई बातों से। और वह था अल्लाह के समक्ष सम्मानित।

---

[1] इस आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पत्नियों, पुत्रियों तथा साधारण महिलाओं को यह आदेश दिया गया है कि घर से निकलें तो पर्दे के साथ निकलें। जिसका लाभ यह है कि इससे एक सभ्य तथा सम्मानित महिला की असभ्य तथा कुकर्मी महिला की पहचान होगी और कोई उससे छेड़ छाड़ की साहस नहीं करेगा।

[2] मुश्रिक (द्विधावादी) मुसलमानों को हताश करने के लिये कभी मुसलमानों की पराजय और कभी किसी भारी सेना के आक्रमण की अफ़वाह मदीना में फैला दिया करते थे। जिस के दुष्परिणाम से उन्हें सावधान किया गया है।

[3] यह प्रश्न उपहास स्वरूप किया करते थे। इसलिये उस की दशा का चित्रण किया गया है।

७०. हे ईमान वालो! अल्लाह से डरो तथा सहीह और सीधी बात बोलो।

७१. वह सुधार देगा तुम्हारे लिये तुम्हारे कर्मों को, तथा क्षमा कर देगा तुम्हारे पापों को और जो अनुपालन करेगा अल्लाह तथा उस के रसूल का तो उस ने बड़ी सफलता प्राप्त कर ली।

७२. हम ने प्रस्तुत किया अमानत[२] को आकाशों तथा धरती एवं पर्वतों पर तो उन सब ने इन्कार कर दिया उन का भार उठाने से। तथा डर गये उस से। किन्तु उस का भार ले लिया मनुष्य ने। वास्तव में वह बड़ा अत्याचारी[3] अज्ञान है।

७३. (यह अमानत का भार इस लिये लिया है) ताकि अल्लाह दण्ड दे मुनाफ़िक पुरुष तथा मुनाफ़िक स्त्रियों को और मुशरिक पुरुष तथा स्त्रियों को। तथा क्षमा कर दे अल्लाह ईमान वालों तथा ईमान वालियों को और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

*****

---

[१] हदीस में आया है कि मूसा (अलैहिस्सलाम) बड़े लज्जशील थे। प्रत्येक समय वस्त्र धारण किये रहते थे। जिस से लोग समझने लगे कि संभवत: उन में कुछ रोग है। परन्तु अल्लाह ने एक बार उन्हें नग्न अवस्था में लोगों को दिखा दिया और संदेह दूर हो गया। (सहीह बुख़ारी : ३४०४, मुस्लिम: १५५)

[२] अमानत से अभिप्राय: धार्मिक नियम हैं जिन के पालन का दायित्व तथा भार अल्लाह ने मनुष्य पर रखा है। और उस में उन का पालन करने की योग्यता रखी है जो योग्यता आकाशों तथा धरती और पर्वतों को नहीं दी है।

[3] अर्थात इस अमानत का भार लेकर भी अपने दायित्व को पूरा न कर के स्वयं अपने ऊपर अत्याचार करता है।

सूरह सबा – ३४

सूरह सबा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ५४ आयतें है।

– इस में सबा जाति के चर्चा के कारण इसे यह नाम दिया गया है।
– इस में संदेहों को दूर करते हुये अल्लाह का परिचय ऐसे कराया गया है जिस से तौहीद तथा आख़िरत के प्रति विश्वास हो जाता है।
– इस में दावूद तथा सुलैमान (अलैहिमस्सलाम) पर अल्लाह के पुरस्कारों और उन पर उन के आभारी होने का वर्णन तथा सबा जाति की कृतघ्नता और उस के दुष्परिणाम को बताया गया है।
– शिर्क का खण्डन तथा विरोधियों का जवाब देते हुये परलोक के कुछ तथ्य प्रस्तुत किये गये है।
– सूरह के अन्त में सोच–विचार कर के निर्णय करने का सुझाव दिया गया हैं। और इस बात पर सावधान किया गया है कि समय निकल जाने पर पछतावे के सिवा कुछ हाथ नहीं आयेगा।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. सब प्रशंसा अल्लाह के लिये हैं जिस के अधिकार में है जो आकाशों तथा धरती में है। और उसी की प्रशंसा है आख़िरत (परलोक) में। और वही उपाय जानने वाला सब से सूचित है।

२. वह जानता है जो कुछ घुसता है धरती के भीतर तथा जो[१] निकलता है उस से, तथा जो उतरता है आकाश[२] से और चढ़ता है उस में।[३] तथा वह अति दयावान् क्षमी है।

३. तथा कहा काफ़िरों ने कि हम पर प्रलय नहीं आयेगी। आप कह दें: क्यों नहीं? मेरे पालनहार की शपथ! वह तुम पर अवश्य आयेगी जो परोक्ष का ज्ञानी है। नहीं छुपा रह सकता उस से कण बराबर (भी) आकाशों तथा धरती में, न उस से छोटी कोई चीज़ और न बड़ी किन्तु वह खुली पुस्तक में (अंकित) है।[४]

४. ताकि[५] वह बदला दे उन को जो ईमान लाये तथा सुकर्म किये। उन्हीं के लिये क्षमा तथा सम्मानित जीविका है।

५. तथा जिन्होंने प्रयत्न किये हमारी आयतों में विवश[६] करने का तो यही है जिन के लिये यातना है अति घोर दुःखदायी।

६. तथा (साक्षात) देख[७] लेंगे जिन को उस का ज्ञान दिया गया है जो अवतरित किया किया गया है आप की ओर आप के पालनहार की ओर से । वही सत्य हैं, तथा सुपथ दर्शाता है, अति प्रभुत्वशाली प्रशंसित का सुपथ।

७. तथा काफ़िरों ने कहा: क्या हम तुम्हें एक ऐसे व्यक्ति को बतायें जो तुम्हें सूचना देता है कि जब तुम पूर्णत: चूर-चूर हो जाओगे तो अवश्य तुम एक नई उतपत्ति में होगे?

---

[१] जैसे वर्षा, कोष और निधि आदि।
[२] जैसे वर्षा, ओला, फ़रिश्ते और आकाशीय पुस्तकें आदि।
[३] जैसे फ़रिश्ते तथा कर्म।
[४] अर्थात लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पुस्तक) में।
[५] यह प्रलय के होने का कारण है।
[६] अर्थात हमारी आयतों से रोकते हैं और समझते हैं कि हम उन को पकड़ने से विवश होंगे।
[७] अर्थात प्रलय के दिन कि कुरआन ने जो सूचना दी है वह साक्षात सत्य है।

८. उस ने बना ली है अल्लाह पर एक मिथ्या बात, अथवा वह पागल हो गया है। बल्कि जो विश्वास (ईमान) नहीं रखते आख़िरत (परलोक) पर, वह यातना[१] तथा दूर के कुपथ में हैं।

९. क्या उन्होंने नहीं देखा उस की ओर जो उन के आगे तथा उन के पीछे आकाश और धरती है। यदि हम चाहें तो धंसा दें उन के सहित धरती को अथवा गिरा दें उन पर कोई खण्ड आकाश से। वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी है प्रत्येक भक्त के लिये जो ध्यानमग्न हो।

१०. तथा हम ने प्रदान किया दावूद को अपना कुछ अनुग्रह।[२] हे पर्वतो! सरुचि महिमा गान करो[३] उस के साथ, तथा हे पक्षियो! तथा हम ने कोमल कर दिया उस के लिये लोहा को।

११. कि बनाओ भरपूर कवचें तथा अनुमति रखो उस की कड़ियों को, तथा सदाचार करो। जो कुछ तुम कर रहे हो उसे मैं देख रह हूँ।

१२. तथा (हम ने वश में कर दिया) सुलैमान[४] के लिये वायु को। उस का प्रात: चलना चलना एक महीने का तथा संध्या का चलना एक महीने का[५] होता था। तथा हम ने बहा दिये उस के लिये ताँबे के स्रोत। तथा कुछ जिन्न कार्यरत थे उस के समक्ष उस के पालनहार की अनुमति से। तथा उन में से जो फिरेगा हमारे आदेश से तो हम चखायेंगे[६] उसे भड़कती अग्नि की यातना।

१३. वह बनाते थे उस के लिये जो वह चाहता था भवन (मस्जिदें) और चित्र तथा बड़े लगन जलाशयों (तालाबों) के समान तथा भारी देगें जो हिल न सकें। हे दावूद के परिजनो! कर्म करो कृतज्ञ होकर, और मेरे भक्तों में थोड़े ही कृतज्ञ होते हैं।

---

[१] अर्थात इस का दूष्परिणाम नरक की यातना है।

[२] अर्थात उन को नबी बनाया और पुस्तक का ज्ञान प्रदान किया।

[३] अल्लाह के इस आदेश अनुसार पर्वत तथा पक्षी उन के लिये अल्लाह की महिमा गान के समय उन की ध्वनी को दुहराते थे।

[४] सुलैमान (अलैहिस्सलाम) दावूद (अलैहिस्सलाम) के पुत्र तथा नबी थे।

[५] सुलैमान (अलैहिस्सलाम) अपने राज्य के अधिकारियों के साथ सिंहासन पर आसीन हो जाते। और उन के आदेश से वायु उसे इतनी तीव्र गति से उड़ा ले जाती कि आधे दिन में एक महीने की यात्रा पूरी कर लेते। इस प्रकार प्रात: संध्या मिला कर दो महीने की यात्रा पूरी हो जाती। (देखिये: इब्ने कसीर)

[६] अर्थात नरक की यातना।

१४. फिर जब हम ने उस (सुलैमान) पर मौत का निर्णय कर दिया तो जिन्नों को उन के मरण पर एक घुन के सिवा किसी ने सूचित नहीं किया जो उस की छड़ी खा रहा था।[१] फिर जब वह गिर गया तो जिन्नों पर यह बात खुली कि यदि वे परोक्ष का ज्ञान रखते तो इस अपमान कारी[२] यातना में नहीं पड़े रहते।

१५. सबा[३] की जाति के लिये उन की बस्तियों में एक निशानी[४] थी: बाग़ थे दायें और बायें। खाओ अपने पालनहार का दिया हुआ, और उस के कृतज्ञ रहो। स्वच्छ नगर है तथा अति क्षमी पालनहार।

१६. परन्तु उन्होंने मुँह फेर लिया तो भेज दी हम ने उन पर बाँध तोड़ बाढ़। तथा बदल दिया हम ने उन के दो बाग़ों को दो कड़वे फलों के बाग़ों और झाऊ तथा कुछ बैरी से।

१७. यह कुफल दिया हम ने उन के कृतघ्न होने के कारण। तथा हम कृतघ्नों ही को कुफल दिया करते हैं।

१८. और हम ने बना दी थीं उन के बीच तथा उन की बस्तियों के बीच जिस में हम ने समपन्नता[५] प्रदान की थी खुली बस्तियाँ तथा नियत कर दिया था उन में चलने का स्थान[६] (कि) चलो उस में रात्रि तथा दिनों के समय शान्त[७] हो कर।

१९. तो उन्होंने कहा: हे हमारे पालनहार! दूरी[८] कर दे हमारी यात्राओं के बीच। तथा उन्होंने अत्याचार किया अपने ऊपर। अंतत: हम ने उन्हें कहानियाँ बना दिया, और तित्तर बित्तर कर दिया। वास्तव में इस में कई निशानियाँ (शिक्षायें) हैं प्रत्येक अति धैर्यवान कृतज्ञ के लिये।

---

[१] जिस के सहारे वह खड़े थे तथा घुन के खाने पर उन का शव धरती पर गिर पड़ा।

[२] सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के युग में यह भ्रम था कि जिन्नों को परोक्ष का ज्ञान होता है। जिसे अल्लाह ने माननीय सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के निधन द्वारा तोड़ दिया कि अल्लाह के सिवा किसी को परोक्ष का ज्ञान नहीं है। (इब्ने कसीर)

[३] यह जाति यमन में निवास करती थी।

[४] अर्थात अल्लाह के सामर्थ्य की।

[५] अर्थात सबा तथा शाम (सीरिया) के बीच है।

[६] अर्थात एक स्थान से दूसरे स्थान तक यात्रा की सुविधा रखी थी।

[७] शत्रु तथा भूख–प्यास से निर्भय हो कर।

[८] हमारी यात्रा के बीच कोई बस्ती न हो।

२०. तथा सच्च कर दिया इब्लीस ने उन पर अपना अंकलन।[1] तो उन्होंने अनुसरण किया उस का एक समुदाय को छोड़ कर ईमान वालों के।

२१. और नहीं था उस का उन पर कुछ अधिकार (दबाव) किन्तु ताकि हम जान लें कि कौन ईमान रखता है आख़िरत (परलोक) पर उन में से जो उस के विषय में किसी संदेह में है। तथा आप का पालनहार प्रत्येक चीज़ का निरीक्षक है।[2]

२२. आप कह दें: उन (पूज्यों) को पुकारो[3] जिन को तुम समझते हो अल्लाह के सिवा। सिवा। वह नहीं अधिकार रखते कण बराबर भी आकाशों में न धरती में। तथा नहीं है उन का उन दोनों में कोई भाग। और नहीं है उस अल्लाह का उन में से कोई सहायक।

२३. तथा नहीं लाभ देगी अभिस्तावना (सिफ़ारिश) अल्लाह के पास परन्तु जिस के लिये अनुमति देगा[4] यहाँ[5] तक कि जब दूर कर दिया जाता है उद्वेग उन के दिलों दिलों से तो वह (फ़रिश्ते) कहते हैं कि तुम्हारे पालनहार ने क्या कहा? वे कहते हैं कि सत्य कहा। तथा वह अति उच्च महान् है।

२४. आप (मुश्रिकों) से प्रश्न करें कि कौन जीविका प्रदान करता है तुम्हें आकाशों[6] तथा धरती से? आप कह दें कि अल्लाह। तथा हम अथवा तुम अवश्य सुपथ पर हैं अथवा खुले कुपथ में हैं।

२५. आप कह दें: तुम से नहीं प्रश्न किया जायेगा हमारे अपराधों के विषय में, और न हम से प्रश्न किया जायेगा तुम्हारे कर्मों के[7] संबंध में।

२६. आप कह दें कि एकत्रित[1] कर देगा हमें हमारा पालनहार। फिर निर्णय कर देगा हमारे बीच सत्य के साथ। तथा वही अति निर्णय कारी सर्वज्ञ है।

---

[1] अर्थात यह अनुमान कि वह आदम के पुत्रों को कुपथ करेगा। (देखिये सूरह आराफ़ : १६, तथा सूरह साद : ८२)

[2] ताकि उन का प्रतिकार बदला दे।

[3] इस में संकेत उन की ओर है जो फ़रिश्तों को पूजते तथा उन्हें अपना सिफ़ारशी मानते थे।

[4] देखिये सूरह बक़रा, आयत: २५५, तथा सूरह अम्बिया, आयत : २८

[5] अर्थात जब अल्लाह आकाशों में कोई निर्णय करता है तो फ़रिश्ते भय से काँपने और अपने पंखों को फड़फड़ाने लगते हैं। हैं। फिर जब उन की उद्विग्नता दूर हो जाती है तो प्रश्न करते हैं कि तुम्हारे पालनहार ने क्या आदेश दिया है? तो वे कहते हैं कि उस ने सत्य कहा है। और वह अति उच्च महान् है। (सहीह बुख़ारी नं.:४८००)

[6] आकाशों की वर्षा तथा धरती की उपज से।

[7] क्यों कि हम तुम्हारे शिर्क से विरक्त हैं।

२७. आप कह दें कि तनिक मुझे उन को दिखा दो जिन को तुम ने मिला दिया है अल्लाह के साथ साझी[२] बना कर? ऐसा कदापि नहीं। बल्कि वही अल्लाह है अत्यंत प्रभावशाली तथा गुणी।
२८. तथा नहीं भेजा है हम ने आप[३] को परन्तु सब मनुष्यों के लिये शुभसूचना देने तथा सचेत करनेवाला बनाकर। किन्तु अधिक्तर लोग ज्ञान नहीं रखते।
२९. तथा वह कहते हैं कि यह वचन कब पूरा होगा यदि तुम सत्यवादी हो?
३०. आप उन से कह दें कि एक दिन वचन का निश्चित[४] है। वे नहीं पीछे होंगे उस से क्षण भर और न आगे होंगे।
३१. तथा काफ़िरों ने कहा कि हम कदापि ईमान नहीं लायेंगे इस कुरआन पर और न उस पर जो इस से पूर्व की पुस्तक हैं। और यदि आप देखेंगे इन अत्याचारियों को खड़े हुये अपने पालनहार के समक्ष तो वे दोषारोपण कर रहे होंगे एक दूसरे पर।

---

[१] अर्थात प्रलय के दिन।

[२] अर्थात पूजा–आराधना में।

[३] इस आयत में अल्लाह ने जनाब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विश्वव्यापी रसूल तथा सर्व मनुष्य जाति के पथ प्रदर्शक होने की घोषरा की है। जिसे सूरह आराफ़, आयत नं.: १५८, था सूरह फ़ुर्क़ान आयत नं.:१, में भी वर्णित किया गया है। इसी प्रकार आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि मुझे पाँच ऐसी चीज़ दी गई हैं जो मुझ से पूर्व किसी नबी को नहीं दी गईं। और वे ये हैं :

१ – एक महीने की दूरी तक शत्रुओं के दिलों में मेरी धाक द्वारा मेरी सहायता की गई है।

२ – पूरी धर्ती मेरे लिये मस्जिद तथा पवित्र बना दी गई है।

३ – युद्ध में प्राप्त धन मेरे लिये वैध कर दिया गया है जो पहले किसी नबी के लिये वैध नहीं किया गया।

४ – मुझे सिफ़ारिश का अधिकार दिया गया है।

५ – मुझ से पहले के नबी मात्र अपने समुदाय के लिये भेजा जाता था परन्तु मुझे सम्पूर्ण मानव जाति के लिये नबी बना कर भेजा गया है। (सहीह बुख़ारी : ३३५)

आयत का भावार्थ यह है कि आप के आगमन के पश्चात् आप पर ईमान लाना तथा आप के लाये धर्म विधान कुरआन का अनुपालन करना पूरे मानव विश्व पर अनिवार्य है। और यही सत्धर्म तथा मुक्ति–मार्ग है। जिसे अधिकत्र लोग नहीं जानते।

नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: उस की शपथ जिस के हाथ में मेरे प्राण हैं! इस उम्मत का कोई यहूदी और ईसाई मुझे सुनेगा और मौत से पहले मेरे धर्म पर ईमान नहीं लायेगा तो वह नरक में जायेगा। (मुस्लिम)

[४] प्रलय का दिन।

जो निर्बल समझे जा रहे थे वे कहेंगे उन से जो बड़े बन रहे थे: यदि तुम न होते तो हम अवश्य ईमान लाने वालों[१] में होते।

३२. वह कहेंगे जो बड़े बने हुये ते उन से जो निर्बल समझे जा रहे थे: क्या हम ने तुम्हें रोका सुपथ से जब वह तुम्हारे पास आया? बल्कि तुम ही अपराधी थे।

३३. तथा कहेंगे जो निर्बल होंगे उन से जो बड़े (अहंकारी) होंगे : बल्कि रात–दिन के षड्यंत्र[२] ने, जब तुम हमें आदेश दे रहे थे कि हम कुफ़्र करें अल्लाह के साथ तथा बनायें उस के साक्षी, तथा अपने मन में पछतायेंगे जब यातना देखेंगे। और तम तौक़ डाल देंगे उन के गलों में जो काफ़िर हो गये, वह नहीं बदला दिये जायेंगे परन्तु उसी का जो वह कर रहे थे।

३४. और नहीं भेजा हम ने किसी बस्ती में कोई सचेतकर्ता (नबी) परन्तु कहा उस के सम्पन्न लोगों ने: हम जिस चीज़ के साथ तुम भेजे गये हो उसे नहीं मानते हैं।[३]

३५. तथा कहा कि हम अधिक हैं तुम से धन और संतान में। तथा हम यातना ग्रस्त होने वाले नहीं हैं।

३६. आप कह दें कि वास्तव में मेरा पालनहार फैला देता है जीविका को जिस के लिये चाहता है। और नाप कर देता है। किन्तु अधिक्तर लोग ज्ञान नहीं रखते।

३७. और तुम्हारे धन और तुम्हारी संतान ऐसी नहीं हैं कि तुम्हें हमारे कुछ समीप[४] कर दे। परन्तु जो ईमान लाये तथा सदाचार करे तो यही हैं जिन के लिये दोहरा प्रतिफल है। और यही ऊँचे भवनों में शान्त रहनेवाले है।

३८. तथा जो प्रयास करते है हमारी आयतों में विवश करने के लिये[५] तो वही यातना में ग्रस्त होंगे।

---

[१] तुम्ही ने हमें सत्य से रोक दिया।

[२] अर्थात तुम्हारे षड्यंत्र ने हमें रोका था।

[३] नबियों के उपदेश का विरोध सब से पहले सम्पन्न वर्ग ने किया है। क्योंकि वे यह समझते हैं कि यदि सत्य सफल हो गया तो समाज पर उन का अधिकार समाप्त हो जायेगा। वे इस आधार पर भी नबियों का विरोध करते रहे कि हम ही अल्लाह के प्रिय हैं। यदि वह हम से प्रसन्न न होता तो हमें धन–धान्य क्यों प्रदान करता। अत: हम परलोक की यातना में ग्रस्त नहीं होंगे। कुरआन ने अनेक आयतों में उन के इड भ्रम का खण्डन किया है।

[४] अर्थात हमारा प्रिय बना दे।

[५] अर्थात हमारी आयतों को नीचा दिखाने के लिये।

३९. आप कह दें: मेरा पालनहार ही फैलाता है जीविका को जिस के लिये चाहता है अपने भक्तों में से। और तंग करता है उस के लिये। और जो भी तुम दान करोगे तो वह उस का पूरा बदला देगा। और वही उत्तम जीविका देने वाला है।
४०. तथा जिस दिन एकत्र करेगा उन सब को, फिर कहेगा फ़रिश्तों से: क्या यही तुम्हारी इबादत (वंदना) कर रहे थे।
४१. वह कहेंगे: तू पवित्र है! तू ही हमारा संरक्षक है न कि यह। बल्कि यह इबादत करते रहे जिन्नों[१] की। इन में अधिक्तर उन्हीं पर ईमान लाने वाले हैं।
४२. तो आज तुम[२] में से कोई एक–दूसरे को लाभ अथवा हानि पहुँचाने का अधिकार नहीं रखेगा। तथा हम कह देंगे अत्याचारियों से कि तुम अग्नि की यातना चखो जिसे तुम झुठला रहे थे।
४३. और जब सुनाई जाती हैं उन के समक्ष हमारी खुली आयतें तो कहते हैं: यह तो एक पुरुष है जो चाहता है कि तुम्हें रोक दे उन पूज्यों से जिन की इबादत करते रहे हैं तुम्हारे पूर्वज। तथा उन्होंने कहा कि यह तो बस एक झूठी बनायी हुयी बात है। तथा कहा काफ़िरों ने इस सत्य को कि यह तो बस एक प्रत्यक्ष (खुला) जादू है।
४४. जब कि हम ने नहीं प्रदान की है इन (मक्का वासियों) को कोई पुस्तक जिसे वे पढ़ते हों। तथा न हम ने भेजा है इन की ओर आप से पहले कोई सचेत करने वाला।[३]
४५. तथा झुठलाया था इन से पूर्व के लोगों ने और नहीं पहुँचे यह उस के दसवें भाग को भी जो हम ने प्रदान किया था उन को। तो उन्होंने झुठला दिया मेरे रसूलों को अन्ततः मेरा इन्कार कैसा रहा?[४]

---

[१] अरब के कुछ मुश्रिक लोग, फ़रिश्तों को पूज्य समझते थे। अतः उन से यह प्रश्न किया जायेगा।

[२] अर्थात मिथ्या पूज्य तथा उन के पुजारी।

[३] तो इन्हें कैसे ज्ञान हो गया कि यह कुरआन खुला जादू है? क्यों कि यह एतिहासिक सत्य है कि आप से पहले मक्का में कोई नबी नहीं आया। इसलिये कुरआन के प्रभाव को स्वीकार करना चाहिये न कि उस पर जादू होने का आरोप लगा दिया जाये।

[४] अर्थात आद और समूद ने। अतः मेरे इन्कार के दुष्परिणाम अर्थात उन के विनाश से इन्हें शिक्षा लेनी चाहिये। जो धन–बल तथा शक्ति में इन से अधिक थे।

४६. आप कह दें कि मैं बस तुम्हें एक बात की नसीहत कर रहा हूँ कि तुम अल्लाह के लिये दो–दो तथा अकेले–अकेले खड़े हो जाओ। फिर सोचो। तुम्हारे साथी को कोई पागलपन नहीं है।[१] वह तो बस सचेत करने वाले हैं तुम्हें आगामी कड़ी यातना से।

४७. आप कह दें: मैं ने तुम से कोई बदला माँगा है तो वह तुम्हारे[२] ही लिये है। मेरा बदला तो बस अल्लाह पर है। और वह प्रत्येक वस्तु पर साक्षी है।

४८. आप कह दें कि मेरा पालनहार वह्यी करता है सत्य की। वह परोक्षों का अति ज्ञानी है।

४९. आप कह दें कि सत्य आ गया। और असत्य न (कुछ का) आरंभ कर सकता है और न (उसे) पुन: ला सकता है।

५०. आप कह दें कि यदि मैं कुपथ हो गया तो मेरे कुपथ होने का (भार) मुझ पर है। और यदि मैं सुपथ पर हूँ तो उस वह्यी के कारण जिसे मेरी ओर मेरा पालनहार उतार रहा है। वह सब कुछ सुनने वाला, समीप है।

५१. तथा यदि आप देखेंगे जब वह घबराये हुये[३] होंगे तो उन के खो जाने का कोई उपाय न होगा। तथा पकड़ लिये जायेंगे समीप स्थान से।

५२. और कहेंगे: हम उस[४] पर ईमान लाये। तथा कहाँ हाथ आ सकता है उन के (ईमान) इतने दूर स्थान[५] से?

५३. जब कि उन्होंने कुफ़्र कर दिया पहले उस के साथ। और तीर मारते रहे बिन देखे दूर[६] से।

५४. और रोक बना दी जायेगी उन के तथा उस के बीच जिस की वे कामना करेंगे जैसे किया गया इन के जैसों के साथ इस से पहले। वास्तव में वे संदेह में पड़े थे।

*****

[१] अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दशा के बारे में।

[२] कि तुम संमार्ग अपनाकर आगामी प्रलय की यातना से सुरक्षित हो जाओ।

[३] प्रलय की यातना देख कर।

[४] अर्थात अल्लाह तथा उस के रसूल पर।

[५] ईमान लाने का स्थान तो संसार था। परन्तु संसार में उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया।

[६] अर्थात अपने अनुमान से असत्य बातें करते रहे।

सूरह फ़ातिर – ३५

सूरह फ़ातिर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ४५ आयतें है।

- इस सूरह में फ़ातिर शब्द आया है जिस का अर्थ: उत्पत्तिकार है। इसी कारण इसे यह नाम दिया गया है।
- इस में अल्लाह के उत्पत्ति तथा पालन–पोषण करने के शुभगुणों को उजागर करके लोगों को एकेश्वरवाद तथा परलोक और रिसालत पर ईमान लाने को कहा गया है। इस की आरंभिक आयतों में ही पूरी सूरह का सारांश आ गया है।
- इस में तौहीद (एकेश्वरवाद) तथा परलोक का सविस्तार वर्णन तथा शिर्क का खण्डन किया गया है। और रिसालत पर ईमान न लाने का दुष्परिणाम बताया गया है।
- इस में बताया गया है कि अल्लाह की निशशनियों की पहचान तथा धार्मिक ग्रन्थों द्वारा जो ज्ञान मिलता है वह मार्गदर्शन की राह खोल कर सफल बनाता है। और इस पहचान और ज्ञान से विमुख होने का परिणाम विनाश है।
- अन्त में मुश्रिकों को चेतावणी दी गई है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावन् है।

१. सब प्रशंसा अल्लाह के लिये हैं जो उत्पन्न करने वाला है आकाशों तथा धरती का, (और) बनाने वाला[१] है संदेशवाहक फ़रिश्तों को दो-दो तीन-तीन चार-चार परों वाला। वह अधिक करता है उत्पत्ति में जो चाहता है, नि:संदेह अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

२. जो खोल दे अल्लाह लोगों के लिये अपनी दया[२] तो उसे कोई रोकने वाला नहीं। तथा जिसे रोक दे तो कोई खोलने वाला नहीं उस का उस के पश्चात्। तथा वही प्रभावशाली चतुर है।

३. हे मनुष्यो! याद करो अपने ऊपर अल्लाह के पुरस्कार को, क्या कोई उत्पत्तिकर्ता है अल्लाह के सिवा जो तुम्हें जीविका प्रदान करता हो आकाश तथा धरती से? नहीं है कोई वंदनीय परन्तु वही। फिर तुम कहाँ फिरे जा रहे हो।

४. और यदि वह आप को झुठलाते हैं, तो झुठलाये जा चुके हैं बहुत से रसूल आप से पहले। और अल्लाह ही की ओर फेरे जायेंगे सब विषय।[३]

५. हे लोगो! निश्चय अल्लाह का वचन सत्य है। अत: तुम्हें धोखे में न रखे संसारिक जीवन और न धोखे में रखे अल्लाह से अति प्रवंचक (शैतान)।

६. वास्तव में शैतान तुम्हारा शत्रु है। अत: तुम उसे अपना शत्रु ही समझो। वह बुलाता है अपने गिरोह को इसी लिये ताकि वह नारकियों में हो जायें।

७. जो काफ़िर हो गये उन्हीं के लिये कड़ी यातना है। तथा जो ईमान लाये और सदाचार किये तो उन के लिये क्षमा तथा बड़ा प्रतिफल है।

८. तथा क्या शोभनीय बना दिया गया हो जिस के लिये उस का कुकर्म, और वह उसे अच्छा समझता हो? तो अल्लाह की कुपथ करता है जिसे चाहे और सुपथ दिखाता है जिसे चाहे। अत: न खोयें आप अपना प्राण इन[४] पर संताप के कारण। कारण। वास्तव में अल्लाह जानता है जो कुछ वे कर रहे हैं।

---

[१] अर्थात फ़रिशतों के द्वारा नबियों तक अपनी प्रकाशना तथा संदेश पहुँचाता है।

[२] अर्थात स्वास्थ्य, धन, ज्ञान आदि प्रदान करे।

[३] अर्थात अन्तत: सभी विषयों का निर्णय हमें ही करना है तो यह कहाँ जायेंगे? अत: आप धैर्य से काम लें।

[४] अर्थात इन के ईमान न लाने पर संताप न करें।

९. तथा अल्लाह वही है जो वायु को भेजता है। जो बादलों को उठाती हैं, फिर हम हाँक देते हैं उसे निर्जीव नगर की ओर। फिर जीवित कर देते हैं उस के द्वारा धरती को उस के मरण के पश्चात्। इसी प्रकार फिर जीना (भी)[1] होगा।

१०. जो सम्मान चाहता हो तो अल्लाह ही के लिये है सब सम्मान। और उसी की ओर चढ़ते हैं पवित्र वाक्य।[2] तथा सत्कर्म ही उन को ऊपर ले जाता[3] है, तथा जो दाव घात में लगे रहते हैं बुराईयों की, तो उन्हीं के लिये कड़ी यातना है आर उन्हीं के षड्यंत्र नाश हो जायेंगे।

११. अल्लाह ने उत्पन्न किया तुम्हें मिट्टी से फिर वीर्य से, फिर बनाये तुम को जोड़े। और नहीं गर्भ धारण करती कोई नारी और न जन्म देती परन्तु उस के ज्ञान से। और नहीं आयु दिया जाता कोई अधिक और न कम की जाती है उस की आयु परन्तु वह एक लेख में[4] है। वास्तव में यह अल्लाह पर अति सरल है।

१२. तथा बराबर नहीं होते दो सागर, यह मधुर प्यास बुझाने वाला है, रुचिकर है जिस का पीना। और वह (दूसरा) खारी कड़वा है, तथा प्रत्येक में से तुम खाते हो ताज़ा माँस, तथा निकालते हो आभूषण जिसे पहनते हो। और तुम देखते हो नाव को उस में पानी फाड़ती हुई, ताकि तुम खोज करो अल्लाह के अनुग्रह की। और ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

१३. वह प्रवेश करता है रात को दिन में, तथा प्रवेश करता है दिन को रात्रि में। तथा वश में कर रखा है सूर्य तथा चन्द्रा को, प्रत्येक चलते रहेंगे एक निश्चित समय तक। वही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है। उसी का राज्य हैं। तथा जिन को तुम पुकारते हो उस के सिवा वह स्वामी नहीं हैं एक तिनके के भी।

---

[1] अर्थात जिस प्रकार वर्षा से सूखी धरती हरी हो जाती है इसी प्रकार प्रलय के दिन तुम्हें भी जीवित कर दिया जायेगा।

[2] पवित्र वाक्य से अभिप्राय ((ला इलाहा इल्लल्लाह)) है। जो तौहीद का शब्द है। तथा चढ़ने का अर्थ हैं: अल्लाह के यहाँ स्वीकार होना।

[3] आयत का भावार्थ यह है कि सम्मान अल्लाह की वंदना से मिलता है अन्य की पूजा से नहीं। और तौहीद के साथ सत्कर्म का होना भी अनिवार्य है। और जब ऐसा होगा तो उसे अल्लाह स्वीकार कर लेगा।

[4] अर्थात प्रत्येक व्यक्ति की पूरी दशा उस के भाग्य लेख में पहले ही से अंकित है।

१४. यदि तुम उन्हें पुकारते हो तो वह नहीं सुनते तुम्हारी पुकार को। और यदि सुन भी लें तो नहीं उत्तर दे सकते तुम्हें। और प्रलय के दिन वह नकार देंगे तुम्हारे शिर्क (साझी बनाने) को। और आप को कोई सूचना नहीं देगा सर्वसूचित जैसी।[१]

१५. हे मनुष्यो! तुम सभी भिक्षु हो अल्लाह के। तथा अल्लाह ही निःस्वार्थ प्रशंसित है।

१६. यदि वह चाहे तो तुम्हें ध्वस्त कर दे, और नई[२] उत्पत्ति ला दे।

१७. और यह नहीं है अल्लाह पर कुछ कठिन।

१८. तथा नहीं लादेगा कोई लादने वाला दूसरे का बोझ अपने ऊपर।[३] और यदि पुकारेगा कोई बोझल उसे लादने के लिये तो वह नहीं लादेगा उस में से कुछ चाहे वह उस का समीपवर्ती ही क्यों न हों। आप तो बस उन्हीं को सचेत कर रहे हैं जो डरते हों अपने पालनहार से बिन देखे। तथा जो स्थापना करते हैं नमाज़ की। तथा जो पवित्र हुआ तो वह पवित्र होगा अपने ही लाभ के लिये। और अल्लाह ही की ओर (सब को) जाना है।

१९. तथा समान नहीं हो सकता अँधा तथा आँख वाला।

२०. और न अंधकार तथा प्रकाश।

२१. और न छाया तथा न धूप।

२२. तथा समान नहीं हो सकते जीवित तथा निर्जीव।[४] वास्तव में अल्लाह ही सुनाता है जिसे चाहता है। और आप नहीं सुना सकते जो कब्रों में हों।

२३. आप तो बस सचेत कर्ता हैं।

२४. वास्तव में हम ने आप को सत्य के साथ शुभसूचक तथा सचेतकर्ता बना कर भेजा है। और कोई ऐसा समुदाय नहीं जिस में कोई सचेत कर्ता न आया हो।

---

[१] इस आयत में प्रलय के दिन उन के पूज्य की दशा का वर्णन किया गया है। कि यह प्रलय के दिन उन के शिर्क को अस्वीकार कर देंगे। और अपने पुजारियों से विरक्त होने की घोषणा कर देंगे। जिस से विद्धित हुआ कि अल्लाह का कोई साझी नहीं। और जिन को मुश्रिकों ने साझी बना रखा है वह सब धोका है।

[२] भावार्थ यह है कि मनुष्य को प्रत्येक क्षण अपने अस्तित्व तथा स्थायित्व के लिये अल्लाह की आवश्यकता है। और अल्लाह ने निर्लोभ होने के साथ ही उस के जीवन के संसाधन की व्यवस्था कर दी है। अ:त यह न सोचो कि तुम्हारा विनाश हो गया तो उस की महिमा में कोई अन्तर आ जायेगा। वह चाहे तो तुम्हें एक क्षण में ध्वस्त कर के दूसरी उत्पत्ति ले आये क्योंकि वह एक शब्द कुन् (जिस का अनुवाद है: हो जा) से जो चाहे पैदा कर दे।

[३] अर्थात पापों का बोझ। अर्थ यह है कि प्रलय के दिन कोई किसी की सहायता नहीं करेगा।

[४] अर्थात जो कुफ़्र के कारण अपनी ज्ञान शक्ति खो चुके हों।

२५. और यदि ये आप को झुठलायें तो इन से पूर्व लोगों ने भी झुठलाया है, जिन के पास हमारे रसूल खुले प्रमाण तथा ग्रंथ और प्रकाशित पुस्तकें लाये।

२६. फिर मैं ने पकड़ लिया उन्हें जो काफ़िर हो गये। तो कैसा रहा मेरा इन्कार।

२७. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह ने उतारा आकाश से जल, फिर हम ने निकाल दिये उस के द्वारा बहुत से फल विभिन्न रंगों के। तथा पर्वतों के विभिन्न भाग हैं श्वेत तथा लाल विभिन्न रंगों के तथा गहरे काले।

२८. तथा मनुष्य एवं जीवों तथा पशुओं में भी विभिन्न रंगों के है इसी प्रकार। वास्तव में डरते हैं अल्लाह से उस के भक्तों में से वही जो ज्ञानी[१] हों। नि:संदेह अल्लाह अति प्रभुत्वशाली क्षमी है।

२९. वास्तव में जो पढ़ते हैं अल्लाह की पुस्तक (कुरआन), तथा उन्होंने स्थापना की नमाज़ की, एवं दान किया उस में से जो हम ने उन्हें प्रदान किया है खुले तथा छुपे तो वही आशा रखते हैं ऐसे व्यापार की जो कदापि हानिकारक नहीं होगा।

३०. ताकि अल्लाह प्रदान करे उन्हें भरपूर उन का प्रतिफल। तथा उन्हें अधिक दे अपने अनुग्रह से। वास्तव में वह अति क्षमी आदर करने वाला है।

३१. तथा जो हम ने प्रकाशना की है आप की ओर यह पुस्तक। वही सर्वथा सच्च है, और सच्च बताती है अपने पूर्व की पुस्तकों को। वास्तव में अल्लाह अपने भक्तों से सूचित भली–भाँति देखने वाला है।[२]

३२. फिर हम ने उत्तराधिकारी बनाया इस पुस्तक का उन को जिन्हें हम ने चुन लिया अपने भक्तों में[3] से। तो उन में कुछ अत्याचारी हैं अपने ही लिये तथा उन में से कुछ मध्यवर्ती है और कुछ अग्रसर हैं भलाईयों में अल्लाह की अनुमति से, तथा यही महान् अनुग्रह है।

---

[१] अर्थात अल्लाह के इन सामर्थ्यों तथा रचनात्मक गुणों को जान सकते हैं जिन को कुरआन तथा हदीसों का ज्ञान हो। और उन्हें जितना ही अल्लाह का आत्मिक ज्ञान होता है उतना ही वह अल्लाह से डरते हैं। मानो जो अल्लाह से नहीं डरते वह ज्ञानशुन्य होते हैं। (इब्ने कसीर)

[२] कि कौन उस के अनुग्रह के योग्य है। इसी कारण उस ने नबियों को सब पर प्रधानता दी है। तथा नबियों को भी एक–दूसरे पर प्रधानता दी है। (देखिये : इब्ने कसीर)

[३] इस आयत में कुरआन के अनुयायियों की ती श्रेणियाँ बताई गई है। और तीनों ही स्वर्ग में प्रवेश करेंगी: अग्रगामी बिना हिसाब के। मध्यवर्ती सरल हिसाब के पश्चात्। तथा अत्याचारी दण्ड भुगतने के पश्चात् शिफ़ाअत द्वारा।(फ़तहुल क़दीर)

३३. सदावास के स्वर्ग हैं, वे प्रवेश करेंगे उन में और पहनाये जायेंगे उन में सोने के कंगन तथा मोती। और उन के वस्त्र उस में रेशम के होंगे।

३४. तथा वे कहेंगे: सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये हैं जिस ने दूर कर दिया हम से शोक। वास्तव में हमारा पालनहार अति क्षमी गुणग्राही है।

३५. जिस ने हमें उतार दिया स्थायी घर में अपने अनुग्रह से। नहीं छुयेंगी उस में हमें कोई आपदा और न छुयेगी उस में कोइ थकान।

३६. तथा जो काफ़िर हैं उन्हीं के लिये नरक की अग्नि है। न तो उन की मौत ही आयेगी कि वह मर जायें, और न हलकी की जायेगी उन से उस की कुछ यातना। इसी प्रकार हम बदला देते हैं प्रत्येक नाशुक्रे को।

३७. और वह उस में चिल्लायेंगे: हे हमारे पालनहार! हमें निकाल दे, हम सदाचार करेंगे उस के अतिरिक्त जो कर रहे थे। क्या हम ने तुम्हें इतनी आयु नहीं दी जिस में शिक्षा ग्रहण कर ले जो शिक्षा ग्रहण करे। तथा आया तुम्हारे पास सचेतकर्ता (नबी)? अत: तुम चखो। अत्याचारियों का कोई सहायक नहीं हैं।

३८. वास्तव में अल्लाह ही ज्ञानी हैं आकाशों तथा धरती के भेद का। वास्तव में वही भली–भाँति जानने वाला है सीनों की बातों का।

३९. वही है जिस ने तुम्हें एक दूसरे के पश्चात् बसाया है धरती में तो जो कुफ्र करेगा तो उस के लिये है उस का कुफ्र और नहीं बढ़ायेगा काफ़िरों के लिये उन का कुफ्र उन के पालनहार के यहाँ परन्तु क्रोध ही, और नहीं बढ़ायेगा काफ़िरों के लिये उन का कुफ्र परन्तु क्षति ही।

४०. (हे नबी[१]!) उन से कहों: क्या तुम ने देखा है अपने साझियों को जिन्हें तुम पुकारते हो अल्लाह के अतिरिक्त? मुझे भी दिखाओ कि उन्होंने कितना भाग बनाया हैं धरती में से? या उन का आकाशों में कुछ साझा हैं? या हम ने प्रदान की हैं उन्हें कोई पुस्तक, तो यह उस के खुले प्रमाणों पर है? बल्कि (बात यह है कि) अत्याचारी एक–दूसरे को केवल धोखे का वचन दे रहे हैं।

[१] यहाँ से अन्तिम सूरह तक शिर्क (मिश्रणवाद) का खण्डन किया जा रहा है।

४१. अल्लाह ही रोकता[1] है आकाशों तथा धरती को खिसक जाने से। और यदि खिसक जायें वे दोनों तो नहीं रोक सकेगा उन को कोई उस (अल्लाह) के पश्चात्। वास्तव में वह अत्यंत सहनशील क्षमाशील है।

४२. और उन काफ़िरों ने शपथ ली थी अल्लाह की पक्की शपथ! कि यदि आ गया उन के पास कोई सचेतकर्ता (नबी) तो वह अवश्य हो जायेंगे सर्वाधिक संमार्ग पर समुदायों में से किसी एक से। फिर जब आ गये उन के पास एक रसूल[2] तो उन की दूरी ही अधिक हुई।

४३. अभिमान के कारण धरती में तथा बुरे षड्यंत्र के कारण। और नहीं घेरता हैं बुरा षड्यंत्र परन्तु अपने करने वाले ही को। तो क्या वह प्रतीक्षा कर रहे हैं पूर्व के लोगों की नीति की?[3] तो नहीं पायेंगे आप अल्लाह के नियम में कोई अन्तर।[4]

४४. और क्या वह नहीं चले–फिरे धरती में, तो देख लेते कि कैसा रहा उन का दुष्परिणाम जो इन से पूर्व रहे जब कि वह इन से कड़े थे बल में? था अल्लाह ऐसा नहीं, वास्तव में वह सर्वज्ञ अति सामर्थ्यवान है।

४५. और यदि पकड़ने लगता अल्लाह लोगों को उन के कर्मों के कारण, तो नहीं छोड़ता धरती के ऊपर कोई जीव। किन्तु अवसर दे रहा है उन्हे एक निश्चित अवधि तक, फिर जब आजायेगा उन का निश्चत समय तो निश्चय अल्लाह अपने भक्तों को देख रहा[5] है।



[1] नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात में नमाज़ के लिये जागते तो आकाश की ओर देखते और यह पूरी आयत पढ़ते थे। (सहीह बुख़ारी : ७४५२)

[2] मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

[3] अर्थात यातना की।

[4] अर्थात प्रत्येक युग और स्थान के लिये अल्लाह का नियम एक ही रहा है।

[5] अर्थात उस दिन उन के कर्मो का बदला चुका देगा।

सूरह यासीन – ३६

सूरह यासीन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ८३ आयतें है।

– सूरह के प्रथम दो शब्दों से इस को यह नाम दिया गया है।

– इस में रसूल के सत्य होने पर कुरआन की गवाही से यह बताया गया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अचेत लोगों को जगाने के लिये भेजा गया है। और इस में उस का एक उदाहरण दिया गया है।

– तौहीद की निशानियाँ बता कर विरोधियों का खण्डन किया गया है। और इस प्रकार सावधान किया गया है जिस से लगता है कि प्रलय आ गई है।

– रिसालत, तौहीद तथा दूसरे जीवन के संबंध में विरोधियों की अपत्तियों का जवाब दिया गया है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. या सीन।

२. शपथ है सुदृढ़ क़ुरआन की!

३. वस्तुत: आप रसूलों में से हैं।

४. सुपथ पर हैं।

५. (यह क़ुरआन) प्रभुत्वशाली अति दयावान् का अवतरित किया हुआ है।

६. ताकि आप सावधान करें उस जाति[१] को, नहीं सावधान किये गये हैं जिन के पूर्वज। इसलिये वह अचेत है।

७. सिद्ध हो चुका है वचन[२] उन में से अधिक्तर लोगों पर। अत: वह ईमान नहीं लायेंगे।

८. तथा हम ने डाल दिये हैं तौक़ उन के गलों में, जो हड्डियों तक[३] हैं। इसलिये वह सिर ऊपर किये हुये हैं।

९. तथा हम ने बना दी है उन के आगे एक आड़ उन के पीछे एक आड़। फिर ढाँक दिया है उन को, तो[४] वह देख नहीं रहे हैं।

१०. तथा समान है उन पर कि आप उन्हें सावधान करें अथवा सावधान न करें वह ईमान नहीं लायेंगे।

११. आप तो बस उसे सचेत कर सकेंगे जो माने इस शिक्षा (क़ुरआन) को, तथा डरे अत्यंत कृपाशील से बिन देखे। तो आप शुभसूचना सुना दें उसे क्षमा की तथा सम्मानित प्रतिफल की।

१२. निश्चय हम ही जीवित करेंगे मुर्दों को, तथा लिख रहे हैं जो कर्म उन्होंने किया है और उन के पद् चिन्हों[५] को, तथा प्रत्येक वस्तु को हम ने गिन रखा है खुली पुस्तक में।

---

[१] मक्का वासियों को जिन के पास इस्माईल (अलैहिस्सलाम) के पश्चात् कोई नबी नहीं आया।

[२] अर्थात अल्लाह का यह वचन कि:((मैं जिन्नों तथा मनुष्यों से नरक को भर दूँगा।) (देखिये : सूरह : सज्दा : १३)

[३] इस से अभिप्राय उन का कुफ्र पर दुराग्रह तथा ईमान न लाना है।

[४] अर्थात सत्य की ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं, और न उस से लाभान्वित हो रहे है।

[५] अर्थात पुण्य अथवा पाप करने के लिये आते-जाते जो उन के पद्चिन्ह धरती पर बने हैं उन्हें भी लिख रखा है। इसी में उन के अच्छे-बुरे वह कर्म भी आते है जो उन्होंने किये है। और जिन का अनुसरण उन के पश्चात् किया जा रहा है।

१३. तथा आप उन को[1] एक उदाहरण दीजिये नगर वासियों का। जब आये उस में कई रसूल।

१४. जब हम ने भेजा उन की ओर दो को। तो उन्हों ने झुठला दिया उन दोनों को। फिर हम ने समर्थन दिया तीसरे के द्वारा। तो तीनों ने कहा: हम तुम्हारी ओर भेजे गये हैं।

१५. उन्होंने कहा: तुम सब तो मनुष्य ही हो हमारे[2] समान। और नहीं अवतरित किया है अत्यंत कृपाशील ने कुछ भी। तुम सब तो बस झूठ बोल रहे हो।

१६. उन रसूलों ने कहा: हमारा पालनहार जानता है कि वास्तव में हम तुम्हारी ओर रसूल बना कर भेजे गये हैं।

१७. तथा हमारा दायित्व नहीं है खुला उपदेश पहुँचा देने के सिवा।

१८. उन्होंने कहा: हम तुम्हें अशुभ समझ रहे हैं। यदि तुम रुके नहीं तो हस तुम्हें अवश्य पथराव कर के मार डालेंगे। और तुम्हें अवश्य हमारी ओर से पहुँचेगी दुःखदायी यातना।

१९. उन्होंने कहा: तुम्हारा अशुभ तुम्हारे साथ है। क्या यदि तुम्हें शिक्षा दी जाये (तो अशुभ समझते हो)? बल्कि तुम उल्लंघन कारी जाति हो।

२०. तथा आया नगर के अन्तिम किनारे से एक पुरुष दौड़ता हुआ। उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! अनुसरण करो रसूलों का।

२१. अनुसरण करो उन का जो तुम से नहीं माँगते कोई पारिश्रमिक (बदला) तथा वह सुपथ पर हैं।

२२. तथा मुझे क्या हुआ है कि मैं उस की इबादत (वंदना) न करूँ जिस ने मुझे पैदा किया है? और तुम सब उसी की ओर फेरे जाओगे।[3]

---

[11] अर्थात अपने आमंत्रण के विरोधियों को।

[22] प्राचीन युग से मुश्रिकों तथा कुपथों ने अल्लाह के रसूलों को इसी कारण नहीं माना किया एक मनुष्य पुरुष अल्लाह का रसूल कैसे हो सकता है? यह तो खाता–पीता तथा बाज़ारों में चलता–फिरता है। (देखिये : सूरह फ़ुर्क़ान : ७–२०, सूरह अम्बिया : ३,७,८, सूरह मूमिनून : २४–३३–३४, सूरह इब्राहीम :१०–११, सूरह इस्रा :९४–९५, और सूरह तग़ाबुन:६)

[33] अर्थात मैं तो उसी की वंदना करता हूँ। और करता रहूँगा! और उसी की वंदना करनी भी चाहिये। क्योंकि वही वंदना किये जाने के योग्य है। उस के अतिरिक्त कोई वंदना के योग्य हो ही नहीं सकता।

२३. क्या मैं बना लूँ उस को छोड़कर बहुत से पूज्य? यदि अत्यंत कृपाशील मुझे कोई हानि पहुँचाना चाहे तो नहीं लाभ पहुँचायेगी मुझे उन की अनुशंसा (सिफ़ारिश) कुछ, और न वह मुझे बचा सकेंगे।

२४. वास्तव में तब तो मैं खुले कुपथ में हूँ।

२५. निश्चय मैं ईमान लाया तुम्हारे पालनहार पर, अत: मेरी सुनो।

२६. (उस से) कहा गया: तुम प्रवेश कर जाओ स्वर्ग में। उस ने कहा: काश मेरी जाति जानती!

२७. जिस कारण क्षमा[१] कर दिया मुझ को मेरे पालनहार ने और मुझे सम्मिलित कर दिया सम्मानितों में।

२८. तथा हम ने नहीं उतारी उस की जाति पर उस के पश्चात् कोई सेना[२] आकाश से। और न हमें उतारने की आवश्यकता थी।

२९. वह तो बस एक कड़ी ध्वनि थी। फिर सहसा सब के सब बुझ गये।[३]

३०. हाये संताप है[४] भक्तों पर! नहीं आया उन के पास रसूल परन्तु वे उस का उपहास करते रहे।

३१. क्या उन्होंने नहीं देखा कि उन से पहले विनाश कर दिया बहुत से समुदायों का। वे उन की ओर दौबारा फिर कर नहीं आयेंगे।

३२. तथा सब के सब हमारे समक्ष उपस्थित किये[५] जायेंगे।

३३. तथा उन[६] के लिये एक निशानी है निर्जीव (सूखी)धरीती। जिसे हम ने जीवित कर दिया, और हम ने निकाले उस से अन्न, तो तुम उसी में से खाते हो।

३४. तथा पैदा कर दिये उस में बाग़ खजूरों तथा अँगूरों के, और फाड़ दिये उस में जल स्रोत।

---

[१] अर्थात ऐश्वरवाद तथा अल्लाह की आज्ञा के पालन पर धैर्य के कारण।

[२] अर्थात यातना देने के लिये सेनायें नहीं उतारते।

[३३] अर्थात एक चीख़ ने उन को बुझी हुई राख के समान कर दिया। इस से ज्ञान होता है कि मनुष्य कितना निर्बल है।

[४] अर्थात प्रलय के दिन रसूलों का उपहास भक्तों के लिये संताप का कारण होगा।

[५] प्रलय के दिन हिसाब तथा प्रतिकार के लिये।

[६] यहाँ से एकेश्वरवाद तथा आख़िरत (परलोक) के विषय का वर्णन किया जा रहा है। जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा मक्का के काफ़िरों के बीच विवाद का कारण था।

३५. ताकि वह खायें उस के फल। और नहीं बनाया है उसे उन के हातों ने। तो क्या वह कृतज्ञ नहीं होते?

३६. पवित्र हे वह जिस ने पैदा किये प्रत्येक जोड़े उस के जिसे उगाती है धरती, तथा स्वयं उन कि अपनी जाति के। और उस के जिसे तुम नहीं जानते हो।

३७. तथा एक निशानी (चिन्ह) है उन के लिये रात्रि। खींच लेते हैं हम जिस से दिन को तो सहसा वह अँधेरों में हो जाते हैं।

३८. तथा सूर्य चला जा रहा है अपने निर्धारित स्थान कि ओर। यह प्रभुत्वशाली सर्वज्ञ का निर्धारित किया हुआ है।

३९. तथा चन्द्रमा के हम ने निर्धारित कर दिये हैं गंतव्य स्थान। यहाँ तक की फिर वह हो जाता है पुरानी खजूर की सूखी शाखा के समान।

४०. न तो सूर्य के लिये ही उचित है कि चन्द्रमा को पा जाये। और न रात अग्रगामी हो सकती हैं दिन से। सब एक मण्डल में तैर रहे हैं।

४१. तथा उन के लिये एक निशानी (लक्षण) (यह भी) है कि हम ने सवार किया उन की संतान को भरी हुई नाव में।

४२. तथा हम ने पैदा किया उन के लिये उस के समान वह चिज़ जिस पर वह सवार होते हैं।

४३. और यदि हम चाहें तो उन्हें जलमग्न कर दें। तो न कोई सहायक होगा उन का, और न वह निकाले (बचाये) जायेंगे।

४४. परन्तु हमारी दया से तथा लाभ देने के लिये एक समय तक।

४५. और[१] जब उन से कहा जाता है कि डरो उस(यातना) से जो तुम्हारे आगे तथा तुम्हारे पीछे है ताकि तुम पर दया की जाये।

४६. तथा नहीं आती उन के पास कोई निशानी उन के पालनहार की निशानियों में से परन्तु वह उस से मुँह फेर लेते है।

[१] आयत नं. ३३ से यहाँ तक एकेश्वरवाद तथा परलोक के प्रमाणों, जिन्हें सभी लोग देखते तथा सुनते हैं, और जो सभी इस विश्व की व्यवस्था तथा जीवन के संसाधनों से संबंधित हैं, उन का वर्णन करने के पश्चात् अब मिश्रणवादियों तथा काफ़िरों कि दशा और उन के अचरण का वर्णन किया जा रहा है।

४७. तथा जब उन से कहा जाता है कि दान करो उस में से जो प्रदान किया है अल्लाह ने तुम को, तो कहते हैं जो काफ़िर हो गये उन से जो ईमान लाये हैं: क्या हम उसे खाना खिलायें जिसे यदि अल्लाह चाहे तो खिला सकता है? तुम तो खुले कुपथ में हो।

४८. और वे कहते हैं कि कब यह (प्रलय) का वचन पूरा होगा यदि तुम सत्यवादी हो?

४९. वह नहीं प्रतीक्षा कर रहे हैं परन्तु एक कड़ी ध्वनि[१] की जो उन्हें पकड़ लेगी और वह झगड़ रहे होंगे।

५०. तो न वह कोई वसिय्यत कर सकेंगे, और न अपने परिजनों में वापिस आ सकेंगे।

५१. तथा फूँका[२] जायेगा सूर (नरसिंघा) में, तो वह सहसा समाधियों से अपने पालनहार की ओर भागते हुये चलने लगेंगे।

५२. वह कहेंगे: हाय हमारा विनाश! किस ने हमें जगा दिया हमारी विश्रामगृह से? यह वह है जिस का वचन दिया था अत्यंत कृपाशील ने, तथा सच्च कहा था रसूलों ने।

५३. नहीं होगी वह परन्तु एक कड़ी ध्वनि। फिर सहसा वह सब के सब हमारे समक्ष उपस्थित कर दिये जायेंगे।

५४. तो आज नहीं अत्याचार किया जायेगा किसी प्राणी पर कुछ। और तुम्हें उसी का प्रतिफल (बदला) दिया जायेगा जो तुम कर रहे थे।

५५. वास्तव में स्वर्गीय आज अपने आनन्द में लगे हुये हैं।

५६. वे था उन की पत्नियाँ सायों में हैं, मस्नदों पर तकिये लगाये हुये।

५७. उन के लिये उस में प्रत्येक प्रकार के फल हैं तथा उन के लिये वह है जिस की वह माँग करें।

५८. (उन को) सलाम कहा गया है अति दयावान् पालनहार की ओर से।

५९. तथा तुम अलग[३] हो जाओ आज, हे अपराधियों!

६०. हे आदम की संतान! क्या मैंने तुम से बल दे कर नहीं[४] कहा था कि इबादत (वंदना) न करना शैतान की? वास्तव में वह तुम्हारा खुला शत्रु है।

---

[१] इस से अभिप्राय प्रथम सूर है जिस में फूँकते ही अल्लाह के सिवा सब बिलय हो जायेंगे।

[२] इस से अभिप्राय दूसरी बार सूर फूँकना है जिस से सभी जीवित हो कर अपनी समाधियों से निकल पड़ेंगे।

[३] अर्थात ईमान वालों से।

[४] भाष्य के लिये देखिये: सूरह, आराफ़, आयत : १७२।

६१. तथा इबादत (वंदना) करना मेरी ही, यही सीधी डगर है।

६२. तथा वह कुपथ कर चुका है तुम में से बहुत से समुदायों को, तो क्या तुम समझते नहीं हो?

६३. यही नरक है जिस का वचन तुम्हें दिया जा रहा था।

६४. आज प्रवेश कर जाओ उस में उस कुफ़्र के बदले जो तुम कर रहे थे।

६५. आज हम मुहर (मुद्रा) लगा देंगे उन के मुखों पर। और हम से बात करेंगे उन के हाथ, तथा साक्ष्य (गवाही) देंगे उन के पैर उन के कर्मों की जो वे कर रहे थे।[1]

६६. और यदि हम चाहते तो उन की आँखें अँधी कर देते। फिर वे दौड़ते संमार्ग की ओर, परन्तु कहाँ से देखते?

६७. और यदि हम चाहते तो विकृत कर देते उन को उन के स्थान पर, तो न वह आगे जा सकते थे न पीछे फिर सकते थे।

६८. तथा जिसे हम अधिक आयु देते हैं, तो उसे उत्पत्ति में प्रथम दशा[2] की ओर फेर देते हैं। तो क्या वह समझते नहीं हैं?

६९. और हम ने नहीं सिखाया नबी को काव्य[3] और न यह उन के लिये योग्य है। यह तो मात्र एक शिक्षा तथा खुला कुरआन है।

७०. ताकि वह सचेत करें उसे जो जीवित हो[4] तथा सिद्ध हो जाये यातना की बात काफ़िरों पर।

७१. क्या मनुष्य ने नहीं देखा कि हम ने पैदा किये है उन के लिये उस में से जिसे बनाया है हमारे हाथों ने चौपाये। तो वह उन के स्वामी हैं?

७२. तथा हम ने वश में कर दिया उन्हें उन के, तो उन में से कुछ उन की सवारी हैं। तथा उन में से कुछ को वे खाते हैं।

७३. तथा उन के लिये उन में बहुत से लाभ तथा पेय हैं। तो क्या (फिर भी) वह कृतज्ञ नहीं होते?

---

[1] यह उस समय होगा जब मिश्रणवादी शपथ लेंगे कि वह मिश्रण (शिर्क) नहीं करते थे। देखियेः सूरह अन्आम:२३।

[2] अर्थात वह शिशु की तरह निर्बल तथा निर्बोध हो जाता है।

[3] मक्का के मुर्तिपूजक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के संबंध में कई प्रकार की बातें कहते थे जिन में यह बात भी थी कि आप कवि हैं। अल्लाह ने इस आयत में इसी का खण्डन किया है।

[4] जीवित होने का अर्थ अन्तरात्मा का जीवित होना और सत्य को समझने के योग्य होना है।

७४. और उन्होंने बना लिया अल्लाह के सिवा बहुत से पूज्य, कि संभवत: वे उन की सहायता करेंगे।

७५. वह स्वयं अपनी सहायता नहीं कर सकेंगे। तथा वे उन की सेना हैं, (यातना) में[1] उपस्थित।

७६. अत: आप को उदासीन न करे उन की बात। वस्तुत: हम जानते हैं जो वह मन में रखते हैं तथा जो बोलते हैं।

७७. और क्या नहीं देखा मनुष्य ने कि पैदा किया हम ने उसे वीर्य से? फिर भी वह खुला झगड़ालू है।

७८. और उस ने वर्णन किया हमारे लिये एक उदाहरण, और अपनी उत्पत्ति को भूल गया। उस ने कहा: कौन जीवित करेगा इन अस्थियों को जब कि वह जीर्ण हो चुकी होंगी?

७९. आप कह दें: वही जिस ने पैदा किया हैं प्रथम बार। और वह प्रत्येक उत्पत्ति को भली–भाँति जानने वाला है।

८०. जिस ने बना दी तुम्हारे लिये हरे वृक्ष से अग्नि, तो तुम उस से आग[2] सुलगाते हो।

८१. तथा क्या जिस ने आकाशों तथा धरती को पैदा किया हैं वह सामर्थ्य नहीं रखता इस पर कि पैदा करे उस के समान? क्यों नहीं? और वह रचयिता अति ज्ञाता है।

८२. उस का आदेश जब वह किसी चीज़ को अस्तित्व प्रदान करना चाहे तो बस यह कह देना हैं: हो जा। तत्क्षण वह हो जाती है।

८३. तो पवित्र है वह जिस के हाथ में प्रत्येक वस्तु का राज्य है, और तुम सब उसी की ओर फेरे जाओगे।

*****

---

[1] अर्थात वह अपने पूज्यों सहित नरक में झोंक दिये जायेंगे।

[2] भावार्थ यह है कि जो अल्लाह जल से हरे वृक्ष पैदा करता है फिर उसे सुखा देता है जिस से तुम आग सुलगाते हो, तो क्या वह इसी प्रकार तुम्हारे मरने गलने के पश्चात् फिर तुम्हें जीवित नहीं कर सकता?

सूरह साफ़्फ़ात – ३७

सूरह साफ़्फ़ात के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में १८२ आयतें हैं।

- इसका आरंभ (वस्साफ़्फ़ात) से हुआ है जिस का अर्थ है: पंक्तिवद्ध फ़रिश्तों की शपथ! इस लिये इस का नाम सूरह साफ़्फ़ात है।
- इस में आयत १ से १० तक अल्लाह के अकेले पूज्य होने पर फ़रिश्तों की गवाही प्रस्तुत करते हुये यह बताया गया है कि शैतान, फ़रिश्तों की उच्च सभा तक जाने से रोक दिये गये हैं। फिर दूसरे जीवन की दशा का वर्णन कर के उन के दुष्परिणाम को बताया गया है जो अल्लाह के सिवा दूसरों को पूजते हैं तथा अल्लाह के पूजारियों का उत्तम परिणाम बताया गया है।
- आयत ७५ से १४८ तक अनेक नबियों की चर्चा है जिन्होंने तौहीद (एकेश्वरवाद) का प्रचार करते हुये अनेक प्रकार के दुःख सहे। तथा अल्लाह ने उन्हें उन के प्रयासों का उत्तम प्रतिफल प्रदान किया।
- आयत १४९ से १६६ तक फ़रिश्तों के बारे में मुश्रिकों के गलत विचारों का खण्डन करते हुये फ़रिशतों ही द्वारा यह बताया गया है कि वास्तवम में वह क्या हैं?
- फिर सूरह की अन्तिम आयतों में अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा अल्लाह की सेना अर्थात रसूल के अनुयायियों को अल्लाह की सहायता तथा विजय की शुभ सूचना दी गई है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. शपथ है पंक्तिवद्धव (फ़रिश्तों) की!
२. फिर झिड़कियाँ देने वालो की!
३. फिर स्मरण करके पढ़ने वालों[1] की!
४. निश्चय तुम्हारा पूज्य एक ही है।
५. आकाशों तथा धरती का पालनहार, तथा जो कुछ उन के मध्य है, और सूर्योदय होने के स्थानों का रब।
६. हम ने अलंकृत किया है संसार (समीप) के आकाश को तारों की शोभा से।
७. तथा रक्षा करने के लिये प्रत्येक उद्धत शैतान से।
८. वह नहीं सुन सकते (जा कर) उच्च सभा तक फ़रिशतों की बात, तथा मारे जाते हैं प्रत्येक दिशा से।
९. रौंदने के लिये, तथा उन के लिये स्थायी यातना है।
१०. परन्तु जो ले उड़े कुछ तो पीछा करती है उस का दहकती ज्वाला।[2]
११. तो आप इन (काफ़िरों) से प्रश्न करें कि क्या उन को पैदा करना अधिक कठिन है या जिन[3] को हम ने पैदा किया है? हम ने उन को[4] पैदा किया है लेसदार मिट्टी से।
१२. बल्कि आप ने आश्चर्य किया (उन के अस्वीकार पर) तथा वह उपहास करते हैं।
१३. और जब शिक्षा दी जाये तो शिक्षा ग्रहण नहीं करते।
१४. और जब देखते हैं कोई निशानी तो उपहास करने लगते हैं।
१५. तथा कहते हैं कि यह तो मात्र खुला जादू हैं।
१६. (कहते हैं कि) क्या जब हम मर जायेंगे तथा मिट्टी और हड्डियाँ हो जायेंगे, तो हम निश्चय पुन: जीवित किये जायेंगे?

---

[1] यह तीनों गुण फ़रिश्तों के हैं जो आकाशों में अल्लाह की इबादत के लिये पंक्तिवद्धव रहते तथा बादलों को हाँकते और अल्लाह के स्मरण जैसे कुरआन तथा नमाज पढ़ने और उस की पवित्रता का गान करने इत्यादि में लगे रहते हैं।

[2] फिर यदि उस से बचा रह जाये तो आकाश की बात अपने नीचे के शैतानों तक पहुँचाता है और वह उसे काहिनों तथा ज्योतिषियों को बताते हैं। फिर वह उस में सौ झूठ मिला कर लोगों को बताते है। (बुख़ारी ,मुस्लिम)

[3] अर्थात फ़रिश्तों तथा आकाशों को?

[4] उन के पिता आदम (अलैहिस्सलाम) को।

१७. और क्या हमारे पहले पूर्वज भी (जीवित किये जायेंगे)?
१८. आप कह दें कि हाँ, तथा तुम अपमानित (भी) होगे।
१९. वह तो बस एक झिड़की होगी, फिर सहसा वह देख रहे होंगे।
२०. तथा कहेंगे: हाय हमारा विनाश! यह तो बदले (प्रलय) का दिन है।
२१. यही निर्णय का दिन है जिसे तुम झुठला रहे थे।
२२. (आदेश होगा कि) घेर लाओ सब अत्याचारियों को तथा उन के साथियों को और जिस की वे इबादत (वंदना) कर रहे थे।
२३. अल्लाह के सिवा। फिर दिखा दो उन को नरक की राह।
२४. और उन्हें रोक[१] ले। उन से प्रश्न किया जाये।
२५. क्या हो गया है तुम्हें कि एक–दूसरे की सहायता नहीं करते?
२६. बल्कि वह उस दिन सिर झुकाये खड़े होंगे।
२७. और एक–दूसरे के सम्मुख होकर परस्पर प्रश्न करेंगे:[२]
२८. कहेंगे कि तुम हमारे पास आया करते थे दायें[३] से।
२९. वह[४] कहेंगे: बल्कि तुम स्वयं ईमान वाले न थे।
३०. तथा नहीं था हमारा तुम पर कोई अधिकार,[५] बल्कि तुम स्वयं अवैज्ञाकारी थे।
३१. तो सिद्ध हो गया हम पर हमारे पालनहार का कथन कि हम (यातना) चखने वाले हैं।
३२. तो हम ने तुम्हें कुपथ कर दिया। हम तो स्वयं कुपथ थे।
३३. फिर वह सभी उस दिन यातना में साझी होंगे।
३४. हम इसी प्रकार किया करते हैं अपराधियों के साथ।
३५. यह वह हैं कि जब कहा जाता था उन से कि कोई पूज्य (वंदनीय) नहीं अल्लाह के अतिरिक्त तो वह अभिमान करते थे।

---

[१] नरक में झोंकने से पहले।

[२] अर्थात एक–दूसरे को धिक्कारेंगे।

[३] इस से अभिप्राय यह है कि धर्म तथा सत्य के नाम से आते थे अर्थात यह विश्वास दिलाते थे कि यही मिश्रणवाद मूल तथा सत्धर्म है।

[४] इस से अभिप्राय उन के प्रमुख लोग है।

[५] देखिये: सूरह इब्राहीम, आयत:२२।

३६. तथा कह रहे थे: क्या हम त्याग देने वाले हैं अपने पूज्यों को एक उन्मत्त कवि के कारण?
३७. बल्कि वह (नबी) सच्च लाये हैं तथा पुष्टि की है सब रसूलों की।
३८. निश्चय तुम दु:खदायी यातना चखने वाले हो।
३९. तथा तुम उस का प्रतिकार (बदला) दिये जाओगे जो तुम कर रहे थे।
४०. परन्तु अल्लाह के शुद्ध भक्त।
४१. यही हैं जिन के लिये विदित जीविका है।
४२. प्रत्येक प्रकार के फल तथा वही आदरणीय होंगे।
४३. सुख के स्वर्गों में।
४४. आसनों पर एक–दूसरे के सम्मुख असीन होंगे।
४५. फिराये जायेंगे उन पर प्याले प्रवाहित पेय के।
४६. श्वेत आस्वाद पीने वालों के लिये।
४७. नहीं होगी उस में शारीरिक पीड़ा और न वह उस से बहकेंगे।
४८. तथा उन के पास आँखें झुकाये (सति) बड़ी आँखों वाली (नारियाँ) होंगी।
४९. वह छुपाये हुये अन्डों के मानिन्द होंगी।[1]
५०. वह एक–दूसरे से सम्मुख हो कर प्रश्न करेंगे।
५१. तो कहेगा एक कहने वाला उन में से: मेरा एक साथी था।
५२. जो कहता था कि क्या तुम (प्रलय का) विश्वास करने वालों में से हो?
५३. क्या जब हम मर जायेंगे तथा मिट्टी और अस्थियाँ हो जायेंगे तो क्या हमे (कर्मों का)प्रतिफल दिया जायेगा।
५४. वह कहेगा: क्या तुम झाँक कर देखने वाले हो?
५५. फिर झाँकते ही उसे देख लेगा नरक के बीच।
५६. उस से कहेगा: अल्लाह की शपथ! तुम तो मेरा विनाश कर देने के समीप थे।
५७. और यदि मेरे पालनहार का अनुग्रह न होता तो मैं (नरक के) उपस्थितों में होता।
५८. फिर वह कहेगा: क्या (यह सहीह नहीं है कि) हम मरने वाले नहीं हैं?

[1] अर्थात जिस प्रकार पक्षी के पँखों के नीचे छुपे हुये अन्डे सुरक्षित होते हैं वैसे ही वह नारियाँ सुरक्षित, सुन्दर रंग और रूप की होंगी।

५९. सिवाये अपनी प्रथम मौत के और न हम को यातना दी जायेगी।
६०. वास्तव में यही बड़ी सफलता है।
६१. इसी (जैसी सफलता) के लिये चाहिये कि कर्म करें कर्म करने वाले।
६२. क्या यह आतिथ्य उत्तम है अथवा थोहड़ का वृक्ष?
६३. हम ने उसे अत्याचारियों के लिये एक परीक्षा बनाया है।
६४. वह एक वृक्ष है जो नरक की जड़ (तह) से निकलता है।
६५. उस के गुच्छे शैतानों के सिरों के समान हैं।
६६. तो वह (नरकवासी) खाने वाले हैं उस से। फिर भरने वाले हैं उस से अपने पेट।
६७. फिर उन के लिये उस के ऊपर से खौलता गरम पानी है।
६८. फिर उन्हें प्रत्यागत होना है नरक की ओर।
६९. वास्तव में उन्होंने पाया अपने पूर्वजों को कुपथ।
७०. फिर वह उन्हीं के पद्चिन्हों पर[१] दौड़े चले जा रहे हैं।
७१. और कुपथ हो चुके हैं इन से पूर्व अगले लोगों में से अधिक्तर।
७२. तथा हम भेज चुके हैं उन में सचेत (सावधान) करने वाले।
७३. तो देखो कि कैसा रहा सावधान किये हुये लोगों का परिणाम?[२]
७४. हमारे शुद्ध भक्तों के सिवा।
७५. तथा हमें पुकारा नूह ने। तो हम क्या ही अच्छे प्रार्थना स्वीकार करने वाले हैं।
७६. और हम ने बचा लिया उस को और उस के परिजनों को घोर आपदा से।
७७. तथा कर दिया हम ने उस की संतति को शेष[३] रह जाने वालों में।
७८. तथा शेष रखा हम ने उस की सराहना तथा प्रशंसा को पिछलों में।
७९. सलाम (सुरक्षा)[४] है नूह के लिये समस्त विश्ववासियों में।
८०. इसी प्रकार हम प्रतिफल प्रदान करते हैं सदाचारियों को।
८१. वास्तव में वह हमारे ईमान वाले भक्तों में से था।

---

[१] इस में नरक में जाने का जो सब से बड़ा कारण बताया गया है वह है नबी को न मानना, और अपने पूर्वजों के पंथ पर ही चलते रहना।

[२] अत: उनके दुष्परिणाम से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये।

[३] उस की जाति के जलमग्न हो जाने के पश्चात्।

[४] अर्थात उस की बुरी चर्चा से।

८२. फिर हम ने जलमग्न कर दिया दूसरों को।
८३. और उस के अनुयायियों में निश्चय इब्राहीम है।
८४. जब लाया वह अपने पालनहार के पास स्वच्छ दिल।
८५. जब कहा उसने अपने पिता तथा अपनी जाती से: तुम किस की इबादत (वंदना) कर रहे हो?
८६. क्या अपने बनाये पूज्यों को अल्लाह के सिवा चाहते हो?
८७. तो तुम्हारा क्या विचार है विश्व के पालनहार के विषय में?
८८. फिर उस ने देखा तारों की[१] ओर।
८९. तथा उन से कहा: मैं रोगी हूँ।
९०. तो उसे छोड़ कर चले गये।
९१. फिर वह जा पहूँचा उन के उपास्यों (पूज्यों) की ओर। कहा कि (वह प्रसाद) क्यों नहीं खाते?
९२. तुम्हें क्या हुआ है कि बोलते नहीं?
९३. फिर पिल पड़ा उन पर मारते हुये दायें हाथ से।
९४. तो वह आये उस की ओर दौड़ते हुये।
९५. इब्राहीम ने कहा: क्या तुम इबादत (वंदना) करते हो उस की जिसे पत्थरों से तराशते हो?
९६. जब कि अल्लाह ने पैदा किया है तुम को तथा जो तुम करते हो।
९७. उन्होंने कहा: इस के लिये एक (अग्निशाला का) निर्माण करो। और उसे झोंक दो दहकती अग्नि में।
९८. तो उन्होंने उस के साथ षड्यंत्र रचा, तो हम ने उन्हीं को नीचा कर दिया।
९९. तथा उस ने कहा: मैं जाने वाला हूँ अपने पालनहार की[२] ओर। वह मुझे सुपथ दर्शायेगा।
१००.हे मेरे पालनहार! प्रदान कर मुझे एक सदाचारी (पूनीत) पुत्र।
१०१.तो हम ने शुभ सूचना दी उसे एक सहनशील पुत्र की।

[१] यह सोचते हुये कि इन के उत्सव में न जाने के लिये क्या बहाना करूँ।
[२] अर्थात ऐसे स्थान की ओर जहाँ अपने पालनहार की इबादत कर सकूँ।

१०२.फिर जब वह पहुँचा उस के साथ चलने–फिरने की आयु को, तो इब्राहीम ने कहा: हे मेरे प्रिय पुत्र! मैं देख रहा हूँ स्वपन में कि मैं तुझे बध कर रहा हूँ। अब तू बता कि तेरा क्या विचार है? उस ने कहा: हे पिता! पालन करें जिस का आदेश आप को दिया जा रहा है। आप पायेंगे मुझे सहनशीलों में से यदि अल्लाह की इच्छा हुई।

१०३.अन्तत: जब दोनों ने स्वयं को अर्पित कर दिया, और उस (पिता) ने उसे गिरा दिया माथे के बल।

१०४.तब हम ने उसे आवाज़ दी कि हे इब्राहीम!

१०५.तू ने सच्च कर दिया अपना स्वप्न। इसी प्रकार हम प्रति फल प्रदान करते हैं सदाचारियों को।

१०६.वास्तव में यह खुली परीक्षा थी।

१०७.और हम ने उस के मुक्ति–प्रतिदान के रूप में प्रदान कर दी एक महान्[1] बलि।

१०८.तथा हम ने शेष रखी उस की शुभ चर्चा पिछलों में।

१०९.सलाम है इब्राहीम पर।

११०.इसी प्रकार हम प्रतिफल प्रदान करते हैं सदाचारियों को।

१११.निश्चय ही वह हमारे ईमानवाले भक्तों में से था।

११२.तथा हम ने उसे शुभसूचना दी इसहाक नबी की, जो सदाचारियों में[2] होगा।

११३.तथा हम ने बरकत (विभूति) अवतरित की उस पर तथा इस्हाक पर। और उन दोनों की संतति में से कोई सदाचारी है और कोई अपने लिये खुला अत्याचारी।

११४.तथा हम ने उपकार किया मूसा और हारून पर।

११५.तथा मुक्त किया दोनों को और उन कि जाति को घोर व्यग्रता से।

११६.तथा हम ने सहायता की उन की तो वही प्रभावशाली हो गये।

---

[1] यह महान् बलि एक मेंढा था। जिसे जिब्रील (अलैहिस्सलाम) द्वारा स्वर्ग से भेजा गया। जो आप के प्रिय पुत्र इस्माईल (अलैहिस्सलाम) के स्थान पर बलि दिया गया। फिर इस विधि को प्रलय तक के लिये अल्लाह के समिप्य का एक साधन तथा ईदुल अज़हा (बक़रईद) का प्रियवर कर्म बना दिया गया। जिसे संसार के सभी मुसलमान ईदुल अज़्हा में करते हैं।

[2] इस आयत से विद्वित होता है कि इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को इस बलि के पश्चात् दूसरे पुत्र आदरणीय इस्हाक की शुभ सूचना दी गई। इस से ज्ञान हुआ कि बलि इस्माईल (अलैहिस्सलाम) की दी गई थी। और दोनों की आयु में लग–भग चौदह वर्ष का अन्तर है।

११७.तथा हम ने प्रदान की दोनों को प्रकाशमय पुस्तक (तौरात)।
११८.और हम ने दर्शाई दोनों को सीधी डगर।
११९.तथा शेष रखी दोनों की शुभ चर्चा पिछलों में।
१२०.सलाम है मूसा तथा हारून पर।
१२१.हम इसी प्रकार प्रतिफल प्रदान करते हैं सदाचारियों को।
१२२.वस्तुत: वह दोनों हमारे ईमान वाले भक्तों में थे।
१२३.तथा निश्चय इल्यास नबियों में से था।
१२४.जब कहा उस ने अपनी जाति से: क्या तुम डरते नहीं हो?
१२५.क्या तुम बअ्ल (नामक मुर्ति) को पुकारते हो? तथा त्याग रहे हो सर्वोत्तम उत्पत्ति कर्ता को?
१२६.अल्लाह ही तुम्हारा पालनहार है, तथा तुम्हारे प्रथम पूर्वजों का पालनहार है।
१२७.अन्तत: उन्होंने झुठला दिया उस को। तो निश्चय वही (नरक में) उपस्थित होंगे।
१२८.किन्तु अल्लाह के शुद्ध भक्त।
१२९.तथा शेष रखी हम ने उसकी शुभ चर्चा पिछलों में।
१३०.सलाम है इल्यासीन[१] पर।
१३१.वास्तव में हम इसी प्रकार प्रतिफल प्रदान करते हैं सदाचारियों को।
१३२.वस्तुत: वह हमारे ईमान वाले भक्तो में से था।
१३३.तथा निश्चय लूत नबियों में से था।
१३४.जब हम ने मुक्त किया उस को तथा उस के सब परिजनों को।
१३५.एक बुढ़िया[२] के सिवा, जो पीछे रह जाने वालों में थी।
१३६.फिर हम ने अन्यों को तहस नहस कर दिया।
१३७.तथा तुम[३] गुज़रते हो उन (की निर्जन बस्तियों) पर प्रात: के समय।
१३८.तथा रात्रि में। तो क्या तुम समझते नहीं हो?

[१] इल्यासीन: इल्यास ही का एक उच्चारण है। उन्हें अन्य धर्म ग्रन्थों में इलया भी कहा गया है।
[२] यह लूत (अलैहिस्सलाम) की काफ़िर पत्नी थी।
[३] मक्का वासियों को संबोधित किया गया है।

१३९.तथा निश्चय यूनुस नबियों में से था।
१४०.जब वह भाग[१] गया भरी नाव की ओर।
१४१.फिर नाम निकाला गया तो वह हो गया फेंके हुओं में से।
१४२.तो निगल लिया उसे मछली ने, और वह निन्दिता था।
१४३.तो यदि न होता अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करने वालों में।
१४४.तो वह रह जाता उस के उदर में उस दिन तक जब सब पुन: जीवित किये[२] जायेंगे।
१४५.तो हम ने फेंक दिया उसे खुले मैदान में और वह रोगी[३] था।
१४६.और उगा दिया उस[४] पर लताओं का एक वृक्ष।
१४७.तथा हम ने उसे रसूल बना कर भेजा एक लख बल्कि अधिक की ओर।
१४८.तो वह ईमान लाये। फिर हम ने उन्हें सुख – सुविधा प्रदान की एक समय[५] तक।
१४९.तो (हे नबी!) आप उन से प्रश्न करें कि क्या आप के पालनहार के लिये तो पुत्रियाँ हों और उन के लिये पुत्र?
१५०.अथवा क्या हम ने पैदा किया है फ़रिश्तों को नारियाँ। और वह उस समय उपस्थित[६] थे?
१५१.सावधान! वास्तव में वह अपने मन से बना कर यह बात कह रहें हैं।
१५२.कि अल्लाह ने संतान बनाई है। और निश्चय वह मिथ्या भाषी हैं।
१५३.क्या अल्लाह ने प्राथमिक्ता दी है पुत्रियों को पुत्रों पर?
१५४.तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसा निर्णय दे रहे हो?
१५५.तो क्या तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते?

---

[१] अल्लाह की अनुमति के बिना अपने नगर से नगर वासियों को यातना के आने की सूचना देकर निकल गये। और नाव पर सवार हो गये। नाव सागर की लहरों में घिर गई। इसलिये बोझ कम करने के लिये नाम निकाला गया। तो यूनुस (अलैहिस्सलाम) का नाम निकला और उन्हें समुद्र में फेंक दिया गया।

[२] अर्थात प्रलय के दिन तक। (देखिये : सूरह अम्बिया, आयात : ८७)

[३] अर्थात निर्बल नवजात शिशु के समान।

[४] रक्षा के लिये।

[५] देखिये : सूरह युनूस।

[६] इस में मक्का के मिश्रणवादियों का खण्डन किया जा रहा है जो फ़रिश्तों को देवियाँ तथा अल्लाह की पुत्रियाँ कहते थे। जब कि वह स्वयं पुत्रियों के जन्म को अप्रिय मानते थे।

१५६.अथवा तुम्हारे पास कोई प्रत्यक्ष प्रमाण है?
१५७.तो अपनी पुस्तक लाओ यदि तुम सत्यवादी हो?
१५८.और उन्होंने बना दिया अल्लाह तथा जिन्नों के मध्य वंश–संबंध। जब कि जिन्न स्वयं जानते हैं कि वह अल्लाह के समक्ष निश्चय उपस्थित किये[1] जायेंगे।
१५९.अल्लाह पवित्र है उन गुणों से जिस का वह वर्णन कर रहे हैं।
१६०.परन्तु अल्लाह के शुद्ध भक्त।[2]
१६१.तो निश्चय तुम तथा तुम्हारे पूज्य।
१६२.तुम सब किसी एक को भी कुपथ नहीं कर सकते।
१६३.उस के सिवा जो नरक में झोंका जाने वाला है।
१६४.और नहीं है हम (फ़रिश्तों) में से कोई परन्तु उस का एक नियमित स्थान है।
१६५.तथा हम ही (आज्ञापालन के लिये) पंक्तिवद्ध हैं।
१६६.और हम ही तस्बीह (पवित्रता गान) करने वाले हैं।
१६७.तथा वह (मुश्रिक) तो कहा करते थे कि:
१६८.यदि हमारे पास कोई स्मृति (पुस्तक) होती जो पहले लोगों में आई...
१६९.तो हम अवश्य अल्लाह के शुद्ध भक्तों में से हो जाते।
१७०.(फिर जब आ गयी) तो उन्होंने कुरआन के साथ कुफ़्र कर दिया अत: शीघ्र ही उन्हें ज्ञान हो जायेगा।
१७१.और पहले ही हमारा वचन हो चुका है अपने भेजे हुये भक्तों के लिये।
१७२.कि निश्चय उन्हीं की सहायता की जायेगी।
१७३.तथा वास्तव में हमारी सेना ही प्रभावशाली (विजयी) होने वाली है।
१७४.तो आप मुँह फेर लें उन से कुछ समय तक।
१७५.तथा उन्हें देखते रहें। वह भी शीघ्र ही देख लेंगे।
१७६.तो क्या वह हमारी यातना की शीघ्र माँग कर रहे हैं।
१७७.तो जब वह उतर आयेगी उन के मैदानों में तो बुरा हो जायेगा सावधान किये हुओं का सवेरा।

---

[1] अर्थात यातना के लिये। तो यदि वे उस के संबंधी होते तो उन्हें यातना क्यों देता?

[2] वह अल्लाह को ऐसे दुर्गुणों से युक्त नहीं करते।

१७८.और आप मुँह फेर लें उन से कुछ समय तक।

१७९.तथा देखते रहें, अन्ततः वह (भी) देख लेंगे।

१८०.पवित्र है आप का पालनहार गौरव का स्वामी उस बात से जो वह बना रहे हैं।

१८१.तथा सलाम है रसूलों पर।

१८२.तथा सभी प्रशंसा अल्लाह सर्वलोक के पालनहार के लिये है।

*****

सूरह साद – ३८

सूरह साद के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ८८ आयतें हैं।

- इस में पहले अच्छर (साद) आया है जिस के कारण इस का नाम (सूरह साद) है।
- इस की आरंभिक आयतों में कुरआन के शिक्षाप्रद पुस्तक होने की चर्चा करते हुये यह चेतावनी दी गई है कि जो इसे नहीं मानेंगे वह अपने आप को बुरे परिणाम तक पहुँचायेंगे।
- आयत १२ ते १६ तक उन जातियों का बुरा अन्त बताया गया है जिन्होंने रसूलों को झुठलाया। फिर आयत १७ से २४ तक नबियों के, अल्लाह की ओर ध्यानमग्न होते की चर्चा की गई है। फिर अल्लाह की आज्ञा का पालन करने और न करने दोनो का परलोक में अलग–अलग परिणाम बताया गया है।
- आयत ६५ से ८५ तक में बताया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) सावधान करने के लिये आये हैं। और आप के विरोध करने का वही फल होगा जो इब्लीस के अभिमान का हुआ।
- अन्तिम आयतों में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा कुरआन के सत्य होने तथा कुरआन की बताई हुयी बतों के अवश्य पूरी होने की ओर संकेत किये गये हैं।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. साद। शपथ है शिक्षा प्रद कुरआन की!

२. बल्कि जो काफ़िर हो गये वह एक गर्व तथा विरोध में ग्रस्त हैं।

३. हम ने विनाश किया है इन से पूर्व बहुत से समुदायों का। तो वह पुकारने लगे। और नहीं होता वह बचने का समय।

४. तथा उन्हें आश्चर्य हुआ कि आ गया उन के पास उन्हीं में से एक सचेत करने[१] वाला! और कह दिया काफ़िरों ने कि यह तो बड़ा झूठा जादूगर है।

५. क्या उस ने बना दिया है सब पूज्यों को एक पूज्य? यह तो बड़े आश्चर्य का विषय है।

६. तथा चल दिये उन के प्रमुख (यह) कहते हुये कि चलो दृढ़ रहो अपने पूज्यों पर। इस बात का कुछ और ही लक्ष्य[२] है।

७. हम ने नहीं सुनी यह बात प्राचीन धर्मों में, यह तो बस मनघड़त बात है।

८. क्या उसी पर उतारी गई है यह शिक्षा (कुरआन) हमारे बीच में से? बल्कि वह संदेह में हैं मेरी शिक्षा से। बल्कि उन्होंने अभी यातना नहीं चखी है।

९. अथवा उन के पास हैं आप के अत्यंत प्रभुत्वशाली प्रदाता पालनहार की दया के कोष।[३]

१०. अथवा उन्हीं का है राज्य आकाशों तथा धरती का। और जो कुछ उन दोनों के मध्य है? तो उन्हें चाहिये कि चढ़ जायें (आकाशों में) रस्सियाँ तान[४] कर।

११. यह एक तुच्छ सेना है यहाँ पराजित सेनाओं[५] में से।

१२. झुठलाया इन से पहले नूह तथा आद और शक्तिवान फ़िरऔन की जाति ने।

१३. तथा समूद और लूत की जाति एवं बन के वासियों[६] ने। यही सेनायें हैं।

१४. इन सभी ने झुठलाया रसूलों को, तो मेरी यातना सिद्ध हो गई।

---

[१] अर्थात मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)।

[२] अर्थात एकेश्वरवाद की यह बात सत्य नहीं है और ऐसी बात अपने किसी स्वार्थ के लिये की जा रही है।

[३] कि वह जिसे चाहें नबी बनायें?

[४] और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर प्रकाशना के अवतरण को रोक दें।

[५] अर्थात इन मक्का वासियों के पराजित होने में देर नहीं होगी।

[६] इस से अभिप्राय शुऐब (अलैहिस्सलाम) की जाति है। (देखिये : सूरह, शुअरा आयतः १७६)

१५. और यह नहीं प्रतीक्षा कर रहे हैं परन्तु एक कर्कश ध्वनि की जिस के लिये कुछ भी देर नहीं होगी।

१६. तथा उन्होंने कहा कि हे हमारे पालनहार! शीघ्र प्रदान कर दे हमारे लिये हमारी (यातना का) भाग हिसाब के दिन से पहले।[1]

१७. आप सहन करें उस पर जो वे कह रहे हैं। तथा याद करें हमारे भक्त दावूद को जो अत्यंत शक्तिशाली था निश्चय वह ध्यान मग्न था।

१८. हम ने वश्वर्ती कर दिया था पर्वतों को जो उसके साथ पवित्रता गान करते थे संध्या तथा प्रात:।

१९. तथा पक्षियों को एकत्रित किये हुये, प्रत्येक उस के आधीन ध्यान मगन रहते थे।

२०. और हम ने दृढ़ किया उस के राज्य को और हम ने प्रदान की उसे नबूवत तथा निर्णय शक्ति।

२१. तथा क्या आया आप के पास दो पक्षों का समाचार जब वह दीवार फांद कर मेहराब (वंदना स्थल) में आ गये?

२२. जब उन्होंने प्रवेश किया दावूद पर तो वह घबरा गया उन से। उन्होंने कहा: डरिये नहीं। हम दो पक्ष हैं अत्याचार किया है हम में से एक ने दूसरे पर। तो आप निर्णय कर दें हमारे बीच सत्य (न्याय) के साथ। तथा अन्याय न करें तथा हमे दर्शा दें सीधी राह।

२३. यह मेरा भाई है उस के पास निन्नावे भेड़ हैं। और मेरे एक भेड़ है। तो यह कहता है कि वह (भी) मुझे दे दो। और यह प्रभावशाली हो गया मुझ पर बात करने में।

२४. दावूद ने कहा: उस ने तुम पर अवश्य अत्याचार किया तुम्हारी भेड़ को (मिलाने की) माँग कर के अपनी भेड़ों में। तथा बहुत से साझी एक दूसरे पर अत्याचार करते हैं उन के सिवा जो ईमान लाये तथा सदाचार किये। और बहुत थोड़े हैं ऐसे लोग। और दावूद ने भॉप लिया की हम ने उस की परीक्षा ली है तो सहसा उस ने क्षमायाचना कर ली। और गिर गया सज्दे में तथा ध्यान मग्न हो गया।

---

[1] अर्थात वह उपहास स्वरूप कहते हैं कि प्रलय से पहले ही संसार में हमें यातना मिल जाये। अर्थ यह है कि हमें कोई यातना नहीं दी जायेगी।

२५. तो हम ने क्षमा कर दिया उस के लिये वह। तथा उस के लिये हमारे पास निश्चय सामिप्य है तथा अच्छा स्थान।

२६. हे दावूद! हम ने तुझे राज्य दिया है धरती में। अतः निर्णय कर लोगों के बीच सत्य (न्याय) के साथ तथा अनुसरण न कर आकांक्षा का। अन्यथा वह कुपथ कर देगी तुझे अल्लाह की राह से। निःसंदेह जो कुपथ हो जायेंगे अल्लाह की राह[१] से तो उन्हीं के लिये घोर यातना है, इस कारण कि वह भूल गये हिसाब का दिन।

२७. तथा नहीं पैदा किया है हम ने आकाश और धरती को तथा जो कुछ उन के बीच है व्यर्थ। यह तो उन का विचार है जो काफ़िर हो गये। तो विनाश है उन के लिये जो काफ़िर हो गये अग्नि से।

२८. क्या हम कर देंगे उन्हें जो ईमान लाये तथा सदाचार किये उन के समान जो उपद्रवी हैं धरती में? या कर देंगे आज्ञाकारियों को उल्लंघनकारियों के समान?[२]

२९. यह (कुरआन) एक शुभ पुस्तक है। जिसे हम ने अवतरित किया है आप की ओर, ताकि लोग विचार करें उस की आयतों पर। और ताकि शिक्षा ग्रहण करें मतिमान।

३०. तथा हम ने प्रदान किया दावूद को सुलैमान (नामक पुत्र)। वह अति ध्यान मग्न था।

३१. जब प्रस्तुत किये गये उस के समक्ष संध्या के समय सधे हुये वेग गामी घोड़े।

३२. तो कहाः मैं ने प्राथमिक्ता दी इन घोड़ों के प्रेम को अपने पालनहार के स्मरण पर। यहाँ तक कि वह ओझल हो गये।

३३. उन्हें वापिस लाओ मेरे पास। फिर हाथ फेरने लगे उन की पिंडलियों तथा गर्दनों पर।

३४. और हम ने परीक्षा[३] ली सुलैमान कि तथा डाल दिया उस के सिंहासन पर एक धड़। फिर वह ध्यान मग्न हो गया।

---

[१] अल्लाह की राह से अभिप्राय उस का धर्म विधान है।

[२] यह प्रश्न नकारात्मक है और अर्थ यह कि दोनों का परिणाम समान नहीं होगा।

[३] हदीस से भाष्यकारों ने लिखा है कि सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने एक बार कहा कि मैं आज रात अपनी सभी पत्नियों जिन की संख्या ७० अथवा ९० थी, से संभोग करूँगा। जिन से योद्धा घुड़सवार पैदा होंगे जो अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे। तथा उन्होंने यह नहीं कहा: यदि अल्लाह ने चाहा। जिस का परिणाम यह हुआ कि केवल एक ही पत्नी गर्भवती हुई।

३५. उस ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! मुझ को क्षमा कर दे। तथा मुझे प्रदान कर ऐसा राज्य जो उचित न हो किसी के लिये मेरे पश्चात्। वास्तव में तू ही अति प्रदाता है।
३६. तो हम ने वश में कर दिया उस के लिये वायु को जो चल रही थी धीमी गति से उस के आदेश से वह जहाँ चाहता।
३७. तथा शैतानों को प्रत्येक प्रकार के निर्माता, तथा ग़ोता ख़ोर को।
३८. तथा दूसरों को बंधे हुये बेड़ियों में।
३९. यह हमारा प्रदान है। तो उपकार करो अथवा रोक लो, कोई हिसाब नहीं।
४०. और वास्तव में उस के लिये हमारे पास सामिप्य तथा उत्तम स्थानहै।
४१. तथा याद करो हमारे भक्त अय्यूब को। जब उस ने पुकारा अपने पालनहार को कि शैतान ने मुझ को पहुँचाया[1] है दु:ख, तथा यातना।
४२. अपना पाँव (धरती पर) मार। यह है शीतल स्नान तथा पीने का जल।
४३. और हम ने प्रदान किया उसे उस का परिवार तथा उनके साथ और उन के समान। अपनी दया से, और मतिमानों की शिक्षा के लिये।
४४. तथा ले अपने हाथ में तीलियों की एक झाड़, तथा उस से मार और अपनी शपथ भंग न कर। वास्तव[2] में हम ने उसे पाया धौर्य वान। निश्चय वह बड़ा ध्यान मग्न था।
४५. तथा याद करो, हमारे भक्त इब्राहीम तथा इस्हाक एवं याकूब को, जो कर्म शक्ति तथा ज्ञानचक्षू[3] वाले थे।
४६. हम ने उन्हें विशेष कर लिया बड़ी विशेषता परलोक (आख़िरत) की याद के साथ।
४७. वास्तवम में वह हमारे यहाँ उत्तम निर्वाचितों में से थे।

और उस ने भी अधुरे शिशु को जन्म दिया। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: वह (यदि अल्लाह ने चाहा) कह देते तो सब योद्धा पैदा होते। (सहीह बुख़ारी , सहीह मुस्लिम)

[1] अर्थात मेरे दु:ख तथा यातना के कारण मुझे शैतान उकसा रहा है तथा वह मुझे तेरी दया से निराश करना चाहता है।

[2] अय्यूब (अलैहिस्सलाम) की पत्नी से कुछ चूक हो गई जिस पर उन्होंने उसे सौ कोड़े मारने की शपथ ली थी।

[3] अर्थात आज्ञा पालन में शक्तिवन तथा धर्म का बोध रखते थे।

४८. तथा आप चर्चा करें इस्माईल तथा यसअ एवं ज़ुलकिफ़्ल की। और यह सभी निर्वाचितों में से थे।
४९. यह (क़ुरआन) एक शिक्षा है तथा निश्चय आज्ञाकारियों के लिये उत्तम स्थान है।
५०. स्थायी स्वर्ग खुले हुये उन के लिये (उन के) द्वार।
५१. वे तकिये लगाये होंगे उन में। मागेंगे उन में बहुत से फल तथा पेय पदार्थ।
५२. तथा उन के पास आँखें सीमित रखने वाली समायु पत्नियाँ होंगी।
५३. यह है जिस का वचन दिया जा रहा था तुम्हें हिसाब के दिन।
५४. यह है हमारी जीविका जिस का कोई अन्त नहीं है।
५५. यह है। और अवैज्ञाकारियों के लिये निश्चय बुरा स्थान है।
५६. नरक है, जिस में वे जायेंगे, क्या ही बुरा आवास है!
५७. यह है। तो तुम चखो खौलता पानी तथा पीप।
५८. तथा कुछ अन्य इसी प्रकार की विभिन्न यातनायें।
५९. यह[१] एक और जत्था है जो घुसा आ रहा है तुम्हारे साथ। कोई स्वागत् नहीं है उन का। वास्तव में वह नरक में प्रवेश करने वाले हैं।
६०. वह उत्तर देंगे: बल्कि तुम। तुम्हारा कोई स्वागत् नहीं। तुम्हीं आगे लाये हो इस (यातना) को हमारे। तो यह बुरा निवास है।
६१. (फिर) वह कहेंगे: हमारे पलनहार! जो हमारे आगे लाया है इसे, उस को दुगनी यातना दे नरक में।
६२. तथा (नारकी) कहेंगे: हमें क्या हुआ है कि हम कुछ लोगों को नहीं देख रहे हैं जिन की गणना हम बुरे लोगों में कर[२] रहे थे?
६३. क्या हम ने उन्हें उपहास बना रखा था अथवा चूक रही हैं उन से हमारी आँखें?
६४. निश्चय सत्य है नारकियों का आप में झगड़ना।
६५. हे नबी! आप कह दें: मैं तो मात्र सचेत करने वाला[१] हूँ। तथा कोई (सच्चा) पूज्य नहीं है अकेले प्रभावशाली अल्लाह के सिवा।

---

[१] यह बात काफ़िरों के प्रमुख जो पहले से नरक में होंगे अपने उन अनुयायियों से कहेंगे जो संसार में उन के अनुयायी बने रहे उस समय जब उन के अनुयायियों का गिरोह नरक में आने लगेगा।
[२] इससे उनका संकेत उन निर्धन-निर्बल मुसलमानों की ओर होगा जिन्हें वह संसार में उपद्रवी कह रहे थे।

६६. वह आकाशों तथा धरती का और जे कुछ उन दोनों के मध्य है सब का पालनहार अति प्रभावशाली क्षमी है।

६७. आप कह दें कि यह[२] बहुत बड़ी सूचना है।

६८. और तुम हो कि उस से मुँह फेर रहे हो।

६९. मुझे कोई ज्ञान नहीं है उच्च सभा वाले (फ़रिश्ते) जब वाद–विवाद कर रहे थे।

७०. मेरी ओर तो मात्र इस लिये वह्यी (प्रकाशना) की जा रही है कि मैं खुला सचेत करने वाला हूँ।

७१. जब कि कहा आप के पालनहार ने फ़रिश्तों से: मैं पैदा करने वाला हूँ एक मनुष्य मिट्टी से।

७२. तो जब मैं उसे बराबर कर दूँ तथा फूँक दूँ उस में अपनी ओर से रूह (प्राण) तो गिर जाओ उस के लिये सज्दा करते हुये।

७३. तो सज्दा किया सभु फ़रिश्तों ने एक साथ।

७४. इब्लीस के सिवा, उस ने अभिमान किया और हो गया काफ़िरों में से।

७५. अल्लाह ने कहा: हे इब्लीस! किस चिज़ ने तुझे रोक दिया सज्दा करने से उस के लिये जिस को मैं ने पैदा किया अपने हाथ से? क्या तू अभिमान कर गया अथवा वास्तव में तू ऊँचे लोगों में से है?

७६. उस ने कहा: मैं उस से उत्तम हूँ। तू ने मुझे पैदा किया है अग्नि से तथा उसे पैदा किया है मिट्टी से।

७७. अल्लाह ने कहा: तू निकल जा यहाँ से, तू वास्तव में धिक्कृत है।

७८. तथा तुझ पर मेरी दया से दूरी ही प्रलय के दिन तक।

७९. उस ने कहा: मेरे पालनहार! मुझे अवसर दे उस दिन तक जब लोग पून:जीवित किये जायेंगे।

८०. अल्लाह ने कहा: तुझे अवसरदे दिया गया।

८१. निर्धारित समय के दिन तक।

---

[१] कुरआन ने इसे बहुत सी आयतों में दुहराया है कि नबियों का कर्तव्य मात्र सत्य को पहुँचाना है। किसी को बलपूर्वक सत्य को मनवाना नहीं है।

[२] परलोक की यातना तथा तौहीद (एकेश्वरवाद की जो बातें तुम्हें बता रहा हूँ।

८२. उस ने कहा: तो तेरे प्रताप की शपथ! मैं आवश्य कुपथ कर के रहूँगा सब को।
८३. तेरे शुद्ध भक्तों के सिवा उन में से।
८४. अल्लाह ने कहा: तो यह सत्य है और मैं सत्य ही कहा करता हूँ:
८५. कि मैं अवश्य भर दूँगा नरक को तुझ से तथा जो तेरा अनुसरण करेंगे उन सब से।
८६. (हे नबी!) कह दें कि मैं नहीं माँग करता हूँ तुम से इस पर किसी पारिश्रमिक की, तथा मैं नहीं हूँ अपनी ओर से कुछ बनाने वाला।
८७. नहीं है यह (कुरआन) परन्तु एक शिक्षा सर्वलोक वासियों के लिये।
८८. तथा तुम्हें अवश्य ज्ञान हो जायेगा उस के समाचार (तथ्य) का एक समय के पश्चात्।

*****

सूरह .जुमर – ३९

सूरह जुमर के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में ७५ आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत ७१ तथा ७३ में (.जुमर) शब्द आया है। जिस का अर्थ है: समूह तथा गिरोह। और इसी से सूरह का नाम लिया गया है।
- इस की आरंभिक आयतों में कुरआन की मूल शिक्षा को प्रमाणों (दलीलों) के साथ प्रस्तुत किया गया है कि आज्ञा पालन (वंदना) मात्र अल्लाह ही के लिये है। फिर आगे आयत २० तक दोनों गिरोह: जो धर्म का पालन करते और केवल अल्लाह की वंदना (इबादत) करते हैं तथा जो दूसरों की पूजा करते हैं उन के मध्य अन्तर बताया गया है। फिर आयत ३५ तक कुरआन को मानने वालों की विशेषतायें और उन का प्रतिफल बताया गया है और विरोधियों को बुरे परिणाम से सावधान किया गया है।
- आयत ३६ से ५२ तक ऐसे समझाया गया है कि (तौहीद) उभर कर सामने आ जाये। और ईमान लाने की भावना पैदा हो जाये। फिर आयत ६३ तक अल्लाह को मानने की प्रेरणा दी गई है।
- अन्तिम आयतों में यह बताया गया है कि एक अल्लाह की वंदना ही सच्च है। फिर प्रलय की कुछ दशाओं की झलक दिखाकर (नेकों) सदाचारियों और बुरों के अलग–अलग स्थानों की ओर जाने, और उन के अन्तिम परिणाम को बताया गया है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. इस पुस्तक का अवतरित होना अल्लाह अति प्रभावशाली तत्वज्ञ की ओर से है।

२. हम ने आप की ओर यह पुस्तक सत्य के साथ अवतरित की है। अत: इबादत (वंदना) करो अल्लाह की शुद्ध करते हुये उस के लिये धर्म को।

३. सुन लो! शुद्ध धर्म अल्लाह ही के लिये (योग्य) है। तथा जिन्होंने बना रखा है अल्लाह के सिवा संरक्षक वे कहते हैं कि हम तो उन की वंदना इस लिये करते हैं कि वह समीप कर देंगे हमें अल्लाह[1] से। वास्तव में अल्लाह ही निर्णय करेगा उन के बीच जिस में वे विभेद कर रहे हैं। वास्तव में अल्लाह उसे सुपथ नहीं दर्शाता जो बड़ा मिथ्यावादी कृतघ्न हो।

४. यदि अल्लाह चाहता कि अपने लिये संतान बनाये तो चुन लेता उस में से जिसे पैदा करता हैं जिसे चाहता। वह पवित्र है! वही अल्लाह अकेला सब पर प्रभावशाली है।

५. उस ने पैदा किया है आकाशों तथा धरती को सत्य के आधार पर। वह लपेट देता है रात्रि को दिन पर तथा दिन को रात्रि पर तथा वशवर्ती किया है सूर्य और चन्द्रमा को। प्रत्येक चल रहा है अपनी निर्धारित अवधि के लिये। सावधान! वही अत्यंत प्रभावशाली क्षमी है।

६. उस ने तुम को पैदा किया एक प्राण से फिर बनाया उसी से उस का जोड़ा। तथा अवतरित किये तुम्हारे लिये पशुओं में से आठ जोड़े। वह पैदा करता है तुम को तुम्हारी माताओं के गर्भाशयों में एक रूप में, एक रूप के पश्चात् तीन अँधेरों में, यही अल्लाह है तुम्हारा पालनहार, उसी का राज्य है। कोई (सच्चा) वंदनीय नहीं उस के सिा। तो तुम कहाँ फिराये जा रहे हो?

---

[1] मक्का के काफ़िर यह मानते थे कि अल्लाह ही वास्तविक पूज्य है। परन्तु वह यह समझते थे कि उस का दरबार बहुत ऊँचा है इसलिये वह इन पूज्यों को माध्यम बनाते थे। ताकि इन के द्वारा उन की प्रार्थनायें अल्लाह तक पहुँच जायें। यही बात साधारणत: मुश्रिक कहते आये हैं। इन तीन आयतों में उन के इसी कुविचार का खण्डन किया गया है। फिर उन में कुछ ऐसे थे जो समझते थे कि अल्लाह के संतान है। कुछ, फ़रिश्तों को अल्लाह की पुत्रियाँ कहते, और कुछ, नबियों (ईसा) को अल्लाह का पुत्र कहते थे। यहाँ इसी का खण्डन किया गया है।

७. यदि तुम कृतघ्न बनो तो अल्लाह निस्पृह है तुम से। और वह प्रसन्न नहीं होता अपने भक्तों की कृतघ्नता से और यदि कृतज्ञता करो तो वह प्रसन्न हो जायेगा तुम से। अैर नहीं बोझ उठायेगा कोई उठाने वाला दूसरों का बोझ। फिर तुम्हारे पालनहार ही की ओर तुम्हारा फिरना है। तो वह तुम्हें सूचित कर देगा तुम्हारे कर्मो से। वास्तव में वह भली–भाँति जानने वाला है दिलों के भेदों को।

८. तथा जब पहुँचता है मनुष्य को कोई दु:ख तो पुकारता है अपने पालनहार को ध्यानमग्न होकर उस की ओर। फिर जब हम उसे प्रदान करते हैं कोई सुख अपनी ओर से तो भूल जाता है जिस के लिये वह पुकार रहा था इस से पूर्व। तथा बना लेता है अल्लाह का साझी ताकि कुपथ करे उस की डगर से। आप कह दें कि आनन्द ले लो अपने कुफ़्र का थोड़ा सा। वास्तव में तू नारकियों में से है।

९. तो क्या जो आज्ञाकारी रहा हो रात्रि के क्षणों में सज्दा करते हुये, तथा खड़ा रहकर, (और) डर रहा हो परलोक से, तथा आशा रखता हो अल्लाह की दया की, आप कहें कि क्या समान हो जायेंगे जो ज्ञान रखते हों तथा जो ज्ञान नहीं रखते? वास्तव में शिक्षा ग्रहण करते हैं मतिमान लोग ही।

१०. आप कह दें उन भक्तों से जो ईमान लाये तथा डरे अपने पालनहार से कि उन्हीं के लिये जिन्होंने सदाचार किये इस संसार में बड़ी भलाई है। तथा अल्लाह की धरती विस्तृत है। और धैर्यवान ही अपना पूरा प्रतिफल अगणित दिये जायेंगे।

११. आप कह दें कि मुझे आदेश दिया गया है कि इबादत (वंदना) करूँ अल्लाह की शुद्ध कर के उस के लिये धर्म को।

१२. तथा मुझे आदेश दिया गया है कि प्रथम आज्ञाकारी हो जाऊँ।

१३. आप कह दें: मैं डरता हूँ यदि मैं अवैज्ञा करूँ अपने पालनहार की, एक बड़े दिन की यातना से।

१४. आप कह दें: अल्लाह ही की इबादत (वंदना) मैं कर रहा हूँ शुद्ध कर के उस के लिये अपने धर्म को।

१५. अत: तुम इबादत (वंदना) करो जिस की चाहो उस के सिवा। आप कह दें: वास्तव में क्षतिग्रस्त वही हैं जिन्होंने क्षतिग्रस्त कर लिया स्वयं को तथा अपने परिवार को प्रलय के दिन। सावधान! यही खुली क्षति है।

१६. उन्हीं के लिये छत्र होंगे अग्नि के, उन के ऊपर से तथा उन के नीचे से छत्र होंगे। यही है डरा रहा है अल्लाह जिस से अपने भक्तों को। हे मेरे भक्तो! मुझी से डरो।

१७. जो बचे रहे तागूत (असुर)[1] की पूजा से तथा ध्यान मग्न हो गये अल्लाह की ओर तो उन्हीं के लिये शुभसूचना है। अत: आप शुभ सूचना सुना दें मेरे भक्तों को।

१८. जो ध्यान से सुनते हैं इस बात को फिर अनुसरण करते हैं इस सर्वोत्तम बात का तो वही हैं जिन्हें सुपथ दर्शन दिया है अल्लाह ने, तथा वही मतिमान हैं।

१९. तो क्या जिस पर यातना की बात सिद्ध हो गई, क्या आप निकाल सकेंगे उसे जो नरक में है?

२०. किन्तु जो अपने पालनहार से डरे उन्हीं के लिये उच्च भवन हैं। जिन के ऊपर निर्मित भवन हैं। प्रवाहित हैं जिन में नहरें, यह अल्लाह का वचन है। और अल्लाह वचन भंग नहीं करता।

२१. क्या तुम ने नहीं देखा[2] कि अल्लाह ने उतारा आकाश से जल? फिर प्रवाहित कर दिये उस के स्रोत धरती में। फिर निकालता है उस से खेतियाँ विभिन्न रंगों की। फिर सूख जाती हैं, तो तुम देखते हो उन्हें पीली, फिर उसे चूर–चूर कर देता है। निश्चय इस में बड़ी शिक्षा है मतिमानों के लिये।

२२. तो क्या खोल दिया हो अल्लाह ने जिस का सीना इस्लाम के लिये तो वह एक प्रकाश पर हो अपने पालनहार की ओर से। तो विनाश है जिन के दिल कड़े हो गये अल्लाह के स्मरण से वही खुले कुपथ में हैं।

२३. अल्लाह ही है जिस ने सर्वोत्तम हदीस (कुरआन) को अवतरित किया है। ऐसी पुस्तक जिस की आयतें मिलती जुलती बार–बार दुहराई जाने वाली हैं। जिसे (सुन कर) खड़े हो जाते हैं उन के रूँगटे जो डरते हैं अपने पालनहार से । फिर कोमल हो जाते हैं उन के अंग तथा दिल अल्लाह के स्मरण कि ओर। यही है अल्लाह का मार्गदर्शन जिस के द्वारा वह संमार्ग पर लगा देता जिसे चाहता है। और जिसे अल्लाह कुपथ कर दे तो उस का कोई पथ दर्शक नहीं है।

---

[1] अल्लाह के अतिरिक्त मिथ्या पूज्यों से।

[2] इस आयत में अल्लाह के एक नियम की ओर संकेत है जो सब में समान रूप से प्रचलित है। अर्थात वर्षा से खेती का उगना और अनेक स्थितियों से गुज़र कर नाश हो जाना। इसे मतिमानों के लिये शिक्षा कहा गया है। क्योंकि मनुष्य की भी यही दशा होती है। वह शिशु जन्म लेता है फिर युवक और बूढ़ा हो जाता है। और अन्तत: संसार से चला जाता है।

२४. तो क्या जो अपनी रक्षा करेगा अपने मुख[१] से बुरी यातना से प्रलय के दिन? तथा कहा जायेगा अत्याचारियो से: चखो जो तुम कर रहे थे।

२५. झुठला दिया उन्होंने जो इन से पूर्व थे । तो आ गई यतना उन के पास जहाँ से उन्हें अनुमान (भी) न था।

२६. तो चखा दिया अल्लाह ने उन को अपमान संसारिक जीवन में। और आख़िरत (परलोक) की यातना निश्चय अत्यधिक बड़ी है। क्या ही अच्छा होता यदि वह जानते।

२७. और हम ने मनुष्य के लिये इस कुरआन में प्रत्येक उदाहरण दिये हैं ताकि वह शिक्षा ग्रहण करे।

२८. अर्बी भाषा में कुरआन जिस में कोई टेढ़ापन नहीं है, ताकि वह अल्लाह से डरें।

२९. अल्लाह ने एक उदाहरण दिया है एक व्यक्ति का जिस में बहुत से परस्पर विरोधी साझी है। तथा एक व्यक्ति पूरा एक व्यक्ति का (दास) है। तो क्या दशा में दोनों समान हो जायेंगे?[२] सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है, बल्कि उन में से अधिक्तर नहीं जानते।

३०. (हे नबी!) निश्चय आप को मरना है तथा उन्हें भी मरना है।

३१. फिर तुम सभी[३] प्रलय के दिन अल्लाह के समक्ष झगड़ोगे।

३२. तो उस से बड़ा अत्याचारी कौन हो सकता है जो अल्लाह पर झूठ बोले तथा सच्च को झुठलाये जब उस के पास अ गया? तो क्या नरक में नहीं है ऐसे काफ़िरों का स्थान?

३३. तथा जो सत्य लाये[४] और जिस ने उसे सच माना तो वही (यातना से) सुरक्षित रहने वाले हैं।

---

[१] इस लियेकि उस के हाथ पीछे बंधे होंगे। वह अच्छा है या जो स्वर्ग के सुख में होगा वह अच्छा है।

[२] इस आयत में मिश्रणवादी और एकेश्वरवादी की दशा का वर्णन किया गया है कि मिश्रणवादी अनेक पूज्यों को को प्रसन्न करने में व्याकुल रहता है। तथा एकेश्वरवादी शान्त हो कर केवल एक अल्लाह की इबादत करता है और एक ही को प्रसन्न करता है।

[३] और वहाँ तुम्हारे झगड़े का निर्णय और सब का अन्त सामने आ जायेगा। आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की मौत को सिद्ध किया गया है। जिस प्रकार सूरह आले इमरान:१४४, में आप की मौत का प्रमाण बताया गया है।

[४] इस से अभिप्राय अन्तिम नबी जनाब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हैं।

३४. उन्हीं के लिये है जो वह चाहेंगे उन के पालनहार के यहाँ। और यही सदाचारियों का प्रतिफल है।

३५. ताकि अल्लाह क्षमा कर दे जो कुकर्म उन्होंने किये हैं। तथा उन्हें प्रदान करे उन का प्रतिफल उन के उत्तम कर्मों के बदले जो वे कर रहे थे।

३६. क्या अल्लाह पर्याप्त नहीं है अपने भक्त के लिये? तथा वह डराते हैं आप को उन से जो उस के सिवा हैं। तथा जिसे अल्लाह कुपथ कर दे तो नहीं है उसे कोई सुपथ दर्शाने वाला।

३७. और जिसे अल्लाह सुपथ दर्शा दे तो नहीं है उसे कोई कुपथ करने वाला। क्या नहीं है अल्लाह प्रभुत्वशाली बदला लेने वाला?

३८. और यदि आप उन से प्रश्न करें कि किस ने पैदा किया है आकाशों तथा धरती को? तो वह अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने। आप कहिये कि तुम बताओ जिसे तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो: यदि अल्लाह मुझे कोई हानि पहुँचाना चाहे तो क्या यह उस की हानि को दूर कर सकता है? अथा मेरे साथ दया करना चाहे, तो क्या वह रोक सकता है उस की दया को? आप कह दें कि मुझे पर्याप्त है अल्लाह। और उसी पर भरोसा करते है भरोसा करने वाले।

३९. आप कह दें कि हे मेरी जाति के लोगो! तुम काम करो अपने स्थान पर, मैं भी काम कर रहा हूँ। तो शीघ्र ही तुम्हें ज्ञान हो जायेगा।

४०. कि किस के पास आती है ऐसी यातना जो उसे अपमानित कर दे। तथा उतरती है किस के ऊपर स्थायी यातना?

४१. वास्तव में हम ने ही अवतरित की है आप पर यह पुस्तक लोगों के लिये सत्य के साथ। तो जिस ने मार्गदर्शन प्राप्त कर लिया तो उस के अपने (लाभ के) लिये है। तथा जो कुपथ हो गया तो वह कुपथ होता है अपने ऊपर। तथा आप उन पर संरक्षक नहीं है।

४२. अल्लाह ही खींचता है प्राणों को उन के मरण के समय, तथा जिस के मरण का समय नहीं आया उस की निद्रा में। फिर रोक लेता है जिस पर निर्णय कर दिया

हो मरण का। तथा भेज देता है अन्य को एक निर्धारित समय तक के लिये। वास्तव में इस में कई निशानियाँ हैं उन के लिये जो मनन–चिन्तन[1] करते हों।

४३. क्या उन्होंने बना लिये हैं अल्लाह के अतिरिक्त बहुत से अभिस्तावक (सिफ़ारशी)? आप कह दें: क्या (यह सिफ़ारिश करेंगे) यदि वह अधिकार न रखते हों किसी चीज़ का और न ही समझ रखते हों?

४४. आप कह दें कि अनुशंसा (सिफ़ारिश) तो सब अल्लाह के अधिकार में है। उसी के लिये है आकाशों तथा धरती का राज्य। फिर उसी की ओर तुम फिराये जाओगे।

४५. तथा जब वर्णन किया जाता है अकेले अल्लाह का तो संकीर्ण होने लगते हैं उन के दिल जो ईमान नहीं रखते आख़िरत[2] पर। तथा जब वर्णन किया जाता है उन का जो उस के सिवा हैं तो वह सहसा प्रसन्न हो जाते हैं।

४६. (हे नबी!) आप कहें: हे अल्लाह आकाशों तथा धरती के पैदा करने वाले. परोक्ष तथा प्रत्यक्ष के ज्ञानी! तू ही निर्णय करेगा अपने भक्तों के बीच, जिस बात में वह झगड़ रहे थे।

४७. और यदि उन का जिन्होंने अत्याचार किया है जो कुछ धरती में हैं सब हो जाये तथा उसके समान उस के साथ और आ जाये तो वह उस दण्ड में दे देंगे[3] घोर यातना के बदले प्रलय के दिन। तथा खुल जायेगी उन के लिये अल्लाह की ओर से वह बात जिसे वह समझ नहीं रहे थे।

४८. तथा खुल जायेंगी उन के लिये उन के करतूतों की बुराईयाँ। और उन्हें घेर लेगा जिस का वह उपहास कर रहे थे।

---

[1] इस आयत में बताया जा रहा है कि मरण तथा जीवन अल्लाह के नियंत्रण में है। निद्रा में प्राणों को खींचने का अर्थ है उन की संवेदन शक्ति को समाप्त कर देना। अत: कोई इस निद्रा की दशा पर विचार करे तो यह समझ सकता है कि अल्लाह मुर्दों को भी जीवित कर सकता है।

[2] इस में मुश्रिकों की दशा का वर्णन किया जा रहा है कि वह अल्लाह की महिमा और प्रेम को स्वीकार तो करते हैं फिर भी जब अकेले अल्लाह की महिमा तथा प्रशंसा का वर्णन किया जाता है तो प्रसन्न नहीं होते जब तक दूसरे पीरों–फ़क़ीरों तथा देवताओं के चमत्कार की चर्चा न की जाये।

[3] परन्तु वह सब स्वीकार्य नहीं होगा। (देखिये : सूरह बक़रा, आयत : ४८, तथा सूरह आले इमरान, आयत : ९१)

४९. और जब पहुँचता है मनुष्य को कोई दुःख तो हमें पुकारता है। फिर जब हम प्रदान करते हैं कोई सुख अपनी ओर से, तो कहता हैं यह तो मुझे प्रदान किया गया है ज्ञान के कारण। बल्कि यह एक परीक्षा है। किन्तु लोगों में से अधिक्तर (इसे) नहीं जानते।

५०. यही बात उन लोगों ने भी कही थी जो इन से पूर्व थे। तो नहीं काम आया उन के जो कुछ वह कमा रहे थे।

५१. फिर आ पड़े उन पर उन के सब कुकर्म, और जो अत्याचार किये हैं इन में से आ पड़ेंगे उन पर (भी) उन के कुकर्म। तथा वह (हमें) विवश करने वाले नहीं हैं।

५२. क्या उन्हें ज्ञान नहीं कि अल्लाह फैलाता है जीविका जिस के लिये चाहता है, तथा नाप कर देता है (जिस के लिये चाहता हैं)? निश्चय इस में कई निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो ईमान रखते हैं।

५३. आप कह दें मेरे उन भक्तों से जिन्होंने अपने ऊपर अत्याचार किये हैं कि तुम निराश[१] न हो अल्लाह की दया से। वास्तव में अल्लाह क्षमा कर देता है सब पापों को। निश्चय वह अति क्षमी दयावान् है।

५४. तथा झुक पड़ो अपने पालनहार की ओर, और आज्ञाकारी हो जाओ उस के इस से पूर्व कि तुम पर यातना आ जाये, फिर तुम्हारी सहायता न की जाये।

५५. तथा पालन करो उस सर्वोत्तम (कुरआन) का जो अवतरित किया गया है तुम्हारी ओर तुम्हारे पालनहार की ओर से इस से पूर्व कि आ पड़े तुम पर यातना और तुम्हें ज्ञान न हो।

५६. (ऐसा न हो कि) कोई व्यक्ति कहे कि हाय संताप! इस बात पर कि मैंने आलस्य किया अल्लाह के पक्ष में, तथा मैं उपहास करने वालों में रह गया।

५७. अथवा कहे कि यदि अल्लाह मुझे सुपथ दिखाता तो मैं डरने वालों मे से हो जाता।

५८. अथवा कहे जब देख ले यातना को, कि यदि मुझे (संसार में) फिर कर जाने का अवसर हो जाये तो मैं अवश्य सदाचारियों में से हो जाऊँगा।

---

[१] नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास कुछ मुश्रिफ आये जिन्होंने बहुत जानें मारीं और बहुत व्यभिचार किये थे। और कहाॅ: वास्तव में आप जो कुछ कह रहे हैं वह बहुत अच्छा है। तो आप बतायें कि हम ने जो कुकर्म किये हैं उन के लिये कोई कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) है? उसी पर फुर्कान की आयत ६८ और यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारी : ४८१०)

५९. हाँ, आई तुम्हारे पास मेरी निशानियाँ तो तुम ने उन्हें झुठला दिया और अभिमान किया तथा तुम थे ही काफ़िरों में से।

६०. और प्रलय के दिन आप उन्हें देखेंगे जिन्होंने अल्लाह पर झूठ बोले कि उन के मुख काले होंगे। तो क्या नरक में नहीं है अभिमानियों का स्थान?

६१. तथा बचा लेगा अल्लाह जो आज्ञाकारी रहे उन को उन की सफलता के साथ। नहीं लगेगा उन को कोई दुःख और न वह उदासीन होगें।

६२. अल्लाह ही प्रत्येक वस्तु का पैदा करने वाला तथा वही प्रत्येक वस्तु का रक्षक है।

६३. उसी के अधिकार में हैं आकाशों तथा धरती की कुंजियाँ[१] तथा जिन्होंने नकार दिया अल्लाह की आयतों को वही क्षति में हैं।

६४. आप कह दें: तो क्या अल्लाह से अन्य की तुम मुझे इबादत (वंदना) करने का आदेश देते हो, हे अज्ञानो?

६५. तथा वह्यी की गई है आप की ओर तथा उन (नबियों) की ओर जो आप से पूर्व (हुये) कि यदि आप ने शिर्क किया तो अवश्य व्यर्थ हो जायेगा आप का कर्म। तथा आप हो जायेंगे[२] क्षति ग्रस्तों में से।

६६. बल्कि आप अल्लाह ही की इबादत (वंदना) करें तथा कृतज्ञों में रहें।

६७. तथा उन्होंने अल्लाह का सम्मान नहीं किया जैसे उस का सम्मान करना चाहिये था। और धरती पूरी उस की एक मुट्ठी में होगी प्रलय के दिन। तथा आकाश लपेटे हुये होंगे उस के हाथ में।[३]

---

[१] अर्थात सब का विधाता तथा स्वामी वही है। वही सब की व्यवस्था करता है। और सब उसी के आधीन तथा अधिकार में है।

[२] इस आयत का भावार्थ यह है कि यदि मान लिया जाये कि आप के जीवन का अन्त शिर्क पर हुआ, और क्षमा याचना नहीं की तो आप के भी कर्म नष्ट हो जायेंगे। हालाँकि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और सभी नबी शिर्क से पाक थे। इसलिये कि उन का संदेश ही एकेश्वरवाद और शिर्क का खंडन है। फिर भी इस में संबोधित नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को किया गया। और यह साधारण नियम बताया गया कि शिर्क के साथ अल्लाह के हाँ कोई कर्म स्वीकार्य नहीं। तथा ऐसे सभी कर्म निष्फल होंगे जो एकेश्वरवाद की आस्था पर आधारित न हों। चाहे वह नबी हो या उस का अनुयायी हो।

[३] हदीस में आता है कि एक यहूदी विद्वान नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास आया और कहा: हम अल्लाह के विषय में (अपनी धर्म पुस्तकों में) यह पाते है कि प्रलय के दिन आकाशों को एक उँगली, तथा भूमि का एक उँगली पर और पेड़ों

६८. तथा सूर (नरसिंघा) फूँका[1] जायेगा तो श्चित होकर गिर जायेंगे जो आकाशों तथा धरती में हैं। परन्तु जिसे अल्लाह चाहे, फिर उसे पुन: फूँका जायेगा तो सहसा सब खड़े देख रहे होंगे।

६९. तथा जगमगाने लगेगी धरती अपने पालनहार की ज्योती से। और परस्तुत किये जायेंगे कर्म लेख तथा लाया जायेगा नबियों और साक्षियों को। तथा निर्णय किया जायेगा उन के बीच सत्य (न्याय) के साथ, और उन पर अत्याचर नहीं किया जायेगा।

७०. तथा पूरा–पूरा दिया जायेगा प्रत्येक जीव को उस का कर्मफल तथा वह भली–भाँति जानने वाला है उस को जो वह कर रहे हैं।

७१. तथा हाँके जायेगे जो काफ़िर हो गये नरक की ओर झुण्ड बनाकर। यहाँ तक कि जब वह उस के पास आयेगे तो खोल दिये जायेंगे उस के द्वार। तथा उन से कहेंगे उस के रक्षक (फ़रिश्ते): क्या नहीं आये तुम्हारे पास रसूल तुम में से जो तुम्हें सुनाते तुम्हारे पालनहार की आयतें तथा सचेत करते तुम्हें इस दिन का सामना करने से? वह कहेंगे: क्यों नहीं। परन्तु सिद्ध हो गया यातना का शब्द काफ़िरों पर।

७२. कहा जायेगा कि प्रवेश कर जाओ नरक के द्वारों मे सदावासी होकर उस में। तो बुरा है घमंडियों का निवास स्थान।

७३. तथा भेज दिये जायेंगे जो लोग डरते रहे अपने पालनहार से स्वर्ग की ओर झुण्ड बनाकर। यहाँ तक कि जब वे आ जायेंगे उस के पास तथा खोल दिये जायेंगे उस के द्वार और कहेंगे उन से उस के रक्षक: सलाम है तुम पर, तुम प्रसन्न रहो। तुम प्रवेश कर जाओ उस में सदावासी हो कर।

को एक उँगली, जल तथा तरी को एक उँगली पर और समस्त उत्पत्ति को एक उँगली पर रख लेगा, तथा कहेगा: (मैं ही राजा हूँ।) यह सुनकर आप हँस पड़े। और इस आयत को पढ़ा। (सहीह बुख़ारी)

[1] नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: दूसरी फूँक के पश्चात् सब से पहले मैं सिर उठाऊँगा। तो मूसा अर्श पकड़े हुये खड़े होंगे। मुझे ज्ञान नहीं कि वह ऐसे ही रह गये थे, यॉ फूँकने के पश्चात् मुझ से पहले उठ चुके होंगे (सहीह बुख़ारी) दूसरी हदीस में है कि दोनों फूँकों के बीच चालीस की अवधि होगी। और मनुष्य की दुमची की हड्डी के सिवा सब सड़ जायेगा। और उसी से उस को फिर बनाया जायेगा। (सहीह बुख़ारी : ४८१४)

७४. तथा वह कहेंगेः सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है जिस ने सच कर दिया हम से अपना वचन। तथा हमें उत्तराधिकारी बना दिया इस धरती का हम रहें स्वर्ग में जहाँ चाहे। क्या ही अच्छा है कार्य कर्तावों[१] का प्रतिफल।

७५. तथा आप देखेंगे फ़रिश्तों को घेरे हुये अर्श (सिंहासन) के चतुर्दिक वह पवित्रतागान कर रहे होंगे अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ। तथा निर्णय कर दिया जायेगा लोगों के बीच सत्य के साथ। तथा कह दिया जायेगा कि सब प्रशंसा अल्लाह सर्वलोक के पालनहार के लिये है।[२]

*****

[१] अर्थात एकेश्वरवादी सदाचारियों का।

[२] अर्थात जब ईमान वाले स्वर्ग में और मुश्रिक नरक में चले जायेंगे तो उस समय का चित्र यह होगा कि अल्लाह के अर्श को फ़रिश्ते हर ओर से घेरे हुये उस की पवित्रता तथा प्रशंसा का गान कर रहे होंगे।

सूरह मुमिन – ४०

सूरह मुमिन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ८५ आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत नं. २८ में एक मूमिन व्यक्ति की कथा का वर्णन किया गया है जिस ने फ़िरऔन के दरबार में मूसा (अलैहिस्सलाम) का खुलकर साथ दिया था। इसलिये इस का नाम सूरह मुमिन रखा गया है।
- इस सूरह का दूसरा ना (सूरह ग़ाफ़िर) भी है। क्योंकिं इस की आयत नं. ३ में (ग़ाफ़िरुज़्ज़म्ब) अर्थात: (पाप क्षमा करने वाला) का शब्द आया है।
- इस की आरंभिक आयतों में उस अल्लाह के गुण बताये गये हैं जिस ने कुरआन उतारा है। फिर आयत ४ से ६ तक उन्हें बुरे परिणाम की चेतावनी दी गई है जो अल्लाह की आयतों में विवाद खड़ा करते हैं।
- आयत ७ से ९ तक ईमान वालों को यह शुभसूचना सुनाई गई है कि फ़रिश्ते उन की क्षमा के लिये दुआ करते हैं। इस के पश्चात् काफ़िरों और मुश्रिकों को सावधान किया गया है। और उन्हें शिक्षा दी गई है।
- आयत २३ से ४६ तक मूसा (अलैहिस्सलाम) के विरुद्ध फ़िरऔन के विवाद और एक मूमिन के मूसा (अलैहिस्सलाम) का भरपूर साथ देने तथा फ़िरऔन के परिणाम को विस्तार के साथ बताया गया है। फिर उन को सावधान किया गया जो अंधे होकर बड़े बनने वालों के पीछे चलते हैं और ईमान वालों को साहस दिया गया है।
- अन्तिम आयतों में अल्लाह के धर्म में विवाद करने वालों को सावधान करते हुये कुफ़्र तथा शिर्क के बुरे परिणाम से सचेत किया गया है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. हा, मीम।

२. इस पुस्तक का उतरना अल्लाह की ओर से है जो सब चीज़ों और गुणों को जानने वाला है।

३. पाप क्षमा करने, तौबा स्वीकार करने, क्षमायाचना का स्वीकारी, कड़ी यातना देने वाला, समाई वाला जिस के सिवा कोई (सच्चा) वंदनीय नहीं। उसी की ओर (सब को) जाना है।

४. नहीं झगड़ते हैं अल्लाह की आयतों में उन के सिवा जो काफ़िर हो गये। अत: धोखे में न डाल दे आप को उन की यातायात देशों में।

५. झुठलाया इन से पूर्व नूह की जाति ने तथा बहुत से समुदायों ने उन के पश्चात्, तथा विचार किया प्रत्येक समुदाय ने अपने रसूल को बंदी बना लेने का। तथा विवाद किया असत्य के सहारे, ताकि असत्य बना दें सत्य को। तो हम ने उन्हें पकड़ लिया। फिर कैसी रही हमारी यातना?

६. और इसी प्रकार सिद्ध हो गई आप के पालनहार की बात उन पर जो काफ़िर हो गये कि वही नारकी हैं।

७. वह (फ़रिश्ते) जो अपने ऊपर उठाये हुये हैं अर्श (सिंहासन) को तथा जो उस के आस पास हैं वह पवित्रतागान करते रहते हैं अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ। तथा उस पर ईमान रखते हैं और क्षमा याचना करते रहते हैं उन के लिये जो इर्मान लाये हैं।[१] हे हमारे पालनहार! तू ने घेर रखा है प्रत्येक वस्तु को(अपनी) दया तथा ज्ञान से। अत: क्षमा कर दे उन को जो क्षमा माँगे, तथा चलें तेरे मार्ग पर तथा बचा ले उन्हें नरक की यातना से।

८. हे हमारे पालनहार! तथा प्रवेश कर दे उन्हें उन स्थाई स्वर्गों में जिन का तू ने उन को वचन दिया है। तथा जो सदाचारी हैं उन के पूर्वजों तथा पत्नियों और उन की संतानों में से। निश्चय तू सब चीज़ों और गुणों को जानने वाला है।

---

[१] यहाँ फ़रिशतों के दो गिरोह का वर्णन किया गया है। एक वह जो अर्श को उठाये हुये हैं । और दूसरा वह जो अर्श के चारों ओर घूमकर अल्लाह की प्रशंसा का गान और ईमान वालों के लिये क्षमायाचना कर रहा है।

९. तथा उन्हें सुरक्षित रख दुष्कर्मों से तथा तू ने जिसे बचा दिया दुष्कर्मो से उस दिन, तो दया कर दी उस पर और यही बड़ी सफलता है।

१०. जिन लेगों ने कुफ़्र किया है उन्हें (प्रलय के दिन) पुकारा जायेगा कि अल्लाह का क्रोध तुम पर उस से अधिक था जितना तुम्हें (आज) अपने ऊपर क्रोध आ रहा है जब तुम (संसार में) ईमान की ओर बुलाये[१] जा रहे थे।

११. वे कहेंगे: हे हमारे पालनहार! तू ने हमें दो बारा मारा।[२] तथा जीवित (भी) दो बार किया। अत: हमने मान लिया अपने पापों को। तो क्या (यातना से) निकलने की कोई राह (उपाय) है?

१२. (यह यातना) इस कारण है कि जब तुम्हें (संसार में) बुलाया गया अकेले अल्लाह की ओर तो तुम ने कुफ़्र कर दिया। और यदि शिर्क किया जाता उस के साथ तो तुम मान लेते थे। तो आदेश देने का अधिकार अल्लाह को है जो सर्वोच्च सर्वमहान् है।

१३. वही दिखाता है तुम्हें अपनी निशानियाँ तथा उतारता है तुम्हारे लिये आकाश से जीविका। और शिक्षा ग्रहण नहीं करता परन्तु वही जो (उस की ओर) ध्यान करता है।

१४. तो तुम पुकारो अल्लाह को शुद्ध कर के उस के लिये धर्म को यद्यपि बुरा लगे काफ़िरों को।

१५. वह उच्च श्रेणियों वाला अर्श का स्वामी है। वह उतारता है अपने आदेश से रूह[३] (वह्यी) को जिस पर चाहता है अपने भक्तों में से। ताकि वह सचेत करे मिलने के दिन से।

१६. जिस दिन सब लोग (जीवित हो कर) निकल पड़ेंगे। नहीं छुपी होगी अल्लाह पर उन की कोई चीज़। किस का राज्य है आज?[१] अकेले प्रभुत्वशाली अल्लाह का।

---

[१] आयत का अर्थ यह है कि जब काफ़िर लोग प्रलय के दिन यातना देखेंगे तो अपने ऊपर क्रोधित होंगे। उस समय उन से पुकार कर यह कहा जायेगा कि जब संसार में तुम्हें ईमान की ओर बुलाया जाता था फिर भी तुम कुफ़्र करते थे तो अल्लाह को इस से अधिक क्रोध होता था जितना आज तुम्हें अपने ऊपर हो रहा है।

[२] देखिये सूरह बक़रा, आयत : २८

[३] यहाँ वह्यी को रूह कहा गया है क्योंकि जिस प्रकार रूह (आत्मा) मनुष्य के जीवन का कारण होती है वैसे ही प्रकाशना भी अन्तरात्मा को जीवित करती है।

१७. आज प्रतिार दिया जायेगा प्रत्येक प्राणी को उस के करतूत का। कोई अत्याचार नहीं है आज। वास्तव में अल्लाह अतिशीघ्र हिसाब लेने वाला है।

१८. तथा आप सावधान कर दें उन को आगामी समीप दिन से जब दिल मुँह को आ रहे होंगे। लोग शोक से भरे होंगे। नहीं होगा अत्याचारियों का कोई मित्र न कोइ सिफ़ारशी जिस की बात मानी जाये।

१९. वह जानता है आँखों की चोरी तथा जो (भेद) सीने छुपाते है।

२०. अल्लाह ही निर्णय करेगा सत्य के साथ। तथ जिन को वह पुकारते हैं अल्लाह के अतिरिक्त वह कोई निर्णय नहीं कर सकते। निश्चय अल्लाह ही भली–भाँति सुनने–देखने वाला है।

२१. क्या वह चले–फिरे नहीं धरती में ताकि देखते कि कैसा रहा उन का परिणाम जो इन से पूर्व थे? वह इन से अधिक थे बल में तथा अधिक चिन्ह छोड़ गये धरती में। तो पकड़ लिया अल्लाह ने उन को उन के पापों के कारण, और नहीं था उन के लिये अल्लाह से कोई बचाने वाला।

२२. यह इस कारण हुआ कि उन के पास लाते थे हमारे रसूल खुली निशानियाँ, तो उन्होंने कुफ्र किया। अन्ततः पकड़ लिया उन्हें अल्लाह ने। वस्तुतः वह अति शक्तिशाली घोर यातना देने वाला है।

२३. तथा हम ने भेजा मूसा को अपनी निशानियों और हर प्रकार के प्रामाण के साथ।

२४. फ़िरऔन और (उस के मंत्री) हामान तथा क़ारून के पास। तो उन्होंने कहा: यह तो बड़ा झूठा जादूगर है।

२५. तो जब वह उन के पास सत्य लाया हमारी ओर से तो सब ने कहा: बध कर दोन उन के पुत्रों को जो ईमान लाये हैं उस के साथ, तथा जीवित रहने दो उन की स्त्रियों को। और काफ़िरों का पड्यंत्र निष्फल (व्यर्थ) ही हुआ।[२]

[१] अर्थात प्रलय के दिन। (सहीह बुख़ारी : ४८१२)

[२] अर्थात फ़िरऔन और उस की जाति का। जब मूसा (अलैहिस्सलम) और उन की जाति बनी इस्राईल को कोई हानि नहीं हुई। इइ से उन की शक्ति बढ़ती ही गई यहाँ तक कि वह पवित्र स्थान के स्वामी बन गये।

२६. और कहा फ़िरऔन ने (अपने प्रमुखों से): मुझे छोड़ो, मैं बध कर दूँ मूसा को। और उसे चाहिये कि पुकारे अपने पालनहार को। वास्तव में मैं डरता हूँ कि वह बदल देगा तुम्हारे धर्म को[1] अथवा पैदा कर देगा इस धरती (मिस्र) में उपद्रव।

२७. तथा मूसा ने कहा: मैंने शरण ली है अपने पालनहार तथा तुम्हारे पालनहार की प्रत्येक अहंकारी से जो ईमान नहीं रखता हिसाब के दिन पर।

२८. तथा कहा एक ईमान वाले व्यक्ति ने फ़िरऔन के घराने के, जो छुपा रहा था अपना ईमान: क्या तुम बध कर दोगे एक व्यक्ति को कि वह कह रहा है: मेरा पालनहार अल्लाह है? जब कि वह तुम्हारे पास लाया है खुली निशानियाँ तुम्हारे पालनहार की ओर से? और यदि वह झूठा हो तो उसी के ऊपर है उन का झूठ। और यदि सच्चा हो तो आ पड़ेगा वह कुछ जिसकी तुम्हें धमकी दे रहा है। वास्तव में अल्लाह मार्ग दशर्न नहीं देता उसे जो उल्लंघनकारी बहुत झूठा हो।

२९. हे मेरी जाति के लोगो! तुम्हारा राज्य है आज, तुम प्रभावशाली हो धरती में, तो कौन हमारी रक्षा करेगा अल्लाह की यातना से यदि वह हम पर आ जाये? फ़िरऔन ने कहा: मैं तुम सब को वही समझा रहा हूँ जिसे मैं उचित समझता हूँ और तुम्हें सीधी ही राह दिखा रहा हूँ।

३०. तथा उस ने कहा जो ईमान लाया: हे मेरी जाति! मैं तुम पर डरता हूँ (अगले) समुदायों के दिन जैसे (दिन[2]) से।

३१. नूह की जाति की जैसी दशा से, तथा आद और समूद की एवं जो उन के पश्चात् हुये। तथा अल्लाह नहीं चाहता कोई अत्याचार भक्तों के लिये।

३२. तथा हे मेरी जाति! मैं डर रहा हूँ तुम पर एक–दूसरे को पुकारने के दिन[3] से।

३३. जिस दिन तुम पीछे फिर कर भागोगे, नहीं होगा तुम्हें अल्लाह से कोई बचाने वाला। तथा जिसे अल्लाह कुपथ कर दे तो उस का कोई पथ प्रदर्शक नहीं।

३४. तथा आये यूसुफ़ तुम्हारे पास इस से पूर्व खुले प्रमाणों के साथ, तो तुम बराबर संदेह में रहे उस से जो तुम्हारे पास लाये। यहाँ तक कि जब वह मर गये तो तुम

---

[1] अर्थात शिर्क तथा देवी–देवता की पूजा से रोक कर एक अल्लाह की इबादत में लगा देगा। जो उपद्रव तथा अशान्ति का कारण बन जायेगा और देश हमारे हाथ से निकल जायेगा।

[2] अर्थात उन की यातना के दिन जैसे दिन से।

[3] अर्थात प्रलय के दिन से जब भय के कारण एक–दूसरे को पुकारेंगे।

ने कहा कि कदापि नहीं भेजेगा अल्लाह उन के पश्चात् कोई रसूल।[१] इसी प्रकार अल्लाह कुपथ कर देता है। उसे जो उल्लंघनकारी डाँवाडोल हो।

३५. जो झगड़ते हैं अल्लाह की आयतों में बिना किसी ऐसे प्रमाण के जो उन के पास आया हो। तो यह बड़े क्रोध की बात है अल्लाह के समीप तथा उन के समीप जो ईमान लाये हैं। इसी प्रकार अल्लाह मुहर लगा देता है प्रत्येक अहंकारी अत्याचारी के दिल पर।

३६. तथा कहा फ़िरऔन ने कि हे हामान! मेरे लिये बना दो एक उच्च भवन, संभवत: मैं उन मार्गो तक पहुँच सकूँ।

३७. आकाश के मार्गों तक ताकि मैं देखूँ मूसा के पूज्य (उपास्य) को। और निश्चय मैं उसे झूठा समझ रहा हूँ। और इसी प्रकार शोभनीय बना दिया गया फ़िरऔन के लिये उस का दुष्कर्म तथा रोक दिया गया संमार्ग से। और फ़िरऔन का षड्यंत्र विनाश ही में रहा।

३८. तथा उस ने कहा जो ईमान लाया: हे मेरी जाति! मेरी बात मानो, मैं तुम्हे सीधी राह बता रहा हूँ।

३९. हे मेरी जाति! यह संसारिक जीवन कुछ साम्यिक लाभ है। तथा वास्तव में प्रलोक ही स्थायी निवास है।

४०. जिस ने दुष्कर्म किया तो उस को उसी के समान प्रतिकार दिया जायेगा। तथा जो सुकर्म करेगा नर अथवा नारी में से और वह ईमान वाला (एकेश्वरवादी) हो तो वही प्रवेश करेंगे स्वर्ग में। जीविका दिये जायेंगे उस में अगणित।

४१. तथा हे मेरी जाति! क्या बात है कि मैं बुला रहा हूँ तुम्हें मुक्ति की ओर तथा तुम बुला रहे हो मुझे नरक की ओर।

४२. तुम मुझे बुला रहे हो ताकि मैं कुफ़्र करूँ अलाह के साथ और साझी बनाऊँ उस का उसे जिस का मुझे कोई ज्ञान नहीं है। तथा मैं बुला रहा हूँ तुम्हें प्रभावशाली अति क्षमी की ओर।

---

[१] अर्थात तुम्हारा आचरण ही प्रत्येक नबी का विरोध रहा है। इसीलिये तुम समझते थे कि अब कोई रसूल नहीं आयेगा।

४३. निश्चित है कि तुम जिस की ओर मुझे बुला[1] रहे हो वह पुकारने योग्य नहीं है न लोक में न परलोक में। तथा हमें जाना है अल्लाह ही की ओर, तथा वास्तव में अतिक्रमी ही नारकी है।

४४. तो तुम याद करोगे जो मैं कह रहा हूँ, तथा मैं समर्पित करता हूँ अपना मामला अल्लाह को। वास्तव में अल्लाह देख रहा है भक्तों को।

४५. तो अल्लाह ने उसे सुरक्षित कर दिया उन के षड्यंत्र की बुराईयों से। और घेर लिया फ़िरऔनियों को बुरी यातना ने।

४६. वे[2] प्रस्तुत किये जाते हैं अग्नि पर प्रातः तथा संध्या। तथा जिस दिन प्रलय स्थापित होगी (यह आदेश होगा) कि डाल दो फ़िरऔनियों को कड़ी यातना में।

४७. तथा जब वह झगड़ेंगे अग्नि में, तो कहेंगे निर्बल उन से जो बड़े बन कर रहेः हम तुम्हारे अनुयायी थे, तो क्या तुम दूर करोगे हम से अगिन को कुछ भाग?

४८. वे कहेंगे जो बड़े बनकर रहेः हम सब इसी में हैं। अल्लाह निर्णय कर चुका है भक्तों (बंदों) के बीच।

४९. तथा कहेंगे जो अग्नि में हैं नरक के रक्षकों सेः अपने पालनहार से प्रार्थना करो कि हम से हल्की कर दे किसी दिन कुछ यातना।

५०. वह कहेंगे : क्या नहीं आये तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल खुले प्रमाण ले कर? वे कहेंगे क्यों नहीं। वह कहेंगे तो तुम ही प्रार्थना करो। और काफ़िरों की प्रार्थना व्यर्थ ही होगी।

५१. निश्चय हम सहायता करेंगे अपने रसूलों की तथा उन की जो ईमान लायें, संसारिक जीवन में, तथा जिस दिन[3] साक्षा खड़े होंगे।

५२. जिस दिन नहीं लाभ पहुँचायेगी अत्याचारियों को उन की क्षमा याचना। तथा उन्हीं के लिये धिक्कार और उन्हीं के लिये बुरा घर है।

---

[1] क्योंकि लोक तथा परलोक में कोई सहायता नहीं कर सकते। (देखिये : सूरह फ़ातिर,:१४०, सूरह अह्काफ़, : ५)

[2] हदीस में है कि जब तुम में से कोई मरता है तो (क़ब्र में) उस पर प्रातः संध्या उस का स्थान प्रस्तुत किया जाता है। (अर्थात स्वर्गी है तो स्वर्ग और नारकी है तो नरक)। और कहा जाता है कि यही प्रलय के दिन तेरा स्थान होगा। (सहीह बुख़ारी : १३७९, मुस्लिम : २८६६)

[3] अर्थात प्रलय के दिन, जब अम्बिया और फ़रिश्ते गवाही देंगे।

५३. तथा हम ने प्रदान किया मूसा को मार्गदर्शन और हम ने उत्तराधिकारी बनाया ईस्राईल की संतान को पुस्तक (तौरात) का।

५४. जो मार्गदर्शन तथा शिक्षा थी समझ वालों के लिये।

५५. तो (हे नबी!) आप धैर्य रखें। वास्तव में अल्लाह का वचन[१] सत्य है। तथा क्षमा माँगे अपने पाप[२] की। तथा पवित्रता का वर्णन करते रहें अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ संध्या और प्रात:।

५६. वास्तव में जो झगड़ते हैं अल्लाह की आयतों में बिना किसी प्रमाण के जो आया[३] हो उन के पास, तो उन के दिलों में बड़ाई के सिवा कुछ नहीं है, जिस तक वह पहुँचने वाले नहीं है। अत: आप अल्लाह की शरण लें। वास्तव में वही सब कुछ सुनने–जानने वाला है।

५७. निश्चय आकाशों तथा धरती को पैदा करना अधिक बड़ा है मनुष्य को पैदा करने से। परन्तु अधिक्तर लोग ज्ञान नहीं रखते।[४]

५८. तथा समान नहीं होता अंधा तथा आँख वाला। और न जो ईमान लाये और सत्कर्म किये हैं और दुष्कर्मी। तुम (बहुत) कम ही शिक्षा ग्रहण करते हो।

५९. निश्चय प्रलय आनी ही है। जिस में कोई संदेह नहीं। परन्तु अधिक्तर लेग ईमान (विश्वास) नहीं रखते।

६०. तथा कहा है तुम्हारे पालनहार ने कि मुझी से प्रार्थना[५] करो, मैं तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करूँगा। वास्तव में जो अभिमान (अहंकार) करेंगे मेरी इबादत (वंदना–प्रार्थना) से तो वह प्रवेश करेंगे नरक में अपमानित हो कर।

---

[१] नबियों की सहायता करने का।

[२] अर्थात भूल–चूक की। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: मैं दिन में ७० बार क्षमा माँगता हूँ। और ७० बार से अधिक तौबा करता हूँ। (सहीह बुख़ारी : ६३०७) जब कि अल्लाह ने आप को निर्दोष (मासुम) बनाया है।

[३] अर्थात बिना किसी ऐसे प्रमाण के जो अल्लाह की ओर से आया हो। उन के सब प्रमाण वे हैं जो उन्होंने अपने पूर्वजों से सीखे हैं। जिन की कोई वास्तविक्ता नहीं है।

[४] और मनुष्य के पुन: जीवित किये जाने का इन्कार करते हैं।

[५] हदीस में है कि प्रार्थना ही वंदना है। फिर आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यही आयत पढ़ी। (तिर्मिज़ी : २९६९) इस हदीस की सनद हसन है।)

६१. अल्लाह ही ने तुम्हारे लिये रात्रि बनाई ताकि तुम विश्राम करो उस में, तथा दिन को प्रकाशमान बानया।[1] वस्तुत: अल्लाह बड़ा उपकारी है लोगों के लिये। किन्तु अधिक्तर लोग कृतज्ञ नहीं होते।

६२. यही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है, प्रत्येक वस्तु का रचयिता, उत्पत्तिकार। नहीं है कोई (सच्चा) वंदनीय उस के सिवा, फिर तुम कहाँ बहके जाते हो?

६३. इसी प्रकार बहका दिये जाते हैं वह जो अल्लाह की आयतों को नकारते हैं।

६४. अल्लाह ही है जिस ने बनाया तुम्हारे लिये धरती को निवासस्थान तथा आकाश को छत, और तुम्हारा रूप बनाया तो सुन्दर रूप बनाया। तथा तुम्हें जीविका प्रदान की स्वच्छ चीज़ों से। वही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है, तो शुभ है अल्लाह सर्वलोक का पालनहार।

६५. वह जीवित है, कोई (सच्चा) वंदनीय नहीं है उस के सिवा। अत: विशेष रूप से उस की इबादत करते हुये उस को पुकारो। सब प्रशंसा सर्वलोक के पालनहार अल्लाह के लिये हैं।

६६. आप कह दें: निश्चय मुझे रोक दिया गया है कि इबादत करूँ उन की जिनहें तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा जब आ गये मेरे पास खुले प्रमाण। तथा मुझे आदेश दिया गया है कि मैं सर्वलोक के पालनहार का आज्ञाकारी रहूँ।

६७. वही है जिस ने तुम्हें पैदा किया मिट्टी से, फिर वीर्य से, फिर बंधे रक्त से, फिर तुम्हें निकालता है (गर्भाशयों से) शिशु बनाकर। फिर बड़ा करता है ताकि तुम अपनी पूरी शक्ति को पहुँचो। फिर बूढ़े हो जाओ तथा तुम में कुछ इस से पहले ही मर जाते हैं और यह इसलिये होता है ताकि तुम अपनी निश्चित आयु को पहुँच जाओ, तथा ताकि तुम समझो।[2]

६८. वही है जो तुम्हें जीवन देता तथा मारता है फिर जब वह किसी कार्य का निर्णय करता है तो कहता है : (हो जा) तो वह हो जाता है।

---

[1] ताकि तुम जीविका प्राप्त करने के लिये दौड़ धूप करो।

[2] अर्थात तुम यह समझो कि जो अल्लाह तुम्हें अस्तित्व में लाता है तथा गर्भ से ले कर आयु पूरी होने तक तुम्हारा पालन–पोषण करता है तुम स्वयं अपने जीवन और मरण के विषय में कोई अधिकार नहीं रखते तो फिर तुम्हें वंदना भी उसी एक की करनी चाहिये। यही समझ–बूझ का निर्णय है।

६९. क्या आप ने नहीं देखा कि जो झगड़ते[1] है अल्लाह की आयतों में, वह कहाँ बहकाये जा रहे है?

७०. जिन्हों ने झुठला दिया पुस्तक को और उसे जिस के साथ हम ने भेजा अपने रसूलों को, तो शीघ्र ही वह जान लेंगे।

७१. जब तौक़ होंगे उन के गलों मे तथा बेड़ियाँ, वह खींचे जायेंगे।

७२. खौलते पानी में फिर अग्नि में झोंक दिये जायेंगे।

७३. फिर कहा जायेगा उन से: कहाँ हैं वह जिन्हें तुम साझी बना रहे थे।

७४. अल्लाह के सिवा? वह कहेंगे कि वह खो गये हम से, बल्कि हम नहीं पुकारते थे इस से पूर्व किसी चीज़ को, इसी प्रकार अल्लाह कुपथ कर देता है काफ़िरों को।

७५. यह यातना इसलिये है कि तुम धरती में अवैध इतराते थे, तथा इस कारण कि तुम अकड़ते थे।

७६. प्रवेश कर जाओ नरक के द्वारों में सदावासी होकर उस में। तो बुरा स्थान है अभिमानियों का।

७७. तो आप धैर्य रखें निश्चय अल्लाह का वचन सत्य है । फिर यदि आप को दिखा दे उस (यातना) में से जिस का उन्हें वचन दे रहे हैं या आप का निधन कर दें तो वही हमारी ओर ही फेरे जायेंगे।[2]

७८. तथा (हे नबी!) हम भेज चुके हैं बहुत से रसूलों को आप से पूर्व जिन में से कुछ का वर्णन हम आप से कर चुके हैं तथा कुछ का वर्णन आप से नहीं किया है तथा किसी रसूल के (वंश)[3] में यह नहीं था कि वह कोई आयत (चमत्कर) ला दे परन्तु अल्लाह की अनुमति से। फिर जब आ जायेगा अल्लाह का आदेश तो निर्णय कर दिया जायेगा सत्य के साथ और क्षति में पड़ जायेंगे वहाँ झूठे लोग।

७९. अल्लाह ही है जिस ने बनाये तुम्हारे लिये चौपाये ताकि सवारी करो कुछ पर और कुछ को खाओ।

---

[1] अर्थात अल्लाह की आयतों का विरोध करते हैं।

[2] अर्थात प्रलय के दिन। फिर वह अपनी यातना देख लेंगे।

[3] मक्का के काफ़िर लोग, नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से यह माँग कर रहे थे कि आप अपने सत्य रसूल होने के प्रमाण में कोई चमत्कार दिखायें। जिस के अनैक उत्तर आगामी आयतों में दिये जा रहे हैं।

८०. तथा तुम्हारे लिये उन में बहुत लभ हैं और ताकि तुम उन पर पहुंचो उस आवश्यकता को जो तुम्हारे[1] दिलों में है तथा उन पर और नावों पर तुम्हें सवार किया जाता है।

८१. तथा वह दिखाता है तुम्हें अपनी निशानियाँ। तो तुम अल्लाह की किन किन निशानियों का इन्कार करोगे?

८२. तो क्या वह चले–फिरे नहीं धरती में ताकि देखेते कि कैसा रहा उनका परिणाम जो उनसे पूर्व थे? वह उनसे अधिक कड़े थे शक्ति मेंऔर धरती में अधिक चिन्ह[2] छोड़ गये। तो नहीं आया उन के काम जो वे कर रहे थे।

८३. जब आये उन के पास हमारे रसूल निशानियाँ लेकर तो वे इतराने लगे उस ज्ञान पर[3] जो उनके पास था। और घेर लिया उन को उस ने जिस का वे उपहास कर रहे थे।

८४. तो जब उन्होंने देखा हमारी यातना को तो कहने लगे: हम ईमान लाये अकेले अल्लाह पर तथा नकार दिया उसे जिसे उस का साझी बना रहे थे।

८५. तो ऐसा नहीं हुआ कि उन्हे लाभ पहुँचाता उन का ईमान जब उन्होंने देख लिया हमारी यातना को। यही अल्लाह का नियम है जो उसके भक्तों में चला आ रहा है। और क्षति में पड़ गये यह काफ़िर।

*****

[1] अर्थात दूर की यात्रा करो।

[2] अर्थात निर्माण तथा भवन इत्यादी

[3] अर्थात सत्यविरोधी ज्ञान।

सूरह हा मीम सज्दा – ४१

सूरह हा मीम सज्दा के संक्षिप्त विषय

सयह सूरह मक्की है, इस में ५४ आयतें हैं।

- इस सूरह का नाम (हा, मीम सज्दा) है। क्योंकि इस का आरंभ अक्षरः (हा, मीम) से हुआ है। और आयत ३७ में केवल अल्लाह ही को सज्दा करने का आदेश दिया गया है। और इस सूरह की तीसरी आयत में (फुस्सिलत) का शब्द आया है। इसलिये इस का दूसरा नाम (फुस्सिलत) भी है।
- इस के आरंभ में कुरआन के पहचानने पर बल देते हुये सोच–विचार की दावत, तथा वह्यी और रिसालत को झुठलाने पर यातना की चेतावनी दी गई है। फिर अल्लाह के विरोधियों के दुष्परिणाम को बताया गया है।
- आयत ३० से ३६ तक उन्हें स्वर्ग की शुभसूचना दी गई है जो अपने धर्म पर स्थित हैं। और उन्हें विरोधियों को क्षमा कर देने के निर्देश दिये गये हैं। फिर आयत ४० तक अल्लाह के अकेले पूज्य होने तथा मुर्दों को जीवित करने का सामर्थ्य रखने की निशानियाँ प्रस्तुत की गयी हैं।
- आयत ४१ से ४६ तक कुरआन के साथ उस के विरोधियों के व्यवहार तथा उस के दुष्परिणाम को बताया गया है। फिर ५१ तक शिर्क करने और प्रलय के इन्कार पर पकड़ की गयी है।
- अन्त में कुरआन के विरोधियों के संदेहों को दूर करते हुये यह भविष्यवाणी की गई है कि जल्द ही कुरआन के सच्च होने की निशानियाँ विश्व में सामने आ जायेंगी।
- भाष्यकारों ने लिखा है कि जब मक्का में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अनुयायियों की संख्या प्रतिदिन बढ़ने लगी तो कुरैश के प्रमुखों ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास एक व्यक्ति उत्बा पुत्र रबीआ को भेजा। उस ने आकर आप से कहा कि यदि आप इस नये आमंत्रण से धन चाहते हैं तो हम आप के लिये धन एकत्र कर देंगे। और यदि प्रमुख और बड़ा बनना चाहते हैं तो हम तुम्हें अपना प्रमुख बना लेंगे। और यदि किसी सुन्दरी से विवाह करना चाहते हों तो हम

उस की भी व्यवस्था कर देंगे। और यदि आप पर भूत–प्रेत का प्रभाव हो तो हम उस का उपचार करा देंगे। उत्‌बा की यह बातें सुनकर आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने यही सूरह उस सुनायी जिस से प्रभावित होकर वापिस आया। और कहा कि जो बात वह पेश करता है वह जादू–ज्योतिष और काव्य–कविता नहीं है। यह बातें सुनकर कुरैश के प्रमुखों ने कहा कि तू भी उस के जादू के प्रभाव में आ गया। उस ने कहा: मैं ने अपना विचार बता दिया अब तुम्हारे मन में जो भी आय वह करो। (सीरते इब्ने हिशाम – १/३१३, ३१४)

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. हा, मीम।

२. अवतरित है अत्यंत कृपाशील दयावान् की ओर से।

३. (यह ऐसी) पुस्तक है सविस्तर वर्णित की गई है जिस की आयतें। कुरआन अर्बी (भाषा में) है उन के लिये जो ज्ञान रखते हों।[१]

४. वह शुभसूचना देने तथा सचेत करने वाला है। फिर भी मुँ फेर लिया है उन में से अधिक्तर ने, और सुन नहीं रहे हैं।

५. तथा उन्होंने कहा:[२] हमारे दिल आवरण (पर्दे) में हैं उस से आप हमें जिस की ओर बुला रहे हैं। तथा हमारे कानों में बोझ है तथा हमारे और आप के बीच एक आड़ है। तो आप अपना काम करें और हम अपना काम कर रहे हैं।

६. आप कह दें कि मैं तो एक मनुष्य हूँ तुम्हारे जैसा। मेरी ओर वह्यी की जा रही है कि तुम्हारा वंदनीय (पूज्य) केवल एक ही है। अत: सीधे हो जाओ उसी की ओर तथा क्षमा माँगो उस से। और विनाश है मुश्रिकों के लिये।

७. जो ज़कात नहीं देते तथा आख़िरत को (भी) नहीं मानते।

८. नि:संदेह जो ईमान लाये तथा सदाचार किये उन्हीं के लिये अनन्त प्रतिफल है।

९. आप कहें कि क्या तुम उसे नकारते हो जिस ने पैदा किया धरती को दो दिन में, और बनाते हो उस के साझी? वही है सर्वलोक का पालनहार।

१०. तथा बनाये उस (धरती) में पर्वत उस के ऊपर तथा बरकत रख दी उस में। और अंकन किया उस में उस के वासियों के आहारों का चार[३] दिनों में समान रूप[४] से प्रश्न करने वालों के लिये।

---

[१] अर्बी भाषा तथा शैली का।

[२] अर्थात मक्का के मुश्रिकों ने कहा कि यह एकेश्वरवाद की बात हमें समझ में नहीं आती । इसलिये आप हमें हमारे धर्म पर ही रहने दें।

[३] अर्थात धरती को पैदा करने और फैलाने के कुल चार दिन हुये!

[४] अर्थात धरती के सभी जीवों के आहार के संसाधन की व्यवस्था कर दी। और यह बात बता दी ताकि कोई प्रश्न करे तो उसे इस का ज्ञान करा दिया जाये।

११. फिर आकर्षित हुआ आकाश की ओर तथा वह धुवाँ था। तो उसे तथा धरती को आदेश दिया कि तुम दोनों आ जाओ प्रसन्न होकर अथवा दबाव से। तो दोनों ने कहा हम प्रसन्न होकर आ गये।
१२. तथा बना दिया उन को सात आकाश दो दिन में। तथा वह्यी कर दिया प्रत्येक आकाश में उस का आदेश। तथा हम ने सुसज्जित किया समीप (संसार) के आकश को दीपों (तारों) से तथा सुरक्षा के[१] लिये। यह अति प्रभावशाली सर्वज्ञ की योजना है।
१३. फिर भी यदि वह विमुख हों तो आप कह दें कि मैं ने तुम्हें सावधान कर दिया कड़ी यातना से जो आद तथा समूद की कड़ी यातना जैसी होगी।
१४. जब आये उन के पास उन के रसूल उन के आगे तथा उन के पीछे[२] से कि न इबादत (वंदना) करो अल्लाह के सिवा की। तो उन्होंने कहा: यदि हमारा पालनहार चाहता तो किसी फ़रिश्ते को उतार देता।[३] अत: तुम जिस बात के साथ भेजे गये हो हम उसे नहीं मानते।
१५. रहे आद तो उन्होंने अभिमान किया धरती में अवैध। तथा कहा कि कौन हम से अधिक है बल में? क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह, जिस ने उन को पैदा किया है उन से अधिक है बल में, तथा हमारी आयतों को नकारते रहे।
१६. अन्तत: हम ने भेज दी उन पर प्रचण्ड वायु कुछ अशुभ दिनों में। ताकि चखायें उन्हें अपमानकारी यातना संसारिक जीवन में। और आख़िरत (परलोक) की यातना अधिक अपमानकारी है। तथा उन्हें कोई सहायता नहीं दी जायेगी।
१७. और रही समूद तो हम ने उन्हें मार्ग दिखाया फिर भी उन्होंने अंधे बने रहने को मार्गदर्शन से प्रिय समझा। अन्तत: पकड़ लिया उन को अपमानकारी यातना की कड़क ने उस के कारण जो वह कर रहे थे।
१८. तथा हम ने बचा लिया उन को जो ईमान लाये तथा (अवैज्ञा से) डरते रहे।

---

[१] अर्थात शैतानों से रक्षा के लिये। (देखिये: सूरह साफ़्फ़ात, आयत: ७ से १०)

[२] अर्थात प्रत्येक प्रकार से समझाते रहे।

[३] वे मनुष्य को रसूल मानने के लिये तय्यार नहीं थे। (जिस प्रकार कुछ लोग जो रसूल को मानते हैं पर वे उन्हें मनुष्य मानने को तय्यार नहीं हैं।) (देखिये : सूरह अन्आम, आयत: ९–१०, सूरह मुमिनून, आयत: २४)

१९. और जिस दिन अल्लाह के शत्रु नरक की ओर एकत्र किये जायेंगे तो वह रोक लिया जायेंगे।

२०. यहाँ तक की जब आजायेंगे उस (नरक) के पास तो साक्ष्य देंगे उन पर उन के कान तथा उन की आँखे और उन की खालें उस कर्म का जो वह किया करते थे।

२१. और वे कहेंगे अपी खालों से: क्यों साक्ष्य दिया तुम ने हमारे विरुद्ध? वह उत्तर देंगी कि हमें बोलने की शक्ति प्रदान की है उस ने जिस ने प्रत्येक वस्तु को बोलने की शक्ति दी है। तथा उसी ने तुम्हें पैदा किया प्रथम बार और उसी की ओर तुम सब फेरे जा रहे हो।

२२. तथा तुम (पाप करते समय[1] छुपते नहीं थे कि कहीं साक्ष्य न दें तुम पर तुम्हारे कान तथा तुम्हारी आँख एव तुम्हारी खालें। परन्तु तुम समझते रहे कि अल्लाह नहीं जानता उस में से अधिक्तर बातों को जो तुम करते हो।

२३. इसी कुविचार ने जो तुम ने किया अपने पालनहार के विषय में तुम्हें नाश कर दिया। और तुम विनाशों में हो गये।

२४. तो यदि वे धैर्य रखें तब भी नरक ही उन का आवास है। और यदि वे क्षमा माँगे तब भी वे क्षमा नहीं किये जायेंगे।

२५. और हम ने बना दिये उन के लिये ऐसे साथी जो शोभनीय बना रहे थे उन के लिये उन के अगले तथा पिछले दुष्कर्मों को। तथा सिद्ध हो गया उन पर अल्लाह (की यातना) का वचन उन समुदायों में जो गुज़र गये इन से पूर्व जिन्नों तथ मनुष्यों में से। वास्तव में वही क्षतिग्रस्त थे।

२६. तथा काफ़िरों ने कहा[2] कि इस कुरआन को न सुनो। और कोलाहल (शोर) करो उस (के सुनाने) के समय। सम्भवत: तुम प्रभुत्वशाली हो जाओ।

२७. तो हम अवश्य चखायेंगे उन को जो काफ़िर हो गये कड़ी यातना और अवश्य उन को कुफ़ल देंगे उस दुष्कर्म का जो वे करते रहे।

---

[1] आदरणीय अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि ख़ाना कॉबा के पास एक घर में दो कुरैशी तथा एक सक़फ़ी अथवा दो सक़फ़ी और एक कुरैशी थे। तो एक ने दूसरे से कहा कि तुम समझते हो कि अल्लाह हमारी बाते सुन रहा है? किसी ने कहा: यदि कुछ सुनता है तो सब कुछ सुनता है। उस पर यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारी : ४८१६, ४८१७, ७५२१)

[2] मक्का के काफ़िरों ने जब देखा कि लोग कुरआन सुनकर प्रभावित हो रहे हैं तो उन्होंने यह योजना बनायी।

२८. यह अल्लाह के शत्रुओं का प्रतिकार नरक है। उन के लिये उस में स्थायी घर होंगे उस के बदले जो हमारी आयतों के नकार रहे हैं।

२९. तथा वह कहेंगे जो काफ़िर हो गये कि हे हमारे पालनहार! हमें दिखा दे उन को जिन्होंने हमें कुपथ किया हैं जिन्नों तथा मनुष्यों में से। ताकि हम रोंद दें उन दोनों को अपने पैरों से। ताकि वह दोनों अधिक नीचे हो जायें।

३०. निश्चय जिन्होंने कहा कि हमारा पालनहार अल्लाह है फिर इसी पर स्थित रह[1] गये तो उन पर फ़रिश्ते उतरते हैं[2] कि भय न करो, और न उदासीन रहो, तथा उस स्वर्ग से प्रसन्न हो जाओ जिस का वचन तुम्हें दिया जा रहा है।

३१. हम तुम्हारे सहायक हैं संसारिक जीवन में तथा परलोक में, और तुम्हारे लिये उस (स्वर्ग) में वह चीज़ है जो तुम्हारा मन चाहे तथा उस में तुम्हारे लिये वह है जिस की तुम माँग करोगे।

३२. अतिथि–सत्कार स्वरूप अति क्षमी दयावान् की ओर से।

३३. और किस की बात उस से अच्छी होगी जो अल्लाह की ओर बुलाये तथा सदाचार करे। और कहे कि मैं मुसलमानों में से हूँ।

३४. और समान नहीं होते पुण्य तथा पाप, आप दूर करें (बुराई को) उस के द्वारा जो सर्वोत्तम हो। तो सहसा आप के तथा जिस के बीच बैर हो मानो वह हार्दिक मित्र हो गया।[3]

३५. और यह गुण उन्हीं को प्राप्त होता है जो सहन करें, तथा उन्हीं को होता है जो बड़े भाग्यशाली हों।

३६. और यदि आप को शैतान की ओर से कोई संशय हो तो अल्लाह की शरण लें। वास्तव में वही सब कुछ सुनने–जानने वाला है।

---

[1] अर्थात प्रत्येक दशा में आज्ञा पालन तथा एकेश्वरवाद पर स्थिर रहे।

[2] उन के मरण के समय।

[3] इस आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को तथा आप के माध्यम से सर्वसाधारण मुसलमानों को यह निर्देश दिया गया है कि बुराई का बदला अच्छाई से तथा अपकार का बदला उपकार से दें। जिस का प्रभाव यह होगा कि अपन शत्रु भी हार्दिक मित्र बन जायेगा।

३७. तथा उस की निशानियों में से है रात्रि तथा दिवस तथा सूर्य तथा चन्द्रमा, तुम सज्दा न करो सूर्य तथा चन्द्रमा को। और सज्दा करो उस अल्लाह को जिस ने पैदा किया है उन को, यदि तुम उसी (अल्लाह) की इबादत (वंदना) करते हो।[1]

३८. तथा यदि वह अभिमान करें तो जो (फ़रिश्ते) आप के पालनहार के पास है वह उस की पवित्रता का वर्णन करते रहते हैं रात्रि तथा दिवस में, और वह थकते नहीं हैं।

३९. तथा उस की निशानियों में से है कि आप देखते है धरती को सहमी हुई। फिर जैसे ही हम ने उस पर जल बरसाया तो वह लहलहाने लगी तथा उभर गई। निश्चय जिस ने जीवित किया है उसे अवश्य वही जीवित करने वाला है मुर्दो को। वास्तव में वह जो चाहे कर सकता है।

४०. जो टेढ़ निकालते हैं हमारी आयतों में वह हम पर छुपे नहीं रहते। तो क्या जो फेंक दिया जायेगा अग्नि में उत्तम है अथवा जो निर्भय होकर आयेगा प्रलय के दिन? करो जो चाहो, वास्तव में वह जो तुम करते हो उस देख रहा है।[2]

४१. निश्चय जिन्होंने कुफ्र कर दिया इस शिक्षा (कुरआन) के साथ जब आ गई उन के पास। और सच यह है कि यह एक अत सम्मानित पुस्तक है।

४२. नहीं आ सकता झूठ इस के आगे से और न इस के पीछे से। उतरा है तत्वज्ञ प्रशंसित (अल्लाह) की ओर से।

४३. आप से वही कहा जा रहा है जो आप से पूर्व रसूलों से कहा गया।[3] वास्तव में आप का पालनहार क्षमा करने (तथा) दुःखदायी यातना देने वाला है।

---

[1] अर्थात सच्चा वंदनीय (पूज्य) अल्लाह के सिवा कोई नहीं है। यह सूर्य, चन्द्रमा और अन्य आकाशीय ग्रहें अल्लाह के बनाये हुये हैं। और उसी के आधीन हैं। इसलिये इन को सज्दा करना व्यर्थ है। और जो ऐसा करता है वह अल्लाह के साथ उस की बनाई हुई चीज़ को उस का साझी बनाता है जो शिर्क और अक्षम्य पाप तथा अन्याय है। सजदा करना इबादत है। जो अल्लाह ही के लिये विशेष है। इसीलिये कहा है कि यदि अल्लाह ही की इबादत करते हो तो सज्दा भी उसी के लिये करो। उस के सिवा कोई ऐसा नहीं जिसे सज्दा करना उचित हो। क्योंकि सब अल्लाह के बनाये हुये हैं सूर्य हो या कोई मनुष्य। सज्दा आदर के लिये हो या इबादक (वंदना) के लिये। अल्लाह के सिवा किसी को भी सज्दा करना अवैध तथा शिर्क है जिस का परिणाम सदैव के लिये नरक है। आयत ३८ पूरी कर के सज्दा करें।

[2] अर्थात तुम्हारे मनमानी करने का कुफल तुम्हें अवश्य देगा।

[3] अर्थात उनको जादूगर झूठा तथा कवि इत्यादि कहा गया। (देखिये : सूरह, ज़ारियात आयत : ५२, ५३)

४४. और यदि हम इसे बनाते अर्बी (के अतिरिक्त किसी) अन्य भाषा में तो वह अवश्य कहते कि क्यों नहीं खोल दी गईं उस की आयतें? यह क्या कि (पुस्तक) ग़ैर अर्बी और (नबी) अर्बी? आप कह दें कि वह उन के लिये जो ईमान लाये मार्गदर्शन तथा आरोग्यकर है। और जो ईमान न लायें उन के कानों में बोझ है और वह उन पर अन्धापन है। और वही पुकारे जा रहे हैं दूर स्थान से।[१]

४५. तथा हम प्रदान कर चुके हैं मूसा को पुस्तक (तौरात)। तो उस में भी विभेद किया गया, और यदि एक बात पहले ही से निर्धारित न होती[२] आप के पालनहार की ओर से, तो निर्णय कर दिया जाता उन के बीच। निःसंदेह वह उस के विषय में संदेह में डाँवाडोल हैं।

४६. जो सदाचार करेगा तो वह अपने ही लाभ के लिये करेगा। और जो दुराचार करेगा तो उस का दुष्परिणाम उसी पर होगा। और आप का पालनहार तनिक भी अत्याचर करने वाला नहीं है भक्तों पर।[३]

४७. उसी की ओर फेरा जाता है प्रलय का ज्ञान। तथा नहीं निकलते कोई फल अपने गाभों से और नहीं गर्भ धारण करती कोई मादा, और न जन्म देती है, परन्तु उस के ज्ञान से। और जिस दिन वह पुकारेगा उन को कि कहाँ हैं मेरे साझी? तो वह कहेंगे कि हम ने तुझे बता दिया था कि हम में से कोई उस का गवाह नहीं है।

४८. और खो जायेंगे[४] उन से वे जिन्हें पुकारते थे इस से पूर्व। तथा वह विश्वास कर लेंगे कि नहीं है उन के लिये कोई शरण का स्थान।

४९. नहीं थकता मनुष्य भलाई (सुख) की प्रार्थना से और यदि उसे पहुँच जाये बुराई (दुःख) तो (हताश) निराश[५] हो जाता है।

५०. और यदि हम उसे[१] चखा दें अपनी दया दुःख के पश्चात् जो उसे पहुँचा हो तो अवश्य कह देता है कि मैं तो इस के योग्य ही था। और मैं नहीं समझता कि प्रलय

---

[१] अर्थात कुरआन से प्रभावित होने के लिये ईमान आवश्यक है इस के बिना इस का कोई प्रभाव नहीं होता।

[२] अर्थात प्रलय के दिन निर्णय करने की। तो संसार ही में निर्णय कर दिया जाता और उन्हें कोई अवसर नहीं दिया जाता। (देखिये : सूरह फ़ातिर, आयत : ४५)

[३] अर्थात किसी को बिना पाप के यातना नहीं देता।

[४] अर्थात सब ग़ैब की बातें अल्लाह ही जानता है। इसलिये इस की चिन्ता न करो कि प्रलय कब आयेगी। अपने परिणाम की चिन्ता करो।

[५] यह साधारण लोगों की दशा है। अन्यथा मुसलमान निराश नहीं होता।

होनी है। और यदि मैं पुन: अपने पालनहार की ओर गया तो निश्चय ही मेरे लिये उस के पास भलाई होगी। तो हम अवश्य अवगत कर देंगे काफ़िरों को उन के कर्मों से तथा उन्हें अवश्य घोर यातना चखायेंगे।

५१. तथा जब हम उपकार करते हैं मनुष्य पर तो वह विमुख हो जाता है तथा अकड़ जाता है। और जब उसे दु:ख पहुँचे तो लम्बी-चौड़ी प्रार्थना करने लगता है।

५२. आप कह दें: भला तुम यह तो बताओ कि यदि यह (कुरआन) अल्लाह की ओर से हो फिर तुम कुफ़्र कर जाओ उस के साथ, तो कौन उस से अधिक कुपथ होगा जो उस के विरोध में दूर तक चला जाये?

५३. हम शीघ्र ही दिखा देंगे उन को अपनी निशानियाँ संसार के किनारों में तथा स्वयं उन के भीतर। यहाँ तक कि खुल जायेगी उन के लिये यह बात कि यही सच्च है।[२] और क्या यह बात पर्याप्त नहीं कि आप का पालनहार ही प्रत्येक वस्तु का साक्षी (गवाह) है?

५४. सावधान! वही संदेह में है अपने पालनहार से मिलने के विषय से। सावधान! वही (अल्लाह) प्रत्येक वस्तु को घेरे हुये है।

*****

---

[१] आयत का भावार्थ यह है कि काफ़िर की यह दशा होती है। उसे अल्लाह के यहाँ जाने का विश्वास नहीं होता। फिर यदि प्रलय का होना मान लें तो भी इसी कुविचार में मग्न रहता है कि यदि अल्लाह ने मुझे संसार में सुख-सुविधा दी है तो वहाँ भी अवश्य देगा। और यह नहीं समझता कि यहाँ उसे जो कुछ दिया गया है वह परीक्षा के लिये दिया गया है। और प्रलय के दिन कर्मों के आधार पर प्रतिकार दिया जायेगा।

[२] कुरआन और निशानियों से अभिप्राय वह विजय है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तथा आप के पश्चात् मुसलमानों को प्राप्त होंगी। जिन से उन्हें विश्वास हो जायेगा कि कुरआन ही सत्य है। इस आयत का एक दूसरा भावार्थ यह भी लिया गया है कि अल्लाह इस विश्व में तथा स्वयं तुम्हारे भीतर ऐसी निशानियाँ दिखायेगा। और वह निशानियाँ निरन्तर वैज्ञानिक आविष्कारों द्वारा सामने आ रही हैं। और प्रलय तक आती रहेंगी जिन से कुरआन पाक का सत्य होना सिद्ध होता रहेगा।



सूरह शूरा – ४२



सूरह शूरा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ५३आयतें है।

– इस की आयत ३८ में ईमान वालों को आपस में प्रामर्श करने का नियम बताया गया है। इसलिये इस का नाम सूरह शूरा है।

– इस की आरंभिक आयतों में उन बातों को बतया गया है जिन से वह्यी को समझने में सहायता मिलती है। फिर आयत २० तक बताया गया है कि यह वही धर्म है जिस की वह्यी को समझने में सहायता मिलती है। फिर आयत २० तक बताया गया है कि यह वही धर्म है जिस की वह्यी सभी नबियों की ओर की गई थी। और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को यह निर्देश दिया गया है कि इस पर स्थित रह कर इस धर्म की ओर आमंत्रण दें। और जो लोग विवाद में उलझे हुये हैं उन के पास सत्य का कोई प्रमाण नहीं है।

– आयत २१ से ३५ तक उन की पकड़ की गई है जो मनमानी धर्म बनाकर उस पर चलते हैं। और सत्धर्म पर ईमान लाने तथा सदाचार करने पर शुभसूचना दी गई है और विरोधियों के कुछ संदेहों को दूर किया गया है।

– आयत ३६ से ४० तक सत्धर्म के अनुयायियों के वह गुण बताये गये हैं जो संघर्ष की घड़ी में उन्हें सफल बनायेंगे। फिर विरोधियों को सावधान करते हुये अपने पालनहार की पुकार को स्वीकार कर लेने का आमंत्रण दिया गया है।

– अन्तिम आयतों में सूरह के आरंभिक विषय अर्थात वह्यी को और अधिक उजागर किया गया है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. हा, मीम।

२. ऐन, सीन, क़ाफ़।

३. इसी प्रकार (अल्लाह) ने प्रकाशना[१] भेजी है आप, तथा उन (रसूलों) की ओर जो आप से पूर्व हुये हैं। अल्लाह सब से प्रबल और सब गुणों को जानने वाला है।

४. उसी का है जो आकाशें तथा धरती में है और वह बड़ा उच्च–महान् है।

५. समीप है कि आकाश फट[२] पड़ें अपने ऊपर से, जब कि फ़रिश्ते पवित्रता का गान करते हैं अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ, तथा क्षमायाचना करते हैं उन के लिये जो धरती में हैं। सुनो! वास्तव में अल्लाह ही अत्यंत क्षमा करने तथा दया करने वाला है।

६. तथा जिन लोगों ने बना लिये हैं अल्लाह के सिवा संरक्षक, अल्लाह ही उन पर निरीक्षक (निगराँ) है और आप उन के उत्तरदायी[३] नहीं हैं।

७. तथा इसी प्रकार हम ने वह्यी (प्रकाशना) की है आप की ओर अर्बी कुरआन की। ताकि आप सावधान कर दें मक्का[४] वासियों को, और जो उस के आस–पास हैं। तथा सावधान कर दें एकत्र होने के दिन[५] से जिस दिन के होने में कोई संशय नहीं। एक पक्ष स्वर्ग में तथा एक पक्ष नरक में होगा।

---

[१] आरंभ में यह बताया जा रहा है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कोई नई बात नहीं कर रहे हैं और न यह वह्यी (प्रकाशना) का विषय ही इस संसार के इतिहास में प्रथम बार सामने आया है। इस से पूर्व भी पहले अम्बिया पर प्रकाशना आ चुकी है और वह एकेश्वरवाद का संदेश सुनाते रहे है।

[२] अल्लाह की महिमा तथा प्रताप के भय से।

[३] आप का दायित्व मात्र सावधान कर देना है।

[४] आयत में मक्का को उम्मुल कुरा कहा गया है। जो मक्का का एक नाम है जिस का शाब्दिक अर्थ: (वस्तियों की माँ) है। बताया जाता है कि मक्का अरब की मूल वस्ती है और उस के आस–पास से अभिप्राय पूरा भूमण्डल है। आधुनिक भूगोल शास्त्र के अनुसार मक्का पूरे भूमण्डल का केन्द्र है। इससिलये यह आश्चर्य की बात नहीं कि कुरआन इसी तथ्य की ओर संकेत कर रहा हो। सारांश यह है कि इस आयत में इस्लाम के विश्वव्यापी धर्म होने की ओर संकेत किया गया है।

[५] इस से अभिप्राय प्रलय का दिन है जिस दिन कर्मों के प्रतिकार स्वरूप एक पक्ष स्वर्ग में और एक पक्ष नरक में जायेगा।

८. और यदि अल्लाह चाहता तो सभी एक समुदाय[१] बना देता। परन्तु वह प्रवेश कराता है जिसे चाहे अपनी दया में। तथा अत्याचारियों का कोई संरक्षक तथा सहायक न होगा।

९. क्या उन्होंने बना लिये हैं उस के सिवा संरक्षक? तो अल्लाह ही संरक्षक है और जीवित करेगा मुर्दों को। और वही जो चाहे कर सकता है।[२]

१०. और जिस बात में भी तुम ने विभेद किया है उस का निर्णय अल्लाह ही को करना है ।[३] वही अल्लाह मेरा पालनहार है, उसी पर मैं ने भरोसा किया है तथा उसी की ओर ध्यान मग्न होता हूँ।

११. वह आकाशों तथा धरती का रचयिता है। उस ने बनाये हैं तुम्हारी जाति में से तुम्हारे जोड़े तथा पशुओं के जाड़े। वह फैला रहा है तुम को इस प्रकार। उस की कोई प्रतिमा[४] नहीं। और वह सब कुछ सुनने–जानने वाला है।

१२. उसी के[५] अधिकार में है आकाशों तथा धरती की कुंजियाँ। वह फैला देता है जीविका जिस के लिये चाहे तथा नाप कर देता है। वास्तव में वही प्रत्येक वस्तु का जानने वाला है।

१३. उस ने नियत[६] किया है तुम्हारे लिये वही धर्म जिस का आदेश दिया था नूह को, और जिसे वह्यी किया है आप की ओर, तथा जिस का आदेश दिया था इब्राहीम तथा मूसा और ईसा को। कि इस धर्म की स्थापना करो और इस में भेद भाव न

---

[१] अर्थात एक ही सत्धर्म पर कर देता। किन्तु उस ने प्रत्येक को अपनी इच्छा से सत्य या असत्य को अपनाने की स्वाधीनता दे रखी हैं। और दोनों का परिणाम बता दिया है।

[२] अत: उसी को संरक्षक बनाओ और उसी की आज्ञा का पालन करो।

[३] अत: उस का निर्णय अल्लाह की पुस्तक कुरआन से तथा उस के रसूल की सुन्नत से लो।

[४] अर्थात उस के अस्तित्व तथा गुण और कर्म में कोई उस के समान नहीं है। भावार्थ यह है कि किसी व्यक्ति या वस्तु में उस का गुण कर्म मानना या उसे उस का अंश मानना असत्य तथा अधर्म है।

[५] आयत नं. ९ से १२ तक जिस तथ्यों की चर्चा है उन में एकेश्वरवाद तथा परलोक के प्रमाण प्रस्तुत किये गये है। और सत्य से विमुख होने वालों को चेतावनी दी गई है।

[६] इस आयत में पाँच नबियों का नाम लेकर बताया गया है कि सब को एक ही धर्म देकर भेजा गया है। जिस का अर्थ यह है है कि इस मानव संसार में अन्तिम नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तक जो भी नबी आये सभी की मूल शिक्षा एक रही है। कि एक अल्लाह को मानो और उसी एक की वंदना करो। तथा वैध–अवैध के विषय में अल्लाह ही के आदोशों का पालन करो। और अपने सभी धार्मिक तथा सामाजिक और राजनैतिक विवादों का निर्णय उसी के धर्मविधान के आधार पर करो (देखिये : सूरह निसा, आयत : १६३–१६४)

करो। यही बात अप्रिय लगी है मुश्रिकों को जिस की ओर आप बुला रहे है। अल्लाह ही चुनता है इसके लिये जिसे चाहे, और सीधी राह उसी को दिखाता है जो उसी की ओर ध्यान मग्न हो।

१४. और उन्होंने[१] इइ के पश्चात् ही विभेद किया जब उन के पास ज्ञान आ गया आपस के विरोध के कारण, तथा यदि एक बात पहले से निश्चत[२] न होती आप के पालनहार की ओर से तो अवश्य निर्णय कर दिया गया होता उन के बीच। और जो पुस्तक के उत्तराधिकारी बनाये[३] गये उन के पश्चात् उस की ओर से संदेह में उलझे हुये हैं।

१५. तो आप लोगों को इसी (धर्म) की ओर बुलाते रहें तथा जैसे आप को आदेश दिया गया है उस पर स्थित रहें। और उन की इच्छाओं पर न चलें। तथा कह दें कि मैं ईमान लाया उन सभी पुस्तकों पर जो अल्लाह ने उतारी हैं। तथा मुझे आदेश दिया गया है कि तुम्हारे बीच न्याय करूँ। अल्लाह हमारा तथा तुम्हारा पालनहार है। हमारे लिये हमारे कर्म हैं तथा तुम्हारे लिये तुम्हारे कर्म। हमारे और तुम्हारे बीच कोई झगड़ा नहीं। अल्लाह ही हमें एकत्र करेगा तथा उसी की ओर सब को जाना हैं।[४]

१६. तथा जो लोग झगड़ते हैं अल्लाह (के धर्म के बारे) में जब कि उसे[५] मान लिया गया है। उन का विवाद (कुतर्क) असत्य है अल्लाह के समीप, तथा उन्हीं पर क्रोध है और उन्हीं के लिये कड़ी यातना है।

१७. अल्लाह ही ने उतारी है सब पुस्तकें सत्य के साथ तथा तराजू[६] को। और आप को क्या पता शायद प्रलय का समय समीप हो।

१८. शीघ्र माँग कर रहे हैं उस (प्रलय की जो ईमान नहीं रखते उस पर। और जो ईमान लाये हैं वह उस से डर रहे हैं तथा विश्वास रखते है कि वह सच्च है। सुनो!

---

[१] अर्थात मुश्रिकों ने।

[२] अर्थात प्रलय के दिन निर्णय करने की।

[३] अर्थात यहूदी तथा ईसाई भी सत्य में विभन्न तथा संदेह कर रहे हैं।

[४] अर्थात प्रलय के दिन। फिर वह हमारे बीच निर्णय कर देगा।

[५] अर्थात प्रलय के दिन। फिर वह हमारे बीच निर्णय कर देगा।

[६] तराजू से अभिप्राय: न्याय का आदेश है। जो कुरआन द्वारा दिया गया है। (देखिये : सूरह हदीद, आयत : २५)

निश्चय जो विवाद कर रहे हैं प्रलय के विषय में वह कुपथ में बहुत दूर चले गये है।

१९. अल्लाह बड़ा दयालु है अपने भक्तों पर। वह जीविका प्रदान करता है जिसे चाहे। तथा वह बड़ा प्रबल प्रभावशाली है।

२०. जो आख़िरत (परलोक) की खेती[1] चाहता हो तो हम उस के लिये उस की खेती बढ़ा देते हैं। और जो संसार की खेती चाहता हो तो हम उसे उस में से कुछ दे देते हैं। और उस के लिये परलोक में कोई भाग नहीं।

२१. क्या इन (मुश्रिकों) के कुछ ऐसे साझी[2] हैं जिन्होंने उन के लिये कोई ऐसा धार्मिक नियम बन दिया है जिस की अनुमति अल्लाह ने नहीं दी है? और यदि निर्णय की बात निश्चत न होती तो (अभी) इन के बीच निर्णय कर दिया जाता। तथा निश्चय अत्याचारियों के लिये ही दुःखदायी यातना है।

२२. तुम अत्याचारियों को डरते हुये देखोंगे उन दुष्कर्मों के कारण जो उन्होंने किये हैं। और वह उन पर आ कर रहेगा। तथा जो ईमान लाये और सदाचार किये वे स्वर्ग के बागों में होंगे। वह जिस की इच्छा करेंगे उन के पालनहार के यहाँ मिलेगा। यही बड़ी दया है।

२३. यही वह (दया) है जिस की शुभसूचना देता है अल्लाह अपने भक्तों को जो ईमान लाये तथा सदाचार किये। आप कह दें कि मैं नहीं माँगता हूँ इस पर तुम से कोई बदला उस प्रेम के सिवा जो संबन्धियों[3] में (होता) है। तथा जो व्यक्ति कोई पुण्य करेगा हम उस के पुण्य को अधिक कर देंगे। वास्तव में अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला गुणग्राही है।

---

[1] अर्थात जो अपने संसारिक सत्कर्म का प्रतिफल परलोक मे चाहता है तो उसे उस का प्रतिफल परलोक में दस गुन्हा से सात सौ गुना तक मिलेगा। और जो संसारिक फल का अभिलषी हो तो जो उस के भाग्य में हो उसे उतना मिलेगा और परलोक में कुछ नहीं मिलेगा। (इब्ने कसीर)

[2] इस से अभिप्राय उन के वह प्रमुख हैं जो वैध–अवैध का नियम बनाते थे। इस में यह संकेत है कि धार्मिक जीवन विधान बनाने का अधिकार केवल अल्लाह को हैं। उस के सिवा दूसरों के बनाये हुये धार्मिक जीवन विधान को मानना और उस का पालन करना शिर्क है।

[3] भावार्थ यह है कि हे मक्का वासियों! यदि तुम सत्धर्म पर ईमान नहीं लाते हो तो मुझे इस का प्रचार तो करने दो। मुझ पर अत्याचार न करो। तुम सभी मेरे संबन्धी हो इसलिये मेरे साथ प्रेम का व्यवहार करो। (सहीह बुख़ारी)

२४. क्या वह कहते हैं कि उस ने अल्लाह पर झूठ घड़ लिया है? तो यदि अल्लाह चाहे तो आप के दिल पर मुहर लगा दे।[1] और अल्लाह मिटा देता है झूठ को और सच्च को अपने आदेशों द्वारा सच कर दिखाता हैं। वह सीनों (दिलों) के भेदों का जानने वाला है।

२५. वही है जो स्वीकार करता है अपने भक्तों की तौबा। तथा क्षमा करता है दोषों[2] को और जानता है जो कुछ तुम करते हो।

२६. और उन की पार्थना स्वीकार करता है जो ईमान लाये और सदाचार किये तथा उन्हें अधिक प्रदान करता है अपनी दया से। और काफ़िरों ही के लिये कड़ी यातना है।

२७. और यदि फैला देता अल्लाह जीविका अपने भक्तों के लिये तो वह विद्रोह[3] कर देते धरती में। परन्तु वह उतारता है एक अनुमान से जैसे वह चाहता है। वास्तव में वह अपने भक्तों से भली–भाँति सूचित है। (तथा) उन्हें देख रहा है।

२८. तथा वही है जो वर्षा करता ह इस के पश्चात की लोग निराश हो जाये। तथा पैला[4] देता है अपनी दया। और वही संरक्षक सराहनीय है।

२९. तथा उस की निशशनियों में से है आकाशें और धरती की उत्पत्ति, तथा जौ फैलाये हैं उन दोनों में जीव। और वह उन्हें एकत्र करने पर जब चाहे[5] सामर्थ्य रखेन वाला है।

३०. और जो भी दुःख तुम को पहुँचता है वह तुम्हारे अपने कर्तूत से पहुँचता है। तथा वह क्षमा कर देता है तुम्हारे बहुत से पापों को।[6]

---

[1] अर्थ यह है कि हे नबी! इन्होंने आप को अपने जैसा समझ लिया है जो अपने स्वार्थ के झूठ का सहारा लेते हैं। किन्तु अल्लाह ने आप के दिल पर मुहर नहीं लगाई है जैसे इन के दिलों पर लगा रखी है।

[2] तौबा का अर्थ है : अपने पाप पर लज्जित होना फिर उसे न करने का संकल्प लेना। हदीस में है कि जब बंदा अपना पाप स्वीकार कर लेता है। और फिर तौबा करता है तो अल्लाह उसे क्षमा कर देता है। (सहीह बुख़ारी : ४१४१, सहीह मुस्लिम : २७७०)

[3] अर्थात यदि अल्लाह सभी को सम्पन्न बना देता तो धरती में अवज्ञा और अत्याचार होने लगता और कोई किसी के आधीन न रहता।

[4] इस आयत में वर्षा को अल्लाह की दया कहा गया है। क्योंकि इस से धरती में उपज होती है जो अल्लाह के अधिकार में है। इसे नक्षत्रों का प्रभाव मानना शिर्क है।

[5] अर्थात प्रलय के दिन।

[6] देखिये: सूरह फ़ातिर, आयत : ४५

३१. और तुम विविश करने वाले नहीं हो धरती में, और न तुम्हारा अल्लाह के सिवा कोई संरक्षक और न सहायक है।

३२. तथा उस के (सामर्थ्य) की निशानियों में से हैं चलती हुई नाव सागरों में पर्वतों के समान।

३३. यदि वह चाहे तो रोक दे वायु को और वह खड़ी रह जायें उस के ऊपर। निश्चय इस में बड़ी निशानियाँ है प्रत्येक बड़े धैर्यवान[१] कृतज्ञ के लिये।

३४. अथवा विनाश[२] कर दे उन (नावों) का उन के कर्तूतों के बदले। और वह क्षमा करता है बहुत कुछ।

३५. तथा वह जानता है उन को जो झगड़ते हैं हमारी आयतों में। उन्हीं के लिये कोई भागने का स्थान नहीं है।

३६. तुम्हें जो कुछ दिया गया है वह संसारिक जीवन का संसाधन है तथा जो कुछ अल्लाह के पास है वह उत्तम और स्थायी[3] है उन के लिये जो अल्लाह पर ईमान लाये तथा अपने पालनहार ही पर भरोसा रखते हैं।

३७. तथा जो बचते हैं बड़े पापों तथा निर्लज्ञा के कर्मों से। और जब क्रोध आ जाये तो क्षमा कर देते हैं।

३८. तथा जिन्हों अपने पालनहार के आदेश को मान लिया तथा स्थापना की नमाज़ की और उन के प्रत्येक कार्य आपस के विचार–विमर्श से होते हैं।[४] और जो कुछ कुछ हम ने उन्हें प्रदान किया है उस में से दान करते हैं।

३९. और यदि उन पर अत्याचार किया जाये तो वह बराबरी का बदला लेते हैं।

---

[१] अर्थात जो अल्लाह की आज्ञापालन पर स्थित रहे।

[२] उन के सवारों को उन के पापों के कारण डुबो दे।

[3] अर्थ यह है कि संसारिक साम्यिक सुख को परलोक के स्थाई जीवन तथा सुख पर प्राथमिक्ता न दो।

[४] इस आयत में ईमान वालों का एक उत्तम गुण बताया गया है कि वह अपने प्रत्येक महत्त्वपूर्ण कार्य परस्पर प्रामर्श से करते हैं। सूरह आले इमरान आयत: १५९ में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को आदेश दिया गया है कि आप मुसलमानों से परामर्श करें। तो आप सभी महत्त्वपूर्ण कार्यों में उन से परामश करते थे। यही नीति तत्पश्चात् आदरणीय ख़लीफ़ा उमर (रजियल्लाहु अन्हु) ने भी अपनाई। जब आप घायल हो गये और जीवन की आशा न रही तो आप ने छ: व्यक्तियों को नियुक्त कर दिया कि वह आपस के परामर्श से शासन के लिये किसी एक को निर्वाचित कर लें। और उन्होंने आदरणीय उसमान (रज़ियल्लाहु अन्हु) को शासक निर्वाचित कर लें। और उन्होंने आदरणीय उसमान जिस ने परामर्शिक व्यवस्था की नींव डाली। किन्तु यह परामर्श केवल देश का शासन चलाने के विषयों तक सीमित है। फिर भी जिन विषयों में कुरआन तथा हदीस की शिक्षायें मौजूद हों उन में किसी परामर्श की आवश्यकता नहीं हैं।

४०. और बुराई का प्रतिकार (बदला) बुराई है उसी जैसी।[1] फिर जो क्षम कर दे तथा सुधार कर ले तो उस का प्रतिफल अल्लाह के ऊपर है। वास्तव में वह प्रेम नहीं करता है अत्याचारियों से।

४१. तथ जो बदला लें अपने ऊपर अत्याचार होने का पश्चात् तो उन पर कोई दोष नहीं है।

४२. दोष केवल उन पर है जो लोगों पर अत्याचार करते हैं। और नाहक जमीन में उपद्रव करते हैं। उन्हीं के लिये दर्दनाक यातना है।

४३. और जो सहन करे तथा क्षमा कर दे तो यह निश्चय बड़े साहस[2] का कार्य है।

४४. तथा जिसे अल्लाह कुपथ करे दे, तो उस का कोई रक्षक नहीं है उस के पश्चात। तथा आप देखेंगे अत्याचारियों को जब वह देखेंगे यातना की, वह कह रेहे होंगे: क्या वापसी की कोई राह है?[3]

४५. तथा आप उन्हें देखेंगे कि वह प्रस्तुत किये जा रहे है नरक पर सिर झुकाये अपमान के कारण। वे देख रहे होंगे कन्खियों से। तथा कहेंगे जो ईमान लाये कि वास्तव में घाटे में वही हैं जिन्होंने घाटे में डाल दिया स्वयं को तथा अपने परिवार को प्रलय के दिन। सुनो! अत्याचारी ही स्थार्स यातना में होंगे।

४६. तथा नहीं होंगे उन के कोई सहायक जो अल्लाह के मुक़ाबले में उन की सहायता करें। और जिसे कुपथ करे दे अल्लाह, तो उस के लिये कोई मार्ग नहीं।

४७. मान लो अपने पालनहार की बात इस से पूर्व कि आ जाये वह दिन जिसे टलना नहीं है अल्लाह की ओर से। नहीं होगा तुम्हारे लिये कोई शरण का स्थान उस दिन और न छिप कर अन जान बन जाने का।

४८. फिर भी यदि वह विमुख हों तो (हे नबी!) हम ने नहीं भेजा है आप को उन पर रक्षक बना कर। आप का दायित्व केवल संदेश पहुँचा देना है। और वास्तव में जब हम चखा देते हैं मनुष्य को अपनी दया तो वह इतराने लगता है उस पर। और

---

[1] इस आयत में बुराई का बदला लेने की अनुमति दी गई है। बुराई का बदला यद्यपि बुराई नहीं, बल्कि न्याय है फिर भी बुराई के समरूप होने के कारण उसे बुराई ही कहा गया है।

[2] इस आयत में क्षमा करने की प्रेरणा दी गई है कि यदि कोई अत्याचार कर दे तो उसे सहन करना और क्षमा कर देना और सामर्थ्य रखते हुये उस से बदला न लेना ही बड़ी सुशीलता तथा साहस की बात है जिस की बड़ी प्रधानता है।

[3] ताकि संसार में जाकर ईमान लायें और सदाचार करें तथा परलोक की यातना से बच जायें।

यदि पहुँचता है उन को कोई दु:ख उन के कर्तूत के कारण तो मनुष्य बड़ा कृतघ्न बन जाता है।

४९. अल्लाह ही का है आकाशों तथा धरती का राज्य। वह पैदा करता है जो चाहता है। जिसे चाहे पुत्रियाँ प्रदान करता है तथा जिसे चाहे पुत्र प्रदान करता है।

५०. अथवा उन्हें पुत्र और[1] पुत्रियाँ मिला कर देता है। और जिसे चाहे बाँझ बना देता है। वास्तव में वह सब कुछ जानने वाला (तथा) सामर्थ्य रखने वाला है।

५१. और नहीं संभव है किसी मनुष्य के लिये कि बात करे अल्लाह उस से परन्तु वह्यी[2] द्वारा, अथवा पर्दे के पीछे से अथवा भेज दे कोई रसूल (फ़रिश्ता) जो वह्यी करे उस की अनुमति से जो कुछ वह चाहता हो। वास्तव में वह सब से ऊँचा (तथा) सभी गुण जानने वाला है।

५२. और इसी प्रकार हम ने वह्यी (प्रकाशना) की है आप की ओर अपने आदेश की रूह (कुरआन)। आप नहीं जानते थे कि पुस्तक क्या है तथा और ईमान[3] क्या है। परन्तु हम ने इसे बना दिया एक ज्योति। हम मार्ग दिखाते हैं इस के द्वारा जिसे चाहते हैं अपने भक्तों में से। और वस्तुत : आप सीधी राह[4] दिखा रहे हैं।

५३. अल्लाह की राह जिस के अधिकार में है जो कुछ आकाशें में तथा जो कुछ धरती में है। सावधान! अल्लाह ही की ओर फिरते हैं सभी कार्य।

*****

---

[1] इस आयत में संकेत है कि पुत्र–पुत्री माँगने के लिये किसी पीर, फ़कीर के मज़ार पर जाना उन को अल्लाह की शक्ति में साझी बनाना है। जो शिर्क है। और शिर्क ऐसा पाप है जिस के लिये बिना तौबा के कोई क्षमा नहीं।

[2] वह्यी का अर्थ : संकेत करना या गुप्त रूप से बात करना है। अर्थात अल्लाह अपने अपने रसूलों को अपना आदेश और निर्देश इस प्रकार देता है जिसे कोई दूसरा व्यक्ति सुन नहीं सकता। जिस के तीन रूप होते हैं:

– प्रथम : रसूल के दिल में सीधे अपना ज्ञान भर दे।

– दूसरा : पर्दे के पीछे से बात करे। किन्तु वह दिखाई न दे।

– तीसरा : फ़रिश्ते द्वारा अपनी बात रसूल तक गुप्त रूप से पहुँचा दे ।

इन में पहले और तीसरे रूप में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास वह्यी उतरती थी। (सहीह बुख़ारी : २)

[3] मक्का वासियों को यह आश्चर्य था कि मनुष्य अल्लाह का नबी कैसे हो सकता है? इस पर कुरआन बता रहा है कि आप नबी होने से पहले न तो किसी आकाशीय पुस्तक से अवगत थे। और न कभी ईमान की बात ही आप के विचार में आई। और यह दोनों बातें ऐसी थी जिन का मक्कावासी भी इन्कार नहीं कर सकते थे। और यही आप का अज्ञान होना आप के सत्य नबी होने का प्रमाण है। जिसे कुरआन की अनेक आयतों में वर्णित किया गया है।

[4] सीधी राह से अभिप्राय सत्धर्म इस्लाम है।

सूरह ज़ुख़्रुफ़ – ४३

सूरह ज़ुख़्रुफ़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ८९ आयतें हैं।

- इस की आयत ३५ में ज़ुख़्रुफ़ शब्द आया है। जिस से यह नाम लिया गया है। जिस का अर्थ है: सोना–शोभा।
- इस की आरंभिक आयतें कुरआन के लाभ और उस की बड़ाई को उजागर करती हैं। फिर उन निशानियों कीं ओर ध्यान दिलाया गया है जिन पर विचार करने से अल्लाह के अकेले पूज्य होने का विश्वास होता है। फिर आयत १५ से २५ तक फ़रिश्तों को अल्लाह का साझी बनाने को अनुचित बताया गया है। फिर आयत २६ से ३३ तक इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के मुर्तियों से विरक्त होने के एलान को प्रस्तुत किया गया है। और बताया गया है कि मक्कावासी जो उन्हीं के वंश से हैं वे शिर्क तथा मुर्तियों की पूजा के पक्षपाती हो गये हैं। और अल्लाह के नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के इस लिये विरोधी बन गये है कि आप एक अल्लाह के पूज्य होने का आमंत्रण दे रहे हैं।
- आयत ३४ से ३५ तक तनिक संसारिक लाभ के लिये परलोक तथा वह्यी और रिसालत के इन्कार कर देने के परिणाम को बताया गया है। और फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) की कुछ दशाओं का वर्णन किया गया है। जिस से यह बात सामने आती है कि वह भी तौहीद का प्रचार करते थे और उन के विरोधियों ने अपना परिणाम देख लिया।
- अन्तिम आयतों में विरोधियों के लिये चेतावनी तथा सदाचारियों के लिये शुभसूचना के साथ अपराधियों को उन के दुष्परिणाम से सावधान, और कुछ संदेहों को दूर किया गया है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. हा, मीम।
२. शपथ है प्रत्यक्ष (खुली) पुस्तक की!
३. इसे हम ने बनाया है अर्बी कुरआन ताकि वह इसे समझ सकें।
४. तथा वह मूल पुस्तक[१] में है हमारे पास, बड़ा उच्च तथा ज्ञान से परिपूर्ण है।
५. तो क्या हम फेर दें इस शिक्षा को तुम से इसलिये कि तुम उल्लंघनकारी लोग हो?
६. तथा हम ने भेजे हैं बहुत से नबी (गुज़री हुयी) जातियों में।
७. और नहीं आता रहा उन के पास कोई नबी परन्तु वह उस के साथ उपहास करते रहे।
८. तो हम ने विनाश कर दिया इन से[२] अधिक शक्तिवानों का तथा गुज़र चुका है अगलों का उदाहरण।
९. और यदि आप प्रश्न करें उन से कि किस ने पैदा किया है आकाशों तथा धरती को? तो अवश्य कहेंगे: उन्हें पैदा किया है बड़े प्रभावशाली सब कुछ जानने वाले ने।
१०. जिस ने बनाया तुम्हारे लिये धरती को पालना। और बनाये उस में तुम्हारे लिये मार्ग ताकि तुम मार्ग पा सको।[३]
११. तथा जिस ने उतारा आकाश से जल एक विशेष मात्रा में। फिर जीवित कर दिया उस के द्वारा मुर्दा भूमी को। इस प्रकार तुम (धरती से) निकाले जाओगे।
१२. तथा जिस ने पैदा किये सब प्रकार के जोड़े, तथा बनाई तुम्हारे लिये नवकायें तथ पशु जिन पर तुम सवार होते हो।

---

[१] मूल पुस्तक से अभिप्राय लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पुस्तक) है। जिस से सभी आकाशीय पुस्तकें अलग कर के अवतरित की गई हैं। सूरह वाकिआ में इसी को (किताबे मक्नून) कहा गया है। सूरह बुरूज में इसे (लौहे महफ़ूज़) कहा गया है। सूरह शुअरा में कहा गया कि यह अगले लोगों की पुस्तकों में है। सूरह आ'ला में कहा गया है कि यह विषय पहली पुस्तकों में भी अंकित है। सारांश यह है कि कुरआन के इन्कार करने का कोई कारण नहीं। तथा कुरआन का इन्कार सभी पहली पुस्तकों का इन्कार करने के बराबर है।

[२] अर्थात मक्कावासियों से।

[३] एकम स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिये।

१३. ताकि तुम सवार हो उन के ऊपर, फिर याद करो अपने पालनहार के प्रदान को जब सवार हो जाओ उस पर और यह[1] कहो: पवित्र है वह जिस ने वश में कर दिया हमारे लिये इस को। अन्यथा हम इसे वश में नहीं कर सकते थे।

१४. तथा हम अवश्य ही अपने पालनहार ही की ओर फिर कर जाने वाले है।

१५. और बना लिया उन्होंने[2] उसे भक्तों में से कुछ को उस का अंश। वास्तव में मनुष्य खुला कृतघ्न है।

१६. क्या अल्लाह ने उस में से जो पैदा करता है, पुत्रियाँ बना ली है तथा तुम्हें विशेष कर दिया है पुत्रों के साथ?

१७. जब कि उन में से किसी को शुभसूचना दी जाये उस (के जन्म लेने) की जिस का उस ने उदाहरण दिया है अत्यंत कृपाशील के लिये तो उस का मुख काला[3] हो जाता है। और शोक से भर जाता है।

१८. क्या (अल्लाह के लिये) वह है जिस का पालन–पोषण अभूषण में किया जाता है। तथा वह विवाद में खुल कर बात नहीं कर सकती?

१९. और उन्होंने बना दिया फ़रिश्तों को जो अत्यंत कृपाशील के भक्त हैं पुत्रियों। क्या वह उपस्थित थे उन की उत्पत्ति के समय? लिख ली जायेगी उन की गवाही और उन से पूछ होगी।

२०. तथा उन्होंने कहा कि यदि अत्यंत कृपाशील चाहता तो हम उन की इबादत नहीं करते। उन्हें इस का कोई ज्ञान नहीं। वह केवल तीर तुक्के चला रहे हैं।

---

[1] आदरणीय अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ऊँट पर सवार होते तो तीन बार: अल्लाहु अक्बर कहते फिर यही आयत (मुनकलिबून) तक पढ़ते। और कुछ और प्रार्थना के शब्द कहते थे जो दुआओं की पुस्तकों में मिलेंगे। (सहीह मुस्लिम हदीस नं. : १३४२)

[2] जैसे मक्का के मुश्रिक लोग फ़रिश्तों को अल्लाह की पुत्रियाँ मानते थे। और ईसाईयों ने ईसा (अलैहिस्सलाम) को अल्लाह का पुत्र माना। और किसी ने आत्मा को प्रमात्मा तथा अवतारों को प्रभु बना दिया। और फिर उन्हें पूजने लगे।

[3] इस्लाम से पूर्व यही दशा थी। कि यदि किसी के यहाँ बच्ची जन्म लेती तो लज्जा के मारे उस का मुख काला हो जाता। और कुछ अरब के क़बीले उसे जन्म लेते ही जीवित गाड़ दिया करते थे। किन्तु इस्लाम ने उस को सम्मान दिया। तथा उस की रक्षा की। और उस के पालनपोषण को पुण्य कर्म घोषित किया। हदीस में है कि जो पुत्रियों के कारण दुःख झेले और उन के साथ उपकार करे तो उस के लिये वे नरक से पर्दा बनेंगी। (सहीह बुख़ारी : ५९९५, सहीह मुस्लिम : २६२९) आज भी कुछ पापी लोग गर्भ में बच्ची का पता लगते ही गर्भपात करा देते है। जिसको इस्लाम बहुत बड़ा अत्याचार समझता है।

२१. क्या हम ने उन्हें प्रदान की है कोई पुस्तक इस से पहले, जिसे वह दृढ़ता से पकड़े हुये हैं?[1]

२२. बल्कि यह कहते हैं कि हम ने पाया है अपने पूर्वजों को एक रीति पर और हम उन्हीं के पद्चिन्हों पर चल रहे है।

२३. तथा(हे नबी!) इसी प्रकार हम ने नहीं भेजा आप से पूर्व किसी बस्ती में कोई सावधान करने वाला परन्तु कहा उस के सुखी लोगों ने : हम ने पाया है अपने पूर्वजों को एक रीति पर और हम निश्चय उन्हीं के पद्चिन्हों पर चल रहे हैं।[2]

२४. नबी ने कहा: क्या (तुम उन्हीं का अनुगमन करोगे) यद्यपि मैं लाया हूँ तुम्हारे पास उस से अधिक सीधा मार्ग जिस पर तुम ने पाया है अपने पूर्वजों को? तो उन्होंने कहा: हम जिस (धर्म) के साथ तुम भेजे गये हो उसे मानने वाले नहीं हैं।

२५. अन्ततः हम ने बदला चुका लिया उन से। तो देखो कि कैसा रहा झुठलाने वालों का दुष्परिणाम।

२६. तथा याद करो, जब कहा इब्राहीम ने अपने पिता तथा अपनी जाति से: निश्चय मैं विरक्त हूँ उस से जिस की वंदना तुम करते हो।

२७. उस के अतिरिक्त जिस ने मुझे पैदा किया है। वही मुझे राह दिखायेगा।

२८. तथा छोड़ गया वह इस बात (एकेश्वरवाद) को अपनी संतान में ताकि वह (शिर्क से) बचते रहें।

२९. बल्कि मैं ने इन को तथा इन के बाप दादा को जीवन का सामान दिया। यहाँ तक कि आ गया उन के पास सत्य (कुरआन) और एक खुला रसूल।[3]

३०. तथा जब आ गया उन के पास सत्य तो उन्होंने कह दिया कि यह जादू है तथा हम इसे मानने वाले नहीं हैं।

३१. तथा उन्होंने कहा कि क्यों नहीं उतारा[1] गया यह कुरआन दो बस्तियों मे से किसी बड़े व्यक्ति पर?

---

[1] अर्थात कुरआन से पहले की किसी ईश–पुस्तक में अल्लाह के सिवा किसी और की उपासना की शिक्षा दी ही नहीं गई है कि वह कोई पुस्तक ला सकें।

[2] आयत का भावार्थ यह है कि प्रत्येक युग के काफ़िर अपने पूर्वजों के अनुसरण के कारण अपने शिर्क और अँधविश्वास पर स्थित रहे।

[3] अर्थात मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

३२. क्या वही बाँटते[2] हैं आप के पालनहार की दया? हम ने बाँटा है उन के बीच उन की जीविका को संसारिक जीवन में। तथा हम ने उच्च किया है उन में से एक को दूसरे पर कई श्रेणियाँ। ताकि एक–दूसरे से सेवा कार्य लें. तथा आप के पालनहार की दया[3] उस से उत्तम है जिसे वह इकट्ठा कर रहे हैं।

३३. और यदि यह बात न होती कि सभी लोग एक ही नीति पर हो जाते तो हम अवश्य बना देते उन के लिये जो कुफ़्र करते है अत्यंत कृपाशील के साथ उन के घरों की छतें चाँदी की तथा सीढ़ियाँ जिन पर वह चढ़ते हैं।

३४. तथा उन के घरों के द्वार, और तख़्त जिन पर वह तकिये लगाये[4] रहते हैं।

३५. तथा बना देते शोभा। नहीं हैं यह सब कुछ परन्तु संसारिक जीवन के सामान। तथा आख़िरत[5] (परलोक) आप के पालनहार के यहाँ केवल आज्ञाकारियों के लिये है।

३६. और जो व्यक्ति अत्यंत कृपाशील (अल्लाह) के स्मरण से अँधा हो जाता हे तो हम उस पर एक शैतान नियुक्त कर देते हैं जो उस का साथी हो जाता है।

३७. और वह (शैतान) उन को रोकते हैं सीधी राह से । तथा वह समझते हैं कि वे सीधी राह पर हैं।

३८. यहाँ तक कि जब वह हमारे पास आयेगा तो यह कामना करेगा कि मेरे तथा तेरे (शैतान के) बीच पश्चिम तथा पूर्व की दूरी होती। तू बुरा साथी है।

३९. (उन से कहा जायेगा) : और तुम्हें कदापि कोई लाभ नहीं होगा आज, जब कि तुम ने अत्याचार कर लिया है। वास्तव में तुम सब यातना में साझी रहोगे।

४०. तो (हे नबी!) क्या आप सुना लेंगे बहरों को या सीधी राह देंगे अन्धों को तथा जो खुले कुपथ[1] में हों?

---

[1] मक्का के काफ़िरों ने कहा कि यदि अल्लाह को रसूल ही भेजना था तो मक्का और ताइफ़ के नगरों में से किसी प्रधान व्यक्ति पर कुरआन उतार देता। अब्दुल्लाह का अनाथ–निर्धन पुत्र मुहम्मद तो कदापि इस के योग्य नहीं है।

[2] आयत का भावार्थ यह है कि अल्लल्लाह ने जैसे संसारिक धन–धान्य में लोगों की विभिन्न श्रेणियाँ बनाई हैं उसी प्रकार नबूवत और रिसालत, जो उस की दया है, उन को भी जिस के लिये चाहा प्रदान किया है।

[3] अर्थात परलोक में स्वर्ग सदाचारी भक्तों को मिलेंगी।

[4] अर्थात सब मायामोह में पड़ जाते।

[5] भावार्थ यह है कि संसारिक धन–धान्य का अल्लाह के हाँ कोई महत्त्व नहीं है।

४१. फिर यदि हम आप को (संसार से) ले जायें तो भी हम उन से बदला लेने वाले हैं।

४२. अथवा आप को दिखा दें जिस (यातना) का हम ने उन को वचन दिया है तो निश्चय हम उन पर सामर्थ्य रखने वाले हैं।

४३. तो (हे नबी!) आप दृढ़ता से पकड़े रहें उसे जो हम आप की ओर वह्यी कर रहे हैं। वास्तव में आप सीधी राह पर हैं।

४४. निश्चय यह (कुरआन) आप के लिये तथा आप की जाति के लिये एक शिक्षा[२] है। और जल्द ही तुम से प्रश्न[३] किया जायेगा।

४५. तथा हे नबी! आप पूछ लें उन से जिन्हें हम ने भेजा है आप से पहले अपने रसूलों में से कि क्या हम ने बनायें हैं अत्यंत कृपाशील के अतिरिक्त वंदनीय जिन की वंदना की जाये?

४६. तथा हम ने भेजा मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन ओर उस के प्रमुखों की ओ। तो उस ने कहा: वास्तव में, मैं सर्वलोक के पालनहार का रसूल हूँ।

४७. और जब वह उन के पास लाया हमारी निशानियाँ तो सहसा वह उन की हँसी उड़ाने लगे।

४८. तथा हम उन को एक से बढ़कर एक निशानीयाँ दिखाते रहे। और हम ने पकड़ लिया उन्हें यातना में ताकि वह (ठट्ठा) से रुक जायें।

४९. और उन्होंने कहा : हे जादूगार! प्रार्थना कर हमारे लिये अपने पालनहार से उसवचन के आधार पर जो तुझ से किया है। वास्तव में हम सीधी राह पर आ जायेंगे।

५०. तो जैसे ही हम ने दूर किया उन से यातना को, तो वह सहसा वचन तोड़ने लगे।

---

[१] अर्थ यह है कि जो सच को न सुने तथा दिल का अँधा हो तो आप के सीधी राह दिखाने का उस पर कोई प्रभाव नहीं होगा।

[२] इस का पालन करने के संबन्ध में।

[३] पहले नबियों से पूछने का अर्थ उन की पुस्तकों तथा शिक्षाओं में यह बात देखनी है।

५१. तथा पुकारा फ़िरऔन ने अपनी जाति में। उस ने कहा: हे मेरी जाति! क्या नहीं है मेरे लिये मिस्र का राज्य तथा यह नहरें जो बह रही हैं मेरे नीचे से? तो क्या तुम देख नहीं रहे हो।

५२. मैं अच्छा हूँ या वह जो अपमानित (हीन) है और खुलकर बोल भी नहीं सकता?

५३. क्यों नहीं उतारे गये उस पर सोने के कंगन अथवा आये फ़रिश्ते उस के साथ पंक्ति बाँधे हुये?[१]

५४. तो उस ने झाँसा दे दिया अपनी जाति को और सब ने उस की बात मान ली। वास्तव में वह थे ही अवज्ञाकारी लोग।

५५. फिर जब उन्होंने हमें क्रोधित कर दिया तो हम ने उन से बदला ले लिया और सब को डुबो दिया।

५६. और बना दिया हम ने उन को गया गुज़रा और एक उदाहरण पश्चात के लोगों के लिये।

५७. तथा जब दिया गया मर्यम के पुत्र का[२] उदाहरण तो सहसा आप की जाति उस से प्रसन्न होकर शोर मचाने लगी।

५८. तथा मुश्रिकों ने कहा कि हमारे देवता अच्छे हैं या वे? उन्होंने नहीं दिया यह (उदाहरण) आप को परन्तु कुतर्क (झगड़ने) के लिये। बल्कि वह हैं ही बड़े झगड़ालू लोग।

५९. नहीं है वह[३] (ईसा) परन्तु एक भक्त(दास) जिस पर हम ने उपकार किया तथा उसे इस्राईल की संतान के लिये एक आदर्श बनाया।

---

[१] अर्थात यदि मूसा(अलैहिस्सलाम) अल्लाह का रसूल होता तो उस के पास राज्य और हाथों में सोने के कंगन तथा उस की रक्षा के लिये फ़रिश्तों को उस के साथ रहना चाहिये था। जैसे मेरे पास राज्य, हाथों में सोने के कंगन तथा सुरक्षा के लिये सेना है।

[२] आयत नं. ४५ में कहा गया है कि पहले नबियों की शिक्षा पढ़ कर देखो कि क्या किसी ने यह आदेश दिया है कि अल्लाह अत्यंत कृपाशील के सिवा दूसरों की इबादत की जाये? इस पर मुश्रिकों ने कहा कि ईसा (अलैहिस्सलाम) की इबादत क्यों की जाती है? क्या हमारे पूज्य उन से कम हैं?

[३] इस आयत में बताया जा रहा है कि यह मुश्रिक, ईसा (अलैहिस्सलाम) के उदाहरण पर बड़ा शोर मचा रहे है। और उसे कुतर्क स्वरूप प्रस्तुत कर रहे हैं। जब कि वह पूज्य नहीं, अल्लाह के दास है। जिन पर अल्लाह ने पुरस्कार किया और इस्राईल की संतान के लिये एक आदर्श बना दिया।

६०. और यदि हम चाहते तो बना देते तुम्हारे बदले फ़रिश्ते धरती में, जो एक–दूसरे का स्थान लेते।

६१. तथा वास्तव में वह (ईसा) एक बड़ा लक्षण[1] है प्रलय का। अत: कदापि संदेह न करो प्रलय के विषय में। और मेरी ही बात मानो। यही सीधी राह है।

६२. तथा तुम्हें कदापि न रोक दे शैतान। निश्चय वह तुम्हारा खुला शत्रु है।

६३. और जब आ गया ईसा खुली निशानियाँ लेकर तो कहा: मैं लाया हूँ तुम्हारे पास ज्ञान। और ताकि उजागर कर दूँ तुम्हारे लिये कुछ वह बातें जिन में तुम विभेद कर रहे हो। अत: अल्लाह से डरो और मेरा ही कहा मानो।

६४. वास्तव में अल्लाह ही मेरा पालनहार तथा तुम्हारा पालनहार है। अत: उसी की वंदना (इबादत) करो यही सीधी राह है।

६५. फिर विभेद कर लिया गिरोहों[2] ने आपस में। तो विनाश है उन के लिये जिन्होंने अत्याचार किया दु:खदायी दिन की यातना से।

६६. क्या वह बस इस की प्रतीक्षा कर रहे है कि प्रलय उन पर सहसा आ पड़े और उन्हें (उस का) संवेदन (भी) न हो?

६७. सभी मित्र उस दिन एक–दूसरे के शत्रु हो जायेंगे आज्ञाकारियों के सिवा।

६८. हे मेरे भक्तों! कोई भय नहीं है तुम पर आज। और न तुम उदासीन होगे।

६९. जो ईमान लाये हमारी आयतों पर तथा आज्ञाकारी बन के रहे।

७०. प्रवेश कर जाओ स्वर्ग में तुम तथा तुम्हारी पत्नियाँ। तुम्हें प्रसन्न रखा जायेगा।

७१. फिरायी जायेंगी उन पर सोने की थाले तथा प्याले। और उस में वह सब कुछ होगा जिसे उन का मन चाहेगा और जिसे उन की आँखें देख कर आनन्द लेंगी। और तुम सब उस में सदैव रहोंगे।

७२. और यह स्वर्ग है जिस के तुम उत्तराधिकारी बनाये गये हो अपने कर्मों के बदले जो तुम कर रहे थे।

७३. तुम्हारे लिये इस में बहुत से मेवे हैं जिन में से तुम खाते रहोगे।

---

[1] हदीस शरीफ़ में है आया है कि प्रलय की बड़ी दस निशानियों मे से इंसा (अलैहिस्सलाम) का आकाश से उतरना भी एक निशानी है। (सहीह मुस्लिम : २९०१)

[2] इस्राईली समुदायों में कुछ ने ईसा(अलैहिस्सलाम) को अल्लाह का पुत्र, किसी ने प्रभु तथा किसी ने उसे तीन का तीसरा (तीन खुदाओं में से एक) कहा। केबल एक ही समुदाय ने उन्हें अल्लाह का भक्त तथा नबी माना।

७४. निःसंदेह अपराधी नरक की यातना में सदावासी होंगे।
७५. उन से (यातना) हल्की नहीं की जायेगी तथा वे उस में निराश होंगे।
७६. और हम ने अत्याचार नहीं किया उन पर परन्तु वही अत्याचारी थे।
७७. तथा वह पुकारेंगे कि हे मालिक![1] हमारा काम ही तमाम कर दे तेरा पालनहार। वह कहेगाः तुम्हें इसी दशा में रहना है।
७८. (अल्लाह कहेगा) : हम तुम्हारे पास सत्य[2] लाये किन्तु तुम में से अधिक्तर को सत्य अप्रिय था।
७९. क्या उन्होंने किसी बात का निर्णय कर लिया है?[3] तो हम भी निर्णय कर देंगे।[4]
८०. क्या वह समझते हैं की हम नहीं सुनते हैं उन की गुप्त बातों तथा परामर्श को? क्यों नहीं, बल्कि हमारे फ़रिश्ते उन के पास ही लिख रहे हैं।
८१. (हे नबी!) आप उन से कह दें कि यदि अत्यंत कृपाशील (अल्लाह) की कोई संतान होती तो सब से पहले मैं उस का पुजारी होता।
८२. पवित्र है आकाशें तथा धरती का पालनहार सिंहासन का स्वामी उन बातों से जो वह कहते हैं।
८३. तो आप उन्हें छोड़ दें, वह वाद–विवाद तथा खेल–कूद करते रहें, यहाँ तक की अपने उस दिन से मिल जायें जिस से उन्हें डराया जा रहा है।
८४. वही है जो आकाश में वंदनीय और धरती में वंदनीय है। और वही हिक्मत और ज्ञान वाला हैं।
८५. शुभ है वह जिस के अधिकार में आकाशों तथा धरती का राज्य है तथा जो कुछ दोनो के मध्य है। तथा उसी के पास प्रलय का ज्ञान है। और उसी की ओर तुम सब प्रत्यागत किये जाओगे।
८६. तथा नहीं अधिकार रखते हैं जिन्हें वह पुकारते हैं अल्लाह के अतिरिक्त सिफ़ारिश का। हाँ (सिफारिश के योग्य वे है) जो सत्य[1] की गवाही दें, और (उसे) जानते भी हों।

---

[1] मालिकः नरक के अधिकारी फ़रिश्ते का नाम है।
[2] अर्थात नबियों द्वारा।
[3] अर्थात सत्य के इन्कार का।
[4] अर्थात उन्हें यातना देने का।

८७. और यदि आप उन से प्रश्न करें कि किस ने पैदा किया है उन को? तो वह अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने। तो फिर वह कहाँ फिरे जा रहे हैं?[२]

८८. तथा रसूल की यह बात कि, हे मेरे पालनहार!यह वे लोग हैं जो ईमान नहीं लाते।

८९. तो आप उन से विमुख हो जायें, तथा कह दें कि सलाम[३] है। शीघ्र ही उन्हें ज्ञान हो जायेगा।

*****

[१] सत्य से अभिप्राय धर्म–सूत्र ''ला इलाहा इल्लल्लाह'' है। अर्थात जो इसे जान बूझ कर स्वीकार करते हों तो शफ़ाअत उन्हीं के लिये होगी। उन काफ़िरों के लिये नहीं जो मुर्तियों को पुकारते हैं। अथवा इस से अभिप्राय यह है कि सिफ़ारिश का अधिकार उन को मिलेगा जिन्होंने सत्य को स्वीकार किया है। जैसे अम्बिया, धर्मात्मा तथा फ़रिश्तों को, न कि झूठे उपास्यों को जिन को मुश्रिक अपना सिफ़ारिशी समझते हैं।

[२] अर्थात अल्लाह की उपासना से।

[३] अर्थात उन से न उलझें।

सूरह दुख़ान – ४४

सूरह दुख़ान के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ५९ आयते हैं।

- इस की आयत १० में आकाश से दुख़ान (धुवें) के निकलने की चर्चा है इसलिये इस का नाम सूरह दुख़ान है।
- इस की आरंभिक आयतों में कुरआन का महत्त्व बताया गया है। फिर आयत ७–८ में कुरआन उतारने वाले का परिचय कराया गया है।
- आयत ९ से ३३ तक फ़िरऔन की जाति के विनाश और बनी इस्राईल की सफलता को एक ऐतिहासिक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया गया है कि रसूल के विरोधियों का दुष्परिणाम कैसा हुआ। और उन के अनुयायी किस प्रकार सफल हुये।
- आयत ३४ ते ५७ तक दूसरे जीवन के इन्कार तथा उस का विश्वास कर के जीवन व्यतीत करने का अलग–अलग फल बताया गया है जो प्रलय के दिन सामने आयेगा।
- अन्तिम आयतों में उन को सावधान किया गया है जो कुरआन का आदर नहीं करते। अर्थात इस सूरह के आरंभिक विषय ही में इस का अन्त भी किया गया है।
- हदीस में है कि जब मक्कावासियों ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कड़ा विरोध किया तो आप ने अल्लाह से दुआ की, कि यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के अकाल के समान इन पर भी सात वर्ष का अकाल भेज दे। और फिर उन पर ऐसा अकाल आया कि प्रत्येक चीज़ का नाश कर दिया गया। और वह मुर्दार खाने पर बाध्य हो गये। और यह दशा हो गयी कि जब वह आकाश की ओर देखते तो भूक के कारण धूवाँ जैसा दिखाई देता था। (देखिये : सहीह बुख़ारी: ४८२३, ४८२४)

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. हा, मीम।

२. शपथ है इस खुली पुस्तक की।

३. हम ने ही उतारा है इस[१] को एक शुभ रात्री में। वास्तव में हम सावधान करने वाले हैं।

४. उसी (रात्रि) में निर्णय किया जाता है प्रत्येक सुदृढ़ कर्म का।

५. यह (आदेश) हमारे पास से है। हम ही भेजने वाले हैं रसूलों को।

६. आप के पालनहार की दया से, वास्तव में वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

७. जो आकाशों तथा धरती का पालनहार है तथा जो कुछ उन दोनों के बीच है, यदि तुम विश्वास करने वाले हो।

८. नहीं है कोई वंदनीय परन्तु वही जो जीवन देता तथा मारता हैं। तुम्हारा पालनहार तथा तुम्हारे गुज़रे हुये पूर्वजों का पालनहार है।

९. बल्कि वह (मुश्रिक) संदेह में खेल रहे हैं।

१०. तो आप प्रतीक्षा करें उस दिन जब आकाश खुला धुवाँ[२] लायेगा।

११. जो छा जायेगा सब लोगों पर। यही दुःखदायी यातना है।

१२. (वे कहेंगे) : हमारे पालनहार हम से यातना दूर कर दे। निश्चय हम ईमान लाने वाले हैं।

१३. और उन के लिये शिक्षा का समय कहाँ रह गया? जब कि उन के पास आ गये एक रसूल (सत्य को) उजागर करने वाले।

---

[१] शुभ रात्री से अभिप्राय (लैलतुल कद्र) है यह रमज़ान के महीने के अन्तिम दशक की एक विषम रात्री होती है। यहाँ आगे बताया जा रहा है कि इसी रात्री में पूरे वर्ष होने वाले विषय का निर्णय किया जाता है। इस शुभ रात्र की विशेषता तथा प्रधानता के लिये सूरह कद्र देखिये। इसी शुभ रात्रि में नवी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर कुरआन उतरने का आरंभ हुआ। फिर २३ वर्षों तक आवश्यकतानुसार विभिन्न समय में उतरता रहा। (देखियेः सूरह बक़रा, आयत नं. १८५)

[२] इस प्रत्यक्ष धुंवे तथा दुःखदायी यातना की व्याख्या सहीह हदीस में यह आयी है कि जब मक्कावासियों ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कड़ा विरोध किया तो आप ने यह शाप दिया कि हे अल्लाह! उन पर सात वर्ष का आकाल भेज दे। और जब आकाल आया तो भूक के कारण उन्हें धुवाँ जैसा दिखायी देने लगा। तब उन्होंने आप से कहा कि आप अल्लाह से प्रार्थना कर दें। वह हम से आकाल दूर कर देगा तो हम ईमान ले आयेंगे। और जब आकाल दूर हुआ तो फिर अपनी स्थिती पर आ गये। फिर अल्लाह ने बद्र के युद्ध के दिन उन से बदला लिया। (सहीह बुख़ारी : ४८२१, तथा सहीह मुस्लिम : २७९८)

१४. फिर भी वह आप से मुँ फेर गये तथा कह दिया कि एक सिखाया हुआ पागल है।
१५. हम दूर कर देने वाले हैं कुछ यातना, वास्तव में तुम फिर अपनी प्रथम स्थिती पर आ जाने वाले हो।
१६. जिस दिन हम अत्यंत कड़ी पकड़[१] में ले लेंगे। तो हम निश्चय बदला लेने वाले हैं।
१७. तथा हम ने परीक्षा ली इन से पूर्व फ़िरऔन की जाति की। तथा उन के पास एक आदरणीय रसूल आया।
१८. कि मुझे सौंप दो अल्लाह के भक्तों को। निश्चय मैं तुम्हारे लिये एक अमानतदार रसूल हूँ।
१९. तथा अल्लाह के विपरीत घमंड न करो। मैं तुम्हारे सामने खुला प्रमाण प्रस्तुत करता हूँ।
२०. तथा मैंने शरण ली है अपने पालनहार की तथा तुम्हारे पालनहार की इस से कि तुम मुझ पर पथराव कर दो।
२१. और यदि तुम मेरा विश्वास न करो तो मुझ से परे हो जाओ।
२२. अन्ततः मूसा ने पुकारा अपने पालनहार को, कि वास्तव में यह लोग अपराधी हैं।
२३. (हम ने आदेश दिया) कि निकल जा रातो–रात मेरे भक्तों को लेकर। निश्चय तुम्हारा पीछा किया जायेगा।
२४. तथा छोड़ दे सागर को उस की दशा पर खुला। वास्तव में यह डूब जाने वाली सेना हैं।
२५. वह छोड़ गये बहुत से बाग़ तथा जल स्रोत।
२६. तथा केतियाँ और सुखदायी स्थान।
२७. तथा सुख के साधन जिन में वह आनन्द ले रहे थे।
२८. इसी प्रकार हुआ। और हम ने उन का उत्तरधिकारी बना दिया दूसरे[२] लोगों को।

---

[१] यह कड़ी पकड़ का दिन बद्र के युद्ध का दिन है। जिस में उन के बड़े बड़े सत्तर प्रमुख मारे गये तथा इतनी ही संख्या में बंदी बनाये गये। और उन की दूसरी पकड़ कयामत के दिन होगी जो इस से भी बड़ी और गंभीर होगी।

[२] अर्थात बनी इस्राईल (यॉकूब अलैहिस्सलाम की संतान) को।

२९. तो नहीं रोया उन पर आकश और न धरती, और न उन्हें अवसर (समय दिया गया।
३०. तथा हम ने बचा लिया इस्राईल की संतान को अपमानकारी यातना से।
३१. फ़िरऔन से। वास्तव में वह चढ़ा हुआ उल्लंघनकारियों में से था।
३२. तथा हम ने प्रधानता दी उन को जानते हुये संसारवासियों पर।
३३. तथा हम ने उन्हें प्रदान की ऐसी निशानियाँ जिन में खुली परीक्षा थी।
३४. वास्तव में यह[1] कहते हैं कि,
३५. हमें तो बस प्रथम बार मरना है तथा हम फिर जीवित नहीं किये जायेंगे।
३६. फिर यदि तुम सच्चे हो तो हमारे पूर्वजों को (जीवित कर के) ला दो।
३७. यह अच्छे हैं अथवा तुब्बअ की जाति[२], तथा जो उन से पूर्व रहे हैं? हम ने उन का विनाश कर दिया। निश्चय वह अपराधी थे।
३८. तथा हम ने आकाशों और धरती को एवं जो कुछ उन दोनों के बीच है खेल नहीं बनाया है।
३९. हम ने नहीं पैदा किया है उन दोनों को परन्तु सत्य के आधार पर। किन्तु अधिक्तर लोग इसे नहीं जानते हैं।
४०. निःसंदेह निर्णय[३] का दिन उन सब का निश्चत समय है।
४१. जिस दिन कोई साथी किसी साथी के कुछ काम नहीं आयेगा और न उन की सहायता की जायेगी।
४२. परन्तु जिस पर अल्लाह की दया हो जाये तो वास्तव में वह बड़ा प्रभावशाली दयावान है।
४३. निःसंदेह ज़क्कूम (थोहड़) का वृक्ष।
४४. पापियों का भोजन है।

---

[1] अर्थात मक्का के मुश्रिक कहते हैं कि संसारिक जीवन ही अन्तिम जीवन है। इस के पश्चात् परलोक का जीवन नहीं है।

[२] तुब्बअ की जाति से अभिप्राय यमन की जाति सबा है। जिस के विनाश का वर्णन सूरह सबा में किया गया है। तुब्बअ हिमयर जाति के शासकों की उपाधि थी जिसे उन की अवैज्ञा के कारण ध्वस्त कर दिया गया। (देखिये : सूरह सबा की आयत – १५ से १९)

[३] अर्थात आकाशों तथा धरती की रचना लोगों की परीक्षा के लिये की गई है और परीक्षा फल के लिये प्रलय का समय निर्धारित कर दिया गया है।

४५. पिघले हुये तांबे जैसा, जो खौलेगा पेटों में।
४६. गर्म पानी के खौलने के समान।
४७. (आदेश होगा कि) उसे पकड़ो, तथा धक्का देते नरक के बीच तक पहुँचा दो।
४८. फिर बहाओ उस के सिर के ऊपर अत्यंत गर्म जल की यातना।[१]
४९. (तथा कहा जायेगा कि) चख, क्योंकि तू बड़ा आदरणीय सम्मानित था।
५०. यही वह चीज़ है जिस में तुम संदेह कर रहे थे।
५१. निःसंदेह आज्ञाकारी शान्ति के स्थान में होंगे।
५२. बाग़ों तथा जल स्रोतों में।
५३. वस्त्र धारण किये हुये महीन तथा कोमल रेशम के एक–दूसरे के सामने (आसीन) होंगे।
५४. इसी प्रकार होगा। तथा हम विवाह देंगे उन को हूरों से।[२]
५५. वह माँग करेंगे उस में प्रत्येक प्रकार के मेवों की निश्चित होकर।
५६. वह उस स्वर्ग में मौत[३] नहीं चखेंगे प्रथम (संसारिक) मौत के सिवा। तथा (अल्लाह) बचा देगा उन्हें नरक की यातना से।
५७. आप के पालनहार की दया से वही बड़ी सफलता है।
५८. तो हम ने सरल कर दिया इस (कुरआन) को आप की भाषा में ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें।
५९. अतः आप प्रतीक्षा करें[४] वह भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

*****

[१] हदीस में है कि इस से जो कुछ उस के भीतर होगा पिघल कर दोनों पाँव के बीच से निकल जायेगा, फिर उसे अपनी पहली दशा पर कर दिया जायेगा। (तिर्मिजी : २५८२)

[२] हूरः अर्थात गोरी और बड़े बड़े नैनों वाली स्त्रियों।

[३] हदीस में है कि जब स्वर्गी स्वर्ग में और नारकी नरक में चले जायेंगे तो मौत को स्वर्ग और नरक के बीच ला कर बध कर दिया जायेगा। और एलान कर दिया जायेगा कि अब मौत नहीं होगी। जिस से स्वर्गी प्रसन्न पर प्रसन्न हो जायेंगे और नारकियों को शोक पर शोक हो जायेगा। (सहीह बुख़ारी : ६५४८, सहीह मुस्लिम : २८५०)

[४] अर्थात परिणाम की।

सूरह जासियह – ४५

सूरह जासियह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ३७ आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत २८ में प्रलय के दिन प्रत्येक समुदाय के जासियह अर्थात घुटनों के बल गिरे हुये होने की चर्चा की गई है। इसलिये इस का नाम सूरह जासियह है।
- इस की आरंभिक आयतों मे तौहीद की निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है। जिस की ओर कुरआन बुला रहा है।
- इस की आयत ७ से १५ तक में अल्लाह की आयतें न सुनने पर परलोक में बुरे परिणाम से सावधान किया गया है। और ईमान वालों को निर्देश दिया गया है कि वे विरोधियों को क्षमा कर दें।
- आयत १६ से २० तक में बनी इस्राईल को चेतावनी दी गई है कि उन्होंने धर्म का परस्कार पा कर उस में विभेद कर लिया? और अब जो धर्म विधान उतारा जा रहा है उस का पालन करें।
- आयत २१ से ३५ में परलोक के प्रतिफल के बारे में कुछ संदेहों का निवारण किया गया है।
- इस की अंतिम आयतों में अल्लाह की प्रशंसा का वर्णन किया गया है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. हा, मीम।

२. इस पुस्तक[1] का उतरना अल्लाह, सब चीज़ों और गुणों को जानने वाले की ओर से है।

३. वास्तव में आकाशों तथा धरती में बहुत सी निशानियाँ (लक्षण) है ईमान लाने वालों के लिये।

४. तथा तुम्हारी उत्पत्ति में तथा जो फैला[2] दिये हैं उस ने जीव, बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो विश्वास रखते हों।

५. तथा रात और दिन के आने–जाने में, तथा अल्लाह ने आकाश से जो जीविका उतारी है, फिर जीवित किया है उस के द्वारा धरती को उस के मरने के पश्चात तथा हवाओं के फेरने में बड़ी निशानियाँ हैं उन के लिये जो समझ–बूझ रखते हों।

६. यह अल्लाह की आयतें हैं जो वास्तव में हम तुम्हें सुना रहें हैं। फिर कौन सी बात रह गई है अल्लाह तथा उस के आयतों के पश्चात् जिस पर वह ईमान लायेंगे?

७. विनाश है प्रत्येक झूठे पापी के लिये।

८. जो अल्लाह की उन आयतों को जो उस के सामने पढ़ी जायें सुने, फिर भी वह अकड़ता हुआ (कुफ़्र पर) अड़ा रहे, जैसे कि उन को सुना ही न हो! तो आप उसे दुःखदायी यातना की सूचना पहुँचा दें।

९. और जब उसे ज्ञान हो हमारी किसी आयत का तो उसे उपहास बना ले। यही है जिन के लिये अपमानकारी यातना है।

---

[1] इस सूरह में भी तौहीद तथ परलोक के संबन्ध में मुश्रिकों के संदेह को दूर किया गया तथा उन की दुराग्रह की निन्दा की गई है।

[2] तौहीद (एकेश्वरवाद) के प्रकरण में कुरआन ने प्रत्येक स्थान पर आकाश तथा धरती में अल्लाह के सामर्थ्य की फैली हुई निशानियों को प्रस्तुत किया है। और यह बताया है कि जैसे उस ने वर्षा द्वारा मनुष्य के आर्थिक जीवन की व्यवस्था की है वैसे ही रसूलों तथा पुस्तकों द्वारा उस के आत्मिक जीवन की भी व्यवस्था कर दी है जिस पर आश्चर्य नहीं होना चाहिये। यह विश्व की व्यवस्था स्वयं ऐसी खुली पुस्तक है जिस के पश्चात ईमान लाने के लिये किसी और प्रमाण की आवश्यकता नहीं है।

१०. तथा उन के आगे नरक है। और नहीं काम आयेगा उन के जो कुछ उन्होंने कमाया है और न जिसे उन्होंने अल्लाह के सिवा संरक्षक बनाया है और उन्हीं के लिये कड़ी यातना है।

११. यह (कुरआन) मार्गदर्शन है। तथा जिन्होंने कुफ़्र किया अपने पालनहार की आयतों के साथ तो उन्हीं के लिये यातना है दु:खदायी यातना।

१२. अल्लाह ही ने वश में किया है तुम्हारे लिये सागर को ताकि नाव चले उस में उस के आदेश से। और ताकि तुम खोज करो उस के अनुग्रह (दया) की। और ताकि तुम उस के कृतज्ञ (आभारी) बनो।

१३. तथा उस ने तुम्हारी सेवा में लगा रखा है जो कुछ आकाशों तथा धरती में है सब को अपनी ओर से। वास्तव में इस में बहुत सी निशानियाँ हैं उन के लिये जो सोच–विचार करें।

१४. (हे नबी!) आप उन से कह दें जो ईमान लाये हैं कि क्षमा कर[१] दें उन को जो आशा नहीं रखते हैं अल्लाह के दिनों[२] की, ताकि वह बदला दे एक समुदाय को उन की कमाई का।

१५. जिस ने सदाचार किया तो अपने भले के लिये किया। तथा जिस ने दुराचार किया तो अपने ऊपर किया। फिर तुम (प्रतिफल के लिये) अपने पालनहार की ओर ही फेरे[३] जाओगे।

१६. तथा हम ने प्रदान की इस्राईल की संतान को पुस्तक, तथा राज्य और नबूवत (दूतत्व), और जीविका दी उन को स्वच्छ चीजों से तथा प्रधानता दी उन्हें (उनके युग के) संसारवासियों पर।

१७. तथा दिये हम ने उन को खुले आदेश। तो उन्होंने विभेद नहीं किया परन्तु अपने पास ज्ञान[४] आ जाने के पश्चातथ आपस के द्वेष के कारण। नि:संदेह आप का पालनहार ही निर्णय करेगा उन के बीच प्रलय के दिन जिस बात में वह विभेद कर रहे हैं।

---

[१] अर्थात उन की ओर से जो दु:ख पहुँचता है।

[२] अल्लाह के दिनों से अभिप्राय वे दिन हैं जिन में अल्लाह ने अपराधियों को यातनायें दी हैं। (देखिये : सूरह इब्राहीम:५)

[३] अर्थात प्रलय के दिन। जिस अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया है उसी के पास जाना भी है।

[४] अर्थात वैध तथा अवैध, और सत्योसत्य का ज्ञान आ जाने के पश्चात्।

१८. फिर (हे नबी!) हम ने कर दिया आप को एक खुले धर्म विधान पर, तो आप अनुसरण करें इसका, तथा न चलें उन की आकांक्षाओ पर ज्ञान नहीं रखते।
१९. वास्तव में वह आप के काम न आयेंगे अल्लाह के सामने कुछ। यह अत्याचारी एक–दूसरे के मित्र हैं। और अल्लाह अज्ञाकारियों का साथी है।
२०. यह (कुरआन) सूझ की बातें हैं सब मनुष्यों के लिये। तथा मार्गदर्शन एवं दया है उन के लिये जो विश्वास करें।
२१. क्या समझ रखा है जिन्होंने दुष्कर्म किया है कि हम कर देंगे उन को उन के समान जो ईमान लाये तथा सदाचार किये हैं कि उन का जीवन तथा मरण समान[1] हो जाये? वह बुरा निर्णय कर रहे हैं।
२२. तथा पैदा किया है अल्लाह ने आकाशों एवं धरती को न्याय के साथ और ताकि बदला दिया जाये प्रत्येक प्राणी को उस के कर्म का तथा उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।
२३. क्या आप ने उसे देखा जिस ने बना लिया अपना पूज्य अपनी इच्छा को। तथा कुपथ कर दिया अल्लाह ने उसे जानते हुये, और मुहर लगा दी उस के कान तथा दिल पर, और बना दिया उस की आँख पर आवरण (पर्दा)? फिर कौन है जो सीधी राह दिखायेगा उसे अल्लाह के पश्चात? तो क्या तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते?
२४. तथा उन्होंने कहा कि हमारा यही संसारिक जीवन है। और हमारा विनाश युग (काल) ही करता है। उन्हें इस का कोई ज्ञान नहीं। वे केवल अनुमान की बात[2] कर रहे हैं।
२५. और जब पढ़ कर सुनाई जाती है उन्हें हमारी खुली आयतें तो उन का तर्क केवल यह होता है कि ला दो हमारे पूर्वजों को यदि तुम सच्चे हो।

[1] अर्थात दोनों के परिणाम में अवश्य अन्तर होगा।

[2] हदीस में है कि अल्लाह फ़रमाता है कि मनुष्य मुझे बुरा कहता है। वह युग को बुरा कहता है जब कि युग मैं हूँ। रात और दिन मेरे हाथ में है। (सहीह बुख़ारी : ६१८१) हदीस का अर्थ यह है कि युग को बुरा कहना अल्लाह को बुरा कहना है। क्योंकि युग में जो होता है उसे अल्लाह ही करता है।

२६. आप कह दें : अल्लाह ही तुम्हें जीवन देता तथा मारता है, फिर एकत्र करेगा तुम्हें प्रलय के दिन जिस में कोई संदेह नहीं। परन्तु अधिक्तर लेग (इस तथ्य को) नहीं[1] जानते।

२७. तथा अल्लाह ही का है आकाशों तथा धरती का राज्य और जिस दिन स्थापना होगी प्रलय की तो उस दिन क्षति में पड़ जायेंगे झूठे।

२८. तथा देखेंगे आप प्रत्येक समुदाय को घुटनों के बल गिरा हुआ। प्रत्येक समुदाय पुकारा जायेगा अपने कर्म–पत्र की ओर। आज बदला दिया जायेगा तुम लेगों को तुम्हारे कर्मों का।

२९. यह हमारा कर्म–पत्र है जो बोल रहा है तुम पर सहीह बात। वास्तव में हम लिखवा रहे थे जो कुछ तुम कर रहे थे।

३०. तो जो ईमान लाये तथा सदाचार किये उन्हें प्रवेश देगा उन का पालनहार अपनी दया में यही प्रत्यक्ष (खुली) सफलता है।

३१. परन्तु जिन्होंने कुफ्र किया (उन से कहा जायेगा) : क्य मेरी आयतें तुम्हें पढ़ कर नहीं सुनाई जा रही थीं? तो तुम ने घमंड किया, तथा तुम अपराधी बन कर रहे?

३२. तथा जब कहा जाता था कि निश्चय अल्लाह का वचन सच्च है तथा प्रलय होने में तनिक भी संदेह नहीं तो तुम कहते थे कि प्रलय क्या है? हम तो केवल एक अनुमान रखते हैं तथा हम विश्वास करने वाले नहीं हैं।

३३. तथा खुल जायेंगी उन के लिये उन के दुष्कर्मों की बुराईयाँ और घेर लेगा उन को जिस का वह उपहास कर रहे थे।

३४. और कहा जायेगा कि आज हम तुम्हें भुला देंगे[2] जैसे तुम ने इस दिन से मिलने को भुला दिया। और तुम्हारा कोई सहायक नहीं है।

---

[1] आयत का अर्थ यह है कि जीवन और मौत देना अल्लाह के हाथ में है। वही जीवन देता है तथा मारता है। और उस ने संसार में मरने के बाद प्रलय के दिन फिर जीवित करने का समय रखा है। ताकि उन के कर्मों का प्रतिफल प्रदान करे।

[2] जैसे हदीस में आता है कि अल्लाह अपने कुछ बंदों से कहेगा: क्या मैंने तुम्हें पत्नी नहीं दी थी? क्या मैंने तुम्हें सम्मान नहीं दिया था? क्या मैंने घोड़े तथा बैल इत्यादि तेरे अधीन नहीं किये थे? तू सरदारी भी करता तथा चुंगी भी लेता रहा। वह कहेगा: हाँ ये सही है, हे मेरे पालनहार! फिर अल्लाह उस से प्रश्न करेगा: क्या तुम्हें मुझ से मिलने का विश्वास था? वह कहेगा : ''नहीं।'' अल्लाह फरमायेगा: (तो आज मैं तुझे नरक में डाल कर भूल जाऊँगा जैसे तू मुझे भूला रहा। (सहीह मुस्लिम : २९६८)

३५. यहा (यातना) इस कारण है कि तुम ने बना लिया था अल्लाह की आयतों को उपहास, तथा धोखे में रखा तुम्हें संसारिक जीवन ने। तो आज वे नहीं निकाले जायेंगे (यातना से)। और न उन्हें क्षमा माँगने का अवसर दिया जायेगा।[१]

३६. तो अल्लाह के लिये सब प्रशंसा है जो आकाशें तथा धरती का पालनहार एवं सर्वलोक का पालनहार है।

३७. और उसी की महिमा[२] है आकाशों तथा धरती में और वही प्रबल और सब गुणों को जानने वाला है।

*****

[१] अर्थात अल्लाह की निशानियों तथा आदेशों का उपहास तथा दुनिया के धोखे में लिप्त रहना। यह दो अपराध ऐसे हैं जिन्होंने तुम्हें नरक की यातना का पात्र बना दिया। अब उस से निकलने की संभावना नहीं। तथा न इस बात की आशा है कि किसी प्रकार तुम्हें तौबा तथा क्षमा याचना का अवसर प्रदान कर दिया जाये। और तुम क्षमा माँग कर अल्लाह को मना लो।

[२] अर्थात महिमा और बड़ाई अल्लाह के लिये विशेष है। जैसा कि एक हदीस कुद्सी में अल्लाह तआला ने फरमाया है कि महिमा मेरी चादर है तथा बड़ाई मेरा तहबंद है। और जो भी इन दोनों में से किसी एक को मुझ से खींचेगा तो बैं उसे नरक में फेंक दूँगा। (सहीह मुस्लिम : २६२०)

सूरह अह्क़ाफ़ – ४६

सूरह अहक़ाफ़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ३५ आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत २१ में आद जाति की बस्ती ''अह्क़ाफ़'' की चर्चा की गई है जो यमन के समीप एक रेतीला क्षेत्र है। इसी कारण इस का नाम सूरह अह्क़ाफ़ है।
- इस की आयत २१ से २८ तक में कुरआन के अल्लाह की बाणी होने का दावा प्रस्तुत करते हुये शिर्क के अनुचित होने को उजागर किया गया है। और नबूवत से संबंधित संदेहों का निवारण किया गया है। इसी के साथ ईमान वालों को दिलासा तथा शुभसूचना दी गई है। और काफ़िरों के बूरे परिणाम से सावधान किया गया है।
- इस में (आद) जाति के परिणाम से शिक्षा प्राप्त करने को कहा गया है।
- आयत २९ से ३२ तक जिन्नों के कुरआन पाक सुनने, तथा उस पर ईमान लाने का वर्णन है।
- इस में मरने के पश्चात् जीवन से संबंधित संदेह को दूर किया गया है। और नरक की यातना से सावधान किया गया है।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सहन करने का निर्देश दिया गया है। क्योंकि आप से पूर्व जो नबी आये थे उन को भी विभिन्न प्रकार से सताया गया था परन्तु उन्होंने धैर्य धारण किया।

*****

अल्लाह के ना से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. हा, मीम।

२. इस पुस्तक का उतरना अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वदर्शी की ओर से है।

३. हम ने नहीं उत्पन्न किया है आकाशों तथा धरती को और जो कुछ उन के बीच है परन्तु सत्य के साथ एक निश्चित अवधि तक के लिये। तथा जो काफ़िर हैं उन्हें जिस बात से सावधान किया जाता है वे उस से मुँह मोड़े हुये हैं।

४. आप कहें कि भला देखो कि जिस तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा, तनिक मुझे दिखा दो कि उन्होंने क्या उत्पन्न किया है धरती में से? अथवा उन का कोई साझा है आकाशों में? मेरे पास कोई पुस्तक[1] प्रस्तुत करो इस से पूर्व की, अथवा बचा हुआ कुछ[2] ज्ञान यदि तुम सच्चे हो।

५. तथा उस से अधिक बहका हुआ कौन हो सकता है जो अल्लाह के सिवा उसे पुकारता हो जो उस की प्रार्थना स्वीकार न कर सके प्रलय तक। और वह उस की प्रार्थना से निश्चेत (अन्जान) हों?

६. तथा जब लोग एकत्र किये जायेंगे तो वह उन के शत्रु हो जायेंगे और उन की इबादत का इन्कार कर[3] देंगे।

७. और जब पढ़ कर सुनाई गईं उन को हमारी खुली आयतें तो काफ़िरों ने उस सत्य को जो उन के पास आ चुका है, कह दिया कि यह तो खुला जादू है।

८. क्या वह कहते हैं कि आप ने इसे[4] स्वयं बना लिया है? आप कह दें कि यदि मैं ने इसे स्वयं बना लिया है तो तुम मुझे अल्लाह की पकड़ से बचाने का कोई अधिकार

---

[1] अर्थात यदि तुम्हें मेरी शिक्षा का सत्य होना स्वीकार नहीं तो किसी धर्म की आकाशीय पुस्तक ही से सिद्ध कर के दिखा दो कि सत्य की शिक्षा कुछ और है। और यह भी न हो सके तो किसी ज्ञान पर आधारित कथन और रिवायत ही से सिद्ध कर दो कि यह शिक्षा पूर्व के नबियों ने नहीं दी है। अर्थ यह है कि जब आकाशों और धरती की रचना अल्लाह ही ने की है तो उस के साध दूसरों को पूज्य क्यों बनाते हो?

[2] अर्थात इस से पहले वाली आकाशीय पुस्तकों का।

[3] इस विषय की चर्चा कुरआन की अनेक आयतों में आई है। जैसे सूरह यूनुस, आयत: २९०, सूरह मर्यम, आयत: ८१, ८२, सूरह अन्कबूत, आयत: २५, आदि।

[4] अर्थात कुरआन को।

नहीं रखते।[1] वही अधिक ज्ञानी है उन बातों का जो तुम बना रहे हो। वही पर्याप्त है गवाह के लिये मेरे तथा तुम्हारे बीच। और वह बड़ा क्षमाशील दयावान् है।

९. आप कह दें कि मैं कोई नया रसूल नहीं हूँ, और न मैं जानता कि मेरे साथ क्या होगा[2] और न तुम्हारे साथ। मैं तो केवल अनुसरण कर रहा हूँ उस का जो मेरी ओर वह्यी (प्रकाशना) की जा रही है। मैं तो केवल खुला सावधान करने वाला हूँ।

१०. आप कह दें: तुम बताओ यदि यह (कुरआन) अल्लाह की ओर से हो और तुम उसे न मानो जब कि गवाही दे चुका है एक गवाह, इस्राईल की संतान में से इसी जैसी बात[3] पर, फिर वह ईमान लाया तथा तुम घमंड कर गये? तो वास्तव में अल्लाह सुपथ नहीं दिखाता अत्याचारी जाति को।[4]

११. और काफ़िरों ने कहा, उन से जो ईमान लाये यदि यह (धर्म) उत्तम होता तो वह पहले नहीं आते हम से उस की ओर। और जब नहीं पाया मार्गदर्शन उन्होंने इस (कुरआन) से तो अब यही कहेंगे कि यह तो पुराना झूठ है।

१२. जब कि इस से पूर्व मूसा की पुस्तक मार्गदर्शक तथा दया बनकर आ चुकी। और यह पुस्तक (कुरआन) सच्च[5] बताने वाली है अर्बी भाषा में।[6] ताकि वह सावधान कर दे अत्याचारियों को और शुभसूचना हो सदाचारियों के लिये।

१३. निश्चय जिन्होंने कहा कि हमारा पालनहार अल्लाह है। फिर उस पर स्थित रह गये तो कोई भय नहीं होगा उन पर, और न वह[1] उदासीन होंगे।

---

[1] अर्थात अल्लाह की यातना से मेरी कोई रक्षा नहीं कर सकता। (देखिये : सूरह अह्क़ाफ़, आयत : ४४, ४७)

[2] अर्थात संसार में। अन्यथा यह निश्चित है कि परलोक में ईमान वाले के लिये स्वर्ग तथा काफ़िर के लिये नरक है। किन्तु किसी निश्चित व्यक्ति के परिणाम का ज्ञान किसी को नहीं।

[3] जैसे इस्राईली विद्वान अब्दुल्लाह पुत्र सलाम ने इसी कुरआन जैसी बात के तौरात में होने की गवाही दी कि तौरात में मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के नबी होने का वर्णन है। और वे आप पर ईमान भी लाये। (सहीह बुख़ारी : ३८१३, सहीह मुस्लिम : २४८४)

[4] अर्थात अत्याचारियों को उन के अत्याचार के कारण हीकुपथ में रहने देता है। ज़बरदस्ती किसी को सीधी राह पर नहीं चलाता।

[5] अपने पूर्व की आकाशीय पुस्तकों को।

[6] अर्थात इस की कोई मूल शिक्षा ऐसी नहीं जो मूसा की पुस्तक में न हो। किन्तु यह अर्बी भाषा में है। इसलिये कि इस से प्रथम सम्बोधित अरब लोग थे। फिर सारे लोग। इसीलिये कुरआन का अनुवाद प्रआचीन काल ही से दूसरी भाषाओं में किया जा रहा है। ताकि जो अर्बी नहीं समझते वह भी उस से शिक्षा ग्रहण करें।

१४. यही स्वर्गीय है जो सदावासी होंगे उस में उन कर्मों के प्रतिफल (बदले) में जो वे करते रहे।

१५. और हम न निर्देश दिया है मनुष्य को अपने माता पिता के साथ उपकार करने का। उसे गर्भ में रखा है उस की माँ ने दु:ख झेलकर। तथा जन्म दिया उस को दु:ख झेलकर। तथा उस के गर्भ में रखने तथा दूध छुड़ाने की अवधि तीस महीने रही।[2] यहाँ तक कि जब वह अपनी पूरी शक्ति को पहुँचा तथा चालीस वर्ष का हुआ, तो कहने लगा: हे मेरे पालनहार! मुझे क्षमता दे कि कृतज्ञ रहूँ तेरे उस पुरस्कार का जो तूने प्रदान किया है मुझ को तथा मेरे माता–पिता को। तथा ऐसा सत्कर्म करूँ जिस से तू प्रसन्न हो जाये। तथा सुधार दे मेरे लिये मेरी संतान को, मैं ध्यानमग्न हो गया तेरी ओर। तथा मैं निश्चय मुस्लिमों में से हूँ।

१६. वही हैं स्वीकार कर लेंगे हम जिन से उन के सर्वोत्तम कर्मों को, तथा क्षमा कर देंगे उन के दुष्कर्मों को। (वह) स्वर्ग वासियों में हैं उस सत्य वचन के अनुसार जो उन से किया जाता था।

१७. तथा जिस ने कहा अपने माता पिता से: धिक हैं तुम दोनों पर! क्या मुझे डरा रहे हो कि मैं (धरती से) निकाला[3] जाऊँगा जब कि बहुत से युग बीत गये[4] इस से पूर्व? और वह दोनों दुहाई दे रहे थे अल्लाह की: तेरा विनाश हो! तू ईमान ला!

---

[1] देखिये : सूरह, हा–मीम सज्दा, आयत:३१, हदीस में है कि एक व्यक्ति ने कहा: हे अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! मुझे इस्लाम के बारे में ऐसी बात बतायें कि फिर किसी से कुछ पूछना न पड़े। आप ने फ़रमाया: कहो कि मैं अल्लाह पर ईमना लाया फिर उसी पर स्थित हो जाओ। (सहीह मुस्लिम : ३८)

[2] इस आयत तथा कुरआन की अन्य आयतों में भी माता–पिता के साथ अच्छा व्यवहार करने पर विशेष बल दिया गया है। तथा उन के लिये प्रार्थना करने का आदेश दिया गया है। देखिये: सूरह बनी इस्राईल, आयत : १७०। हदीसों मे भी इस विषय पर अति बल दिया गया है। आदरणीय अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते है कि एक व्यक्ति ने आप से पूछा कि मेरे सदव्यवहार का अधिक योग्य कौन है? आप ने फरमाया: तेरी माँ। उस ने कहा: फिर कौन है? आप ने कहा: तेरी माँ। उस ने कहा: फिर कौन है? आप ने कहा: तेरी माँ। तथा चौथी बार आप ने कहा: तेरे पिता। (सहीह बुख़ारी : ५९७१, तथा सहीह मुस्लिम : २५४८)

[3] अर्थात मौत के पश्चात् प्रलय के दिन पुन: जीवित कर के समाधि से निकाला जाऊँगा। इस आयत में बुरी संतान का व्यवहार बताया गया है।

[4] और कोई फिर जीवित होकर नहीं आया।

निश्चय अल्लाह का वचन सच्चा है। तो वह कह रहा था कि यह अगलों की कहानियाँ हैं।[1]

१८. यही वह लोग हैं जिन पर अल्लाह की यातना का वचन सिद्ध हो गया उन समुदायों में जो गुज़र चुके इन से पूर्व जिन्न तथा मनुष्यों में से। वास्तव में वही क्षति में थे।

१९. तथा प्रत्येक के लिये श्रेणियाँ है उन के कर्मानुसार। और उन्हें भरपूर बदला दिया जायेगा उन के कर्मों का तथा उन पर अत्याचर नहीं किया जायेगा।

२०. और जिस दिन सामने लाये जायेंगे जो काफ़िर हो गये अगिन के। (उन से कहा जायेगा): तुम ले चुके अपना आनन्द अपने संसारिक जीवन में और लाभान्वित हो चुके उन से। ते आज तुम को अपमान की यातना दी जायेगी उस के बदले जो तुम घमंड करते रहे धरती में अनुचित तथा उस के बदले जो उल्लंघन करते रहे।

२१. तथा याद करो आद के भाई (हूद)[2] को। जब उस ने अपनी जाति को सावधान किया, अह्क़ाफ़[3] में जब कि गुज़र चुके सावधान करनेवाले (रसूल) उस के पहले और उस के पश्चात, कि इबादत (वंदना) न करो अल्लाह के अतिरिक्त की। मैं डरता हूँ तुम पर एक बड़े दिन की यातना से।

२२. तो उन्होंने कहा कि क्या तुम हमें फेरने आये हो हमारे पूज्यों से? तो ला दो हमारे पास जिस की हमें धमकी दे रहे हो यदि तुम सच्चे हो।

२३. हूद ने कहा: उस का ज्ञान तो अल्लाह ही को है। और मैं तुम्हें वही उपदेश पहुँचा रहा हूँ जिस के साथ मैं भेजा गया हूँ। परन्तु मैं देख रहा हूँ तुम को कि तुम अज्ञानता की बातें कर रहा हो।

---

[1] इस आयत में मुसलमान माता–पिता का विवाद एक काफ़िर पुत्र के साथ हो रहा है जिस का वर्णन उदाहरण के लिये इस आयत में किया गया है। और इस प्रकार का वाद–विवाद किसी भु मुसलमान तथा काफ़िर में हो सकता हैं। जैसा कि आज अनैक पश्चिमी आदी देशें में हो रहा हैं।

[2] इस में मक्का के प्रमुखों को जिन्हें अपने धन तथा बल पर बड़ा गर्व था अरब क्षेत्र की एक प्राची जाति की कथा सुनाने को कहा जा रहा है जो बड़ी सम्पन्न तथा शक्तिशाली थी।

[3] अह्क़ाफ़ अर्थात: ऊँचा रेत का टीला है। यह जाति उसी क्षेत्र में निवास करती थी जिसे (रुब्अल ख़ाली) (अर्थात अरब टापू का चौथाई भाग जो केवल मरुस्थल है) कहा जाता है। यह क्षेत्र ओमान से यमन तक फैला हुआ था। जहाँ आज कोई आबादी नहीं है। इसी जाति को प्रथम आद भी कहा गया है।

२४. फिर जब उन्होंने देखा ,क बादल आते हुये अपनी वादियों की ओ तो कहा: यह एक बादल है हम पर बरसने वाला। बल्कि यह वही है जिस की तुम ने जल्दी मचाई है। यहा आँधी है जिस में दु:खदायी यातना हैं।[१]

२५. वह विनाश कर देगी प्रत्येक वस्तु को अपने पालनहार के आदेश से, तो वे हो गये ऐसे कि नहीं दिखाई देता था कुछ उन के घरों के अतिरिक्त। इसी प्रकार हम बदला दिया करते हैं। अपराधि लोगों को।

२६. तथा हम ने उन को वह शक्ति दी थी जो इन[२] को नहीं दी है। हम ने बनाये थे उन के कान तथा आँखें और दिल तो नहीं काम आये उन के कान और उन की आँखे तथा न उन के दिल कुछ भी। क्योंकि वे इन्कार करते थे अल्लाह की आयतों का तथा घेर लिया उन को उस ने जिस का वह उपहास कर रहे थे।

२७. तथा हम ध्वस्त कर चुके हैं तुम्हारे आस पास की बस्तियों को। तथा हम ने उन्हें अनेक प्रकार से आयतें सुना दी ताकि वह वापिस आ जाये।

२८. तो क्यों नहीं सहायता की उन की उन्होंने जिन को बनाया था अल्लाह के अतिरिक्त (अल्लाह के) समिप्य के लिये पूज्य (उपास्य)? बल्कि वह खो गये उन से, और यह[३] उन का झूठ था, तथा जिसे स्वयं वे घड़ रहे थे।

२९. तथा याद करें जब हम ने फेर दिया आप की ओर जिन्नों के एक[४] गिरोह को ताकि वह कुरआन सुनें तो जब वह उपस्थित हुये आप के पास तो उन्होंने कहा कि चुप

---

[१] हदीस में है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बादल या आँधी देखते तो व्याकुल हो जाते। आईशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने कहा: अल्लाह के रसूल! लोग बादल देखकर वर्षा की आशा में प्रसन्न होते हैं और आप क्यों व्याकुल हो जाते हैं? आप ने कहा: आईशा! मुझे भय रहता है कि इस में कोई यातना न हो? एक जाति को आँधी से यातना दी गई। और एक जाति ने यातना देखी तो कहा: यह बादल हम पर वर्षा करेगा। (सहीह बुख़ारी : ४८२९, तथा सहीह मुस्लिम : ८९९)

[२] अर्थात मक्का के काफ़िरों को।

[३] अर्थात अल्लाह के अतिरिक्त को पूज्य बनाना।

[४] आदरणीय इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) कहते है कि एक बार नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपने कुछ अनुयायियों (सहाबा) के साथ उकाज़ के बाजार की ओर जा रहे थे। इन दिनों शैतानों को आकाश की सूचनायें मिलनी बंद हो गई थीं। तथा उन पर आकाश से अंगारे फेंके जा रहे थे। तो वे इस खोज में पूर्व तथा पश्चिम की दिशाओं में निकले कि इस का क्या कारण है? कुछ शैतान तिहामा (हिजाज़) की ओर भी आये और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तक पहुँच गये। उस समय आप ((नख्ला)) में फ़ज की नमाज़ पढ़ा रहे थे। जब जिन्नों ने कुरआन सुना तो उस की ओर कान लगा दिये। फिर कहा कि यही वह चीज़ है जिस के कारण हम को आकाश की सूचना मिलनी बंद हो गई है। और अपनी जाति से जा कर यह बात कहीं। तथा अल्लाह ने यह आयत अपने नबी पर उतारी। (सहीह बुख़ारी : ४९२१)

रहो। और जब पढ़लिया गया तो वे फिर गये अपनी जाति की ओर सावधान करने वाले हो कर।

३०. उन्होंने कहा: हे हमारी जाति! हम ने सुनी है एक पुस्तक जो उतारी गई है मूसा के पश्चात्। वह अपने से पूर्व को किताबों की पुष्टि करती है। और सत्य तथा सीधी राह दिखाती है।

३१. हे हमारी जाति! मान लो अल्लाह की ओर बुलाने वाले की बात को। तथा ईमान लाओ उस पर, वह क्षमा कर देगा तुम्हारे लिये तुम्होरे पापों को तथा बचा देगा तुम्हें दु:खदायी यातना से।

३२. तथा जो मानेगा नहीं अल्लाह की ओर बुलाने वाले की बात तो नहीं है वह विवश करने वाला धरती में। और नहीं है उस के लिये अल्लाह के अतिरिक्त कोई सहायक। यहीं लोग खुलेकुपथ में हैं

३३. और क्या उन लोगों ने नहीं समझा कि अल्लाह, जिस ने उत्पन्न किया है आकाशें तथा धरती को, और नहीं थका उन को बनाने से, वह सामर्थ्यवान है कि जीवित कर दे मुर्दों को? क्यों नहीं? वास्तव में वह जो चाहे कर सकता है।

३४. और जिस दिन सामने लाये जायेंगे जो काफ़िर हो गये नरक के, (और उन से कहा जायेगा) : क्या यह सच्च नहीं है? वे कहेंगें: क्यों नहीं? हमारे पालनहार की शपथ! वह कहेगा: तब चखो यातना उस कुफ़्र के बदले जो तुम कर रहे थे।

३५. तो (हे नबी!) अप सहन करें जैसे साहसी रसूलों ने सहन किया। तथा जल्दी न करें उन (की यातना) के लिये। जिस दिन वह देख लेंगे जिस का उन्हें वचन दिया जा रहा है तो समझेंगे कि जैसे वह नहीं रहे हैं परन्तु दिन के कुछ[१] क्षण। बात पहुँचा दी गई है, तो अब उन्हीं का विनाश होगा जो अवैज्ञाकारी है।

*****

इन आयतों में संकेत है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जैसे मनुष्यों के नबी थे वैसे ही जिन्नों के भी नबी थे । और सभी नबी मनुष्यों में आये। (देखिये: सूरह नह्ल, आयत : ४३, सूरह फ़ुर्कान, आयत:२०)

[१] अर्थात प्रलय की भीषणता के आगे संसारिक सुख क्षणभर प्रतीत होगा। हदीस में है कि नारकियों में से प्रलय के दिन संसार के सब से सुखी व्यक्ति को ला कर नरक में एक बार डाल कर कहा जायेगा: क्या कभी तुम ने सुख देखा है? वह कहेगा: मेरे पालनहार! (कभी) नहीं (देखा।)

सूरह मुहम्मद – ४७

सूरह मुहम्मद कें संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में ३८ आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत २७ में नबी (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का नाम आया है। जिस के कारण इस का नाम सूरह मुहम्मद है। इस का एक दूसरा नाम ''किताल'' भी है जो इस की आयत २० से लिया गया है।
- इस में बताया गया है कि काफ़िरों तथा ईमान वालों की कार्य प्रणाली विभिन्न है। इसलिये उन के साथ अल्लाह का व्यवहार भी अलग–अलग होगा। वह काफ़िरों के कर्म असफल कर देगा। और ईमान वालों की दशा सुधार देगा।
- इस में आयत ४ से १५ तक ईमान वालों को युद्ध के संबन्ध में निर्देश दिये गये हैं। और परलोक के उत्तम फल की शुभसूचना दी गयी है।
- आयत १६ से ३२ तक मुनाफ़िकों कि दशा बतायी गयी है जो जिहाद के डर से काफ़िरों से मिल कर षड्यंत्र रचते थे।
- इस की आयत ३३ से ३८ तक साधारण मुलमानों को जिहाद करने तथा अल्लाह की राह में दान करने की प्रेरणा दी गयी है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. जिन लोगों ने कुफ़्र (अविश्वास) किया तथा अल्लाह की राह से रोका, (अल्लाह ने) व्यर्थ (निष्फल) कर दिया उन के कर्मों को।

२. तथा जो ईमान लाये और सदाचार किये तथा उस (कुरआन) पर ईमान लाये जो उतारा गया है मुहम्मद पर, और वह सच्च है उन के पालनहार की ओर से, तो दूर कर दिया उन से उन के पापों को तथा सुधार दिया उन की दशा को।

३. यह इस कारण कि जिन्होंने कुफ़्र किया और चले असत्य पर तथा जो ईमान लाये वह चले सत्य पर अपने पालनहार की ओर से (आये हुये) इसी प्रकार बता देता है अल्लाह लोंगो को उन की सहीह दशायें।[१]

४. तो जब (युद्ध में) भिड़ जाओ काफ़िरों से तो गर्दने उड़ाओ, यहाँ तक की जब कुचल दो उन को तो उन्हें दृढ़ता से बाँधो। फिर उस के बाद या तो उपकार कर के छोड़ दो या अर्थदण्ड लेकर। यहाँ तक कि युद्ध अपने हथियार रखे दे।[२] यह आदेश है। और यदि अल्लाह चाहता तो स्वयं उन से बदला ले लेता। किन्तु (यह आदेश इस लिये दिया) ताकि तुम्हारी एक–दूसरे द्वारा परीक्षा ले। और जो मार दिये गये अल्लाह की राह में तो वह कदापि व्यर्थ नहीं करेगा उन के कर्मों को।

५. वह उन्हें मार्गदर्शन देगा तथा सुधार देगा उन की दशा।

६. और प्रवेश करायेगा उन्हें स्वर्ग में जिस की पहचान दे चुका है उन को।

७. हे ईमान वालो! यदि तुम सहायता करोगे अल्लाह (के धर्म) की तो वह सहायता करेगा तुम्हारी। तथा दृढ़ (स्थिर) कर देगा तुम्हारे पैरों को।

८. और जो काफ़िर हो गये तो विनाश है उन्हीं के लिये और उस ने व्यर्थ कर दिया उन के कर्मों को

---

[१] यह सूरह बद्र के युद्ध से पहले उतरी। जिस में मक्का के काफ़िरों के आक्रमण से अपने धर्म और प्राण तथा मान–मर्यादा की रक्षा के लिये युद्ध करने की प्रेरणा तथा साहस और आवश्यक निर्देश दिये गये हैं।

[२] इस्लाम से पहले युध्द के बंदियों को दास बना लिया जाता था किन्तु इस्लाम उन्हें उपकार कर के या अर्थ दण्ड लेकर मुक्त करने का आदेश देता है। इस आयत में यह संकेत है कि इस्लम जिहाद की अनुमति दूसरों के आक्रमण से रक्षा के लिये देता है।

९. यह इसलिये कि उन्होंने बुरा माना उसे जो अल्लाह ने उतारा और उस ने उन के कर्म व्यर्थ कर[1] दिया।

१०. तो क्या वह चले–फिरे नहीं धरती में कि देखते उन लोगों का परिणाम जो इन से पहले गुज़रे? विनाश कर दिया अल्लाह ने उन का तथा काफ़िरों के लिये इसी के समान (यातनायें) हैं।

११. यह इसलिये कि अल्लाह संरक्षक (सहायक) है उन का जो ईमान लाये और काफ़िरों का कोई संरक्षक (सहायक)[2] नहीं।

१२. नि:संदेह अल्लाह प्रवेश देगा उन को जो ईमान लाये तथा सदाचार किये ऐसे स्वर्गों में जिन में नहरें बहती होंगी। तथा जो काफ़िर हो गये वह आनन्द लेते तथा खाते है जैसे[3] पशु खाते हैं। और अग्नि उन का आवास (स्थान) है।

१३. तथा बहुत सी बस्तियों को जो अधिक शक्तिशाली थीं आप की बस्ती से, जिस ने आप को निकाल दिया, हम ने ध्वस्त कर दिया, तो कोई सहायक न हुआ उनका।

१४. तो क्या जो अपने पालनहार के खुले प्रमाण पर हो वह उस के समान हो सकता है शोभनीय बना दिया गया हो जिस के लिये उस का दुष्कर्म तथा चलता हो अपनी मनमानी पर?

१५. उस स्वर्ग की विशेषता जिस का वचन दिया गया है आजकारियों को, उस में नहरें हैं निर्मल जल की, तथा नहरें दूध की, नहीं बदलेगा जिस का स्वाद, तथा नहरें हैं मदिरा को पीने वलों के स्वाद के लिये, तथा नहरें हैं मधु की स्वच्छ। तथा उन्हीं के लिये उन में प्रत्येक प्रकार के फल हैं, तथा उन के पालनहार की ओर से क्षमा। (क्या यह) उस के समान होंगे जो सदावासी होंगे नरक में तथा पिलाये जायेंगे खौलता जल जो खण्ड– खण्ड कर देंगा उन की आँतों को?

१६. तथा उन में से कुछ वह हैं जो कान धरते हैं आप की ओर यहाँ तक कि जब निकलते हैं आप के पास से तो कहते हैं उन से जिन को ज्ञान दिया गया है कि

---

[1] इन में इस ओर संकेत है कि बिना ईमान के अल्लाह के ही कोई सद् कर्म मान्य नहीं है।

[2] उहुद के युध्द में जब काफ़िरों ने कहा कि हमारे पास उज़्ज़ा (देवी) है, और तुम्हारे पास उज़्ज़ा नहीं।। तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा। उन का उत्तर इसी आयत से दो। (सहीह बुख़ारी : ४०४३)

[3] अर्थात परलोक से निश्चित संसारिक जीवन ही को सब कुछ समझते हैं।

अभी क्या[1] कहा है? यही वह है कि मुहर लगा दी है अल्लाह ने उन के दिलों पर और वही चल रहे है अपनी मनोकांक्षाओं पर।

१७. और जो सीधी राह पर है अल्लाह ने अधिक कर दिया है उन को मार्ग दर्शन में। और प्रदान किया है उन को उन का सदाचार।

१८. तो क्या वह प्रतीक्षा कर रहे हैं प्रलय ही की, कि आ जाये उन के पास सहसा? तो आ चुके हैं उस के लक्षण।[2] फिर कहाँ होगा उन के शिक्षा लेने का समय, जब वह (क्यामत) आ जायेगी उन के पास?

१९. तो (हे नबी!) आप विश्वास रखिये कि नहीं है कोई वंदनीय अल्लाह के सिवा तथा क्षमा[3] माँगिये अपने पाप के लिये, तथा ईमान वाले पुरुषों और स्त्रियों के लिये। और अल्लाह जानता है तुम्हारे फिरने तथा रहने के स्थान को।

२०. तथा जो ईमान लाये उन्होंने कहा कि क्यों नहीं उतारी जाती कोई सूरह (जिस में युद्ध का आदेश हो)? तो जब एक दृढ़ सूरह उतार दी गई तथा उस में वर्णन कर दिया गया युद्ध का तो आप ने उन्हें देख लिया जिन के दिलो में रोग (द्विधा) है कि वह आप की ओर उस के समान देख रहे हैं जो मौत के समय अचेत पड़ा हुआ हो। तो उन के लिये उत्तम है।

२१. आज्ञा पालन तथा उचित बात बोलना। तो जब (युद्ध का) आदेश निर्धारित हो गया तो यदि वे अल्लाह के साथ सच्चे रहें तो उन के लिये उत्तम हैं।

२२. फिर यदि तुम विमुख[4] हो गये तो दूर नहीं कि तुम उपद्रव करोगे धरती में तथा तोड़ोगे अपने रिश्तों (संबंधों) को।

---

[1] यह कुछ मुनाफ़िकों की दशा का वर्णन है जिन को आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की बातें समझ में नहीं आती थी। क्योंकि वे आप की बातें दिल लगा कर नहीं सुनते थे। तथा आप की बातों का इस प्रकार उपहास करते थे।

[2] आयत में कहा गया है कि प्रलय के लक्षण आ चुके हैं। और उन में सब से बड़ा लक्षण आप (सुल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का आगमन है। जैसा कि नबी (सुल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन है कि आप ने फ़रमाया: (मेरा आगमन तथ प्रलय इस दो ऊंगलियों के समान है।) (सहीह बुख़ारी : ४६३६) अर्थात बहुत समीप है। जिस का अर्थ यह है कि जिस प्रकार दो ऊंगलियों के बीच कोई तीसरी ऊंगली नहीं इसी प्रकार मेरे और प्रलय के बीच कोई नबी नहीं। मेरे आगमन के पश्चात अब प्रलय ही आयेगी।

[3] आप (सुल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: मैं दिन में सत्तर बार से अधिक अल्लाह से क्षमा माँगता तथा तौबा करता हूँ। (बुख़ारी : ६३०७) और फ़रमाया कि लोगो! अल्लाह से क्षमा माँगो। मैं दिन में सौ बार क्षमा माँगता हूँ। (सहीह मुस्लिम : २७०२)

[4] अर्थात अल्लाह तथा रसूल की आज्ञा का पालन करने से। इस आयत में संकेत है कि धरती में उपद्रव, तथा रक्तपात का कारण अल्लाह तथा उस के रसूल (सुल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की आज्ञा से विमुख होने का परिणाम है। हदीस में है कि

२३. यही हैं जिन को अपनी दया से दूर कर दिया है अल्लाह ने, और उन्हें बहरा तथा उन की आँखे अंधी कर दी हैं।[१]

२४. तो क्या लोग सोच–विचार नहीं करते या उन के दिलों पर ताले लगे हुये हैं

२५. वास्तव में जो फिर गये पीछे इस के पश्चात् कि उजागर हो गया उन के लिये मार्गदर्शन तो शैतान ने सुन्दर बना दिया (पापों को) उन के लिये, तथा उन को बड़ी आशा दिलई है।

२६. यह इस कारण हुआ कि उन्होंने कहा उन से जिन्होंने बुरा माना उस (कुरआन) को जिसे उतारा अल्लाह ने कि हम तुम्हारी बात मानेंगे कुछ कार्य में। तथा अल्लाह जानता है उन की गुप्त बोतों को।

२७. तो कैसी दुर्गत होगी उन की जब प्राण निकाल रहे होंगे फ़रिश्ते मारते हुये उन के मुखों तथा उन की पीठों पर।

२८. यह इसलिये कि वे चले उस राह पर जिस ने प्रसन्न कर दिया अल्लाह को, तथ बुरा माना उस की प्रसन्नता को तो उस ने व्यर्थ कर दिया उन के कर्मों को।[२]

२९. क्या समझ रखा है उन्होंने जिन के दिलों में रोग है कि नहीं खोलेगा अल्लाह उन के द्वेषों को?[३]

३०. और (हे नबी!) यदि हम चाहें तो दिखा दें आप को उन्हें, तो पहचान लेंगे आप उन को उन के मुख से। और आप अवाय पहचान लेंगे उन को[४] (उन की) बात के ढंग से। तथा अल्लाह जानता है उन के कर्मों को।

३१. और हम अवश्य परीशा लेंगे तुम्हारी, ताकि जाँच लें तुम में से मुजाहिदों तथा धैर्यवानों को तथा जाँच लें तुम्हारी दशाओं को।

जो रिश्ते (संबंध) को जोड़ेगा तो अल्लाह उस को (अपनी दया से) जोड़ेगा और जो रिश्ते तोड़ेगा तो अल्लाह उस को (अपनी दया से) दूर कर देगा। (सहीह बखारी :४८२०)

[१] अत: वे न तो सत्य को देख सकते हैं और न ही सुन सकते हैं।

[२] आयत में उन के दुष्परिणाम की ओर संकेत है जो इस्लाम के साथ उस के विरोधी नियमों और विधानों को मानते है। और युद्ध के समय काफ़िरें का साथ देते है

[३] अर्थात जो द्वैष और बैर इस्लाम और मुसलमानों से रखते है उसे अल्ललाह उजागर अवश्य कर के रहेगा।

[४] अर्थात उन के बात करने की रीति से।

३२. जिन लोगों ने कुफ़्र किया और रोका अल्लाह की राह (धर्म) से तथा विरोध किया रसूल का इस के पश्चात कि उजागर हो गया उनके लिये मार्गदर्शन, वह कदापि हानि नहीं पहुँचा सकेंगे अल्लाह को कुछ। तथा वह व्यर्थ कर देगा उन के कर्मो को।
३३. हे लोगो जो ईमान लाये हो! आज्ञा मानो अल्लाह की, तथा आज्ञा मानो[1] रसूल की तथा व्यर्थ न करो अपने कर्मों को।
३४. जिन लोगों ने कुफ़्र किया तथा रोका अल्लाह की राह से, फिर वे मर गये कुफ़्र की स्थितति में तो कदापि क्षमा नहीं करेगा अल्लाह उन को।
३५. अत: तुम निर्बल न बनो और न (शत्रु को) संधि की ओर[2] पुकारो। तथा तुम्हीं उच्च रहने वाले हो और अल्लाह तुम्हारे साथ है। और वह कदापि व्यर्थ नहीं करेगा तुम्हारे कर्मों को।
३६. यह संसारिक जीवन तो एक खेल कूद है और यदि तुम ईमान लाओ तथा अल्लाह से डरते रहो तो वह प्रदान करेगा तुम्हें तुम्हारा प्रतिफल। और नहीं माँग करेगा तुम से तुम्हारे धनों की।
३७. और यदि वह तुम से माँगे और तुम्हारा पूरा धन माँगे तो तुम कंजूसी करने लगोगे, और वह खोल[3] देगा तुम्हारे द्वेषों को।
३८. सुनो! तुम लोग हो जिन को बुलाया जा रहा है ताकि दान करो अल्लाह की राह में, तो तुम में से कुछ कंजूसी करने लगते हैं । और जो कंजुसी करता है। और

---

[1] इस आयत में कहा गया है कि जिस प्रकार कुरआन को मानना अनिवार्य है उसी प्रकार नबी (सुल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सुन्नत (हदीसों) का पालन करना भी अनिवार्य हैं। हदीस में है कि आप (सुल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया: मेरी पूरी उमत स्वर्ग में जायेगी उस के सिवा जिस ने इन्कार किया। कहा गया कि कोन इन्कार करेगा, हे अल्लाह के रसूल? आप (सुल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया: जिस ने मेरी आज्ञाकारी की तो वह स्वर्ग में जायेगा। और जिस ने मरी आज्ञाकारी नहीं की तो उस ने इन्कार किया। (सहीह बुख़ारी: ७२८०)

[2] आयत का अर्थ यह नहीं कि इस्लाम संधि का विरोधी है। इस का अर्थ यह है कि ऐसी दशा में शत्रु से संधि न करो कि वह तुम्हें निर्बल समझने लग। बल्कि अपनी शक्ति का लोहा मनवाने के पश्चात् संधि करो। ताकि वह तुम्हें निर्बल समझ कर जैसे चाहें संधि के लिए बाध्य न कर लें।

[3] अर्थात कंजूसी कर के अपने ही को हानि पहुँचाता है।

अल्लाह धनी है तथा तुम निर्धन हो। और यदि तुम मुँह फेरोगे तो वह तुम्हारे स्थान पर दूसरों को ला देगा, फिर वे नहीं होंगे तुम्हारे जैसे।[१]

*****

[१] तो कंजूस नहीं होंगे। (देखिये : सूरह माइदा, आयत:५४)



सूरह फ़त्ह – ४८



सूरह फ़त्ह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में २९ आयते हैं।

- फ़त्ह का अर्थ विजय है। और इस की प्रथम आयत में नबी (सुल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को विजय की शुभसूचना दी गई है। इसलिये इस का यह नाम रखा गया है।
- इस में विजय की शुभसूचना देते हुये आप तथा आप के साथियों के लिये उन पुरस्कारों की चर्चा की गई है जो इस विजय के द्वारा प्रप्त हुये। साथ ही मुनाफ़िकों तथा मुश्रिकों को चेतावनी दी गई कि उन के बुरे दिन आ गये हैं।
- इस में नबी (सुल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के हाथ पर बैअत (वचन) को अल्लाह के हाथ पर वचन कह कर आप के पद को बताया गया है। तथा इस में मुनाफिकों को जो नबी (सुल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ नहीं निकले और अपने धन–परिवार की चिन्ता में रह गये चेतावनी दी गई है। और जो विवश थे उन्हें निर्दोष करार दिया गया है।
- इस में ईमान वालों को जो रसूल (सुल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये जान देने को तय्यार हो गये अल्लाह की प्रसन्नता की शुभसूचना दी गई है। और बताया गया है कि उन का भविष्य उज्ज्वल होगा तथा उन की सहायता होगी।
- इस में बताया गया है कि नबी (सुल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)ने मस्जिदे हराम में प्रवेश का जो सपना देखा है वह सच्चा है। और वह पूरा होगा। आप को ऐसे साथी मिल गये है जिन का चित्र तौरात और इंजील में देखा जा सकता है।
- यह सूरह ज़ीक़ादा के महीने, सन ६ हिज्री में हुदैबिया से वापसी के समय हुदैबिया तथा मदीना के बीच उतरी। (सहीह बुख़ारी : ४८३३)। और दो वर्ष बाद मक्का विजय हो गया। और अल्लाह ने आप के स्वप्न को सच्च कर दिया।

हुदैबिय्या की संधि: मदीना हिज्रत के पश्चात् मक्का के मुश्रिकों ने मस्जिदे हराम (काबा) पर अधिकार कर लिया। और मुसलमानों को हज्ज तथा उमरा करने से रोक दिया।

अब तक मुसलमानों और काफ़िरों के बीच तीन युद्ध हो चुके थे कि सन् ६ हिज्री में नबी (सुल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यह सपना देखा कि आप मस्जिदे हराम में प्रवेश कर गये हैं। इसलिये आप (सुल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उमरे का एलान कर दिया। और अपने चौदह सौ साथियों के साथ १ ज़ीक़ादा सन् ६ हिज्री को मक्का की ओर चल दिये। मदीना से ६ मील जाकर जुल हुलैफ़ा में एहराम बाँधा। और कुर्बानी के पशु साथ लिये। आप (सुल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मक्का से २२ कि.मी. दूर हुदैबिय्या तक पहुँच गये तो उसमान (रज़ियल्लाहु अन्हु) को मक्का भेजा कि हम उमरा के लिये आये हैं। मक्का वासियों ने उन का आदर किया। किन्तु इस के लिये तय्यार नहीं हुये कि नबी अपने साथियों के साथ मक्का में प्रवेश करें। इस विवाद के कारण उसमान (रज़ियल्लाहु अन्हु) की बलपूर्वक ही मक्का में प्रवेश करना पड़ेगा। और नबी (सुल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपने साथियों से जिहाद के लिये बैअत (वचन) ली। इस एतिहासिक वचन को ((बैअत ज़िवान)) के नाम से याद किया जाता है। जब मक्का वासियों को इस की सूचना मिली तो वह संधि के लिये तय्यार हो गये। और संधि के लिये कुछ प्रतिनिधि भेजे। और निम्नलिखित बातों पर संधि हुई:

१ – मुसलमान आगामी वर्ष आ कर उमरा करेंगे।

२ – वह अपने साथ केवल तलवार लायेंगे जो नियाम में होगी।

३ – वह केवल तीन दिन मक्का में रहेंगे।

४ – मुसलमान और उन के बीच दस वर्ष युद्ध विरोम रहेगा।

५ – मक्का का कोई व्यक्ति मदीना जाये तो उसे वापिस करना होगा। किन्तु यदि कोई मुसलमान काफ़िर बनकर मक्का आये तो वे उसे वापिस नहीं करेंगे।

६ – हरम के आस पास के क़बीले जिस पक्ष के साथ चाहें हो जायें। और उन पर वही दायित्व होगा जो उन के पक्ष पर होगा।

७ – यदि इन क़बीलों मे किसी ने दूसरे पक्ष के किसी क़बीले के साथ अत्याचार किया तो इसे संधि भंग माना जायेगा। यही संधि मुसलमानों ने बहुत दब कर की थी। मगर इस से उन्हें दो बड़े लभ प्राप्त हुये :

क – मस्जिदे हराम में प्रवेश की राह खुल गई।

ख – इस्लाम और मुसलमानों पर आक्रमण की स्थिति समाप्त हो गई। जिस से इस्लाम के प्रचार–प्रसार की बाधा दूर हो गई। और इस्लाम तेज़ी से फैलने लगा। और जब आप (सुल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मक्का वासियों के संधि भंग कर देने के कारण सन् १० हिज्री में मक्का विजय के साथ ही पूरे मक्का वासी तथा आस–पास के क़बीले मुसलमान हो गये। इस प्रकार धीरे धीरे आप (सुल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के युग ही में सारे अरब, मुसलमान हो गये। इसीलिये कुरआन ने हुदैबिय्या कि संधि को फ़त्हे मुबीन (खुली) विजय) कहा है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. हे नबी हमने विजय[१] प्रदान कर दी आपको खुली विजयी।

२. ताकि क्षमा करे अल्लाह आप के लिये आप के अगले तथा पिछ्ले दोषों को तथा पूरा करे अपना पुरस्कार आपके ऊपर और दिखाये आपको सीधी राह।[२]

३. तथा अल्लाह आप की सहायता करे भरपूर सहायता।

४. वही है जिस ने उतारी शान्ति ईमान वालों के दिलों में ताकि अधिक हो जाये उन का ईमान अपने ईमान के साथ। तथा अल्लाह ही की हैं आकाशों तथा धरती की सेनायें, तथा अल्लाह सब कुछ और सब गुणों को जानने वाला है।

५. ताकि वह प्रवेश कराये ईमान वाले पुरुषों तथा स्त्रियों को ऐसे स्वर्गों में बह रही हैं जिन में नहरें। और वे सदैव रहेंगे उन में। और ताकि दूर कर दे उन से उन की बुराईयों को। और अल्लाह के यहाँ यही बहुत बड़ी सफलता है।

६. तथा यातना दे मुनाफ़िक़ पुरुषों तथा स्त्रियों और मुश्रिक पुरुषों तथा स्त्रियों को जो बुरा विचार रखने वाले हैं अल्लाह के संबन्ध में। उन्हीं पर बुरी आपदा आ पड़ी। तथा अल्लाह का प्रकोप हुआ उन पर, और उस ने धिक्कार दिया उन को। तथा तय्यार कर दी उन के लिये नरक, और वह बुरा जाने का स्थान है।

७. तथा अल्लाह ही की हैं आकाशों तथा धरती की सेनायें और अल्लाह प्रबल तथा सब गुणों को जानने वाला है।[३]

८. (हे नबी!) हम ने भेजा है आप को गवाह बनाकर तथा शुभ सूचना देने एवं सावधान करने वाला बना कर।

९. ताकि तुम ईमान लाओ अल्लाह एवं उस के रसूल पर। और सहायता करो आप की, तथा आदर करो आप का, और अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करते रहो प्रातः तथा संध्या।

---

[१] हदीस में है कि इस से अभिप्राय हुदैबिया की संधि है। (बुख़ारी : ४८३४)

[२] हदीस में है कि नबी (सुल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) रात्री में इतनी नमाज़ पढ़ा करते थे कि आप के पाँव सूज जाते थे। तो आप से कहा गया कि आप ऐसा क्यों करते हैं? अल्लाह ने तो आप के बिगत तथा भविष्य के पाप क्षमा कर दिये हैं? तो आप ने फ़रमाया। तो क्या मैं कृतज्ञ भक्त न बनूँ। (सहीह बुख़ारी : ४८३७)

[३] इसलिये वह जिस को चाहे, और जब चाहे, हिलाक और नष्ट कर सकता है।

१०. (हे नबी!) जो बैअत कर रहे हैं आप से, वह वास्तव में बैअत[1] कर रहे हैं अल्लाह से। अल्लाह का हाथ उन के हाथों के ऊपर है। फिर जिस ने वचन तोड़ा तो वह अपने ऊपर ही वचन तोड़ेगा। तथा जिस ने पूरा किया जो वचन अल्लाह से किया है तो वह उसे बड़ा प्रतिफल (बदल) प्रदान करेगा।

११. (हे नबी!) वह[2] शीघ्र ही आप से कहेंगे, जो पीछे छोड़ दिये गय बद्दुओं में से कि हम लगे रह गय अपने धनों तथा परिवार में। अतः आप क्षमा की प्रार्थना कर दें हमारे लिये। वह अपने मुखों से ऐसी बात कहेंगे जो उन के दिलों में नहीं है। आप उन से कहिये कि कौन है जो अधिकार रखता हो तुम्हारे लिये अल्लाह के सामने किसी चीज़ का यदि अल्लाह तुम्हें कोई हानि पहुँचाना चाहे या कोइ लाभ पहुँचाना चाहे? बल्कि अल्लाह सूचित है उस से जो तुम कर रहे हो।

१२. बल्कि तुम ने सोचा था कि कदापि वापिस नहीं आयेंगे रसूल, और न ईमान वाले अपने परिजनों की ओर कभी भी। और भली लगी यह बात तुम्हारे दिलों को, और तुम ने बुरी सोच सोची। और थे ही तुम विनाश होने वाले लोग।

१३. और जो ईमान नहीं लाये अल्लाह तथा उस के रसूल पर, तो हम ने तय्यार कर रखी है काफ़िरों के लिये दहकती अग्नि।

१४. अल्लाह के लिये है आकाशों तथा धरती का राज्य। वह क्षमा कर दे जिसे चाहे और यातना दे जिसे चाहे। और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

१५. वह लोग जो पीछे छोड़ दिये गये कहेंगे, जब तुम चलोगे ग़नीमतों की ओर ताकि उन्हें प्राप्त करो कि हमें (भी) अपने साथ[3] चलने दो। वह चाहते हैं कि बदल दें

[1] बैअत का अर्थ है हाथ पर हाथ मार कर वचन देना। यह बैत नबी (सुल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने युद्ध के लिये हुदैबिया में अपने चौदह सौ साथियों से एक वृक्ष के नीचे ली थी। जो इस्लामी इतिहास में (बैअते रिज़वान) के नाम से प्रसिद्ध है। रही वह बैअत जो पीर अपने मुरीदों से लेते हैं तो उस का इस्लाम से कोई संबन्ध नहीं है।

[2] आयत ११, १२ में मदीना के आस–पास के मुनाफ़िकों की दशा बतायी गयी है जो नबी के साथ उमरा के लिये मक्का नहीं गये। उन्होंने इस डर से कि मुसलमान सब के सब मार दिये जायेंगे, आप (सुल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का साथ नहीं दिया।

[3] हुदैबिया से वापिस आकर नबी (सुल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने ख़ैबर पर आक्रमण किया जहाँ के यहूदियों ने संधि भंग कर के अह्ज़ाब के युद्ध में मक्का के काफ़िरों का साथ दिया था। तो जो बद्दु हुदैबिया में नहीं गये वह अब ख़ैबर के युद्ध में इसलिये आप के साथ जाने के लिये तय्यार हो गये कि वहाँ ग़नीमत का धन मिलने की आशा थी। अतः आप (सुल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से यह कहा गया कि उन्हें बता दें कि यह पहले ही से अल्लाह का आदेश ह कि तुम हमारे साथ नहीं जा सकते। ख़ैबर मदीने से डेढ़ सौ कि.मी. दूर मदीने के उत्तर पूर्वी दिशा में है। यह युद्ध मुहर्रम सन् ७ हिज्री में हुआ।

अल्लाह के आदेश को। आप कह दें कि कदापि हमारे साथ न चल। इसी प्रकार कहा है अल्लाह ने इस से पहले। फिर वह कहेंगे कि बल्कि तुम द्वेष (जलन) रखते हो हम से। बल्कि वह कम ही बात समझते हैं।

१६. आप कह दें पीछे छोड़ दिये गये बद्दुओं से कि शीघ्र तुम बुलाये जाओगे एक अति योद्धा जाति (से युद्ध) की ओर।[१] जिन से तुम युद्ध करोगे अथवा वह इस्लाम ले आयें। तो यदि तुम आज्ञा का पालन करोगे तो प्रदान करेगा अल्लाह तुम्हें उत्तम बदला तथा यदि तुम विमुख हो गये जैसे इस से पूर्व (मक्का जाने से) विमुख हो गये तो तुम्हें यातना देगा दुःखदायी यातना।

१७. नहीं है अंधे पर कोई दोष[२] और न लंगड़े पर कोई दोष और न रोगी पर कोई दोष। तथा जो आज्ञा का पालन करेगा अल्लाह एवं उस के रसूल की तो वह प्रवेश देगा उसे ऐसे स्वर्गों में बहती हैं जिन में नहरें, तथा जो मुख फेरेगा तो वह यातना देगा उसे दुःखदायी यातना।

१८. अल्लाह प्रसन्न हो गया ईमान वालों से जब वह आप (नबी) से बैअत कर रहे थे वृक्ष के नीचे। उस ने जान लिया जो कुछ उन के दिलों में था इसलिये उतार दी शान्ति उन पर, तथा उन्हे बदले में दी समीप की विजय।[३]

१९. तथा बहुत से ग़नीमत के धन (परिहार) जिन को वह प्राप्त करेंगे, और अल्लाह प्रभुत्वशाली गुणी है।

२०. अल्लाह ने वचन दिया है तुम्हें बहुत से परिहार (ग़नीमतों) का जिसे तुम प्राप्त करोगे। तो शीघ्र प्रदान कर दी तुम्हें यह (ख़ैबर की ग़नीमत)। तथा रोक दिया लोगों के हाथों को तुम से ताकि[४] वह एक निशानी बन जाये ईमान वालों के लिये, और तुम्हें सीधी राह चलाये।

---

[१] इस से अभिप्राय हुनैन का युद्ध है जो सन् ८ हिज्री में मक्का की विजय के पश्चात् हुआ। जिस में पहले पराजय, फिर विजय हुई। और बहुत सा ग़तीमत का धन प्राप्त हुआ, फिर वह भी इस्लाम ले आये।

[२] अर्थात जिहाद में भाग न लेने पर।

[३] इस से अभिप्राय ख़बर की विजय है।

[४] अर्थात ख़ैबर की विजय और मक्का की विजय के समय शत्रुओं के हाथों को रोक दिया ताकि यह विश्वास हो जाये कि अल्लाह ही तुम्हारा रक्षक तथा सहायक है।

२१. और दूसरी ग़नीमतें भी जिन को तुम प्राप्त नहीं कर सके हो, अल्लाह ने उन को नियन्त्रण में कर रखा है, तथा अल्लाह जो कुछ चाहे कर सकता है।

२२. और यदि तुम से युद्ध करते जो काफ़िर[१] है तो अवश्य पीछा दिखा देते, फिर नहीं पाते कोई संरक्षक और न कोई सहायक।

२३. यह अल्लाह का नियम है उन में जो चला आ रहा है पहले से। और तुम कदापि नहीं पाओगे अल्लाह के नियम में कोई परिवर्तन।

२४. तथा वही है जिस ने रोक दिया उन के हाथों को तुम से तथा तुम्हारे हाथों को उन से मक्का की वादी[२] में, इस के पश्चात् कि तुम्हें विजय प्रदान कर की उन पर। तथा अल्लाह देख रहा था जो कुछ तुम कर रहे थे।

२५. यह वे लोग हैं जिन्होंने कुफ़्र किया और रोक दिया तुम्हें मस्जिदे हराम से। तथा बलि के पशु को उन के स्थान तक पहुँचने से रोक दिया। और यदि यह भय न होता कि तुम कुछ मुसलमान पुरुषों तथा कुछ मुसलमान स्त्रियों को जिन्हें तुम नहीं जानते थे रौंद दोगे जिस से तुम पर दोष आ जायेगा[३] (तो युद्ध से न रोका जाता।) ताकि प्रवेश कराये अल्लाह जिसे चाहे अपनी दया में। यदि वह (मुसलमान) अलग होते तो हम अवश्य यातना देते उन को जो काफ़िर हो गये उन में से दुःखदायी यातना।

२६. जब काफ़िरों ने अपने दिलों में पक्षपात को स्थान दे दिया जो वास्तव में जाहिलाना पक्षपात है तो अल्लाह ने अपने रसूल पर तथा ईमान वालों पर शान्ति उतार दी, तथा उन को पाबन्द रखा सदाचार की बात का, तथा वह[४] उस के

---

[१] अर्थात मक्का में प्रवेश के समय युद्ध हो जाता।

[२] जब नबी (सुल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हुदैबिया में थे तो काफ़िरो ने ८० सशस्त्र युवकों को भेजा कि वह आप तथा आप के साथियों के विरुद्ध काररवाही कर के सब को समाप्त कर दें। परन्तु वह सभी पकड़ लिये गये। और आप ने सब को क्षमा कर दिया। तो यह आयत इसी अवसर पर उतरी। (सहीह मुस्लिम: १८०८)

[३] अर्थात यदि हुदैबिया के अवसर पर संधि न होती और युद्ध हो जाता तो अनजाने में मक्का में कई मुसलमान भी मारे जाते जो अपनी ईमान छुपाये हुये थे। और हिज्रत नहीं कर सके थे। फिर तुम पर दोष आ जाता कि तुम एक ओर इस्लाम का संदेश देते हो, तथा दूसरी ओर स्वयं मुसलमानों को मार रहे हो।

[४] सदाचार की बात से अभिप्राय (ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह) है। हुदैबिया का संधिलेख जब लिखा गया और आप ने पहले (बिस्मिल्लाहिर्रहमान निर्रहीम) लिखवाई तो कुरैश के प्रतिनिधियों ने कहा: हम रहमान रहीम नहीं जानते। इसलिये (बिस्मिका अल्लाहुम्मा) लिखा जाये। और जब आप ने लिखवाया कि यह संधिपत्र है जिस पर (मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह) ने संधि की है तो उन्होंने कहा: (मुहम्मद पुत्र अब्दुल्लाह) लिखा जाये। यदि हम आप को अल्लाह का

अधिक योग्य और पात्र थे। तथा अल्लाह प्रत्येक वस्तु को भली–भाँति जानने वाला है।

२७. निश्चय अल्लाह ने अपने रसूल को सच्चा सपना दिखाया सच्च के अनुसार। तुम अवश्य प्रवेश करोगे मस्जिदे हराम में यदि अल्लाह ने चाहा निर्भय होकर, अपने सिर मुंडाते तथा बाल कतरवाते हुये तुम को किसी प्रकार का भय नहीं होगा[1], वह जानता है जिस को तुम नहीं जानते। इसलिये प्रदान कर दी तुम्हें इस (मस्जिदे हराम में प्रवेश) से पहले एक समीप (जल्दी) की[2] विजय।

२८. वही है जिस ने भेजा अपने रसूल को मार्गदर्शन तथा सत्धर्म के साथ, ताकि उसे प्रभुत्व प्रदान कर दे प्रत्येक धर्म पर। तथा पर्याप्त है (इसपर) अल्लाह का गवाह होना।

२९. मुहम्मद[3] अल्लाह के रसूल हैं, तथा जो लोग आप के साथ हैं वह काफ़िरों के लिये कड़े, और आपस में दयालु हैं। तुम देखोगे उन्हें रुकूअ–सज्दा करते हुये वह खोज कर रहे होंगे अल्लाह की दया तथा प्रसन्नता की। उन के लक्षण उन के चेहरों पर सज्दों के चिन्ह होंगे। यह उन की विशेषता तौरात में है। तथा उन के गुण इंजील में उस खेती के समान बताये गये हैं जिस ने नकाला अपना अंकुर, फिर उसे बल दिया, फिर वह कड़ा हो गया फिर वह (खेती) खड़ी हो गई अपने तने पर। प्रसन्न करने लगी किसानों को, ताकि काफ़िर उन से जले। वचन दे रखा है अल्लाह ने उन लोगों को जो ईमान लाये तथा सदाचार किये उन में से क्षमा तथा बड़े प्रतिफल का।



रसूल ही मानते तो अल्लाह के घर से नहीं रोकते। आप ने उन की सब बातें मान लीं। और मुलसमानों ने भी सब कुछ सहन कर लिया। और अल्लाह ने उन के दिलों को शान्त रखा और संधि हो गई।

[1] अर्थात (उमरा) करते हुय जिस में सिर के बाल मुंडाये या कटाये जाते हैं। इसी प्रकार (हज्ज) में भी मुंडाये या कटाये जाते हैं।

[2] इस से अभिप्राय ख़ैबर की विजय है जो हुदैबिया से वापसी के पश्चात् कुछ दिनों के बाद हुई। और दूसरे वर्ष संधि के अनुसार आप ने अपने अनुयायियों के साथ उमरा किया और आप का सपना अल्लाह ने साकार कर दिया।

[3] इस अन्तिम आयत में सहाबा (नबी के साथियों) के गुणों का वर्णन करते हुये यह सूचना दी गई है कि इस्लाम क्रमश: प्रगतिशील होकर प्रभुत्व प्राप्त कर लेगा। तथा ऐसा ही हुआ कि इस्लाम जो आरंभ में खेती के अंकुर के समान था क्रमश: उन्नति कर के एक दृढ़ प्रभुत्वशाली धर्म बन गया। और काफ़िर अपने द्वेष की अग्नि में जल–भुन कर ही रह गये।
हदीस में है कि ईमान वाले आपस के प्रेम तथा दया और करुणा में एक शरीर के समान हैं। यदि उस के एक अंग को दु:ख हो तो पूरा शरीर ताप और अनिद्रा में ग्रस्त हो जाता है। (सहीह बुख़ारी:६०११, सहीह मुस्लिम:२५९६)

सूरह हुजुरात – ४९

सूरह हुजुरात के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में १८ आयतें हैं।

- इस की आयत ४ में हुजरों के बाहर से नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को पुकारने पर पकड़ की गई है इस लिये इस का नाम सूरह हुजुरात है।
- इस की आयत १ से ५ तक में इस बत पर बल दिया गया है कि अपनी बात प्रस्तुत करने में अल्लाह के रसूल से आगे न बढ़ो। और आप के मान–मर्यादा का ध्यान रखो। तथा ऐसी बात न बोलो जो इस्लामी भाई चारे के लिये हानिकारक हो, और न्याय की नीति अपनाओ।
- इस की आयत ११ से १२ में उन नैतिक बुराईयों से बचने का निर्देश दिया गया है जो आपस में घृणा उत्पन्न करती तथा उपद्रव का कारण बनती हैं।
- इस की आयत १३ में वर्ग–वर्ण और जातिवाद के गर्व का खण्डन करते हुये यह बताया गया है कि सभी जातियाँ और क़बीले एक ही नर–नारी की संतान हैं। इसलिये वर्ण–वर्ग और जाति पर गर्व का कोई आधार नहीं। किसी की प्रधानता का कारण केवल अल्लाह की आज्ञा का पालन है।
- इस की अन्तिम आयतों में उन की पकड़ की गई है जो मुख से तो इस्लाम को मानते हैं किन्तु ईमान उन के दिलों में नहीं उतरा है। और उन्हें बताया गया है कि सच्चा ईमान वह है जिस में निफ़ाक़ न हो तथा सच्चा ईमान उस का है जो अल्लाह की राह में धन और प्राण के साथ जिहाद (संघर्ष) करता हो।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. हे लोगों! जो ईमान लाये हो आगे न बढ़ो अल्लाह तथा उस के रसूल[1] से। और डरो अल्लाह से। वास्तव में अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

२. हे लोगों जो ईमान लाये हो! अपनी आवाज़ नबी की आवाज़ से ऊँची न करो। और न आप से ऊँची आवाज़ में बात करो जैसे एक दूसरे से ऊँची आवाज़ में बात करते हो। ऐसा न हो कि तुम्हारे कर्म व्यर्थ हो जायें और तुम्हें पता (भी) न हो।

३. नि:संदेह जो धीमी रखते हैं अपनी आवाज़ अल्लाह के रसूल के सामने, वही लोग हैं जाँच लिया है अल्लाह ने जिन के दिलों को सदाचार के लिये। उन्हीं के लिये क्षमा तथा बड़ा प्रतिफल है।

४. वास्तव में जो आप को पुकारते[2] हैं कमरों के पीछे से उन में से अधिक्तर निर्बोध हैं।

५. और यदि वह सहन[3] करते यहाँ तक कि आप निकल कर आते उन की ओर तो यह उत्तम होता उन के लिये। तथा अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला दयावान् है।

६. हे ईमान वालो! यदि तुम्हारे पास कोई दुराचारी[1] कोई सूचना लाये तो भली–भाँति उस का अनुसंधान (छान बीन) कर लिया करो। ऐसा न हो कि तुम हानि पहुँचा दो किसी समुदाय को आज्ञानता के कारण, फिर अपने किये पर पछताओ।

---

[1] अर्थात दीन धर्म तथा अन्य दूसरे मामलात के बारे में प्रमुख न बनो। अनुयायी बनकर रहो। और स्वयं किसी बात का निर्णय न करो।

[2] हदीस में है कि बनी तमीम के कुछ सवार नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास आये तो आदरणीय अबू बक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा कि क़ाक़ाअ बिन उमर को इन का प्रमुख बनाया जाये। और आदरणीय उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: बल्कि अक़रअ बिन हाबिस को बनाया जाये। तो अबू बक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: यह बात नहीं है। और दोनों में विवाद होने लगा और उन के स्वर ऊँचे हो गये। इसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारी : ४८४७)

इन आयतों में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मान–मर्यादा तथा आप का आदर–सम्मान करने की शिक्षा और आदेश दिये गये हैं। एक हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने साबित बिन क़ैसे (रज़ियल्लाहु अनहु) को नहीं पाया तो एक व्यक्ति से पता लगाने को कहा। वह उन के घर गये तो वह सिर झुकाये बैठे थे। पूछने पर कहा: बूरा हो गया। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास ऊँची आवाज़ से बोलता था, जिस के कारण मेरे सारे कर्म व्यर्थ हो गये। आप ने यह सुनकर कहा: उसे बता दो कि वह नारकी नहीं वह स्वर्ग में जायेगा। (सहीह बुख़ारी शरीफ़ : ४८४६)

[3] हदीस में है कि अक़रअ बिन हाबिस (रज़ियल्लाहु अन्हु) नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास आये और कहा: हे मुहम्मद। बाहर निकलिये। उसी पर यह आयत उतरी। (मुस्नद अहमद : ३/५८८, ६/३९४)

७. तथा जान लो कि तुम में अल्लाह के रसूल मौजूद है। यदि वह तुम्हारी बात मानते रहे बहुत से विषय में तो तुम आपदा में पड़ जाओगे। परन्तु अल्लाह ने प्रिय बना दिया है तुम्हारे लिये ईमान को तथा सुशोभित कर दिया है उसे तुम्हारे दिलों में और अप्रिय बना दिया है तुम्हारे लिये कुफ़्र तथा उल्लंघन और अवैज्ञा को, और यही लोग संमार्ग पर हैं।

८. अल्लाह की दया तथा उपकार से, और अल्लाह सब कुछ तथा सब गुणों को जानने वाला है।

९. और यदि ईमान वालों के दो गिरोह लड़[२] पड़े तो संधि करा दो उन के बीच। फिर दोनों में से एक दूसरे पर अत्याचार करे तो उस से लड़ो जो अत्याचार कर रहा है यहाँ तक कि फिर जाये अल्लाह के आदेश की ओर।फिर यदि वह फिर[३] आये तो उन के बीच संधि करा दो न्याय के साथ। तथा न्याय करो, वास्तव में अल्लाह प्रेम करता है न्याय करने वालों से।

१०. वास्तव में सब ईमान वाले भाई भाई हैं। अत: संधि (मेल) करा दो अपने दो भाईयों के बीच तथा अल्लाह से डरो, ताकि तुम पर दया की जाये।

११. हे लोगो जो ईमान लाये हो![४] हँसी न उड़ाये कोई जाति किसी अन्य जाति की। हो सकता है वह उन से अच्छी हो। और नारी अन्य नारियों की। हो सकता है कि

---

[१] इस में इस्लाम का यह नियम बताया गया है कि बिना छान बीन के किसी की ऐसी बात न मानी जाये जिस का सम्बंध दीन अथवा किसी बहुत गंभीर समस्या से हो। अथवा उस के कारण कोई बहुत बड़ी समस्या उत्पन्न हो सकती हो। और जैसा कि आप जानते है अब यह नियम संसार के कोने कोने मैं फैल गया है। सारे न्यायालयों में इसी के अनुसार न्याय किया जाता है। और जो इस के विरुद्ध निर्णय करता है उस की क ही आलोचना की जाती है। तथा अब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की मृत्यु के पश्चात् यह नियम आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस पाक के लिये भी है। कि यह छान बीन किये बग़ैर कि वह सहीह है या नहीं उस पर अमल नहीं किया जाना चाहिये। और इस चीज़ को इस्लाम के विद्वानों ने पूरा कर दिया है कि अल्लाह के रसूल की वे हदीसें कौन सी हैं जो सहीह हैं तथा वह कौन सी हदीसें हैं जो सहीह नहीं हैं। और यह विशेषता केवल इस्लाम की है। संसार का कोई धर्म यह विशेषता नहीं रखता।

[२] हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: मेरे पश्चात् काफ़िरों के समान हो कर एक दूसरे की गर्दन न मारना। (सहीह बुख़ारी: १२१, सहीह मुस्लिम : ६५)

[३] अर्थात किताब और सुन्नत के अनुसार अपना झगड़ा चुकाने के लिये तय्यार हो जाये।

[४] आयत ११ तथा १२ में उन सामाजिक बुराईयों से रोका गया है जो भाईचारे को खंड़ित करती हैं। जैसी किसी मुसलमान पर व्यंग करना, उस की हँसी उड़ाना, उसे बुरे नाम से पुकारना, उस के बारे में बुरा गुमान रखना, किसी के भेद की खोज करना आदि। इसी प्रकार ग़ीबत करना। जिस का अर्थ यह है कि किसी की अनुपस्थिती में उस की न्निदा की जाये। यह वह सामाजिक बुराईयाँ है जिन से क़ुरआन तथा हदीसों में रोका गया है। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपने

वह उन से अच्छी हों। तथा आक्षेप न लगाओ एक–दूसरे को और न किसी को बुरी उपाधि दो। बुरा नाम है अपशब्द ईमान के पश्चात्। और जो क्षमा न माँगे तो वही लोग अत्याचारी हैं।

१२. हे लोगों जो ईमान लाये हो! बचो अधिकांश गुमानों से । वास्तव में कुछ गुमान पाप है। और किसी का भेद न लो। और न एकदूसरे की गीबत[१] करो। क्या चाहेगा तुम में से कोई अपने मरे भाई का मांस खाना? अत: तुम्हें इस से घृणा होगी। तथा अल्लह से डरते रहो। वास्तव में अल्लाह अति क्षमावान् दयावान् है।

१३. हे मनुष्यों![२] हम ने तुम्हें पैदा किया है एक नर–नारी से। तथा बना दी है तुम्हारी जातियाँ तथा प्रजातियाँ ताकि एक–दूसरे को पहचानो। वास्तव में तुम में अल्लाह

हज्जतुल वदाअ के भाषण में फ़रमाया: मुसलमानों! तुम्हारे प्राण, तुम्हारे धन तथा तुम्हारी मर्यादा एक दूसरे के लिये उसी प्रकार आदर्णीय है जिस प्रकार यह महीना तथा यह दिन आदर्णीय है। (सहीह बुख़ारी: १७४१, सहीह मुस्लिम : १९७९) दूसरी हदीस में है कि एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है। वह न उस पर अत्याचार करे और न किसी को अत्याचार करने दें। और न उसे नीचे समझे। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपने सीने की ओर संकेत कर के कहा: अल्लाह का डर यहाँ होता है। (सहीह मुस्लिम: २५६४)

[१] हदीस में है कि तुम्हारा अपने भाई की चर्चा ऐसी बात से करना जो उसे बुरी लगे वह ग़ीबत कहलाती है। पूछा गया कि यदि उस में वह बुराई हो तो फिर? आप(सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: यही तो ग़ीबत है। यदि न हो तो फिर वह आरोप है। (सहीह मुस्लिम : २५८९)

[२] इस आयत में सभी मनुष्यों को संबोधित कर के यह बताया गया है कि सब जातियों और क़बीलों के मूल माँ–बाप एक ही है। इसलिये वर्ग–वर्ण तथा जाति और देश पर गर्व और भेद–भाव करना उचित नहीं। जिस से आपस में घृणा पैदा होती है। इस्लाम की सामाजिक व्यवस्था में कोई भेद–भाव नहीं हैं। और न ऊँच नीच का कोई विचार है, और न जात–पात का, तथा न कोई छूवा–छूत है। नमाज़ में सब एक साथ खड़े होते हैं। विवाह में भी कोई वर्ग–वर्ण और जाति का भेद–भाव नहीं। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कुरैशी जाति की स्त्री ज़ैनब (रज़ियल्लाहु अन्हा) का विवाह अपने मुक्त किये हुये दास ज़ैद (रज़ियल्लाहु अन्हु) से किया था। और जब उन्होंने उसे तलाक़ दे दी तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने ज़ैनब से विवाह कर लिया। इसलिये कोई अपने को सय्यद कहते हुये अपनी पुत्री का विवाह किसी व्यक्तिसे इसलिये न करे कि वह सय्यद नहीं हैं तो यह जाहिली युग का विचार समझा जायेगा। जिस से इस्लाम का कोई सम्बंध नहीं है। बल्कि इस्लाम ने इस का खण्डन किया है। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के युग में अफ़रीक़ा के एक आदमी बिलाल (रज़ियल्लाहु अन्हु) तथा रोम के एक आदमी सुहैब (रज़ियल्लाहु अन्हु) बिना रंग और देश के भेद–भाव के एक साथ रहते थे।

नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: अल्लाह ने मुझे उपदेश भेजा है कि आपस में झुककर रहो। और कोई किसी पर गर्व न करे। और न कोई किसी पर अत्याचार करे। (सहीह मुस्लिम: २८६५)

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: लोग अपने मरे हुये बापों पर गर्व न करें। अन्यथा वे उस कीड़े से हीन हो जायेंगे जो अपने नाक से गन्दगी ढकेलता है। अल्लाह ने जाहिलिय्यत का पक्षपात और बापों पर गर्व को दूर कर दिया। अब या तो सदाचारी ईमान वाला है या कुकर्मी अभागा। सभी आदम की संतान हैं। (सुनन अबू दाऊद: ५११६। इस हदीस की सनद हसन है।)

के समीप सब से अधिक आदरणीय वही है जो तुम में अल्लाह से सब से अधिक डरता हो। वास्तव में अल्लाह सब जानने वाला सब से सूचित है।

१४. कहा कुछ बद्दुओं (देहातियों) ने कि हम ईमान लाये। आप कह दें कि तुम ईमान नहीं लाये। परन्तु कहो कि हम इस्लाम लाये। और ईमान अभी तक तुम्हारे दिलों में प्रवेश नहीं किया। तथा यदि तुम आज्ञा का पालन करते रहे अल्लाह तथा उस के रसूल की, तो नहीं कम करेगा वह (अल्लाह) तुम्हारे कर्मों में से कुछ। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान्[1] है।

१५. वास्तव में ईमान वाले वही हैं जो ईमान लाये अल्लाह तथा उस के रसूल पर, फिर संदेह नहीं किया और जिहाद किया अपने प्राणों तथा धनों से अल्लाह की राह में, यही सच्चे हैं।

१६. आप कह दें कि क्या तुम अवगत करा रहे हो अल्लाह को अपने धर्म से? जब कि अल्लाह जानता है जो कुछ (भी) आकाशों तथा धरती में है तथा वह प्रत्येक वस्तु का अति ज्ञानी है।

१७. वे उपकार जता रहे हैं आप के ऊपर कि वह इस्लाम लाये है। आप कह दें कि उपकार न जताओ मुझ पर अपने इस्लाम का। बल्कि अल्लाह का उपकार है तुम पर कि उस ने राह दिखायी है तुम्हें ईमान की, यदि तुम सच्चे हो।

१८. नि:संदेह अल्लाह ही जानता है आकाशों तथा धरती के ग़ैब (छुपी बात) को, तथा अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम कर रहे हो।

*****

यदि आज भी इस्लाम की इस व्यवस्था और विचार को मान लिया जाये तो पूरे विश्व में शान्ति तथा मानवता का राज्य हो जायेगा।

[1] आयत का भावार्थ यह है कि मुख से इस्लाम को स्वीकार कर लेने से मुसलमान तो हो जाता हैं किन्तु जब तक ईमान दिल में न उतरे वह अल्लाह के समीप ईमान वाला नहीं होता। और ईमान ही आज्ञा पालन की प्रेरणा देता है जिस का प्रतिफल मिलेगा।

सूरह क़ाफ़ – ५०

सूरह क़ाफ़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ४५ आयतें हैं।

- इस सूरह का आरंभ, अक्षर (क़ाफ़) से हुआ है। जो इस का यह नाम रखने का कारण है।
- इस में कुरआन की महिमा का वर्णन करते हुये मौत के पश्चात् जीवन से संबन्धित संदेहों को दूर किया गया है। और आकाश तथा धरती के उन लक्षणों की ओर ध्यान दिलाया गया है जिन पर विचार करने से मौत के पश्चात् जीवन का विश्वास होता है।
- इस में उन जातियों के परिणाम द्वारा शिक्षा दी गई है जिन्होंने उन रसूलों को झुठलाया जो दूसरे जीवन की सूचना दे रहे थे।
- इस में कर्मों के अभिलेख तथा नरक और स्वर्ग का ऐसा चित्र दिखाया गया है जिस से लगता है कि यह सब सामने हो रहा है।
- आयत ३६ और ३८ में शिक्षा दी गई है, और अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अपने स्थान पर स्थित रह कर कुरआन द्वारा शिक्षा देते रहने के निर्देश दिये गये है।

हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) प्रत्येक जुमुआ को मिम्बर पर यह सूरह पढ़ा करते थे। (सहीह मुस्लिम : ८७३)

इसी प्रकार आप इसे दोनों ईद की नमाज़, और फ़ज्र की नमाज़ में भी पढ़ते थे।(मुस्लिम : ८७८, ४५८)

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. क़ाफ़। शपथ है आदरणीय कुरआन की!

२. बल्कि उन्हे आश्चर्य हुआ कि आ गया उन के पास एक सावधान करने वाला उन्हीं में से। तो कहा काफ़िरों ने यह तो बड़े आश्चर्य[1] की बात है।

३. क्या जब हम मर जायेंगे और धूल हो जायेंगे? तो यह वापसी दूर की बात[2] (असंभव) है।

४. हमें ज्ञान है जो कम करती है धरती उन का अंश, तथा हमारे पास एक सुरक्षित पुस्तकहै।

५. बल्कि उन्होंने झुठला दिया सत्य को जब आ गया उन के पास। इसलिये उलझन में पड़े हुये हैं।

६. क्या उन्होंने नहीं देखा आकाश की ओर अपने ऊपर कि कैसा बनाया है हम ने उसे और सजाया है उस को और नहीं है उस में कोई दराड़?

७. तथा हम ने धरती को फैलाया, और डाल दिये उस में पर्वत। तथा उपजायीं उस में प्रत्येक प्रकार की सुन्दर वनस्पतियाँ।

८. आँख खोलने तथा शिक्षा देने के लिये प्रत्येक अल्लाह की ओर ध्यानमग्न भक्त के लिये।

९. तथा हम ने उतारा आकाश से शुभ जल, फिर उगाये उस के द्वारा बाग़ तथा अन्न जो काटे जायें।

१०. तथा खजूर के ऊँचे वृक्ष जिन के गुच्छे गुथे हुये हैं।

११. जीविका के लिये भक्तों की, तथा हम ने जीवित कर दिया निर्जीव नगर को। इसी प्रकार (तुम्हें भी) निकलना है।

१२. झुठलाया इस से पहले नूह की जाति तथा कूवें के वासियों एवं समूद ने।

१३. तथा आद और फ़िरऔन एवं लूत के भाईयों ने।

---

[1] कि हमारे जैसा एक मनुष्य रसूल कैसे हो गया?

[2] सुरक्षित पुस्तक से अभिप्राय ''लौहे मह्फ़ूज़'' है। जिस में जो कुछ उन के जीवन–मरण की दशायें हैं वह पहले ही से लिखी हुई है। और जब अल्लाह का आदेश होगा तो उन्हें फिर बनाकर तय्यार कर दिया जायेगा।

१४. तथा ऐका के वासियों ने, और तुब्बअ[१] की जाति ने। प्रत्येक ने झुठलाया[२] रसूलों को। अन्ततः सच्च हो गई (उन पर) हमारी धमकी।

१५. तो क्या हम थक गये हैं प्रथम बार पैदा कर के? बल्कि यह लोग संदेह में पड़े हुये हैं नये जीवन के बारे में।

१६. जब कि हम ने ही पैदा किया है मनुष्य को और हम जानते हैं जो विचार आते हैं उस के मन में। तथा हम अधिक समीप हैं उस से (उस की) प्राणनाड़ी[३] से।

१७. जब कि[४] (उस के) दायें–बायें बैठे दो फ़रिश्ते लिख रहे हैं।

१८. वह नहीं बोलता कोई बात मगर उसे लिखने के लिये उस के पास एक निरीक्षक तय्यार होता है।

१९. आ पहुँची मौत की अचेतना (बेहोशी) सत्य ले कर। यह वही है जिस से तू भाग रहा था।

२०. और फूँक दिया गया सूर (नरसिंघा) में। यहीं यातना के वचन का दिन है।

२१. तथा आयेगा प्रत्येक प्राणी इस दशा में कि उस के साथ एक हाँकने[५] वाला और एक गवाह होगा।

२२. तू इसी से अचेत था, तो हम ने दूर कर दिया तेरे पर्दे को, तो तेरी आँख आज खूब देख रही है।

२३. तथा कहा उस के साथी[६] ने: यह है जो मेरे पास तय्यार है।

२४. दोनों (फ़रिश्तों को आदेश होगा कि) फेंक दो नरक में प्रत्येक काफ़िर (सत्य के) विरोधी को।

२५. भलाई के रोकने वाले, अधर्मी, संदेह करने वाले को।

---

[१] देखिये : सूरह दुख़ान, आयत : ३७।

[२] इस आयतों में इन जातियों के विनाश की चर्चा कर के कुरआन और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को न मानने के परिणाम से सावधान किया गया है।

[३] अर्थात हम उस के बारे में उस से अधिक जानते है।

[४] अर्थात प्रत्येक व्यक्ति के दायें तथा बायें दो फ़रिश्ते नियुक्त है जो उस की बातों तथा कर्मों को लिखते रहते हैं। जो दायें है वह पुण्य को लिखता है। और जो बायें है वह पाप को लिखता है।

[५] यह दो फ़रिश्तें होंगे एक उसे हिसाब के लिये हाँक कर लायेगा, और दूसरा उस का कर्म–पत्र प्रस्तुत करेगा।

[६] साथी से अभिप्राय वह फ़रिश्ता है जो संसार में उस का कर्म लिख रहा था। वह उस का कर्म–पत्र उपस्थित कर देगा।

२६. जिस ने बना लिये अल्लाह के साथ दूसरे पूज्य, तो दोनों को फेंक दो कड़ी यातना में।

२७. उस के साथी (शैतान) ने कहा: हे हमारे पालनहार! मैंने इसे कुपथ नहीं किया, परन्तु वह स्वयं दूर के कुपथ में था।

२८. अल्लाह ने कहा: झगड़ा न करो मेरे पास। मैंने तो पहले ही (संसार में) तुम्हारी ओर चेतावनी भेज दी थी।

२९. नहीं बदली जाती बात मेरे पास[१] और न मैं तनिक भी अत्याचारी हूँ भक्तों के लिये।

३०. जिस दिन हम कहेंगे नरक से कि तू भर गई? और वह कहेगी क्या कुछ और है?[२]

३१. तथा समीप कर दी जायेगी स्वर्ग, वह सदाचारियों से कुछ दूर न होगी।

३२. यह है जिस का तुम को वचन दिया जाता था, प्रत्येक ध्यानमग्न रक्षक[३] के लिये।

३३. जो डरा अत्यंत कृपाशील से बिन देखे तथा लेकर आया ध्यान मग्न दिल।

३४. प्रवेश कर जाओ इस में शान्ति के साथ। यह सदैव रहने का दिन है।

३५. उन्हीं के लिये जो वे इच्छा करेंगे उस में मिलेगा। तथा हमारे पास (इस से भी) अधिक है।[४]

३६. तथा हम विनाश कर चुके हैं इन से पूर्व बहुत से समुदायों का जो इन से अधिक थे शक्ति में। तो वह फिरते रहे नगरों में, तो क्या कहीं कोई भागने की जगह पा सके?[५]

३७. वास्तव में इस में निश्चय शिक्षा है उस के लिये जिस के दिल हो, अथवा कान धरे और वह उपस्थित[६] हो।

---

[१] अर्थात मेरे नियम अनुसार कर्मों का प्रतिकार दिया गया है।

[२] अल्लाह ने कहा है कि वह नरक को अवश्य भर देगा। (देखिये : दूरह सज्दा, आयत: १३)। और जब वह कहेगी कि क्या कुछ और है? तो अल्लाह उस में अपना पैर रख देगा। और वह बस–बस कहने लगेगी। (बुख़ारी : ४८४८)

[३] अर्थात जो अल्लाह के आदेशों का पालन करता था।

[४] अधिक से अभिप्राय अल्लाह का दर्शन है। (देखिये: सूरह यूनुस, आयत: २६, की व्याख्या में: सहीह मुस्लिम : १८१)

[५] जब उन पर यातना आ गई।

[६] अर्थात ध्यान से सुनता हो।

३८. तथा निश्चय हम ने पैदा किया है आकाशें तथा धरती को और जो कुछ दोनों के बीच है छः दिनों में, और हमें कोई थकान नहीं हुई।

३९. तो आप सहन करें उन की बातों को तथा पवित्रता का वर्णन करें अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ सूर्य के निकलने से पहले तथा डूबने से पहले।[1]

४०. तथा रात के कुछ भाग में उस की पवित्रता का वर्णन करें और सज्दों (नमाज़ों) के पश्चात् (भी)।

४१. तथा ध्यान से सुनो, जिस दिन पुकारने वाला[2] पुकारेगा समीप स्थान से।

४२. जिस दिन सब सुनेंगे कड़ी आवाज़ सत्य के साथ, वही निकलने का दिन होगा।

४३. वास्तव में हम ही जीवन देते तथा मारते हैं और हमारी ओर ही फिर कर आना है।

४४. जिस दिन फट जायेगी धरती उन से, वह दौड़ते हुये (निकलेंगे) यह एकत्र करना हम पर बहुत सरल है।

४५. तथा हम भली–भाँति जानते हैं उस जो कुछ वे कह रहे हैं। और आप उन्हें बल पूर्वक मनवाने के लिये नहीं हैं। तो आप शिक्षा दें कुरआन द्वारा उसे जो डराता हो हमारी यातना से।



[1] हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने चाँद की ओर देखा। और कहा: तुम अल्लाह को ऐसे ही देखोगे। उस के देखने में तुम्हें कोई बाधा न होगी। इसलिये यदि यह हो के कि सूर्य निकलने तथा डूबने से पहले की नमाज़ों से पीछे न रहो तो यह अवश्य करो। फिर आप ने यही आयत पढ़ी। (सहीह बुख़ारी:५५४, सहीह मुस्लिम:६३३)

यह दोनों फ़ज्र और अस्र की नमाज़ें हैं। हदीस में है कि प्रत्येक नमाज़ के पश्चात् अल्लाह की तस्बीह और हम्द तथा तक्बीर ३३, ३३ बार करो। (सहीह बुख़ारी: ८४३, सहीह मुस्लिम : ५९५)

[2] इस से अभिप्राय प्रलय के दिन सूर में फूँकने वाला फ़रिश्ता है।

सूरह ज़ारियात – ५१

सूरह ज़ारियात के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ६० आयतें है।

- ज़ारियात का अर्थ है ऐसी वायु जो धूल उड़ाती हो। इस की आयत १ से ६ तक में तूफ़ानी तथा वर्षा करने वाली हवाओं और संसार की रचना तथा व्यवस्था में जो मुनष्य को सचेत कर देती है, उन के द्वारा इस बात की ओर ध्यान दिलाया गया है कि कर्मों का प्रतिफल मिलना आवश्यक है। तथा इसी प्रकार कर्मफल के इन्कार और उपहास के दुष्परिणाम से सावधान किया गया है।
- आयत १५ से १९ तक में अल्लाह से डरने तथा सदाचार का जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी गई है। और उस का उत्तम फल बताया गया है।
- आयत २० से २३ तक में उन निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है जो आकाश तथा धरती में और स्वयं मनुष्य में हैं। जो इस बात का प्रमाण है कि अल्लाह की यातना का नियम इस संसार में भी काफ़िरों पर लागू होता रहा है।
- अन्त में आयत ४७ से ६० तक अल्लाह की शक्ति तथा महिमा का वर्णन करते हुये उस की ओर लपकने और उस की वंदना करने का आमंत्रण दिया गया है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. शपथ है (बादलों को) बिखेरने वालियों की!
२. फिर (बादलों का) बोझ लादने वालियों की!
३. फिर धीमी गति से चलने वालियों की!
४. फिर (अल्लाह का) आदेश बाँटने वाले (फ़रिश्तों की)!
५. निश्चय जिस (प्रलय) से तुम्हें डराया जा रहा है वह सच्ची है।[1]
६. तथा कर्मों का फल अवश्य मिलने वाला है।
७. शपथ है रास्तों वाले आकाश की!
८. वास्तव में तुम विभिन्न[2] बातों में हो।
९. उस से वही फेर दिया जाता है जो (सत्य से) फिरा हुआ हो।
१०. नाश कर दिये गये अनुमान लगाने वाले।
११. जो अपनी अचेतना में भूले हुये हैं।
१२. वह प्रश्न[3] करते हैं कि प्रतिकार का दिन कब है?
१३. (उस दिन है) जिस दिन वह अग्नि पर तपाये जायेंगे।
१४. (उन से कहा जायेगा) : स्वाद चखो अपने उपद्रव का। यही वह है जिस की तुम शीघ्र माँग कर रहे थे।
१५. वास्तव में आज्ञाकारी स्वर्गों तथा जल स्रोतों में होंगे।
१६. लेते हुये जो कुछ प्रदान किया है उन को उन के पालनहार ने वस्तुतः वह इस से पहले (संसार में) सदाचारी थे।
१७. वह रात्रि में बहुत कम सोया करते थे।[4]
१८. तथा भोरों[1] में क्षमा माँगते थे।

---

[1] इन आयतों में हवाओं की शपथ ली गई है कि हवा (वायु) तथा वर्षा की यह व्यवस्था गवाह है कि प्रलय तथा परलोक का वचन सत्य तथा न्याय का होना आवश्यक है।

[2] अर्थात कुरआन तथा प्रलय के विषय में विभिन्न बातें कर रहे हैं।

[3] अर्थात उपहास स्वरूप प्रश्न करते हैं।

[4] अर्थात अपना अधिक समय अल्लाह के स्मरण में लगाते थे। जैसे तहज्जुद की नमाज़ और तस्बीह आदि।

१९. और उन के धनों में माँगने वाले तथा न पाने वाले[२] का भाग था।
२०. तथा धरती में बहुत सी निशानियाँ हैं विश्वास करने वालों के लिये।
२१. तथा स्वयं तुम्हारे भीतर (भी)। फिर क्या तुम देखते नहीं?
२२. और आकाश में तुम्हारी जीविका[३] है, तथा जिस का तुम्हें वचन दिया जा रहा है।
२३. तो शपथ है आकाश एवं धरती के पालनहार की यह (बात) ऐसे ही सच्च है जैसे तुम बोल रहे हो।[४]
२४. (हे नबी!) क्या आई आप के पास इब्राहीम के सम्मानित अतिथियों की सूचना?
२५. जब वे आये उस के पास तो सलाम किया। इब्राहीम ने (भी) सलम किया (तथा कहा): अपरिचित लोग हैं।
२६. फिर चुपके से अपने परिजनों की ओर गया। और एक मोटा (भुना हुआ) बछड़ा लाया।
२७. फिर रख दिया उन के पास, उस ने कहा: तुम क्यों नहीं खाते हो?
२८. फिर अपने दिल में उन से कुछ डरा, उन्होंने कहा: डरो नहीं। और उसे शुभसूचना दी एक ज्ञानी पुत्र की।
२९. तो सामने आई उस की पत्नी, और उस ने मार लिया (आश्चर्य से) अपने मुँह पर हाथ। तथा कहा: मैं बाँझ बुढ़िया हूँ।
३०. उन्होंने कहा: इसी प्रकार तेरे पालनहार ने कहा है। वास्तव में वह सब गुण और सब कुछ जानने वाला है।
३१. उस (इब्राहीम) ने कहा: तो तुम्हारा क्या अभियान है, हे भेजे हुये (फ़रिश्तो!)?
३२. उन्होंने कहा: वास्तव में हम भेजे गये हैं एक अपराधी जाति की ओर।
३३. ताकि हम बरसाये उन पर पत्थर की कंकरी।
३४. नामांकित[१] तुम्हारे पालनहार की ओर से उल्लंघनकारियों के लिये।

---

[१] हदीस में है कि अल्लाह प्रत्येक रात में जब तिहाई रात रह जाये तो संसार के आकाश की ओर उतरता है। और कहता है: है कोई जो मुझे पुकारे तो मैं उस की पुकार सुनूँ? है कोई जो माँगे, तो मैं उसे दूँ? है केई जो मुझ से क्षमा माँग तो मैं उसे क्षमा करूँ। (बुख़ारी : ११४५, मुस्लिम : ७५८)

[२] अर्थात जो निर्धन होते हुये भी नहीं माँगता था इसलिये उसे नहीं मिलता था।

[३] अर्थात आकाश की वर्षा तुम्हारी जीविका का साधन बनती है। तथा स्वर्ग और नरक आकाशें में हैं।

[४] अर्थात अपने बोलने का विश्वास हैं।

३५. फिर हम ने निकाल दिया जो भी उस (बस्ती) में ईमान वाले थे।
३६. और हम ने उस में मुमिनों का केवल एक ही घर[2] पाया।
३७. तथा छोड़ दी हम ने उस (बस्ती) में एक निशानी उन के लिये जो डरते हों दु:खदायी यातना से।
३८. तथा मूसा (की कथा) में, जब हम ने भेजा उसे फ़िरऔन की ओर प्रत्यक्ष (खुले) प्रमाण के साथ।
३९. तो वह विमुख हो गया अपने बल–बूते के कारण, और कह दिया की जादूगर अथवा पागल है।
४०. अन्तत: हम ने पकड़ लिया उस को तथा उस की सेनाओं को, फिर फेंक दिया उन को सागर में और वह निन्दित होकर रह गया।
४१. तथा आद में (शिक्षाप्रद निशानी है)। जब हम ने भेज दी उन पर बाँझ[3] आँधी।
४२. वह नहीं छोड़ती थी किसी वस्तु को जिस पर गुज़रती परन्तु उसे बना देती थी जीर्ण चूर–चूर हड्डी के समान।
४३. तथा समूद में जब उन से कहा गया कि लाभान्वित हो लो एक निश्चित् समय तक।
४४. तो उन्होंने अवैज्ञा की अपने पालनहार के आदेश की तो सहसा पकड़ लिया उन्हें कड़क ने, और वह देखते रह गये।
४५. तो वे न खड़े हो सके और न (हम से) बदला ले सके।
४६. तथा नूह[4] की जाति को इस से पहले (याद करो)। वास्तव में वह अवैज्ञाकारी जाति थे।
४७. तथा आकाश को हम ने बनाया है हाथों[5] से और हम निश्चय विस्तार करने वाले हैं।

---

[1] अर्थात प्रत्येक पत्थर पर पापी का नाम है।
[2] जो आदर्णीय लूत (अलैहिस्सलाम) का घर था।
[3] अर्थात अशुभ। (देखिये : सूरह हाक्का, आयत: ७)
[4] आयत ३१ से ४६ तक नबियों तथा विगत जातियों के परिणाम की ओर निरंतर संकेत कर के सावधान किया गया है कि अल्लाह के बदले का नियम बराबर काम कर रहा है।
[5] अर्थात अपनी शक्ति से।

४८. तथा धरती को हम ने बिछाया है तो हम क्या[1] ही अच्छे बिछाने वाले हैं।
४९. तथा प्रत्येक वस्तु को हम ने उत्पन्न किया है जोड़ा, ताकि तुम शिक्षा ग्रहण करो।
५०. तो तुम दौड़ो अल्लाह की ओर, वास्तव में मैं तुम्हें उस की ओर से प्रत्यक्ष रूप से (खुला) सावधान करने वाला हूँ।
५१. और मत बनाओ अल्लाह के साथ कोई दुसरा पूज्य। वास्तव में मैं तुम्हें इस से खुला सावधान करने वाला हूँ।
५२. इसी प्रकार नहीं आया उन के पास जो इन (मक्का वासियों) से पूर्व रहे कोई रसूल परन्तु उन्हों ने कहा कि जादूगर या पागल है।
५३. क्या वह एक दूसरे को वसिय्यत[2] कर चुके है इस की? बल्कि वे उल्लंघनकारी लोग हैं।
५४. तो आप मुख फेर लें उन से। आप की कोई निन्दा नहीं है।
५५. और आप शिक्षा देते रहें इसलिये कि शिक्षा लाभप्रद है ईमान वालों के लिये।
५६. और नहीं उत्पन्न किया है मैं ने जिन्न तथा मनुष्य को परन्तु ताकि मेरी ही इबादत करें।
५७. मैं नहीं चाहता हूँ उन से कोई जीविका, और न चाहता हूँ कि वह मुझे खिलायें।
५८. अवश्य अल्लाह ही जीविका दाता शक्तिशाली बलवान् है।
५९. तो इन अत्याचारिओ के पाप है इन के साथियों के पापों के समान अत: वह उतावले न बने।
६०. अन्तत: विनाश है काफ़िरों के लिये उन के उस दिन[3] से जिस से वह डराये जा रहे है।

*****

[1] आयत का भावार्थ यह है कि जब सब जिन्नों तथा मनुष्यों को अल्लाह ने अपनी वंदना के लिये उत्पन्न किया है तो अल्लाह के सिवा या उस के साथ किसी जिन्न या मनुष्य अथवा फ़रिश्ते और देवी देवता की वंदना अवैध और शिर्क है। जिस के लिये क्षमा नहीं है। (देखिये : सूरह निसा, आयत : ४८, ११६)। और जो व्यक्ति शिर्क कर लेता है तो उस के लिये स्वर्ग निषेध है। (देखिये : सूरह माइदा, आयत : ७२)

[2] वसिय्यत का अर्थ है: मरणसन्न आदेश। अर्थ यह कि क्या वे रसूलों के इन्कार का अपने मरण के समय आदेश देते आ रहे है कि यह भी अपने पूर्व के लेगों के समान रसूल का इन्कार कर रहे है?

[3] अर्थात प्रलय के दिन।

सूरह तूर – ५२

सूरह तूर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ४९ आयतें हैं

- इस सूरह के आरंभ में तूर (पर्वत) की शपथ लेने के कारण इस का नाम सूरह तूर है।
- इस में प्रतिफल के दिन को न मानने पर चेतावनी है कि अल्लाह की यातना उन पर अवश्य आ कर रहेगी। और इस पर विश्वास करने के साक्ष्य प्रस्तुत किये गये है तथा यातना का चित्र भी।
- अल्लाह की आज्ञा के पालन तथा अपने कर्तव्य को समझते हुये जीवन यापन करने पर अल्लाह के पुरस्कारों से सम्मानित किये जाने का चित्र भी किया गया है।
- विरोधियों के आगे ऐसे प्रश्न रख दिये गये है जिन से संदेह स्वयं दूर हो जाते है।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सहन करने तथा अल्लाह की प्रशंसा तथा पवित्रता गान का निर्देश दिया गया है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावन् है।

१. शपथ है तूर[१] (पर्वत) की!

२. और लिखी हुई पुस्तक[२] की!

३. जो झिल्ली के खुले पन्नों में लिखी हुई है।

४. तथा बैतुल मअमूर (आबाद[३] घर) की!

५. तथा ऊँची छत (आकाश) की!

६. और भड़काये हूये सागर[४] की!

७. वस्तुत: आप के पालनहार की यातना हो कर रहेगी।

८. नहीं है उसे कोई रोकने वाला।

९. जिस दिन आकाश डगमगायेगा।

१०. तथा पर्वत चलेंगे।

११. तो विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।

१२. जो विवाद में खेल रहे हैं।

१३. जिस दिन वे धक्का दिये जायेंगे नरक की अग्नि की ओर।

१४. (उन से कहा जायेगा) : यही वह नरक है जिसे तुम झठला रहे थे।

१५. तो क्या यह जादू है या तुम्हें सुझाई नहीं देता?

१६. इस मे प्रवेश कर जाओ फिर सहन करो या सहन न करो तुम पर समान है। तुम उसी का बदला दिये जा रहे हो जो तुम कर रहे थे।

१७. निश्चय, आज्ञाकारी बाग़ों तथा सुखों में होंगे।

१८. प्रसन्न होकर उस से जो प्रदान किया होगा उन को उन के पालनहार ने, तथा बचा लेगा उन को उन का पालनहार नरक की यातना से।

१९. (उन से कहा जायेगा) : खाओ और पीओ मनमानी उस के बदले में जो तुम कर रहे थे।

---

[१] यह उस पर्वत का नाम है जिस पर मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अल्लाह से वार्तालाप की थी।

[२] इस से अभिप्राय कुरआन है।

[३] यह आकाश में एक घर है जिस की फ़रिश्ते सदेव परिक्रमा करते रहते है। कुछ व्याख्या करों ने इस का अर्थ: कॉबा लिया है। जो उपासकों से प्रत्येक समय आबाद रहता है। क्योंकि मअमूर का अर्थ: (आबाद) है।

[४] देखिये : सूरह तक्वीर, आयत : ६

२०. तकिये लगाये हुये होंगे तख़्तों पर बराबर बिछे हुये तथा हम विवाह देंगे उन को बड़ी आँखों वाली स्त्रियों से।

२१. और जो लोग ईमान लाये और अनुसरण किया उन का उन की संतान ने ईमान के साथ तो हम मिला देंगे उन की संतान को उन के साथ तथा नहीं कम करेंगे उन के कर्मों में से कुछ, प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों का बंधक[१] है।

२२. तथा हम अधिक देंगे उन को मेवे तथा मांस जिस की वह रुचि रखेंगे।

२३. वे एक–दूसरे से उस में लेते रहेंगे मदिरा के प्याले जिस में न कोई व्यर्थ बात होगी, न कोई पाप की बात।

२४. और फिरते रहेंगे उन की सेवा मे (सुन्दर) बालक जैसे वह छुपाये हुये मोती हों।

२५. और वह (स्वर्ग वासी) सम्मुख होंगे एक–दूसरे के प्रश्न करते हुये।

२६. वह कहेंगे: इस से पूर्व[२] हम अपने परिजनों में डरते थे।

२७. तो अल्लाह ने उपकार किया हम पर, तथा हमें सुरक्षित कर दिया तापलहरी की यातना से।

२८. इस से पूर्व[३] हम वंदना किया करते थे उस की। निश्चय वह अति परोपकारी दयावान् है।

२९. तो आप शिक्षा देते रहें। क्योंकि आप के पालनहार के अनुग्रह से न आप काहिन (ज्योतिषी) है, और न पागल।[४]

३०. क्या वह कहते हैं कि यह कवि है हम प्रतीक्षा कर रहे हैं उस के साथ कालचक्र की?[५]

३१. आप कह दें कि तुम प्रतीक्षा करते रहो, मैं (भी) तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

३२. क्या उन्हें सिखाती है उन की समझ यह बातें, अथवा वह उल्लंघनकारी लोग हैं?

३३. क्या वह कहते हैं कि इस (नबी) ने इस कुरआन को स्वयं बना लिया है? वास्तव में वह ईमान नहीं लाना चाहते।

---

[१] अर्थात जो जैसा करेगा वैसा भरेगा।

[२] अर्थात संसार में अल्लाह की यातना से

[३] अर्थात संसार में।

[४] जैसा कि वह आप पर यह आरोप लगा कर हताश करना चाहत है।

[५] अर्थात कुरैश इस प्रतीक्षा में है कि संभवत: आप को मौत आ जाये तो हमें चैन मिल जाये।

३४. तो वे ला दें इस (कुरआन) के समान कोई एक बात यदि वह सच्चे है।

३५. क्या वह पैदा हो गये हैं बिना[1] किसी के पैदा किये, अथवा वह स्वयं पैदा करने वाले है?

३६. या उन्होंने ही उत्पत्ति की है आकाशों तथा धरती की? वास्तव में वह विश्वास ही नहीं रखते।

३७. अथवा उन के पास आप के पालनहार के कोषागार है या वही (उस के) अधिकारी है?

३८. अथवा उन के पास कोई सीढ़ी है जिसे लगाकर सुनते[2] है? तो उन का सुनने वाला कोई खुला प्रमाण प्रस्तुत करे।

३९. क्या अल्लाह के लिये पुत्रियाँ हों तुम्हारे लिये पुत्र हों।

४०. या आप माँग कर रहे हैं उन से किसी पारिश्रमिक[3] की तो वे उस के बाझ से दबे जा रहे हैं।

४१. अथवा उन के पास परोक्ष (का ज्ञान) है जिसे वे लिख[4] रहे है?

४२. या वे चाहते है कोई चाल चलना? तो जो काफ़िर हो गये वे उस चाल में ग्रस्त होंगे।

४३. अथवा उन का कोई और उपास्य (पूज्य) है अल्लाह के सिवा? अल्लाह पवित्र है उन के शिर्क से।

४४. यदि वे देख लें कोई खण्ड आकाश से गिरता हुआ तो कहेंगे कि तह पर तह बादल हैं।[5]

४५. अत: आप छोड़ दें उन को यहाँ तक कि मिल जायें अपने उस दिन से जिस में[6] इन्हें अपनी सुध नहीं होगी।

---

[1] जुबैर बिन मुत्इम कहते हैं कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मग्रिब की नमाज़ में सूरह तूर पढ़ रहे थे। जब इन आयतों पर पहुँचे तो मेरे दिल की दशा यह हुई कि वह उड़ जायेगा। (सहीह बुख़ारी : ४८५४)

[2] अर्थात आकाश की बातें। और जब उन के पास आकाश की बातें जानने का कोई साधन नहीं तो यह लोग, अल्लाह, फ़रिश्ते और धर्म की बातें किस आधार पर करते है?

[3] अर्थात सत्धर्म के प्रचार पर।

[4] इसीलिये इस वह्यी (कुरआन) को नहीं मानते हैं।

[5] अर्थात तब भी अपने कुफ़्र से नहीं रुकेंगे जब तक कि उन पर यातना न आ जाये।

[6] अर्थात प्रलय के दिन से।

४६. उस दिन नहीं काम आयेगी उन के उन की चाल कुछ, और न उन की सहायता की जायेगी।

४७. तथा निश्चय अत्याचारियों के लिये एक यातना है इस के अतिरिक्त[1] (भी)। परन्तु उन में से अधिक्तर ज्ञान नहीं रखते हैं।

४८. और (हे नबी!) आप सहन करें अपने पालनहार का आदेश आने तक। वास्तव में आप हमारी रक्षा में हैं। तथा पवित्रता का वर्णन करें अपने पानलहार की प्रशंसा के साथ जब जागते हों।[2]

४९. तथा रात्री में (भी) उस की पवित्रता का वर्णन करें और तारों के डूबने के[3] पश्चात् (भी)।

*****

[1] इस से संकेत संसारिक यातनाओं की ओर है। (देखिये: सूरह सज्दा आयत: २१)

[2] इस में संकेत है आधी रात्री के बाद की नमाज़ (तहज्जुद) की ओर।)

[3] रात्री में तथा तारों के डूबने के समय से संकेत मग्रिब तथा इशा और फ़ज्र की नमाज़ की ओर है जिन में यह सब नमाज़े भी आती है।


सूरह नज्म – ५३


सूरह नज्म के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है। इस में ६२ आयतें है।

- इस सूरह का आरंभ नज्म (तारे) की शपथ से हुआ है। इसलिये इस का नाम सूरह नज्म है।
- इस में वह्यी तथा रिसालत से सम्बंधित तथ्यों को प्रस्तुत किया गया है। जिन से ईमान तथा विश्वास पैदा होता है। और ज्योतिष के आरोप का खण्डन होता है।
- नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से सम्बंधित संदेहों को दूर किया गया है। जो वह्यी के बारे में किये जाते थे। और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने जो कुछ आकाशें में देखा उसे प्रस्तुत किया गया है।
- वह्यी (प्रकाशना) को छोड़कर मनमानी तथा शिर्क करने और प्रतिफल के इन्कार पर पकड़ की गई है। जिन से इन विचारों का व्यर्थ होना उजागर होता है।
- सदाचारियों को क्षमा और पुरस्कार की शुभसूचना दी गई है। और इन्कारियों को सोच–विचार का आमंत्रण दिया गया है।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सावधान कर्ता होने का वर्णन है। तथा प्रलय के दिन से सावधान करने के साथ ही अल्लाह ही को सज्दा करने तथा उसी की वंदना करने का आदेश दिया गया है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. शपथ है तारे की, जब वह डूबने लगे!
२. नहीं कुपथ हुवा है तुम्हारा साथी और न कुमार्ग हुवा है।
३. और वह नहीं बोलते अपनी इच्छा से।
४. वह तो बस वह्यी (प्रकाशना) है। जो (उन की ओर) की जाती है।
५. सिखाया है जिसे उन को शक्तिवान ने।[१]
६. बड़े बलशाली ने, फिर वह सीधा खड़ा हो गया।
७. तथा वह आकाश के ऊपरी किनारे पर था।
८. फिर समीप हुआ, और फिर लटक गया।
९. फिर हो गया दो कमान के बराबर अथवा उस से भी समीप।
१०. फिर उस ने वह्यी की उस (अल्लाह) के भक्त[२] की ओर जो भी वह्यी की।
११. नहीं झुठलाया उन के दिल ने जो कुछ उन्होंने देखा।
१२. तो क्या तुम उन से झगड़ते हो उस पर जिसे वह (आँखों से) देखतें है?
१३. निःसंदेह उन्होंने उसे एक बार और भी उतरते देखा।
१४. सिद्रतुल मुन्तहा[३] के पास।
१५. जिस के पास जन्नतुल[४] मावा है।
१६. जब सिद्रह पर छा रहा था जो कुछ छा रहा था।[५]
१७. न तो निगाह चुँधियाई और न सीमा से आगे हुई।

---

[१] इस से अभिप्राय जिब्रील (अलैहिस्सलाम) हैं जो वह्यी लाते थे।

[२] अर्थात मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की ओर। इन आयतों में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के जिब्रील (फ़रिश्ते) को उन के वास्तविक रूप में दो बार देखने का वर्णन है। आईशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने कहा: जो कहे कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अल्लाह को देखा है तो वहझूठा है।और जो कहे कि आप कल (भविष्य) की बात जानते थे तो वह झूठा है। तथा जो कहे कि आप ने धर्म की कुछ बातें छुपा लीं तो वह झठा है। किन्तु आप ने जिब्रील (अलहस्सिलाम) को उन के रूप में दो बार देखा। (बुख़ारी: ४८५५) इब्ने मस्ऊद ने कहा कि आप ने जिब्रील को देखा जिन के छः सौ पँख थे। (बुख़ारी : ४८५६)

[३] सिद्रतुल मुन्तहा यह छठें या सातवें आकाश पर बैरी एक वृक्ष है। जिस तक धरती की चीज़ पहुँचती है। तथा ऊपर की चीज़ उतरती हैं। (सहीह मुस्लिम : १७३)

[४] यह आठ स्वर्गों में से एक का नाम है।

[५] हदीस में है कि वह सोने के पतिंगे थे। (सहीह मुस्लिम : १७३)

१८. निश्चय आप ने अपने पालनहार की बड़ी निशानियाँ देखीं।[1]
१९. तो (हे मुश्रिकों!) क्या तुम ने देख लिया लात्त तथा उज़्ज़ा को।
२०. तथा एक तीसरे मनात को?[2]
२१. क्या तुम्हारे लिये पुत्र हैं और उस अल्लाह के लिये पुत्रियाँ?
२२. यह तो बड़ा भोंडा विभाजन है।
२३. वास्तव में यह कुछ केवल नाम हैं जो तुम ने तथा तुम्हारे पूर्वजों ने रख लिये हैं। नहीं उतारा है अल्लाह ने उस का कोई प्रमाण। वह केवल अनुमान[3] पर चल रहे हैं। तथा अपनी मनमानी पर। जब कि आ चुका है उन के पालनहार की ओर से मार्गदर्शन।
२४. क्या मनुष्य को वही मिल जायेगा जिस की वह कामना करे?
२५. (नहीं, यह बात नहीं है) क्यों कि अल्लाह के अधिकार में है आख़िरत (प्रलोक) तथा संसार।
२६. और आकाशों में बहुत से फ़रिश्ते हैं जिन की अनुशंसा कुछ लाभ नहीं देती, परन्तु इस के पश्चात् कि अनुमति दे अल्लाह जिस के लिये चाहे तथा उस से प्रसन्न हो।[4]
२७. वास्तव में जो ईमान नहीं लाते परलोक पर, वे नाम देते हैं फ़रिश्तों को स्त्रियों के नाम।
२८. उन्हें इस का कोई ज्ञान। नहीं वह अनुसरण कर रहे हैं मात्र गुमान का और वस्तुत: गुमान नहीं लाभप्रद होता सत्य के सामने कुछ भी।
२९. अत: आप विमुख हो जायें उस से जिस ने मुँह फेर लिया है हमारी शिक्षा से। तथा वह संसारिक जीवन ही चाहता है।
३०. यही उन के ज्ञान की पहुँच है। वास्तव में आप का पालनहार ही अधिक जानता है उसे जो कुपथ हो गया उस के मार्ग से, तथा उसे जिस ने संमार्ग अपना लिया।

[1] इस में मेअराज की रात आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के आकाशों में अल्लाह की निशानियाँ देखने का वर्णन है।

[2] लात्त उज़्ज़ा और मनात यह तीनों मक्का के मुश्रिकों की देवियों के नाम है। और अर्थ यह है कि क्या इन की भी कोई वास्तविक्ता है?

[3] मुश्रिक अपनी मुर्तियों को अल्लाह की पुत्रियाँ कह कर उन की पूजा करते थे। जिस का यहाँ खण्डन किया जा रहा है।

[4] अरब के मुश्रिक यह समझते थे कि यदि हम फ़रिश्तों की पूजा करेंगे तो वह अल्लाह से सिफ़ारिश कर के हमें यातना से मुक्त करा देंगे। इसी का खण्डन यहाँ किया जा रहा है।

३१. तथा अल्लाह ही का है जो आकाशों तथा धरती में है ताकि वह बदला दे जिस ने बुराई की उस के कुकर्म का, और बदला दे जिस ने सुकर्म किया अच्छा बदला।
३२. उन लोगों को जो बचते हैं, महा पापों तथा निर्लज्ज़ा[1] से, कुछ चूक के सिवा। वास्तव में आप का पालनहार उदार क्षमाशील है। वह भली-भाँति जानता है तुम को, जब कि उसने पैदा किया तुम को धरती[2] से तथा जब तुम भ्रूण थे अपनी माताओं के गर्भ में। अत: अपने में पवित्र न बनो। वही भली-भाँति जानता है उसे जिस ने सदाचार किया है।
३३. तो क्या आप ने उसे देखा जिस ने मुँह फेर लिया?
३४. और तनिक दान किया फिर रुक गया।
३५. क्या उस के पास परोक्षा का ज्ञान है कि वह (सब कुछ) देख[3] रहा हैं?
३६. क्या उसे सूचना नहीं हुई उन बातों की जो मूसा के ग्रन्थों में है?
३७. और इब्राहीम की जिस ने (अपना वचन) पूरा कर दिया।
३८. कि कोई दूसरे का भार नहीं लादेगा।
३९. और यह कि मनुष्य के लिये वही है जो उस ने प्रयास किया।
४०. और यह कि उस का प्रयास शीघ्र देखा जायेगा।
४१. फिर प्रतिफल दिया जायेगा उसे पूरा प्रतिफल।
४२. और यह कि आप के पालनहार की ओर ही (सब को) पहुँचना है।
४३. तथा वही है जिस ने (संसार में) हँसाया तथा रुलाया।
४४. तथा उसी ने मारा और जिवाया।
४५. तथा उसी ने दोनों प्रकार उत्पन्न किये: नर और नारी।

---

[1] निर्लज्ज़ से अभिप्राय: निर्लज्ज़ा पर आधारित कुकर्म हैं। जैसे बाल-मैथुन, व्यभिचार, नारियों का अपने सौन्दर्य का प्रदर्शन और पर्दे का त्याग, मिश्रित शिक्षा, मिश्रित सभायें, सौन्दर्य की प्रतियोगिता आदि । जिसे आधुनिक युग में सभ्यता का नाम दिया जाता है। और मुस्लिम समाज भी इस से प्रभावित हो रहा है। हदीस में है कि साद विनाशकारी कर्मों से बचो: १- अल्लाह का साझी बनाने से। २-जादू करना। ३-अकारण जान मारना। ४-मदिरा पीना। ५-अनाथ का धन खाना। ६-युद्ध के दिन भागना। ७-तथा भोली भाली पवित्र स्त्री को कलंक लगाना। (सहीह बुख़ारी : २७६६, मुस्लिम : ८९)

[2] अर्थात तुम्हारे मूल आदम (अलैहिस्सलाम) को।

[3] इस आयत में जो परम्परागत धर्म को मोक्ष का साधन समझता है उस से कहा जा रहा है कि क्या वह जानता है कि प्रलय के दिन इतने ही से सफल हो जायेगा? जब कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) वह्यी के आधार पर जो प्रस्तुत कर रहे हैं वही सत्य है।) और अल्लाह की वह्यी ही परोक्ष के ज्ञान का साधन है।

४६. वीर्य से जब (गर्भाशय में) गिरा।
४७. तथा उसी के ऊपर दूसरी बार[१] उत्पन्न करना है।
४८. तथा उसी ने धनी बनाया और धन दिया।
४९. और वही शेअ्रा[२] का स्वामी है।
५०. तथा उसी ने ध्वस्त किया प्रथम[३] आद को।
५१. तथा समूद को। किसी को शेष नहीं रखा।
५२. तथा नूह की जाति को इस से पहले, वस्तुत: वह बड़े अत्याचारी अवैज्ञाकारी थे।
५३. तथा औंधी की हुई बस्ती[४] को उस ने गिरा दिया।
५४. फिर उस पर छा दिया जो छा[५] दिया।
५५. तो (हे मनुष्य!) तू अपने पालनहार के किन किन पुरस्कारों में संदेह करता रहेगा।
५६. यह[६] सचेतकर्ता हैं प्रथम सचेतकर्ताओं में से।
५७. समीप आ लगी समीप आने वाली।
५८. नहीं है अल्लाह के सिवा उसे कोई दूर करने वाला।
५९. तो क्या तुम इस[७] कुरआन पर आश्चर्य करते हो?
६०. तथा हँसते हो, और रोते नहीं।
६१. तथा विमुख हो रहे हो।
६२. अत: सज्दा करो अल्लाह के लिये तथा उसी की वंदना[८] करो।



[१] अर्थात प्रलय के दिन प्रतिफल प्रदान करने के लिये

[२] शेअ्रा एक तारे का नाम है। जिस की पूजा कुछ अरब के लोग किया करते थे। (इब्ने कसीर)। अर्थ यह है कि यह तारा पूज्य नहीं, वास्तविक पूज्य उस का स्वामी अल्लाह है।

[३] यह हूद (अलैहिस्सलाम) की जाति थे।

[४] अर्थात सालेह (अलैहिस्सलाम) की जाति को।

[५] अर्थात लूत (अलैहिस्सलाम) की जाति को।

[६] अर्थात पत्थरों की वर्षा कर के उन की बस्ती को ढाँक दिया।

[७] अर्थात मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) भी एक रसूल हैं प्रथम रसूलों के समान।

[८] हदीस में है कि जब सज्दे की प्रथम सूरह: नज्म, उतरी तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और जो आप के पास थे सब ने सज्दा किया एक व्यक्ति के सिवा। उस ने कुछ धूल ली, और उस पर सज्दा किया। तो मैं ने इस के पश्चात् देखा कि वह काफ़िर रहते हुये मारा गया। और वह उमय्या बिन ख़लफ़ है। (सहीह बुख़ारी : ४८६३)

सूरह क़मर – ५४

सूरह क़मर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है। इस में ५५ आयतें है।

- इस की प्रथम आयत में क़मर (चाँद) के दो भाग हो जाने का वर्णन है। इसलिये इसे सूरह कमर कहा जाता है।
- इस में काफ़िरों को झंझोड़ा गया है कि जब प्रलय का लक्षण उजागर हो गया है, और वह एतिहासिक बातें भी आ गई हैं जिन में शिक्षा है तो फिर वह कैसे अपने कुफ़्र पर अड़े हुये हैं? यह काफिर उसी समय सचेत होंगे जब प्रलय आ जायेगी।
- उन जातियों का कुछ परिणाम बताया गया है जिन्होंने रसूलों को झुठलाया। और संसार ही में यातना की भागी बन गईं। और मक्का के काफ़िरों को प्रलय की आपदा से सावधान किया गया है।
- अन्तिम आयतों में आज्ञाकारियों को स्वर्ग की शुभसूचना दी गई है।

✻✻✻✻✻

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. समीप आ गई[1] प्रलय, तथा दो खण्ड हो गया चाँद।
२. और यदि वह देखते हैं कोई निशानी तो मुँह फेर लेते हैं। और कहते हैं। यह तो जादू है जो होता रहा है।
३. और उन्होंने झुठलाया और अनुसरण किया अपनी आकांक्षाओं का। और प्रत्येक कार्य का एक निश्चित समय है।
४. और निश्चय आ चुके है उन के पास कुछ ऐसे समाचार जिन में चेतवानी है।
५. यह (कुरआन) पूर्णत: तत्वदर्शिता (ज्ञान) है फिर भी नहीं काम आईं उन के चेतावनियाँ।
६. तो आप विमुख हो जायें उन से, जिस दिन पुकारने वाला पुकारेगा एक अप्रिय चीज़ की[2] ओर।
७. झुकी होंगी उन की आँख। वह निकल रहे होंगे समाधियों से जैसे कि वह टिड्डी दल हों बिखरे हुये।
८. दौड़ रहे होंगे पुकारने वाले की ओर। काफ़िर कहेंगे: यह तो बड़ा भीषण दिन है।
९. झुठलाया इन से पहले नूह की जाति ने। तो झुठलाया उन्होंने हमारे भक्त को और कहा कि (पागल) है। और (उसे) झड़का गया।
१०. तो उस ने प्रार्थना की अपने पालनहार से कि मैं विवश हूँ, अत: मेरा बदला लेले।
११. तो हम ने खोल दिये आकाश के द्वार धारा प्रवाह जल के साथ।
१२. तथा फाड़ दिये धरती के स्रोत, तो मिल गया (आकाश और धरती का) जल उस कार्य के अनुसार जो निश्चित किया गया।
१३. और सवार कर दिया हम ने उस (नूह) को तख़्तों तथा कीलों वाली (नाव) पर।

[1] आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से मक्का वासियों ने माँग की, कि आप कोई चमत्कार दिखायें। अत: आप ने चाँद को दो भाग होते उन्हें दिखा दिया। (बुख़ारी: ४८६७)

आदरणीय अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद कहते हैं कि रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के युग में चाँद दो खण्ड हो गया: एक खण्ड पर्वत के ऊपर और दूसरा उस के नीचे। और आप ने कहा: तुम सभी गवाह रहो। (सहीह बुख़ारी : ४८६४)

[2] अर्थात प्रलय के दिन हिसाब के लिये।

१४. जो चल रही थी हमारी रक्षा में उस का बदला लेने के लिये जिस के साथ कुफ़्र किया गया था।
१५. और हम ने छोड़ दिया इसे एक शिक्षा बना कर। तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला?
१६. फिर (देख लो!) कैसी रही मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियाँ?
१७. और हम ने सरल कर दिया है कुरआन को शिक्षा के लिये। तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला?
१८. झुठलाया आद ने तो कैसी रही मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियाँ।
१९. हम ने भेज दी उन पर कड़ी आँधी एक निरन्तर अशुभ दिन में।
२०. जो उख़ाड़ रही थी लोगों को जैसे वह खजूर के खोखले तने हों।
२१. तो कैसी रही मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियाँ?
२२. और हम ने सरल बना दिया है कुरआन को शिक्षा के लिये। तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला?
२३. झुठला दिया समूद[१] ने चेतावनियों को।
२४. और कहा: क्या अपने ही मे से एक मनुष्य का हम अनुसरण करें? वास्तव में तब तो हम निश्चय बड़ो कुपथ तथा पागलपन में है।
२५. क्या उतारी गई है शिक्षा उसी पर हमारे बीच में से? (नहीं) बल्कि वह बड़ा झूठा अहंकारी है।
२६. उन्हें कल ही ज्ञान हो जायेगा कि कौन बड़ा झूठा अहंकारी है?
२७. वास्तव में हम भेजने वाले है ऊँटनी उन की परीक्षा के लिये। अत: (हे सालेह!) तुम उन के (परिणाम की) प्रतीक्षा करो तथा धैर्य रखो।
२८. और उन्हें सूचित कर दो कि जल विभाजित होगा उन के बीच, और प्रत्येक अपनी बारी के दिन[२] उपस्थित होगा।

---

[१] यह सालेह (अलैहिस्सलाम) की जाति थी। उन्होंने उन से चमत्कार की माँग की तो अल्लाह ने पर्वत से एक ऊँटनी निकाल दी। फिर भी वह ईमान नहीं लाये। क्योंकि उन के विचार से अल्लाह का रसूल कोई मनुष्य नही फ़रिश्ता होना चाहिये था। जैसा की मक्का के मुश्रिकों का विचार था।

[२] अर्थात एक दिन जल स्रोत का पानी ऊँटनी पियेगी और एक दिन तुम सब।

२९. तो उन्होंने पुकारा अपने साथी को। तो उस ने आक्रमण किया और उसे बध कर दिया।

३०. फिर कैसी रही मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियाँ?

३१. हम ने भेज दी उन पर कर्कश ध्वनी, तो वे हो गये बाड़ा बनाने वाले की रौंदी हुई बाढ़ के समान (चूर–चूर)।

३२. और हम ने सरल कर दिया है कुरआन को शिक्षा के लिये। तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला?

३३. झूठला दिया लूत की जाति ने चेतावनियों को।

३४. तो हम ने भेज दिये उन पर, पत्थर लूत के परिजनों के सिवा, हम ने उन्हें बचा लिया रात्री के पिछले पहर।

३५. अपने विशेष अनुग्रह से। इसी प्रकार हम बदला देते हैं उस को जो कृतज्ञ हो।

३६. और नि:संदेह (लूत) ने सावधान किया उन को हमारी पकड़ से। परन्तु उन्होंने संदेह किया चेतावनियों के विषय में।

३७. और बहलाना चाहा उस (लूत)को उस के अतिथियों[१] से तो हम ने अंधी कर दी उन की आँखें। कि चखो मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियों (का परिणाम)।

३८. और उन पर आ पहुँची प्रात: भोर ही मे स्थायी यातना।

३९. तो चखो मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियाँ।

४०. और हम ने सरल कर दिया है कुरआन को शिक्षा के लिये तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला ?

४१. तथा फ़िरऔनियों के पास भी चेतावनियाँ आईं।

४२. उन्होंने झुठलाया हमारी प्रत्येक निशानियों को तो हम ने पकड़ लिया उन को अति प्रभावी आधिपति के पकड़ने के समान।

४३. (हे मक्का वासियों!) क्या तुम्हारे काफ़िर उत्तम हैं उन से अथवा तुम्हारी मुक्ति लिखी हुई है आकाशीय पुस्तकों में?

४४. अथवा वह कहते हैं कि हम विजेता समूह हैं।

---

[१] अर्थात उन्होंने अपने दुराचार के लिये फ़रिश्तों को जो सुन्दर युवकों के रूप में आये थे, उन को लूत (अलैहिस्सलाम) से अपने सुपुर्द करने की माँग की।

४५. शीघ्र ही पराजित कर दिया जायेगा यह समूह, और वह पीठ दिखा[१] देंगे।
४६. बल्कि प्रलय उन के वचन का समय है तथा प्रलय अधिक कड़ी और तीखी है।
४७. वस्तुत: यह पापी कुपथ तथा अग्नि में हैं।
४८. जिस दिन वे घसीटे जायेंगे यातना में अपने मुखों के बल (उन से कहा जायेगा कि) चखो नरक की यातना का स्वाद।
४९. निश्चय हम ने प्रत्येक वस्तु को उत्पन्न किया है एक अनुमान से।
५०. और हमारा आदेश बस एक ही बार होता है आँख झपकने के समान।[२]
५१. और हम ध्वस्त कर चुके हैं तुम्हारे जैसे बहुत से समुदायों को।
५२. जो कुछ उन्हेंने किया है कर्मपत्र में है।[३]
५३. और प्रत्येक तुच्छ तथा बड़ी बात अंकित है।
५४. वस्तुत: सदाचारी लोग स्वर्गों तथा नहरो में होंगे।
५५. सत्य के स्थान में अति सामर्थ्यवान स्वामी के पास।

*****

[१] इस में मक्का के काफ़िरों की पराजय की भविष्यवाणी है जो बद्र के युद्ध में पूरी हुई। हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बद्र के दिन एक ख़ेमे में अल्लाह से प्रार्थना कर रहे थे। फिर यही आयत पढ़ते हुये निकले। (सहीह बुख़ारी : ४८७५)

[२] अर्थात प्रलय होने में देर नहीं होगी। अल्लाह का आदेश होते ही तत्क्षण प्रलय आ जायेगी

[३] जिसे उन फ़रिश्तों ने जो दायें तथा बायें रहते हैं लिख रखा है।

सूरह रह्मान – ५५

सूरह रह्मान के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में ७८ आयतें हैं।

- इस सूरह का आरंभ अल्लाह के शुभ नाम ''रह्मान'' से हुआ है। इसलिये इस का नाम सूरह रह्मान है।
- इस की आरंभिक आयतों में रह्मान (अत्यंत कृपाशील) की सब से बड़ी दया का वर्णन हुआ है कि उस ने मनुष्य को कुरआन का ज्ञान प्रदान किया और उसे बात करने की शक्ति दी जो उस का विशेष गुण है।
- फिर आयत १२ तक धरती तथा आकाश की विचित्र चीज़ों का वर्णन कर के यह प्रश्न किया गया है कि तुम अपने पालनहार के किन–किन उपकारों तथा गुणों को नकारोगे?
- इस की आयत १३ से ३० तक जिन्नों तथा मनुष्यों की उत्पत्ति, दो पूर्व तथा पश्चिमों की दूरी, दो सागरों का संगम तथा इस प्रकार की अन्य विचित्र निशानियों और अल्लाह की दया की ओर ध्यान दिलाया गया है।
- आयत ३१ से ४५ तक मनुष्यों तथा जिन्नों को उन के पापों पर कड़ी चेतावनी दी गई है कि वह दिन आ ही रहा है जब तुम्हारे किये का दुःखदायी दण्ड तुम्हें मिलेगा।
- अन्त में उन का शुभ परिणाम बताया गया है जो अल्लाह से डरते रहे। और फिर स्वर्ग के सुखों की एक झलक दिखायी गई है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. अत्यंत कृपाशील ने।

२. शिक्षा दी कुरआन की।

३. उसी ने उत्पन्न किया मनुष्य को।

४. सिखाया उसे साफ़ साफ़ बोलना।

५. सूर्य तथा चन्द्रमा एक (नियमित) हिसाब से हैं।

६. तथा तारे और वृक्ष दोनों (उसे) सज्दा करते हैं।

७. और आकाश को ऊँचा किया और रख दी तराजू।[1]

८. ताकि तुम उल्लंघन न करो तराजू (न्याय) में।

९. तथा सीधी रखो तराजू न्याय के साथ और कम न तौलो।

१०. धरती को उस ने (रहने योग्य बनाया पूरी उत्पत्ति के लिये)।

११. जिस में मेवे तथा गुच्छे वाले खजूर हैं।

१२. और भूसे वाले अन्न तथा सुगंधित (पुष्प) फूल हैं।

१३. तो (हे मनुष्य तथा जिन्न!) तुम अपने पालनहार के किन–किन उपकारों को झुठलाओगा?

१४. उस ने उत्पन्न किया मनुष्य को खनखनाते ठीकरी जैसे सूखे गारे से।

१५. तथा उत्पन्न किया जिन्नों को अग्नि की ज्वाला से।

१६. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन–किन उपकारों को झुठलाओगे?

१७. वह दोनों सूर्योदय[2] के स्थानों तथा दोनों सूर्यास्त के स्थानों का स्वामी है।

१८. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन– किन पुरस्कारों को झुठलाओगे?

१९. उस ने दो सागर बहा दिये जिन का संगम होता है।

२०. उन दोनों के बीच एक आड़ है। वह एक–दूसरे से मिल नहीं सकते।

२१. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन–किन उपकारों को झुठलाओगे ?

२२. निकलता है उन दोनों से मोती तथा मूँगा।

---

[1] (देखिये : सूरह हदीद, आयत: २५) अर्थ यह है कि धरती में न्याय का नियम बनाया और उस के पालन का आदेश दिया।

[2] गर्मी तथा जाड़े में सूर्योदय तथा सूर्यास्त के स्थानों का। इस से अभिप्राय पूर्व तथा पश्चम की दिशा नहीं है।

२३. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन–किन उपकारों को झुठलाओगे?
२४. तथा उसी के अधिकार में हैं जहाज़ खड़े किये हुये सागर में पर्वतों जैसे।
२५. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन–किन उपकारों को झुठलाओगे?
२६. प्रत्येक जो धरती पर हैं नाशवान है।
२७. तथा शेष रह जायेगा आप के प्रतापी सम्मानित पालनहार का मुख (अस्तित्व)।
२८. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन–किन उपकारों को झुठलाओगे?
२९. उसी से माँगते हैं जो आकाशों तथा धरती में हैं। प्रत्येक दिन वह एक नये कार्य में है।[१]
३०. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन–किन उपकारों को झुठलाओगे?
३१. और शीघ्र ही हम पूर्णतः आकर्षित हो जायेंगे तुम्हारी ओर, है (धरती के) दोनों बोझ[२] (जिन्नो और मनुष्यो!)[३]
३२. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन–किन उपकारों को झुठलाओगे?
३३. हे जिन्न तथा मनुष्य के समूह! यदि निकल सकते हो आकाशों तथा धरती के किनारों से तो निकल भागो। और तुम निकल नहीं सकोगे बिना बड़ी शक्ति[४] के।
३४. फिर तुम दोनों अपने पालनहार के किन–किन उपकारों को झुठलाओगे?
३५. तुम दोनों पर अग्नि की ज्वाला तथा धूवाँ छोड़ा जायेगा। तो तुम अपनी सहायता नहीं कर सकोगे।
३६. फिर तुम दोनों अपने पालनहार के किन–किन उपकारों को झुठलाओगे?
३७. जब आकाश (प्रलय के दिन) फट जायेगा तो लाल हो जायेगा लाल चमड़े के समान।
३८. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन–किन उपकारों को झुठलाओंगे?
३९. तो उस दिन नहीं प्रश्न किया जायेगा अपने पाप का किसी मनुष्य से न जिन्न से।
४०. तो तुम अपने पालनहार के किन–किन उपकारों को झुठलाओगे?

---

[१] अर्थात वह अपनी उत्पत्ति की आवश्यक्तायें पूरी करता, प्रार्थनायें सुनता, सहायता करता, रोगी को निरोग करता, अपनी दया प्रदान करता, तथा अपमान–सम्मान और विजय–प्राजय देता और अगणित कार्य करता है।

[२] इस वाक्य का अर्थ मुहावरे में धमकी देना और सावधान करना है।

[३] इस में प्रलय के दिन की ओर संकेत है जब सब मनुष्यों और जिन्नों के कर्मों का हिसाब लिया जायेगा।

[४] अर्थ यह है कि अल्लाह की पकड़ से बच निकलना तुम्हारे बस में नहीं है।

४१. पहचान लिये जायेंगे अपराधी अपने मुखों से, तो पकड़ा जायेगा उन के माथे के बलों और पैरों को।
४२. तो तुम अपने पालनहार के किन–किन उपकारों को झुठलाओगे?
४३. यही वह नरक है जिसे झूठ कह रहे थे अपराधी।
४४. वह फिरते रहेंगे उस के बीच तथा खौलते पानी के बीच।
४५. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन–किन उपकारों को जुठलाओगे?
४६. और उस के लिये जो डरा अपने पालनहार के समक्ष खड़े होने से दो बाग़ हैं।
४७. तो तुम अपने पालनहार के किन–किन उपकारों को झुठलाओगे।
४८. दो बाग़ हरी भरी शाखाओं वाले।
४९. तो तुम अपने पालनहार के किन–किन उपकारों को झुठलाओगे?
५०. उन दोनों में दो जल स्रोत बहते होंगे।
५१. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन–किन पुरस्कारों को झुठलाओगे?
५२. उन में प्रत्येक फल के दो प्रकार होंगे।
५३. तो तुम अपने पालनहार के किन–किन उपकारों को झुठलाओगे?
५४. वह ऐसे बिस्तरों पर तकिये लगाये हुये होगे जिन के अस्तर दबीज़ रेशम के होंगे। और दोनों बागों (की शाखायें) फलों से झुकी हुई होंगी।
५५. तो तुम अपने पालनहार के किन–किन उपकारों को झुठलाओगे?
५६. उन में लजीली आँखों वाली स्त्रियाँ होगी जिन को हाथ नहीं लगाया होगा किसी मनुष्य ने इस से पूर्व और न किसी जिन्न ने।
५७. तो तुम अपने पालनहार के किन–किन उपकारों को झुठलाओगे?
५८. जैसे वह हीरे और मूँगे हों।
५९. तो तुम अपने पालनहार के किन–किन उपकारों को झुठलाओगे?
६०. उपकार का बदला उपकार ही है।
६१. तो तुम अपने पालनहार के किन–किन उपकारों को झुठलाओगे?

६२. तथा उन दोनों के सिवा[१] दो बाग़ होंगे।
६३. तो तुम अपने पालनहार के किन–किन उपकारों को झुठलाओगे?
६४. दोनों हरे–भरे होंगे।
६५. तो तुम अपने पालनहार के किन–किन उपकारों को झुठलाओगे?
६६. उन दोनों में दो जल स्रोत होंगे उबलते हुये।
६७. तो तुम अपने पालनहार के किन–किन उपकारों को झुठलाओगे?
६८. उन में फल तथा खजूर और अनार होंगे।
६९. तो तुम अपने पालनहार के किन–किन उपकारों को झुठलाओगे?
७०. उन में सुचरिता सुन्दरियाँ होंगी।
७१. तो तुम अपने पालनहार के किन–किन उपकारों को झुठलाओगे?
७२. गोरियाँ सुरक्षित होंगी ख़ेमों में।
७३. तो तुम अपने पालनहार के किन–किन उपकारों को झुठलाओगे?
७४. नहीं हाथ लगाया होगा उन्हें किसी मनुष्य ने इस से पूर्व और न किसी जिन्न ने।
७५. तो तुम अपने पालनहार के किन–किन उपकारों को झुठलाओगे?
७६. वे तकिये लगाये हुये होंगे हरे गलीचों तथा सुन्दर विस्तारों पर।
७७. तो तुम अपने पालनहार के कि–किन उपकारों को झुठलाओगे?
७८. शुभ है आप के प्रतापी सम्मानित पालनहार का नाम।

*****

[१] हदीस में है कि दो स्वर्ग चाँदी की है। जिन के वर्तन तथा सब कुछ चाँदी के हैं। और दो स्वर्ग सोने की, जिन के बर्तन तथा सब कुछ सोने का है। और स्वर्ग वासियों तथा अल्लाह के दर्शन के बीच अल्लाह के मुख पर महिमा के पर्दे के सिवा कुछ नहीं होगा। (सहीह बुख़ारी : ४८७८)

सूरह वाक़िआ – ५६

सूरह वाक़िआ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में ९६ आयत हैं।

- वाक़िआ प्रलय का एक नाम है। जो इस सूरह की प्रथम आयत में आया है। जिस के कारण इस का यह नाम रखा गया है।
- इस में प्रलय का भ्याव: चित्रण है जिस में लोगों को तीन भागों में कर दिया जायेगा। फिर प्रत्येक के परिणाम को बताया गया है। और उन तथ्यों का वर्णन किया गया है जिन से प्रतिफल के प्रति विश्वास होता है।
- सूरह के अन्त में कुरआन से विमुख होने पर झंझोंड़ा गया है कि कुरआन जो प्रलय तथा प्रतिफल की बाते बता रहा है वह सर्वथा अल्लाह का संदेश है। उस में शैतान का कोई हस्तक्षेप नहीं है।
- अन्त में मौत के समय की विवशता का वर्णन करते हुये अन्तिम परिणाम से सावधान किया गया है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. जब होने वाली हो जायेगी।

२. उस का होना कोई झूठ नहीं है।

३. नीचा–ऊँचा करने[1] वाली।

४. जब धरती तेज़ी से डोलने लगेगी।

५. और चूर–चूर कर दिये जायेंगे पर्वत।

६. फिर हो जायेंगे विखरी हुई धूल।

७. तथा तुम हो जाओगे तीन समूह।

८. तो दायें वाले, तो क्या है दायें वाले![2]

९. और बायें वाले, तो क्या हैं बाये वाले!

१०. और आग्रगामी तो आग्रगामी ही है।

११. वही समीप किये[3] हुये हैं।

१२. वह सुखों के स्वर्गों में होंगे।

१३. बहुत से अगले लोगों में से।

१४. तथा कुछ पिछले लोगों में से होंगे।

१५. स्वर्ण से बुने हुये तख़्तों पर।

१६. तकिये लगाये उन पर एक–दूसरे के सम्मुख (आसीन) होंगे।

१७. फिरते होंगे उन की सेवा के लिये बालक जो सदा (बालक) रहेंगे।

१८. प्याले तथा सुराहियाँ लेकर तथा मदिरा के छलकते प्याले।

१९. न तो सि चकरायेगा उन से न वह निर्बोध होंगी।

२०. तथा जो फल वह चाहेंगे।

२१. तथा पक्षी का जो मांस वे चाहेंगे।

---

[1] इस से अभिप्राय प्रलय है। जो सत्य के विरोधियों को नीचा कर के नरक तक पहुँचायेगी। तथा आज्ञाकारियों को स्वर्ग के ऊँचे स्थान तक पहुँचायेगी। आरंभिक आयतों में प्रलय के होने की चर्चा, फिर उस दिन लोगों के तीन भागों मे विभाजित होने का वर्णन किया गया है।

[2] दायें वालो से अभिप्राय वह है जिन का कर्मपत्र दायें हाथ में दिया जायेगा। तथा बायें वाले वह दुराचारी होंगे जिन का कर्मपत्र बायें हाथ में दिया जायेगा।

[3] अर्थात अल्लाह के प्रियवर और उस के समीप होंगे।

२२. और गोरियाँ बड़े नैनों वाली।
२३. छुपा कर रखी हुई मोतियों के समान।
२४. उस के बदले जो वह (संसार में) करते रहे।
२५. नहीं सुनैंगे उन में व्यर्थ बात और न पाप की बात।
२६. केवल सलाम ही सलाम की ध्वनी होगी।
२७. और दायें वाले, (क्या ही भाग्य शाली) है दायें वाले!
२८. बिन काँटे की बैरी में होंगे।
२९. तथा तह पर तह केलों में।
३०. फैली हुई छाया[१] में।
३१. और प्रवाहित जल में।
३२. तथा बहुत से फलों में।
३३. जो न समाप्त होंगे, न रोके जायेंगे।
३४. और ऊँचे बिस्तर पर।
३५. हम ने बनाया है (उन की) पत्नियों को एक विशेष रूप से।
३६. हम ने बनाया है उन्हें कुमारियाँ।
३७. प्रेमिकायें समायु।
३८. दाहिने वालों के लिये।
३९. बहुत से अगलों में से होंगे
४०. तथा बहुत से पिछलों में से।
४१. और बायें वाले, क्या हैं बायें वाले!
४२. वह गर्म वायु तथा खौलते जल में (होंगे)।
४३. तथा काले धूवें की छाया में।
४४. जो न शीतल होगा और न सुखद।
४५. वास्तव में वह इस से पहले (संसार में) सम्पन्न (सुखी) थे।
४६. तथा दुराग्रह करते थे महा पापों पर।

[१] हदीस में है कि स्वर्ग में एक वृक्ष है जिस की छाया में सवार सौ वर्ष चलेगा फिर भी वह समाप्त नहीं होगी।(सहीह बुख़ारी : ४८८१)

४७. तथा कहा करते थे किक्या जब हम मर जायेंगे तथा हो जायेंगे धूल और अस्थियाँ तो क्या हम अवश्य पून: जीवित होंगे?
४८. और क्या हमारे पूर्वज (भी)?
४९. आप कह दें कि नि:संदेह सब अगले तथा पिछले।
५०. अवश्य एकत्रित किये जायेंगे एक निर्धारित दिन के समय
५१. फिर तुम, हे कुपथे! झुठलाने वालो!।
५२. अवश्य खाने वाले हो जक़्क़ूम (थोहड़) के बृक्ष सें।[१]
५३. तथा भरने वाले हो उस से (अपने) उदर।
५४. तथा पीने वाले हो उस सर से खौलता जल।
५५. फिर पीने वाले हो प्यासे[२] ऊँट के समान।
५६. यही उन का अतिथि–सत्कार है प्रतिकार (प्रलय) के दिन।
५७. हम ने ही उत्पन्न किया है तुम को फिर तुम विश्वास क्यों नहीं करते?
५८. क्या तुम ने यह विचार किया की जो वीर्य तुम (गर्भाशय में) गिराते हो।
५९. क्या तुम उसे शिशु बनाते हो या हम बनाने वाले हैं।
६०. हम ने निर्धारित किया है तुम्हारे बीच मरण को तथा हम विवश होने वाले नहीं हैं।
६१. कि बदल दें तुम्हारे रूप, और तुम्हें बना दें उस रूप में जिसे तुम नहीं जानते।
६२. तथा तुम ने तो जान लिया है प्रथम उत्पत्ति को फिर तुम शिक्षा ग्रहण क्यों नहीं करते।
६३. फिर क्या तुम ने विचार किया कि उस में जो तुम बोते हो?
६४. क्या तुम उसे उगाते हो या हम उसे उगाने वाले हैं?
६५. यदि हम चाहें तो उसे भुस बना दें फिर तुम बातें बनाते रह जाओ।
६६. वस्तुत: हम दण्डित कर दिये गये।
६७. बल्कि हम (जीविका से) वंचित कर दिये गये।
६८. फिर तुम ने विचार किया उस पानी में जो तुम पीते हो।

---

[१] देखिये : सूरह साफ़्फ़ात, आयत:६२

[२] आयत में प्यासे ऊँटों के लिये (हीम) शब्द प्रयुक्त हुओ है। यह ऊँट में एक विशेष रोग होता है जिस से उस की प्यास नहीं जाती।

६९. क्या तुम ने उसे बरसाया है उसे बादल से अथवा हम उसे बरसाने वाले हैं।
७०. यदि हम चाहें तो उसे खारी कर दें फिर तुम आभारी (कृतज्ञ) क्यों नहीं होते?
७१. क्या तुम ने उस अग्नि को देखा जिसे तुम सुलगाते हों
७२. क्या तुम ने उत्पन्न किया है उस के वृक्ष को या हम उत्पन्न करने वाले हैं?
७३. हम ने ही बनाया उस को शिक्षाप्रद तथा यात्रियों के लाभदायक।
७४. अत: (हे नबी!) आप पवित्रता का वर्णन करें अपने महा पालनहार के नाम की।
७५. मैं शपथ लेता हूँ सितारों के स्थानों की!
७६. और यह निश्चय एक बड़ी शपथ है यदि तुम समझो।
७७. वास्तव में यह आदरणीय[१] कुरआन है।
७८. सुरक्षित[२] पुस्तक में है।
७९. इसे पवित्र लोग ही छूते हैं[३]
८०. अवतरित किया गया है सर्वलोक के पालनहार की ओर से।
८१. फिर क्या तुम इस वाणी (कुरआन) की अपेक्षा करते हो?
८२. तथा बनाते हो अपना भाग कि इसे तुम झुठलाते हो?
८३. फिर क्यों नहीं जब प्राण गले को पहुँचते हैं।
८४. और तुम उस समय देखते रहते हो।
८५. तथा हम अधिक समीप होते हैं उस के तुम से, परन्तु तुम नहीं देख सकते।
८६. तो यदि तुम किसी के आधीन नहीं हो।
८७. तो उस (प्राण को फेर क्यों नहीं लाते, यदि तुम सच्चे हो?
८८. फिर यदि वह (प्राणी) समीपवर्तियों में है।
८९. तो उस के लिये सुख तथा उत्तम जीविका तथा सुख भरी स्वर्ग है।
९०. और यदि वह दायें वालों में से है।
९१. तो सलाम है तेरे लिये दायें वालों में होने के कारण।[४]

---

[१] तारों की शपथ का अर्थ यह है कि जिस प्रकार आकाश के तारों की एक दृढ़ व्यवस्था है उसी प्रकार यह कुरआन भी अति ऊँचा तथा सुदृढ़ है।
[२] इइ से अभिप्राय: लौहे मह्फ़ूज़ है।
[३] पवित्र लोगों से अभिप्राय: फ़रिश्ते। (देखिये: सूरह अबस, आयत: १५, १६)
[४] अर्थात उस का स्वागत सलाम से होगा

९२. और यदि वह है झुठलाने वाले कुपथों में से।

९३. तो अतिथि सत्कार है खौलते पानी से।

९४. तथा नरक में प्रवेश।

९५. वास्तव में यही निश्चत सत्य है।

९६. अत: (हे नबी!) आप पवित्रता का वर्णन करे अपने महा पालनहार के नाम की।

*****



सूरह हदीद – ५७



सूरह हदीद के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में २९ आयत है।

- इस सूरह की आयत २५ में हदीद शब्द आया है। जिस का अर्थ ''लोहा'' है इस लिये इस का नाम सूरह हदीद पड़ा है।
- इस में अल्लाह की पवित्रता तथा उस के गुणों का वर्णन किया गया है। और शुद्ध मन से ईमान लाने तथा उस की माँगों को पूरा करने का निर्देश दिया गया है।
- इस में ईमान वालों को शुभसूचना दी गई है कि प्रलय के दिन के लिये ज्योति होगी। जिस से मुनाफ़िक़ वंचित रहेंगे और उन की यातना की दशा को दिखाया गया हैं।
- आयत १६ से २४ तक में बताया गया है कि ईमान क्या चाहता है? और संसार का अपेक्षा परलोक को लक्ष्य बनाने की प्रेरणा दी गई है।
- आयत २५ से २७ तक न्याय की स्थापना के लिये बल प्रयोग को आवश्यक करार देते हुये जिहाद की प्रेरणा दी गई। और रुहबानिय्यत (सन्यास) का खण्डन किया गया है।
- अन्तिम आयतों में आज्ञाकारी ईमान वालों को प्रकाश तथा बड़ी दया प्रदान किये चाने की शुभ सूचना दी गई है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. अल्लाह की पवित्रता का गान करता है जो भी आकाशें तथा धरती में है और वह प्रबल गुणी है।

२. उसी का है आकाशों तथा धरती का राज्य। वह जीवन देता है तथा मारता है और वह जो चाहे कर सकता है।

३. वही प्रथम तथा वही अन्तिम और प्रत्यक्ष तथा गुप्त है। और वह प्रत्येक वस्तु का जानने वाला है।

४. उसी ने उत्पन्न किया है आकाशों तथा धरती को छः दिनों में फिर स्थित हो गया अर्श (सिंहासन) पर। वह जानता है जो प्रवेश करता है धरती में तथा जो निकलता है उस से। और जो उतरता हैं आकाश से तथा चढ़ता है उस में । और वह तुम्हारे साथ[१] है जहँ भी तुम रहो और अल्लाह जो कुछ तुम कर रहे हो उसे देख रहा है।

५. उसी का है आकाशों तथा धरती का राज्य और उसी की ओर फेरे जाते हैं सब मामले (निर्णय के लिये)।

६. वह प्रवेश करता है रात्रि को दिन में और प्रवेश करता है दिन को रात्रि में। तथा वह सीनों के भेदों से पूर्णतः अवगत है।

७. तुम सभी ईमान लाओ अल्लाह तथा उस के रसूल पर। और व्यय करो उस में से जिस में उस ने अधिकार दिया है तुम को। तो जो लोग ईमान लायेंगे तुम में से तथा दान करेंगे तो उन्हीं के लिये बड़ा प्रतिफल है।

८. और तुम्हें क्या हो गया है कि ईमान नहीं लाते अल्लाह पर जब कि रसूल[२] तुम्हें पुकार रहा है ताकि तुम ईमान लाओ अपने पालनहार पर, जब कि अल्लाह ले चुका है तुम से वचन,[३] यदि तुम ईमान वाले हो।

---

[१] अर्थात अपने सामर्थ्य तथा ज्ञान द्वारा। आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह सदा से है। और सदा रहेगा। प्रत्येक चीज़ का अस्तित्व उस के अस्तित्व के पश्चात है । वही नित्य है, विश्व की प्रत्येक वस्तु उस के होने को बता रही है फिर भी वह ऐसा गुप्त है कि धिकाई नहीं देता।

[२] अर्थात मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

[३] देखिये : सूरह आराफ, आयत: १७२)। इब्ने कसीर ने इस से अभिप्राय वह वचन लिया है जिस का वर्णन (सूरह माइदा, आयत: ७) में है। जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के द्वारा सहाबा से लिया गया कि वह आप की बातें सुनेंगे तथा

९. वही है जो उतार रहा है अपने भक्तपर खुली आयतें ताकि वह तुम्हें निकाले अंधेरों से प्रकाश की ओर। तथा वास्तव में अल्लाह तुम्हारे लिये अवश्य करुणामय दयावान् है।

१०. और क्या कारण है कि तुम व्यय नहीं करते अल्लाह की राह में, जब अल्लाह ही के लिये है आकाशों तथा धरती का उत्तराधिकार। नहीं बराबर हो सकते तुम मे से वे जिन्होंने दान किया (मक्का) की विजय से पहले तथा धर्मयुद्ध किया। वही लोग पद में अधिक ऊँचे हैं उन से जिन्होंने दान किया उस के पश्चात[1] तथा धर्मयुद्ध किया। तथा प्रत्येक को अल्लाह ने वचन दिया है भलाई का, तथा अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उससे पूर्णत: सूचित है।

११. कौन है जो ऋण[2] दे अल्लाह को अच्छा ऋण? जिसे वह दुगुना कर दे उस के लिये और उसी के लिये अच्छा प्रतिदान है।

१२. जिस दिन तुम देखोगे ईमान वालो तथा ईमान वालियों को, कि दौड़ रहा[3] होगा उन का प्रकाश उन के आगे तथा उन के दायें। तुम्हे शुभसूचना है ऐसे स्वर्गो की बहती है जिन में नहरें, जिन में तुम सदावासी होगे, वही बड़ी सफलता है।

१३. जिस दिन कहेंगे मुनाफ़िक पुरुष तथा मुनाफिक स्त्रियाँ उन से जो ईमान लाये कि हमारी प्रतीक्षा करो हम प्राप्त कर लें तुम्हारे प्रकाश में से कुछ। उन से कहा जायेगा: तुम अपने पीछे वापिस जाओ, और प्रकाश की खोज करो।[4] फिर बना दी जायेगी उन के बीच एक दीवार जिस में एक द्वार होगा। उस के भीतर दया होगी तथा उस के बाहर यातना होगी।

१४. वह उन को पुकारेंगे: क्या हम (संसार में) तुम्होरे साथ नहीं थे? (वह कहेंगे): परन्तु तुम ने उपद्रव में डाल लिया अपने आप को, और प्रतीक्षा में[5] रहे तथा

सुख–दु:ख में अनुपालन करेंगे। और प्रिय और अप्रिय में सच्च बोलेंगे। तथा किसी की निन्दा से नही डरेंगे।(बुख़ारी : ७१९९, मुस्लिम १७०९)

[1] ऋण से अभिप्राय अल्लाह की राह में धन दान करना है।

[2] हदीस में है कि कोई उहुद (पर्वत) बराबर भी सोना दान करे तो मेरे सहाबा के चौथाई अथवा आधा किलो के बराबर भी नहीं होगा। (सहीह बुख़ारी : ३६७३, सहीह मुस्लिम : २५४१)

[3] देखिये : सूरह माइदा, आयत:११३

[4] अर्थात संसार में जा कर ईमान तथा सदाचार के प्रकाश की खोज करो किन्तु यह असंभव होगा

[5] कि मुसलमानों पर कोई आपदा आये।

संदेह किया और धोखे में रखा तुम्हें तुम्हारी मिथ्या कामनाओं ने। यहाँ तक की आ पहुँचा अल्लाह का आदेश। और धोखे ही में रखा तुम्हें बड़े वंचक (शैतान) ने।

१५. तो आज तुम से कोई अर्थ–दण्ड नहीं लिया जायेगा और न काफ़िरों से। तुम्हारा आवास नरक है, वही तुम्हारे योग्य है, और वह बुरा निवास है।

१६. क्या समय नहीं आया ईमान वालों के लिये कि झुक जायें उन के दिल अल्लाह के स्मरण (याद) के लिये, तथा जो उतरा है सत्य, और न हो जायें उन के समान जिन को प्रदान की गईं पुस्तकें इस से पूर्व, फिर लम्बी अवधि व्यतीत हो गई उन पर, तो कठोर हो गये उन के दिल।[१] तथा उन में अधिक्तर अवैज्ञाकारी हैं।

१७. जान लो कि अल्लाह ही जीवित करता है धरती को उस के मरण के पश्चात, हम ने उजागर कर दी हैं तुम्हारे लिये निशानियाँ ताकि तुम समझो।

१८. वस्तुत: दान करने वाले पुरुष तथा दान करने वाली स्त्रियाँ तथा जिन्होंने ऋण दिया है अल्लाह को अच्छा ऋण,[२] उसे बढ़ाया जायेगा उन के लिये, और उन्हीं के लिये अच्छा प्रतिदान है।

१९. तथा जो ईमान लाये अल्लाह और उस के रसूलों[३] पर वही सिद्दीक़ तथा शहीद[४] हैं अपने पालनहार के समीप। उन्हीं के लिये उन का प्रतिफल तथा उन की दिव्य ज्योति है। और जो काफ़िर हो गये और झुठलाया हमारी आयतों को तो वही नारकीय हैं।

२०. जान लो कि संसारिक जीवन एक खेल तथा मनोरंजन और शोभा[५] एवं आपस में गर्व तथा एक–दूसरे से बढ़ जाने का प्रयास है धनों तथा संतान में। उस वर्षा के समान भा गई किसानों के जिस की उपज, फिर वह पक गई तो तुम उसे देखने लगे पाली, फिर वह हो जाती है चूर–चूर। और परलोक में कड़ी यातना है, तथा

[१] देखिये : सूरह माइदा, आयत : १३

[२] हदीस में है कि जो पवित्र कमाई से एक खजूर के बराबर भी दान करता है तो अल्लाह उसे पोसता है जैसे कोई घोड़ा के बच्चे को पोसता है यहाँ तक कि पर्वत के समान हो जाता है। (सहीह बुख़ारी : १०१४)

[३] अर्थात बिना अन्तर और भेद–भाव किये सभी रसूलों पर ईमान लाये।

[४] सिद्दीक़ का अर्थ है: बड़ा सच्चा। और शहीद का अर्थ गवाह है। (देखिये : सूरह बक़रा:१४३, और सूरह हज्ज:७८)

[५] इस में संसारिक जीवन की शोभा की उपमा वर्षा की उपज की शोभा से दी गई है। जो कुछ ही दिन रहती है फिर चूर–चूर हो जाती है।

अल्लाह की क्षमा और प्रसन्नता है। और संसारिक जीवन तो बस धोखे का संसाधन है।

२१. एक–दूसरे से आगे बढ़ो अपने पालनहार की क्षमा तथा उस स्वर्ग की ओर जिस का विस्तार आकाश तथा धरती के विस्तार के[1] समान है जो तैयार की गई है उन के लिये जो ईमान लायें अल्लाह और उस के रसूलों पर। यह अल्लाह का अनुग्रह है वह प्रदान करता है उसे जिस को चाहता है और अल्लाह बड़ा उदार (दयाशील) है।

२२. नहीं पहुँचती कोई आपदा धरती में और न तुम्हारे प्राणों में परन्तु वह एक पुस्तक में लिखी है इस से पूर्व कि हम उसे उत्पन्न करें।[2] और यह अल्लाह के लिये अति सरल है।

२३. ताकि तुम शोक न करो उस पर जो तुम से खो जाये। और न इतराओ उस पर जो तुम्हें प्रदान किया है। और अल्लाह प्रेम नहीं करता किसी इतराने गर्व करने वाले से।

२४. जो कंजूसी करते हैं और आदेश देते हैं लोगों को कंजूसी करने का। तथा जो विमुख होगा तो निश्चय अल्लाह निस्पृह सराहनीय है।

२५. निःसंदेह हम ने भे जा है अपने रसूलों को खुले प्रमाणों के साथ, तथा उतारी है उन के साथ पुस्तक, तथा तुला (न्याय का नियम), ताकि लोग स्थित रहें न्याय पर। तथा हम ने उतारा लोहा जिस में बड़ा बल[3] है तथा लोगों के लिये बहुत से लाभ। और ताकि अल्लाह जान ले कि कौन उस की सहायता करता है तथा उस के रसूलों की बिना देखे। वस्तुतः अल्लाह अति शक्तिशाली प्रभावशाली है।

२६. हम ने (रसूल बना कर) भेजा नूह को तथा इब्राहीम को और रख दी उन की संतति में नबूवत (दुतत्व) तथा पुस्तक। तो उन में से कुछ ने मार्गदर्शन अपनाया और उन में से बहुत से अवैज्ञाकारी हैं।

---

[1] देखिये : सूरह आले इमरान, आयत: १३३

[2] अर्थात इस विश्व और मनुष्य के अस्तित्व से पूर्व ही अल्लाह ने अपने ज्ञान अनुसार ''लौहै महफ़ूज़'' (सुरक्षित पुस्तक) में लिख रखा है। हदीस में है कि अल्लाह ने पूरी उत्पत्ति का भाग्य आकाशों तथा धरती की रचना से पचास हज़ार वर्ष पहले लिख दिया। जब कि उस का अर्श पानी पर था। (सहीह मुस्लिम : २६३३)

[3] उस से अस्त्र–शस्त्र बनाये जाते हैं।

२७. फिर हम ने निरन्तर उन के पश्चात् अपने रसूल भेजे और उन के पश्चात् भेजा मर्यम के पुत्र ईसा को तथा प्रदान की उसे इंजील, और कर दिया उस का अनुसरण करने वालों के दिलों में करुणा तथ दया, और संसार[1] त्याग को उन्होंने स्वयं बना लिया, हम ने नहीं अनिवार्य किया उसे उन के ऊपर। परन्तु अल्लाह की प्रसन्नता के लिये (उन्होंने ऐसा किया) तो उन्होंने नहीं किया उस का पूर्ण पालन। फिर (भी) हम ने प्रदान किया उन को जो ईमान लाये उन में से उन का बदला। और उन में से अधिक्तर अवैज्ञाकारी हैं।

२८. हे लोगों जो ईमान लाये हो। अल्लाह से डरो और ईमान लाओ उस के रसूल पर वह तुम्हें प्रदान करेगा दोहरा[2] प्रतिफल अपनी दया से, तथा प्रदान करेगा तुम्हें ऐसा प्रकाश जिस के साथ तुम चलोगे, तथा क्षमा कर देगा तुम्हें, और अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

२९. ताकि ज्ञान हो जाये (इन बातों से) अहले[3] किताब को कि वह कुछ शक्ति नहीं रखते अल्लाह के अनुग्रह पर। और यह कि अनुग्रह अल्लाह ही के हाथ में है। वह प्रदान करता है जिसे चाहे, और अल्लाह बड़े अनुग्रह वाला है।



[1] संसार त्याग अर्थात सन्यास के विषय में यह बताया गया है कि अल्लाह ने उन्हें इस का आदेश नहीं दिया। उन्होंने अल्लाह की प्रसन्नता के लिये स्वयं इसे अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया। फिर भी इसे निभा नहीं सके। इस में यह संकेत है कि योग तथा सन्यास का धर्म में कभी कोई आदेश नहीं दिया गया है। इस्लाम में भी शरीअत के स्थान पर तरीक़त बना कर नई बातें बनाई गईं। और सत्धर्म का रूप बदल दिया गया। हदीस में है कि कोई हमारे धर्म में नई बात निकाले जो उस में नहीं है तो वह मान्य नहीं। (सहीह बुख़ारी,सहीह मुस्लिम)

[2] हदीस में है कि तीन व्यक्ति ऐसे हैं जिन को दाहरा प्रतिफल मिलेगा। इन में एक, अहले किताब में से वह व्यक्ति है जो अपने नबी पर ईमान लाया था फिर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर भी ईमान लाया। (सहीह बुख़ारी: ९७, २५४४, सहीह मुस्लिम : १५४)

[3] अहले किताब से अभिप्राय: यहूदी तथा ईसाई हैं।

सूरह मुजादला – ५८

सूरह मुजादला के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में २२ आयतें हैं।

– मुजादला का अर्थ है: झगड़ा और तकरार। इस के आरंभ में एक नारी की तकरार का वर्णन है। इसलिये इस का नाम सूरह मुजादला है।

– इस में ज़िहार के विषय में धार्मिक नियमों को बताया गया है। साथ ही इन नियमों का इन्कार करने पर कड़े दण्ड की चेतावनी दी गई है।

– आयत ७ से ११ तक मुनाफ़िक़ों के षड्यंत्र और उपद्रव की चर्चा करते हुये ईमान वालों के सामाजिक नियमों के निर्देश दिये गये है।

– आयत १२ और १३ में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ काना फूसी के सम्बंध में एक विशेष आदेश दिया गया है।

– अन्त में द्विधावादियों (मुनाफ़िक़ों) की पकड़ करते हुये सच्चे इर्मना वालों के लक्षण बताये गये है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. (हे नबी!) अल्लाह ने सुन ली है उस स्त्री की बात जो आप से झगड़ रही थी अपने पति के विषय में। तथा गुहार रही थी अल्लाह को। और अल्लाह सुन रहा था तुम दोनों की वार्तालाप, वास्तव में वह सब कुछ सुनने–देखने वाला है।

२. जो ज़िहार[1] करते हैं तुम में से अपनी पत्नियों से तो वे उनकी माँ नहीं हैं। उनकी माँ तो वे हैं जिन्होंने उनको जन्म दिया है। और वह बोलते हैं अप्रिय तथा झठी बात। और वास्तव में अल्लाह माफ करनेवाला क्षमाशील है।

३. और जो ज़िहार कर लेते हैं अपनी पत्नियों से, फिर वापिस लेना चाहते हों अपनी बात तो (उस का दण्ड) एक दास मुक्त करना है, इस से पूर्व कि एक–दूसरे को हाथ लगायें।[2] इसी की तुम्हें शिक्षा दी जा रही है। और अल्लाह उस से जो तुम करते हो भली–भाँति सूचित है।

४. फिर जो (दास) न पाये तो दो महीने निरन्तर रोज़ा (ब्रत) रखना है इस से पूर्व कि एक–दूसरे को हाथ लगाये। फिर जो सकत न रखे तो साठ निर्धनों को भोजन कराना है। यह आदेश इस लये है ताकि तुम ईमान लाओ अल्लाह तथा उस के रसूल पर। और यह अल्लाह की सीमायें हैं। तथा काफ़िरों के लिये दुःखदायी यातना है।

५. वास्तव में जो विरोध करते है अल्लाह तथा उस के रसूल का, वे अपमानित कर दिये जायेंगे जैसे अपमानित कर दिये गये जो इन से पूर्व हुये। और हम ने उतार दी हैं खुली आयतें और काफ़िरों के लिये अपमान कारी यातना है।

---

[1] ज़िहार का अर्थ है: पति का अपनी पत्नी से यह कहना कि तू मुझ पर मेरी माँ की पीठ के समान है। इस्लाम से पूर्व अरब समाज में यह कुरीति थी कि पति अपनी पत्नी से यह कह देता तो पत्नी को तलाक़ हो जाती थी। और सदा के लिये पति से अलग हो जाती थी। और इस का नाम ''ज़िहार'' था। इस्लाम में एक स्त्री जिस का नाम ''ख़ौला'' (रज़ियल्लाहु अन्हा) है उस से उस के पति: और पुत्र सामित (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने ज़िहार कर लिया। ख़ौला (रज़ियल्लाहु अन्हा) नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास आई। और आप से इस विषय में झगड़ने लगी। उस पर यह आयतें उतरीं। (सहीह अबुदाऊस – २२१४)। आईशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने कहा: मैं उस की बात नहीं सुन सकी। और अल्लाह ने सुन ली। (इब्ने माजा: १५६, यह हदीस सहीह है।)

[2] हाथ लगाने का अर्थ संभोग करना है। अर्थात संभोग से पहले प्रायश्चित चुका दे ।

६. जिस दिन जीवित करेगा उन सब को अल्लाह तो उन्हें सूचित कर देगा उन के कर्मों से। गिन रखा है उसे अल्लाह न और वह भूल गये हैं उसे। और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर गवाह है।

७. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह जानता है जो (भी) आकाशों तथा धरती में है? नहीं होती किसी तीन की काना फूसी परन्तु वह उन का चौथा होता है। और न पाँच की परन्तु वह उन का छठा होता है। और न इस से कम की और न इस से अधिक की परन्तु वह उन के साथ होता[1] है, वे जहाँ भी हों। फिर वह उन्हें सूचित कर देगा उन के कर्मों से प्रलय के दिन। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक वस्तु से भली–भाँति अवगत है।

८. क्या आप ने नहीं देखा उन्हें जो रोके गये हैं काना फूसी से? फिर (भी) वही करते हैं जिस से रोके गये हैं। तथा काना फूसी करते हैं पाप और अत्याचार, तथ रसूल की अवैज्ञा की। और जब वे आप के पास आते है तो आप को ऐसे (शब्द से) सलाम करते हैं जिस से आप पर सलाम नहीं भेजा अल्लाह ने। तथा कहते हैं अपने मनों में: क्यों अल्लाह हमें यातना नहीं देता उस पर जो हम कहते[2] है? पर्याप्त है उन को नरक जिस में वह प्रवेश करेंगे, तो बुरा है उन का ठिकाना।

९. हे लोगो जो ईमान लाये हो! जब तुम काना फूसी करो तो काना फूसी न करो पाप तथा अत्याचार एव रसूल की अवैज्ञा की ।और काना फूसी करो पुण्य तथा सादाचर की । और डरते रहो अल्लाह से जिस की ओर ही तुम एकत्र किये जाओगे ।

---

[1] अर्थात जानता और सुनता है।

[2] मुनाफ़िक़ और यहूदी जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सेवा में आते तो (अस्सलामु अलैकुम) अनुवाद: आप पर सलाम और शान्ति हो।) की जगह ''अस्सामु अलैकुम'' (अनुवाद: आप पर मौत आये।) कहते थे। और अपने मन में यह सोचते थे कि यदि आप अल्लाह के सत्य रसूल होते तो हमारे इस दुराचार के कारण हम पर यातना आ जाती। और जब कोई यातना नहीं आई तो आप अल्लाह के रसूल नहीं हो सकते। हदीस में है कि यहूदी तुम को सलाम करें तो वह ''अस्सामु अलैका'' कहते हैं, तो तुम व ''अलैका'' कहो। अर्थात: और तुम पर भी। (सहीह बुख़ारी: ६२५७, सहीस मुस्लिम : २१६४)

१०. वास्तव में काना फूसी शैतानी काम है ताकि वह उदासीन हों[1] जो ईमान लाये। जब कि नहीं है वह हानिकार उन को कुछ, परन्तु अल्लाह की अनुमति से। और अल्लाह ही पर चाहिये कि भरोसा करें ईमान वाले।
११. हे ईमान वालो! जब तुम से कहा जाये कि विस्तार कर दो अपनी सभावों में तो विस्तार[2] कर दो, विस्तार कर देगा अल्लाह तुम्हारे लिये। तथा जब कहा जाये कि सुकड़ जाओ तो सुकड़ जाओ। ऊँचा[3] कर देगा अल्लाह उन को जो ईमान लाये हैं तुम में से तथा जिन को ज्ञान प्रदान किया गया है कई श्रेणियाँ। तथा अल्लाह उस से जो तुम करते हो भली–भाँति अवगत है।
१२. हे ईमान वालो! जब तुम अकेले बात करो रसूल से तो बात करने से पहले कुछ दान करो।[4] यह तुम्हारे लिये उत्तम तथा अधिक पवित्र है। फिर यदि तुम (दान के लिये कुछ) न पाओ तो अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
१३. क्या तुम (इस आदेश से) डर गये कि एकान्त में बात करने से पहले कुछ दान कर दो? फिर जब तुम ने ऐसा नहीं किया तो स्थापना करो नमाज़ की तथा ज़कात दो और आज्ञा पालन करो अल्लाह तथा उस के रसूल की। और अल्लाह सूचित है उस से जो कुछ तुम कर रहे हो।
१४. क्या आप ने उन्हें देखा[5] जिन्होंने मित्र बना लिया उस समुदाय को जिस पर क्रोधित हो गया अल्लाह? न वह तुम्हारे हैं और न उन के। और वह शपथ लेते है झूठी बात पर जान बूझ कर।
१५. तय्यार की है अल्लाह ने उन के लिये कड़ी यातना, वास्तव में वह बुरा है जो वे कर रहे हैं।

---

[1] हदीस में है कि जब तुम तीन एक साथ रहो तो दो आपस में काना फूसी न करें। क्योंकि इस से तीसरे को दुःख होता है। (सहही बुख़ारी : ६२९०, सहीह मुस्लिम : २१८४)

[2] भावार्थ यह है कि कोई आये तो उसे भी खिसक कर और आपस में सुकड़ कर जगह दो।

[3] हदीस में है कि जो अल्लाह के लिये झुकता और अच्छा व्यवहार चयन करता है तो अल्लाह उसे ऊँचा कर देता है। (सहीह मुस्लिम : २५८८)

[4] प्रत्येक मुसलमान नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से एकान्त में बात करना चाहता था। जिस से आप को परेशानी होती थी। इसलिये यह आदेश दिया गया।

[5] इस से संकेत मुनाफ़िकों की ओर हैअ जिन्होंने यहूदियों को अपना मित्र बना रखा था।

१६. उन्होंने बना लिया अपनी शपथों को एक ढाल। फिर रोक दिया (लोगों को) अल्लाह की राह से, तो उन्हीं के लिये अपमान कारी यातना है।

१७. कदापि नहीं काम आयेंगे उन के धन और न उन की संतान अल्लाह के समक्ष कुछ। वही नारकी हैं, वह उस में सदावासी होंगे।

१८. जिस दिन खड़ा करेगा उन को अल्लाह तो वह शपथ लेंगे अल्लाह के समक्ष जैसे वह शपथ ले रहे हैं तुम्हारे समक्ष। और वह समझ रहे हैं कि वह कुछ (तर्क)[1] पर हैं। सुन लो! वास्तव में वही झूठे हैं।

१९. छा[2] गया है उन पर शैतान और भुला दी है उन को अल्लाह की याद। यही शैतान की सेना हैं। सुन लो! शैतान की सेना ही क्षतिग्रस्त होने वाली है।

२०. वास्तव में जो विरोध करते हैं अल्लाह तथा उस के रसूल का, वही अपमानितों में से हैं।

२१. लिख रखा है अल्लाह ने कि अवश्य मैं प्रभावशाली (विजयी) रहूँगा[3] तथा मेरे रसूल। वास्तव में अल्लाह अति शक्तिशाली प्रभावशाली है।

२२. आप नहीं पायेंगे उन को जो ईमान रखते हों अल्लाह तथा अन्त – दिवस (प्रलय) पर कि वह मैत्री करते हों उन से जिन्होंने विरोध किया अल्लाह और उस के रसूल का, चाहे वह उन के पिता हों अथवा उन के पुत्र अथवा उन के भाई अथवा उन के परिजन[4] हों। वही हैं लिख दिया है (अल्लाह ने) जिन के दिलों में ईमान और समर्थन दिया है जिन को अपनी ओर से रूह (आत्मा) द्वारा। तथा प्रवेश देगा उन को ऐसे स्वर्गों में बहती हैं जिन में नहरें, वह सदावासी होंगे जिन में। प्रसन्न हो गया अल्लाह उन से तथा वह प्रसन्न हो गये उस से। वह अल्लाह का समूह है। सुन लो अल्लाह का समूह ही सफल होने वाला है।



[1] अर्थात उन्हें अपनी शपथ का कुछ लाभ मिल जायेगा जैसे संसार में मिलता रहा।

[2] अर्थात उन को अपने नियंत्रण में ले रखा है।

[3] देखिये: सूरह मुमिन, आयत: ५१–५२

[4] इस आयत में इस बात का वर्णन किया गया है कि ईमान, और काफ़िर जो इस्लाम और मुसलमानों के जानी दुश्मन हों उन से सच्ची मैत्री करना एकत्र नहीं हो सकते। अत: जो इस्लाम और इस्लाम के विरोधियों से एक साथ सच्चे सम्बंध रखते हों तो उन का ईमान सत्य नहीं है।



सूरह हश्र – ५९



सूरह हश्र के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में २४ आयतें है।

- इस सूरह की दूसरी आयत में ''हश्र'' का शब्द आया है। जिस का अर्थ: एकत्र होना है। और इसी से यह नाम लिया गया है।
- इस में अल्लाह और उस के रसूल के विरोधियों को मदीना के यहूदी क़बीले के अपमानाकारी परिणाम से चेतावनी दी गयी है।
- आरंभ में बताया गया है कि आकाशों तथा धरती की प्रत्येक चीज़ अल्लाह की पवित्रता का गान करती है। फिर यहूदी कबीले बनी नज़ीर के, अल्लाह और उस के रसूल का विरोध करने का परिणाम बताया गया है। और ईमान वालों को कुछ निर्देश दिये गये हैं।
- आयत ११ से १७ तक में उन मुनाफ़िक़ों की पकड़ की गई है जो यहूदियों से मिलकर इस्लाम और मुसलमानों के विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे थे।
- अन्त में प्रभावी शिक्षा तथा अल्लाह से डरने की बातों का वर्णन किया गया है। तथा आज्ञा पालन और अवैज्ञा का अन्तर बताया गया है।
- इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने कहा: कि यह सूरह बनी नज़ीर के बारे में उतरी। इसे सूरह बनी नज़ीर कहो। (सहीह बुख़ारी : ४८८३)

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. अल्लाह की पवित्रता का गान किया है उस ने जो भी आकाशों तथा धरती में है। और वह प्रभुत्वशाली गुणी है।

२. वही है जिस ने अहले किताब में से काफ़िरों को उन के घरों से पहले ही आक्रमण में निकाल दिया। तुम ने नहीं समझा था कि वे निकल जायेंगे, और उन्होंने समझा था कि रक्षक होंगे उन के दुर्गा[१] अल्लाह से। तो आ गया उन के पास अल्लाह (का निर्णय)। ऐसा उन्होंने सोचा भी न था। तथा डाल दिया उन के दिलों में भय। वह उजाड़ रहे थे अपने घरों को अपने हाथों से तथा ईमान वालों के हाथों[२] से। तो शिक्षा लो, हे आँख वालो!

३. और यदि अल्लाह ने न लिख दिया होता उन (के भाग्य में) देश निकाला, तो उन्हें यातना दे देता संसार (ही) में। तथा उन के लिये आख़िरत (परयलोक) में नरक की यातना है।

४. यह इसलिये कि उन्होंने विरोध किया अल्लाह तथा उस के रसूल का, और जो विरोध करेगा अल्लाह का तो निश्चय अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।

५. (हे मुसलमानो!) तुम ने नहीं काटा[३] कोई खजूर का वृक्ष और न छोड़ा उसे खड़ा अपने तने पर, तो यह सब अल्लाह के आदेश से हुआ। और ताकि वह अपमानित करे पथभ्रष्टों को।

---

[१] नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जब मदीना पहुँचे तो वहाँ यहूदियों के तीन क़बीले आबाद थे: बनी नज़ीर, बनी कुरैज़ा तथा बनी कैनुक़ाअ। आप ने उन सभी से संधि कर ली। परन्तु वह इस्लाम के विरुद्ध षड्यंत्र रचते रहे। और एक समय जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)बनी नज़ीर के पास गये तो उन्होंने ऊपर से एक पत्थर फेंक कर आप को मार डालने की योजना बनाई। जिस से वह्यी द्वारा अल्लाह ने आप को सूचित कर दिया। उन के इस संधि भंग तथा षड्यंत्र के कारण आप ने उन पर आकमण किया। वह कुछ दिन अपने दुर्गों में बदं रहे। अन्ततः उन्होंने प्राण क्षमा के रूप में देश निकाल को स्वीकार किया। और यह मदीना से यहूद का प्रथम देश निकाला था। यहाँ से वह ख़ैबर पहुँचे और अदरणीय उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) के युग में उन्हें फिर देश निकाला दिया गया। और वह वहाँ से शाम चले गये जो हश्र का मैदान होगा।

[२] जब वे अपने घरों से जाने लगे तो घरों को तोड़–तोड़कर जो कुछ साथ ले जा सकते थे ले गये। और शेष सामान मुसलमानों ने निकाला।

[३] बनी नज़ीर के घिराव के समय नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के आदेशानुसार उन के खजूरों के कुछ वृक्ष जला दिये और काट दिये गये और कुछ छोड़ दिये गये। ताकि शत्रु की आड़ को समाप्त किया जाये। इस आयत में उसी का वर्णन किया गया है। (सहीह बुख़ारी : ४८८४)

६. और जो धन दिला दिया अल्लाह ने अपने रसूल को उन से, तो नहीं दौड़ाये तुम ने उस के लिये घोड़े और न ऊँट। परन्तु अल्लाह प्रभुत्व प्रदान कर देता है अपने रसूल को जिस पर चाहता है, तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

७. अल्लाह ने जो धन दिलाया है अपने रसूल को इस बस्ती वालों[१] से, वह अल्लाह तथा रसूल, तथा (आप के समीपवर्तियों तथा अनाथों और निर्धनों तथा यात्रियों के लिये है। ताकि वह फिरता न रह[२] जाये तुम्हारे धनवानों के बीच और जो प्रदान कर दें रसूल, तुम उसे ले लो और रोक दें तुम को जिस से तो तुम रुक जाओ। तथा अल्लाह से डरते रहो, निश्चय अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।

८. उन निर्धन मुहाजिरों के लिये है जो निकाल दिये गये अपने घरों तथा धनों से। वह चाहते हैं अल्लाह का अनुग्रह तथा प्रसन्नता, और सहायता करते है अल्लाह तथा उस के रसूल की, यही सच्चे हैं।

९. तथा उन लोगों[3] के लिये (भी) जिन्होंने आवास बना लिया इस घर (मदीना) को तथा उन (मुहाजिरों के आने) से पहले ईमान लाये, वह प्रेम करते हैं उन से जो हिज्रत कर के आ गये उन के यहाँ । और वे नहीं पाते अपने दिलों में कोई आवश्यकता उस की जो उन्हें दिया जाये। और प्राथमिकता देते हैं (दूसरों को) अपने ऊपर चाहे स्वयं भूखे[४] हों। और जो बचा लिये गये अपने मन की तंगी से, तो वही सफल होने वाले हैं।

---

[१] अर्थात यहूदी कबीला बनी नज़ीर से जो धन बिना युद्ध के प्राप्त हुआ उस का नियम बताया गया है कि वह पूरा धन इस्लामी बैतुल माल का होगा उसे मुजाहिदों में विभाजित नहीं किया जायेगा। हदीस में है कि यह नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये विशेष था जिस से आप अपनी पत्नियों को ख़र्च देते थे। फिर जो बच जाता तो उसे अल्लाह की राह में शस्त्र और सवारी में लगा देते थे। (बुख़ारी : ४८८५) इस को फ़ेय का माल कहते हैं जो ग़नीमत के माल से अलग हैं।

[२] इस में इस्लाम की अर्थ व्यवस्था के मूल नियम का वर्णन किया गया है। पूँजी पति व्यवस्था में धन का प्रवाह सदा धनवानों की ओर होता है। और निर्धन दरिद्रता की चक्की में पिसता रहता है। कम्युनिज़्म में धन का प्रवाह सदा शासक वर्ग की ओर होता है। जब कि इस्लाम में धन का प्रवाह निर्धन वर्ग की ओर होता है।

[३] इस से अभिप्राय मदीना के निवासी: अन्सार हैं। जो मुहाजिरीन के मदीना में आने से पहले ईमान लाये थे। इस का यह अर्थ नहीं हैं कि वह मुहाजिरीन से पहले ईमान लाये थे।

[४] हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास एक अतिथि आया और कहा: हे अल्लाह के रसूल! मैं भूखा हूँ। आप ने अपनी पत्नियों के पास भेजा तो वहाँ कुछ नहीं था। एक अन्सारी उसे घर ले गये। घर पहुँचे तो पत्नि ने कहा: घर में केवल बच्चों का खाना है। उन्होंने परस्पर प्रामर्श किया कि बच्चों को बहला कर सुला दिया जाये। तथा पत्नि से कहा कि जब अतिथि खाने लगे तो तुम दीप बुझा देना। उस ने ऐसा ही किया। सब भूखे सो गये और अतिथि को खिल

१०. और जो आये उन के पश्चात् वे कहते हैं: हे हमारे पालनहार! हमें क्षमा कर दे तथा हमारे उन भाईयो को जो हम से पहले ईमान लाये। और न रख हमारे दिलों में कोई बैर उन के लिये जो ईमान लाये। हे हमारे पालनहार! तू अति करूणामय दयावान् है।

११. क्या आप ने उन्हें[१] नहीं देखा जो मुनाफ़िक़ (अवसरवादी) हो गये, और कहते हैं अपने अपले किताब भाईयों से कि यदि तुम्हें देश निकाला दिया गया तो हम अवश्य निकल जायेंगे तुम्हारे साथ। और नहीं मानंगे तुम्हारे बारे में किसी की (बात) कभी। और यदि तुम से युद्ध हुआ तो हम अवश्य तुम्हारी सहायता करेंगे। तथा अल्लाह गवाह है कि वह झुठे हैं।

१२. यदि वे निकाले गये तो यह उन के साथ नहीं निकालेंगे । अैर यदि उन से युद्ध हो तो वे उन की सहायता नहीं करेंगे। और यदि उन की सहायता की (भी) तो अवश्य पीठ दिखा देंगे, फ़िर (कही सें) कोई सहायता नहीं पायेंगे।

१३. निश्चय अधिक भय है तुम्हारा उन के दिलों में अल्लाह (के भय) से। यह इसलिये कि वे समझ–बूझ नहीं रखते।

१४. वह नहीं युद्‌ध करेंगे तुम से एकत्र हो कर परन्तु यह कि दुर्ग बंद बस्तियों में हों, अथवा किसी दीवार की आड़ से। उन का युद्‌ध आपस में बहुत कड़ा है। आप उन्हें एकत्र समझते हैं। जब कि उन के दिलों में अलग अलग हं। यह इसलिये कि वह निर्बोध होते हैं।

१५. उनके समान जो उन से कुछ ही पूर्व चख चुके[२] हैं अपने किये का स्वाद। और इन के लिये दु:खदायी यातना है।

दिया। जब वह अन्सारी भोर में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास पहुँचे तो आप ने कहा: अमुल पुरुष (अबू तल्हा) और अमुल स्त्री (उम्मे सुलैम) से अल्लाह प्रसन्न हो गया। और उस ने यह आयत उतारी है। (सहीह बुख़ारी : ४८८९)

[१] इस से अभिप्राय अब्दुल्लाह बिन उबेय्य मुनाफ़िक और उस के साथी हैं। जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)ने यहूद को उन के वचन भंग तथा षड्यंत्र के कारण दस दिन के भीतर निकल जाने की चेतावनी दी, तो उस ने उनसे कहा कि तुम अड़ जाओ। मेरे बीस हज़ार शस्त्र युवक तुम्हारे साथ मिलकर युद्ध करेंगे। और यदि तुम्हें निकाला गया तो हम भी तुम्हारे साथ निकल जायेंगे। परन्तु यह सब मैखिक बातें थीं।

[२] इस में संकेत बद्र में मक्का के काफ़िरों तथा कैनुक़ाअ क़बीले की पराजय की ओर है।

१६. (उन का उदाहरण) शैतान जैसा है कि वह कहता है मनुष्य से कि कुफ़्र कर, फिर जब वह काफ़िर हो गया तो कह दिया कि मैं तुझ से विरक्त(अलग) हूँ। मैं तो डरता हूँ अल्लाह सर्वलोक के पालनहार से।

१७. तो हो गया उन दोनों का दुष्परिणाम यह कि वे दोनों नरक में सदावासी रहेंगे। और यही है अत्याचारियों का कुफ़ल।

१८. हे लोगो जो ईमान लाये हो! अल्लाह से डरो, और देखना चाहिये प्रत्येक को कि उस ने क्या भेजा है कल के लिये। तथा डरते रहो अल्लाह से, निश्चय अल्लाह सूचित है उस से जो तुम करते हो।

१९. और न हो जाओ उन के समान जो भूल गये अल्लाह को तो भुला दिया (अल्लाह ने) उन्हें अपने आप से, यही अवैज्ञकारी हैं।

२०. नहीं बराबर हो सकते नारकी तथा स्वर्गी। स्वर्गी ही वास्तव में सफल होने वाले है।

२१. यदि हम अवतरित करते इस कुरआन को किसी पर्वत पर तो आप उसे देखते कि झुका जा रहा है तथा कण–कण होता जा रहा है अल्लाह के भय[1] से। और इन उदाहरणों का वर्णन हम लोगों के लिये कर रहे हैं ताकि वह सोच–विचार करें। वह खुले तथा छुपे का जानने वाला है। वही अत्यंत कृपाशील द्‌यावान् है।

२२. वह अल्लाह ही है जिस के अतिरिक्त कोई (सत्य) पूज्य नहीं है।

२३. वह अल्लाह ही है जिस के अतिरिक्त नहीं हैं[2] कोई सच्चा वंदनीय। वह सब का स्वामी, अत्यंत पवित्र, सर्वथा शान्ति प्रदान करने वाला, रक्षक, प्रभावशाली, शक्तिशाली बलपूर्वक आदेश लागू करने वाला, बड़ाई वाला है। पवित्र है अल्लाह उस से जिसे वे (उस का) साझी बनाते हैं

---

[1] इस में कुरआन का प्रभाव बताया गया है कि यदि अल्लाह पर्वत को ज्ञान और समझ–बूझ दे कर उस पर उतारता तो उस के भय से दब जाता और फट पड़ता। किन्तु मनुष्य की यह दशा है कि कुरआन सुन कर उस का दिल नहीं पसीजता।

[2] इस आयतों में अल्लाह के शुभनामों और गुणों का वर्णन कर के बताया गया है कि वह अल्लाह कैसा है जिस ने यह कुरआन उतारा है। इस आयत में अल्लाह के ग्यारह शुभनामों का वर्णन है। हदीस में है कि अल्लाह के निन्नावे नाम हैं, जो उन्हें गिनेगा तो वह स्वर्ग में जायेगा। (सहीह बुख़ारी : ७३९२, सहीह मुस्लिम : २६७७)

२४. वही अल्लाह है पैदा करने वला, बनाने वाला, रूप देने वाला। उसी के लिये शुभनाम हैं, उस की पवित्रता का वर्णन करता है जो (भी) आकाशों तथा धरती में है, और वह प्रभावशाली हिक्मत वाला है।

*****

सूरह मुम्तहिना – ६०

सूरह मुम्तहिना के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में १३ आयते हैं।

- इस की आयत १० से यह नाम लिया गया है।
- इस की आयत १ से ७ तक में इस्लाम के विरोधियों से मैत्री रखने पर कड़ी चेतावनी दी गई है। और अपने स्वार्थ के लिये उन्हें भेद की बातें पहुँचाने से रोका गया है। तथा इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) और उन के साथियों के, काफ़िर जाति से विरक्त होने के एलान को आदर्श के लिये प्रस्तुत किया गया है।
- आयत ८ और ९ में बताया गया है कि जो काफ़िर युद्ध नहीं करते तो उन के साथ न्याय तथा अच्छा व्यवहार करो।
- आयत १० से १२ तक मक्का से हिज्रत कर के आई हुई तथा उन नारियों के बारे में जो मुसलमानों के विवाह में थीं और उन के हिज्रत कर जाने पर मक्का ही में रह गईं थीं निर्देश दिये गये गये हैं।
- अन्त में उन्हीं बातों पर बल दिया गया है जिन से सूरह का आरंभ हुआ है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. हे लोगों जो ईमान लाये हो! मेरे शत्रुओं तथा अपने शत्रुओं को मित्र न बनाओ। तुम संदेश भेजते हो उन की ओर मैत्री[1] का, जब कि उन्हों ने कुफ़्र किया है उस का जो तुम्हारे पास सत्य आया है। वह देश निकाला देते हैं रसूल को तथा तुम को इस कारण कि तुम ईमान लाये हो अल्लाह अपने पालनहार पर? यदि तुम निकले हो जिहाद के लिये मेरी राह में और मेरी प्रसन्नता की खोज के लिये तो गुप्त रूप से उन को मैत्री का संदेश भेजते हो? जब कि मैं भली–भाँति जानता हूँ उसे जो तुम छुपाते हो और जो खुलकर करते हो? तथा जो करेगा ऐसा, तो निश्चय वह कुपथ हो गया सीधी राह से।

२. और यदि वश में पा जायें तुम को तो तुम्हारे शत्रु बन जायें तथा तुम्हें अपने हाथों और जुबानों से दुःख पहुँचाये। और चाहने लगेंगे कि तुम (फ़िर) काफ़िर हो जाओ।

३. तुम्हें लाभ नहीं देंगे तुम्हारे सम्बन्धी और न तुम्हारी संतान प्रलय के दिन। वह (अल्लाह) अलगाव कर देगा तुम्हारे बीच। और अल्लाह जो कुछ तुम कर रहे हो उसे देख रहा हैं।

४. तुम्हारे लिये इब्राहीम तथा उस के साथियों में एक अच्छा आदर्श है। जब कि उन्होंने अपनी जाति से कहा: निश्चय हम विरक्त हैं तुम से तथा उन से जिन की तुम इबादत (वंदना) करते हो अल्लाह के अतिरिक्त। हम ने तुम से कुफ़्र किया। खुल चुका है बैर हमारे तथा तुम्हारे बीच और क्रोध सदा के लिये। जब तक तुम

---

[1] मक्का वासियों ने जब हुदैबिया की संधि का उल्लंघन किया, तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मक्का पर आक्रमण करने के लिये गुप्त रूप से मुसलमानों को तय्यारी का आदेश दे दिया। उसी बीच आप की इस योजना से सूचित करने के लिये हातिब बिन अबी बलतआ ने एक पत्र एक नारी के माध्यम से मक्का वासियों को भेज दिया। जिस की सूचना नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को वह्यी द्वारा दे दी गई। आप ने आदरणीय अली, मिक़दाद तथा जुबैर से कहा कि जाओ, रौज़ा ख़ाख़ (एक स्थान का नाम।) में एक स्त्री मिलेगी जो मक्का जा रही होगी। उसे के पास एक पत्र है वह ले आओ। यह लोग वह पत्र लाये। तब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: हे हातिब! यह क्या है? उन्होंने कहा: यह काम मैं ने कुफ़्र तथा अपने धर्म से फिर जाने के कारण नहीं किया है। बल्कि इस का कारण यह है कि अन्य मुहाजिरीन के मक्का में सम्बन्धी नहीं है। इसलिये मैं ने चाहा कि उन्हें सूचित कर दूँ। ताकि वे मेरे आभारी रहें। और मेरे समीपवर्यिों की रक्षा करें। आप ने उन की सच्चाई के कारण उन्हें कुछ नहीं कहा। फिर भी अल्लाह ने चेतवनी के रूप में यह आयतें उतारीं ताकि भविष्य में कोई मुलसलमान काफ़िरों से ऐसा मैत्री सम्बद्ध न रखे। (सहीह बुख़ारी : ४८९०)

ईमान न लाओ अकेले अल्लाह पर, परन्तु इब्राहीम का (यह) कथन अपने पिता से कि मैं अवश्य तेरे लिये क्षमा की प्रार्थना[१] करूँगा। और मैं नहीं अधिकार रखता हूँ अल्लाह के समक्ष कुछ। हे हमारे पालनहर! हम ने तेरे ही ऊपर भरोसा किया और तेरी ही ओर ध्यान किया है और तेरी ही ओर फिर आना है।

५. हे हमारे पालनहार! हमें न बना परीक्षा[२] (का साधन) काफ़िरों के लिये और हमें क्षमा कर दे, हे हमारे पालनहार! वास्तव में तू ही प्रभुत्वशाली गुणी है।

६. निःसंदेह तुम्हारे लिये उन में एक अच्छा आदर्श हैं उस के लिये जो आशा रखता हो अल्लाह तथा अन्तिम दिवस (प्रलय) की। और जो विमुख हो तो निश्चय अल्लाह निस्पृह प्रशंसित है।

७. कुछ दूर नहीं कि अल्लाह बना दे तुम्हारे बीच तथा उन के बीच जिन से तुम बैर रखते हो प्रेम।[३] और अल्लाह बड़ा सामर्थ्यवान है, और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

८. अल्लाह तुम को नहीं रोकता उन से जिन्होंने तुम से युद्ध न किया हो धर्म के विषय में, और न बहिष्कार किया हो तुम्हारा तुम्हारे देश से, इस से कि तुम उन से अच्छा व्यवहार करो और न्याय करो उन से। वास्तव में अल्लाह प्रेम करता है न्याय[४] कारियों से।

९. तुम्हें अल्लाह बस उन से रोकता है जिन्होंने युद्ध किया हो तुम से धर्म के विषय में तथा बहिष्कार किया हो तुम्हारा तुम्हारे घरों से और सहायता की हो तुम्हारा बहिष्कार कराने में, कि तुम मैत्री रखो उन से। और जो मैत्री करेंगे उन से तो वही अत्याचारी है।

---

[१] इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने जो प्रार्थनायें अपने पिता के लिये की उन के लिये देखिये: सूरह इबराहीम, आयत: ४१, तथा सूरह शुअरा, आयत:८६। फिर जब आदरणीय इब्राहील (अलैहिस्सलाम) को यह ज्ञान हो गया कि उन का पिता अल्लाह का शत्रु है तो आप उस से विरक्त हो गये। (देखिये: सूरह तौबा, आयत: ११४)

[२] इस आयत में मक्का की विजय और अधिकांश मुश्रिकों के ईमान लाने की भविष्यवाणी है जो कुछ ही सप्ताह के पश्चात् पूरी हुई। और पूरा मक्का ईमान ले आया।

[३] अर्थात उन को मुलसमान कर के तुम्हारा दीनी भाई बना दे। और फिर ऐसा ही हुआ कि मक्का की विजय के बाद लोग तेज़ी के साथ मुलसमान होता आरंभ हो गये।और जो पुरानी दुश्मनी थी वह प्रेम में बदल गई

[४] इस आयत में सभी मनुष्यों के साथ अच्छे व्यवहार तथा न्याय करने की मूल शिक्षा दी गई है। उन से सिवा जो इस्लाम के विरुद्ध युद्‌ध करते हो और मुलसमानों से बैर रखते हों।

१०. हे ईमान वालो! जब तुम्हारे पास मुसलमान स्त्रियाँ हिज्रत कर के आयें तो उन की परीक्षा ले लिया करो। अल्लाह अधिक जानता है है उन के ईमान को, फिर यदि तुम्हें यह ज्ञान हो जाये कि वह ईमान वालियाँ हैं तो उन्हें वापिस न करो[१] काफ़िरों की ओ। न वे औरतें हलाल (वैध) हैं उन के लिये अैर न वे काफ़िर हलाल (वैध) है उन औरतों के लिये।[२] और चुका दो उन काफ़िरों को जो उन्होंने ख़र्च किया हो। तथा तुम पर कोई दोष नहीं है कि विवाह कर लो उन से जब दे दो उन को उन का महर (स्त्री उपहार)। तथा न रखो काफ़िर स्त्रियों को अपने विवाह में, तथा माँग लो जो तुम ने ख़र्च किया हो। और चाहिये कि वह काफ़िर माँग लें जो उन्होंने ख़र्च किया हो। यह अल्लाह का आदेश है, वह निर्णय कर रहा है तुम्हारे बीच, तथा अल्लाह सब जानने वाला गुणी है।

११. और यदि तुम्हारे हाथ से निकल जाये तुम्हारी कोई पत्नी काफ़िरों की ओर और तुम को बदले[३] का अवसर मिल जाये तो चुका दो उन को जिन की पत्नियाँ चली गई हैं उस के बराबर जो उन्होंने ख़र्च किया है। तथा डरते रहो उस अल्लाह से जिस पर तुम ईमान रखते हो।

१२. हे नबी! जब आयें आप के पास ईमान वालियाँ ताकि[४] वचन दें आप को इस पर कि वह साझी नहीं बनायेंगी अल्लाह का किसी को और न चोरी करेंगी और व्यभिचार करेंगी और न बध करेंगी अपनी संतान को और न कोई ऐसा आरोप (कलंक) लगायेंगी जिसे उन्होंने घड़ लिया हो अपने हाथों तथा पैरो के आगे और

---

[१] इस आय में यह आदेश दिया जा रहा है कि जो स्त्री ईमान ला कर बदीला हिज्रत कर के आ जाये उसे काफ़िरों को वापिस न करो। यदि वह काफ़िर की पत्नी रही है तो उस के पती को जो स्त्री उपहार (महर) उस ने दिया हो उसे दे दो। और उन से विवाह कर लो। और अपने विवाह का महर भी उस स्त्री को दो। ऐसे ही जो काफ़िर स्त्री किसी मुसलमान के विवाह में हो अब उस का विवाह उस का साथ अवैध है। इसलिये वह मक्का जा कर किसी काफ़िर से विवाह करे तो उस के पती से जो स्त्री उपहार तुम ने उसे दिया है माँ लो।

[२] अर्थात अब मुलसमान स्त्री का विवाह काफ़िर के साथ, तथा काफ़िर स्त्री का मुसलमान के साथ अवैध (हराम) कर दिया गया है।

[३] भावार्थ यह है कि मुसलमान हो कर जो स्त्री आ गई है उस का महर जो उस के काफ़िर पति को देना है वह उसे न दे कर उस के बराबर उस मुसलमान को दे दो जिस की काफ़िर पत्नी उस के हाथ से निकल गई है।

[४] हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) इस आयत द्वारा उन की परीक्षा लेते और जो मान लेती उस से कहत कि जाओ मैं ने तुम से वचन ले लिया। और आप ने (अपनी पत्नियों के इलावा) कभी किसी नारी के हाथ को हाथ नहीं लगाया। (सहीह बुख़ारी : ४८९१, ९३, ९४, ९५)

नहीं अवैज्ञा करेंगी आप की किसी भले काम में तो आप वचन ले लिया करें उन से तथा क्षमा की प्रार्थना करें उन के लिये अल्लाह से। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील तथा दयावान् है।

१३. हे ईमान वालो! तुम उन लोगों को मित्र न बनाओ क्रोधित हो गया है अल्लाह जिन पर। वह निराश हो चुके है आख़िरत[१] (परलोक) से उसी प्रकार जैसे काफ़िर समाधियों में पड़े हुये लोगों (के जीवित होने) से निरोश है।

*****

[१] आख़िरत से निराश होने का अर्थ उस का इन्कार है जैसे उन्हें मरने के पश्चात् जीवन का इन्कार है।

सूरह सफ़्फ़ – ६१

सूरह सफ़्फ़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस मे १४ आयतें हैं।

– इस सूरह की आयत ४ में ''सफ़्फ़'' शब्द आया है जिस का अर्थ पंक्ति हैं। उसी से यह नाम लिया गया है। और प्रथम आयत में आकाशों तथा धरती की प्रत्येक चीज़ के अल्लाह की तस्बीह (पवित्रता का गुणगान करने) की चर्चा की गई है। फिर मुसलमानों पर जो अपनी बात के अनुसार कर्म नहीं करते और वचन भंग करते हैं उन की निन्दा है। तथा उन की सराहना है जो मिलकर अल्लाह की राह में संघर्ष करते हैं और अपना वचन पूरा करते है।

– आयत ५ और ६ में मुसलमानों को सावधान किया गया है कि यहूदियों की नीति पर न चलें जिन्हों ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को दुःख दिया। और कुरीति अपनाई जिस से उन के दिल टेढ़े हो गये। फिर उन्होंने अपने सभी रसूलों का इन्कार किया जो खुली निशानियाँ लाये।

– इस में इस्लाम के विरोधियों को सावधान करते हुये बताया गया है कि अल्लाह अपना प्रकाश पूरा करेगा और उस का धर्म सभी धर्मों पर प्रभुत्वशाली होगा। काफ़िरों और मुश्रिकों को कितना ही बुरा क्यों न लगे।

– मुसलमानों को ईमान की माँग पूरी करने तथा जिहाद करने का आदेश देते हुये परलोक में उस के प्रतिफल, तथा संसार में सहायता और विजय की शुभ सूचना दी गई है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयवान् है।

१. अल्लाह की पवित्रता का गान करती है जो वस्तु आकाशें तथा धरती में है। और वह प्रभुत्वशाली गुणी है।

२. हे ईमान वालो! तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं।

३. अत्यंत अप्रिय है अल्लाह को तुम्हारी वह बात कहना जिसे तुम (स्वयं) करते नहीं।

४. नि:संदेह अल्लाह प्रेम करता है उन से जो युद्ध करते हैं उस की राह में पंक्तिबंद होकर जैसे कि वह सीसा पिलायी दीवार हों।

५. तथा याद करो जब कहा मूसा ने अपनी जाति से: हे मेरे समुदाय! तुम क्यों दु:ख देते हो मुझ को जब कि तुम जानते हो कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ तुम्हारी ओर? फिर जब वह टेढ़े ही रह गये तो टेढ़े कर दिये अल्लाह ने उन के दिल। और अल्लाह संमार्ग नहीं दिखाता उल्लंघनकारियों को।

६. तथा याद करे जब कहा, मर्यम के पुत्र ईसा ने: हे इस्राईल की संतान! मैं तुम सब की तरफ अल्लाह का रसूल हूँ, और पुष्टि करने वाला हूँ उस तौरात की जो मुझ से पूर्व आयी है। तथा शुभ सूचना देने वाला हूँ एक रसूल की जो आयेगा मेरे पश्चात्, जिस का नाम अह्मद है। फिर जब वह आ गये उन के पास खुले प्रमाणों को ले कर तो उन्होंने कह दिया कि यह तो खुला जादू है।

७. और उस से अधिक अत्याचारी कौन होगा जो झूठ घड़े अल्लाह पर जब कि वह बुलाया जा रहा हो इस्लाम की ओर। और अल्लाह मार्गदर्शन नहीं देता अत्याचारी जाति को।

८. वह चाहते हैं कि बुझा दें अल्लाह के प्रकाश के अपने मुखों से। तथा अल्लाह पूरा करने वाला है अपने प्रकाश को, यद्यपि बुरा लगे काफ़िरों को।

९. वही है जिस ने भेजा है अपने रसूल को संमार्ग तथा सत्धर्म के साथ ताकि प्रभावित कर दे उसे प्रत्येक धर्म पर चाहे बुरा लगे मुश्रिकों को।

१०. हे ईमान वालो! क्या मैं बता दूँ तुम्हें ऐसा व्यापार जो बचा ले तुम को दु:खदायी यातना से?

११. तुम ईमान लाओ अल्लाह तथा उस के रसूल पर और जिहाद करो अल्लाह की राह में अपने धनों और प्राणों से यही तुम्हारे लिये उत्तम है यदि तुम जानो।

१२. वह क्षमा कर देगा तुम्हारे पापों को और प्रवेश देगा तुम्हें ऐसे स्वर्गों में बहती हैं जिन में नहरें तथा स्वच्छ घरों मे स्थायी स्वर्गों में। यही बड़ी सफलता है।

१३. और एक अन्य (प्रदान) जिस से तुम प्रेम करते हो। वह अल्लाह की सहायता तथा शीघ्र विजय है। तथा शुभसूचना सुना दो ईमान वालों को।

१४. हे ईमान वालो! तुम बन जाओ अल्लाह (के धर्म) के सहायक जैसे मर्यम के पुत्र ईसा ने हवारियों से कहा था कि कौन मेरा सहायक है अल्लाह (के धर्म के प्रचार में)? तो हवारियों ने कहा: हम हैं अल्लाह के (धर्म के) सहायक। तो ईमान लाया ईस्राईलियों का एक सूमह और कुफ़्र किया दूसरे समूह ने। तो हम ने समर्थन दिया उन को जो ईमान लाये उन के शत्रु के विरुद्ध, तो वही विजयी रहे।

*****

सूरह जुमुआ – ६२

सूरह जुमुआ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में ११ आयतें हैं।

- इस की आयत ९ में जुमुआ का महत्त्व बताया गया है। इसलिये इस का नाम सूरह जुमआ है।
- इस की आरंभिक आयत में अल्लाह की तस्बीह (पवित्रता) और उस के गुणों का वर्णन है।
- इस में अल्लाह के अनुग्रह को बताया गया है कि उस ने उम्मियों (अर्बों) में एक रसूल भेजा है और यहूदियों के कुकर्म और निर्मूल दावों पर पकड़ की गई है।
- मुसलमानों को जुमुआ की नमाज़ का पालन करने पूर बल दिया गया है।
- हदीस में है कि उत्तम दिन जिस में सूर्य निकलता है जुमुआ का दिन है। उसी में आदम (अलैहिस्सलाम) पैदा किये गये। उसी दिन स्वर्ग में रखे गये। अैर उसी दिन स्वर्ग से निकाले गये। तथा प्रलय भी इसी दिन आयेगी। (सहीह मुस्लिम : ८५४) एक दूसरी हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: लोग जुमुआ छोड़ने से रुक जायें अन्यथा अल्लाह उन के दिलों पर मुहर लाग देगा। (सहीह मुस्लिम:८५६)
- आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जुमुआ की नमाज़ में यह सूरह और सूरह मुनाफ़िक़ून पढ़ते थे। (सहीह मुस्लिम : ८७७)

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करती हैं वह सब चीज़ें जो आकाशों तथा धरती में हैं। जो अधिपति, अति पवित्र, प्रभावशाली गुणी (दक्ष) है।

२. वही है जिस ने निरक्षरों[1] में एक रसूल भेजा उन्हीं में से। जो पढ़ कर सुनाते हैं उन्हें अल्लाह की आयतें और पवित्र करते हैं उन को तथा शिक्षा देते हैं उन्हें पुस्तक (कुरआन) तथा तत्वदर्शिता (सुन्नत)[2] की। यद्यपि वह इस से पूर्व खुले कुपथ में थे।

३. तथा दूसरों के लिये भी उन में से जो अभी उन से नहीं[3] मिले हैं। वह अल्लाह प्रभुत्वशाली गुणी है।

४. यह[4] अल्लाह का अनुग्रह है जिसे वह प्रदान करता है उस के लिये जिस के लिये वह चाहता है। और अल्लाह बड़े अनुग्रह वाला है।

५. उन की दशा जिन पर तौरात का भार रखा गया फिर तदानुसार कर्म नहीं किया उस गधे के समान है जिस के ऊप पुस्तकें[5] लदी हुई हों। बुरा है उस जाति का उदाहरण जिन्होंने झुठला दिया अल्लाह की आयतों को। और अल्लाह मार्गदर्शन नहीं देता अत्याचारियों को।

६. आप कह दें कि हे यहुदियों। यदि तुम समझते हो कि तुम्ही अल्लाह के मित्र हो अन्य लोगों के अतिरिक्त, तो कामना करो मरण की यदि तुम सच्चे[6] हो ?

---

[1] अनभिज्ञों से अभिप्राय: अरब हैं। अर्थात जो अहले किताब नहीं हैं। भावार्थ यह है कि पहले रसूल इस्राईल की संतति में आते रहे। और अब अन्तिम रसूल इस्माईल की संतति में आया है। जो अल्लाह की पुस्तक कुरआन पढ़ कर सुनाते हैं। यह केवल अर्बो के नबी नहीं पूरे मनुष्य जाति के नबी है।

[2] सुन्नर जिस के लिये हिक्मत शब्द आया है उस से अभिप्राय साधारण परिभाषा में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की हदीस, अर्थात आप का कथन और कर्म इत्यादि है।

[3] अर्थात आप अरब के सिवा प्रलय तक के लिये पूरे मानव संसार के लिये भी रसूल बना कर भेजे गये हैं। हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से प्रश्न किया गया कि वह कौन हैं? तो आप ने अपना हाथ सल्मान फारसी के ऊपर रख दिया। और कहा: यदि ईमान सुरय्या (आकाश के कुछ तारों का नाम) के पास भी हो तो कुछ लोग उस को वहाँ से भी प्राप्त कर लेंगे। (सहीह बुख़ारी : ४८९७)

[4] अर्थात आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अरबों तथा पूरे मानव संसार के लिये रसूल बनाना।

[5] अर्थात जैसे गधे को अपने ऊपर लादी हुई पुस्तकों का ज्ञान नहीं होता कि उन में क्या लिखा है वैसे ही यह यहूदी तौरात के आदेशानुसार कर्म न कर के गधे के समान हो गये हैं।

[6] यहूदियों का दावा था कि वही अल्लाह के प्रियवर हैं। (देखिये: सूरह बक़रा, में पहुँचने के लिये मौत की कामना करो।

७. तथा वह अपने किये हुये कर्तूतों के कारण कदापि उस की कामना नहीं करेंगे। और अल्लाह भली–भाँति अवगत है अत्याचारियों से।

८. आप कह दें कि जिस मौत से तुम भाग रहे हो वह अवश्य तुम से मिल कर रहेगी। फिर तुम अवश्य फेर दिये जाओगे परोक्ष (छुपे) तथा प्रत्येक (खुले) के ज्ञान की ओर। फिर वह तुम को सूचित कर देगा उस से जो तुम करते रहे।[१]

९. हे ईमान वालो! जब अज़ान दी जाये नमाज़ के लिये जुमुआ के दिन तो दौड़[२] जाओ अल्लाह की याद की ओर तथा त्याग दो क्रय–विक्रय।[३] यह उत्तम है तुम्हारे लिये यदि तुम जानो।

१०. फिर जब नमाज हो जाये तो फैल जाओ धरती में। तथा खोज करो अल्लाह के अनुग्रह की तथा वर्णन करते रहो अल्लाह का अत्यधिक ताकि तुम सफल हो जाओ।

११. और जब वह देख लेते हैं कोई व्यापार अथवा खेल तो उस की ओर दौड़ पड़ते हैं।[४] तथा आप को छोड़ देते हैं खड़े। आप कह दें कि जो कुछ अल्लाह के पास है है वह उत्तम है खेल तथा व्यापार से। और अल्लाह सर्वोत्तम जीविका प्रदान करते वाला है।

*****

---

[१] अर्थात तुम्हारे दुष्कर्मों के परिणाम से।

[२] अर्थ यह है कि जुमुआ की अज़ान हो जाये तो अपने सारे कारोबार बंद कर के जुमुआ को कुत्बा सुनने, और जुमुआ की नमाज़ पढ़ने के लिये चल पड़ो।

[३३] इस से अभिप्राय संसारिक कारोबार है।

[४] हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जुमुआ का खुत्बा (भाषण) दे रहे थे कि एक कारवाँ गल्ला लेकर आ गया। और सब लोग उस की ओर दौड़ पड़े। बारह व्यक्ति ही आप के साथ रह गये। उसी पर अल्लाह ने यह आयत उतारी (सहीह बुख़ारी : ४८९९)

सूरह मुनाफ़िक़ून – ६३

सूरह मुनाफ़िक़ून के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में ११ आयतें हैं।

- इस का नाम इस की प्रथम आयत से लिया गया है।
- इस में मुनाफ़िकों के उस दुर्व्यवहार का वर्णन है जो उन्होंने इस्लाम के विरोध में अपना रखा था जिस के कारण वह अक्षमम्य अपराध के दोषी बन गये।
- आयत ९ से ११ तक में ईमान वालों को संबोधित कर के अल्लाह का स्मरण (याद) करने तथा उस की राह में दान करने पर बल दिया गया है। जिस से निफ़ाक़ (द्विधा) के रोग का पता भी लगता है। और उसे दूर करने का उपाय भी सामने आ जाता है।
- हदीस में है कि मुनाफ़िक के लक्षण तीन हैं: जब वह बात करे तो झूठ बोले। और जब वादा करे तो मुकर जाये। और जब उस के पास अमानत रखी जाये तो उस में ख़्यानत (विश्वासघात) करे। (सहीह बुख़ारी : ३३, सहीह मुस्लिम : ५९)
- दूसरी हदीस में एक चौथा लक्षण यह बताया गया है कि जब वह झगड़ा करे तो गाली दे । (सहीह बुख़ारी : ३४ तथा सहीह मुस्लिम : ५८)

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. जब आते हैं आप के पास मुनाफ़िक़ तो कहते हैं कि हम साक्ष्य (गवाही) देते हैं कि वास्तव में आप अल्लाह के रसूल हैं। तथा अल्लाह जानता है कि वास्तव में आप अल्लाह के रसूल है। और अल्लाह गवाही देता है कि मुनाफ़िक निश्चय झूठे[1] हैं।

२. उन्होंने बना रखा हैं अपनी शपथों को एक ढाल और रुक गये अल्लाह की राह से। वास्तव में वह बड़ा दुष्कर्म कर रहे हैं।

३. यह सब कुछ इस कारण है कि वे ईमान लाये फिर कुफ़्र कर गये ते मुहर लगा दी अल्लाह ने उन के दिलों पर, अत: वह समझते नहीं।

४. और यदि आप उन्हें देखें तो आप को भा जाये उन के शरीर। और यदि वह बात करें तो आप सुनने लगें उन की बात, जैसे कि वह लकड़ियाँ हों दीवार के सहारे लगाई[2] हुई। वह प्रत्येक कड़ी ध्वनी को अपने विरुद्ध[3] समझते हैं। वही शत्रु हैं, आप उन से सावधान रहें। अल्लाह उन को नाश करे, वह किधर फिरे जा रहे हैं!

५. जब उन से कहा जाता है कि आओ, ताकि क्षमा की प्रार्थना करें तुम्हारे लिये अल्लाह के रसूल, तो मोड़ लेते हैं अपने रिस। तथा आप उन्हें देखते हैं कि वह रुक जाते हैं अभिमान (घमंड) करते हुये।

६. हे नबी! उन के समीप समान है कि आप क्षमा की प्रार्थना करें उन के लिये अथवा क्षमा की प्रार्थना न करें उन के लिये। कदापि नहीं क्षमा करेगा अल्लाह उन को। वास्तव में अल्लाह सुपथ नहीं दिखाता है अवैज्ञाकारियों को।

---

[1] आदरणीय ज़ैद पुत्र अर्क़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि एक युद्ध में मैं ने (मुनाफ़िक़ों के प्रमुख) अब्दुल्लाह पुत्र उबय्य को कहते हुये सुना कि उन पर ख़र्च न करो जो अल्लाह के रसूल के पास हैं। यहाँ तक कि वह बिखर जायें आप के आप–पास से। और यदि हम मदीना वापिस गये तो हम सम्मानित उस से अपमानित (इस से अभिप्राय वह मुसलमानों को ले रहेथे।) को अवश्य निकाल देंगे। मैं ने अपने चाचा को यह बात बता दी। और उन्होंने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को बता दी। तो आप((सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अब्दुल्लाह पुत्र उबय्य को बुलाया। उस ने और उस के साथियें ने शपथ ले ली कि उन्होंने यह बात नहीं कही है। इस कारण आप ने मुझे (अर्थात: ज़ैद पुत्र अर्क़म) झूठा समझ लिया। जिस पर मुझे बड़ा शोक हुआ। और मैं घर में रहने लगा। फिर अल्लाह ने यह सूरह उतारी तो आप ने मुझे बुला कर सुनायी। और कहा कि है ज़ैद! अल्लाह ने तुम्हें सच्चा सिद्ध कर दिया हैं। (सहीह बुख़ारी : ४९००)

[2] जो देखने में सुन्दर परन्तु निर्बोध होती हैं।

[3] अर्थात प्रत्येक समय उन्हें धड़का लगा रहता है कि उन के अपराध खुल न जायें।

७. यही वे लोग हैं जो कहते हैं कि मत ख़र्च करो उन पर जो अल्लाह के रसूल के पास रहते हैं ताकि वह बिखर जायें। जब कि अल्लाह ही के अधिकार में है आकाशों तथा धरती के सभी कोष (ख़जाने)। परन्तु मुनाफ़िक़ समझते नहीं हैं।

८. वे कहते हैं कि यदि हम वापिस पहुँच गये मदीना तक तो निकाल[१] देगा सम्मानित उस से अपमानित को। जब कि अल्लाह ही के लिये सम्मान है एवं उस के रसूल तथा ईमान वालों के लिये। परन्तु मुनाफ़िक़ जानते नहीं।

९. हे ईमान वालो! तुम्हें अचेत न करें तुम्हारे धन तथा तुम्हारी संतान अल्लाह के स्मरण (याद) से। और जो ऐसा करेंगे वही क्षति ग्रस्त है।

१०. तथा दान करो उस में से जो प्रदान किया हैं हम ने तुम को, इस से पूर्व कि आ जाये तुम में से किसी के मरण का[२] समय, तो कहे कि मेरे पालनहार! क्यों नहीं अवसर दे दिया मुझ को कुछ समय का। ताकि मैं दान करता था सदाचारियों में हो जाता।

११. और कदापि अवसर नहीं देता अल्लाह किसी प्राणी को जब आ जाये उस का निर्धारित समय। और अल्लाह भली–भाँति सूचित है उस से जो कुछ तुम कर रहे हो।

*****

[१] सम्मानित: मुनाफ़िक़ों के मुख्या अब्दुल्लाह पुत्र उबय्य ने स्वयं को, तथा अपमानित: रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को कह था।

[२] हदीस में है कि मनुष्य का वास्तविक धन वही है जिस को वह इस संसार में दान कर जाये। और जिसे वह छोड़ जाये तो वह उस का नहीं बल्कि उस के वारिस का धन हैं। (सहीह बुख़री : ६४४२)

सूरह तग़ाबुन – ६४

सूरह तग़ाबुन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में १८ आयतें है।

- इस का नाम इस की आयत ९ में तग़ाबुन शब्द से लिया गया है। स में अल्लाह का परिचय देते हुये यह बताया गया है कि इस विश्व की रचना सत्य के सथ हुई है। तथा नबूवत और परलोक के इन्कार के परिणाम से सावधान किया गया है। और ईमान लाने का आदेश दे कर हानि के दिन से सतर्क किया गया है। और ईमान तथा इन्कार दोनों को अन्त बताया गया है।
- आयत ११ से १३ तक में समझाया गया है कि संसारिक जीवन के भय से अल्लाह और उस के रसूल की आज्ञा पालन से मूँह न फेरना अन्यथा इस का अन्त विनाश कारी होगा।
- इस की आयत १४ से १८ तक में ईमान वालों को अपनी पत्नियों और संतान की ओर से सावधान रहने का निर्देश दिया गया है कि वह उन्हे कुपथ न कर दें। और धन तथा संतान के मोह में परलोक से अचेत न हो जायें। और जितना हो सके अल्लाह से डरते रहें। और अल्लाह की राह में दान करते रहें।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. अल्लाह की पवित्रता वर्णन करती है प्रत्येक चीज़ जो आकाशों में है तथा जो धरती में है। उसी का राज्य है, और उसी के लिये प्रशंसा है। तथा वह जो चाहे कर सकता है।

२. वही है जिस ने उत्पन्न किया है तुम को, तो तुम में से कुछ काफ़िर हैं, और तुम में से कोई ईमान वाला है। तथा अल्लाह जो कुछ तुम करते हों उसे देख रहा है।[1]

३. उस ने उत्पन्न किया आकाशों तथा धरती को सत्य के साथ, तथा रूप बनाया तुम्हारा तो सुन्दर बनाया तुम्हारा रूप, और उसी की ओर फिर कर जाना है।[2]

४. वह जानता है जो कुछ आकाशों तथा दरती में है, और जानता है जो तुम मन में रखते हो अैर जो बोलते हो। तथा अल्लाह भली–भाँति अवगत है दिलों के भेदों से।

५. क्या नहीं आई तुम्हारे पास उन की सूचना जिन्होंनें कुफ़्र किया इस से पूर्व? तो उन्होंने चख लिया अपने कर्म का दुष्परिणाम। और उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।[3]

६. यह इस लिये कि आते रहे उन के पास उन के रसूल खुली निशानियाँ ले कर। तो उन्होंने कहाः क्या कोई मनुष्य हमें मार्गदर्शन[4] देगा? अतः उन्होंने कुफ़्र किया। तथा मुँह फेर लिया और अल्लाह (भी उन से) निशिचन्त हो गया तथा अल्लाह निस्पृह प्रशंसित है।

७. समझ रखा है काफ़िरों ने कि वह कदापि फिर जीवित नहीं किये जायेंगे। आप कह दें कि क्यों नहीं? मेरे पालनहार की शपथ! तुम अवश्य जीवित किये जाओगे। फिर तुम्हें बताया जायेगा कि तुम ने (संसार में) क्या किया है। तथा यह अल्लाह पर अति सरल है।

---

[1] देखने का अर्थ कर्मो के अनुसार बदला देना है।

[2] अर्थात प्रलय के दिन कर्मो का प्रतिफल पाने के लिये।

[3] अर्थात परलोक में नरक की यातना है।

[4] अर्थात रसूल मनुष्य कैसे हो सकता है। यह कितनी विचित्र बात है कि पत्थर की मुर्तियों को तो पूज्य बना लिया जाये इसी प्रकार मनुष्य को अल्लाह का अवतार और पुत्र बना लिया जाये, पर यदि रसूल सत्य लेकर आये तो उसे ना माना जाये। इस का अर्थ यह हुआ कि मनुष्य कुपथ करे तो यह मान्य है, और यदि वह सीधी राह दिखाये तो मान्य नहीं।

८. अत: तुम ईमान लाओ अल्लाह तथा उस के रसूल[१] पर। तथा उस नूर (ज्योति)[२] पर जिसे हम ने उतारा है। तथा अल्लाह उस से जो तुम करते हो भली–भाँति सूचित है।

९. जिस दिन वह तुम को एकत्र करेगा एकत्र किये जाने वाले दि। तो वह क्षति (हानि) के खुल जाने[३] का दिन होगा। और जो ईमान लाया अल्लाह पर तथा सदाचार करता है तो वह क्षमा कर देगा उस के दोषों को, और प्रवेश देगा उसे ऐसे स्वर्गों में बहती होगी जिन में नहरें वह सदावासी होंगे उन में। यही बड़ी सफलता है।

१०. और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और झुठलाया हमारी आयतों (निशानियों) को तो वही नारकी हैं जो सदावासी होंगे उस (नरक) में। तथा वह बुरा ठिकाना है।

११. जो अपना आती है वह अल्लाह ही की अनुमति से आती है। तथा जो अल्लाह पर ईमान[४] लाये तो वह मार्गदर्शन देता[५] है उस के दिल को। तथा अल्लाह प्रत्येक चीज़ को जानता है।

१२. तथा आज्ञा का पालन करो अल्लाह की तथा आज्ञा का पालन करो उस के रसूल की। फिर यदि तुम विमुख हुये तो हमारे रसूल का दायित्व केवल खुले रूप से (उपदेश) पहुँचा देना है।

१३. अल्लाह वह है जिस के सिवा कोई वंदनीय (सच्चा पूज्य) नहीं है अत: अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिये ईमान वालों को।

१४. हे लोगों जो ईमान लाये हो! वास्तव में तुम्हारी कुछ पत्नियाँ तथा संतान तुम्हारी शत्रु[६] है। अत: उन से सावधान रहो। और यदि तुम क्षमा कर दो तो वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

---

[१] इस से अभिप्राय अन्तिम रसूल मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हैं।

[२] इस से अभिप्राय कुरआन है।

[३] अर्थात काफ़िरों के लिये, जिन्होंने अल्लाह की आज्ञा का पालन नहीं किया।

[४] अर्थ यह है कि जो व्यक्ति आपदा को यह समझ कर सहन करता है कि अल्लाह ने यही उस के भाग्य में लिखा है।

[५] हदीस में है कि ईमान वाले की दशा विभिन्न होती है। और उस की दशा उत्तम ही होती है। जब उसे सुख मिले तो कृतज्ञ होता है। और दु:ख हो तो सहन करता है। और यह उस के लिये उत्तम है। (मुस्लिम : २९९९)

[६] अर्थात जो तुम्हें सदाचार एवं अल्लाह के आज्ञापालन से रोकते हों, फिर भी उन का सुधार करने अैर क्षमा करने का निर्देश निर्देश दिया गया है।

१५. तुम्हारे धन तथा तुम्हारी संतान तो तुम्हारे लिये एक परीक्षा हैं। तथा अल्लाह के पास बड़ा प्रतिफल[१] (बदला) है।

१६. तो अल्लाह से डरते रहो जितना तुम से हो सके तथा सुनो और आज्ञा पालन करो और दान करो। यह उत्तम है तुम्हारे लिये। और जो बचा लिया गया अपने मन की कंजूसी से तो वही सफल होने वाले है।

१७. यदि तुम अल्लाह को उत्तम ऋण[२] दोगे तो वह तुम्हें कई गुना बढ़ाकर देगा, और क्षमा कर देगा तुम्हें। और अल्लाह बड़ा गुणग्राही सहनशील है।

१८. वह परोक्ष और हाज़िर का ज्ञान रखने वाला है। वह अति प्रभावी तथा गुणी है।

*****

---

[१] भावार्थयह है कि धन और संतान के मोह में अल्लाह की अवैज्ञा न करो।

[२] ऋण से अभिप्राय अल्लाह की राह में दान करना है।

सूरह तलाक़ – ६५

सूरह तलाक़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में १२ आयतें है।

- इस सूरह मे तलाक़ के नियम और आदेश बताये गये हैं। और मुसलमानों को चेतावनी दी गर्स है कि अल्लाह के आदेशों से मुँह न फेरें। और अवैज्ञाकारी जातियों के परिणाम को याद रखें। दूसरे शब्दों में इस्लाम के परिवारिक नियमों का पालन करें।
- (इद्दत) उस निश्चित अवधि का नाम है जिस के भीतर स्त्री के लिये तलाक़ या पति की मौत के पश्चात् दूसरे से विवाह करना अवैध और वर्जित होता है। इस आयत में तलाक़ देने का समय बताया गया है कि तलाक़ ऐसे समय में दी जाये जब इद्‌दत का आरंभ हो सके। अर्थात मासिक धर्म की स्थिति में तलाक़ न दी जाये। और मासिक धर्म से पवित्र होने पर संभोग न किया गया हो तब तलाक़ दी जाये। (इद्दत के समय) से अभिप्राय यहाँ यही है। फिर यदि (तलाक रजई) दी हो तो निर्धारित अवधि पूरी होने तक वह अपने पति के घर ही में रहेगी। परन्तु यदि व्यभिचार कर जाये तो उसे घर से निकाला जा सकता है। नई बात उत्पन्न करने का अर्थ यह है कि अवधि के भीतर पति अपनी पत्नी को वापिस कर ले जिसे (रज्अत) करना कहा जाता है। और यह बात (रजई तलाक़) में ही होती है। अर्थात जब एक या दो तलाक़ ही दी हों। इस में यह संकेत भी है कि यदि पति तीन तलाक़ दे चुका हो जिस के पश्चात् पति को रज्अत का अधिकार नहीं रह जाता। और न पति पर इस अवधि में उस के खाने–कपड़े का भार होता है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. हे नबी! जब तुम लोग तलाक़ दो अपनी पत्नियों को तो उन्हें तलाक़ दो उन की (इद्दत) के लिये, और गणना करो (इद्दत) की। तथा डरो अपने पालनहार, अल्लाह से। और न निकालो उन को उन के घरों से, और न वह स्वयं निकलें परन्तु यह कि वह कोई खुली बुराई कर जाये। तथा यह अल्लाह की सीमायें हैं। और उल्लंघन करेगा अल्लाह की सीमाओं का तो उस ने अत्याचार कर लिया अपने ऊपर। तुम नहीं जानतें संभवत: अल्लाह कोई नई बात उत्पन्न कर दे इस के पश्चात।

२. फिर जब पहुँचने लगें अपने निर्धारित अवधि को तो उन्हें रो लो नियमानुसार अथवा अलग कर दो नियमानुसार।[१] और गवाह (साक्षी) बनालो[२] अपने में से दो न्यायकारियों को। तथा सीधी गवाही दो अल्लाह के[३] लिये। इस की शिक्षा दी जा रही है उसे जो ईमान रखता हो अल्लाह तथा अन्त–दिवस (प्रलय) पर। अैर जो कोई डरता हो अल्लाह से तो वह बना देगा उस के लिये कोई निकलने का उपाय।

३. और उस को जीविका प्रदान करेगा उस स्थान से जिस का उसे अनुमान (भी) न हो। तथा जो अल्लाह पर निर्भर रहेगा तो वही उसे पर्याप्त है। निश्चय अल्लाह अपना कार्य पूरा कर के रहेगा।[४] अल्लाह ने प्रत्येक वस्तु के लिये एक अनुमान (समय) नियत कर रखा है।

४. तथा जो निराश[५] हो जाती हैं मासिक धर्म से तुम्हारी स्त्रियों में से यदि तुम्हें संदेह हो तो उन की निर्धारित अवधि तीन मास है। तथा उन की जिन्हें मासिक धर्म न

---

[१] अर्थात तलाक़ तथा रज्अत पर।

[२] यदि एक या दो तलाक़ दी हो। (देखिये : सूरह बकरा, आयत: २२९)

[३] अर्थात निष्पक्ष हो कर।

[४] अर्थात जो दु:ख तथा सुख भाग्य में अल्लाह ने लिखा है वह अपने समय में अवश्य पूरा होगा।

[५] निश्चित अवधि से अभिप्राय वह अवधि है जिस के भीतर कोई स्त्री तलाक़ पाने के पश्चात् दूसरा विवाह नहीं कर सकती। और यह अवधि उस स्त्री के लिये जिसे दीर्घायु अथवा अल्पायु होने के कारण मासिक धर्म न आये तीन मास तथा गर्भवती के लिये प्रसव है। और मासिक धर्म आने की स्थिति में तीन मासिक धर्म पूरा होना है।

आता हो। और गर्भवती स्त्रियों की निर्धारित अवधि यह है कि प्रसव हो जाये। तथा जो अल्लाह से डरेगा वह उस के लिये उस का कार्य सरल कर देगा।

५. यह अल्लाह का आदेश है जिसे उतारा है तुम्हारी ओर, अत: जो अल्लाह से डरेगा[१] वह क्षमा कर देगा उस से उस के दोषों को तथा प्रदान करेगा उसे बड़ा प्रतिफल।

६. और उन को (निर्धारित अवधि में) रखो जहाँ तुम रहते हो अपनी शक्ति अनुसार। और उन्हें हानि न पहुँचाओ उन्हें तंग करने के लिये। और यदि वह गर्भवर्ती हों तो उन पर ख़र्च करो यहाँ तक की प्रसव हो जाये। फिर यदि दूध पिलायें तुम्हारे (शिशु) लिये तो उन्हें उन का परिश्रामिक दो। और विचार–विमर्श कर लो आपस में उचिरूप[२] से। और यदि तुम दोनों में तनाव हो जाये तो दूध पिलायेगी उस को कोई दूसरी स्त्री।

७. चाहिये की सम्पन्न (सुखी) ख़र्च दे अपनी कमाई के अनुसार, और तंग हो जिस पर उस की जीविका तो चाहिये कि ख़र्च दे उस में से जो दिया है उस को अल्लाह ने। अल्लाह भार नहीं रखता किसी प्राणी पर परन्तु उतना ही जो उसे दिया है। शीघ्र ही कर देगा अल्लाह तंगी के पश्चात् सुविधा।

८. कितनी बस्तियाँ[३] थीं जिन के वासियों ने अवैज्ञा की अपने पालनहार और उस के रसूलों के आदेश की, तो हम ने हिसाब ले लिया उन का कड़ा हिसाब, और उन्हें यातना दी बुरी यातना।

९. तो उस ने चख लिया अपने कर्म का दुष्परिणाम और उन का कार्य परिणाम विनाश ही रहा।

हदीस में है कि सुबैआ असलमिय्या (रज़ियल्लाहु अन्हा) के पति मारे गये तो वह गर्भवती थी। फिर चालीस दिन बाद उस ने शिशु जन्म दिया। और जब उत्रस की मंगनी हुई तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उसे विवाह दिया। (सहीह बुख़ारी : ४९०९)

पति की मौत पर चार महीना दस दिन की अवधि उस के लिये है जो गर्भवती न हो। (देखिये : सूरह बक़रा : २२६)

[१] अर्थात उस के आदेश का पालन करेगा।

[२] अर्थात परिश्रामिक के विषय में।

[३] यहाँ से अल्लाह की अवैज्ञा के दुष्परिणाम से सावधान किया जा रहा है।

१०. तय्यार कर रखी है अल्लाह ने उन के लिये भीषण यातना। अतः अल्लाह से डरो, हे समझ वालो, जो ईमान लाये हो! निःसंदेह अल्लाह ने उतार दी है तुम्हारी ओर एक शिक्षा।

११. (अर्थात) एक रसूल[1] जो पढ़कर सुनाते हैं तुम को अल्लाह की खुली आयतें ताकि वह निकाले उन को जो ईमान लाये तथा सदाचार किये अन्धकारों से प्रकाश की ओर। और जो ईमान लाये तथा सदाचार करेगा वह उसे प्रवेश देगा ऐसे स्वर्गों में प्रवाहित हैं जिन में नहरें, वह सदावासी होंगे उन में। अल्लाह ने उस के लिये उत्तम जीविका तैयार कर रखी है।

१२. अल्लाह वह है जिस ने उत्पन्न किये सात आकाश तथा धरती में से उन्ही के समान। वह उतारता है आदेश उन के बीच, ताकि तुम विश्वास करो कि अल्लाह तो कुछ चाहे कर सकता है। और यह की अल्लाह ने घेर रखा है प्रत्येक वस्तु को अपने ज्ञान की पतिधि में।

*****

[1] अर्थात मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को। अंधकारों से अभिप्राय: कुफ़्र तथा प्रकाश से अभिप्राय: ईमान है।

सूरह तह्रीम – ६६

सूरह तह्रीम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में १२ आयतें है।

– इस का नाम इस की प्रथम आयत से लिया गया है। जिस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की एक चूक पर सावधान किया गया है। जो आप से आप की अपनी पत्नियों से प्रेम के कारण हुई। और आप की पत्नियों की भी पकड़ की गई है। और उन्हें अपना सुधार करने की ओर ध्यान दिलाया गया है।

– इस की आयत ६ से ८ तक में ईमान वालों को अपनी पत्नियों का सुधार करने से निश्चिन्त न होने और अपना दायित्व निभाने का निर्देश दिया गया है कि उन्हें प्रलोक के दण्ड से बचाने के लिये भरपूर प्रयास करें।

– आयत ९ में काफ़िरों तथा मुनाफ़िक़ों से जिहाद करने का आदेश दिया गया है। जो सदा आप के तथा मुसलमान स्त्रियों के बारे में कोई न कोई उपद्रव मचाते थे।

– आयत १० में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की दो पत्नियों को चेतावनी दी गई है और अन्त में दो सदाचारी स्त्रियों का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. हे नबी! क्यों हराम (अवैध) करते हैं उसे जो हलाल (वैध) किया है अल्लाह ने आप के लिये? आप अपनी पत्नियों की प्रसन्नता[1] चाहते हैं? तथा अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

२. नियम बना दिया है अल्लाह ने तुम्हारे लिये तुम्हारी शपथों से निकलने[2] का। तथा अल्लाह संरक्षक है तुम्हारा और वही सर्व ज्ञानी गुणी है।

३. और जब नबी ने अपनी कुछ पत्नियों से एक[3] बात कही, तो उस ने उसे बता दिया, और अल्लाह ने उसे खोल दिया नबी पर, तो नबी ने कुछ से सूचित किया और कुछ को छोड़ दिया। फिर जब सूचित किया आप ने पत्नी को उस से तो उस ने कहा: किस ने सूचित किया आप को इस बात से? आप ने कहा: मुझे सूचित किया है सब जानने और सब से सूचित रहने वाले ने

४. यदि तुम[4] दोनों (हे नबी की पत्नियों!) क्षमा माँग लो अल्लाह से (सो तुम्हारे लिये उत्तम है), क्योंकि तुम दोनों के दिल कुछ झुक गये हैं। और यदि तुम दोनों एक–दूसरे की सहायता करोगी आप के विरुद्ध ते निःसंदेह अल्लाह आप का सहायक है तथा जिब्रील और सदाचारी ईमान वाले और फ़रिश्ते (भी) इन के अतिरिक्त सहायक हैं।

५. कुछ दूर नहीं कि आप का पालनहार यदि आप तलाक़ दे दें तुम सभी को तो बदले में दे आप को पत्नियाँ तुम से उत्तम, इस्लाम वालियाँ, इबादत करने

---

[1] हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अस्र की नमाज़ के पश्चात् अपनी सब पत्नियों के यहाँ कुछ देर के लिये जाया करते थे। एक बार कई दिन अपनी पत्नी ज़ैनब (रज़ियल्लाहु अन्हा) के यहाँ अधिक देर तक रह गये। कारण यह था कि वह आप को मधु पिलाती थीं। आप की पत्नी आईशा तथा हफ़्सा (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने योजना बनाई कि जब आप आयें तो जिस के पास जायें वह यह कहे कि आप के मुँह से मग़ाफ़ीर (एक दुर्गंधित फूल) की गन्ध आ रही है। और उन्होंने यही किया। जिस पर आप ने शपथ ले ली अब मधु नहीं पीऊँगा। उसी पर यह आयत उतरी। (बुख़ारी ४९१२) इस में यह संकेत भी है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को भी किसी हलाल को हराम करने अथवा हराम को हलाल करने का कोई अधिकार नहीं था।

[2] अर्थात प्रायश्चित दे कर उस को करने का जिस के न करने की शपथ ली हो। शपथ के प्रायश्चित (फ़फ़ारा) के लिये देखिये: माइदा, आयत: ८१।

[3] अर्थात मधु न पीने की बात।

[4] दोनो से अभिप्राय : आदर्णीय आईशा तथा हफ़्सा (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) है।

वालियाँ, आज्ञा पालन करने वालियाँ, क्षमा माँगने वालियाँ, व्रत रखने वालियाँ, विधवायें तथा कुमारियाँ।

६. हे लोगो जो ईमान लाये हो! बचाओ[1] अपने आप को तथा अपने परिजनों को उस अग्नि से जिस का ईंधन मनुष्य तथा पत्थर होंगे। जिस पर फ़रिश्ते नियुक्त हैं कड़े दिल, कड़े स्वभाव वाले। वह अवैज्ञा नहीं करते अल्लाह के आदेश की तथा वही करते है जिस का आदेश उन्हें दिया जाये।

७. हे काफ़िरों! बहाना न बनाओ आज, तुम्हें उसी का बदला दिया जा रहा है जो तुम करते रहे।

८. हे ईमान वालो! अल्लाह के आगे सच्ची[2] तौबा करो। संभव है कि तुम्हारा पालनहार दूर कर दे तुम्हारी बुराईयाँ तुम से, तथा प्रवेश करा दें तुम्हें ऐसे स्वर्गों में बहती हैं जिन में नहरें। जिस दिन वह अपमानित नहीं करेगा नबी को और न उन को जो ईमान लाये हैं उन के साथ। उन का प्रकाश[3] दौड़ रहा होगा उन के आगे तथा उन के दायें, वह प्रार्थना कर रहे होंगे: हे हमारे पालनहार! पूर्ण कर दे हमारे लिये हमारे प्रकाश को, तथा क्षमा कर दे हम को। वास्तव में तू जो चाहे कर सकता है।

९. हे नबी! आप जिहाद करें काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से और उन पर कड़ाई करें।[4] उन का स्थान नरक है और वह बुरा स्थान है।

१०. अल्लाह ने उदाहरण दिया है उन के लिये जो काफ़िर हो गये नूह ही पत्नी तथ लूत की पत्नी का। जो दोनों विवाह में थीं दो भक्तों के हमारे सदाचारी भक्तों में से। फिर दोनों ने विश्वासघात[5] किया उन से। तो दोनों उन के, अल्लाह के यहाँ कुछ

---

[1] अर्थात तुम्हारा कर्तव्य है कि अपने परिजनों को इस्लाम की शिक्षा दो ताकि वह इस्लामी जीवन व्यतीत करें। और नरक का ईंधन बनने से बच जायें। हदीस में है कि जब बच्चा सात वर्ष का हो जाये तो उसे नमाज़ पढ़ने का आदेश दो। और जब दस वर्ष का हो जाये तो उसे नमाज़ के लिये (यदि ज़रूरत पड़े तो) मारो। (तिर्मिज़ी:४०७)

पत्थर से अभिप्राय वह मुर्तियाँ हैं जिन्हें देवता और पूज्य बनाया गया था।

[2] सच्ची तौबा का अर्थ यह है कि पाप को त्याग दे। और उस पर लज्जित हो तथा भविष्य में पाप न करने का संकल्प ले। और यदि किसी का कुछ लिया है तो उसे भरे और अत्याचार किया है तो क्षमा माँग ले।

[3] देखिये : सूरह हदीद, आयत : १२।

[4] अर्थात जो काफ़िर इस्लाम के प्रचार से रोकते हैं, और जो मुनाफ़िक़ उपद्रव फैलाते हैं उन से कड़ा संघर्ष करें।

[5] विश्वासघात का अर्थ यह है कि आदरणीय नूह (अलैहिस्सलाम) की पत्नी ने ईमान तथा धर्म में उन का साथ नहीं दिया। आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह के यहाँ कर्म काम आयेगा। सम्बंध नहीं काम नहीं आयेंगे।

काम नहीं आये। तथा (दोनों स्त्रियों से) कहा गया कि प्रवश कर जाओ नरक में प्रवेश करने वालों का साथ।

११. तथा उदाहरण[1] दिया है अल्लाह ने उन के लिये जो ईमान लाये फिरऔन की पत्नी का। जब उस ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! बना दे मेरे लिये अपने पास एक घर स्वर्ग में, तथा मुझे मुक्त कर दे फ़िरऔन तथा उस के कर्म से, और मुझे मुक्त कर दे अत्याचारी जाति से।

१२. तथा मर्यम, इम्रान की पुत्री का, जिस ने रक्षा की अपने सतीत्व की, तो फूँक दी हम ने उस में अपनी ओर से रूह (आत्मा)। तथा उस (मर्यम) ने सच्च माना अपने पालनहार की बातों और उस की पुस्तकों को। और वह इबादत करने वालों में से थी।

*****

[1] हदीस में है कि पुरुषों में से बहुत पूर्ण हुये। पर स्त्रियों में इमरान की पुत्री मर्यम और फ़िरऔन की पत्नी आसिया ही पूर्ण हुईं। और आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की प्रधानता नारियों पर वही है जो सरीद (एक प्रकार का खाना) की सब खानों पर है। (सहीह बुख़ारी : ३४११, सहीही मुस्लिम : २४३१)

सूरह मुल्क – ६७

सूरह मुल्क के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ३० आयतें है।

- इस सूरह के आरंभ ही में अल्लाह के मुल्क (राज्य) की चर्चा की गई है। जिस से यह ना लिया गया है।
- इस मे मरण तथा जीवन का उद्देश्य बताते हुये आकाश तथा धरती की व्यवस्था पर विचार करने का आमंत्रण दिया गया है जिस से विश्व विधाता का ज्ञान होता है। और यह बात भी उजागर होती है कि मनुष्य का यह जीवन परीक्षा का जीवन है। और इस कुरआन की बताई हुई बातों के इन्कार का दुष्परिणाम बताया गया है।
- आयत १३, १४, में उन का शुभपरिणाम बताया गया है जो अपने पालनहार से डरते रहते हैं। जो प्रत्येक खुली और छुपी बात को जानता है और उस से कोई बात छुपी नहीं रह सकती।
- अन्त में मनुष्य को सोच–विचार का आमंत्रण देते हुये उसे अचेतना से चौकाने का सामान किया गया है। यदि मनुष्य आँखें खोलकर इस विश्व को देखे तो कुरआन का सच्च उजागर हो जायेगा। और वह अपने जीवन के लक्ष्य को समझ जायेगा। हदीस में है कि कुरआन में तीस आयतों की एक सूरह है जिस ने एक व्यक्ति के लिये सिफ़ारिश की यहाँ तक कि उसे क्षमा कर दिया गया। (सुनन अबू दाऊद : १४००, हाकिम १/५६५)

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. शुभ है वह अल्लाह जिस के हाथ में राज्य है। तथा वह जो कुछ चाहे कर सकता है।

२. जिस ने उत्पन्न किया है मृत्यु तथा जीवन को, ताकि तुम्हारी परीक्षा ले कि तुम में किस का कर्म अधिक अच्छा है? तथा वह प्रभुत्वशाली अति क्षमावान् है।[1]

३. जिस ने उत्पन्न किये सात आकाश ऊपर तले। तो क्या तुम देखते हो अत्यंत कृपाशील की उत्पत्ति में कोई असंगति? फिर पुनः देखो, क्या तुम देखते हो कोई दराड़?

४. फिर बार–बार देखो, वापिस आयेगी तुम्हारी ओर निगाह थक–हार कर।

५. और हम ने सजाया है संसार के आकाशों को प्रदीपों (ग्रहों) से। तथा बनाया है उन्हें (तारों को) मार भगाने का साधन शैतानों[2] को, और तय्यार की है हम ने उन के लिये दहकती अग्नि की यातना।

६. और जिन्होंने कुफ़्र किया अपने पालनहार के साथ तो उनके लिये नरक की यातना है। और वह बुरा स्थान है।

७. जब वह फेंके जायेंगे उस में तो सुनेंगे उस की दहाड़ और वह खौल रही होगी।

८. प्रतीत होगा की फट पड़ेगी रोष (क्रोध) से, जब–जब फेंका जायेगा उस में कोई समूह तो प्रश्न करेंगे उन से उस के प्रहरीः क्या नहीं आया तुम्हारे पास कोई सावधान करने वाला (रसूल)?

९. वह कहेंगेः हाँ हमारे पास आया सावधान करने वाला। पर हम ने झुठला दिया, और कहा कि नहीं उतारा है अल्लाह ने कुछ। तुम ही बड़े कुपथ में हो।

१०. तथा वह कहेंगेः यदि हम ने सुना और समझा होता तो नरक के वासियों में न होते।

११. ऐसे वह स्वीकार कर लेंगे अपने पापों को। तो दूरी[3] है नरक वासियरों के लिये।

---

[1] इस में आज्ञा पालन की प्रेरणा तथ अवैज्ञा पर चेतावनी है।

[2] जो चोरी से आकाश की बातें सुनते हैं।(देखियेः सूरह साफ़्फ़ात आयतः ७, १०)

[3] अर्थात अल्लाह की दया से।

१२. नि:संदेह जो डरते हों अपने पालनहार से बिन देखे उन्हीं के लिये क्षमा है तथा बड़ा प्रतिफल है।[1]

१३. तुम चुपके बोलो अपनी बात अथवा ऊँचे स्वर में। वास्तव में वह भली–भाँति जानता है सीनों के भेदों को।

१४. क्या वह नहीं जानेगा जिस ने उत्पन्न किया? और वह सूक्ष्मदर्शक[2] सर्व सूचित है?

१५. वही है जिस ने बनाया हैं तुम्हारे लिये धरती को वशवर्ती, तो चलो फिरो उस के क्षेत्रों में तथा खाओ उस की प्रदान की हुई जीविका। और उसी की ओर तुम्हें फिर जीवित हो कर जाना हैं।

१६. क्या तुम निर्भय हो गये हो उस से जो आकाश में है कि वह धँसा दे धरती में फिर वह अचानक काँपने लगे!

१७. अथवा निर्भर हो गये उस से जो आकाश में है कि वह भेज दे तुम पर पथरीली वायु तो तुम्हें ज्ञान हो जायेगा कि कैसा रहा मेरा सावधान करना?

१८. झुठला चुके हैं इन[3] से पूर्व के लोग तो कैसी रही मेरी पकड़?

१९. क्या उन्होंने नहीं देखा पक्षियों की ओर अपने ऊपर पँख फैलाते तथा सिकोड़ते। उन को अत्यंत कृपाशील ही थामता है। नि:संदेह वह प्रत्येक वस्तु को देख रहा है।

२०. कौन है वह तुम्हारी सेना जो तुम्हारी सहायता कर सकेगी अल्लाह के मुकाबले में? काफ़िर तो बस धोखे ही में हैं।

२१. या कौन है जो तुम्हें जीविका प्रदान कर सके यदि रोक ले वह अपनी जीविका? बल्कि वह घुस गये हैं अवैज्ञ तथा घृणा में।[4]

---

[1] हदीस में है कि मैं ने अपने सदाचारी भक्तों के लिये ऐसी चीज़ तय्यार की है जिसे न किसी आँख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न किसी दिल ने सोचा। (सहीह बुख़ारी : ३२४४, सहीह मुस्लिम : २८२४)

[2] बारीक बातों को जानने वाला।

[3] अर्थात मक्का वासियों से पहले आद, समूद आदि जातियों ने। तो लूत (अलैहिस्सलाम) की जाति पर पत्थरों की वर्षा हुई।

[4] अर्थात सत्य से घृणा में

२२. तो क्या जो चल रहा हो औंधा हो कर अपने मुँह के बल वह अधिक मार्गदर्शन पर है या जो सीधा हो कर चल रहा हो सीधी राह पर?[1]

२३. हे नबी! आप कह दें कि वही है जिस ने पैदा किया है तुम्हें और बनाये हैं तुम्हारे कान तथा आँख और दिल। बहुत ही कम आभारी (कृतज्ञ) होते हो।

२४. आप कह दें: उसी ने फैलाया है तुम्हें धरती में और उसी की ओर एकत्रित[2] किये जाओगे।

२५. तथा वह कहते हैं कि यह वचन कब पूरा होगा यदि तुम सच्चे हो?

२६. आप कह दें: उस का ज्ञान बस अल्लाह ही को है। और मैं केवल खुला सावधान करने वाला हूँ।

२७. फिर जब वह देखेंगे उसे समीप, तो बिगड़ जायेंगे उन के चेहरे जो काफ़िर हो गये। तथा कहा जायेगा: यह वही है जिस की तुम माँग कर रहे थे।

२८. आप कह दें: देखो यदि अल्लाह नाश कर दे मुझ को तथा मेरे साथियों को अथवा दया करे हम पर, तो (बताओ कि) कौन है जो शरण देगा काफिरों को दुःखदायी[3] यातना से?

२९. आप कह दें: वह अत्यंत कृपाशील है। हम उस पर ईमान लाये तथा उसी पर भरोसा किया, तो तुम्हें ज्ञान हो जायेगा कि कौन खुले कुपथ में है।

३०. आप कह दें: भला देखो यदि तुम्हारा पानी गहराई में चला जाये, तो कौन है जो तुम्हें ला कर देगा बहता हुआ जल।

*****

---

[1] इस में काफ़िर तथा ईमानधारी का उदाहरण है। और दोनों के जीवन– लक्ष्य को बताया गया है कि काफ़िर सदा मायामोह में रहते हैं।

[2] प्रलय के दिन अपने कर्मो के लेख–जोखा तथा प्रतिकार के लिये।

[3] अर्थात तुम हमारा बुरा तो चाहते हो परन्तु अपनी चिन्ता नहीं करते।

सूरह क़लम – ६८

सूरह क़लम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ५२ आयतें हैं।

- इस सूरह के आरंभ ही में ''क़लम'' शब्द आया है। जिस से यह नाम लिया गया है। और इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बारे में बताया गया है कि आप का चरित्र क्या है। और जो आप के विरोधी आप को पागल कहते हैं वह कितने पतित (गिरे हुये) हैं।
- इस में शिक्षा के लिये एक बाग़ के स्वामियों का उदाहरण दिया गया है। जिन्होंने अल्लाह के कृतज्ञ न होने के कारण अपने बाग़ के फल को दिये। फिर आज्ञाकारियों को स्वर्ग की शुभसूचना दी गई है। और विरोधियों के इस विचार का खण्डन किया गया है कि आज्ञाकारी और अपराधी बराबर हो जायेंगे।
- इस में बताया गया है कि आज जो अल्लाह को सज्दा करने से इन्कार करते हैं वह परलोक में भी उसे सज्दा नहीं कर सकेंगे।
- आयत ४८ से ५० तक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को काफ़िरों के विरोध पर सहन करने के निर्देश दिये गये हैं।
- अन्त में बताया गया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह की बात बता रहे हैं, जो सब मनुष्यों के लिये सर्वथा शिक्षा है, आप पागल नहीं हैं।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. नून। और शपथ है लेखनी (क़लम) की तथा उस[१] की जिसे वह लिखते हैं।
२. नहीं हैं आप अपने पालनहार के अनुग्रह से पागल।
३. तथा निश्चय प्रतिफल (बदला) है आप के लिये अनन्त।
४. तथा निश्चय ही आप बड़े सुशील हैं।
५. तो शीघ्र आप देख लेंगे, तथ वह (काफ़िर भी) देख लेंगे।
६. कि पागल कौन है।
७. वास्तव में आप का पालनहार ही अधिक जानता है उसे जो कुपथ हो गया उस की राह से। और वही अधिक जानता है उन्हें जो सीधी राह पर हैं।
८. तो आप बात न माने झुठलाने वालों की।
९. वह चाहते हैं कि आप ढीले हो जायें तो वह भी ढीले हो[२] जायें।
१०. और बात न मानें[३] आप किसी अधिक शपथ लेने वाले हीन व्यक्ति की।
११. जो व्यंग करने वाला, चुगलियाँ खाता फिरता है।
१२. भलाई से रोकने वाला, अत्याचारी, बड़ा पापी है।
१३. घमंडी है और इस के पश्चात कुवंश (वर्णन संकर) है।
१४. इस लिये कि वह धन तथा पुत्रों वाला है।

---

[१] अर्थात कुरआन की। जिसे उतरने के साथ ही नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) लेखको से लिखवाते थे। जैसे ही कोई सूरह या आयत उतरती लेखक क़लम तथा चमड़ों और झिल्लियों के साथ उपस्थित हो जाते थे, ताकि पूरे संसार के मनुष्यों को कुरआन अपने वास्तविक रूप में पहुँच सके। और सदा के लिये सुरक्षित हो जाये। क्योंकि अब आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पश्चात् कोई नबी और कोई पुस्तक नहीं आयेगी। और प्रलय तक के लिये अब पूरे संसार के नबी आप ही है । और उन के मार्ग दर्शन के लिये कुरआन ही एकमात्र धर्म पुस्तक है। इसीलिये इसे सुरक्षित कर दिया गया है। और यह विशेषता किसी भी आकाशीय ग्रन्थ को प्राप्त नहीं है। इसलिये अब मोक्ष के लिये अन्तिम नबी तथा अन्तिम धर्म ग्रन्थ कुरआन पर ईमान लाना अनिवार्य है।

[२] जब काफ़िर, इस्लाम के प्रभाव को रोकने में असफल हो गये तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को धमकी और लालच दने के पश्चात्, कुछ लो और कुछ दो की नीति पर आ गये। इसलिये कहा गया कि आप उन की बातों में न आयें। और परिणाम की प्रतीक्षा करें।

[३] इन आयतों में किसी विशेष काफ़िर की दशा का वर्णन नहीं बल्कि काफ़िरों के प्रमुखों के नैतिक पदन तथा कुविचारों और दूराचारों को बताया गया है जो लोगों को इस्लाम के विरोध उकसा रहे थे।तो फिर क्या इन की बात मानी जा सकती है?

१५. जब पढ़ी जाती हैं उस पर हमारी आयतें तो कहता है: यह पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं।
१६. शीघ्र ही हम दाग लगा देंगे उस के सूंड[१] पर।
१७. नि:संदेह हम ने उन को परीक्षा में डाला[२] है जिस प्रकार बाग़ वालों को परीक्षा में डाला था। जब उन्होंने शपथ ली कि अवश्य तोड़ लेंगे उस के फल भोर होते ही।
१८. और इन्शा अल्लाह (यदि अल्लाह ने चाहा) नहीं कहा।
१९. तो फिर गया उस (बाग़) पर एक कुचक्र आप के पालनहार की ओर से, और वह सोये हुये थे।
२०. तो वह हो गया जैसे उजाड़ खेती हो।
२१. अब वे एक–दूसरे को पुकारने लगे भोर होते ही:
२२. कि तड़के चलो अपनी खेती पर यदि फल तोड़ने हैं।
२३. फिर वह चल दिये आपस में चुपके–चुपके बातें करते हुये।
२४. कि कदापि न आने पाये उस (बाग़) के भीतर आज तुम्हारे पास कोई निर्धन।[३]
२५. और प्रात: ही पहुँच गये कि वह पल तोड़ सकेंगे।
२६. फिर जब उसे देखा तो कहा निश्चय हम राह भूल गये।
२७. बल्कि हम वंचित हो[४] गये।
२८. तो उन में से बिचले भाई ने कहा: क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि तुम (अल्लाह की) पवित्रता का वर्णन क्यों नहीं करते?
२९. वह कहने लगे: पवित्र है हमारा पालनहार! वास्तव में हम ही अत्याचारी थे।
३०. फिर सम्मुख हो गया एक दूसरे की निन्दा करते हुये।
३१. कहने लगे हाय अफ़सोस! हम ही विद्रोही थे।

---

[१] अर्थात नाक पर जिसे वह घमंड से ऊँची रखना चाहता है। और दाग़ लगाने का अर्थ अपमानित करना है।

[२] अर्थात मक्का वालों को। इसलिये यदि वह नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर ईमान लायेंगे तो उन पर सफलता की राह खुलेगी। अन्यथा संसार और परलोक दोनों की यातना के भागी होंगे।

[३] ताकि उन्हें कुछ दान न करना पड़े।

[४] पहले तो सोचा कि राह भूल गये हैं। किन्तु फिर देखा कि बाग़ तो उन्हीं का है तो कहा कि यह तो ऐसा उजाड़ हो गया है कि अब कुछ तोड़ने के लिये रह ही नहीं गया है। वास्तव में यह हमारा दुर्भाग्य है।

३२. संभव है हमारा पालनहार हमें बदले में प्रदान करे इस से उत्तम (बाग़)। हम अपने पालनहार ही की ओर रुचि रखते हैं।

३३. ऐसे ही यातना होती है और आख़िरत (परलोक) की यातना इस से भी बड़ी है। काश वह जानते!

३४. निःसंदेह सदाचारियों के लिये उन के पालनहार के पास सुखों वाले स्वर्ग हैं।

३५. क्या हम आज्ञाकारियों[१] को पापियों के समान कर देंगे?

३६. तुम्हें क्या हो गया है? तुम कैसा निर्णय कर रहे हो?

३७. क्या तुम्हारे पास कोई पुस्तक है जिस में तुम पढ़ते हो?

३८. कि तुम्हें वही मिलेगा जो तुम चाहोगे?

३९. या तुम ने हम से शपथें ले रखी हैं जो प्रलय तक चली जायेंगी कि तुम्हें वही मिलेगा जिस का तुम निर्णय करोगे?

४०. आप उन से पूछिये कि उन में कौन इस की ज़मानत लेता है?

४१. क्या उन के कुछ साझी हैं? फिर तो वह अपने साझियों को लायें[२] यदि वह सचे हैं।

४२. जिस दिन पिंडली खोल दी जायेगी और वह बुलाये जायेंगे सज्दा करने के लिये तो (सज्दा) नहीं कर सकेंगे।[३]

४३. उन की आँखें झुकी होंगी, और उन पर अपमान छाया होगा। वह (संसार में) सज्दा करने के लिये बुलाये जाते रहे और वह स्वस्थ थे।

४४. अतः आप छोड़ दें मुझे तथा उसे जो झुठला रहा है इस बात (कुरआन) को, हम उन्हें धीरे–धीरे खींच लायेंगे[४] इस प्रकार कि उन्हें ज्ञान भी नहीं होगा।

४५. तथा हम उन्हें अवसर दे रहे हैं।[१] वस्तुतः हमारा उपाय सुदृढ़ है।

---

[१] मक्का के प्रमुख कहते थे कि यदि प्रलय हुई तो वहाँ भी हमें यही संसारिक सुख–सुविधा प्राप्त होंगी। जिस का खण्डन इस आयत में किया जा रहा है। अभिप्राय यह है कि अल्लाह के हाँ देर है पर अंधेर नहीं हैं।

[२] ताकि वह उन्हें अच्छा स्थान दिला दें।

[३] हदीस में है कि प्रलय के दिन अल्लाह अपनी पिंडली खोलेगा तो प्रत्येक मोमिन पुरुष तथा स्त्री सज्दे में गिर जायेंगे। हाँ वह शेष रह जायेंगे जो दिखावे और नाम के लिये (संसार में) सज्दे किया करते थे। वह सज्दा करना चाहेंगे परन्तु उन की रीढ़ की हड्डी तख़्त के समान बन जायेगी जिस के कारण उन के लिये सज्दा करना असंभव हो जायेगा।(बुख़ारी : ४९१९)

[४] उन के बुरे परिणाम की ओर।

४६. तो क्या आप माँग कर रहे हैं किसी परिश्रामिक[२] की, तो वह बोझ से दबे जा रहे हैं?

४७. या उन के पास ग़ैब का ज्ञान है जिसे वह लिख[३] रहे हैं?

४८. तो आप धैर्य रखें अपने पालनहार के निर्णय तक और न हो जायें मछली वाले के समान।[४] जब उस ने पुकारा और वह शोक पूर्ण था।

४९. और यदि न पा लेती उसे उस के पालनहार की दया तो वह फेंक दिया जाता बंजर में, और वह बुरी दशा में होता।

५०. फिर चुन लिया उसे उस के पालनहार ने और बना दिया उसे सदाचारियों में से।

५१. और ऐसा लगता है कि जो क़ाफ़िर हो गये वह अवश्य फिसला देंगे आप को अपनी आँखों से (घूर कर) जब वह सुनते हों कुरआन को। तथा कहते हैं कि वह अवश्य पागल है।

५२. जब कि यह (कुरआन) तो बस एक[५] शिक्षा है पूरे संसार वासियों के लिये।

*****

[१] अर्थात संसारिक सुख–सुविधा में मग्न रखेंगे। फिर अन्ततः वह यातना में ग्रस्त हो जायेंगे।

[२] अर्थात धर्म के प्रचार पर।

[३] या लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पुस्तक) उन के अधिकार में हैं इस लिये आप का आज्ञा पालन नहीं करते और उसी से ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं?

[४] इस से अभिप्राय यूनुस (अलैहिस्सलाम) हैं जिन को मछली ने निगल लिया था। (देखियेः सूरह साफ़्फ़ात : १३९)

[५] इस में यह बताया गया है कि कुरआन केवल अरबों के लिये नहीं, संसार के सभी देशों और जातियों की शिक्षा के लिये उतरा है।

सूरह हाक़्क़ा – ६९

सूरह हाक़्क़ा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ५३ आयतें हैं।

– इस का प्रथम शब्द ''अल हाक़्क़ा'' है जिस से यह नाम लिया गया है और इस का अर्थ है: वह घड़ी जिस का आना सच्च है। इस में प्रलय के अवश्य आने की सूचना दी गई है।

– आयत ४ से १२ तक उन जातियों की यातना द्वारा शिक्षा दी गई है जिन्होंने प्रलय का इन्कार किया तथा रसूलों को झुठलाया। फिर आयत १३ से १८ तक प्रलय का भ्याव: दृश्य दिखाया गया है।

– आयत १९ से ३७ तक सदाचार्यों तथा दुराचारियों का परिणाम बताया गया है। फिर काफ़िरों को संबोधित कर के उन पर क़ुरआन तथा रसूल की सच्चाई को उजागर किया गया है।

– अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अल्लाह की तस्बीह (पवित्रतागान) बयान करते रहने का आदेश दिया गया है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. जिस का होना सच्च है।

२. वह क्या है जिस का होना सच्च है?

३. तथा आप क्या जानें कि क्या है जिस का होना सच्च है?

४. झुठलाया समूद तथा आद (जाति) ने अचानक आ पड़ने वाली (प्रलत) को।

५. फिर समूद, तो वह ध्वस्त कर दिये गये अति कड़ी ध्वनी से।

६. तथा आद, तो वह ध्वस्त कर दिये गये एक तेज़ शीतल आँधी से।

७. लगाये रखा उसे उन पर सात रातें तथा आठ दिन निरन्तर, तो आप देखते कि वह जाति उस में ऐसे पछाड़ी हुई है जैसे खजूर के खोकले तने।[1]

८. तो क्या आप देखते हैं कि उन में से कोई शेष रह गया है?

९. और किया यही पाप फ़िरऔन ने और जो उस के पूर्व थे, तथा जिन की बस्तियाँ औंधी कर दी गईं।

१०. उन्होंने नहीं माना अपने पालनहार के रसूल को। अन्ततः उस ने पकड़ लिय उन्हें, कड़ी पकड़।

११. हम ने, जब सीमा पार कर गया जल, तो तुम्हें सवार कर दिया नाव[2] में।

१२. ताकि हम बना दें उसे तुम्हारे लिये एक शिक्षा प्रद यादगार। और ताकि सुरक्षित रख लें इस सुनने वाले कान।

१३. फिर जब फूँक दी जायेगी सूर (नरसिंघा) में एक फूँक।

१४. और उठाया जायेगा धरती तथा पर्वतों को तो दोनों चूर–चूर कर दिये जायेंगे[3] एक ही बार में।

१५. तो उसी दिन होनी हो जायेगी।

१६. तथा फट जायेगा आकाश, तो वह उस दिन क्षीण निर्बल हो जायेगा।

१७. और फ़रिश्ते उस के किनारों पर होंगे तथा उठाये होंगे आप के पालनहार के अर्श (सिंहासन) को अपने ऊपर उस दिन आठ फ़रिश्ते।

---

[1] उन के भारी और लम्बे होने की उपमा खजूर के तने से दी गई है।

[2] इस में नूह (अलैहिस्सलाम) के तूफ़ान की ओर संकेत है। और सभी मनुष्य उन की संतान हैं इसलिये यह दय सब पर हूई है।

[3] देखियेः सूरह ताहा, आयतः २०, आयतः १०३, १०८।

१८. उस दिन तुम (अल्लाह के पास) उपस्थित किये जाओगे, नहीं छुपा रह जायेगा तुम में से कोई।
१९. फिर जिसे दिया जायेगा उस का कर्मपत्र दायें हाथ में वह कहेगा: यह लो मेरा कर्मपत्र पढ़ो।
२०. मुझे विश्वास था कि मैं मिलने वाला हूँ अपने हिसाब से।
२१. तो वह अपने मन चाहे सुख में होगा।
२२. उच्च श्रेणी के स्वर्ग में।
२३. जिस के फलों के गुच्छे झुक रहे होंगे।
२४. (उन से कहा जायेगा) : खाओ तथा पियो आनन्द लेकर उस के बदले जो तुम ने किया है विगत दिनों (संसार) में।
२५. और जिसे दिया जायेगा उस का कर्मपत्र उस के बायें हाथ में तो वह कहेगा : हाय! मुझे मेरा कर्मपत्र दिया ही न जाता!
२६. तथा मैं न जानता कि क्या है मेरा हिसाब?!
२७. काश मेरी मौत ही निर्णायक[१] होती!
२८. नहीं काम आया मेरा धन।
२९. मुझ से समाप्त हो गया मेरा प्रभुत्व।[२]
३०. (आदेश होगा कि) उसे पकड़ो और उस के गले में तौक़ डाल दो।
३१. फिर नरक में उसे झोंक दो।
३२. फिर उसे एक जंजीर, जिस की लम्बाई सत्तर गज़ है में जकड़ दो।
३३. वह ईमान नहीं रखता था महिमाशाली अल्लाह पर।
३४. और न प्रेरणादेता था दरिद्र को भोजन कराने की।
३५. अत: नहीं है उसका आज यहाँ कोई मित्र।
३६. और न कोई भोजन, पीप के सिवा।
३७. जिसे पापी ही खायेंगे।

---

[१] अर्थात उस के पश्चात् मैं फिर जीवित न किया जाता।

[२] इस का दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि परलोक के इन्कार पर जितने तर्क दिया करता था आज सब निष्फल हो गये।

३८. तो मैं शपथ लेता हूँ उस की जो तुम देखते हो।
३९. तथा जो तुम नहीं देखते हो।
४०. नि:संदेह यह (कुरआन) अदरणीय रसूल का कथन[1] हैं।
४१. और वह किसी कवि का कथन नहीं है। तुम लोग कम ही विश्वास करते हो।
४२. और न यह किसी ज्योतिषी का कथन है, तुम कम ही शिक्षा ग्रहण करते हो।
४३. सर्वलोक के पालनहार का उतारा हुआ है।
४४. और यदि इस (नबी) ने हम पर कोई बात बनाई[2] होती।
४५. तो अवश्य हम पकड़ लेते उस का सीधा हाथ।
४६. फिर अवश्य काट देते उस के गले की रग।
४७. फिर तुम से कोई (मुझे) उस से रोकने वाला न होता।
४८. नि:संदेह यह एक शिक्षा है सदाचारियों के लिये।
४९. तथा वास्तव में हम जानते हैं कि तुम में कुछ झुठलाने वाले हैं।
५०. और निश्चय यह पछतावे का कारण होगा काफ़िरों[3] के लिये।
५१. वस्तुत: यह विश्वासनीय सत्य है।
५२. अत: आप पवित्रता का वर्णन करें अपने महिमावान पालनहार के नाम की।



[1] यहाँ अदरणीय रसूल से अभिप्राय मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)हैं। तथा सूरह तक्वीर आयत १९ में फ़रिश्ते जिब्रील (अलैहिससलाम) जो वह्यी लाते थे वह अभिप्रय हैं। यहाँ कुरआन को आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन इस अर्थ में कहा गया है कि लोग उसे आप से सुन रहे थे। और इसी प्रकार आप जिब्रील (अलैहिस्सलाम) से सुन रहे थे। अन्यथा वास्तव में कुरआन अल्लाह ही का कथन है जैसा कि आगामी आयत: ४३ में आ रहा है।

[2] इस आयत का भावार्थ यह है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अपनी ओर से वह्यी (प्रकाशना) में कुछ अधिक या कम करने का अधिकार नहीं है यदि वह ऐसा करेंगे तो उन्हें कड़ी यातना दी जायेगी।

[3] अर्थात जो कुरआन को नहीं मानते वह अन्तत: पछतायेंगे।

सूरह मआरिज – ७०

सूरह मआरिज के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ४४ आयतें है।

- इस की आयत ३ में ''ज़िल मआरिज'' का शब्द आया है। उसी से यह नाम लिया गया है जिस का अर्थ है: ऊँचाईयों वाला।
- इस में क़यामत (प्रलय) की यातना की जल्दी मचाने वालों को सूचित किया गया है कि वह यातना अपने समय पर अवश्य आ कर रहेगी। फिर प्रलय की दशा को बताय गया है कि वह कितनी भीषण घड़ी होगी।
- आयत १९ से २५ तक मनुष्य की साधारण कमज़ोरी का वर्णन करते हुये यह बताया गया है कि इसे इबादत (नमाज़) के द्वारा ही दूर किया जा सकता है जिस से वह गुण पैदा होते हैं जिन से मनुष्य स्वर्ग के योग्य होता है।
- अन्तिम आयतों में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का उपहास करने वालों और कुरआन सुनाने से आप को रोकने के लिये आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर पिल पड़ने वालों को कड़ी चेतावनी दी गई है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. प्रश्न किया एक प्रश्न करने[1] वाले ने उस यातना के बारे में जो आने वाली है।
२. काफ़िरों पर। नहीं है जिसे कोई दूर करने वाला।
३. अल्लाह ऊँचाईयों वाले की ओर से।
४. चढ़ते हैं फ़रिश्ते तथा रूह[2] जिस की ओर, एक दिन में जिस का माप पचास हज़ार वर्ष है।
५. अत: (हे नबी!) आप सहन[3] करें अच्छे प्रकार से।
६. वह समझते हैं उस को दूर।
७. और हम देख रहे है उसे समीप।
८. जिस दिन हो जायेगा आकाश पिघली हुई धात के समान।
९. तथा हो जायेंगे पर्वत रंगा–रंग धुने हुये ऊन के समान।[4]
१०. और नहीं पूछेगा कोई मित्र किसी मित्र को।
११. (जब कि) वह उन्हें दिखाये जायेंगे। कामना करेगा पापी कि दण्ड के रूप में दे दे उस दिन की यातना के अपने पुत्रों को।
१२. तथा अपनी पत्नी और अपने भाई को।
१३. तथा अपने समीपवर्ती परिवार को जो उसे शरण देता था।
१४. और जो धरती में है सभी[5] काग फिर वह उसे यातना से बचा दे।
१५. कदापि (ऐसा) नहीं होगा।
१६. वह अग्नि की ज्वाला होगी।
१७. खाल उधेड़ने वाली।

---

[1] कहा जाता है कि नज़र पुत्र हारिस अथवा अबू जहल ने यह माँग की थी, कि (हे अल्लाह यदि यह सत्य है तेरी ओर से तो हम पर आकाश से पत्थर बरसा दे)। (देखिये : सूरह अन्फ़ाल, आयत : ३२)

[2] रूह से अभिप्राय जिबरील (अ.स.) है।

[3] अर्थात संसार में सत्य को स्वीकार करने से।

[4] देखिये : सूरह कारिआ।

[5] हदीस में है कि जिस नारकी को सब से सरल यातना दी जायेगी, उस से अल्लाह कहेगा: क्या धरती का सब कुछ तुम्हें मिल जाये तो उसे इस के दण्ड में दे दोगे? वह कहेगा: हाँ। अल्लाह कहेगा: तुम आदम की पींठ में थे, तो मैंने तुम से इस से सरल की माँग की थी कि मेरा किसी को साझी न बनाना तो तुम ने इन्कार किया और शिर्क किया। (सहीह बुख़ारी : ६५५७, सहीह मुस्लिम : २८०५)

१८. वह पुकारेगी उसे जिस ने पीछा दिखाया[1] तथा मुँह फेरा।
१९. तथा (धन) एकत्र किया फिर सौंत कर रखा।
२०. वास्तव में मनुष्य अत्यंत कच्चे दिल का पैदा किया गया है।
२१. जब उसे पहुँचता है दुःख तो उद्विग्न हो जाता है।
२२. और जब उसे धन मिलता है तो कंजूसी करने लगता है।
२३. परन्तु जो नमाज़ी हैं।
२४. जो अपनी नमाज़ का सदा पालन[2] करते हैं।
२५. और जिन के धनों में निश्चित भाग है याचक (माँगने वाला), तथा वंचित[3] का।
२६. तथा जो सत्य मानते है प्रतिकार (प्रलय) के दिन को।
२७. तथा जो अपने पालनहार की यातना से डरते हैं।
२८. वास्तव में आप के पालनहार की यातना निर्भय रहने योग्य नहीं है।
२९. तथा जो अपने गुप्तांगों की रक्षा करने वाले हैं।
३०. सिवाये अपनी पत्नियों और अपने स्वामित्व में आई दासियों[4] के तो वही निन्दित नहीं है।
३१. और जो चाहे इस के अतिरिक्त तो वही सीमा का उल्लंघन करते वाले हैं।
३२. और जो अपनी अमानतों तथा अपने वचन का पालन करते हैं।
३३. और जो अपने साक्ष्यों (गवाहियों) पर स्थित रहने वाले हैं।
३४. तथा जो अपनी नमाजों की रक्षा करते हैं।
३५. वही स्वर्गो में सम्मानित होंगे।
३६. तो क्या हो गया है उन काफ़िरों को कि आप की ओर दौड़े चले आ रहे हैं।
३७. दायें तथा बायें से समूहों में हो[1] कर।

---

[1] अर्थात सत्य से।

[2] अर्थात बड़ी पाबंदी से नमाज़ पढ़ते हों।

[3] अर्थात जो न माँगने के कारण वंचित रह जाता है।

[4] इस्लाम में उसी दासी से संभोग उचित है जिसे सेना–पति ने ग़नीमत (परिहार) के दूसरे धनों के समान किसी मुजाहिद के स्वामित्व में दे दिया हो। इस से पूर्व किसी बंदी स्त्री से संभोग पाप तथा व्यभिचार है। और उस से संभोग भी उस समय वैध है जब उसे एक बार मासिक धर्म आ जाये। अथवा गर्भवती हो तो प्रसव के पश्चात् ही संभोग किया जा सकता है। इसी प्रकार जिस के स्वामित्व में आई हो उस के सिवा और कोई उस से संभोग नहीं कर सकता।

३८. क्या उन में से प्रत्येक व्यक्ति लोभ (लालच) रखता है कि उसे प्रवेश दे दिया जायेगा सुख के स्वर्गों में?

३९. कदापि ऐसा न होगा, हम ने उन की उत्पत्ति उस चीज़ से की है जिसे वे[२] जानते हैं।

४०. तो मैं शपथ लेता हूँ पूर्वों (सूर्योदय के स्थानों) तथा पश्चिमों (सूर्यास्त के स्थानों) की, वास्तव में हम अवश्य सामर्थ्यवान हैं।

४१. इस बात पर कि बदल दें उन से उत्तम (उत्पत्ति) को तथा हम विवश नहीं है।

४२. अत: आप उन्हें झगड़ते तथा खेलते छोड़ दें यहाँ तक कि वह मिल जायें अपने उस दिन से जिस का उन्हें वचन दिया जा रहा है।

४३. जिस दिन वह निकलेंगे क़बरों (और समाधियों) से दौड़ते हुये जैसे वह अपनी मुर्तियों की ओर दौड़ रहे हों।[३]

४४. झुकी होंगी उन की आँखें, छाया होगा उन पर अपमान, यही वह दिन है जिस का वचन उन्हें दिया जा[४] रहा था।

*****

---

[१] अर्थात जब आप कुरआन सुनाते है तो उस का उपहास करने के समूहों में हो कर आ जाते हैं। और इन का दावा यह है कि स्वर्ग में जायेंगे।

[२] अर्थात हीन जल (वीर्य) से। फिर भी घमंड करते हैं। तथा अल्लाह और उस के रसूल को नहीं मानते।

[३] या उन के थानों की ओर। क्योंकि संसार में वे सूर्योदय के समय बड़ी तीव्रगति से अपनी मुर्तियों की ओर दौड़ते थे।

[४] अर्थात रसूलों तथा धर्मशास्त्रों के माध्य से।



सूरह नूह – ७१



सूरह नूह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में २८ आयतें हैं।

– इस में नूह (अलैहिस्सलाम) के उपदेश का पूरा वर्णन है जिस से इस का नाम सूरह नूह है। और इस में उन की कथा का वर्णन ऐसे किया गया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विरोधी चौक जायें।

– इस में अल्लाह से नूह (अलैहिस्सलाम) की गुहार को प्रस्तुत किया गया है।और आयत २५ में उस यातना की चर्चा है जो उन की जाति पर आई थी।

– अन्त में नूह (अलैहिस्सलाम) की उस प्रार्थना का वर्णन है जो उन्होंने इस यातना के समय की थी जो उन की जाति पर आई।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. नि:संदेह हम ने भेजा नूह को उस की जाति की ओर, कि सावधान कर अपनी जाति को इस से पूर्व कि आये उन के पास दु:खदायी यातना।
२. उस ने कहा: हे मेरी जाति! वास्तव में मैं खुला सावधान करने वाला हूँ तुम्हें।
३. कि इबादत (वंदना) करो अल्लाह की तथा डरो उस से और बात मानो मेरी।
४. वह क्षमा कर देगा तुम्हारे लिये तुम्हारे पापों को, तथा अवसर देगा तुम्हें निर्धारित समय[१] तक। वास्तव में जब अल्लाह का निर्धारित समय आ जायेगा तो उस में देर न होगी। काश तुम जानते।
५. नूह ने कहा: मेरे पालनहार! मैंने बुलाया अपनी जाति को (तेरी ओर) रात और दिन।
६. तो मेरे बुलावे ने उन के भागने ही को अधिक किया।
७. और मैंने जब–जब उन्हें बुलाया तो उन्होंने दे लीं अपनी ऊँगलियाँ अपने कानों में, तथा ओढ़ लिये अपने कपड़े[२] तथा अड़े रह गये और बड़ा घमंड किया।
८. फिर मैंने उन्हें उच्च स्वर से बुलाया।
९. फिर मैंने उन से खुलकर कहा और उन से धीरे–धीरे (भी) कहा।
१०. मैंने कहा: क्षमा माँगो अपने पालनहार से, वास्तव में वह बड़ा क्षमाशील है।
११. वह वर्षा करेगा आकाश से तुम पर धाराप्रवाह वर्षा।
१२. तथा अधिक देगा तुम्हें पुत्र तथा धन और बना देगा तुम्हारे लिये बाग़ तथा नहरें।
१३. क्या हो गया है तुम्हें कि नहीं डरते हो अल्लाह की महिमा से?
१४. जब कि उस ने पैदा किया है तुम्हें विभिन्न प्रकार[३] से।
१५. क्या तुम ने नहीं देखा कि कैसे पैदा किये हैं अल्लाह ने सात आकाश ऊपर–तले?
१६. और बनाया है चन्द्रमा को उन में प्रकाश, और बनाया है सूर्य को प्रदीप।
१७. और अल्लाह ही ने उगाया है तुम्हें धरती[४] से अद्भुत रूप से।

---

[१] अर्थात तुम्हारी निश्चित आयु तक।
[२] ताकि मेरी बात न सुन सकें।
[३] अर्थात वीर्य से, फिर रक्त से, फिर माँस और हड्डियों से।
[४] अर्थात तुम्हारे मूल आदम (अलैहिस्सलाम) को।

१८. फिर वह वापिस ले जायेगा तुम्हें उस में और निकालेगा तुम को उस से।
१९. और अल्लाह ने बनाया है तुम्हारे लिये धरती को बिस्तर।
२०. ताकि तुम चलो उस की खुली राहों में।
२१. नूह ने निवेदन किया: मेरे पालनहार! उन्होंने मेरी अवैज्ञा की, और अनुसरण किया उस का[1] जिस से धन और संतान ने उस की क्षति ही को बढ़ाया।
२२. और उन्होंने बड़ी चाल चली।
२३. और उन्होंने कहा: तुम कदापि न छोड़ना अपने पूज्यों को, और कदापि न छोड़ना वद्द को न सुवाअ को और न यगूस को और यऊक़ को तथा न नस्र[2] को।
२४. और कुपथ (गुमराह) कर दिया है उन्होंने बहुतों को, और अधिक कर दे तू (भी) अत्याचारियों के कुपथ[3] (कुमार्ग) को।
२५. वह अपने पापों के कारण डुबो[4] दिये गये फिर पहुँचा दिये गये नरक में। और नहीं पाया उन्होंने अपने लिये अल्लाह के मुक़ाबिले में कोई सहायक।
२६. तथा कहा नूह ने: मेरे पालनहार! न छोड़ धरती पर काफ़िरों का कोई घराना।
२७. (क्यों कि) यदि तू उन्हें छोड़ेगा तो वह कुपथ करंगे तेरे भक्तों को, और नहीं जन्म देंगे परन्तु दुष्कर्मी बड़े काफ़िर को।
२८. मेरे पालनहार! क्षमा कर दे मुझ को तथा मेरे माता–पिता को और उसे जो प्रवेश करे मेरे घर में ईमान ला कर, तथा ईमान वालों और ईमान वालियों को। तथा काफ़िरों के विनाश ही को अधिक कर।

*****

[1] अर्थात अपने प्रमुखों का।

[2] यह सभी नूह (अलैहिस्सलाम) की जाति के बुतों के नाम है। यह पाँच सदाचारी व्यक्ति थे जिन के मरने के पश्चात् शैतान ने उन्हें समझाया कि इन की मुर्तियाँ बना लो। जिस से तुम्हें इबादत की प्रेरणा मिलेगी। फिर कुछ युग व्यतीत होने के पश्चात् समझाया कि यही पूज्य है। और उन की पूजा अरब तक फैल गई।

[3] नूह (अलैहिस्सलाम) ने ९५० वर्ष तक उन्हें समझाया। (देखिये : सूरह अन्कबूत, आयत : १४) और जब नहीं माने तो यह निवेदन किया

[4] इस का संकेत नूह (अलैहिस्सलाम) के तूफान की ओर है। (देखिये : सूरह हूद, आयत: ४०, ४४)



सूरह जिन्न – ७२



सूरह जिन्न के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में २८ आयतें हैं।

– इस में जिन्नों की बातें बताई गई हैं। इसलिये इस का यह नाम है। जिन्होंने कुरआन सुना और उस के सच्च हेने की गवाही दी। फिर मक्का के मुश्रिकों को सावधान किया गया है।

– अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मुख से नबूवत के बारे में बातें उजागर की गई हैं। और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को न मानने पर नरक की यातना से सूचित किया गया है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. (हे नबी!) कहो: मेरी ओर वह्यी (प्रकाशना[१]) की गई है कि ध्यान से सुना जिन्नों के एक समूह ने। फिर कहा कि हम ने सुना है एक विचित्र कुरआन।

२. जो दिखाता है सीधी राह, तो हम ईमान लाये उस पर। और हम कदापि साझी नहीं बनायेंगे अपने पालनहार के साथ किसी को।

३. तथा निःसंदेह महान् है हमारे पालनहार की महिमा, नहीं बनाई है उस ने कोई संगीनी (पत्नी) और न कोई संतान।

४. तथा निश्चय हम अज्ञान में कह रहे थे अल्लाह के संबंध में झूठी बातें।

५. और यह कि हम ने समझा कि मनुष्य तथा जिन्न नहीं बोल सकते अल्लाह पर कोई झूठ बात।

६. और वास्तविक्ता यह है कि मनुष्य में से कुछ लोग शरण माँगते थे जिन्नों में से कुछ लेगों की तो उन्हों ने अधिक कर दिया उन के गर्व को।

७. और यह कि मनुष्यों ने भी वही समझा जो तुम ने अनुमान लगाया कि कभी अल्लाह फिर जीवित नहीं करेगा किसी को।

८. तथा हम ने स्पर्श किया आकाश को तो पाया कि भर दिया गया है प्रहरियों तथा उल्कावों से।

९. और यह कि हम बैठते थे उस (आकाश) में सुन गुन लेने को स्थानों में, और जो अब सुनने का प्रयास करेगा वह पायेगा अपने लिये एक उल्का घात में लगा हुआ।

१०. और यह कि हम नहीं समझ पाते कि क्या किसी बुराई का इरादा किया गया धरती वालों के साथ या इरादा किया है उन के साथ उन के पालनहार ने सीधी राह पर लाने का?

११. और हम में से कुछ सदाचारी है और हम में से कुछ इस के विपरीत हैं। हम विभिन्न प्रकारों में विभाजित हैं।

---

[१] सूरह अह्क़ाफ़ आयत: २९, में इस का वर्णन किया गया है। इस सूरह मेय यह बताया गया है कि जब जिन्नों ने कुरआन सुना तोआप ने न जिन्नों को देखा और न आप को उस का ज्ञान हुआ। बल्कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को वह्यी (प्रकाशना) द्वारा इस से सूचित किया गया।

१२. तथा हमें विश्वास हो गया है कि हम कदापि विवश नहीं कर सकते अल्लाह को धरती में और न विवश कर सकते हैं उसे भाग कर।

१३. तथा जब हम ने सुनी मार्गदर्शन की बात तो उस पर ईमान ले आये, अब जो भी ईमान लायेगा अपने पालनहार पर तो नहीं भय होगा उसे अधिकार हनन का और न किसी अत्याचार का।

१४. और यह कि हम में से कुछ मुस्लिम (आज्ञाकारी) है और कुछ अत्याचारी हैं। तो जो आज्ञाकारी हो गये तो उन्होंने खेज ली सीधी राह।

१५. तथा जो अत्याचारी है तो वह नरक का ईंधन हो गये।

१६. और यह कि यदि वह स्थित रहते सीधी राह (अर्थात इस्लाम) पर तो हम सींचते उन्हें भरपूर जल से।

१७. ताकि उन की परीक्षा लें इस में, और जो विमुख होगा अपने पालनहार की स्मरण (याद) से, तो उसे उस का पालनहार ग्रस्त करेगा कड़ी यातना में।

१८. और यह कि मस्जिदें[1] अल्लाह के लिये हैं। अत: मत पुकारों अल्लाह के साथ किसी को।

१९. और यह कि जब खड़ा हुआ अल्लाह का भक्त[2] उसे पुकारता हुआ तो समीप था कि वह लोग उस पर पिल पड़ते।

२०. आप कह दें कि मैं तो केवल अपने पालनहार को पुकारता हूँ। और साझी नहीं बनाता उस का किसी अन्य को।

२१. आप कह दें कि मैं अधिकार नहीं रखता तुम्हारे लिये किसी हानि का न सीधी राह पर लगा देने का।

२२. आप कह दें कि मुझे कदापि नहीं बचा सकेगा अल्लाह से कोइ[3] और न मैं पा सकूँगा उस के सिवा कोई शरणागार (बचने का स्थान)।

---

[1] मस्जिद का अर्थ सज्दा करने का स्थान है। भावार्थ यह है कि अल्लाह के सिवा किसी अन्य की इबादत तथा उस के सिवा किसी से प्रार्थना तथा विनय करना अवैध है।

[2] अल्लाह के भक्त से अभिप्राय मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) है। तथा भावार्थ यह है कि जिन्न तथा मनुष्य मिल कर कुरआन तथा इस्लाम की राह से रोकना चाहते हैं।

[3] अर्थात यदि मैं उस की अवैज्ञा करूँ और वह मुझे यातना देना चाहे।

२३. परन्तु पहुँचा सकता हूँ अल्लाह का आदेश तथा उस का उपदेश। और जो अवज्ञा करेगा अल्लाह तथा उस के रसूल की तो वास्तव में उसी के लिये नरक की अग्नि है जिस में वह नित्य सदावासी होगा।

२४. यहाँ तक कि जब देख लेंगे जिस का उन्हें वचन दिया जाता है तो उन्हें विश्वास हो जायेगा कि किस के सहायक निर्बल और कि की संख्या कम है।

२५. आप कह दें कि मैं नहीं जानता कि समीप है जिस का वचन तुम्हें दिया जा रहा है अथवा बनायेगा मेरा पालनहार उस के लिये कोई अवधि?

२६. वह ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञानी है अत: वह अवगत नहीं कराता है अपने परोक्ष पर किसी को।

२७. सिवाये रसूल के जिसे उस ने प्रिय बना लिया है फिर वह लगा देता है उस वह्यी के आगे तथा उस के पीछे रक्षक।[१]

२८. ताकि वह देख ले कि उन्होंने पहुँचा दिये हैं अपने पालनहार के उपदेश[२] के पास है और प्रत्येक वस्तु को गिन रखा हैं।



[१] अर्थात ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान तो अल्लाह ही को है। किन्तु यदि धर्म के विषय में कुछ परोक्ष की बातों की वह्यी अपने किसी रसूल की ओर करता है तो फ़रिश्तों द्वारा उस की रक्षा की व्यवस्था भी करता है ताकि उस में कुछ मिलाया न जा सके। रसूल को जितना ग़ैब का ज्ञान दिया जाता है वह इस आयत से उजागर हो जाता है। फिर भी कुछ लोग आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को पूरे ग़ैब का ज्ञानी मानते हैं । और आप को गुहारते और सब जगह उपस्थित कहते हैं। और तौहीद के आधात पहुँचा कर शिर्क करते हैं।

[२] अर्थात वह रसूलों की दशा को जानता है। उस ने प्रत्येक चीज़ को गिन रखा है ताकि रसूलों के उपदेश पहुँचाने में कोई कमी और अधिक्ता न हो। इसलिये लोगों को रसूलों की बातें मान लेनी चाहिये।

सूरह मुज़्ज़म्मिल – ७३

सूरह मुज़्ज़म्मिल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में २० आयतें हैं।

– इस सूरह के आरंभ में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को ''अल मुज़्ज़म्मिल'' (चादर ओढ़ने वाला) कह कर संबोधित किया गया है। जो इस सूरह का यह नाम रखे जाने का कारण है।

– इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को रात्री में नमाज़ पढ़ने का निर्देश दिया गया है। और इस का लाभ बताया गया है। और विरोधियों की बातों को सहन करने और उन के परिणाम को बताया गया है।

– मक्का के काफ़िरों को सावधान किया गया है कि जैसे फ़िरऔन की ओर हम ने रसूल भेजा वैसे ही तुम्हारी ओर रसूल भेजा है। तो उस का जो दुष्परिणाम हुआ उस से शिक्षा लो अन्यथा कुफ़्र कर के परलोक की यातना से कैसे बच सकोगे?

– और इस सूरह के अन्त में, रात्री में नमाज़ का जो आदेश दिया गया था, उसे सरल कर दिया गया। इसी प्रकार लस में फ़र्ज़ (अनिवार्य) नमाज़ों के पालन तथा ज़कात देने के आदेश दिये गये हैं।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. हे चादर ओढ़ने वाले।
२. खड़े रहो (नमाज़ में) रात्री के समय परन्तु कुछ[1] समय।
३. (अर्थात) आधी रात अथवा उस से कुछ कम।
४. या उस से कुछ अधिक, और पढ़ो कुरआन रु–रुक कर।
५. हम उतारेंगे (हे नबी!) आप पर एक भारी बात (कुरआन)।
६. वास्तव में रात में जो इबादत होती है अधिक प्रभावी है (मन को) एकाग्र करने में। तथा अधिक उचित है बात (प्रार्थना) के लिये।
७. आप के लिये दिन में बहुत से कार्य हैं।
८. और स्मरण (याद) करें अपने पालनहार के नाम की, और सब से अलग हो कर उसी के हो जायें।
९. वह पूर्व तथा पश्चिम का पालनहार है। नहीं है कोई पूज्य (वंदनीय) उस के सिवा, अतः उसी को अपना करता धरता बना लें।
१०. और सहन करें उन बातों को जो वे बना रहे हैं।[2] और अलग हो जायें उन से सुशीलता के साथ।
११. तथा छोड़ दें मुझे तथा झुठलाने वाले सुखी (सम्पन्न) लोगों को। और उन्हें अवसर दें कुछ देर।
१२. वस्तुतः हमारे पास (उनके लिये) बहुत सी बेड़ियाँ तथा दहकती अग्नि है।
१३. और भोजन जो गले में फस जाये और दुःखदायी यातना है।
१४. जिस दिन काँपेगी धरती अैर पर्वत, तथा हो जायेंगे पर्वत भुरभुरी रेत के ढेर।
१५. हम ने भेजा है तुम्हारी ओर एक रसूल[3] तुम पर गवाह (साक्षी) बना कर जैसे भेजा फ़िरऔन की ओर एक रसूल (मूसा) को।

---

[1] हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) रात में इतनी नमाज़ पढ़ते थे कि आप के पैर सूज जाते थे। आप से कहा गया: ऐसा क्यों करते है? जब कि अल्लाह ने आप के पहले और पिछले गुनाह क्षमा कर दिये हैं? आप ने कहा: क्या मैं उस का कृतज्ञ भक्त न बनूँ? (बुख़ारी : ११३०, मुस्लिम : २८१९)

[2] अर्थात आप के तथा सत्धर्म के विरुद्ध।

[3] अर्थात मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को गवाह होने के अर्थ के लिये। (देखिये: सूरह बक़रा, आयत: १४३, तथा सूरह हज्ज, आयत : ७८) इस में चेतावनी है कि यदि तुम ने अवैज्ञा की तो तुम्हारी दशा भी फ़िरऔन जैसी होगी।

१६. तो अवैज्ञा की फ़िरऔन ने उस रसूल की और हम ने पकड़ लिया उस को कड़ी पकड़।
१७. तो कैसे बचोगे यदि कुफ़्र किया तुम ने उस दिन से जो बना देगा बच्चों को (शोक के कारण) बूढ़ा?
१८. आकाश फट जायेगा उस दिन। उस का वचन पूरा हो कर रहेगा।
१९. वास्तव में यह (आयतें) एक शिक्षा हैं। तो जो चाहे अपने पालनहार की ओर राह बना ले।[१]
२०. नि:संदेह आप का पालनहार जानता है कि आप खड़े होते हैं (तहज्जुद की नमाज़ के लिये) दो तिहाई रात्री के लग–भग, तथा आधी रात अैर तिहाई रात, तथा एक समूह उन लोगों का जो आप के साथ हैं और अल्लाह ही हिसाब रखता है रात तथा दिन का। वह जानता है कि तुम पूरी रात नमाज़ के लिये खड़े नहीं हो सकोगे। अत: उस ने दया कर दी तुम पर। तो पढ़ों जितना सरल हो कुरआन में से।[२] वह जानता है कि तुम में कुछ रोगी होंगे और कुछ दूसरे यात्रा करेंगे धरती में खोज करते हुये अल्लाह के अनुग्रह (जीविका) की, और कुछ दूसरे युद्ध करेंगे अल्लाह की राह में, अत: पढ़ो जितना सरल हो उस में से। तथा स्थापना करो नमाज़ की, और ज़कात देते रहो, और ऋण दो अल्लाह को अच्छा ऋण।[३] तथा जो भी आगे भेजोगे भलाई में से तो उसे अल्लाह के पास पाओगे। वही उत्तम और उस का बहुत बड़ा प्रतिफल होगा। और क्षमा माँगते रहो अल्लाह से, वास्तव में वह अति क्षमाशील दयावान् है।



[१] अर्थात इन आयतों का पालन कर के अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त कर लें।

[२] कुरआन पढ़ने से अभिप्राय तहज्जुद की नमाज़ है। और अर्थ यह है कि रात्री में जितनी नमाज़ हो सके पढ़ लो। हदीस में है कि भक्त अल्लाह के सब से समीप अन्तिम रात्री में होता है। तो तुम यदि हो सके कि उस समय अल्लाह को याद करो तो याद करो। (तिर्मिज़ी : ३५७९, यह हदीस सहीह है।

[३] अच्छे ऋण से अभिप्राय अपने उचित साधन से अर्जित किये हुये धन को अल्लाह की प्रसन्नता के लिये उस के मार्ग में ख़र्च करना है। इसी को अल्लाह अपने ऊपर ऋण करार देता है। जिस का बदला वह सात सौ गुना तक बल्कि उस से भी अधिक प्रदान करेगा। (देखिये : सूरह बक़रा, आयत : २६१)

सूरह मुद्दस्सिर – ७४

सूरह मुद्दस्सिर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ५६ आयतें हैं।

- इस में नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) को ''अल मुद्दस्सिर'' कह कर संबोधित किया गया है। अर्थात चादर ओढ़ने वाले। इस लिये इस को यह नाम दिया गया है। अर्थात चादर ओढ़ने वाले। इस लिये इस को यह नाम दिया गया है। और आप को सावधान करने का निर्देश देते हुये अच्छे स्वभाव तथा शुभकर्म की शिक्षा दी गई है।
- आयत ११ से ३१ तक कुरैश के प्रमुखों को जो इस्लीम का विरोध कर रहे थे नरक की यातना की धमकी दी गई है। तथा ३२ से ४८ तक परलोक के बारे में चेतावनी है।
- अन्त में कुरआन के शिक्षा होने को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि बात दिल में उतर जाये।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. हे चादर ओढ़ने वाले![1]
२. खड़े हो जाओ, फिर सावधान करो।
३. तथा अपने पालनहार की महिमा का वर्णन करो।
४. तथा अपने कपड़ों को पवित्र रखो।
५. और मलीनता को त्याग दो।
६. तथा उपकार न करो इसलिये कि उस के द्वारा अधिक लो।
७. और अपने पालनहार ही के लिये सहन करो।
८. फिर जब फूँका जायेगा नरसिंघा में।[2]
९. तो उस दिन अति भीषण दिन होगा।
१०. काफ़िरों पर सरल न होगा।
११. आप छोड़ दें मुझे और उसे जिस को मै ने पैदा किया अकेला।
१२. फिर दे दिया उसे अत्यधिक धन।
१३. और पुत्र उपस्थित रहने वाले।[3]
१४. और दिया मै ने उसे प्रत्येक प्रकार का संसाधन।
१५. फिर भी वह लोभ रखता है कि उसे और अधिक दूँ।
१६. कदापि नहीं। वह हमारी आयतों का विरोधी है।
१७. मै उसे चढ़ाऊँगा कड़ी चढ़ाई।[4]
१८. उस ने विचार किया और अनुमान लगाया।[1]

---

[1] नबी (सल्लाल्लाहू अलैहि व सल्लम) पर प्रथम वह्यी के पश्चात् कुछ दिनों तक वह्यी नही आई। फिर एक बार आप जा रहे थे कि आकाश से एक आवाज़ सुनी। ऊपर देखा तो वही फ़रिश्ता जो आप के पास (हिरा) गुफ़ा में आया था आकाश तथा धरती के बीच एक कुर्सी पर विराजमान था। जिस से आप डर गये। और धरती पर गिर गये। फिर घर ओय, और अपनी पत्नी से कहा: मुझे चादर ओढ़ा दो, मुझे चादर ओढ़ा दो। उस ने चादर ओढ़ा दी। और अल्लाह ने यह सूरह उतारी। फिर निरन्तर वह्यी आने लगी। (सहीह बुखारी : ४९२५, ४९२६, सहीह मुस्लिम: १६१) प्रथम वह्यी से आप (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) को नबी बनाया गया। और अब आप पर धमृ कें प्रचार का भार रख दिया गया। इन आयतों में आप के माध्यम से मुसलमानों को पतवत्र रहने के निर्देश दिये गये हैं।

[2] अर्थात प्रलय के दिन।

[3] जो उस की सेवा मं उपस्थित रहते है। कहा गया है कि इस से अभिप्राय वलीद पुत्र मुग़ीरा है जिस के दस पुत्र थे।

[4] अर्थात कड़ी यातना दूँगा। (इब्ने कसीर)

१९. वह मारा जाये! फिर उस ने कैसा अनुमान लगाया?
२०. फिर (उस पर अल्लाह की) मार! उस ने कैसा अनुमान लगाया?
२१. फिर पुन: विचार किया।
२२. फिर माथे पर बल दिया और मुँह बिदोरा।
२३. फिर (सत्य से) पीछे फिरा और घमंड किया।
२४. और बोला कि यह तो पहले से चला आ रहा एक जादू है।[२]
२५. यह तो बस मनुष्य का कथन है।[३]
२६. मै उसे शीघ्र ही नरक में झोंक दूँगा।
२७. और आप क्या जानें कि नरक क्या है।
२८. न शेष रखेगी, और न छोड़ेगी।
२९. वह खाल झुलसा देने वाली।
३०. नियुक्त है उन पर उन्नीस (रक्षक फ़रिश्ते)।
३१. और हम ने नरक के रक्षक फ़रिश्ते ही बनाये है। और उन की संख्या को काफ़िरो के लिये परीक्षा बना दियागया है। ताकि विश्वास कर लें अहले[४] किताब, और बढ़ जायें जो ईमान लाये है ईमान में। और संदेह न करें जो पुस्तक दिये गये हैं और ईमान वाले। और ताकि कहें वे जिन के दिलों में (द्विधा का) रोग है तथा काफ़िर[५] कि क्या तात्पर्य है अल्लाह का इस उदाहरण से? ऐसे ही कुपथ करता है अल्लाह जिस चाहता है, और संमार्ग दर्शाता है जिसे चाहता है। और नहीं जानता है आप के पालनहार की सेनाओं को उस के सिवा कोई और। तथा नहीं है यह (नरक की चर्चा) किन्तु मनुष्य की शिक्षा के लिये।

---

[१] कुरआन के संबन्ध में प्रश्न किया गया तो वह सोचने लगा कि कौन सी बात बनाये, और उस के बारे में क्या कहे? (इब्ने कसीर)

[२] अर्थात मुहम्मद (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यह किसी से सीख लिया है। कहा जाता है कि वलीद पुत्र मुग़ीरा ने अबू जह्ल से कहा था कि लोगों में कुरआन के जादू होने का प्रचार किया जाये।

[३] अर्थात अल्लाह की वाणी नहीं है।

[४] क्योंकि यहूदियों तथा ईसाईयों की पुस्तकों में भी नरक के अधिकारीयों की यही संख्या बताई गई है।

[५] जब कुरैश ने नरक के अधिकारियों की चर्चा सुनी तो अबू जह्ल ने कहा:हे कुरैश के समूह! क्या तुम में से दस–दस लोग, एक–एक फ़रिश्ते के लिये काफ़ी नही है? और एक व्यक्ति ने जिसे अपने बल पर बड़ा गर्व था कहा कि १७ को मै अकेला देख लूँगा। और तुम सब मिल कर दो को देख लेना। (इब्ने कसीर)

३२. ऐसी बात नहीं, शपथ है चाँद की!
३३. तथा रात्री की जब व्यतीत होने लगे!
३४. और प्रात: की जब प्रकाशित हो जाये!
३५. वास्तव में (नरक)[१] एक बहुत बड़ी चीज़ है।
३६. डराने के लिये लोगों को।
३७. उस के लिये तुम में से जो चाहे[२] आगे होना अथवा पीछे रहना।
३८. प्रत्येक प्राणी अपने कर्मोंके बदले मे बंधक है।[३]
३९. दाहिने वालों के सिवा।
४०. वह स्वर्गों में होंगे, वह प्रश्न करेंगे।
४१. अपराधियों से।
४२. तुम्हें क्या चीज़ ले गई नरक में।
४३. वह कहेंगे: हम नहीं थे नमाज़ियों में से।
४४. और नहीं भोजन कराते थे निर्धन को।
४५. तथा कुरेद करते थे कुरेद करने वालों के साथ।
४६. और हम झुठलाया करते थे प्रतिफल के दिन (प्रलय) को।
४७. यहाँ तक की हमारी मौत आ गई।
४८. तो उन्हें लाभ नहीं देगी सिफ़रिशियों (अभिस्तावको) की सिफ़ारिश।[४]
४९. तो उन्हें क्या हो गया है कि इस शिक्षा (कुरआन) से मुँह फेर रहे हैं?
५०. मानो वह (जंगली) गधे हैं बिदकाये हुये।
५१. जो शिकारी से भागे हैं।
५२. बल्कि चाहता है प्रत्येक व्यक्ति उन में से कि उसे खुली पुस्तक दी जाये।[५]

---

[१] अर्थात जैसे रात्री के पश्चात् दिन होता है उसी प्रकार कर्मों का भी परिणाम सामने आना है। और दुष्कर्मों का परिणाम नरक है।

[२] अर्थात आज्ञा पान द्वारा अग्रसर हो जायें, अथवा अवैज्ञा कर के पीछे रह जायें।

[३] यदि सत्कर्म किया तो मुक्त हो जायेगा।

[४] अर्थात नबियों और फ़रिश्तों इत्यादि की। किन्तु जिस से अल्लाह प्रसन्न हो और उस के लिये सिफ़ारिश की अनुमति दे।

[५] अर्थात वे चाहत हैं कि प्रत्येक के ऊपर वैसे ही पुस्तक उतारी जाये जैसे मुहम्मद (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर उतारी गई है। तब वे ईमान लायेंगे। (इब्ने कसीर)

५३. कदापि यह नहीं (हो सकता) बल्कि वह आखिरत (परलोक) से नहीं डरते हैं।

५४. निश्चय यह (कुरआन) तो एक शिक्षा है।

५५. अब जो चाहे शिक्षा ग्रहण करे।

५६. और वह शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकते, परन्तु यह कि अल्लाह चाह ले। वही योग्य है कि उस से डरा जाये और योग्य है कि क्षमा कर दे।

*****

सूरह क़ियामा–७५

सूरह क़ियामा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ४० आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में क़्यामत (प्रलय) की शपथ ली गई है जिस से इस का नाम ''सूरह क़ियामा'' है।
- इस में प्रलय के निश्चित होने का वर्णन करते हुये संदेहों को दूर किया गया है। और उस की कुछ स्थितियों को प्रस्तुत किया गया है।
- इस में नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) को वह्यी ग्रहण करने के विषय में कुछ निर्देश दिये गये हैं।
- आयत २० से २५ तक विरोधियों को मायामोह पर चेतावनी देते हुये, प्रलय के दिन सदाचारियों की सफलता तथा दुराचारियों की विफलता दिखाइ़ गई है।
- आयत २६ में मौत की दशा दिखाई गई है।
- आयत ३१ से ३५ तक प्रलय को न मानने वालों की निन्दा की गई है।
- अन्त में फिर जीवित किये जाने के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. मै शपथ लेता हूँ क़यामत (प्रलय) के दिन की![१]
२. तथा शपथ लेता हूँ निन्दा करने वाली अन्तरात्मा की।[२]
३. क्या मनुष्य समझता है कि हम एकत्र नहीं कर सकेंगे दोबारा उस की अस्थियों को?
४. क्यों नहीं? हम सामर्थ्यवान है इस बात पर कि सीधी कर दें उस की ऊंगलियों की पोर–पोर।
५. बल्कि मनुष्य चाहता है कि वह कुकर्म करता रहे अपने आगे भी।[३]
६. वह प्रश्न करता है कि कब आना है प्रलय का दिन?
७. तो जब चुंधिया जायेगी आँख।
८. और गहना जायेगा चाँद।
९. और एकत्र कर दिये जायेंगे सूर्य और चाँद।[४]
१०. कहेगा मनुष्य उस दिन कि कहाँ है भागने का स्थान?
११. कदापि नहीं, कोई शरणागार नहीं।
१२. तेरे पालनहार की ओर ही उस दिन जा कर रुकना है।
१३. सूचित कर दिया जायेगा मनुष्य को उस दिन उस से जो उस ने आगे भेजा, तथा जो पीछे छोड़ा।[५]
१४. बल्कि मनुष्य स्वयं अपने विरुद्ध एक खुला प्रमाण है।[६]
१५. चाहे वह कितने ही बहाने बनाये।
१६. हे नबी! आप न हिलायें अपनी जुबान, ताकि शीघ्र याद कर लें इस कुरआन को।[१] को।[१]

[१] किसी चीज़ की शपथ लेने का अर्थ होता है: उस का निश्चित् होना। अर्थात प्रलय का होना निश्चित् है।
[२] मनुष्य के अन्तरात्मा की यह विशेषता है कि वह बुराइ्र करने पर उस की निन्दा करती है।
[३] अर्थात वह प्रलय तथा हिसाब का इन्कार इसलिये है ताकि वह पूरी आयु कुकर्म करता रहे।
[४] और एकत्र कर दिये जायेंगे सूर्य और चाँद।
[५] अर्थात संसार में जो कर्म किया। और जो करना चाहिये था फिर भी नही किया।
[६] अर्थात वह अपने अपराधों को स्वयं भी जानता है क्योंकि पापी का मन स्वयं अपने पाप की गवाही देता है।

१७. निश्चय हम पर है उसे याद कराना और उस को पढ़ाना।
१८. अत: जब हम उसे पढ़ लें तो आप उस के पीछे पढ़ें।
१९. फिर हमारे ही ऊपर है उस का अर्थ बताना।
२०. कदापि नहीं, बल्कि तुम प्रेम करते हो शीघ्र प्राप्त होने वाली चीज़ (संसार) से।[२]
२१. और छोड़ देते हो परलोक को।
२२. बहुत से मुख उस दिन प्रफुल्ल होंगे।
२३. अपने पालनहार की ओर देख रहे होंगे।
२४. और बहुत से मुख उदास होंगे।
२५. वह समझ रहें होंगे कि उन के साथ कड़ा व्यवहार किया जायेगा।
२६. कदापि नहीं, जब पहुँचेगी प्राण हंसलियों (गलों) तक।[३]
२७. और कहा जायेगा: कौन झाड़–फूँक करने वाला है?
२८. और विश्वास हो जायेगा कि यह (संसार से) जुदाई का समय है।
२९. और मिल जायेगी पिंडली–पिंडली से।[४]
३०. तेरे पालनहार की ओर उसी दिन जाना है।
३१. तो न उस ने सत्य को माना और न नमाज़ पढ़ी।
३२. किन्तु झुठलाया और मुँह फेर लिया।
३३. फिर गया अपने परिजनों की ओर अकड़ता हुआ।
३४. शोक है तेरे लिये, फिर शोक है।
३५. फिर शोक है तरे लिये, फिर शोक है।
३६. फिर मनुष्य समझता है कि वह छोड़ दिया जायेगा वयर्थ?[५]
३७. क्या वह नहीं था वीर्य की बूंद जो (गर्भाश्य में) बूंद–बूंद गिराइ जाती है?

---

[१] हदीस में है कि आप (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) फ़रिश्ते जिब्रील से वह्यी पूरी होने से पहले इस भय से उसे दुहराने लगते कि कुछ भूल न जायें। उसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी : ४९२८, ४९२९) इसी विषय को सूरह ताहा तथा सूरह आला में भी दुहराया गया है।

[२] यहाँ से बात फिर काफ़िरों की ओर फिर रही है।

[३] अर्थात यह विचार सहीह नही कि मौत के पश्चात् सड़–गल जायेंगे और दोबारा जीवित नही किये जायेंगे। क्योंकि आत्मा रह जाती है जो मोत के साथ ही अपनी पालनहार की और चली जाती है।

[४] अर्थात मौत का समय आ जायेगा जो निरन्तर दुःख का समय होगा। (इब्ने कसीर)

[५] अर्थात न उसे किसी बात का आदेश दिया जायेगा और न रोका जायेगा और न उस से कर्मों का हिसाब लिया जायेगा।

३८. फिर वह बंधा रक्त हुआ, फिर अल्लाह ने उसे पैदा किया और उसे बराबर बनाया।

३९. फिर उस का जोड़ा: नर और नारी बनाया।

४०. तो क्या वह सामर्थ्यवान नहीं कि मुर्दों को जीवित करे दे?

*****

सूरह दहर – ७६

सूरह दहर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ३१ आयतें हैं।

- इस सूरह में यह शब्द आने के कारण इस का नाम ''सूरह दहर'' है। इस का दूसरा नाम ''सूरह इन्सान'' भी है। दहर का अर्थः (युग) है।
- इस में मनुष्य की उत्पत्ति का उद्देश्य बताया गया है। और काफ़िरों के लिये कड़ी यातना का एलान किया गया है।
- आयत ५ से २२ तक सदाचारियों के भारी प्रतिफल का वर्णन है। और २३ से २६ तक नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) को धैर्य, नमाज़ तथा तस्बीह का निर्देश दिया गया है। इस के पश्चात् उन को चेतावनी दी गई है जो परलोक से अचेत हो कर मायामोह में लिप्त हैं।
- अन्त में कुरआन की शिक्षा मान लेने की प्रेरणा दी गई है। ताकि लोग अल्लाह की दया में प्रवेश करें। और विरोधियों को दुःखदायी यातना की चेतावनी दी गई है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. क्या व्यतीत हुआ है मनुष्य पर युग का एक समय जब वह कोई विचर्चित वस्तु न था?[१]

२. हम ने ही पैदा किया मनुष्य को मिश्रित (मिले हुये) वीर्य से, ताकि उस की परीक्षा लें। और बनाया उसे सुनने तथा देखने वाला।[२]

३. हम ने उसे राह दर्शा दी। (अब) वह चाहे तो कृतज्ञ बने अथवा कृतघ्न।[३]

४. नि:संदेह हम ने तय्यार की है काफ़िरों (कृतघ्नों) के लिये ज़ंजीर तथा तौक़ और दहकती अग्नि।

५. निश्चय सदाचारी (कृतज्ञ) पियेंगे ऐसे प्याले से जिस में कपूर मिश्रित होगा।

६. यह एक स्रोत होगा जिस से अल्लाह के भक्त पियेंगे। उसे बहा ले जायेंगे (जहाँ चाहेंगे)।[४]

७. जो (संसार में) पूरी करते रहे मनौतियाँ और डरते रहे उस दिन से जिस की आपदा चारों ओर फैली हुयी होगी।[५]

८. और भोजन कराते रहे उस (भोजन) को प्रेम करने के बावजूद, निर्धन तथा अनाथ और बंदी को।

९. (अपने मन में यह सोच कर) हम तुम्हें भोजन कराते हैं केवल अल्लाह की प्रसन्नता के लिये। तुम से नहीं चाहते हैं कोई बदला ओर न कोई कृतज्ञता।

१०. हम डरते है अपने पालनहार से, उस दिन से जो अति भीषण तथा घोर होगा।

११. तो बचा लिया अल्लाह ने उन्हें उस दिन की आपदा से और प्रदान कर दिया प्रफुल्लता तथा प्रसन्नता।

१२. और उन्हें प्रतिफल दिया उन के धैर्य के बदले स्वर्ग तथा रेशमी वस्त्र।

१३. वह तकिये लगाये उस में तख़्तों पर बैठे होंगे। न उस में धूप देखेंगे न कड़ा शीत।

---

[१] अर्थात उस का कोई अस्तित्व न था।

[२] अर्थात नर–नारी के मिश्रित वीर्य से।

[३] अर्थात नबियों तथा आकाशीय पुस्तकों द्वारा, और दोनों का परिणाम बता दिया गया।

[४] अर्थात उस को जिधर चाहेंगे मोड़ ले जायेंगे। जैसे: घर, बैठक आदि।

[५] अर्थात प्रलय और हिसाब के दिन से।

१४. और झुके होंगे उन पर उस (स्वर्ग) के साये। और बस में किये होंगे उस के फलों के गुच्छे पूर्णत:।
१५. तथा फिराये जायेंगे उन पर चाँदी के बर्तन तथा प्याले जो शीशें के होंगे।
१६. चाँदी के शीशों के जो एक अनुमान से भरेंगे।[१]
१७. और पिलाये जायेंगे उस में ऐसे भरे प्याले जिस में सोंठ मिली होगी।
१८. यह एक स्रोत है उस (स्वर्ग) में जिस का नाम सलसबील है।
१९. और (सेवा के लिये) फिर रहे होंगे उन पर सदावासी बालक, जब तुम उन्हें देखोगे तो उन्हें समझोगे कि विखरे हुये मोती हैं।
२०. तथा जब तुम वहाँ देखोगे तो देखोगे बड़ा सुख तथा भारी राज्य।
२१. उन के ऊपर रेशमी हरे महीन तथा दबीज़ वस्त्र होंगे। और पहनाये जायेंगे उन्हें चाँदी के कंगन, और पिलायेगा उन्हें उन का पालनहार पवित्र पेय।
२२. (तथा कहा जायेगा): यही है तुम्हारे लिये प्रतिफल और तुम्हारे प्रयास का आदर किया गया।
२३. वास्तव में हम ने ही उतारा है आप पर कुरआन थोड़ा – थोड़ा कर के।[२]
२४. अत: आप धैयृ से काम लें अपने पालनहार के आदेशानुसर और बात न माने उन में से किसी पापी तथा कृतघ्न की।
२५. तथा स्मरण करें अपने पालनहार के नाम का प्रात: तथा संध्या (के समय)।
२६. तथा रात्री में सज्दा करें उस के समक्ष और उस की पवित्रता का वर्णन करें रात्री के लम्बे समय तक।
२७. वास्तव में यह लोग मोह रखते हैं संसार से, और छोड़ रहे हैं अपने पीछे एक भारी दिन को।[३]
२८. हम ने ही उन्हें पैदा किया है और सुदृढ़ किये है उन के जोड़–बंद। तथा जब हम चाहें बदला दें उन के जैसे (दूसरों के)।[४]

---

[१] अर्थात सेवक उसे ऐसे अनुमान से भरेंगे कि न आवश्यक्ता से कम होंगे और न अधिक।
[२] अर्थात नबूवत की तेईस वर्ष की अवधि में, और ऐसा क्यों किया गया इस के लिये देखिये: सूरह बनी इस्राईल, आयत : १०६।
[३] इस से अभिप्राय प्रलय का दिन है।
[४] अर्थात इन का विनाश कर के इन के स्थान पर दूसरों को पैदा कर दे।

२९. निश्चय यह (सूरह) एक शिक्षा है। अत: जो चाहे अपने पालनहार की ओर (जाने की) राह बना ले।

३०. और तुम अल्लाह की इच्छा के बिना कुछ भी नहीं चाह सकते।[1] वस्तव में अल्लाह सब चीज़ों और गुणों को जानने वाला है।

३१. वह प्रवेश देता है जिसे चाहे अपनी दया में। और अत्याचारियों के लिये उस ने तय्यार की है दु:खदायी यातना।

*****

[1] अर्थात कोई इस बात पर समर्थ नही कि जो चाहे कर ले। जो भलाइ़ चाहता हो तो अल्लाह उसे भलाई की राह दिखा देता है।

सूरह मुर्सलात – ७७

सूरह मुर्सलात के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ५० आयतें हैं।

– इस की आयत १ में ''मुर्सलात'' (हवाओं) की शपथ ली गई है। इसलिये इस का नाम सूरह मुर्सलात है। इस में इक्कड़ के प्रलय के समर्थन में प्रस्तुत किया गया है। फिर प्रलय का भ्याव: चित्र दिखाया गया है।

– आयत १६ से २८ तक प्रतिफल के दिन के होने के प्रमाण प्रस्तुत करते हुये उस पर सोच–विचार का आमंत्रण दिया गया है।

– इस में क़यामत के झुठलाने वालों को उस दिन जिस दुर्दशा का सामना होगा उस का चित्रण किया गया है। और आयत ४१ से ४४ तक सदाचारियों के सुफल का चित्रण किया गया है।

– अन्त में झुठलाने वालों की अपराधिक नीति पर कड़ी चेतावनी दी गई है।

– अब्दुल्लाह बिन मसूऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि हम मिना की वादी में थे। और सूरह मुर्सलात उतरी। आप (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) उसे पढ़ रहे थे और हम उसे आप से सीख रहे थे। (सहीह बुखारी: ४९३०, ४९३१)

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. शपथ है भेजी हुई निरन्तर धीमी वायुओं की!
२. फिर झक्कड़ वाली हवाओं की!
३. और बादलों को फैलाने वालियों की![१]
४. फिर अन्तर करने वालों की।[२]
५. फिर पहुँचाने वालों की वह्यी (प्रकाशना) को![३]
६. क्षमा के लिये अथवा चेतावनी के लिये![४]
७. निश्चय जिस का वचन तुम्हें दिया जा रहा है वह अवश्य आनी है।
८. फिर जब तारे धुमिल हो जायेंगे।
९. तथा जब आकाश खोल दिया जायेगा।
१०. तथा जब पर्वत चूर-चूर कर के उड़ा दिये जायेंगे।
११. और जब रसूलों का एक समय निर्धारित किया जायेगा।[५]
१२. किस दिन के लिये इस को निलम्बित रखा गया है?
१३. निर्णय के दिन के लिये।
१४. आप क्या जानें कि क्या है वह निर्णय का दिन?
१५. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।
१६. क्या हम ने विनाश नहीं कर दिया (अवैज्ञा के कारण) अगली जातियों का?
१७. फिर पीछे लगा देंगे उन के पिछलों को।[६]
१८. इसी प्रकार हम करते हैं अपराधियों के साथ।
१९. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।
२०. क्या हम ने पैदा नहीं किया है तुम्हें तुच्छ जल (वीर्य) से?
२१. फिर हम ने रख दिया उसे एक सुदृढ़ स्थान (गर्भाशय) में।

---

[१] अर्थात जो हवायें अल्लाह के आदेशानुसार बादलों को फैलाती हैं।
[२] अर्थात सत्योसत्य तथा वैध और अवैध के बीच अन्तर करने के लिये आदेश लाते हैं।
[३] अर्थात जो वह्यी (प्रकाशना) ग्रहण कर के उसे रसूलों तक पहुँचाते हैं।
[४] अर्थात ईमान लाने वालों के लिये क्षमा का वचन तथा काफ़िरों के लिये यातना की सूचना लाते हैं।
[५] उन के तथा उन के समुदायों के बीच निर्णय करने के लिये। और रसूल गवाही देंगे।
[६] अर्थात उन्ही के समान यातना-ग्रस्त कर देंगे।

२२. एक निश्चित अवधि तक।[१]
२३. तो हम ने सामर्थ्य रखा, अतः हम अच्छा सामर्थ्य रखने वाले हैं।[२]
२४. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिय!
२५. क्या हम ने नहीं बनाया धरती को समेट कर रखने वाली।[३]
२६. जीवित तथा मुर्दों को।
२७. तथा बना दिये हम ने उस में बहुत से ऊँचे पर्वत। और पिलाया हम ने तुम्हें मीठा जल।
२८. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।
२९. (कहा जायेगा) : चलो उस (नरक) की ओर जिसे तुम झुठलाते रहे।
३०. चलो ऐसी छाया की ओर जो तीन शाखाओं वाली है।[४]
३१. जो न छाया देगी और न ज्वला से बचायेगी।
३२. वह (अग्नि) फेंकती होगी चिंगारियाँ भवन के समान।
३३. जैसे वह पीले ऊँट हों।
३४. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये!
३५. यह वह दिन है कि वह बोल नहीं सकेंगे।[५]
३६. और न उन्हें अनुमति दी जायेगी कि वह बहाने बना सकें।
३७. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये!
३८. यह निर्णय का दिन है, हम ने एकत्र कर लिया है तुम को तथा पूर्व के लोगों को।
३९. तो यदि तुम्हारे पास कोई चाल हो तो चल लो?[६]
४०. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये!
४१. निःसंदेह आज्ञाकारी उस दिन छाँव तथा जल स्रोतों में होंगे।
४२. तथा मन चाहे फलों में।

---

[१] अर्थात गर्भ की अवधि तक।
[२] अर्थात उसे पैदा करने पर।
[३] अर्थात जब तक लोग जीवित रहते हैं तो उस के ऊपर रहते तथा बस्ते हैं। और मरण के पश्चात् उसी में चले जाते हैं।
[४] छाया से अभिप्रायः नरक के धुवें की छाया है। जो तीन दिशाओं में फैला होगा।
[५] अर्थात उन के विरुद्ध ऐसे तर्क प्रस्तुत कर दिये जायेंगे कि वह अवाक रह जायेंगे।
[६] अर्थात मेरी पकड़ से बचने की।

४३. खाओं तथा पिओ मनमानी उन कर्मों के बदले जो तुम करते रहे।

४४. हम इसी प्रकार प्रतिफल देते हैं।

४५. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये!

४६. (हे झुठलाने वालो!) तुम खा लो तथा आनन्द ले लो कुछ दिन। वास्तव में तुम अपराधी हो।[१]

४७. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये!

४८. जब उन से कहा जाता है कि (अल्लाह के समक्ष) झुको तो झुकते नहीं।

४९. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये!

५०. तो (अब) वह किस बात पर इस (कुरआन) के पश्चात् ईमान लायेंगे?[२]

*****

[१] अर्थात संसारिक जीवन में।

[२] अर्थात जब अल्लाह की अन्तिम पुस्तक पर ईमान नही लाते तो फिर कोई दूसरी पुस्तक नहीं हो सकती जिस पर वह ईमान लायें। इसलिये कि अब कोई और पुस्तक आसमान से आने वाली नहीं है।



सूरह नबा – ७८



सूरह नबा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ४० आयते हैं।

- इस सूरह का नाम ''नबा'' है जिस का अर्थ है: महत्व पूर्ण सूचना। जिस से अभिप्राय प्रलय तथा फिर से जीवित किये जाने की सूचना है।[1]
- इस की आयत १ से ५ तक में उन को चेतावनी दी गई है जो क़्यामत का उपहास करते हैं कि वह समय दूर नहीं जब वह आ जायेगी और वह अल्लाह के सामने उपस्थित होंगे।
- आयत ६ से १६ तक में अल्लाह की शक्ति की निशानियाँ बताई गई हैं। जो मरण के पश्चात् जीवन के होने का प्रमाण है और गवाही देती है। कि प्रतिफल का दिन अनिवार्य है।
- आयत १७ से २० तक में बताया गया है कि प्रतिफल का दिन निश्चित समय पर होगा। उस दिन आकाश तथा धरती की व्यवस्था में भारी परिवतृन हो जायेगा और सब मनुष्य अल्लाह के न्यायालय की ओर चल पड़ेंगे।

---

[1] इस सूरह में प्रलय (क़्यामत) तथा परलोक (आखिरत) के विश्वास पर बल दिया गया है। तथा इन पर विश्वास करने और न करने का परिणाम बताया गया है। मक्का के वासी इस की हँसी उड़ाते थे। कोई कहता कि यह हो ही नही सकता। किसी को संदेह था। किसी का विचार था कि यदि ऐसा हुआ तो भी हमारे देवी देवता हमारी अभिस्तावना कर देंगे, जैसा कि आगामी आयतों से विद्धित होता है।

''भारी सूचना'' का अर्थ: कुरआन द्वारा दी गई प्रलय और परलोक की सूचना है। प्रलय और परलोक पर विश्वास सत्य धर्म की मूल आस्था है। यदि प्रलय और परलोक पर विश्वास न हो तो धर्म का कोई महत्व नही रह जाता। क्योंकि जब कर्म का कोई फल ही न हो, और न कोई न्याय और प्रतिकार का दिन हो तो फिर सभी अपने स्वार्थ के लिये मनमानी करने के लिये आज़ाद होंगे, और अत्याचार तथा अन्याय के कारण पूरा मानव संसार नरक बन जायेगा।

इन प्रश्नात्मक वाक्यों में प्रकृति द्वारा मानव जाति के प्रतिपालन जीवन रक्षा और सुख सुविधा की जिस व्यवस्था की चर्चा की गई है उस पर विचार किया जाये तो इस का उत्तर यही होगा कि यह व्यवस्थापक के बिना नही हो सकती। और पूरी प्रकृति एक निर्धारित नियमानुसार काम कर रही है। तो जिस के लिये यह सब हो रहा है उस का भी कोई स्वभाविक कर्तव्य अवश्य होगा जिस की पूछ होगी। जिस के लिये न्याय और प्रतिकार का दिन होना चाहिये जिस में सब को न्याय पूर्वक प्रतिकार दिया जाये। और जिस शक्ति ने यह सारी व्यवस्था की है उस दिन को निर्धारित करना भी उसी का काम है।

- आयत २१ से ३६ तक में दुराचारियों के दुष्परिणाम तथा सदाचारियों के शुभपरिणाम को बताया है।
- अन्तिम ३ आयतों में अल्लाह के न्यायालय में उपस्थिति का चित्र दिखाया गया है और यह बताया गया है कि सिफ़ारिश के बल पर कोई जवाबदेही से नहीं बच सकेंगा।

और जब उन्हें (मुमिनों को) देखते तो कहते थे: यही भटके हुये लोग हैं।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. वे आपस में किस विषय में प्रश्न कर रहे है?
२. बहुत बड़ी सूचना के विषय में।
३. जिस में मतभेद कर रहे हैं।
४. निश्चय वे जान लेंगे।
५. फिर निश्चय वे जान लेंगे।[१]
६. क्या हम ने धरती को पालना नहीं बनाया?
७. और पर्वतों को मेख?
८. तथा तुम्हें जोड़े जोड़े पैदा किया।
९. तथा तुम्हारी निद्रा को स्थिरता (आराम) बनाया।
१०. और रात को वस्त्र बनाया।
११. और दिन को कमाने के लिये बनाया।
१२. तथा हम ने तुम्हारे ऊपर सात दृढ़ आकाश बनाये।
१३. और एक दमकता दीप (सूर्य) बनाया।
१४. और बादलों से मूसलाधार वर्षा की।
१५. ताकि उस से अन्न और वनस्पति उपजायें।
१६. और घने घने बाग़।[२]
१७. निश्चय निर्णय (फ़ैसले) का दनि निश्चित है।
१८. जिस दिन सूर में फूँका जायेगा। फिर तुम दलों ही दलों में चले आओगे।
१९. और आकाश खोल दिया जायेगा तो उसमें द्वारा ही द्वार हो जायेंगे।
२०. और पर्वत चला दिये जायेंगे तो वे मरीचिका बन जायेंगे।[१]

---

[१] (१–५) इन आयतों में उन को धिक्कारा गया है, जो प्रलय की हँसी उड़ाते हैं। जैसे उन के लिये प्रलय की सूचना किसी गंभीर चिन्ता के योग्य नहीं। परन्तु वह दिन दूर नही जब प्रलय उन के आगे आ जायेगी और वे विश्व विधाता के सामने उत्तरदायित्त के लिये उपस्थित होंगे।

[२] (६–१६) इन आयतों में अल्लाह की शक्ति प्रतिपालन (रुबूबिय्यत) और प्रज्ञा के लक्षण दर्शाये गये है जो यह साक्ष्य देते हैं कि प्रतिकार (बदले) का दिन आवश्यक है, क्योंकि जिस के लिये इतनी बड़ी व्यवस्था की गई हो और उसे कर्मों के अधिकार भी दिये गये हों तो उस के कर्मों का पुरस्कार या दण्ड तो मिलना ही चाहिये।

२१. वास्तव में नरक घात में है।
२२. जो दूराचारियों का स्थान है।
२३. जिस में वे असंख्य वर्षों तक रहेंगे।
२४. उस में ठंडी तथा पेय (पीने की चीज़) नहीं चखेंगे।
२५. केवल गमृ पानी और पीप रक्त के।
२६. यह पूरा पूरा प्रतिूल है।
२७. नि:संदेह वे हिसाब की आशा नहीं रखते थे।
२८. तथा वे हमारी आयतों को झुठलाते थे।
२९. और हम ने सब विषय लिख कर सूरक्षित कर लिये हैं।
३०. तो चखो, हम तुम्हारी यातना अधिक ही करते रहेंगे।[२]
३१. वास्तव में जो डरते हैं उन्ही के लिये सफलता है।
३२. बाग़ तथा अँगूर हैं।
३३. और नवयुवति कुमारियाँ।
३४. और छलकते प्याले।
३५. उस में बकवाद और मिथ्या बातें नहीं सुनेंगे।
३६. यह तुम्हारे पालनहार की ओर से भरपूर पुरस्कार है।
३७. जो आकाश, धरती तथा जो उन के बीच है का अति करूणामय पालनकार है। जिस से बात करने का वे साहस नहीं कर सकेंगे।
३८. जिस दिन रुह (जिब्रील) तथा फ़रिश्ते पंक्तियों में खेड़े होंगे, वही बात कर सकेगा जिसे रह्मान (अल्लाह) आज्ञा देगा, और सहीह बात करेगा।

---

[१] (१७–२०) इन आयतों में बताया जा रहा है कि निर्णय का दिन अपने निश्चित समय पर आकर रहेगा, उस दिन आकाश तथा धरती में एक बड़ी उथल पुथल होगी। इस के लिये सूर में एक फूँक मारने की देर है। फिर जिस की सूचना दी जा रही है तुम्हारे सामने आ जायेगी। तुम्हारे मानने या न मानने का कोई प्रभाव नही पड़ेगा। और सब अपना हिसाब देने के लिये अल्लाह के न्यायालय कि और चल पड़ेंगे।

[२] (२१–३०) इन आयतों में बताया गया है कि जो हिसाब की आशा नही रखते और हमारी आयतों को नही मानते हम ने उन के एक एक करतूत को गिन कर अपने यहाँ लिख रखा है। और उन की खबर लेने के लिये नरक घात लगाये तैयार है, जहाँ उन के कुकर्मों का भरपूर बदला दिया जायेगा।

३९. वह दिन नि: संदेह होना ही है। अत: जो चाहे अपने पालनहार की ओर (जाने का) ठिकाना बना ले।[१]

४०. हम ने तुम को समीप यातना से सवधान कर दिया जिस दिन इन्सान अपना करतूत देखेगा, और काफ़िर (विश्वास हीन) कहेगा कि काश मै मिट्टी हो जाता![२]

*****

---

[१] (३७–३९) इन आयतों में अल्लाह के न्यायालय में उपस्थिति (हाज़िरी) का चित्र दिखाया गया है। और जो इस भ्रम में पड़े है कि उन के देवी देवता आदि अभिस्तावना करेंगे उन को सावधान किया गया है कि उस दिन कोई बिना उस की आज्ञा के मुँह नही खोलेगा और अल्लाह की आज्ञा से अभिस्तावना भी करेगा तो उसी के लिये जो संसार में सत्य वचन ''ला इलाहा इल्लल्लाह'' को मानता हो। अल्लाह के द्रोही और सत्य के विरोधी किसी अभिस्तवना के योग्य नही होंगे।

[२] (४०) बात को इस चेतावनी पर समाप्त किया गया है कि जिस दिन के आने की सूचना दी जा रही है, उस का आना सत्य है, उसे दूर न समझो। अब जिस का दिल चाहे इसे मान कर अपने पालनहार की ओर मार्ग बना ले। परन्तु इस चेतावनी के होते जो इन्कार करेगा उस का किया धरा सामने आयेगा तो पछता पछता कर यह कामना करेगा कि मै संसार में पैदा ही न होता। उस समय इस संसार के बारे में उस का यह विचार होगा जिस के प्रेम आज वह परलोक से अंधा बना हुआ है।

सूरह नाज़िआत – ७९

सूरह नाज़िआत के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ४६ आयतें हैं।

– इस का आरंभ ''अन्नज़िआत'' शब्द से हुआ है। जिस का अर्थ है: प्राण खीचने वाले फ़रिश्ते, इसी से इस का यह नाम रखा गया है।[१]
– इस की आयत १ से १४ तक में प्रतिफल के दिन पर गवाही प्रस्तुत की गई है। फिर क़्यामत का चित्र दिखाते हुये उस का इन्कार करने वालों की आपत्ति की चर्चा की गई है।
– आयत १५ से २६ तक में फ़िरऔन के मूसा (अलैहिस्सलाम) की बात न मानने के शिक्षाप्रद परिणाम को बताया गया है जो प्रतिफल के होने का ऐतिहासिक प्रमाण है।
– आयत ३४ से ४१ तक में क़्यामत के दिन अवैज्ञाकारियों की दुर्देशा और आज्ञाकारियों के उत्तम परिणाम को दिखाया गया है।
– अन्त में क़्यामत के नकारने वालों का जवाब दिया गया है।
और जब उन्हें (मुमिनों को) देखते तो कहते थे: यही भटके हुये लोग हैं।

---

[१] इस सूरह का विषय प्रलय तथा दोबारा उठाये जाने का वर्णन है। और इस में अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नबी न मानने के दुष्परिणाम से सावधान किया गया है। और फ़रिश्तों के कार्यों की चर्चा कर के यह विश्वास दिलाया गया है कि प्रलय अवश्य आयेगी, और दूसरा जीवन हो कर रहेगा। यही फरिश्ते अल्लाह के आदेश से इस विश्व की व्यवस्था को ध्वस्त कर देंगे। यह कार्य जिस असंभव समझा जा रहा है अल्लाह के लिय अति सरल है। एक क्षण में वह संसार को विलय कर देगा और दूसरे क्षण में, सहसा दूसरे संसर में स्वंय को जीवित पाओगे।
फिर फ़िरऔन की कथा का वर्णन कर के नबियों (ईश दूतों) को न मानने का दुष्परिणाम बताया गया है जिस से शिक्षा लेनी चाहिये।
२७ से ३३ तक परलोक तथा दोबारा उठाये जाने का वर्णन है।
३४ से ४१ तक बताया गया है कि परलोक के स्थायी जीवन का निर्णय इस आधार पर होगा कि किस ने आज्ञा का उल्लंघन किया है। और माया मोह को अपने जीवन का भय किया। और मनमानी करने से बचा। यह समय अवश्य आना है। अब जिस के जो मन में आया करे। जो इसी संसार को सब कुछ समझते थे यह अनुभव करेंगे कि वह संसार में मात्र पल भर ही रहे, उस समय समझ में आयेगा कि इस पल भर के सुख के लिये उस ने सदा के लिये अपने भविष्य का विनाश कर लिया।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. शपथ है उन फ़रिश्तों की जो डूब कर (प्राण) निकालते हैं!
२. और जो सरलता से (प्राण) निकालते हैं।
३. और जो तैरते रहते हैं।
४. फिर जो आगे निकल जाते हैं।
५. फिर जो कार्य की व्यवस्था करते हैं।[1]
६. जिस दिन धरती काँपेगी।
७. जिस के पीछे ही दूसरी कम्प आ जायेगी।
८. उस दिन बहुत से दिल धड़क रहे होंगे।
९. उन की आँखें झुकी होंगी।
१०. वे कहते हैं कि क्या हम फिर पहली स्थिति में लाये जायेंगे?
११. जब हम (भुरभुरी) (खोखली) स्थियाँ (हड्डियाँ) हो जायेंगे।
१२. उन्हों ने कहा: तब तो इस वापसी में क्षति है।
१३. बस वह एक झिड़की होगी।
१४. तब वे अकस्मात धरती के ऊपर होंगे।
१५. (हे नबी) क्या तुम को मूसा का समाचार पहुँचा?[2]
१६. जब पवित्र वादी ''तुवा'' में उस उसके पालनहार ने पुकारा।
१७. फ़िरऔन के पास जाओ वह विद्रोही हो गया है।
१८. तथा उस से कहो कि क्या तुम पवित्र होना चाहोगे?
१९. और मै तुम्हें तुम्हारे पालनहार की सीधी राह दिखाऊँ तो तुम डरोगे?
२०. फिर उस को सब से बड़ा चिन्ह (चमत्कार) दिखाया।
२१. तो उस ने उसे झुठला दिया और बात न मानी।
२२. फिर प्रयास करने लगा।

---

[1] (१–५) यहाँ से बताया गया है कि प्रलय का आरंभ भारी भूकंम्प से होगा और दूसरे ही क्षण सब जीवित हो कर धरती के ऊपर होंगे।

[2] (६–१५) इन आयतों में प्रलय दिवस का चित्र पेश किया गया है। और काफ़िरों की अवस्था बतायी गई है कि वे उस दिन किस प्रकार उपने आप को एक खुले मैदान में पायेंगे।

२३. फिर लोगों को एकत्र किया फिर पुकारा।
२४. और कहाः मै तुम्हारा परम पालनहार हूँ।
२५. तो अल्लाह ने उसे संसार तथा परलोक की यातना में घेर लिया।
२६. वास्तव में इस में उस के लिये शिक्षा है जो डरता है।
२७. क्या तुम को पैदा करना कठिन है।
२८. उस की छत ऊँची की और चौरस किया।
२९. और उस की रात को अंधेरी, तथा दिन को उजाला किया।
३०. और इस के बाद धरती को फैलाया।
३१. और उस से पानी और चारा निकाला।
३२. और पर्वतों को गाड़ दिया।
३३. तुम्हारे तथा तुम्हारे पशुओं के लाभ के लिये।
३४. तो जब प्रलय आयेगी।[१]
३५. उस दिन इन्सान अपना करतूत याद करेगा।[२]
३६. और देखने वाले के लिये नरक सामने कर दी जायेगी।
३७. तो जिस ने विद्रोह किया।
३८. और सांसारिक जीवन को प्राथमिक्ता दी।
३९. तो नरक ही उस का आवास होगी।
४०. परन्तु जो अपने पालनहार की महानता से डरा तथा अपने आप को मनमानी करने से रोका।
४१. तो निश्चय ही उस का आवास स्वर्ग है।
४२. वे आप से प्रश्न करते हैं कि वह समय कब आयेगा?[३]
४३. तुम उस की चर्चा में क्यों पड़े हो?

---

[१] (२८–२७) ''बड़ी आपदा'' प्रलय को कहा गया है जो उस की घोर स्थिति का चित्रण है।

[२] (३५) यह प्रलय का तीसरा चरण होगा जब कि वह सामने होगी। उस दिन प्रत्येक व्यक्ति को अपने संसारिक कर्म याद आयेंगे और कर्मानुसर जिस ने सत्य धर्म की शिक्षा का पालन किया होगा उसे स्वर्ग का सुख मिलेगा और जिस ने सत्य धर्म और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नकारा और मनमानी धर्म और कर्म किया होगा वह नरक का स्थायी दुःख भोगेगा।

[३] (४२) काफ़िरों का यह प्रश्न समय जानने के लिये नही, बल्कि हंसी उड़ाने के लिये था।

४४. उस के होने के समय का ज्ञान तुम्हारे पालनहार के पास है।

४५. तुम तो उसे सावधान करने के लिये हो जो उस से डरता है।[1]

४६. वह जिस दिन उस का दर्शन करेंगे उन्हें ऐसा लगेगा कि वह संसार में एक संध्या या उस के सवेरे से अधिक नहीं ठहरे।

*****

[1] (४५) इस आयत में कहा गया है कि (हे नबी) सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप का दायित्त मात्र उस दिन से सावधान करना है। धर्म बल पूर्वक मनवाने के लिये नही। जो नही मानेगा उसे स्वंय उस दिन समझ में आ जायेगा कि उस ने क्षण भर के संसारिक जीवन के स्वर्थ के लिये अपना स्थायी सुख खो दिया। और उस समय पछतावे का कुछ लाभ नही होगा।



सूरह अबस – ८०



सूरह अबस के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ४२ आयतें हैं।

- इस का आरी ''अबस'' शब्द से हुआ है जिस का अर्थ ''मुंह बसोरना'' है। इसी से इस सूरह का नाम रखा गया है।[1]
- इस की आयत १ से १० तक में एक विशेष घटना की ओर संकेत कर के नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) को ध्यान दिलाया गया है कि आप अभिमानियों तथा दुराग्रहियों के पीछे न पड़ें। उस पर ध्यान दें जो सत्य की खोज करता और अपना सुधार चाहता है।)
- आयत ११ से १६ तक में कुरआन की महिमा का वर्णन किया गया तथा बताया गया है कि जिस की ओर नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) बुला रहे है वह कितनी बड़ी चीज़ है। इस लिये जो इस का अपमान करेंगे वह स्वंय अपना ही बुरा करेंगे।
- आयत १७ से २३ तक में प्रलय के इन्कारियों को चेतावनी दी गई है। तथा फिर से जीवित किये जाने के प्रमाण अल्लाह के पालनहार होने से प्रस्तुत किये गये है।
- अन्त में आयत ४२ तक क़यामत का भ्यावह चित्र तथा सदाचारियों और दुराचारियों के अलग–अलग परिणाम बताये गये है।

*****

[1] यह सूरह मक्की है। भाष्यकारों ने इस के उतरने का कारण यह लिखा है कि एक बार ईशदूत (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) मक्का के प्रमुखों को इस्लाम के विषय में समझा रहे थे कि एक अनुयायी अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने आ कर धार्मिक विषय में प्रश्न किया। आप उसे बुरा मान गये और मुँह फेर लिया। इस पर आप को सावधान किया गया कि धमृ में संसारिक मान मर्यादा का कोई महत्व नही, आप उसी पर प्रथम ध्यान दें जो सत्य को मानता तथा उस का पालन करता है। आप का दायित्व यह भी नही है कि किसी को सत्य मनवा दें। फिर कुरआन ऐसी चीज़ नही है जिसे विनय और खुशामद से प्रस्तुत किया जाये। बल्कि जो उस पर विचार करेगा तो स्वंय ही इस सत्य को पा लेगा। और जान लेगा कि जिस निराकार शक्ति ने सब कुछ किया है तो पूजा भी मात्र उसी की करे और उसी के कृतज्ञ हों। फिर यदि वह अपनी कृतध्नता पर अड़े रह गये तो एक दिन आयेगा जब यह मान मर्यादा और उन का कोई सहायक नही रह जायेगा और प्रत्येक के कर्मों का फल उस के सामने आ जायेगा।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. (नबी ने) त्योरी चढ़ाई तथा मुँह फेर लिया।

२. इस कारण कि उस के पास एक अँधा आया।

३. और तुम क्या जानो शायद वह पवित्रता प्राप्त करे।

४. या नसीहत ग्रहण करे जो उस को लाभ देती।

५. परन्तु जो विमुख (निश्चन्त) है।

६. तुम उन की ओर ध्यान दे रहे हो।

७. जब कि तुम पर कोई दोष नहीं यदि वह पवित्रता ग्रहण न करे।

८. तथा जो तुम्हारे पास दौड़ता आया।

९. और वह डर भी रहा है।

१०. तुम उस की ओर ध्यान नहीं देते।[1]

११. कदापि यह न करो, यह (अर्थात कुरआन) एक स्मृति (याद दहानी) है।

१२. अत: जो चाहें स्मरण (याद) करे।

१३. मान्नीय शास्त्रों में है।

१४. जो ऊँचे तथा पवित्र है।

१५. ऐसे लेखकों (फ़रिश्तों) के हाथों में है।

१६. जो सम्मानित और आदरणीय है।[2]

१७. इन्सान मारा जाये वह कितना कृतघ्न (नाशुक्रा) है।

१८. उसे किस वस्तु से (अल्लाह) ने पैदा किया?

---

[1] (१–१०) भावार्थ यह है कि सत्य के प्रचारक का यह कर्तव्य है कि जो सत्य की खोज में हो भले ही वह दरिद्र हो उसी के सुधार पर ध्यान दे। और जो अभीमान के कारण सत्य की परवाह नही करते उन के पीछे समय न गवायें। आप का यह दायित्व भी नही है कि उन्हें उपनी बात मनवा दें।

[2] (११–१६) इन में कुरआन की महानता को बताया गया है कि यह एक स्मृति (याद दहानी) है। किसी पर थोपने के नही आया है। बल्कि वह तो फ़रिश्तों के हाथों में स्वर्ग में एक पवित्र शास्त्र के अन्दर सुरक्षित है। और वही से वह (कुरआन) इस संसार में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर उतारा जा रहा है।

१९. उसे वीर्य से पैदा किया, फिर उस का भाग्य बनाया।

२०. फिर उस के लिये मार्ग सरल किया।

२१. फिर मौत दी फिर समाधि में डाल दिया।

२२. फिर जब चाहेगा उसे जीवित कर लेगा।

२३. वस्तुत: उस ने उस की आज्ञा का पालन नहीं किया।[1]

२४. इन्सान अपने भोजन की ओर ध्यान दे।

२५. हम ने मूसलाधार वर्षा की।

२६. फिर धरती को चीरा फाड़ा।

२७. फिर उस से अन्न उगाया।

२८. तथा अंगूर और तरकारियाँ।

२९. तथा जैतून एवं खजूर।

३०. तथा घने बाग़।

३१. एवं फल तथा वनस्पतियाँ।

३२. तुम्हारे तथा तुम्हारे पशुओं के लियें।[2]

३३. तो जब कान फाड़ देने वाली (प्रलय) आ जायेगी।

३४. उस दनि इन्सान अपने भाइ़ से भागेगा।

३५. तथा अपने माता और पिता से।

३६. एवं अपनी पत्नी तथा अपने पुत्रों से।

३७. प्रत्येक व्यक्ति को उस दिन अपनी पड़ी होगी।

---

[1] (१७–२३) तक विश्वास हीनों पर शिक्कार है कि यदि वह अपने अस्तित्व पर विचार करें कि हम ने कितनी तुच्छ वीर्य की बूँद से उस की रचना की तथा उपनी दया से उसे चेतना और समझ दी परन्तु इन सब उपकारों को भूल कर कृतघ्न बना हुआ है, और पूजा उपासना अन्य की करता है।

[2] (२४–३२) इन आयतों में इन्सान के जीवन साधनों को साक्ष्य के रुप में प्रस्तुत किया गया है जो अल्लाह की अपार दया के परिचायक है। अत: जब सारी व्यवस्था वही करता है तो फिर उस के इन उपकारों पर इन्सान के लिये उचित था कि उसी की बात माने और उसी के आदेशों का पालन करे जो कुरआन के माध्यम से अन्तिम नबी मुहम्मद (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है। (दावतुल कुरआन)

३८. उस दिन बहुत से चेहरे उज्जवल होंगे।

३९. हंसते एवं प्रसन्न होंगे।

४०. तथा बहुत से चेहरों पर धूल पड़ी होगी।

४१. उन पर कालिमा छाई होगी।

४२. वही काफ़िर और कुकर्मी लोग है।[१]

*****

[१] (३३–४२) इन आयतों का भावार्थ यह है कि संसार में किसी पर कोई आपदा आती है तो उस के अपने लोग उस की सहायता और रक्षा करते है। परन्तु प्रलय के दिन सब को अपनी अपनी पड़ी होगी और उस के कर्म ही उस की रक्षा करेंगे।

सूरह तक्वीर - ८१

सूरह तक्बीर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में २९ आयतें है।

- इस में प्रलय के दिन सूर्य के लपेट दिये जाने के लिये ''कुव्विरत'' शब्द आया है। इस लिये इस का नाम सूरह तक्वीर है। जिस का अर्थ लपेटना है।[1]
- इस की आयत १ से ६ तक प्रलय की प्रथम घटना और आयत ७ से १४ तक में दूसरी घटना का चित्रण किया गया है।
- आयत १५ से २५ तक मं यह बताया गया है कि कुरआन और नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) जो सूचना दे रहे है वह सत्य पर आधारित है।
- आयत २६ से २९ तक में इन्कार करने वालों को चेतावनी दी गई है कि कुरआन को न मानना सत्य का इन्कार है।

*****

[1] यह सूरह आरंभिक सूरतों में से है। इस में प्रलय तथा दूतत्व (रिसालत) का वर्णन है।

१. जब सूर्य लपेट दिया जायेगा।
२. और जब तारे धुमिल हो जायेंगे।
३. जब पर्वत चलाये जायेंगे।
४. और जब दस महीने की गाभिन ऊँटनियाँ छोड़ दी जायेंगी।
५. और जब वन् पशु एकत्र कर दिये जायेंगे।
६. और जब सागर भड़काये जायेंगे।[1]
७. और जब प्राण जोड़ दिये जायेंगे।
८. और जब जीवित गाड़ी गई कन्या से प्रश्न किया जायेगा।
९. कि वह किस अपराध के कारण बध की गई।
१०. तथा जब कर्म पत्र फैला दिये जायेंगे।
११. और जब आकाश की खाल उतार दी जायेगी।
१२. और जब नरक धहकाई जायेगी।
१३. और जब स्वगृ समीप लाई जायेगी।
१४. तो प्रत्येक प्राणी जान लेगा कि वह क्या लेकर आया है।[2]
१५. मै शपथ लेता हूँ उन तारों की जो पीछे हट जाते है।
१६. जो चलते चलते छुप जाते है।
१७. और रात की (शपथ), जब समाप्त होने लगती है।
१८. तथा भोर की जब उजाला होने लगता है।
१९. यह (कुरआन) एक मान्यवर स्वर्ग दूत का लाया हुआ कथन है।
२०. जो शक्ति शाली है। अर्श (सिंहासन) के मालिक के पास उच्च पद वाला है।
२१. जिस की बात मानी जाती है और बड़ा अमानतदार है।[1]

---

[1] (१–६) इन में प्रलय के प्रथम चरण में विश्व में जो उथल पुथल होगी उस को दिखाया गया है कि आकाश, धरती और पर्वत, सागर तथा जीव जन्तुओं की क्या दशा होगी। और माया मोह में पड़ा इन्सान इसी संसार में अपने प्रियवर धन से कैसा बे परवाह हो जायेगा। वन् पशु भी भय के मारे एकत्र हो जायेंगे। सागरों के जल प्लावन से धरती जल थल हो जायेगी।

[2] (७–१४) इन आयतों में प्रलय के दूसरे चरण की दशा को दर्शाया गया है कि इन्सानों की आस्था और कर्मों के अनुसार श्रेणियाँ बनेंगी। नृशंसितों (मज़लूमों) के साथ न्याय किया जायेगा। कर्म पत्र खोल दिये जायेंगे। नरक भड़काई जायेगी। स्वर्ग सामने कर दी जायेगी। और उस समय सभी को वास्तविकता का ज्ञान हो जायेगा। इस्लाम के उदय के समय अरब में कुछ लोग पुत्रियों को जन्म लेते ही जीवित गाड़ दिया करते थे। इस्लाम ने नारियों को जीवन प्रदान किया। और उन्हें जीवित गाड़ देने को घोर अपराध घोषित किया आयत नं. ८ में उन्ही नृशंस अपराधियों को धिक्कारा गया है।

२२. और तुम्हारा साथी उन्मत नहीं है।
२३. उस ने उस को आकाश में खुले रुप से देखा है।
२४. वह परोक्ष (ग़ैब) की बात बताने में प्रलोभी नहीं है।[2]
२५. यह धिक्कारी शैतान का कथन नहीं है।
२६. फिर तुम कहाँ जा रहे हो?
२७. यह संसार वासियों के लिये एक स्मृति (शास्त्र) है।
२८. तुम में से उस के लिये जो सुधरना चाहता हो।
२९. तथा तुम विश्व के पालनहार के चाहे बिना कुछ नहीं कर सकते।[3]

*****

[1] (१५–२१) तारों की व्यवस्था गति तथा अंधेरे के पश्चात नियमित रूप से उजाला की शपथ इस बात की गवाही है कि कुरआन ज्योतिष की बकवास नही। बल्कि यह ईश वाणी है। जिस को एक शक्तिशाली तथा सम्मान वाला फ़रिश्ता ले कर मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया। और अमानतदारी से इसे पहुँचाया।

[2] (२२–२४) इन में यह चेतावनी दी गई है कि महा ईशदूत (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जो सुना रहे है, और जो फ़रिश्ता वह्यी (प्रकाशना) लाता है उन्होंने उसे देखा है। वह परोक्ष की बातें प्रस्तुत कर रहे है कोई ज्योतिष की बात नही, जो धिक्कारे शैतान ज्योतिषियों को दिया करते है।

[3] (२७–२९) इन साक्ष्यों के पश्चात सावधान किया गया है कि कुरआन मात्र याद दहानी है। इस विश्व में इस के सत्य होने के सभी लक्षण सब के सामने है। इन का अध्ययन कर के स्वंय सत्य की राह अपना लो अन्यथा अपना ही बिगाड़ोंगे।

सूरह इन्फ़ितार – ८२

सूरह इन्फ़ितार के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में १९ आयतें हैं।

– ''इन्फ़ितार'' का अर्थ ''फटना'' है। इस में प्रलय के दिन आकाश के फट जाने की सूचना दी गई है। इसी कारण इस का यह नाम है।

– इस की आयत १ से ५ तक में प्रलय का दृश्य प्रस्तुत किया गया है कि जब प्रलय आयेगी तो मनुष्य का सब किया धरा सामने आ जायेगा।

– फिर आयत ६ से ८ तक में मनुष्य को यह बताया गया है कि जिस अल्लाह ने उसे पैदा किया है क्या उसे मनमानी करने के लिये छोड़ देगा?

– आयत ९ से १२ तक में बताया गया है कि मनुष्य का प्रत्येक कर्म लिखा जा रहा है।

– आयत १३ से १९ तक में सदाचारियों और दुराचारियों के परिणाम तबाते हुये सावधान किया गया है कि प्रलय के दिन किसी के बस में कुछ न होगा, उस दिन सभी अधिकार अल्लाह के हाथ में होगा।

*****

१. जब आकाश फट जायेगा।

२. तथा जब तारे झड़ जायेंगे।

३. और जब सागर उबल पड़ेंगे।

४. और जब समाधियाँ (क़बरें) खोल दी जायेंगी।

५. तब प्रत्येक प्राणी को ज्ञान हो जायेगा जो उस ने किया है और नहीं किया है।[1]

६. हे इन्सान! तुणे किस वस्तु ने तेरे उदार पालनहार से बहका दिया।

७. जिस ने तेरी रचना की फिर तुझे संतुलित बनाया।

८. जिस रूप में चाहा बना दिया।[2]

९. वास्तव में तुम प्रतिफल (प्रलय) के दिन को नहीं मानते।

१०. जब कि तुम पर निरीक्षक (पासबान) है।

११. जो माननीय लेखक है।

१२. वे जो कुछ तुम करते हो जानते है।[3]

१३. निःसंदेह सदाचारी सुखों में होंगे।

१४. और दुराचारी नरक में।

१५. प्रतिकार (बदले) के दिन उस में झोंक दिये जायेंगे।

१६. और वे उस से बच रहने वाले नहीं।[4]

१७. और तुम क्या जानो कि बदले का दिन क्या है?

---

[1] (१–५) इन में प्रलय के दिन आकाश ग्रहों तथा धरती और समाधियों पर जो दशा गुज़रेगी उस का वित्रण किया गया है। तथा चेतावनी दी गई है कि सब के कर्तूत उस के सामने आ जायेंगे।

[2] (६–८) भावार्थ यह है कि इन्सान की पैदाइश में अल्लाह की शक्ति, दक्षाता तथा दया के जो लणि है, उन के दपृण में यह बताया गया है कि प्रलय को असंभव न समझो। यह सब व्यवस्था इस बात का प्रमाण है कि तुम्हारा अस्तित्व व्यर्थ नही है कि मनमानी करो। इस का अर्थ यह भी हो सकता है कि जब तुम्हजारा अस्तित्व और रुप रेखा कुछ भी तुम्हारे बस नही, तो फिर जिस शक्ति ने सब किया उसी की शक्ति में प्रलय तथा प्रतिकार के होने को क्यों नही मानते?

[3] (९–१२) इन आयतों में इस भ्रम का खण्डन किया गया है कि सभी कर्मों और कथनों का ज्ञान कैसे हो सकता है।

[4] (१३–१६) इन आयतों में सदाचारियों तथा दुराचारियों का परिणाम बताया गया है कि एक स्वर्ग के सुखों में रहेगा। और दूसरा नरक के दण्ड का भागी बनेगा।

१८. फिर तुम क्या जानो कि बदले का दिन क्या है?

१९. जिस दिन किसी का किसी के लिये कोई अधिकार नहीं होगा, और उस दिन सब अधिकार अल्लाह का होगा।[1]

*****

[1] (१७–१९) इन आयतों में दो वाक्यों में प्रलय की चर्चा दोहरा कर उस की भ्यानकता को दर्शाते हुये बताया गया है कि निर्णयबे लाग होगा। कोई किसी की सहायता नही कर सकेगा। सत्य आस्था और सत्कर्म ही सहायक होंगे जिस का मार्ग कुरआन दिखा रहा है। कुरआन की सभी आयतों में प्रतिकार का दिन प्रलय के दिन को ही बताया गया है जिस दिन प्रत्येक मनुष्य को अपने कर्मानुसार प्रतिकार मिलेगा।

सूरह मुतफ़्फ़िफ़ीन – ८३

सूरह मुतफ़्फ़िफ़ीन के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में ३६ आयतें है।

- इस सूरह के आरंभ में ''मुतफ़्फ़िफ़ीन'' शब्द आया है। जिस का अर्थ है: नापने–तौलने में कमी करने वाले. इसी से इस का नाम रखा गया है।[१]
- आयत १ से ६ तक में व्यवसायिक गया है कि कुकर्मियों के कर्म एक विशेष पंजी जिस का नाम ''सिज्जीन'' है, में लिखे हुये है और सदाचारियों के ''इल्लिय्यीन'' में, जिन के अनुसार उन का निर्णय किया जायेगा और दोनों का परिणाम बताया गया है।
- आयत २९ से अन्त तक ईमान वालों को दिलासा दी गई है कि विरोधियों के व्यंग से दु:खी न हों आज वह तुम पर हँस रहे है कल तुम उन पर हँसोगे।

*****

[१] नाप तौल में कमी बहुत बड़ी समाजिक खराबी है। और यह रोग विगत समुदायों में भी विशष रुप से पाया जाता था। सूरह मुतफ़्फ़िफ़ीन में इस बुराई की कड़ी निंदा की गई है। और प्रलय दिवस में उन को कठोर यातना की सूचना दी गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. विनाश है डंडी मारे वालों का।

२. जो लागों से नाप कर लें तो पूरा लेते है।

३. और जब उन को नाप या तोल कर देते है तो कम देते है।

४. क्या वे नहीं सोचते कि फिर जीवित किये जायेंगे?

५. एक भीषण दिन के लिय।

६. जिस दिन सभी विश्व के पालनहार के सामने खड़े होंगे।[1]

७. कदापि ऐसा न करो, निश्चय बुरों का कर्म पत्र ''सिज्जीन'' में है।

८. और तुम क्या जानों कि ''सिज्जीन'' क्या है?

९. वह लिखित महान् पुस्तक है।

१०. उस दिन झुठलाने वालों के लिये विनाश है।

११. जो प्रतिकार (बदले) के दिन को झुठलाते है।

१२. तथा उसे वही झुठलाता है जो महा अत्याचारी और पापी है।

१३. जब उन के सामने हमारी आयतों का अध्ययन किया जाता है तो कहते है: पूर्वजों की कल्पित कथायें है।

१४. सुनो! उन के दिलों पर कुकर्मों के कारण लोहमल लग गया है।

१५. निश्चय वे उस दिन अपने पालनहार (के दर्शन) से रोक दिये जायेंगे।

१६. फिर वे नरक में जायेंगे।

१७. फिर कहा जायेगा कि यही है जिसे तुम मिथ्या मानते थे।[1]

---

[1] (१–६) इस सुरह की प्रथम छः आयतों में इसी व्यवसायिक विश्वास घात पर पकड़ की गई है कि न्याय तो यह है कि अपने लिये अन्याय नही चाहते तो दूसरों के साथ न्याय करो। और इस रोग का निवारण अल्लाह के भय तथा परलोक पर विश्वास ही से हो सकता है। क्योंकि इस स्थिति में निक्षेप (अमानतदारी. एक नीति ही नही बल्कि धार्मिक कर्तव्य होगा और इस पर स्थित रहना लाभ तथा हानि पर निर्भर नही रहेगा।

१८. सच्च यह है कि सदाचारियों के कर्म पत्र ''इल्लिय्यीन'' में है।

१९. और तुम क्या जानो कि ''इल्लिय्यीन'' क्या है?

२०. एक अंकित पुस्त है।

२१. जिस के पास समीपवर्ती (फ़रिश्ते) उपस्थित रहते है।

२२. निश्चय सदाचारी आनंद में होंगे।

२३. सिंहासनों के ऊपर बैठ कर सब कुछ देख रहे होंगे।

२४. तुम उन के मुखों से आनंद के चिन्ह अनुीव करोगे।

२५. उन्हें मुहर लगी शुद्ध मदिरा पिलायी जायेगी।

२६. यह मुहर कस्तूरी की होगी। तो इस की अभिलाषा करने वालों को इस की अभिलाषा करनी चाहिये।

२७. उस में तसनीम मिली होगी।

२८. वह एक स्रोत है जिस से (अल्लाह के) समीप वर्ती पियेंगे।[२]

२९. पापी (संसार में) ईमान लाने वालों पर हंसते थे।

३०. और जब उन के पास से गुज़रते तो आँखें मिचकाते थे।

३१. और जब अपने परिवार में वापिस जाते तो आनंद लेते हुये वापिस होते थे।

३२. और जब उन्हें (मुमिनों को) देखते तो कहते थे: यही भटके हुये लोग है।

३३. जब कि वे उन के निरीक्षक बनाकर नहीं भेजे गये थे।

---

[१] (७–१७) इन आयतों में कुकर्मियों के दुष्परिणाम का विवरण दिया गया है। तथा यह बताया गया है कि उन के कुकर्म पहले ही से अपराध पत्रों में अंकित किये जा रहे है। तथा वे परलोक में कड़ी यातना का सामना करेंगे। और नरक में झोंक दिये जायेंगे।

''सिज्जीन'' से अभिप्राय: एक जगह है जहाँ पर काफ़िरों, अत्याचारियों और मुश्रिकों के कुकर्म पत्र तथा प्राण एकत्र किये जाते है। दिलों का लोहमल: पापों की कालिमा को कहा गया है। पाप अंतरात्मा को अन्धकार बना देते है तो सत्य को स्वीकार करने की स्वभाविक योग्यता खो देते है।

[२] (१८–२८) इन आयतों में बताया गया है कि सदाचारियों के कर्म ऊँचे पत्रों में अंकित किये जा रहे है जो फ़रिश्तों के पास सुरक्षित है। और वे स्वर्ग में सुख के साथ रहेंगे। ''इल्लिय्यीन'' से अभिप्राय: जन्नत में एक जगह है। जहाँ पर नेक लोगों के कर्म पत्र तथा प्राण एकत्र किये जाते है। वहाँ पर समीपवर्ति फ़रिश्ते उपस्थित रहते है।

३४. तो जो ईमान लाये आज काफ़िरों पर हंस रहे है।

३५. सिंहासनों के ऊपर से उन्हें देख रहे है।

३६. क्या काफ़िरों (विश्वास हीनों) को उन का बदला दे दिया गया?[१]

*****

[१] (२९–३६) इन आयतों में बताया गया है कि परलोक में कर्मों का फल दिया जायेगा तो संसारिक परिस्थितियाँ बदल जायेंगी। संसार में तो सब के लिये अल्लाह की दया है, परन्तु न्याय के दिन जो अपने सुख सुविधा पर गर्व करते थे और जिन निर्धन मुसलमानों को देख कर आँखें मारते थे, वहाँ पर वही उन के दुष्परिणाम को देख कर प्रसन्न होंगे। अंतिम आयत में विश्वास हीनों के दुष्परिणाम को उन का कर्म कहा गया है। जिस में यह संकेत है कि सुफल और कुफल स्वंय इन्सान के अपने कर्मों का स्वभाविक प्रभाव होगा।

सूरह इन्शिक़ाक़ - ८४

सूरह इन्शिक़ाक़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में २५ आयतें है।

- इन्शिक़ाक़ का अर्थः फटना है। इस में आकाश के फटने की सुचना दी गई है, इस कारण इस का यह नाम है।[1]
- आयत १ से ५ तक में उस उथल पुथल का संक्षेप में वर्णन है जो प्रलय आते ही इस धरती और आकाश में होगी।
- आयत ६ से १५ तक में मनुष्य के अल्लाह के न्यायालय में पहुँचने, कर्मपत्र दिये जाने और अपने परिणाम को पहुँचने का वर्णन है।
- आयत १६ से २० तक विश्व की निशानियों से प्रमाणित किया गया है कि मनुष्य को मौत के पश्चात् विभिन्न स्थितियों से गुज़रना होगा।
- अन्तिम आयतों में उन्हें धमकी दी गई है जो कुरआन सुनकर अल्लाह के आगे नहीं झुकते बल्कि उसे झुठलाते है। और उन्हें अनन्त प्रतिफल की शुभसूचना दी गई है जो ईमान ला कर सदाचार करते है।

*****

[1] इस सूरह का शीर्षक भी प्रलय (क़्यामत) तथा परलोक (आख़िरत) है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. जब आकाश फट जायेगा।
२. और अपने पालनहार की सुनेगा और यही उसे करना भी चाहिये।
३. तथा जब धरती फैला दी जायेगी।
४. और जो उसके भीतर है फैक देगी तथा ाली हो जायेगी।
५. और अपने पालनहार की सुनेगी और यही उसे करना भी चाहिये।[1]
६. हे इन्सान! वस्तुत: तू अपने पालनहार से मिलने के लिये परिश्रम कर रहा है, और तू उस से अवश्य मिलेगा।
७. फिर जिस किसी को उस का कर्म पत्र दाहिने हाथ में दिया जायेगा।
८. तो उस का सरल हिसाब लिया जायेगा।
९. तथा वह अपनों में प्रसन्न होकर वापस जायेगा।
१०. और जिन को उन का कर्म पत्र बायें हाथ में दिया जायेगा।
११. तो वह विनाश (मृत्यु) को पुकारेगा।
१२. तथा नरक में जायेगा।
१३. वह अपनों में प्रसन्न रहता था।
१४. उस ने सासेचा था कि कभी पलट कर नहीं आयेगा।
१५. क्यों नहीं? निश्चय उस का पालनहार उसे देख रहा था।[2]
१६. मै सांध्य लालिमा की शपथ लेता हूँ!
१७. तथा रात की, और जिसे वह ऐकत्र करे !
१८. तथा चाँद की जब पूरा हो जाये।
१९. फिर तुम अवश्य एक दशा से दूसरी दशा पर सवार होगे।

---

[1] (१–५) इन आयतों में प्रलय के समय आकाश एवं धरती में जो हलचल होगी उस का चित्रण करते हुये यह बताया गया है कि इस विश्व के विधाता के आज्ञानुसार यह आकाश और धरती कार्यरत है और प्रलय के समय भी उसी की आज्ञा का पालन करेंगे। धरती को फैलाने का अर्थ यह है कि पर्वत आदि खण्ड खण्ड हो कर समस्त भूमि चौरस कर दी जायेगी।

[2] (६–१५) इन आयतों में इन्सान को सावधान किया गया है कि तुझे भी अपने पालनहार से मिलना है। और धीरे धीरे उसी की और जा रहा है। वहाँ अपने कर्मानुसार जिसे दायें हाथ में कर्म पत्र मिलेगा वह अपनों से प्रसन्न होकर मिलेगा। और जिस को बायें हाथ में कर्म पत्र दिया जायेगा तो वह विनाश को पुकारेगा। यह वही होगा जिस ने माया मोह में कुआर्न को नकार दिया था। और सोचा कि इस संसारिक जीवन के पश्चात् कोई जीवन नही आयेगा।

२०. फिर क्यों वे विश्वास नहीं करते।
२१. और जब उन के पास कुरआन पढ़ा जाता है तो सज्दा नहीं करते।[1]
२२. बल्कि काफ़िर तो उसे झुठलाते है।
२३. और अल्लाह उन के विचारों को भलि भाँति जानता है।
२४. अत: उन्हें दुख दायी यातना की शुभ सूचना सुना दो।
२५. परन्तु जो ईमान लाये तथा सदाचार किये उन के लिये समाप्त न होने वाला बदला है।[2]

*****

[1] (१६–२१) इन आयतों में विश्व के कुछ लक्षणों को साक्ष्य स्वरुप प्रस्तु कर के सावधान किया गया है कि जिस प्रकार यह विश्व स्वरूप प्रस्तुत कर के सावधान किया गया है कि जिस प्रकार यह विश्व तीन स्थितियों से गुज़रता है इसी प्रकार तुम्हें भी तीन स्थितियों से गुज़रना है: संसारिक जीवन, फिर मरण, फिर परलोक का स्थायी जीवन जिस का सुख दु:ख संसारिक कर्मों के आधार पर होगा।

[2] (२२–२५) इन आयतों में उन के लिये चेतावनी है जो इन स्वभाविक साक्ष्यों के होते हुये कुरआन को न मानने पर अड़े हुये है। और उन के लिये शुभ सूचना है जो इसे मान कर विश्वास (ईमान) तथा सुकर्म की राह पर अग्रसर है।



सूरह बुरूज – ८५



सूरह बुरूज के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में २२ आयतें है।

- इस की प्रथम आयतों में बुर्जों (नक्षत्र) वाले आकाश की शपथ ली गई है। जिस से इस का यह नाम रखा गया है।[1]
- आयत १ से ३ तक प्रतिफल के दिन के दिन के होने का दवा किया गया है।
- आयत ४ से ११ तक उन को धमकी दी गई है जो मुसलमानों पर केवल इस लिये अत्याचार करते है कि वह एक अल्लाह पर ईमान लाये है। और जो इस अत्याचार के होते ईमान पर स्थित रहें उन्हें स्वर्ग की शुभसूचना दी गई है। फिर आयत १६ तक अत्याचारियों को सूचित किया गया है कि अल्लाह की पकड़ कड़ी है। साथ ही अल्लाह के उन गुणों का वर्णन किया गया है जिन से भय पैदा होता है और क्षमा माँगने की प्रेरणा मिलती है।
- आयत १७ से २० तक अत्याचारियों की शिक्षाप्रद यातना की ओर संकेत है और यह चेतावनी है कि विरोधी अल्लाह के घेरे में है।
- अन्त में कुरआन को एक ऊँची पुस्तक बताया है जिस का स्रोत पवित्र तथा सुरक्षित है और जिस की कोई बात असत्य नहीं हो सकती।

*****

---

[1] यह सूरह मक्का के उस युग में उतरी जब मुसलमानों को घोर यातनायें दे कर इस्लाम से फेरने का प्रयास ज़ोरों पर था। ऐसी परिस्थितियों में एक ओर तो मुसलमानों को दिलासा दिया जा रहा है, और दूसरी ओर काफ़िरों को सावधान किया जा रहा है। और इस के लिये ''अस्हाबे उख़्दूद'' (खाईयों वालों) की कथा का वर्णन किया जा रहा है।

दक्षिणी अरब में नजराना, जहाँ ईसाई रहते थे, को बड़ा महत्व प्राप्त था। यह एक व्यवसायिक केन्द्र था। तथा सामाजिक कारणों से ''जू–नवास'' यमन के यहूदी सम्राट ने उस पर आक्रमण कर दिया। और आग से भरे गढ़ों में नर नारियों तथा बच्चों को फिकवा दिया जिस के बदले ५२५ ई. में हब्शा के ईसाईयों ने यमन पर आक्रमण कर के ''जू–नवास'' तथा उस के हिम्यरी राज्य का अन्त कर दिया। इस की पु''गुराब'' के शिला लेख से होती है जो वर्तमान में अवशेषज्ञों को मिला है। (तर्जुमानुल कुरआन)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. शपथ है बुर्जों वाले आकाश की!

२. शपथ है उस दिन की जिस का वचन दिया गया!

३. शपथ है साक्षी की और जिस पर साक्ष्य देगा!

४. खाईयों वालों का नाश हो गया![1]

५. जिन में भड़कते हुये ईंधन की अग्नि थी।

६. जब कि वे उन पर बैठे हुये थे।

७. और वे ईमान वालों के साथ जो कर रहे थे उसे देख रहे थे।

८. और उन का दोष केवल यही था कि वे प्रभावी प्रशंसा किये अल्लाह के प्रति विश्वास किये हुये थे।

९. जो आकाशों तथा धरती के राज्य का स्वामी है। और अल्लाह सब कुछ देख रहा है।

१०. जिन्हों ने ईमान लाने वाले नर नारियों को परिक्षा में डाला, फिर क्षमा याचना न की उन के लिये नरक का दण्ड तथा भड़कती आग की यातना है।

११. वास्तव में जो ईमान लाये और सदाचारी बने, उन के लिये ऐसे स्वर्ग है जिन के तले नहरें बह रही है और यही बड़ी सफलता है।[2]

१२. निश्चय तेरे पालनहार की पकड़ बहुत कड़ी है।

---

[1] (१–४) इन में चीज़ों की शपथ ली गई है:

(१) बुर्जों वाले आकाश की,

(२) प्रलय की, जिस का वचन दिया गया है,

(३) प्रलय के भ्यावह दृश्य की और उस पूरी उत्पत्ति की जो उसे देखेगी।

प्रथम शपथ इस बात की गवाही दे रही है कि जो शक्ति इस आकाश के ग्रहों पर राज कर रही है उस की पकड़ से यह तुच्छ इन्सान बच कर कहाँ जा सकता है?

दूसरी शपथ इस बात पर है कि संसार में इन्सान जो अत्याचार करना जाहे कर ले, परन्तु वह दिन अवश्य आना है जिस से उसे सावधान किया जा रहा है, जिस में सब के साथ न्याय किया जायेगा, और अत्याचारियों की पकड़ की जायेगी। तीसरी शपथ इस पर है कि जैसे इन अत्यचारियों ने विवश अस्तिकों के जलने का दृश्य देखा, इसी प्रकार प्रलय के दिन पूरी मानवजाति देखेगी कि उन की क्या दुर्गत है।

[2] (५–११) इन आयतों में जो आस्तिक सताये गये उन के लिये सहायता का वचन तथा यदि वे अपने विश्वास (ईमान) पर स्थिर रहे तो उन के लिये स्वर्ग की शुभ सूचना और अत्यचारियों के लिये नरक की धमकी है जिन्हें ने उन को सताया और फिर अल्लाह से क्षमा याचना आदि कर के सत्य को नही माना।

१३. वही पहले पैदा करता है और फिर दूसरी बार पैदा करेगा।
१४. और वह अति क्षमा तथा प्रेम करने वाला है।
१५. वह सिंहासन का महान स्वामी है।
१६. वह जो चाहे करता है।[१]
१७. हे नबी! क्या तुम को सेनाओ की सूचना मिली?
१८. फ़िरऔन तथा समूद की।[२]
१९. बल्कि काफ़िर (विश्वासहीन) झुठलाने में लगे हुये है।
२०. और अल्लाह उन को हर ओर से घेरे हुये है।[३]
२१. बल्कि वह गौरव वाला कुरआन है।
२२. जो लेख पत्र (लौहे महफ़ूज) में सुरक्षित है।[४]

******

[१] (१२–१६) इन आयतों में बताया गया है कि अल्लाह की पकड़ के साथ ही जो क्षमा याचना कर के उस पर ईमान लाये, उस के लिये क्षमा और दया का द्वार खुला हुआ है।

कुरआन ने इस कुविचार का खण्डन किया है कि अल्लाह, पापों को क्षमा नही कर सकता। क्योंकि इस से संसार पापों से भर जायेगा और कोई स्वार्थी पाप कर के क्षमा याचना कर लेगा फिर पाप करेगा। यह कुविचार उस समय सहीह हो सकता है जब अल्लाह को एक इन्सान मान लिया जाये, जो यह न जानता हो कि जो व्यक्ति क्षमा माँग रहा है उस के मन में क्या है? अल्लाह तो मर्मज्ञ है, वह जानता है कि किस के मन में क्या है? फिर ''तौबा'' इस का नाम नही कि मुख से इस शब्द को बोल दिया जाये। तौबा (पश्चानुताप) मन से पाप न करने के प्रयत्न का नाम है और इसे अल्लाह तआला जानता है कि किस के मन में क्या है?

[२] (१७–१८) इन में अतीत की कुछ अत्यचारी जातियों की ओर संकेत है, जिन का सविस्तार वर्णन कुरआन की अनेक सुरतों में आया है। जिन्हों ने आस्तिकों पर अत्याचर किये जैसे मक्का के कुरैश मुसलमानों पर कर रहे थे। जब कि उन को पता था कि पिछली जातियों के साथ क्या हुआ। परन्तु वे अपने परिणाम से निश्चेत थे।

[३] (१९–२०) इन दो आयतों में उन के दुर्भाग्य को बताया जा रहा है जो अपने प्रभुत्व के गर्व में कुरआन को नही मानते। जब कि उसे माने बिना कोई उपाय नही, और वह अल्लाह के अधिकार के भीतर ही है।

[४] (२१–२२) इन आयतों में बताया गया है कि यह कुरआन कविता और ज्योतिष नही है जैसा कि वह सोचते है, यह श्रे और उच्चतम् अल्लाह का कथन है जिस का उद्गम ''लौहे महफ़ूज'' में सुरक्षित है।


सूरह तारिक़ – ८६


सूरह तारिक़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में १७ आयतें है।

- इस के आरंभ में ''तारिक़'' शब्द आया है जिस का अर्थ (तारा) है। इसी लिये इस का यह नाम रखा गया है।[1]
- इस की आयत १ से ४ तक में आकाश तथा तारों की इस बात पर गवाही प्रस्तुत की गई कि प्रत्येक व्यक्ति की निगरानी हो रही है और एक दिन उस को हिसाब के लिये लाया जायेगा।
- आयत ५ से ८ तक मनुष्य कीर उत्पत्ति को उस के दोबारा पैदा किये जाने का प्रमाण बनाया गया है। और आयत ९ से १० में यह वर्णन है कि उस दिन सब भेद परखे जायेंगे और मनुष्य विवश और असहाय होगा।
- आयत ११ से १४ तक में इस बात पर आकाश तथा धरती की गवाही प्रस्तुत की गई है कि कुरआन जो प्रतिफल के दिन की सूचना दे रहा है वह अकाट्य है।
- अन्त में काफ़िरों को चेतावनी देते हुये नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) को दिलासा दी गई है कि उन की चालें एक दिन उन्ही के लिये उलटी पड़ेंगी। उन्हें कुछ अवसर दे दो। उन का परिणाम सामने आने में देर नहीं।

*****

[1] इस सूरह में दो विषयों का वर्णन किया गया है: एक यह कि इन्सान को मौत के पश्चात अल्लाह के सामने उपस्थित होना है। दूसरा यह कि कुरआन एक निर्णायक वचन है। जिसे विश्वास हीनों (काफ़िरों) की कोई चाल और उपाय विफल नही कर सकती।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. शपथ है आकाश तथा रात के ''प्रकाश प्रदान करने वाले'' की!

२. और तुम क्या जानो कि वह ''रात में प्रकाश प्रदान करने वाला'' क्या है?

३. वह ज्योतिमय सितारा है।

४. प्रत्येक प्राणी पर एक रक्षक है।[१]

५. इन्सान यह तो विचार करे कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया?

६. उछलते पानी (वीर्य) से पैदा किया गया है।

७. जो पीठ तथा सीने के पंजरों के मध्ये से निकलता है।

८. निश्चय वह उसे लौटाने की शक्ति रखता है।[२]

९. जिस दनि मन के भेद परखे जायेंगे।

१०. तो उसे न कोई बल होगा और न उस का कोई सहायक।[३]

११. शपथ है आकाश की जो बरसता है!

१२. तथा फटने वाली धरती की।

१३. वास्तव में यह (कुरआन) दो टूक निर्णय (फ़ैसला) करने वाला है।

१४. हँसी की बात नहीं।[४]

१५. वह चाल बाज़ी करते है।

---

[१] (१–४) इन में आकाश के तारों को इस बात की गवाही में लाया गया है कि विश्व की कोई ऐसी वस्तु नही है जो एक रक्षा के बिना अपने स्थान पर स्थित रह सकती है, और वह रक्षक स्वंय अल्लाह है।

[२] (५–८) इन आयतों में इन्सान का ध्यान उस के अस्तित्व की ओर आकर्षित किया गया है कि वह विचार तो करे कि कैसे पैदा किया गया है वीर्य से? फिर उस की निरन्तर रक्षा कर रहा है। फिर वही उसे मृत्यु के पश्चात् पुनः पैदा करने की शक्ति भी रखता है।

[३] (९–१०) इन आयतों में यह बताया गया है कि फिर से पैदाइश इस लिये होगी ताकि इन्सान के सभी भेदों की जांच की जाये जिन पर संसार में पर्दा पड़ा रह गया था और सब का बदला न्याय के साथ दिया जाये।

[४] (११–१४) इन आयतों में बताया गया है कि आकाश से वर्षा का होना तथा धरती से पेड़ पौधों का उपजना कोई खेल नही एक गंभीर कर्म है। इसी प्रकार कुरआन में जो तथ्य बताये गये है वह ही हँसी उपहास नही है पक्की और अडिग बातें है। काफ़िर (विश्वास हीन) इस भ्रम में न रहें कि उन की चालें इस कुरआन की आमंत्रण को विफल कर देंगी। अल्लाह भी एक उपाय में लगा है जिस के आगे इन की चालें धरी रह जायेंगी।

१६. मै भी चाल बाज़ी कर रहा हूँ।

१७. अत: काफ़िरों को कुछ थोड़ा अवसर दे दो।[1]

*****

[1] (१५–१७) इन आयतों में नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सांत्वना तथा अधर्मियों को यह धमकी दे कर बात पूरी कर दी गई है कि, आप तनिक सहन करें और विश्वासहीन को मनमानी कर लेने दें, कुछ ही देन होगी कि इन्हें अपने दुष्परिणाम का ज्ञान हो जायेगा।

और इक्कीस वर्ष ही बीते थे कि पूरे मक्का और अरब द्वीप में इस्लाम का ध्वज लहराने लगा।

सूरह आ'ला – ८७

सूरह आ'ला के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में १९ आयतें है।

- इस में अल्लाह के गुण (आ'ला) अर्थात सर्वोच्च होने का वर्णन हुआ है इस लिये इस का यह नाम रखा गया है।[१]
- इस में आयत १ से ५ तक अल्लाह के पवित्रता के गान का आदेश देते हुये उस के गुणों का वर्णन किया गया है ताकि मनुष्य अल्लाह को पहचाने।
- आयत ६ से ८ तक वह्यी को नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) की स्मरण–शक्ति में सुरक्षित किये जाने का विश्वास दिलाया गया है।
- आयत ९ से १५ तक में आप (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) को शिक्षा देने का आदेश देकर बताया गया है कि प्रकार के लोग शिक्षा ग्रहण करेंगे और कौन नहीं करेंगे और दोनों का परिणाम क्या होगा।
- अन्त में बताया गया है कि परलोक की अपेक्षा संसार को प्रधानता देना ग़लत है जिस के कारण मनुष्य मार्गदर्शन से वंचित हो जाता है। फिर कहा गया है कि यही बात जो इस सुरह में बताई गई है पहले के ग्रन्थों में भी बताई गई है।
- सहीह हदीस में है कि नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) दोनों ईद और जुमुआ में यह सूरह और सूरह ग़ाशिया पढ़ते थे। (सहीह मुस्लिम: ८७८)

---

[१] इस सूरह में तीन महत्वपूर्ण विषयों की ओर संकेत किया गया है :

१ – तौहीद (ऐकेश्वरवाद)

२ – नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये कुछ निर्देश।

३ – परलोक (आख़िरत)।

१ – प्रथम आयत में तौहीद की शिक्षा को एक ही आयत में सीमित कर दिया गया है कि अल्लाह के नाम की पवित्राता का सुमरिण करो. जिस का अर्थ यह है कि अल्लाह के नाम की पवित्रता का सुमरिण करो, जिस का अर्थ यह है कि उसे किसी ऐसे नाम से याद न किया जाये जिस में किसी प्रकार का दोष अथवा किसी रचना से उसकी समानता का संशय हो। इसलिये कि संसार में जितनी भी ग़लत आस्थायें है सब की जड़ अल्लाह से संबन्धित कोई न कोई अशुद्ध और ग़लत आस्थायें है सब की जड़ अल्लाह से संबन्धित कोई न कोई अशुद्ध और ग़लत विचार है जिस ने उस के लिये अवैध नाम का रुप धारण कर लिया है। आस्था का सुधार सर्व प्रथम है और अल्लाह को मात्र उन्ही शुभनामों से याद किया जाये जो उस के लिये उचित है।(तर्जुमानुल कुरआन, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद)

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. अपने सर्वोचय प्रभु के नाम की पवित्रता का सुमरिण करो।
२. जिस ने पैदा किया और ठीक ठीक बनाया।
३. और जिस ने अनुमान लगाकर निर्धारित किया, फिर सीधी राह दिखाई।
४. और जिस ने चारा उपजाया।[१]
५. फिर उसे (सुखा कर) कूड़ा बना दिया।[२]
६. (हे नबी!) हम तुम्हें ऐसा पढ़ायेंगे कि भूलोगे नहीं।
७. परन्तु जिसे अल्लाह चाहे। निश्चय ही वह सभी खुली तथा छिपी बातों को जानता है।
८. और हम तुम्हें सरल मार्ग का साहस देंगे।[३]
९. तो आप धमृ की शिक्षा देते रहें। अगर शिक्षा लाभदायक हो।
१०. डरने वाला ही शिक्षा ग्रहण करेगा।
११. और दुर्भाग्य उस से दूर रहेगा।
१२. जो भीषण अग्नि में जायेगा।
१३. फिर उस में न मरेगा न जीवित रहेगा।[४]
१४. वह सफल हो गया जिस ने अपना शुद्धिकरण किया।
१५. तथा अपने पालनहार के नाम का स्मरण किया, और नमाज़ पढ़ी।[१]

---

[१] (२–४) इन आयतों में जिस पालनहार ने अपने नाम की पवित्रता का वर्णन करने का आदेश दिया है उस का परिचय दिया गया है कि वह पालनहार है जिस ने सभी को पैदा किया, फिर उन को संतुलित किया, और उन के लिये एक विशेष प्रकार का अनुमान बनाया जिस की सीमा से नही निकल सकते, और उन के लिये उस कार्य को पूरा करने की राह दिखाई जिस के लिये उन्हें पैदा किया है।

[२] (४–५) इन आयतों में बताया गया है कि प्रत्येक कार्य अनुक्रम से धीरे धीरे होते है। धरती के पौधे धीरे धीरे गुंजान और हरे भरे होते है। ऐसे ही मानवी योग्यतायें भी धीरे धीरे पूरी होती है।

[३] (६–८) इन में नबी सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह निर्देश दिया गया है कि इस की चिन्ता न करें की कुरआन मुझे कैसे याद होगा, इसे याद कराना हमारा काम है, और इसका सुरक्षित रहना हमारी दया से होगा। और यह उसकी दया और रक्षा है कि इस मानव संसार में किसी धार्मिक ग्रन्थ के संबंध में यह दावा नही किया जा सकता कि वह सुरक्षित है, यह गर्व केवल कुरआन को ही प्राप्त है।

[४] (९–१३) इन में बताया गया है कि आप को मात्र इसका प्रचार करना है। और इस की सरल राह यह है कि जो सुने और मानने को तैयार हो उसे शिक्षा दी जाये। किसी के पीछे पड़ने की आवश्यकता नही है। जो हत् भागे है वही नही सुनेंगे और नरक की यातना के रुप में अपना दुष्परिणाम देखेंगें।

१६. बल्कि तुम लोग तो सांसारिक जीवन को प्राथमिकता देते हो।
१७. जबकि आख़िरत (परलोक) का जीवन ही उत्तम और स्थाई है।
१८. यही बात प्रथम ग्रन्थों में है।
१९. (अर्थात) इब्राहीम तथा मूसा के ग्रन्थों में।[२]

*****

[१] (१४–१५) इन आयतों में कहा गया है कि, सफलता मात्र उन के लिये है जो आस्था, स्वभाव तथा कर्म की पवित्रता को अपनायें, और नमाज़ अदा करते रहें।

[२] (१६–१९) इन आयतों का भावार्थ यह है कि वास्तव में रोग यह है कि काफ़िरों को सांसारिक स्वार्थ के कारण नबी की बातें अच्छी नही लगती। जब की परलोक ही स्थायी है। और यही सभी आदि ग्रन्थों की शिक्षा है।

सूरह ग़ाशियह - ८८

सूरह ग़ाशियह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में २६ आयतें है।

- इस की प्रथम आयत में ''अल ग़ाशियह'' शब्द आने के कारण इस का यह नाम रखा गया है। जिस का अर्थ ऐसी आपदा है जो सब पर छा जाये।[1]
- इस की आयत २ से ७ तक में उन का परिणाम बताया गया है जो प्रलय को नहीं मानते और ८ से १६ तक उन का परिणाम बताया गया है जो प्रलय के प्रति विश्वास रखते है।
- आयत १७ से २० तक विश्व की उन निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है जो अल्लाह के सामर्थ्य का प्रमाण है। और जिन पर विचार करने से कुर्आन की बातों को समर्थन मिलता है कि अल्लाह प्रलय लाने तथा स्वर्ग और नरक का संसार बनाने की शक्ति रखता है और प्रतिफल का होना अनिवार्य है।
- आयत २१ से २६ तक नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सम्बोधित किया गया है कि आप का काम मात्र शिक्षा देना है किसी को बलपूर्वक सत्य मनवाना नहीं है। अत: जो आप की शिक्षा सुनने को तय्यार नहीं है उन्हें अल्लाह के हवाले करो। क्यों कि आख़िर उन्हें अल्लाह ही की ओर जाना है, उस दिन वह उन से हिसाब ले लेगा।

*****

[1] यह सूरह मक्की है तथा आरंभिक युग की है। इस में ऐकेश्वरावाद (तौहीद) तथा परलोक के विषय को दोहराया गया है, परन्तु इस की वर्णन शैली कुछ भिन्न है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. क्या तेरे पास पूरी सृष्टिपर छा जाने वाली (क़्यामत) का समाचार आया?
२. उस दिन कितने मुँह सहमे होंगे।
३. परिश्रम करते थके जा रहे होंगे।
४. पर वे धहकती आग में जायेंगे।
५. उन्हें खोलते सोते का जल पिलाया जायेगा।
६. उनके लिये कटीली झाड़ के सिवा कोई भोजन सामग्री नहीं होगी।
७. जो न मोटा करेगी, और न भूख दूर करेगी।[१]
८. कितने मुख उस दिन निमृल होंगे।
९. अपने प्रयास से प्रसन्न होंगे।
१०. ऊँचे स्वर्ग में होंगे।
११. उस मे कोई बकवास नहीं सुनेंगे।
१२. उस में बहता जल स्रोत होगा।
१३. और उस में ऊँचे ऊँचे सिंहासन होंगे।
१४. उस में बहुत सारे प्याले रखे होंगे।
१५. पक्तियों में गलीचे लगे होंगे।
१६. और ममली क़ालीनें बिछी होंगी।[२]
१७. क्या वह ऊँटों को नहीं देखते कि कैसे पैदा किये गये है?
१८. और आकाश को, कि किस प्रकार ऊँचा किया गया?

---

[१] (१–७) इन आयतों में प्रथम संसारिक स्वार्थ में मग्न इन्सानों को एक प्रश्न द्वारा सावधान किया गया है कि उसे उस समय की सूचना है जब एक आपदा समस्त विश्व पर छा जायेगा? फिर इसी के साथ यह विवरण भी दिया गया है कि उस समय इन्सानों के दो भेद हो जायेंगे, और दानों के प्रतिफल भी भिन्न होंगे: एक नरक में तथा दूसरा स्वर्ग में जायेगा। तीसरी आयत में (नासिबह) का शब्द आया है जिस का अर्थ है: थक कर चूर हो जाना, अर्थात काफ़िरों को क़्यामत के दिन इतनी कड़ी यातना दी जायेगी कि उन की दशा बहुत ख़राब हो जायेगी। और वे थके थके से दिखाई देंगे। इस का दूसरा अर्थ यह भी है कि: उन्होंने संसार में बहुत से कर्म किये होंगे परन्तु वह सत्य धर्म के अनुसार नही होंगे, इस लिये व पूजा अर्चना और कड़ी तपस्या करके भी नरक में जायेंगे, इसलिये कि सत्य आस्था के बिना कोई कर्म मान्य नही होगा।

[२] (८–१६) इन आयतों में जो इस संसार में सत्य आस्था के साथ कुरआन आदेशानुसार जीवन व्यतीत कर रहे है परलोक में उन के सदा के सुख का दृश्य दिखाया गया है।

१९. और पर्वतों को कि कैसे गाड़े गये?
२०. तथा धरती को, कि कैसे पसारी गई?[1]
२१. अत: आप शिक्षा (नसीहत) दें, कि आप शिक्षा देने वाले है।
२२. आप उन पर अधिकारी नहीं है।
२३. परन्तु जो मुँह फेरेगा और नहीं मानेगा।
२४. तो अल्लाह उसे भारी यातना देगा।
२५. उन्हें हमारी ओर ही वापस आना है।
२६. फिर हमें ही उन का हिसाब लेना है।[2]

****

[1] (१७–२०) इन आयतों में फिर विषय बदल कर एक और प्रश्न किया जा रहा है कि: जो कुरआन की शिक्षा तथा प्रलोक की सूचना को नही मानते अपने सामने उन चीजों को नही देखते जो रात दिन उन के सामने आती रहती है, ऊँटों तथा प्रवतों और आकाश एवं धरती पर विचार क्यों नही करते कि क्या यह सब अपने आप पैदा हो गये है या इन का कोई रचयिता है? यह तो असंभव है कि रचना हो और रचयिता न हो। यदि मानते है कि किसी शक्ति ने इन को बनाया है जिस का कोई साझी नही तो उस के अकेले पूज्य होने और उस के फिर से पैदा करने की शक्ति और सामर्थ्य का क्यों इन्कार करते है? (तर्जुमानुल कुरआन)

[2] (२१–२६) इन आयतों का भावार्थ यह है कि कुरआन किसी को बलपूर्वक मनवाने के लिये नही है, और न नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह कर्तव्य है कि किसी को बलपूर्वक मनवायें। आप जिस से डरा रहे है यह माने या न मानें वह खुली बात है। फिर भी जो नही सुनते उनको अल्लाह ही समझेगा। यह और इस जैसी कुरआन की अनेक आयतें इस आरोप का खण्डन करती है कि इस्लाम ने अपने मनवाने के लिये अस्त्र शस्त्र का प्रयोग किया।

सूरह फ़ज्र – ८९

सूरह फ़ज्र के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ३० आयतें हैं।

- इस का आरंभ ''वल फ़ज्र'' से होने के कारण इस को यह नाम दिया गया है।
- आयत १ से ५ तक दिन–रात की प्राकृतिक स्थियों को प्रतिफल के दिन के प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। और आयत ६ से १४ तक कुछ बड़ी जातियों के शिक्षाप्रद परिणाम को इस के समर्थन में प्रस्तुत किया गया है कि इस विश्व का शासक सब के कर्मों को देख रहा है और एक दिन वह हिसाब अवश्य लेगा।
- आयत १५ से २० तक में मनुष्य के साथ दुर्व्यवहारों तथा निर्बलों के अधिकार हनन पर कड़ी चेतावनी दी गई और बताया गया है कि ऐसा करने का कारण परलोक का अविश्वास है।
- अन्तिम आयतों में अल्लाह के न्यायालय का चित्र प्रस्तुत करते हुये विरोधियों तथा ईमान वालों का परिणाम बताया गया है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. शपथ है भोर की!
२. तथा दस रात्रियों की!
३. और जोड़े तथा अकेले की!
४. और रात्री की जब जाने लगे!
५. क्या उस में किसी मतिमान (समझदार) के लिये कोई शपथ है?[१]
६. क्या तुम ने नहीं देखा कि तुम्हारे पालनहार ने ''आद'' के साथ क्या किया?
७. स्तम्भों वाले ''इरम'' के साथ?
८. जिन के समान देशों में लोग नहीं पैदा किये गये।
९. तथा ''समूद'' के साथ जिन्होंने घाटियों में चट्टानों को काट रखा था।
१०. और मेखों वाले फ़िरऔन के साथ।
११. जिन्होंने नगरों में उपद्रव कर रखा था।
१२. और नगरों में बड़ा उपद्रव फैला रखा था।
१३. फिर तेरे पालनहार ने उन पर दण्ड का कोड़ा बरसा दिया।
१४. वास्तव में तेरा पालनहार घात में है।[२]
१५. परन्तु जब इन्सान की उस का पालनहार परीक्षा लेता है और उसे सम्मान और धन देता है तो कहता है कि मेरे पालनहार ने मेरा सम्मान किया।
१६. परन्तु जब उस की परीक्षा लेने के लिये उस की जीविका संकीर्ण (कम) कर देता है तो कहता है कि मेरे पालनहार ने मेरा अपमान किया।

---

[१] (१–५) इन आयतों में प्रथम परलोक के सुफल विष्यक चार संसारिक लक्षणों को साक्ष्य (गवाह) के रुप में प्रस्तुत किया गया है। जिस का अर्थ यह है कि कर्मों का फल मिलना सत्य है। रात तथा दिन का यह अनुक्रम जिस व्यवस्था के साथ चल रहा है उस से सिद्ध होता है कि अल्लाह ही इसे चला रहा है। ''दस रात्रियों'' से अभिप्राय ''जुल हिज्जा'' मास की प्रारम्भिक दस रातें है। सहीह हदीसों में इन की बड़ी प्रधानता बताई गई है।

[२] (६–१४) इन आयतों में उन जातियों की चर्चा की गई है जिन्होंने माया मोह में पड़ कर परलोक और प्रतिफल का इन्कार किया, और अपने नैतिक पतन के कारण धरती में उग्रवाद किया। ''आद, इरम'' से अभिप्रेत वह पुरानी जाति है जिसे कुरआन तथा अरब में ''आदे ऊला'' (प्रथम आद) कहा गया है। यह वह प्राचीन जाति है जिस के पास हूद (अलैहिस्सलाम) को भेजा गया। और इन को ''आदे इरम'' इसलिये कहा गया कि यह सामी वंशक्रम की उस शाखा से संबंधित थे जो इरम बिन साम बिन नूह से चली आती थी। आयत नं. ११ में इस का संकेत है कि उग्रवाद का उद्गाम भौतिकवाद एंव सत्य विश्वास का इन्कार है जिसे वर्तमान युग में भी प्रत्यक्ष रुप में देखा जा सकता है।

१७. ऐसा नहीं, बल्कि तुम अनाथ का आदर नहीं करते।
१८. तथा ग़रीब को खाना खिलाने के लिये एक दूसरे को नहीं उभारते।
१९. और मीरास (मृतक सम्पत्ति) के धन को समेट समेट कर खा जाते हो।
२०. और धन से बड़ा मोह रखते हो।[1]
२१. सावधान! जब धरती खण्ड खण्ड कर दी जायेगी।
२२. और तेरा पालनहार स्वंय पदार्पण करेगा, और फ़रिश्ते पंक्तियों में होंगे।
२३. और उस दिन नरक लाई जायेगी, उस दिन इन्सान सावधान हो जायेगा, किन्तु सावधानी लाभ–दायक न होगी।
२४. वह कामना करेगा कि काश! अपने सदा के जीवन के लिये कर्म किये होते।
२५. उस दिन (अल्लाह) के दण्ड के समान कोई दण्ड नहीं देगा।
२६. और न उसके जैसी जकड़ कोई जकड़ेगा।[2]
२७. हे शान्त आत्मा!
२८. अपने पालनहार की ओर चल, तू उस से प्रसन्न, और वह तुझ से प्रसन्न।
२९. तू मेरे भक्तों में प्रवेश कर जा।
३०. और मेरे स्वर्ग में प्रवेश कर जा।[3]



[1] (१५–२०) इन आयतों में समाज की साधारण नैतिक स्थिति की परीक्षा (जायज़ा) ली गई, और भौतिकवादी विचार की आलोचना की गई है जो मात्र सांसारिक धन और मान मर्यादा को सम्मान तथा अपमान का पैमाना समझता है और यह भूल गया है कि न धनी होना कोई पुरस्कार है और न निर्धन होना कोई दण्ड है। अल्लाह दोनों स्थितियों में मानव जाति (इन्सान) की परीक्षा ले रहा है। फिर यह बात किसी के बस में हो तो दूसरे का धन भी हड़प कर जाये, क्या ऐसा करना कुकर्म नही जिस का हिसाब लिया जाये?

[2] (२१–२६) इन आयतों में बताया गया है कि धन पूजने और उस से परलोक न बनाने का दुष्परिणाम नरक की घोर यातना के रुप में सामने आयेगा तब भौतिक वादी कुकर्मियों की समझ में आयेगा कि कुरआन को न मान कर बड़ी भूल हुई और हाथ मलेंगे।

[3] (२७–३०) इन आयतों में उन के सुख और सफलता का वर्णन किया गया है जो कुरआन की शिक्षा का अनुपालन करते हुये आत्मा की शाँती के साथ जीवन व्यतीत कर रहे है।



सूरह बलद – ९०



सूरह बलद के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में २० आयतें हैं।[१]

– इस की प्रथम आयत में अल–बलद (अर्थात: नगर) की शपथ ली गई है। जिस से अभिप्राय मक्का है। और इसी से इस सूरह का यह नाम लिया गहा है।

– इस की आयत १ से ४ तक में जी गवाहियाँ प्रस्तुत की गई है उन से अभिप्राय यह है कि यह संसार सुख विलास के लिये नहीं बनाया गया है। बल्कि इस के बनाने का एक विशेष उद्देश्य है। इसी लिये मनुष्य को दु:ख की स्थिति में पैदा किया गया है।

– आयत ५ स ७ तक में यह चेतावनी दी गई है कि मनुष्य यह न समझे कि उस के ऊपर उस के कर्मों की निगरानी के लिये कोई शक्ति नहीं है।

– आयत ८ से १७ तक में बताया गया है कि मनुष्य के आचरण और कर्म की ऊँचाई तथा नीचाई की राह भी खोल दी गई है। और इस ऊँचाई पर चढ़ कर जो दुर्गम है, वह आचरण और कर्म की ऊँचाई को प्राप्त कर लेता है।

– आयत १८ से २० तक में बताया गया है कि मनुष्य ईमान के साथ आचरण की ऊँचाई द्वारा भाग्यशाली बन जाता है और कुफ्र के कारण नरक की खाई में जा गिरता है जिस से निकलने का फिर कोई उपाय नहीं होगा।

*****

[१] इस सूरह का विषय मानव जाति (इन्सान) को यह समझाना है कि अल्लाह ने सौभाग्य तथा दुर्भाग्य की दोनों राहें खोल दी है। और उन्हें देखने और उन पर चलने के साधन भी सुलभ कर दिये है। अब इन्सान के अपने प्रयास पर निर्भय है कि वह कौन सा मार्ग अपनाता है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. मै इस नगर (मक्का) की शपथ लेता हूँ!

२. तथा तुम इस नगर में प्रवेश करने वाले हो।

३. तथा सौगन्ध है पिता एंव उस की संतान की।

४. हम ने इन्सान को कष्ट में घिरा हुआ पैदा किया है।

५. क्या वह समझता है कि उस पर किसी का वश नहीं चलेगा?[1]

६. वह कहता है कि मै ने बहुत धन खर्च कर दिया।

७. क्या वह समझता है कि उसे किसी ने देखा नहीं?[2]

८. क्या हम ने उसे दो आँखें नहीं दी?।

९. और एक ज़बान तथा दो होंट नहीं दिये?

१०. और उसे दोनों मार्ग दिखा देये?

११. तो वह घाटी में घुसा ही नहीं।

१२. और तुम क्या जानो कि घाटी क्या है?

१३. किसी दास को मुक्त करना।

१४. अथवा भूक के दिन (अकाल) में खाना खिलाना।

१५. किसी अनाथ संबंधी को।

१६. अथवा मिट्टी में पड़े निर्धन को।[3]

---

[1] (१–५) इन आयतों में सर्व प्रथम मक्का नगर में नबी सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जो घटनायें घट रही थीं, और आप तथा आप के अनुयाईयों को सताया जा रहा था, उस को साझी के रुप में प्रस्तुत किया गया है कि: इन्सान की पैदाइश (रचना) संसार का स्वाद लेने के लिये नही हुई है। संसार परिश्रम तथा पीड़ायें झेलने का स्थान है। कोई इन्सान इस स्थिति से गुज़रे बिना नही रह सकता। ''पिता'' से अभिप्राय: आदम अलैहिस्सलाम, और ''संतान'' से अभिप्राय: समस्त मानव जाति (इन्सान) है।

फिर इन्सान के इस भ्रम को दूर किया है कि उस के ऊपर कोई शक्ति नही है जो उस के कर्मों को देख रही है, और समय आने पर उस की पकड़ करेगी।

[2] (६–७) इन में यह बताया गया है कि संसार में बड़ाई तथा तथा प्रधानता के ग़लत पैमाने बना लिये गये है, और जो दिखावे के लिये धन व्यय (खर्च) करता उस की प्रशंसा की जाती है जब कि उस के ऊपर एक शक्ति है जो यह देख रही है कि उस ने किन राहों में और किस लिये धन खर्च किया है।

[3] (८–१६) इन आयतों में फ़रमाया गया है कि: इन्सान को ज्ञान और चिन्तन के साधन और योग्यतायें दे कर हम ने उस के सामने भलाई तथा बुराई के दोनों मार्ग खोल दिये है, एक नैतिक पतन की ओर ले जाता है और उस में मन को अति स्वाद मिलता है। दूसरा नैतिक ऊँचाईयों की राह जिस में कठिनाईयाॅ हैं। और उसी को घाटी कहा गया है। जिस में प्रवेश

१७. फिर वह उन लोगों में होता है जो ईमान लाये, और जिन्होंने धैर्य (सहन शीलता) एवं उपकार के उपदेश दिये।

१८. यही लोग सौभाग्यशाली (दायें हाथ वाले) है।

१९. और जिन लोगों ने हमारी आयतों को नहीं माना यही लोग दुर्भाग्य (बायें हाथ वाले) है।

२०. ऐसे लोग हर ओर से आग में घिरे होंगे।

*****

करने वालों के कर्तव्य में है कि दासों को मुक्त करें, निर्धनों को भोजन करायें इत्यादी वही लोग स्वर्ग वासी है। आयत नं. १७ का अर्थ यह है कि सत्य विश्वास (ईमान) के बिना कोई शुभकर्म मान्य नही है। इस में सुखी समाज की विशेषता भी बताई गई है कि: दूसरे को सहन शीलता तथा दया का उपदेश दिया जाये और अल्लाह पर सत्य विश्वास रखा जाये।

सूरह शम्स – ९१

सूरह शम्स के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में १५ आयतें हैं।

- इस सूरह की प्रथम आयत में ''शम्स'' (सूर्य) की शपथ ली गई है, इसी लिये इस का यह नाम रखा गया है।[1]
- इस की आयत १ से १० तक सूर्य–चाँद और रात–दिन तथा धरती और आकाश की उन बड़ी निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है जो इस विश्व के पैदा करने वाले की पूर्ण शक्ति तथा गुणों का ज्ञान कराती है। और फिर मनुषय की आत्मा की गवाही को अच्छे तथा बुरे कर्मफल के समर्थन में प्रस्तुत किया गया है।
- आयत ११ से १३ तक में इस की एतिहासिक गवाही प्रस्तुत की गई है और आद तथा समूद जाति की कथा संक्षेप में बता कर उन के कुकर्मों के शिक्षाप्रद परिणाम लोगों की शिक्षा के लिये प्रस्तुत किये गये है ताकि वह कुरआन तथा इस्लाम के नबी का विरोध न करें।

*****

[1] इस सूरह का विषयः पुन और पाप का अन्तर समझाना है, तथा उन्हें बुरे परिणाम की चेतावनी देना जो इस अंतर को समझने से इन्कार करते है, तथा बुराई की राह पर चलने का दुराग्रह करते हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. सूर्य तथा उस की धूप की शपथ है!
२. और चाँद की शपथ जब उस के पीछे निकले!
३. और दिन की शपथ जब उसे (अर्थात् सूर्य को) प्रकट कर दे!
४. और रात्री की सौगन्ध जब उसे (सूर्य को) छुपा ले!
५. और आकाश की सौगन्ध, तथा उस की जिस ने उसे बनाया!
६. तथा धरती की सौगन्ध और जिस ने उसे फैलाया![1]
७. और जीव की सौगन्ध, तथा उस की जिस ने उसे ठीक ठीक सुधारा।
८. फिर उसे दुराचार तथा सदाचार का विवेक दिया है।[2]
९. वह सफल हो गया जिस ने आपने जीव का सुद्धिकरण किया।
१०. तथा वह क्षति में पड़ गया जिस ने उसे (पाप में) धंसा दिया।[3]
११. ''समूद'' जाति ने अपने दुराचार के कारण (ईश दूत) को झुठलाया।
१२. जब उन में से एक हत्भागा तैयार हुआ।
१३. (ईश दूत: सालेह ने) उन से कहा कि अल्लाह की ऊँटनी और उस के पीने की बारी की रक्षा करो।
१४. किन्तु उन्होंने नहीं माना, और उसे बध कर दिया जिस के कारण उन के पालनहार ने यातना भेज दी और उन को चौरस कर दिया।

---

[1] (१–६) इन आयतों का भावार्थ यह है कि जिस प्रकार सूर्य के विपरीत चाँद, तथा दिन के विपरीत रात है, इसी प्रकार पुन और पाप तथा इस संसार का प्रति एक दूसरा संसार परलोक भी है। और इन्ही स्वभाविक लक्ष्यों से परलोक का विश्वास होता है।

[2] (७–८) इन आयतों में कहा गया है कि अल्लाह ने इन्सान को शारीरिक और मांसिक शक्तियाँ दे कर बस नही किया, बल्कि उस ने पाप और पुन का स्वभाविक ज्ञान दे कर नबियों को भी भेजा। और वह्यी (प्रकाशना) द्वारा पाप और पुन के सभी रुप समझा दिये। जिस की अन्तिम कड़ी:कुरआन, और अन्तिम नबी: मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है।

[3] (९–१०) इन दोनों आयतों में यह बताया जा रहा है कि अब भविष्य की सफलता और विसफलता इस बात पर निर्भर है कि कौन अपनी स्वभाविक योग्यता का प्रयोग किस के लिये कितना करता है। और इस प्रकाशना: कुरआन के आदेशों को कितना मानता और पालन करता है।

१५. और वह इस के परिणाम से नहीं डरता।[1]

*****

[1] (११–१५) इन आयतों में समूद जाति का ऐतिहासिक उदाहरण दे कर दूतत्व (रिसालत) का महत्व समझाया गया है कि नबी इसलिये भेजा जाता है ताकि भलाई और बुराई का जो स्वभाविक ज्ञान अल्लाह ने इन्सान के स्वभाव में रख दिया है उसे उभारने में उस की सहायता करे। ऐसे ही एक नबी जिन का नाम सालेह था समूद जाति की ओर भेजे गये। परन्तु उन्होंने उन को नही माना, तो वे ध्वस्त कर दिये गये।

उस समय मक्का के मूर्ति पूजकों की स्थिति समूद जाति से मिलती जुलती थी। इसलिये उन को ''सालेह'' नबी की कथा सुना कर सचेत किया जा रहा है कि सावधान: कही तुम लोग भी समूद की तरह यातना में न घिर जाओ। वह तो हमारे नबी सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम की इस प्रार्थना के कारण बच गये कि हे अल्लाह! इन्हें नष्ट न कर। क्योंकि इन्ही में से ऐसे लोग उठेंगे जो तेरे धर्म का प्रचार करेंगे। इस लिये कि अल्लाह ने आप सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम को सारे संसारों के लिये दयालु बना कर भेजा था।



सूरह लैल–९२



सूरह लैल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में २१ आयतें है।

- इस की प्रथम आयत में ''लैल'' अर्थात रात की शपथ ली गई है, जिस के कारण इस का यह नाम रखा गया है।[1]
- आयत १ से ४ तक में कुछ गवाहियाँ प्रस्तुत कर के इस बात का तर्क दिया गया है कि जब मनुष्य के प्रयासों तथा कर्मों में अन्तर है तो उन के प्रतिफल में भी अन्तर का होना आवश्यक है।
- आयत ५ से ११ तक में सत्कर्मों और दुष्कर्मों और दुष्कर्मों की कुछ विशेषताओं का वर्णन कर के बताया है कि सत्कर्म पुन् की राह पर ले जात है और दुष्कर्म पाप की राह पर ले जाते है।
- आयत १२ से १४ तक में बताया गया है कि अल्लाह का काम सीधी राह दिखा देना है और उस ने तुम्हें उसे दिखा दिया। संसार तथा परलोक का वही मालिक है। उस ने बता दिया है कि परलोक में क्या होना है।
- अन्त में दुराचारियों के बुरे अन्त तथा सदाचारियों के अच्छे अन्त को बताया गया है।

*****

[1] इस सूरह का मूल विषय यह है कि सब कुछ अल्लाह के हाथ में है। वह किसी पर अन्याय नही करता। इसलिये सचेत कर दिया गया है कि बुरे काम का परिणाम बुरा होता है। और अच्छे काम का परिणाम अच्छा। अब यह बात तुम पर छोड़ी जा रही है कि तुम कोनसा मार्ग ग्रहण करते हो।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. रात्री की शपथ जब छा जाये!
२. तथा दिन की शपथ जब उजाला हो जाये!
३. और उस की शपथ जिस ने नर और मादा पैदा किये!
४. वास्तव में तुम्हारे प्रयास अलग अलग है।[1]
५. फिर जिस ने दान दिया, और भक्ति का मार्ग अपनाया,
६. और भली बात की पुष्टि करता रहा।
७. तो हम उस के लिये सरलता पैदा कर देंगे।
८. परन्तु जिस ने कंजूसी की, और ध्यान नहीं दिया,
९. और भली बात को झुठला दिया।
१०. तो हम उस के लिये कठिनाई को प्राप्त करना सरल कर देंगे।[2]
११. और जब वह गढ़े में गिरेगा तो उसका धन उसके काम नहीं आयेगा।
१२. हमारा कर्त्तव्य इतना ही है कि हम सीधा मार्ग दिखा दें।
१३. जब कि आलोक परलोक हमारे ही हाथ में है।
१४. मै ने तुम को भड़कती आग से सावधान कर दिया है।[3]

---

[1] (१–४) इन आयतों का भावार्थ यह है कि: जिस प्रकार रात दिन तथा नर मादा (स्त्री–पुरुष) भिन्न है, और उन के लक्षण और प्रभाव भी भिन्न है, इसी प्रकार मानव जाति (इन्सान) के विश्वास, कर्म भी दो भिन्न प्रकार के है। और दोनों के प्रभाव और परिणाम भी विभिन्न है।

[2] (५–१०) इन आयतों में दोनों भिन्न कर्मों के प्रभाव का वर्णन है कि कोई अपना धन भलाई में लगाता है तथा अल्लाह से डरता है और भलाई को मानता है। सत्य आस्था, स्वभाव और सत्कर्म का पालन करता है। जिस का प्रभाव यह होता है कि अल्लाह उस के लिये सत्कर्मों का मार्ग सरल कर देता है। और उस में पाप करने तथा स्वार्थ के लिये अवैध धन अर्जन की भावना नही रह जाती। ऐसे व्यक्ति के लिये दोनो लोक में सुख है। दूसरा वह होता है जो धन का लोभी, तथा अल्लाह से निश्चिन्त होता है और भलाई को नही मानता। जिस का प्रभाव यह होता है कि उस का स्वभाव ऐसा बन जाता है कि उसे बुराई का मार्ग सरल लगने लगता है। तथा अपने स्वार्थ और मनोकामना की पूर्ति के लिये प्रयास करता है। फिर इस बात को इस वाक्य पर समाप्त कर दिया गया है कि धन के लिये वह जान देता है परन्तु वह उसे अपने साथ लेकर नही जायेगा। फिर वह उस के किस काम आयेगा?

[3] (११–१४) इन आयतों में मावन जाति (इन्सान) को सावधान किया गया है कि अल्लाह का, दया और न्याय के कारण मात्र यह दायित्व था कि सत्य मार्ग दिखा दे। और कुर्आन द्वारा उस ने अपना यह दायित्व पूरा कर दिया। किसी को सत्य मागृ पर लगा देना उस का दायित्व नही है। अब इस सीधी राह को अपनाओगे तो तुम्हारा ही भला होगा। अन्यथा याद

१५. जिस में केवल बड़ा हत्भागा ही जायेगा।

१६. जिस ने झुठला दिया, तथा (सत्य से) मुँह फेर लिया।

१७. परन्तु संयमी (सदाचारी) उस से बचा लिया जायेगा।

१८. जो अपना धन दान करता है ताकि पवित्र हो जाये।

१९. उस पर किसी का कोई उपकार नहीं जिसे उतारा जा रहा है।

२०. वह तो केवल अपने परम पालनहार की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये है।

२१. निःसंदेह वह प्रसन्न हो जायेगा।[१]

*****

रखो कि संसार और परलोक दोनों ही अल्लाह के अधिकार में है। न यहाँ कोई तुम्हें बचा सकता है, और न वहाँ कोई तुम्हारा सहायक होगा।

[१] (१५-२१) इन आयतों में यह वर्णन किया गया है कि कौन से कुकर्मी नरक में पड़ेंगे और कौन सुकर्मी उस से सुरक्षित रखे जायेंगे। और उन्हें क्या फल मिलेगे। आयत नं. १० के बारे में यह बात याद रखने की है कि अल्लाह ने सभी वस्तुओं और कर्मों का अपने नियामानुसार स्वभाविक प्रभाव रखा है। और कुरआन इसी लिय सभी कर्मों के स्वभाविक प्रभाव और फल को अललाह से जोड़ता है। और यूँ कहता है कि उन के दिलों पर मुहर लगा दी, जिस का अर्थ यह होता है कि यह अल्लाह के बनाये हुये नियमों के विरोध का स्वभाविक फल है। (देखिये: उम्मुल किताब, मौलाना आज़ाद)



सूरह ज़ुहा– ९३



सूरह ज़ुहा के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में ११ आयतें हैं।

- इस के आरंभ में ''ज़ुहा'' (दिन के उजाले) की शपथ ग्रहण करने के कारण इस का यह नाम रखा गया है।[1]
- आयत १ से २ तक में दिन और रात की गवाही प्रस्तुत कर के इस की ओर संकेत किया गया है कि इस संसार में अल्लाह ने जैसे उजाला और अंधेरा दोनों बनाये है इसी प्रकार परीक्षा के लिये दुःख और सुख भी बनाये है।
- आयात ३ में बताया गया है कि सत्य की राह में नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) जिस दुःख का सामना कर रहे हैं उस से यह नहीं समझना चाहिये कि अल्लाह ने आप से खिन्न हो कर आप को छोड़ दिया है।
- ४, ५ में आप को सफलताओं की शुभ सूचना दी गई है।
- आयत ६ से ८ तक में उन दुःखों की चर्चा की गई है जिन से आप नबी होने से पहले जूझ रहे थे तो अल्लाह के उपकारों से आप की राहें खुली।
- आयत ९ से ११ तक में यह बताया गया है कि इन उपकारों के कारण आप का व्यवहार निर्बलों तथा अनाथों की सहायता एवं अल्लाह के उपकारों का स्वीकार तथा प्रदर्शन होना चाहिये।

[1] यह सूरह आरंभिक युग की है। भाष्य कारों ने लिखा है कि कुछ दिन के लिये नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर प्रकाशना (वह्यी) का उतरना रुक गया। जिस पर आप अति दुःखित और चिन्तित हो गये कि कहीं मुझ से कोई दोष तो नहीं हो गया? इस पर आप को सांत्वना देने के लिये यह सूरह अवतीर्ण हुई। इस में सर्व प्रथम प्रकाशित दिन तथा रात्री की शपथ ले कर नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) को विश्वास दिलाया गया है कि आप के पालनहार ने न तो आप को छोड़ा है और न ही आप से अप्रसन्न हुआ है। इसी के साथ आप को यह शुभ सूचना भी दी गई है कि आगामी समय आप के लिये प्रथम समय से उत्तम होगा। यह भविष्य वाणी उस समय की गई जब इस के दूर दूर तक कोई लक्षण नही दिखाई पड़ रहे थे। सम्पूर्ण मक्का आप का विरोधी हो गया था। और अल्लाह के सिवा आप का कोई सहायक नही था। परन्तु मात्र इक्कीस वर्षों में पूरा मक्का इस्लाम का अनुयायी बन गया। और फिर पूरे अरब द्वीप में इस्लाम का ध्वजा लहराने लगा। और कुरआन की यह भविष्यवाणी शत प्रतिशत पूरी हुई जो कुरआन के अल्लाह का वचन होने का पमाण बन गई।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. शपथ है दिन चढ़े की!
२. और शपथ है रात्री की जब उस का सन्नाटा छा जाये!
३. (हे नबी) तेरे पालनहार ने तुझे न तो छोड़ा और न ही विमुख हुआ।
४. और निश्चय ही आगामी युग तेरे लिये प्रथम युग से उत्तम है।
५. और तेरा पालनहार तुम्हें इतना देगा कि तू प्रसन्न हो जायेगा।
६. क्या उस ने तुम्हें अनाथ पा कर शरण नहीं दी?
७. और तुझे पथ भूला हुआ पाया तो सीधा मार्ग नहीं दिखाया?
८. और निर्धन पाया तो धनी नहीं कर दिया?
९. तो तुम अनाथ पर क्रोध न करना।[१]
१०. और माँगने वाले को न झिड़कना।
११. और अपने पालनहार के उपकार का वर्णन करना।[२]

*****

[१] (१–९) इन आयतों में अल्लाह ने नबी सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम से फ़रमाया है कि: तुम्हें यह चिन्ता कैसे हो गई कि हम अप्रसन्न हो गये? हम ने तो तुम्हारे जन्म के दिन से निरंतर तुम पर उपकार किये है। तुम अनाथ थे तो तुम्हारे पालन और रक्षा की व्यवस्था की। राह से अंजान थे तो राह दिखाई। निर्धन थे तो धनी बना दिया। यह बातें बता रही है कि तुम आरम्भ ही से हमारे प्रियवर हो और तुम पर हमारा उपकार निरंतर है।

[२] (१०–११) इन अन्तिम आयतों में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बताया गया है कि: हम ने तुम पर जो उपकार किये है उन के बदले में तुम अल्लाह की उत्पत्ति के साथ दया और उपकार करो यही हमारे उपकारों की कृतज्ञता होगी।



सूरह शर्ह– ९४



सूरह शर्ह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ८ आयतें हैं।

- इस सूरह के आरंभ में इन शब्दों के आने के कारण इस का यह नाम रखा गया है। जिस का अर्थ है: साहस, संतोष तथा सत्य को अपनाना है।
- इस की प्रथम आयत १ से ३ तक नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर अल्लाह के इसी उपकार तथा आप से बोझ उतार देने का वर्णन है।[1]
- आयत ४ में आप की शखन और चर्चा ऊँची करने की शुभसूचना दी गई है।
- आयत ५ से ६ तक में आप (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) को संतोष दिलाया गया है कि वर्तमान कठिन स्थितियों के पश्चात् अच्छी स्थितियाँ आने ही को है।
- आयत ७ से ८ तक में यह निर्देश दिया गया है कि जब आप अपने संसारिक कार्य पूरे कर लें तो अपने पालनहार की वंदाना (उपासना) में प्रयास करें और उसी की और ध्यानमग्न हो जायें।

*****

[1] इस सूरह का विषय सूरह जुहा ही के समान है। परन्तु इस में सत्य का उपदेश देने के समय नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को जिन स्थितियों का सामना करना पड़ा कि जिस समाज में आप का बड़ा आदर मान था, वही समजा अब आप का विरोधी बन गया। कोई आप की बात सुनने को तैयार न था। यह आप के लिये बड़ी घोर स्थिति थी। अत: आप को सांत्वना दी गई आप हताश न हों बहुत शीघ्र ही यह अवस्था बदल जायेगी।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. (हे नबी) क्या हम ने तुम्हारे लिये तुम्हारा वक्ष (सीना) नहीं खोल दिया?
२. और तुम्हारा बोझ नहीं उतार दिया?
३. जिस ने तुम्हारी पीठ तोड़ दी थी।
४. और तुम्हारी चर्चा को ऊँचा कर दिया।[1]
५. निश्चय कठिनाई के साथ आसानी भी है।
६. निश्चय कठिनाई के साथ आसानी भी है।[2]
७. अत: जब अवसर मिले तो आराधना में प्रयास करो।
८. और अपने पालनहार की ओर ध्यान मग्न हो जाओ।[3]



[1] (१–४) इन का भावार्थ यह है कि हम ने आप पर तीन ऐसे उपकार किये है जिन के होते आप को निराश होने की आवश्यक्ता नही। एक यह कि आप के वक्ष को खोल दिया, अर्थात आप में स्थितियों का सामना करने का साहस पैदा कर दिया। दूसरा यह कि नबी होने से पहले जो आप के दिल में अपनी जाति की मूर्ति पूजा और सामाजिक अन्याय को देख कर चिन्ता और शोक का बोझ था जिस के कारण आप दु:खित रहा करते थे। इस्लाम का सत्य मार्ग दिखा कर उस बोझ को उतार दिया । क्योंकि यही चिन्ता आप की कमर तोड़ रही थी। और तीसरा विशेष उपकार यह कि आप का नाम ऊँचा कर दिया। जिस से अधिक तो क्या आप के बराबर भी किसी का नाम इस संसार में नही लिया जा रहा है। यह भविष्यवाणी कुरआन शरीफ़ ने उस समय की जब एक व्यक्ति का विरोध उस की पूरी जाति और समाज तथा उस का परिवार तक कर रहा था। और यह सोचा भी नही जा सकता था कि व इतना बड़ा विश्व विख्यात व्यक्ति हो सकता है। परन्तु समस्त मानव संसार कुरआन की इस भविष्यवाणी के सत्य होने का साक्षी है। और इस संसार का कोई क्षण ऐसा नही गुज़रता जब इस संसार के किसी देश और क्षेत्र में अजानों में ''अशहदु अन्ना मुहम्मदर रसूल्लुल्लाह'' की आवाज़ न गूँज रही हो। इस के सिवा भी पूरे विश्व में जितना आप का नाम लिया जा रहा है और जितना कुरआन का अध्ययतन किया जा रहा है वह किसी व्यक्ति और किसी धर्म पुस्तक को प्राप्त नही, और यही अन्तिम नबी और कुरआन के सत्य होने का साक्ष्य है, जिस पर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिये।

[2] (५–६) इन आयतों में विश्व का पालनहार अपने भक्त (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को विश्वास दिला रहा है कि उलझनों का यह समय देर तक नही रहेगा इसी के साथ सरलता तथा सुविधा का समय भी लगा आ रहा है। अर्थात आप का आगामी युग व्यतीत युग से उत्तम होगा जैसा कि ''सूरह जुहा'' में कहा गया है।

[3] (७–८) इन अन्तिम आयतों में आप को निर्देध दिया गया है कि जब अवसर मिले तो अल्लाह की उपासना में लग जाओ, और उस में ध्यान मग्न हो जाओ, यही सफलता का मार्ग है।



सूरह तीन – ९५



सूरह तीन के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में ८ आयतें है।

- इस की प्रथम आयत में ''तीन'' शब्द, जिस का अर्थ: इंजीर है, के आने के कारण इस का यह नाम रखा गया है।[1]
- इस की आयत १ से ३ तक उन स्थानों को गवाही में प्रस्तुत किया गया है जिन से बड़े नबी उठे और मागृदर्शन का प्रकाश फैला।
- आयत ४ से ६ तक में बताया गयाह है कि अल्लाह ने इन्सान को उत्तम रुप पर पैदा किया है ताकि वह ऊँचा स्थान प्राप्त करे। किन्तु वह नीचा बन गया और बहुत नीची खाई में जा पड़ा। फिर जिस ने ईमान और सदाचार कर के ऊँचा स्थान प्राप्त कर लिया, तो वह सफल हो गया। और उस के लिये अनन्त प्रतिफल है।

[1] ''तीन'' का अर्थ है: इन्जीर। इसी शब्द से इस सूरह का नाम लिया गया है। फ़लस्तीन तथा शाम जो प्राचीन युग से नबियों के केंद्र चले आ रहे थे, जैतून तथा इंजीर की उपज का क्षेत्र था। और मक्के के लोग इन देशों में व्यापार के लिये जाया करते थे, इसलिये वे उनकी मुहब्बत से भली भाँती परिचित थे। ''तुर'' पर्वत सीना कं मरुस्थल में है। यही पर मूसा (अलैहिस्सलाम) की धर्म विधान प्रदान किया गया था।

''शान्ति नगर'से अभिप्राय: मक्का नगर है। और इब्राहीम (अलौहिस्सलाम) की दुआ के कारण इस का नाम शान्ति का नगर रखा गया है। जिस में अन्तिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पूरे मानव विश्व के पथ प्रदर्शक बना कर भेजे गये।

इस की भूमिका यह है कि सर्व प्रथम उत्साह शील नबियों के केन्द्रों को शपथ अर्थात साक्ष्य के रुप रेखा में सर्वोच्च स्वभाव एवं योग्यताओं के साथ पैदा किया है। परन्तु इस उच्चता को स्थित रखने तथा इन उत्तम योग्यताओ को उभारने के लिये उस का यह नियम बनाया है कि: जो ईमान (विश्वास) तथा सत्कर्म की रहा अपनायेंगे, जो कुरआन की रह है और इस राह की कठिनाईयों से संघर्ष करने का साहस करेंगे तो उन्हें परलोक में अपने प्रयासों का भरपूर पुरस्कार मिलेगा। और जो संसारिक स्वार्थ और सुख के लिये इस राह की कठिनाईयों का सामना करने का साहस नही करेंगे, अल्लाह उन्हें उसी राह पर छोड़ देगा। और अन्तत: उस गढ़े में जा गिरेंगे जो इस के राहियों का भाग्य है।

भावार्थ यह है कि जब इन्सानों के दो भेद है तो न्यायोचित यही है कि उन के कर्मों के फल भी दो हों। फिर अल्लाह जो न्यायधीशों का न्यायधीश है वह न्याय क्यो नही करेगा?। (तर्जुमानुल कुरआन)

– आयत ७ से ८ तक में कहा गया है कि अल्लाह सब से बड़ा न्यायधीश है। तो उस के यहाँ यह कैसे हो सकता है कि अच्छे–बुरे सब परिणाम में बराबर हो जायें? या दोनों को कोई परिणाम और प्रतिफल ही न हो? यह बात न्यायोचित नहीं है।

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. इंजीर तथा ज़ैतून की शपथ!

२. एवं ''तूरे सीनीन'' की शपथ!

३. और इस शान्ति के नगर की शपथ!

४. हम ने इन्सान को मनोहर रुप में पैदा किया है।

५. फिर उसे सब से नीचे गिरा दिया।

६. परन्तु जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये उन के लिये ऐसा बदला है जो कभी समाप्त नहीं होगा।

७. फिर तुम (मानवजाति) प्रतिफल (बदले) के दिन को क्यों झुठलाते हो?

८. क्या अल्लाह सब अधिकारियों से बढ़ कर अधिकारी नहीं?

*****

सूहर अलक़ – ९६

सूहर अलक़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में १९ आयतें है।

- इसकी आयत २ में इन्सान के अलक़ अर्थात बंधे हुये रक्त से पैदा किये जाने की चर्चा की गई है। इस लिये इस का यह नाम रखा गया है।[1]
- इस की आयत १ से ५ तक में कुरआन पढ़ने का निर्देश दिया गया है। तथा बताया गया है कि अल्लाह ने मनुष्य को कैसे पैदा किया और ज्ञान प्रदान किया है?
- इस की आयत ६ से ८ तक इन्सान को चेतावनी दी गयी है कि वह अल्लाह के इन उपकारों का आदर न कर के कैसे उल्लंघन करता है? जब कि उसे फिर अल्लाह ही के पास पहुंजना है?
- आयत ९ से १४ तक उस की निन्दा की गई है जो नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) का विरोध करता था और आप की रहा में बाधायें उत्पन्न करता था।
- आयत १५ से १८ तक विरोधियों को बुरे परिणाम की चेतावनी दी गई है।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और ईमान वालों को निर्देश दिया गया है कि उस की बात न मानो और अल्लाह की वंदना में लगे रहो।

हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पहले सच्चा सपना देखते थे फिर जिब्रील आये और आप को यह (पाँच) आयतें पढ़ाईं। (सहीह बुखारी: ४९५५)

अबू जह्ल ने कहा कि यदि मुहम्मद को काबा के पास नमाज़ पढ़ते देखा तो उस की गर्दन रौद दूँगा। जब आप को इस की सूचना मिली तो कहा: यदि वह ऐसा करता तो फ़रिश्ते उसे पकड़ लेते। (सहीह बुखारी: ४९५८)

*****

[1] यह सूरह मक्की है। और इस की प्रथम पाँच आयतें पहली वह्यी (प्रकाशना) है जैसा कि बुखारी (हदीस नं. ४९५३) और मुस्लिम (हदीस नं. १६०) में आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से उल्लिखित है। इस का दूसरा भाग उस समय उतरा जब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को आप के मूर्ति पूजक चचा अबू जहल ने ''काबा'' के पास नमाज़ से रोक दिया। सूरह के अन्त में आप को निर्भय हो कर नमाज़ अदा करने और धमकियों पर ध्यान न देने के लिये कहा गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. अपने उस पालनहार के नाम से पढ़ जिस ने पैदा किया।
२. जिस ने मनुष्य को रक्त के लोथड़े से पैदा किया।
३. पढ़, और तेरा पालनहार बड़ा दया वाला है।
४. जिस ने लेखनी के द्वारा ज्ञान सिखाया।
५. इन्सान को उस का ज्ञान दिया जिस को वह नहीं जानता था।[१]
६. वास्तव में इन्सान सरकशी करता है।
७. इसलिये कि वह स्वंय को निश्चिन्त (धनवान) समझता है।
८. नि: संदेह फिर तेरे पालनहार की ओर पलट कर जाना है।[२]
९. क्या तुम ने उस को देखा जो रोकता है।

---

[१] (१–५) इन आयतों में प्रथम (प्रकाशना) का वर्णन है। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मक्का से कुछ दूर ''जबले नूर'' (ज्योति पर्वत) की एक गुफा में जिस का नाम ''हिरा'' है जाकर एकान्त में अल्लाह को याद किया करते थे। और वही कई दिन तक रह जाते थे। एक दिन अप इसी गुफा में थे कि: अकस्मात आप पर प्रथम वह्यी (प्रकाशना) लेकर फ़रिश्ता उतरा। और आप से कहा ''पढ़ो''। आप ने कहा, मै पढ़ना नही जानता। इस पर फ़रिश्ते ने आप को आपने सीने से लगार दबाया। इसी प्रकार तीन बार किया और आप को पाँच आयतें सुनाईं। यह प्रथम प्रकाशना थी। अब आप मुहम्मद पुत्र अब्दुल्लह से मुहम्मद रसूलुल्लाह हो कर डरते काँपते घर आये। इस समय आप की आयु ४० वर्ष थी। घर आकर कहा कि मुझे चादर उढ़ा दो। जब कुछ शांत हुये तो अपनी पत्नी ादीजा (रज़ियल्लाहु अन्हा) को पूरी बात सुनाई। उन्हों ने आप को सांत्वना दी और अपने चचा के पुत्र ''वरक़ा बिन नौफल'' के पास ले गईं जो ईसाई विद्वान थे। उन्हों ने आप की बात सुन कर कहा: यह वही फ़रिश्ता है जो मूसा (अलैहिस्सलाम) पर उतारा गया था। काश में तुम्हारी नुबुव्वत (दूतत्व) के समय शक्ति शाली युवक होता और उस समय तक जीवित रहता जब तुम्हारी जाति तुम्हें मक्के से निकाल देगी। आप ने कहा क्या लोग मुझे निकाल देंगे? वरक़ा ने कहा, कभी ऐसा नही हुआ कि जो आप लाये है उस से शत्रुता न की गई हो। यदि मै ने आप का वह समय पाया तो आप की भरपूर सहायता करूँगा।

परन्तु कुछ ही समय गुज़रा था कि वरक़ा का देहान्त हो गया। और वह समय आया जब आप को १३ वर्ष बाद मक्का से निकाल दिया गया। और आप मदीना की ओर हिज्रत (प्रस्थान) कर गये। (देखिये: इब्ने कसीर)

आयत नं. १ से ५ तक निर्देश दिया गया है कि अपने पालनहार के नाम से उस के आदेश: कुरआन का अध्यन करो जिस ने इन्सान को रक्त के लोथड़े से बनाया। तो जिस ने अपनी शक्ति और दक्षात से जीता जागता इन्सान बना दिया वह उसे पुन: जीवित कर देने की भी शक्ति रखता है। फिर ज्ञान अर्थात कुरआन प्रदान किये जाने की शुभ सूचना दी गई है।

[२] (६–८) इन आयतों में उन को धिक्कारा है जो धन के अभिमान में अल्लाह की अवज्ञा करते है और इस बात से निश्चिन्त है कि: एक दिन उन्हें अपने कर्मों का जवाब देने के लिये अल्लाह के पास जाना भी है।

१०. एक भक्त को जब वह नमाज़ अदा करे।
११. भला देखो तो, यदि वह सीधे मार्ग पर हो।
१२. या अल्लाह से डरने का आदेश देता हो?
१३. और देखो तो, यदि उस ने झुठलाया तथा मुँह फेरा हो?[१]
१४. क्या वह नहीं जानता कि अल्लाह उसे देख रहा है?
१५. निश्चय यदि वह नहीं रुकता तो हम उसे माथे के बल घसीटेंगे।
१६. झूठे और पापी माथे के बल।
१७. तो वह अपनी सभा को बुला ले।
१८. हम भी नरक के फ़रिश्तों को बुलायेंगे।[२]
१९. (हे भक्त) कदापि उस की बात न सुनो तथा सज्दा करो और मेरे समीप हो जाओ।[३]

*****

[१] (९-१३) इन आयतों में उन पर धिक्कार है जो नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विरोध पर तुल गये। और इस्लाम और मुसलमानों की राह में रुकावट न डालते और नमाज़ से रोकते है।

[२] (१४-१८) इन आयतों में स्तय के विरोधी को दुष्परिणाम की चेतावनी है।

[३] इस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के माध्यम से साधारण मुसलमानों को निर्देश दिया गया है कि सहन शीलता के साथ किसी धमकी पर ध्यान देते हुये नमाज़ अदा करते रहो ताकि इस के द्वारा तुम अल्लाह के समीप हो जाओ।



सूरह क़द्र – ९७



सूरह क़द्र के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ५ आयतें है।[1]

– इस में सब से पहले बताया गया है कि कुरआन कितनी महान् रात्रि में अवतरित किया गया है। फिर इस शुभ रात की प्रधानता का वर्णन किया गया है और उसे भोर तक सर्वथा शान्ति की रात कहा गया है।

इस से अभिप्राय यह बताना है कि जो ग्रन्थ इतनी शुभ रात में उतरा उस का पालन तथा आर न करना बड़े दुर्भाग्य की बात है।

हदीस में है कि इस रात की खोज रमज़ान के महीने की दस अन्तिम रातों की विषभ (ताक़) रात में करो। (सहीह बुखारी, तथा सहीह मुस्लिम)

दूसरी हदीस में है कि जो क़द्र की रात में ईमान के साथ पुन् प्राप्त करने के लिये नमाज़ पढ़ेगा उस के पहले के पाप क्षमा कर दिये जायेंगे। (सहीह बुखारी, सहीह मुस्लिम)

*****

[1] इस सूरह को अधिकांश भाष्य कारों ने मक्की लिखा है। और कुछ ने मद्नी बताया है। परन्तु इस का प्रसंग मक्की होने के समर्थन में हो।

इसी ''लैलतुल क़द्र'' (सम्मानित रात्री) को सूरह दुाान में ''लैलतुन मुबारकह'' (शुभ रात्री) कहा गया है। यह शुभ रात्रि रमज़ान मुबारक ही की एक रात है। इसी कारण सूरह ''बक़र:'' में कहा गया है कि रमज़ान मुबारक के महीने में कुरआन शरीफ़ उतारा गया। अर्थात इसी रात्रि में सम्पूर्ण कुरआन उन फ़रिश्तों को दे दिया गया जो वह्यी (प्रकाशना) लाने के लिये नियुक्त थे। फिर २३ वर्ष में आवश्यकता के नुसार कुरआन उतारा जाता रहा। यदि इस का अर्थ यह लिया जाये कि इस के उतारने का आरम्भ रमजान मुबारक से हुआ तो यह भी सहीह है। दोनों में अर्थ यही निकलता है कि कुरआन रमज़ान मुबारक में उतरा। और इसी शुभ रात्री में सूरह अलक़ की प्रथम पाँच आयतें उतारी गईं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. नि:संदेह हम ने उस (कुरआन) को ''लैलतुल क़द्र'' (सम्मानित रात्रि) में उतारा।
२. और तुम क्या जानो कि वह ''लैलतुल क़द्र'' (सम्मानित रात्रि) क्या है?
३. लैलतुल क़द्र (सम्मानित रात्रि) हज़ार मास से उत्तम है।[1]
४. उस में (हर काम को पूर्ण करने के लिये) फ़रिश्ते तथा रुह (जिबरील) अपने पालनहार की आज्ञा से उतरते हैं।[2]
५. वह शान्ति की रात्री है, जो भोर होने तक रहती है।[3]

*****

[1] हज़ार मास से उत्तम होने का अर्थ यह है कि: इस शुभ रात्रि में इबादत की बहुत बड़ी प्रधानता है। अबु हुरैरह (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत (उदघृत) है कि जो व्यक्ति इस रात में ईमान (सत्य विश्वास) के साथ तथा पुण्य की नीति से इबादत करे तो उस के सभी पहले के पाप क्षमा कर दिये जाते है। (सहीह मुस्लिम)

[2] ''रुह'' से अभिप्राय: जिब्रील अलैहिस्सलाम है। उन की प्रधानता के कारण सभी फ़रिश्तों से उन की अलग चर्चा की गई है। और यह भी बताया गया है कि वे स्वंय नही बल्कि अपने पालनहार की आज्ञा से ही उतरते है।

[3] इस का अर्थ यह है कि संध्या से भोर तक यह रात्रि सर्वथा शुभ तथा शान्तिमय होती है। सहीह हदीसों से स्पषट होता है कि यह शुभ रात्रि रमजान की अन्तिम दस रातों में से कोई एक रात है। इसलिये हमारे नबी सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम इन दस रातों को अल्लाह की उपासना में बिताते थे।

सूरह बय्यिनह – ९८

सूरह बय्यिनह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ८ आयतें है।[1]

- इस की प्रथम आयत में बैयिनह अर्थात प्रकाशित प्रमाण की चर्चा हुई है जिस से इस का यह नाम रखा गया है।
- इस की आयत १ से ३ तक में यह बताया गया है कि लोगों को कुफ़्र से निकालने के लिये यह आवश्यक था कि एक ग्रन्थ के साथ एक रसूल भेजा जाये ताकि वह धर्म को सहीह रूप में प्रस्तुत कर।
- आयत ४ से ५ में बताया गया है कि अहले किताब (अर्थात यहूदी और ईसाई) के पास प्रकाशित शिक्षा आ चुकी थी किन्तु वे विभेद में पड़ गये। और उन्होंने धर्म की वास्तविक शिक्षा भुला दी।
- आयत ६ से ८ तक रसूल (सल्लाल्लाह अलैहि व सल्लम) के इन्कार की दु:खद यातना को और रसूल पर ईमान ला कर अल्लाह से डरते हुये जीवन बिताने की सफलता को बताया गया है।

*****

[1] इस सूरह को साधारण भाष्यकारों ने मदनी लिखा है। परन्तु कुछ सहाबा (रजियल्लाहु अन्हुम) ने इसे मक्की कहा है। इस को इस प्रकार कहा जा सकता है कि यह सूरह मक्के के अन्तिम काल तथा मदीने के प्रथम काल के बीच अवतीर्ण हुई।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. अहले किताब के काफ़िर, और मुश्रिक लोग ईमान लाने वाले नहीं थे जब तक कि उन के पास खुला प्रमाण न आ जाये।

२. अर्थात: अल्लाह का एक रसूल, जो पवित्र ग्रन्थ पढ़ कर सुनाये।

३. जिस में उचित आदेश है।[१]

४. और जिन लोगों को ग्रन्थ दिये गये उन्होंने इस खुले प्रमाण के आ जाने के पश्चात ही मतभेद किया।[२]

५. और उन्हें केवल यही आदेश दिया गया था कि वे धर्म को शुद्ध कर रखें, और सब को तज कर केवल अल्लाह की उपासना करें, नमाज़ अदा करें, और ज़कात दें। और यही शाश्वत धर्म है।[३]

६. निःसंदेह जो लोग अहले किताब में से काफ़िर हो गये, तथा मुश्रिक (मिश्रणवादी) तो वे सदा नरक की आग में रहेंग। और वही सब से दुष्टतम् जन हैं।

७. जो लोग ईमान लाये, तथा सदाचार करते रहे तो वही सब से सर्वश्रेष्ठ जन हैं।

८. उन का प्रतिफल उन के पालनहार की ओर से सदा रहने वाले बाग़ हैं। जिन के नीचे नहरें बहती होंगी। वे उन में सदा निवास करेंगे। अल्लाह उन से प्रसन्न हुआ, और वे अल्लाह से प्रसन्न हुये। यह उस के लिये है जो अपने पालनहार से डरे।[४]

---

[१] (१–३) इस सूरह में सर्वप्रथम यह बताया गया है कि इस पुस्तक के साथ एक रसूल (ईश दूत) भेजता क्यों आवश्यक था। इस का कारण यह है कि मानव संसार के आदि शास्त्र धारी (यहूद तथा ईसाई) हों या मिश्रणवादी अधर्म की ऐसी स्थिती में फंसे हुये थे कि एक नबी के बिना उन का इस स्थिति से निकलना सीव न था। इसलिये इस चीज़ की आवश्यक्ता आई कि एक रसूल भेजा जाये जो स्वंय अपनी रिसालत (दूतत्व) का ज्वलंत प्रमाण हो। और सब के सामने अल्लाह की किताब को उस के सहीह रूप में प्रस्तुत करे जो असत्य के मिश्रण से पवित्र हो जिस से आदि धर्म शास्त्रों को लिप्त कर दिया गया है।

[२] इस के बाद आदि धर्म शास्त्रों के अनुयाईयों के कुटमार्ग का विवरण दिया गया है कि इस का कारण यह नही था कि अल्लाह ने उन को मार्गदर्शन नही दिया। बल्कि वे अपने धर्म ग्रन्थों में मन माना परिवर्तन कर के स्वंय कुटमार्ग का कारण बन गये।

[३] इन में यह बताया गया है कि अल्लाह की ओर से जो भी नबी आये सब की शिक्षा यही थी कि सब रीतियों को त्याग कर मात्र एक अल्लाह की उपासना की जाये। इस में किसी देवी देवता की पूजा अर्चना का मिश्रण न किया जाये। नमाज़ की स्थापना की जाये, ज़कात दी जाये। यही सदा से सारे नबियों की शिक्षा थी।

[४] (६–८) इन आयतों में साफ़ साफ़ कह दिया गया है कि जो अहले किताब और मूर्तियों के पुजारी इस रसूल को मानने से इन्कार करेंगे तो वे बहुत बुरे है। और उन का स्थान नरक है। उसी में वे सदा रहेंगे। और जो संसार में अल्लाह से डरते हुये जीवन निर्वाह करेंगे तथा विश्वास के साथ सदाचार करेंगे तो वे सदा के स्वर्ग में रहेंगे। अल्लाह उन से प्रसन्न हो गया, और वे अल्लाह से प्रसन्न हो गये।

सूरह ज़िलज़ाल – ९९

सूरह ज़िलज़ाल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ८ आयतें है।

– इस में प्रलय के दिन के भूकम्प की चर्चा हुई है जो ''ज़िलज़ाल'' का अर्थ है। इस लिये इस का यह नाम रखा गया है।[1]

– इस की आयत १ से ३ तक में धरती की उस दशा की चर्चा है जो प्रलय के दिन होगी और जिसे देख कर मनुष्य चककित रह जायेगा।

– आयत ४ से ५ तक में यह बताया गया है कि उस दिन धरती बोलेगी और अपनी कथा सुनायेगी कि मनुष्य उस के ऊपर रह कर क्या करता रहा है। जो उस की और से मनुष्य के कर्मों पर गवाही होगी।

– आयत ६ से ८ तक में बताया गया है कि उस दिन लोग विभिन्न गिरोहों में हो कर अपने कर्मों को देखने के लिये निकल पड़ेंगे और प्रत्येक की छोटी बड़ी अच्छाई और बुराई उस के सामने आ जायेगी।

*****

[1] यह सूरह मक्की है। क्योंकि इस में वर्णित विषय इसी का समर्थन करता है। परन्तु कुछ विद्वानों का विचार है कि यह मदीने में अवतीर्ण हुईह। इस सूरह के अन्दर संसार के पश्चात दूसरे जीवन तथा उस में कर्मों का पूरा हिसाब लिये जाने का वर्णन है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. जब धरती को पूरी तरह झंझोड़ दिया जायेगा।

२. तथा भूमी अपने बोझ बाहर निकाल देगी।

३. और इन्सान कहेगा कि इसे क्या हो गया?

४. उस दिन वह अपनी सभी सुचनायें वर्णन कर देगी।

५. क्योंकि तेरे पालनहार ने उसे यही आदेश दिया है।

६. उस दिन लोग तितर बितर होकर आयेंगे ताकि वह अपने कर्मों को देख लें।[१]

७. तो जिस ने एक कण के बराबर भी पुण्य किया होगा उसे देख लेगा।

८. और जिस ने एक कण के बराबर भी बुरा किया होगा उसे देख लेगा।[२]

*****

[१] (१–६) इन आयतों में बताया गया है कि जब प्रलय (क़्यामत) का भूकंम्प आयेगा तो धरती के भीतर जो कुछ ळी है, सब उगल कर बाहर फेंक देगी। यह सब कुछ ऐसे होगा कि जीवित होने के पश्चात् सभी को आश्चर्य होगा कि यह क्या हो रहा है? उस दिन यह निर्जीव धरती प्रत्येक व्यक्ति के कर्मो की गवाही देगी कि किस ने क्या क्या कर्म किये है। यद्यपि अल्लाह सब के कर्मों को जानता है फिर भी उस का निर्णय गवाहियों से प्रमाणित कर के होगा।

[२] (७–८) इन आयतों का अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अकेला आयेगा, परिवार और साथी सब बिखर जायेंगे। दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि इस संसार में जो किसी भी युग में मरे थे सभी दलों में चले आर रहे होंगे, और सब को अपने किये हुये कर्म दिखाये जायेंगे। और कर्मानुसार पुण्य और पाप का बदला दिया जायेगा। और किसी का पुण्य और पाप छिपा नही रहेगा।

सूरह आदियात – १००

सूरह आदियात के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ११ आयतें हैं।

- इस सूरह में ''आदियात'' अर्थात दौने वाले घोड़ों की शपथ ली गई है। इस लिये इस का नाम ''सूरह आदियात'' रखा गया है।[1]
- इस की आयात १ से ५ तक में घोों को इस बात की गवाही के लिये प्रस्तुत किया गया है कि मनुष्य अपने पालनहार की प्रदान की हुई शक्तियों का कितना गलत प्रयोग करता है।
- आयत ६ से ८ तक में मनुष्य की धन के मोह में अल्लाह का उपकार न मानने पर निन्दा की गई है।
- अन्तिम दो आयतों में उसे सावधान किया गया है कि प्रलय के दिन उसे कब्रों से निकल कर अल्लाह के पास उपस्थित होना है। उस दिन उस के दिल की दशा खुल कर सामने आ जायेगी कि उस नें संसार में जो भी कर्म किये हैं वह किस भावना और विचार से किये हैं जिसे उस ने अपने दिल में छुपा रखा था।

*****

[1] इस सूरह में वर्णित विषय बता रहे हैं कि यह आरंभिक मक्की सूरतों में से है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. उन घोड़ों की शपथ जो दोड़ कर हाँफ जाते हैं!
२. फिर पत्थरों पर टाप मार कर चिंगारियाँ निकालने वालों की शपथ!
३. फिर प्रात:काल में धावा बोलने वालों की शपथ!
४. जो धूल उड़ाते हैं।
५. फिर सेना के बीच घुस जाते हैं।
६. वास्तव में इन्सान अपने पालनहार का बड़ा कृतघ्न (नाशुकरा) हैं।
७. निश्चय रूप से वह इस पर स्वंय साक्षी (गवाह) हैं।[१]
८. वह धन का बड़ा प्रेमी है।[२]
९. क्या वह उस समय को नहीं जानता जब कब्रों में जो कुछ है निकाल लिया जायेगा?
१०. और सीनों के भेद प्रकाश में लाये जायेंगे?[३]
११. निश्चय उनका पालनहार उस दिन उन से पूर्ण रूप सूचित होगा।[४]

*****

[१] (१–७) इन आरंभिक आयतों में मानव जाति (इन्सान) की कृतघनता का वर्णन किया गया है। जिस की भूमिका के रुप में एक पशु की कृतज्ञता को शपथ स्वरुप उदाहरण के लिये प्रस्तुत किया गया है। जिसे इन्सान पोसता है, और वह अपने स्वामी का इतना भक्त होता है कि उसे आपने ऊपर सवार कर के नीचे ऊँचे मार्गों पर रात दिन की परवाह किये बिना दोता और अपनी जान जोखिम में ाल देता है। परन्तु इन्सान जिसे अल्लाह ने पैदा किया, समझ बूझ दी और उस के जीवन यापन के सभी साधन बनाये, वह उस का उपकार नही मानता और जान बूझ कर उस की अवज्ञा करता है, उसे इस पशु से शिक्षा लेनी चाहिये।

[२] इस आयत में उस की कृतनता का कारण बताया गया है कि जिस इन्सान को सर्वाधिक प्रेम अल्लाह से होना चाहिये वही अत्याधिक प्रेम धन से करता है।

[३] (९–१०) इन आयतों में सावधान किया गया है कि संसारिक जीवन के पश्चात एक दूसरा जीवन भी है तथा उस में अल्लाह के सामने अपने कर्मों का उत्तर देना है जो प्रत्येक के कर्मों का ही नहीं उन के सीनों के भेदों को भी प्रकाश ला कर दिखा देगा कि किस ने अपने धन तथा बल का कुप्रयोग कर कृतनता की है, और किस ने कृतज्ञता की है। और प्रत्येक को उस का प्रतिकार भी देगा। अत:इन्सान को धन के मोह में अन्धा तथा अल्लाह का कृतन नहीं होना चाहिये, और उस के सत्धर्म का पालन करना चाहिये।

[४] अर्थात वह सूचित होगा कि कौन क्या है, और किस प्रतिकार का भागी है।?

सूरह कारिअह – १०१

सूरह कारिअह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ११ आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में क्यामत को ''कारिअह'' कहा गया है। अर्थात ख खाने वाली आपदा। और इसी से इस का यह नाम रखा गया है।[1]
- आयत १ से ५ तक प्रलय के समय की स्थिति से सूचित किया गया है।
- आयत ६, ७ में जिन के कर्म न्याय के तराजू में भारी होंगे उन का अच्छा परिणाम बतया गया है।
- आयत ८ से ११ तक में उन का दुष्परिणाम बताया गया है जिन के कर्म न्याय के तराजू में हल्कें होंगे। और नरक की वास्तविक्ता बताई गई है।

*****

[1] यह सूरह भी मक्की है और इस का विषय भी प्रलय (क्यामत) तथा परलोक (आख़िरत) है। इस में प्रश्न के रुप में सर्वप्रथम सावधान कर के दो वाक्यों में प्रलय का चित्रण कर दिया गया है कि उस दिन सभी घबरा कर इस प्रकार इधर उधर फिरेंगे जैसे पतिंगे प्रकाश पर बिखरे होते हैं। और पर्वतों की यह दशा होगी कि अपने स्थान से उख कर धुनी हुई ऊन के समान हो जायेंगे। फिर बतया गया है कि परलोक में हिसाब इस आधार पर होगा कि किस के सदाचार का भार दुराचार से अधिक है और किस के सदाचार का भार उस के दुराचार से हल्का है। प्रथम श्रेणी के लोगों को सुख मिलेगा। और दूसरी श्रेणी के लोगों को आग से भरी गहरी खाई में फेंक दिया जायेगा।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. वह खड़खड़ा देने वाली।
२. क्या है वह खड़खड़ा देने वाली?
३. और तुम क्या जानो कि वह खड़खड़ा देने वाली क्या है?[1]
४. जिस दिन लोग बिखरे पतिंगों के समान (व्याकुल) होंगे।
५. और पर्वत धुनी हुई ऊन के समान उड़ेंगे।[2]
६. तो जिस के पलड़े भारी हुये।
७. तो वह मन चाहे सुख में होगा।
८. तथा जिस के पले हल्के हुये।
९. तो उस का स्थान ''हाविया'' है।
१०. और तुम क्या जानो कि वह (हाविया) क्या है?
११. वह दहक्ती आग है।[3]

*****

[1] (१–३) ''कारिअह'' : प्रलय ही का एक नाम है जो उस के समय की घोर दशा का चित्रण करता है। इस का शाब्दिक अर्थ: द्वार खटखटाना है। जब कोई अतिथि अकस्मात रात में आता है तो उसे दरवाजा खटखटाने की आवश्यकता होती है। जिस से एक तो यह ज्ञात हुआ कि प्रलय अकस्मात होगी। और दूसरा यह ज्ञात हुआ कि वह की ध्वनी और भारी उथल पुथल के साथ आयेगी। इसे प्रश्नवाचक वाक्यों में दोहराना सावधान करने और उस की गंभीरता को प्रस्तुत करने के लिये है।

[2] (४–५) इन दोनों आयतों में उस स्थिति को दर्शाया गया है जो उस समय लोगों और पर्वतों की होगी।

[3] (६–११) इन आयतों में यह बताया गया है कि प्रलय क्यों होगी? इसलिये कि इस संसार में जिस ने भले बुरे कर्म किये हैं उन का प्रतिकार कर्मों के आधार पर दिया जाये, जिस का परिणाम यह होगा कि जिस ने सत्य विश्वास के साथ सत्कर्म किया होगा वह सुख का भागी होगा। और जिस ने निर्मल परम्परागत रीतियों को मान कर कर्म किया होगा वह नरक में झोंक दिया जायेगा।

सूरह तकासुर – १०२

सूरह तकासुर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ८ आयतें हैं।

– इस की प्रथम आयत में ''तकासुर'' अर्थात: अधिक से अधिक धन प्राप्त करने की इच्छा को जीवन के मूल उद्देश्य से अचेत रहने का कारण बताया गया है। इसी लिये इस का यह नाम रखा गया है।[1]

– इस की आयत १ से ५ तक में सावधान किया गया है कि जिस धन को तुम सब कुछ समझते हो और उसे उर्जित करने में अपने भविष्य से अचेत हो तुम्हें आँख बंद करते ही पता लग जायेगा कि मौत के उस पार क्या है।

– आयत ६ से ८ तक में बताया गया है कि नरक को तुम मानो या न मानो वह दिन आ कर रहेगा जब तुम उसे अपनी आँखों से देख लोगे। और तुम्हें उस का विश्वास हो जायेगा किन्तु वह समय कर्म का नहीं बल्कि हिसाब देने का दिन होगा। और तुम्हें अल्लाह के प्रत्येक प्रदान का जवाब देना होगा।

*****

[1] इस सूरह का प्रसंग भी इस के मक्की होने का संकेत करता है।

अल्हाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. तुम्हें अधिक (धन) के लोभ ने मग्न कर दिया।

२. यहाँ तक कि तुम कब्रिस्तान जा पहुँचे।[1]

३. निश्चय तुम्हें ज्ञान हो जायेगा।

४. फिर निश्चय ही तुम्हें ज्ञान हो जायेगा।

५. वास्तव में यदि तुम को विश्वास होता (तो ऐसा न करते।)[2]

६. तुम नरक को अवश्य देखोगे।

७. फिर उसे विश्वास की आँख से देखोगे।

८. फिर उस दिन तुम से सुख सम्पदा के विषय में अवश्य पूछ गछ होगी।[3]

*****

[1] (१–२) इन दोनों आयतों में उन को सावधान किया गया है जो संसारिक धन ही को सब कुछ समझते हैं और उसे अधिकाधिक प्राप्त करने की धुन उन पर ऐसी सवार है कि: मौत के पार क्या होगा इसे सोचते ही नहीं। कुछ तो धन की देवी बना कर उसे पूजते हैं।

[2] (३–५) इन आयतों में सावधान किया गया है कि मौत के पान क्या है? उन्हे आँख बन्द करते ही इस का ज्ञान हो जायेगा। यदि आज तुम्हें इस का विश्वास होता तो अपने भविष्य की ओर से निश्चिन्त न होते। और तुम पर धन प्राप्ती की धुन इतनी सवार न होती।

[3] (६–८) इन आयतों में सूचित किया गया है कि तुम नरक के होने का विश्वास करो या न करो वह दिन आ कर रहेगा जब तुम उस को अपनी आँखों से देख लोगे। उस समय तुम्हें इस का पूरा विश्वास हो जायेगा। परन्तु वह दिन कर्म का नहीं हिसाब देने का दिन होगा। और तुम्हें प्रत्येक अनुकम्पा (नेमत) के बारे में अल्लाह के सामने जवाब देही करनी होगी। (अहसनुल बयान)

सूरह अस्र – १०३

सूरह अस्र के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ३ आयतें हैं।

- इस का आरंभ ''अस्र'' अर्थात् (युग) की शपथ से होता है, इस लिये इस का नाम सूरह अस्र रखा गया है।[1]
- इस सूरह में मात्र तीन ही आयतें हैं फिर भी इस के अर्थ में पूरे मानव जाति के उत्थान और पतन का एतिहास आ गया है। और मार्गदर्शन का मीनार बन कर व्यक्ति तथा जातियों और धार्मिक समुदायों को सीधी राह से सूचित कर रही है। ताकि वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लें, और गलत राह पर प कर विनाश के गढें में गिरने से बच जायें।
- युग की ग्वाही इस के लिये प्रस्तुत की गई है कि यदि मनुष्य के कर्म ईमान से खाली हों तो वह विनाश से नहीं बच सकता।

*****

[1] यद्धपी यह एक छोटी सी सूरह है परन्तु इस में ज्ञान का एक समुद्र समाया हुव है। इस सूरह का विषय इस बात पर सावधान करना है कि समस्त मानव जाति (इन्सान) विनाश की ओर जा रही है। इस से केवल वही लोग बच सकते हैं जो ईमान लाये और अच्छे कर्म किये।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. निचड़ते दिन की शपथ!

२. नि:संदेह इन्सान क्षति में हैं।[1]

३. अतिरिक्त उन के जो ईमान लाये। तथा सदाचार किये, एवं एक दूसरे को सत्य का उपदेश तथा धैर्य का उपदेश देते रहे।[2]

*****

[1] (१–२) ''अस्र'' का अर्थ: निचोना है। युग तथा संध्या के समय के भाग के लिये भी इस का प्रयोग होता है। और यहाँ इस का अर्थ युग और दिन निचने का समय दोनों लिया जा सकता है। इस युग की गवाही इस बात पर पेश की गई है कि: इन्सान जब तक ईमान (सत्य विश्वास) के गुणों को नहीं अपनाता विनाश से सुरक्षित नहीं रह सकता। इसलिये कि इन्सान के पास सब से मूल्यवान पूँजी समय है जो तेजी से गुजरात है। इसलिये यदि वह परलोक का सामान न करे तो अवश्य क्षति में प जायेगा।

[2] इस का अर्थ यह है कि परलोक की क्षति से बचने के लिये मात्र ईमान ही पर बस नहीं इस के लिये सदाचार भी आवश्यक है और उस में से विशेष रूप से सत्य और सहन शीलता और दूसरों को इन की शिक्षा देते रहना भी आवश्यक है। (तर्जुमानुल कुर्आन, मौलाना आजाद)

सूरह हुमज़ह – १०४

सूरह हुमज़ह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ९ आयतें है।

इस का नाम ''सूरह हुमज़ह'' है क्यों कि इस की प्रथम आयत में यह शब्द आया है जिस का अर्थ है: व्यंग करना, ताना मारना, गीबत करना आदि।[1]

- इस की आयत १ से २ तक में धन के पूजारियों के आचरण का चित्र दिखाया गया है और उन्हें सचेत किया गया है कि यह आचरण अवश्य विनाश का कारणे है।
- आयत ४ से ९ तक में धन के पूजारियों का परलोक में दुष्परिणाम बताया गया है।

*****

[1] यह सूरह भी मक्की युग की आरंभिक सूरतों में से है। इस का विषय धन के पुजारियों को सावधान करना है कि जिन की यह दशा होगी वह अवश्य अपने कुकर्म का दण् पायेंगे।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. विनाश हो उस व्यक्ति का जो कचोके लगाता रहता है और चौटे करता रहता है।

२. जिस ने धन एकत्र किया और उसे गिन गिन कर रखा।

३. क्या वह समझता है कि उस का धन उसे संसार में सदा रखेगा?[१]

४. कदापि ऐसा नहीं होगा। वह अवश्य ही ''हुतमा'' में फेंका जायेगा।

५. और तुम क्या जानो कि ''हुतमा'' क्या है?

६. वह अल्लाह की भड़काई हुई अग्नि है।

७. जो दिलों तक जा पहुँचेगी।

८. वह उस में बन्द कर दिये जायेंगे।

९. लँबे लँबे स्तम्भों में।[२]

*****

[१] (१–३) इन आयतों में धन के पुजारियों के अपने धन के घमं में दूसरों का अपमान करने और उन की कृपणता (कंजूसी) का चित्रण किया गया है, उन्हें चेतावनी दी गई है कि: यह आचरण विनाशकारी है, धन किसी को संसार में सदा जीवित नही रखेगा, एक समय आयेगा कि उसे सब कुछ छो कर खाली हाथ जाना पेगा।

[२] (४–९) इन आयतों के अन्दर परलोक में धन के पुजारियों के दुष्परिणाम से अवगत कराया गया है कि उन को अपमान के साथ नरक में फेंक दिया जायेगा। जो उन्हें खण् कर देगी और दिलों तक जो कुविचारों का केन्द्र है पहुँच जायेगी, और उस में इन अपराधियों को फेंक कर ऊपर से बन्द कर दिया जायेगा।

सूरह फ़ील – १०५

सूरह फ़ील के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ५ आयतें है।

- इस सूरह मे ''फ़िल'' शब्द आया है जिस का अर्थ हाथी है। इसी लिये इस का यह नाम है।[1]
- इस पूरी सूरह में एक शिक्षाप्रद ऐतिहासिक घटना की ओर संकेत है।
- आयत १ में कहा गया है कि अब्रहा जिस की सेना कबा को ढहाने आई थी उस का अल्लाह ने कैसा सत्यानाश कर दिया? उस पर विचार करो।
- आयत २ में बतया गया है कि कैसे उस की चाल असफल हो गई।
- आयत ३, ४ में अल्लाह के अपने घर की रक्षा करने और आयत ५ में आक्रमणकारियों के बुरे अन्त की चर्चा है।

*****

[1] यह सूरह भी मक्की है। इस में अल्लाह की शक्ति और अपने घर ''कबा'' को ''अबरहा'' से सुरक्षित रखने और असे उस की सेना सहित नाश कर देने की ओर संकेत किया गया है जिस की संक्षिप्त कथा यह है कि यमन के राजा ''अबरहा'' ने अपनी राजधानी ''सन्आ'' में एक कलीसा (गिर्जा घर) बनाया। और लोगों को कबा के हज्ज से रोकने की घोषणा कर दी। और ५७० ई. में ६० हजार सेना के साथ जिस में १३ या ९ हाथी थे कबा पर आक्रमण करने के इरादे से चल पा। और जब मक्का से तीन कोस रह गया तो ''मुहस्सर'' नामी स्थान पर पाव किया, और उस की सेना ने कुछ ऊँट पक लिये जिन में दो सौ ऊँट रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दादा अब्दुल मुत्तलिब के थे जो कबा के पुरोहित और नगर के मुख्या थे। वह अब्रहा के पास गये जिन से वह बा प्रभावित हुआ और नगर के मुख्या थे। वह अब्रहा के पास गये जिन से वह बा प्रभावित हुआ और उन्होंने अपने ऊँट माँगे। अब्रहा ने कहा: तुम ऊँट माँगते हो और कबा के बारे में जो तुम्हारा धमृ स्थल है कुछ नहीं कहते? अब्दल मुत्तलिब ने कहा: मैं अपने ऊँटों का मालिक हूँ। रहा यह घर तो उसक का स्वामी उस की रक्षा स्वंय करेगा। अब्रहा ने उन को ऊँट वापस कर दिये। और उन्होंने नागरिकों से आ कर कहा कि: अपने परिवार को लेकर (पर्वत) पर चले जायें। फिर उन्होंने कुरैश के कुछ प्रमुखों के साथ कबा के द्वारा का का पक कर दुआ (प्रार्थना) की और कहा: हे अल्लाह! अपने घर और इस के सेवकों की रक्षा कर। दूसरे दिन अब्रहा ने मक्का में प्रवेश का प्रयास किया परन्तु उस का अपना हाथी बैठ गया और आँकुस पने पर भी नही हिला। और दूसरी दशा में फेरा जाता तो दौने लगता था। इतने मे पंक्षियों का एक झुं चोंचों और पंजों में कंकरियाँ लिये हुये आया और इस सेना पर कंकरियों की वर्षा कर दी, जिन से उन का शरीर गलने लगा, और अब्रहा सहित उस की सेना का विनाश कर दिया गया।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. क्या तुम नहीं जानते कि तेरे पालनहार ने हाथी वालों के साथ क्या किया?
२. क्या उस ने उन की चाल को विफल नहीं कर दिया?
३. और उन पर पक्षियों के दल भेजे?
४. जो उन पर पकी कंकरी के पत्थर फेंक रहे थे।
५. तो उन को ऐसा कर दिया जैसे खाने का भूसा।[१]

*****

[१] (१–५) इस सूरह का लक्ष्य यह बताना है कि कबा को आकर्मण से बचाने के लिये तुम्हारे देवी देवता कुछ काम न आये। कुरैश के प्रमुखों ने अल्हाह ही से दुआ की थी और उन पर इस का इतना प्रभाव पा था कि कई वर्षों तक साधारण नागरिकों तक ने भी अल्लाह के सिवा किसी की पूजा नहीं की थी। यह बात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश से कुछ पहले की थी और वहाँ बहुत सारे लोग अभी जीवित थे जिन्होंने यह चित्र अपने नेत्रों से देखा था। अत: उन से यह कहा जा रहा है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लाम जो आमंतत्रण दे रहे हैं वह हयी तो है कि अल्लाह के सिवाय किसी की पूजा न की जाये, और इस को दबाने का परिणाम वही हो सकता है जो हाथी वालों का हुआ। (इब्ने कसीर)

सूरह कुरैश – १०६

सूरह कुरैश के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ४ आयतें हैं।

– इस में मक्का के क़बीले ''कुरैश'' की चर्चा के कारण इस का यह नाम रखा गया है।[1]

– इस की आयत १ से ३ तक मं मक्का के वासी कुरैश के अपनी व्यापारिक यात्रा से प्रेम रखने के कारण जो यात्रा वह निर्भय और शान्त रह कर किया करते थे क्योंकि कबा के निवासी थे उन से कहा जा रहा है कि वह केवल इस घर के स्वामी अल्लाह ही की वंदना (उपासना) करें।

– आयात ४ में इस का कारण बताया गया है कि यह जीविका और शान्ति जो तुम्हें प्राप्त है व अल्लाह ही का प्रदान है। इस लिये तुम्हें उस का आभारी होना चाहिये और मात्र उसी की इबादत (वंदना) करनी चाहिये।

*****

[1] इस सूरह के अर्थ को समझने के लिये यह जानना जरुरी है कि कुरैश जाति नबी (सल्लाल्लाह अलैहि व सल्लम) के पूर्वज कुसइ पुत्र किलाब के युग में ''हिजाज़'' में फैली हुई थी। उन्होंने सब को मक्का में एकत्र किया और अपनी सुनिती से एक राज्य की स्थापना की। और हाजियों की सेवा की ऐसी व्यवस्था की कि पूरी अरब जातियों और क्षेत्रों में उन का अच्छा प्रभाव पा। कुसई के बाद उन के चार पुत्रों में राज्य पद विभाजित हो गये। परन्तु उन में अब्द मनाफ़ का नाम अधिक प्रसिद्ध हुआ। और उन के चार पुत्रों में से नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) के दादा अब्दुल मुत्तलिब के पिता हाशिम ने सब से पहले यह सोचा कि: अन्तर्ग्रीय व्यापार में भाग लिया जाये, जिस के कारण कुरैश का संबंध अनेक देशों और सभ्यताओं से हो गया। मक्का अरब द्वीप का व्यापारिक केंद्र बन गया। और अब्रहा की पराजय ने कुरैश की मान मर्यादा और अधिक कर दी। इसलिये सूरह के चार वाक्यों में कुरैश से मात्र इतना ही कहा गया है कि जब तुम इस घर (कबा) को मूर्तियों का नहीं अल्लाह का घर मानते हो कि वह अल्लाह ही है जिस ने इस घर के कारण शांती प्रदान की और तुम्हारे व्यापार को यह उन्नती दी, तथा तुम्हें भुखमरी से बचाया तो तुम्हें भी मात्र उसी की पूजा उपासना करनी चाहिये।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. कुरैश के स्वभाव बनाने के कारण।

२. उन के जाड़े तथा गर्मी की यात्रा का स्वभाव बनाने के कारण।[1]

३. उन्हें चाहिये कि इस घर (कबा) के प्रभु की पूजा करें।[2]

४. जिस नें उन्हें भूख में खिलाया तथा डर से निडर कर दिया।

*****

[1] (१–२) गर्मी और जो की यात्रा से अभिप्राय गर्मी के समय कुरैश की व्यापारिक यात्रा है जो शाम और फ़लस्तीन की और जो के समय वे दक्षिण अरब की यात्रा करते थे जो गर्म क्षेत्र है।

[2] इस घर से अभिप्राय: कबा है। अर्थ यह है कि यह सुविधा उन्हें इसी घर के कारण प्राप्त हुई। और वह स्वंय यह मानते हैं कि ३६० मूर्तियाँ उन की रब नहीं हैं जिन की पूजा कर रहे हैं। उन का रब (पालनहार) वही है जिस ने उन को अब्रहा के आक्रमण से बचाया। और उस युग में जब अरब की प्रत्येक दिशा में अशान्ति का राज्य था मात्र इसी घर के कारण इस नगर में शान्ति है। और तुम इसी घर के निवासी होने के कारण निश्चिन्त हो कर व्यापारिक यात्रायें कर रहे हो, और सुख सुविधा के साथ रहते हो। क्योंकि काबे के प्रबन्धक और सेवक होने के कारण ही लोग कुरेश का आदर करते थे। तो उन्हें स्मरण कराया जा रहा है कि फिर तुम्हारा कर्त्तव्य है कि केवल उसी की उपासना करो।

सूरह माऊन – १०७

सूरह माऊन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ७ आयतें है।

- इस सूरह की अन्तिम आयत में ''माऊन'' शब्द आने के कारण इस का यह नाम रखा गया है। जिस का अर्थ है लोगों को देने की साधारण आवश्यक्ता की चीज़ें।[1]
- आयत १ मे उस के आचरण पर विचार करने के लिये कहा गया है जो प्रलय के दिन के प्रतिफल को नहीं मानता।
- आयत २, ३ में यह बताया गया है कि ऐसा ही व्यक्ति समाज के अनाथों तथा निर्धनों की कोई सहायता नहीं करता। और उन के साथ बुरा व्यवहार करता है।
- आयात ४ से ६ तक में उन की निन्दा की गई है जो नमाज़ पढ़ने में आलसी होते हैं। और दिखावे के लिये नमाज़ पढ़ते हैं।
- और आयत ७ में उन की कंजूसी पर पक़ की गई है।

*****

[1] इस सूरह का विषय यह बताना है कि परलोक पर ईमान न रखना किस प्रकार का आचरण और स्वभाव पैदा करता हो।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. (हे नबी) क्या तुम ने उसे देखा जो प्रतिकार (बदले) के दिन को झुठलाता है।
२. यही वह है जो अनाथ (यतीम) को धक्का देता है।
३. और ग़रीब के लिये भोजन देने पर नहीं उभारता।[१]
४. विनाश है उन नमाज़ियों के लिये।[२]
५. जो अपनी नमाज़ से अचेत हैं।
६. और जो दिखावे (आंबर) के लिये करते हैं।
७. तथा माऊन (प्रयोग में आने वाली मामूली चीज़) भी माँगने से नहीं देते।[३]

*****

---

[१] (२–३) इन आयतों में उन काफ़िरों (अधर्मियों) की दशा बताई गई है जो परलोक का इन्कार करते हैं।

[२] इन आयतों में उन मुनाफ़िक़ों (द्रिय वादियों) की दशा का वर्णन किया गया है जो ऊपर से मुसलमान हैं परन्तु उन के दिलों में परलोक और प्रतिकार का विश्वास नहीं हैं। इन दोनों प्रकारों के आचरण और स्वभाव को बयान करने से अभिप्राय यह बताना है कि: इन्सार में सदाचार की भावना परलोक पर विश्वास के बिना उत्पन्न नहीं हो सकती। औंर इस्लाम प्रलोंक का सहीह विश्वास दे कर इन्सानों में अनाथों और ग़रीबों की सहायता की भावना पैदा करता है और उसे उदार तथा परोपकारी बनाता है।

[३] आयत नं. ७ में मामूली चीज़ के लिये (माऊन) शब्द का प्रयोग हुआ हैं। जिस का अर्थ है साधारण माँगने के सामान: जैसे पानी, आग, नमक, ेल आदि। और आयत का अभिप्राय यह है कि: आरित का इन्कार किसी व्यक्ति को इतना तंग दिल बना देता है कि: वह साधारण उपकार के लिये भी तैयार नहीं होता।

सूरह कौसर – १०८

सूरह कौसर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ३ आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में ''कौसर'' शब्द आया है जिस का अर्थ है: बहुत सी भलाईयाँ। और जन्नत के अन्दर एक नहर का नाम भी है। इस लिये इस का नाम ''सूरह कौसर'' है।[1]
- इस की आयत १ में नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) को बहुत सी भलाईयाँ प्रदान किये जाने की शुभ सूचना दी गई है।
- और आयत २ में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को इस प्रदान पर नमाज़ पढ़ते रहने तथा कुर्बानी करने का आदेश दिया गया है।
- आयत ३ में आप (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) को दिलासा दी गई है कि जो आप के शुत्रु हैं वह आप का कुछ बिगा.नहीं सकेंगे बल्कि वह स्वयं बहुत बी भलाई से वंचित रह जायेंगे।
- हदीस में है कि आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने कहा कि कौरस एक नहर है जो तुम्हारे नबी को प्रदान की गई है। जिस के दोनों किनारे मोती के और बर्तन आकाश के तारों की संख्या के समान हैं। (सहीह बुखारी : ४९६५)

[1] यह सूरह मक्का में उस समय उतरी जब मक्का वासियों ने नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) को इसलिये अपनी जाति से अलग कर दिया कि आप ने उन की मूर्तिपूजा की परम्परा का खण्ड्न किया। और नबी होने से पहले आप की जो जाति में मान मर्यादा थी वह नहीं रह गई।)

आप अपने थोड़े से साथियों के साथ निस्सहाय हो कर रह गये थे। इसी बीच आप के एक पुत्र का निधन हो गया था जिस पर मूर्ति पूजकों ने खुशियाँ मनाई। और कहा कि मुहम्मद के कोई पुत्र नहीं। व निर्मूल हो गया और उस के निधन के बाद उस का कोई नाम लेवा नहीं रह जायेगा। ऐसे हृदय विदारक क्षणों में आप को यह शुभ सूचना दी गई कि आप निराश न हों आप के शत्रु ही निर्मूल होंगे। यह शुभ सूचना और भविष्य वाणी कुर्आन ने उस समय दी जब कोई यह सोच भी नहीं सकता था कि ऐसा हो जाना संभव हैं। परन्तु कुछ ही वर्षों बाद ऐसा परिवर्तन हुआ कि मक्का के अनेकेश्वर वादियों का कोई सहायक नहीं रह गया। और उन्हें विवश हो कर हथियार डाल देने पे। और फिर आप के शत्रुओं का कोई नाम लेवा नहीं रह गया। इस के विपरीत आज भी करोंडें मुसलमान आप से संबंध पर गर्व करते हैं, और आप पर दरूद भेजते हैं।

- और इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने कहा कि कौसर वह भलाईयाँ हैं जो अल्लाह ने आप (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) को प्रदान की हैं। (सहीह बुखारी: ४९६६)

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

१. (हे नबी!) हम ने तुम को कौसर प्रदान किया है।[1]

२. तो तुम अपने पालनहार के लिये नमाज़ पढ़ो तथा बलि दो।[2]

३. नि: संदेह तुम्हारा शत्रु ही बे नाम निशान है।[3]

*****

[1] कौसर का अर्थ है: असीम तथा अपार शुभ। और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि कौरस एक हौज़ (जलाशय) है जो मुझे परलोक में प्रदान किया जायेगा। जब प्रत्येक व्यक्ति प्यास प्यास कर रहा होगा और आप की उम्मत आप के पास आयेगी, आप पहले ही से वहाँ उपस्थित होंगे और आप उन्हें उस से पिलायेंगे जिस का जल दूध से उजला और मधु से अधिक मधुन होगा। उस की भूमी कस्तूरी होगी, उस की सीमा और बर्तनों का सविस्तार वर्णन हदीसों में आया है।

[2] इस आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और आप के माध्यम से सभी मुसलमानों से कहा जा रहा है कि जब शुभ तुम्हारे पालनहार ही ने प्रदान किये हैं तो तुम भी मात्र उसी की पूजा करो और बली भी उसी के लिये दो। मूर्ति पूजकों की भाँति देवी देवताओं की पूजा अर्चना न करो और न उन के लिये बलि दो। वह तुम्हे कोई शुभ लाभ और हानि देने का सामर्थ्य नहीं रखते।

[3] आयत नं. ३ मे ''अब्तर'' : का शब्द प्रयोग हुहा है। जिस का अर्थ है: ज़ से अलग कर देना जिस के बाद कोई पे.सूख जाता है। और इस शब्द का प्रयोग उस के लिये भी किया जाता है जो अपनी जाति से अलग हो जाये, या जिस का कोई पुत्र जीवित न रह जाये, और उस के निधन के बाद उस का कोई नाम लेवा न हो। इस आयत में जों भविष्य वाणी की गई है वह सत्य सिद्ध हो कर पूरे मानव संसार को इस्लाम और कुर्आन पर विचार करने के लिये बाध्य कर रही है। (इब्ने कसीर)

सूरह काफ़िरुन – १०९

सूरह काफ़िरुन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ६ आयतें हैं।

– इस की प्रथम आयत में ''काफ़िरुन'' शब्द आने के कारण इस का यह नाम रखा गया हैं।[1]

– आयत १ में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की निर्देध दिया गया है कि काफ़िरों से कह दें कि वंदना (उपासना) के विषय में मुझ में और तुम में क्या अन्तर है?

– आयत ४ से ५ तक में यह ऐलान है कि दीन (धर्म) के विषय में कोई समझौता और उदारता असंभव है।

– आयत ६ में काफ़िरों के धर्म से अप्रसन्न (विमुख) होने का ऐलान है।

– हदीस में है कि नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने तवाफ़ की दो रक्अत में यह सूरह और सूरह इलास पढ़ी थी। (सहीह मुस्लिम: १२१८)

*****

[1] यह सूरह भी मक्की है। इस सूरह की भूमिका यह है कि मक्का में यद्यपि इस्लाम का क़ा विरोध हो रहा था फिर भी अभी मूर्ति पूजक आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से निराश नहीं हुये थे। और उन के प्रमुख किसी न किसी प्रकार आप को संधि के लिये तैयार कर रहे थे। और आप के पास समय समय से अनेक प्रस्ताव लेकर आया करते थे। अन्त में यह प्रस्ताव लेकर आये कि: एक वर्ष आप हमारे पूजितों (लात, उज़्ज़ा आदि) की पूजा करें, और एक वर्ष हम आप के पूज्य की पूजा करें। और इसी पर संधि हो जाये। उसी समय यह सूरह अवतीर्ण हुई और सदा के लिये बता दिया गया कि दीन में कोई समझौता नहीं हो सतका हैं। इसीलिये हदीस में इसे शिर्क से रक्षा की सूरह कहा गया हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् हैं।

१. (हे नबी) कह दो: हे काफ़िरो!

२. मैं उन (मूर्तियों) को नहीं पूजता जिन्हें तुम पूजते हो।

३. और न तुम उसे पूजते हो जिसे मैं पूजता हूँ।

४. और न मैं उसे पूजुँगा जिसे तुम पूजते हो।

५. और न तुम उसे पूजोगे जिसे मैं पूजता हूँ।

६. तुम्हारे लिये तुम्हारा धर्म, तथा मेरे लिये मेरा धर्म है।[१]

*****

[१] (१–६) पूरी सूरह का भावार्थ यह है कि इस्लाम में वही ईमान (विश्वास) मान्य है जो पूर्ण तौहीद (एकेश्वरवाद) के साथ हो, अर्थात अल्लाह के अस्तित्व तथा गुणों और उस के अधिकारों में किसी को साझी न बनाया जाये। कुर्आन की शिक्षानुसर जो अल्लाह को नहीं मानता, और जो मानता है परन्तु उस के विशेष गुणों को किसी अन्य मे मानना उस को न मानने के ही बराबर है और दोनों ही काफ़िर हैं। (देखिये : उम्मुल किताब, मौलाना आज़ाद)



सूरह नस्र – ११०



सूरह नस्र के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में ३ आयतें हैं।

- इस सूरह में ''नस्र'' शब्द आने के कारण, जिस का अर्थ सहायता है, इस का यह नाम रखा गया है।[1]
- इस की आयत १ में अललाह की सहायता आने तथा मक्का की विजय की चर्चा है।
- आयत २ में लोगों के समुहों में इस्लाम लाने की चार्चा है।
- आयत ३ में आप (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अल्लाह का यह प्रदान प्राप्त होने पर उस की और अधिक प्रशांसा तथा पवित्रता गान का निर्देश दिया गया हैं।
- हदीस में है कि इस सूरह के उतरने के पश्चात् आप (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपनी नामज़ (के रुकूअ और सज्दे) में अधिक्तर ''सुब्हानका रब्बना व बिहम्दिका अल्लाहुम्मग़्फ़िर ली'' पढ़ा करते थे। (सहीह बुखारी: ४९६७, ४९६८)

*****

[1] अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रजियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत है कि यह कुर्आन की अन्तिम सूरह है जो आप (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर उतरी। इस सूरह में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भविश्य वाणी के रुप में बताया गया है कि जब इस्लाम की पूर्ण विजय हो जाये, और लोग समूहों के साथ इस्लाम में प्रवेश करने लगें तो आप अल्लाह की हम्द (प्रशांसा) और तस्बीह (पवित्रता का वर्णन) करने में लग जायें। और उस से क्षमा माँगते रहें।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् हैं।

१. (हे नबी!) जब अल्लाह की सहायता एवं विजय आ जाये।

२. और तुम लोगों को अल्लाह के धर्म में दल के दल प्रवेश करते देख लो।[1]

३. तो अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का वर्णन करो। और उस से क्षमा माँगो, निःसंदेह वह बड़ा क्षमी है।[2]

*****

[1] (१–२) इस में विजय का अर्थ वह निर्णायक विजय है जिस के बाद कोई शक्ति इस्लाम का सामना करने के योग्य नहीं रह जायेगी। और यह स्थिति सन् ८ (हिज्री) की है जब मक्का विजय हो गया। अरब के कोने कोने से प्रतिनिधि मंल रसूलुल्लाह (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सेवा में उपस्थित हो कर इस्लाम लाने लगे। और सन् १० (हिज्री) में जब आप (हज्जतुल वदाअ) (अर्थात: अन्तिम हज्ज) के लिये गये तो उस समय पूरा अरब इस्लाम के आधीन आ युका था और देश में कोई मुश्रिक (मूर्ति पूजक) नहीं रह गया था।

[2] इस आयत में नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) से का गया है कि इतना बा काम आप ने अल्लाह की दया से पूरा किया है, इस के लिये उस की प्रशंसा और पवित्रता का वर्णन तथा उस की कृतज्ञता व्यक्त करें। इस में सभी के लिये यह शिक्षा है कि कोई पुण्य कार्य अल्लाह की दया के बिना नहीं होता। इसलिये उस पर घमं नहीं करना चाहिये।

सूरह तब्बत – १११

सूरह तब्बत के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ५ आयतें हैं।

इस की आयत १ में ''तब्बत'' शब्द आने के कारण इस का नाम ''सूरह तब्बत'' है। जिस का अर्थ तबाह होना हैं।[1]

- आयत १ से ३ तक में नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) के शत्रु अबू लहब के बुरे परिणाम से सूचित किया गया है।
- आयात ४ और ५ में उस की पत्नी के शिक्षाप्रद परिणाम का दृश्य दिखाया गया है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से बैर रखने में अपने पति के साथ थी।
- हदीस में है कि जब नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) को आदेश दिया गया कि आप आपने समीप के परिजनों को रायें तो आप ने सफ़ा (पर्वत) पर चढ़ कर पुकारा। और जब सब आ गये, तो कहा: यदि मैं तुम से कहूँ कि इस पर्वत के पीछे एक सेना है जो तुम पर सवेरे या संध्या को धावा बोल देगी तो तुम मानोगे? सब ने कहा: हाँ। हम ने कभी आप को झूठ बोलते नहीं देखा। आप ने कहा: मैं तुम्हे अपने सामने की दुःखदायी यातना से रा रहा हूँ। इस पर अबू जहल ने कहा: तुम्हारा नाश हो! क्या इसी लिये हम को एकत्र किया है? इसी पर यह सूरह अवतरित हुई। (सहीह बुखारी: ४९७१)

[1] यह सूरह आरंभिक मक्की सूरतों में से है। इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत है कि जब नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) को यह आदेश दिया गया कि आप समीप वर्ती संबंधियों को अल्लाह से रायें, तो आप सफ़ा ''पही'' पर गये, और पुकारा: ''हाय भोर की आपदा!'' यह सुन कर कुरैश के सभी परिवार जन एकत्र हो गये। तब आप ने कहा यदि मैं तुम से कहूँ कि इस पर्वत के पीछे एक सेना है जो तुम पर आक्रमण करने को तैयार है तो तुम मेरी बात मानोगे? सब ने कहा: हाँ। हम ने कभी आप से झूठ नहीं आज़माया। आप ने फ़रमाया: मैं तुम्हें आग (नर्क) की बी यातना से सावधान करता हूँ। इस पर किसी के कुछ बोलने से पहले आप के चचा ''अबु लहब'' ने कहा: तुम्हारा सत्यानास हो! क्या हमें इसी लिये एकत्र किया है? और एक रिवायत यह भी है कि उस ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मारने के लिये पत्थर उठाया, इसी पर यक सूरह उतारी गई। (देखिये : सहीह बुखारी : ४९७१, और सहीह मुस्लिम : २०८)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् हैं।

१. अबु लहब[1] के दोनों हाथ नाश हो गये, और वह स्वयं भी नाश हो गया!

२. उस का धन तथा जो उस ने कमाया उस के काम नहीं आया।[2]

३. वह शीघ्र लावा फेंकती आग में जायेगा।

४. तथा उस की पत्नी भी, जो ईंधन लिये फिरती है।

५. उस की गर्दन में मूँज की रस्सी होगी।[3]

*****

[1] अबु लहब का अर्थः ज्वाला मुखी है। वह अति सुंदर और गोरा था। उस का नाम वास्तम में ''अब्दुल उज़्ज़ा'' था, अर्थातः उज़्ज़ा का भक्त और दास।

''उज़्ज़ा'' उन की एक देवी का नाम था। परन्तु वह अबु लहब के नाम से जाना जाता था। इसलिये कुर्आन ने उस का यही नाम प्रयोग किया है और इस में उस के नर्क की ज्वाला में पऩे का संकेत भी हैं।

[2] (१–२) यह आयतें उस की इस्लाम को दबाने की योजना के विफल हो जाने की भविष्यवाणी हैं। और संसार ने देखा कि अभी इन आयतों के उतरे कुछ वर्ष ही हुये थे कि ''बद्र'' की लई में मक्के के बे.बे.वीर प्रमुख मारे गये। और ''अबु लहब'' को इस ाबर से इतना दुःख हुआ कि इस के सातवें दिन मर गया। और मरा भी ऐसे कि उसे मलगिनानत पुसतुले (प्लेग जैसा कोई रोग) कीी बीमारी लग गई। और छूत के भय से उसे अलग फेंक दिया गया। कोइ्र उस के पास नही जाता था। मृत्यु के बाद भी तीन दिन तक उस का शव पा रहा। और जब उस में गंध होने लगी तो उसे दूर से लक़ी से एक गढ़े में ाल दिया गया। और ऊपर से मिट्टी और पत्थर ाल दिये गये। और कुर्आन की यह भविष्यवाणी पूरी हुई। और जैसा कि आयत नं. २ में कहा गया उस का धन और उस की कमाई उस के कुछ काम नहीं आई। उस की कमाई से उद्देश्य अधिकतर भाष्यकारों ने ''उस की संतान'' लिया है। जैसा कि सहीह हदीसों में आया है कि तुम्हारी संतान तुम्हारी उत्तम कमाई है।

[3] (१–५) अबु लहब की पत्नी का नाम ''अरबा'' था। और उस की उपाधि (कुनियत) ''उम्मे जमील'' थी। आप (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) की शत्रुता में किसी प्रकार कम न थी।

लक़ी लादने का अर्थ भाष्य कारों ने अनेक किया है। परन्तु इस का अर्थ उस को अपमानित करना है। या पापों का बोझ लाद रखने के अर्थ में है।

वह सोने का हार पहनती थी और ''लात'' तथा ''उज़्ज़ा'ब की शपथ ले कर –यह दोनों उन की देवियों के नाम हैं – का करती थी कि मुहम्मद के विरोध में यह मूल्यवान हार भी बेच कर ार्च कर दूँगी। अतः यह कहा गया है कि आज तो वह एक धन्यवार व्यक्ति की पत्नी है। उस के गले में बहुमूल्य हार पा हुआ है परन्तु आारित में वह ईंधन ढोने वाली लौंी की तरह होगी। गले में आभूषण के बदलें बटी हुई मूंज की रस्सी पी होगी। जैसी रस्सी ईंधन ढोने वाली लोंयों के गले में पी होती है। और इस्लाम का यह चमत्कार ही तो है कि जिस ''अबु लहब'' और उस की पत्नी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शत्रुता की उन्हीं की औलादः ''उत्बा'', ''मुअत्तब'', तथा ''दुर्रह'' ने इस्लाम स्वीकार कर लिया।

सूरह इखलास - ११२

सूरह इखलास के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में ४ आयतें हैं।

- इखलास का अर्थ है अल्लाह की शुद्ध इबादत (वंदना) करना। सी का दूसरा नाम तौहीद (अद्वैत) है, इस सूरह में तौहीद का वर्णन है, इसी लिये इस का यह नाम है।[1]
- इस की आयत १, २ मे अल्लाह के सकारात्मक गुणों को और आयत ३, ४ में नकारात्मक गुणों को बताया गया है ताकि धर्मों और जातियों में जिस राह से शिर्क आया है उसे रांका जा सके। हदीस में है कि अल्लाह ने कहा कि मनुष्य ने मुझे झुठला दिया। और यह उस के लिये योग्य नहीं था। और मुझे गाली दी, और यह उस के लिये योग्य नहीं था। उस का मुझे झुठलाना उस का यह कहना है कि

---

[1] यह सूरह मक्की सूरतों में से है।

यद्यपि इस के उतरने से संबंधित रिवायत से लगता है कि यह सूरह मदीने में उस समय उतरी जब मदीने के यहूदियों ने आप से प्रश्न किया कि बताइये कि व पालनहार कैसा है जिस ने आप को भेजा है? या यह कि ''नजरान'' के ईसाईयों ने इसी प्रकार का प्रश्न किया कि वह कैसा है, और किस धातु का बना हुआ है? तो यह सूरह उतरी। परन्तु सब से पहले यह प्रश्न स्वयं मक्का वासियों ने ही किया था। इसलिये इसे मक्का में उतरने वाली आरम्भिक सूरतों में गणना किया जाता है।

इस का नाम ''सूरह इखलास'' है। इलास का अर्थ है: अल्लाह पर ऐसे ईमान लाना कि उस के अस्तित्व और गुणों में किसी की साझेदारी की कोई आभा (झलक) न पाई जाये। और इसी को तौहीदे ाालिस (निर्मल ऐकेश्वरवाद) करहते हैं।

जहाँ तक अल्लाह को मानने की बात है तो तो संसार ने सदा उस को माना है परन्तु वास्तव में इस मानने में ऐसा मिश्रण भी किया है कि मानना और न मानना दोनों बराबर हो कर रह गये हैं। तौहीद को उजागर करने के लिये अल्लाह ने बराबर नबी भेजे परन्तु इन्सान बार बार इस तथ्य को खोता रहा। आदरणीय इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने तौहीद (ऐकेश्वरवाद) के लिये प्रस्थान किया, और अपने परिवार को एक बंजर वादी में बसाया कि वह मात्र एक अल्लाह की पूजा करेंगे। परन्तु उन्हीं के वंशज ने उन के बनाये तौहीद के केन्द्र अल्लाह के घर कबा को एक देव स्थल में बदल दिया। तथा अपने बनाये हुये देवताओं का अधिकार माने बिना अल्लाह के अधिकार को स्वीकार करने के लिये तैयार न थे। यह स्थिति मात्र मक्का वासियों की न थी, ईसाई और यहूदी भी यद्यपि तौहीद के दावेदार थे फिर भी उन के यहाँ तीन पूज्यों:पिता, पुत्र और पविगात्मा के योग से तौहीद बनी थी। यहूदियों के यहाँ भी अल्लाह का पुत्र: उज़ैर अवश्य था। कहीं पूज्य एक तो था परन्तु बहुत से देवी देवता भी उस के साथ पूज्य थे। (देखिये : उम्मुल किताब)

अल्लाह ने जैसे मुझे प्रथम बार पैदा किया है दोबारा नहीं पैदा कर सकेगा। जब कि प्रथम बार पैदा करना मेरे लिये दोबारा पैदा करने से सरल नहीं था। और उस का मुझे गाली देना यह है कि उस ने कहा कि अल्लाह के संतान है। जब कि में अकेला निर्पेक्ष हूँ। न मेरी कोई संतान है और न मैं किसी की संतान हूँ। और न कोई मेरा समकक्ष है। (सहीह बुखारी)

– सहीह हदीस में है कि यह सूरह तिहाई कुर्आन के बराबर है। (बुखारी:, मुस्लिम)
– एक दूसरी हदीस में ही कि एक व्यक्ति ने कहा कि, हे अल्लाह के रसूल! मैं इस सूरह से प्रेम करता हूँ। आप (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: तुम्हें इस का प्रेम स्वर्ग में प्रवेश करा देगा। (सहीह बुखारी: ७७४)

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् हैं।

१. (हे ईश दूत!) कह दो: अल्लाह अकेला है।[1]
२. अल्लाह नि:छिद्र है।
३. न उस की कोई संतान है, और न वह किसी की संतान है।
४. और न उस के बराबर कोई है।[2]

*****

---

[1] आयत नं. १ में ''अहद'' शब्द का प्रयोग हुआ है जिस का अर्थ है: उस के अस्तित्व एंव गुणों में कोई साझी नहीं है। यहाँ ''अहद'' शब्द का प्रयोग यह बताने के लिये किया गया है कि वह अकेला है। वह वृक्ष के समान एक नहीं है जिस के अनेक शाखायें होती हैं।

आयत नं. २ मे ''समद'' शब्द का प्रयोग हुआ है जिस का अर्थ है: अब्रण होना। अर्थात जिस में कोई छिद्र न हो जिस से कुछ निकले, या वह किसी से निकले। और आयत नं. ३ इसी अर्थ की व्याख्या करती है कि न उस की कोई संतान है और न वह किसी की संतान है।

[2] इस आयत में यह बताया गया है कि उस की प्रतिमा तथा उस के बराबर और सम्तुल्य कोई नहीं है। उस के कर्म, गुण, और अधिकार में कोई किसी रुप में बराबर नहीं। न उस की कोई जाति है न परिवार।

इन आयतों में कुर्आन उन बिष्यों को जो जातियों के तौहिद से फिसलने का कारण बने उसे अनेक रूप में वर्णित करता हो। और देवियों और देवताओं के विवाहों और उन के पुत्र और पौत्रों का जो विवरण देव मालावों में मिलता है कुर्आन ने उसी का खण्न किया है।

सूरह फ़लक़ – ११३

सूरह फ़लक़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ५ आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में (फ़लक़) शब्द आने के कारण, जिस का अर्थ भोर है, इस का यह नाम रखा गया है।[1]

---

[1] सूरह ''फ़लक़'' और सूरह ''नास'' को मिला कर ''मुअव्वज़तैन'' कहा जाता है। जब यह दोनों सूरतें उतरीं तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: आज की रात्री में मुझ पर कुछ ऐसी आयतें उतरी हैं जिन के समान मैं ने कभी नहीं देखी। (मुस्लिम : ८१४)

इसी प्रकार इब्ने आबिस जुहनी (रजियल्लाहु अन्हु) से आप ने फ़रमाया कि: मैं तुम्हें उत्तम यंत्र न बताऊँ जिस के द्वारा शरण (पनाह) माँगी जाती है? और आप ने यह दोनों सूरतें बतायीं, और का कि यक ''मुअव्वज़तैन'' अर्थात शरण माँगने के लिये दो सूरतें हैं। (देखियेः सहीह नसई : ५०२०)

जब नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर जादू किया गया जिस का प्रभाव यह हुआ कि आप घुलते जा रहे थे, किसी काम को सोचते कि कर लिया है, और किया नहीं होता था, किसी वस्तु को देख है जब कि देखा नहीं होता था। परन्तु जादू का यह प्रभाव आप के व्यक्तिगत जीवन तक ही सीमित था।

एक दिन नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपनी पत्नी ''आइशा'' (रज़ियल्लाहु अन्हा) के पास थे कि सो गये, और जागे तो उन को बताया की दो व्यक्ति (फ़िरश्ते) मेरे पास आये, एक सिराहने की ओर था, और दुसरा पैताने की और। एक ने पूछा: किस ने किया है? उत्तर दिया : ''लबीद बिन आसम'' ने। पूछा: किस वस्तु में किया है?उत्तर दिया : कंघी, बाल और नर खजूर के ाोशे में। पूछा: वह कहाँ है? उत्तर दिया : बनी ज़ुरैक के कुवें की तह में पत्थर के नीचे है। इस के बाद आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अली, अम्मार और ज़ुबैर (रजियल्लाहु अन्हुम) को भेजा, फिर आप भी वहाँ आ गये, पानी निकाला गया, फिर जादू जिस में कंघी के दाँतों और बालों के साथ एक ताँत में ग्यारह गाँठ लगी हुई थीं। और मोम का एक पुतला था जिस में सुईयाँ चुभोई हुई थीं। आदर्णीय जिब्रील (अलैहिस्सालाम) ने आ कर बताया कि: आप ''मुअव्वज़तैन'' पढ़ें। और जैसे जैसे आप पढ़ते जा रहे थे उसी के साथ एक एक गाँठ खुलती और पुतले से एक एक सुई निकलती जा रही थी, और अन्त के साथ ही आप जादू से इस प्रकार निकल गये जैसे कोई बंधा हुआ खुल जाता है।(देखिये : सहीह बुखारी : ५७६६, तथा सहीह मुस्लिम : २१८९)

फिर आप ने ''लबीद'' को बुला कर पूछा, और उस ने अपना दोष स्वीाकर कर लिया। फिर भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस को क्षमा कर दिया और फ़रमाया कि: अल्लाह ने मुझे स्वस्थ कर दिया है।

हदीसों से यह सिद्ध होता है कि नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) बराबर रात्री में सोते समय इन दोनों सूरतों को पढ़ कर आपने दोनों हाथों पर फूँकते फिर अपने दोनों हाथों को अपने पूरे शरीर पर फेरते थे।

मानो अल्लाह तआला ने इन अन्तिम दो सूरतों द्वारा जादू और अन्य बुराईयों से बचाव का एक साधन भी दे दिया जो सदा मुसलामानों की जादू तंत्र आदि से रक्षा करता रहेगा।

- इस की आयत १ में यह शिक्षा दी गई है कि शरण उस से माँगो जिस के पालनहार होने की निशानी तुम रात दिन देख रहे हो।
- आयत २ से ५ तक में यह बताया गया है कि किन चीज़ों की बुराई से शरण माँगनी चाहिये।
- हदीस में हे कि नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा कि इस रात मुझ पर कुछ ऐसी आयतें अवतरित हुई हैं जिन के समान आयतें कभी नहीं देखी गईं। वह यह सूरह, और इस के पश्चात् की सुरह है। (सहीह मुस्लिम : ८१४)

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् हैं।

१. (हे नबी!) कहो कि मैं भोर के पालनहार की शरण लेता हूँ।
२. हर उस की बुराई से जिसे उस ने पैदा किया।
३. तथा रात्री की बुराई से जब उस का अंधेरा छा जाये।[1]
४. तथा गाँठ लगा कर उन में फूँकने वालियों की बुराई से।
५. तथा द्वेष करने वाले की बुराई से जब वह द्वेष करे।[2]

*****

[1] (१–३) इन में संबोधित तो नबी, (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) को किया गया है, परन्तु आप के माध्यम से पूरे मुलसलमानों के लियें संबोधन है। शरण माँगने के लिये तीन बातें ज़रूरी हैं: (१) शरण मगना। (२) जो शरण माँगता हो। (३) जिस के भय से शरण माँगी जाती हो। और अपने को उस से बचाने के लिये दूसरे की सुरक्षा और शरण में जाना चाहता हो। फिर शरण वही माँगता है जो यह सोचता है कि: वह स्वंय अपनी रक्षा नहीं कर सकता, और अपनी रक्षा के लिये वह ऐसे व्यक्ति या अस्तित्व की शरण लेता है जिस के बारे में उस का यह विश्वास होता है कि वह उस की रक्षा कर सकता है। अब स्वभाविक नियमानुसार इस संसार में सुरक्षा किसी वस्तु या व्यक्ति से प्राप्त की जाती है जैसे धूप से चने के लिये पे.या भवन आदि की। परन्तु एक ातरा वह भी होता है जिस से रक्षा के लिये किसी अनदेखी शक्ति से शरण माँगी जाती है जो इस विश्व पर राज करती है। और वह उस की रक्षा अवश्य कर सकती है। यही दूसरे प्रकार की शरण है जो इन दोनों सूरतों में अभिप्रेत है। और कुर्आन में जहाँ भी अल्लाह की शरण लेने की चर्चा है उस का अर्थ यही विशेष प्रकार की शरण है। और यह तौहीद पर विश्वास का अंश है। ऐसे ही शरण के लिये विश्वास हीन देवी देवताओं इत्यांदी को पुकारना शिर्क और घोर पाप है।

[2] (४–५) इन दोनों आयतों में जादू और ाह की बुराई से अल्लाह की शरण में आने की शिक्षा दी गई है। और ाह ऐसा रोग है जो किसी व्यक्ति को दूसरों को हानि पहुँचाने के लिये तैयार कर देता है। और आप (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर भी जादू ाह के कारण ही किया गया था। यहाँ ज्ञातव्य है कि इस्लाम ने जादू को अधर्म कहा है जिस से इन्सान के परलोक का विनाश हो जाता है।

सूरह नास – ११४

सूरह नास के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में ६ आयतें हैं।

- इस में पाँच बार (नास) शब्द आने के कारण इस का यह नाम है। जिस का अर्थ इन्सान है।
- इस की आयत १ से ३ तक शरण देने वाले के गुण बताये गये हैं।
- आयत ४ में जिस की बुराई से पनाह (शरण) माँगी गई है उस के घातक शत्रु होनें से सावधान किया गया है।
- आयत ५ में बताया गया है कि वह इन्सान के दिल पर आक्रमण करता है।
- आयत ६ में सावधान किया गया है कि यह शत्रु जिन्न तथा इन्सान दोनों में होते हैं।
- हदीस में है कि नबी (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) हर रात जब बिस्तर पर जाते तो सूरह इलास और यह और इस के पहले की सूरह (अर्थात: फ़लक़) पढ़ कर अपनी दोनों हथेलियाँ मिला कर उन पर फूंकते, फिर जितना हो सके दोनों को अपने शरीर पर फेरते। सिर से आरंभ करते और फिर आगे के शरीर से गुज़ारते। ऐसा आप तीन बार करते थे। (सहीह बुखारी: ६३१९, ५७४८)

*****

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् हैं।

१. (हे नबी!) कहो कि मैं इन्सानों के पालनहार की शरण में आता हूँ।
२. जो सारे इन्सानों का स्वामी है।
३. जो सारे इन्सानों का पूज्य है।[1]
४. भ्रम डलने वाले और छुप जाने वाले (राक्षस) की बुराई से।
५. जो लोगों के दिलों में भ्रम डालता रहता है।
६. जो जिन्नों में से है, और मनुष्यों में से भी।[2]

[1] (१–३) यहाँ अल्लाह को उस के तीन गुणों के साथ याद कर के उस की शरण लेने की शिक्षा दी गई है। एक उस का सब मानव जाति पालनहार और स्वामी होना। दूसरे उस का सभी इन्सानों का अधिपति और शासक होना। तीसरे उस का इन्सानों का सत्य पूज्य होना।

भावार्थ यह है कि उस अल्लाह की शरण माँगता हूँ जो इन्सानों का पालनहार शासक और पूज्य होने के कारण उन पर पूरा नियंत्रण और अधिकार रखता है। जो वास्तव में उस बुराई से इन्सानों को बचा सकता है जिस से स्वंय बचने और दूसरों को बचानें को बचाने में सक्षम है उस के सिवा कोई है भी नहीं जो शरण दे सकता हो।

[2] (४–६) आयत नं. ४ में ''वस्वास'' शब्द का प्रयोग हुआ है। जिस का अर्थ है: दिलों में ऐसी बुरी बातें ाल देना कि जिस के दिल में ाली जा रही हों उसे उस का ज्ञान भी न हो।

और इसी प्रकार आयत नं. ४ में ''खन्नास'' का शब्द प्रयोग हुआ है। जिस का अर्थ है: सुक़ जाना, छुप जाना, पीछे हट जाना, धीरे धीरे किसी को बुराई के लिये तैयार करना आदि।

अर्थात् दिलों में भ्रम ालने वाला, और सत्य के विरुद्ध मन में बुरी भावनायें उत्पन्न करने वाला। चाहे वह जिन्नों में से हो, अथवा मनुष्यों में से हो। इन सब की बुराईयों से हम अल्लाह की शरण लेते हैं जो हमारा स्वामी और सच्चा पूज्य है।